प्रस्तावना

आ जैनकथारत्नकोपनामा ग्रथनो आठमो नाग ठापी अमोयें अमारा सर्व साधर्मी सुज्ञनाइयोनी समक्षमां मूकेलो ठे जे नागमां सम्यग्दृष्टि समस्तस ज्ञनोने वाचवा योग्य एवो मुनिवर्य पमित श्रीरामविजयजी विरचित शोलमा तीर्थंकर जे श्री शातिनाथ नगवान्, तेमनो मात्र एक रास दाखल करेलो ठे कारण के जीवने उत्तम पुरुषोना चरित्रो वाचवाथी तथा सांन लवाथी संसारनो निस्तार थाय ठे आ रासना जूदा जूदा ठ खमो ठे, तेमा श्रीशातिनाथ नगवानना वारे नवनी सविस्तर कथाउ आवेली ठे तेमज वली श्री शांतिनाथजीना मुख्यगणधर जे श्री चक्रायुध तेमना पण सर्वनवनी कथाउ आवेली ठे आ ग्रथ एवो तो रमणीय ठे, के जेनी प्रत्येक ढालो,सरस एवा नव रसें करी समिलित ठे,अने तेमां घणु करीने तो स्थलें स्थलें वैराग्यकारक उपदेशोज आवेला ठे, के जेने ध्यान दइनें वाचवाथी वाचकवृदने ससारनु असारपणुं समजाय ठे अने तेथी तेमना अत करणना परिणाम सुधरे ठे, अने पठी तेने सज्ञतिनी श्रेणि प्राप्त थाय ठे वली आ ग्रथमा वीजी पण चित्तचमत्कृतिकारक मग लकलश कुमार,तथा सुमित्रानदादिक तथा पुण्यसार वगेरेनी अनेक कथाउ आवेली ठे तेमज वली श्रावकना वार व्रतपरनी वार कथाउ आवेली ठे,तेनुं आहीं अति वर्णन न करतां सर्व नाइयोने हुं एटलीज नलामण करुं ढुं, के ते सर्व कथाउ तेउयें पोतेंज पोतानी मेलें वांची तेनु जे याथातथ्यस्वरूप ठे, समजवु आ रास, मुनिवर्य पमित श्रीरामविजयजीयें पंमितश्रीअजित प्रनसूरियें सस्कृत पद्यमा वनावेला श्री शांतिनाथचरित्र उपरथी रचेलो होय एम लागे ठे कारण के ते सस्कृतग्रथ अने आ ग्रथ ज्यारें आपणें मेलवी वाचीयें ठेयें,त्यारें वहुश वेहु ग्रंथनी अक्षरश वात मलतीज आवे ठे मात्र आ रासमा सहुने सारी रीतें समजी शकाय तेमाटें वैराग्यकारक कथाउमां तथा केटलाएक कठिननागमा, यत्किंचित् चरित्रग्रंथगत न हतां वधारेल ठे तथा एवीज रीतें चैत्यवदन स्तवन पण नवीनज वनावेलां ठे आ रासमां प्रसगोपात पृथक् पृथक्कविकृत श्लोको तथा दोहा तथा सिद्धां तनी गाथाउ पण लीधेलीयो ठे वली आ ग्रथमां शब्दानुप्रास तो एवा उत्तम

आवेला छे, के जेना वांचवाथी वांचनारने तथा सांभलनारने अमंद एवो आनंद उत्पन्न थाय छे,ते आनंदनुं यथायोग्य वर्णन करवामां अमारी कलम, काम करी शकती नथी अने आ ग्रंथ संस्कृतपरथी जे रासरूपें रच्यो छे,ते तो कवियें केवल संस्कृतभाषाना अविज्ञातजनोनो महोटो उपकार करेलो छे केम के ? जो आ रास न करे, तो संस्कृतना अविज्ञातजनोने श्री शांति नाथना चरित्र वांचवानो लाभ मली शके नहिं

हवे आ ग्रंथने अमोयें ज्यारें छापवानो विचार कर्यो,त्यारें ते छापवाने मार्टे प्रथम आ ग्रंथनी प्रत जोइयें तो पछी ते प्रतनो जे जे स्थलें मलवानो संभव हतो,ते ते स्थलें अमोयें पत्र द्वारा तपास कराव्यो,अने वली आहिं मुंबइमां पण प्रयासपूर्वक तपास कर्यो,परंतु कोइ पण स्थलथी तेनी एक पण प्रत अमोने उपलब्ध थइ नही, मात्र भावनगरथी अमारा सुज्ञसाधर्मीभाइ जे शेठ कुवरजी आणंदजी तेउयें अमोने एक प्रत मोकली अने पछी एक प्रत अमारा घरना पुस्तको शोधवाथी मली आवी तेमां अमारा घरनी प्रत शोध करेली होवाथी घणी शुद्ध हती, परंतु ते प्रतमां प्रथमथी ते चोथा खंमनी त्रीजी ढाल पर्यंतनां पत्रोज हतां नहि,त्यारें तो ते भावनग रथी आवेली प्रत उपरथीज अमोयें आ ग्रंथ यथामति संशोधन करावीने ते चोथा खंमनी त्रीजी ढाल सुधी छाप्यो छे, मार्टे एक प्रतपरथी छपावाथी तेमा केटलीएक भूलो रही गइ हशे तदनंतर तो अमोयें आ ग्रंथने बेहु प्रत सार्थे मेलावी, तेनु प्रयास पूर्वक यथाबुद्धि संशोधन करावी छाप्यो छे तो पण आ ग्रंथमा दृष्टिदोषथी तथा कंपोस करनारनी भूलथी तथा अज्ञा नथी जे कांइ भूल चूक रही गइ होय,तो तेने सर्वसाधर्मिभाइयोयें, मारी पर सुधारी वांचवारूप कृपा करवी अने वली हे सुज्ञजनो ! संसारविटंबणाने वधारनार एवा बीजा कार्योमा व्यर्थ व्यय न करतां आवा अमारा,संसारो छेदक एवा उत्तम कार्योमा तन, मन धनथी उदार आश्रय आपवामा अमा रा पिताना समयमा जेम बहुपरिकर रहेता हता, तेम सांप्रतसमयमां पण रहेशो एवी अमने पूर्ण आशा छे कारण के आवा ज्ञानवृद्धिकार्यने उत्ते जन आपनारा जनोने ज्ञानदान समान पुण्यनी प्राप्ति थाय छे सुमतिजनेषु किं बहु विलेखनेन ॥ शुभ भूयात् ॥

॥ श्रावक शीमजी भीमसिंह माणक ॥

॥ अस्य ग्रंथस्यातिसंक्षिप्तानुक्रमणिका ॥

१ श्री शांतिनाथ जगवानना बार जवमांहेला पहेला जवमां श्रीशांतिनाथजी श्रीषेणराजा थइ उपन्या, तेनुं सविस्तर चरित्र १
२ दशविधधर्माचरण करनारने सुख प्राप्त थाय, ते विषे मंगलकलशकुमारक० ४
३ बीजे जवें श्री शांतिनाथजी उत्तरकुरुमां युगलिया देव थइ उपन्या ३०
४ त्रीजे जवें श्रीशांतिनाथ जगवान् सौधर्मदेवलोकमां देव थइ उपन्या ३१

॥ अथ द्वितीयखंमस्यानुक्रमणिका ॥

५ श्रीशांतिनाथना चतुर्थजवप्रसंगार्थे हरि प्रतिहरि प्रमुखनुं चरित्र ३३
६ चोथेजवे श्रीशांतिनाथजगवान, अमित तेजा विद्याधर थया, तेनुं च० ४१
७ सांतरायधर्म पालनथी सांतराय सुखप्राप्त थाय, तेमां मत्स्योदरक० ५५
८ पांचमे जवें श्रीशांतिनाथ प्राणतदेवलोकमां दिव्यचूलनामा देव थ० ८५

॥ अथ तृतीयखंमस्यानुक्रमणिका ॥

९ उठे जवें श्रीशांतिनाथजी अपराजितनामें बलदेव थया, तेनुं चरित्र ८८
१० अल्पपणकषायसेवनथी जीवडुःखी थाय बे ते पर मित्रानंदादिक क० ९०
११ संयमपालवामांकायरपणुं न राखवामां जिनपालने जिनरक्षित दृ० १२१
१२ लग्गत, अस्थिगत ने मज्जागत एवा धर्ममां नरसिंह राजानी क० १३३
१३ श्रीशांतिनाथ जगवान् सातमे जवें अच्युतेंद्र देव थइ उपन्या १४३

॥ अथ चतुर्थखंमस्यानुक्रमणिका ॥

१४ आठमे जवें श्रीशांतिनाथजी वज्रायुधचक्री थइ उपन्या, तेनुं चरित्र १४४
१५ विचारीकार्य करवामां आम्रनिपात्यादि दृष्टांतो, तेमांबीजी कथाउंबे १५३
१६ वज्रायुधचक्रीने चक्र उत्पन्न थयुं ते तथा चक्रीपणानीसंपदानुवर्णन १७८
१७ पुण्यथी सुखप्राप्ति थाय बे, तेमां पुण्यसार कुमार कथा १८४
१८ चतुर्विध बुद्धिमांहेली औत्पातिकी बुद्धिमां रोहकनी कथा २०५
१९ श्री शांतिनाथजी नवमे जवें नवमग्रवेयकें देवता थया २१६

॥ अथ पंचम खंमस्यानुक्रमणिका ॥

२० दशमे जवें श्रीशांतिनाथ मेघरथराजा थया, तेनुं सविस्तर चरित्र २१८
२१ पौषधशालामां पोषध करवा बेठेला मेघराजाना शरणमां आवेला पारेवाने आपेला अजयदानविषे संवादरूपे अनेकमनोहर कथाउं २२६

२२ धर्मथी आपत्ति दूर थाय छे, अने सुखनी प्राप्ति थाय छे, तेविषे
अन्यकथायुक्त गतनवमां शूरनामक थयेला वत्सराजनी कथा २४२
२३ अग्यारमे भवें श्रीशांतिनाथजी सर्वार्थसिद्धविमानमां देव थया २ए३

॥ अथ पष्ठखमानुक्रमणिका ॥

२४ बारमे भवें पोतेंज श्रीशांतिनाथजी चक्री, तथा श्रीशोलमा तीर्थं
कर श्रीशांतिनाथ भगवान् थया तेमनुं मनोहर सविस्तर चरित्र २ए७
२५ विषयत्यागथी सुख प्राप्ति थाय, तेमा गुणधर्मकुमारनी कथा ३१६
२६ कषाय त्यागना उपदेशमा नागदत्तनुं वृत्तांत ३३६
२७ प्रथम प्राणातिपात व्रतना उपदेशमा यमपाशनी कथा ३३ए
२८ द्वितीय मृषावाद विरमण व्रत उपदेशमां भद्रश्रेष्ठिकथा ३४३
२ए तृतीय स्थूलअदत्तादानविरमणव्रतपर जिनदत्तकथा ३४ए
३० चतुर्थ मैथुनविरमण व्रत पर करालपिंगल पुरोहित कथा ३५६
३१ पचम परिग्रहपरिमाणव्रत उपदेशमां सुलसकथा ३६४
३२ पष्ठदिशिपरिमाण व्रतपर स्वयंभुदेवकथा ३८३
३३ सप्तम भोगोपभोग विरमण व्रतपर जितशत्रुतथा नित्य मण्डिता कथा ३८५
३४ अष्टम अनर्थदंडविरमण व्रत पर समृद्धिदत्तकथा ३८८
३५ नवम सामायिक व्रतोपदेशमां सिद्धश्रावक कथा ३ए१
३६ दशम देशावकाशिक व्रतोपदेशमा गंगदत्तनी कथा ३ए४
३७ एकादश पौषध व्रतोपदेशमा जिनचंद्र कथानकम्. ३ए५
३८ द्वादश अतिथिसंविभाग व्रतोपदेशमां शूरपालकथा ३ए८
३ए श्रीशांतिनाथजीनापुत्रचक्रायुधें दीक्षा लीधीने मुख्यगणधरथया ४१५
४० मोहराजानु तथा तेना सैन्यनु वर्णन अने जीव,संसारडुःख भोगवे
छे, तेने ज्ञान प्राप्तिथी सुख थाय छे, तेमा रत्नचूडनो दृष्टांत ४१६
४१ श्रीशांतिनाथचतुस्त्रिंशदतिशयवर्णन तथा तत्परिवारसंख्या कथन ४२७
४२ श्रीशांतिनाथनु मोक्षगमन,ते पछी देवादिकृत शोक तथा देवकृत
निर्हरणक्रिया, त्रिंशमोहस्थानविवेचन, कोटिशिलातीर्थमा चक्रा
युध मुक्तिगमन, तथा शांतिजिनस्तुति ४३२
४३ श्रीशांतिनाथजीना बार भवना नाम निर्देश अने ग्रंथकारनी प्रशस्ति ४३ए
४४ स्त्रीयोने शिखामणना केटलाएक वूटा वूटा बोलो ४४४

॥ अथ ॥

॥ पंमित श्रीरामविजयजी विरचित श्री शांतिनाथभगवाननो रासप्रारम्भ ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथमखम्म प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥ सकल श्रेयवरदायिनी, मुनिवरवंदित जेह ॥ जिनपद लक्ष्मी नित नमु, आणी अधिक सनेह ॥ १ ॥ वनय अर्थे वाहन वृषें, सदा विराजे जेह ॥ ते श्रीवृषभ प्रभू तणां, चरण नमुं गुणगेह ॥ २ ॥ अंत रंग रिपुवर्गदल, जिण जित्यु क्षणमांहि ॥ अजित स्वामि पमुहा नमुं, ते जिन धरि उत्साह ॥ ३ ॥ महिमा महोटो जेहनो, सकल सुख दातार ॥ नवि मनोवांछित पूरवा, कामकुंभ अवतार ॥ ४ ॥ कुशलवल्लिवन सींचवा, जे पुष्कर जलधार ॥ विश्वसेनकुल अवतर्या, सकलजंतु आधार ॥ ५ ॥ शांतिनाथ प्रभु शोलमा, गजपुरस्वामी देव ॥ बेहु पदवी धारक थया, सारे सुर नर सेव ॥ ६ ॥ ते श्रीशांति जिणंदनो, सरस रसिक संबंध ॥ विस्तारें करि वर्णवु, द्वादश भव अनुबंध ॥ ७ ॥ गुण अनंत श्रीजिन तणा, केम करि वर्णव्या जाय ॥ पण ते प्रभुनी भक्तिनु, महोटु मुज सहाय ॥ ८ ॥ श्री सुमति सुगुरु वियानिधे, पदश्यु एह रसाल ॥ ढालबंध श्री शांतिनो, रासप्रबंध विशाल ॥ ए ॥ नव नव भव चढती कला, शुक्ल पक्ष जिम चंद ॥ जिम कीधा तिम वर्णवु, धरि मनमा आनंद ॥ १० ॥ भव पहेले श्रीषेण नृप, विलसी बहु संपत्ति ॥ ते विस्तारें हु कहु ,सुणजो भवि इक चित्त ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ स्वस्ति श्रीशाला ॥ ए देशी ॥ जंबुद्दीप अनूपम उपे, सकलद्दीप शृंगार ॥ मेरुमहिधर मध्य विराजे, लख योजन विस्तार ॥ जेमांहे जाजा शुभ आवासा, वासधरा दोइ चार ॥ तेह तणे अंतर अभ्यंतर, सन्निवास सुविचार ॥ १ ॥ यक्तकमागमे ॥ भरहं हेमवयंति, हरिवासंति महाविदेहंति ॥ रम्म गए रणवयं, एरवयं चेव वासाइ ॥ १ ॥ तेमांहे शुभरत जन बहु संयु

त, भरत नाम वरखित्त ॥ जिनवर चक्रधरादिक नरवर, चरणवास सुपवि त ॥ भरतभूमिभूषण गतदूषण, पत्तन बहुजनवासं ॥ रत्नपुरं पुरमां रत्नो पम, बहु मणि रयण निवास ॥ २ ॥ वापी वप्र विहार विराजे, वाडी वन आराम ॥ सकललोकधनवत विलासी, बहुआशा विश्राम ॥ ज्ञानी ध्यानी दानी मानी, सज्जनजन सन्मान ॥ एहवु नगर अनोपम उंपे, इंद्रपुरी उप मान ॥ ३ ॥ चारु नीति शुभरीति महामति, लक्ष्मीपति गुणधारी ॥ श्री षेणाभिध नामें नृपति, जाणे सुर अवतारी ॥ भीम कांत नृपति गुण धारे, नरवसहो नरसिंहो ॥ राजा राज्य करे अतुली बल, तेजें अकल अबीहो ॥ ४ ॥ तेह घर राणी गुणइंद्राणी, जाणीती जगमांय ॥ रूपें रति राणी दोय पट्टराणी, वाहाली जीवित प्राय ॥ अभि सिंह आगल नदिता जोडे, भा वते अभिधान ॥ विलसे ते साथें नृप जगनाथे, जोडी जोडी समान ॥ ५ ॥ विलसता भोगा पुण्यसयोगा, एक दिवसने योग ॥ सुखसेजें सूती पुण्य पनोती, पहेली स्त्री नीरोग ॥ ऋतुधर्मे सनाता तेज दिखाता, चंद सूर दोय इंद ॥ देखे उत्सगें क्रीडा करता, धरता अति आनंद ॥ ६ ॥ देखी सुपनतर हर्ष निरंतर, हियडे गजगति गेल ॥ आवी पियुपासें मन उल्ला सें, मानु मोहनवेल॥जय जय मुझ स्वामी अतरजामी,प्राण नाथ अवधार ॥ सुहणे में दीठा लाग्या मीठा, चंद सूर्य दोय सार ॥ ७ ॥ तेहनुं फल स्वामी कहो रतिकामी, पूछु बे कर जोडी ॥ सांभल मृगनयणी अमृत वयणी, फल भाखु मन कोड ॥ होशे सुत सुदर रूप पुरंदर, निजकुलदीपक दोय ॥ हरखी ते राणी ने सुणि वाणी, आवी मंदिर सोय ॥ ८ ॥ दोय गर्भ धरती ते गुणवती, सोहे अंग अपार ॥ जाणग उपगारी दोयने धारी, धरणीपरें गुणधार ॥ शुभ दोहला लाधे अगल वाधे, साधे धर्मविचार ॥ शुभवेला राणी गुणमणि खाणी, प्रसवे दोय कुमार ॥ ९ ॥ श्रीषेण नरिंदा धरे आनंदा, आवतां घर बार ॥ वदी छोडावे गुणिजन गावे, बोले जयजयकार ॥ चिरं जीवो नंदन जग आनंदन, कोडाकोडि वरीस ॥ सोहव इम गावे हर्षे वधावे, देती बहु आशीष ॥ १० ॥ देखी दोय पुत्ता गुणसंयुत्ता, मत्ता हर्षभरेण, माता हुलरावे वलि धवरावे, स्तन महि निज करेण ॥ सुत नामें सुदर गुणमणि मंदिर, इंदुषेण बिंदुषेण ॥ चढती वय पामे बहुजन कामे, शोभे रूपगणेण ॥ ११ ॥ हवे अष्टम वर्षे बहुले दोय नंद ॥ निशालें सदा

जिम ते रूडा, बुद्धे जेह अमद ॥ रसग्रथ अनुत्तर कला बहुत्तर, जणि या जारे जेद ॥ देखी दोय जाया हरखी माया, वाध्यो चित्त उमेद ॥१४॥ यौवन वय आया रूप सुहाया, मानु दोय रतिकंत ॥ मावित्र मनोरथ करता सारथ, राजलील विलसत ॥ पहेली ए ढालें पुण्य विशालें, दाख्यो राज विलास ॥ श्री सुमति सुगुरुनो शिष्य कहे जवि, सुणो शांतिजिनरास ॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसरें जरतमां, मगधनाम शुज देश ॥ तेमां बहुरूध्धे जर्यो, अचल नाम सन्निवेश ॥ १ ॥ वेदविचक्षण तिहां वसे, वारू वाडव एक ॥ धरणीजट नामें निपुण, सकल शास्त्र सुविवेक ॥ २ ॥ तस घरणी धरणी परें, क्षमावतमां लीह ॥ नाम यशोजद्रा वली, मीठी जेहनी जीह ॥ ३ ॥ पियुसाथें सुख विलसतां, जन्म्या अगज दोय ॥ नंदिजूति श्रीजूति वेहु, रूप अनूपम सोय ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ श्रेणिक मन अचरिज थयो ॥ ए देशी ॥ ते द्विजना घरमां वसे, कपिला नामें दासी रे ॥ आवी यौवनवेशमां, प्रेम कला सुविलासी रे ॥ १ ॥ वि रुइ विषयविडंबना ॥ ए आंकणी ॥ जो जो जगत विमासी रें ॥ विषयसमी विषमी नहीं, महियल महोटी हांसी रे ॥ वि० ॥ २ ॥ रूप देखी दासी तणु, वाडव थयो विपरीतो रे ॥ वेदकला अलगी रही, मोहकलणमां खूतो रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ लोकलज्जा नवि लेखवी, मोहतणे वश लीनो रे ॥ शील तजीने कुशीलिनी, थयो दासी आधीनो रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ सुख विलसतां तेहशुं, कपिला कुखनो जायो रे ॥ कपिल सुत त्रीजो थयो, जातिविहीन गवायो रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ अगज दोयने आदरे, वेदाध्ययन करावे रे ॥ जाति विहीन जाणी करी, कपिल जणी न जणावे रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ मानहीन मति आगलो, अलगो रहि एक चित्तें रे ॥ श्रवण मनन चिंतन करी, शास्त्र जणे शुज रीतें रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ सांजलता सघली कला, शीख्यो सकल विचारो रे ॥ वेदकलाकुशली थयो, मानधनी मतिधारो रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ जाति अवज्ञाने जयें, नगर मूकी नीसरियो रे ॥ यज्ञसूत्र दोय धारतो, माहा माहण जिम वरियो रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ विद्यामदमां माहालतो, सचरतो जूपीठें रे ॥ अनुक्रमें रत्नपुरें गयो, सुख पाम्यो ते दीठे रे

त, भरत नाम वरखित्त ॥ जिनवर चक्रधरादिक नरवर, चरणवास सुपवित्त ॥ भरतभूमिभूषण गतदूषण, पत्तन बहुजनवासं ॥ रत्नपुरं पुरमां रत्नोपम, बहु मणि रयण निवास ॥ १ ॥ वापी वप्र विहार विराजे, वाडी वन आराम ॥ सकललोक धनवत विलासी, बहुआशा विश्राम ॥ ज्ञानी ध्यानी दानी मानी, सज्जनजन सन्मान ॥ एहवु नगर अनोपम उपे, इंद्रपुरी उपमान ॥ २ ॥ चारु नीति शुभरीति महामति, लक्ष्मीपति गुणधारी ॥ श्रीषेणाभिध नामें भूपति, जाणे सुर अवतारी ॥ भीम कांत भूपति गुण धारे, नरवसहो नरसिंहो ॥ राजा राज्य करे अतुली बल, तेजें अकल अबीहो ॥ ४ ॥ तेह घर राणी गुणइंद्राणी, जाणीती जगमांय ॥ रूपें रति राणी दोय पट्टराणी, वाहाली जीवित प्राय ॥ अभि सिंह आगल नदिता जोडे, आवते अभिधान ॥ विलसे ते सार्थे नृप जगनार्थे, जोडी जोडी समान ॥ ५ ॥ विलसता भोगा पुण्यसयोगा, एक दिवसने योग ॥ सुखसेजें सूती पुण्यपनोती, पहेली स्त्री नीरोग ॥ ऋतुधर्म सनाता तेज दिखाता, चद सूर दोय इद ॥ देखे उत्सगें क्रीडा करता, धरता अति आनद ॥ ६ ॥ देखी सुपनतर हर्षे निरतर, हियडे गजगति गेल ॥ आवी पियुपासें मन उल्लासें, मानुं मोहनवेल॥जय जय मुफ स्वामी अतरजामी,प्राण नाथ अवधार ॥ सुहणे में दीठा लाग्या मीठा, चंद्र सूर्य दोय सार ॥ ७ ॥ तेहनुं फल स्वामी कहो रतिकामी, पूछु बे कर जोडी ॥ सांभल मृगनयणी अमृत वयणी, फल भाखु मन कोड ॥ होशे सुत सुदर रूप पुरंदर, निजकुलदीपक दोय॥ हरखी ते राणी ने सुणि वाणी, आवी मदिर सोय॥ ८ ॥ दोय गर्भ धरंती ते गुणवती, सोहे अग अपार ॥ जाणग उपगारी दोयने धारी, धरणीपरें गुणधार ॥ शुभ दोहला लाधे अगज वाधे, साधे धर्मविचार ॥ शुभवेला राणी गुणमणिखाणी, प्रसवे दोय कुमार ॥ ए ॥ श्रीषेण नरिंदा धरे आनदा, आवता दरबार ॥ घरी गोहावे गुणिजन गावे, बोले जयजयकार ॥ चिरं जीवो नदन जग आनदन, कोडाकोडि वरीस ॥ सोहव इम गावे हर्षे वधावे, देती बहु आशीष ॥ १० ॥ देखी दोय पुत्ता गुणसयुत्ता, मत्ता हर्षभरेण, माता हुलरावे वलि धवरावे, स्तन ग्रहि निज करेण ॥ सुत नामें सुदर गुणमणिमदिर, इंद्रषेण बिंदुषेण ॥ चढती वय पामे बहुजन कामे, शोभे रूपगणेण ॥ ११ ॥ हवे अष्टम वर्षे बहुले हर्षे, पाठविया दोय नद ॥ निशालें सूरा

कोरां वस्त्र जो नाली रे ॥ वि० ॥ २५ ॥ जलवाला उद्योतथी, देखी अग जलनीनु रे ॥ मनमांहे चिते ए सही, नहिं आचरण कुलीनु रें ॥ वि० ॥ २६ ॥ नम्रपणे आव्यो इहां, धिक् एहनु गृहवासो रे ॥ मद राग ते ऊपरें, नामा गुण आवासो रे ॥ वि० ॥ २७ ॥ वीवू न पडे कवलें, सहू कहेए वातो रे ॥ राम कहे बीजी ढालमा, जोई लेजो जातो रे ॥ वि० ॥ २८ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कपिल तणो हवे बाप, कर्मवशें थयो दूबलो ॥ प्रगटयां पूरव पाप, क्षीण थयु धन जेहनु ॥ १ ॥ जोडीजें सो वार, राख्यु एह रहे नहिं ॥ खरचे कोइ शुन्न ठाम, जिम वाधे बमणु वली ॥ २ ॥ यडुक्त नैषधे ॥ पूर्वपुण्यविन्नवव्ययस्पृष्टा, सपदोविपदएव विसृष्टा ॥ पात्रपाणिकमला पेणमाला, तासु शातिकविधिर्विधिहष्ट ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ मूकी मननु मान, पर देशें ते सचख्यो ॥ जाणी कपिल सन्मान, रत्नपुरें आव्यो वही ॥ ३ ॥ आवत दीठो तात, दोडी लाग्यो पाउले ॥ नीड्यो हियडे जात, हर्ष धरी हेजालुवे ॥ ४ ॥ कोई मिष करि सोय, नोजन अवसरें कतने ॥ अलगो बेठो जोइ, चित्त चमक्यु नामा तणुं ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नमणी खमणी नें मन गमणी ॥ ए देशी ॥ नामा कर जोडी कहे वाच, ससराजी मुज नाखो साच ॥ शु तुम अंगज एह के अवर, फूठ कहो तो हत्या द्विजवर ॥ १ ॥ हत्यापातक विहितो तेह, साचु कहे सुण वहु गुणगेह ॥ ए मुज दासीनो अगजात, सानली समजी सघली वात ॥ २ ॥ धन आप्युं तिहा कपिल प्रवर, धरणीजट चाल्यो निज नगर ॥ सत्य नामा गइ नृपनी पासें, कर जोडीने एणि परें नासे ॥ ३ ॥ स्वामी तु पचम लोकपाल, दीन अनाथ तणो रखवाल ॥ डुं डुखणी नें अवला बाल, कर कर स्वामी सार सनाल ॥ ४ ॥ यत ॥ डुर्बलानामनाथानां, बालवृद्ध तपस्विनाम् ॥ अन्यायपरिनूतानां, सर्वेपा पार्थिवोगति ॥ १ ॥ उप्पय ॥ रोपे तरु उतवात, बाल तरुवरने सींचे ॥ कटक काढे दूर, सरल तरु राखे बचे ॥ कच नमाडे जाड, नूमि पडता केइ रक्के ॥ जे फल्यां बहु फूल, तास पण स्वाद न चक्के ॥ एम अनेक माली तणा, गुण सघला अगें धरे ॥ राम कहे ते नूपिति, सकल लोक सपति करे ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ जाति

वि० ॥ १० ॥ नगर निरीक्षणकारणें, भमतो कपिल कदापि रे ॥ स
त्यकी पाठक तिहां वसे, द्विजवर अमल अपापी रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ छात्र
भणावे ते बहु, कपिल गयो तस गेह रे ॥ वेद अर्थ पूछे घणा, अगम
अगोचर जेह रे ॥ वि०॥ १२ ॥ उत्तर नवि देई शक्यो, छात्र सबल मति
वंतो रे ॥ सत्यकी मन हरख्यो घणु, मतिगुण देखि महंतो रे ॥ वि० ॥
१३ ॥ विद्यार्थी आदर लहे,विद्या सबल सखायी रे ॥ विद्या बधु विदेशमां,
विद्या दैवत सहायी रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ यदुक्तं ॥ हर्तुर्याति न गोचरं किम
पि शं पुष्णाति सर्वात्मना, ह्यर्थिभ्यः प्रतिदीयमानमनिशं वृद्धिं परामृच्छति ॥
कल्पांतेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमंतर्धनं, येषां तान् प्रति मानमुझत
जना कस्तैः सह स्पर्द्धते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ योग्य जाणीने सत्यकी, कपिलने
निजपद स्थापे रे॥ विद्यागुण ए जीवने, बहु सुख पदवी आपे रे ॥ वि०
॥ १५ ॥ यदुक्तं ॥ गुणाध्वावादर कार्ये , किमाटोपैः प्रयोजनम् ॥ विक्रीयंते न
घंटाभि, र्गावः क्षीरविवर्जिता ॥१॥दोहो ॥निर्गुण छमे अप्पणा, परपुट्ठे गुण
वंत॥ सिर धारिज्जे वण कुसुम, अगज मल छमंत ॥२॥ पूर्वढाल॥पाठकगृहिणी
जंबुका, तस पुत्री सत्यभामा रे ॥ कपिलने जाणी योग्यता, परणावी अभि
रामा रे ॥ वि० ॥१६॥ नाम थयुं ते नयरमां, कपिल कपिल सहु बोले रे
॥ पुण्यदशा जस पाधरी, ते नरने कुण तोले रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ उपाध्याय
हरख्यो घणु, भुक नार्ग्ये ए मलियो रे ॥ पुत्री पुण्यवती घणु, सबल मनो
रथ फलियो रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ जग जीवाढण एहवे, वृषा ऋतु तिहां आवे
रे ॥ सबल घटा घन मेलवी, जगमांहे जल वरसावे रे ॥ वि० ॥ १९ ॥
चिहु दिशें चमके दामिनी, सबल सजल घन गाजे रे ॥ जलधारा वरसे
घणु, ताप जगतनो भांजे रे ॥ वि० ॥ २० ॥ इण अवसरें रयणी
समे, नाटक देखण काजें रे ॥ कपिल गयो ते एकलो, बेठो जइनें समाजें
रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ नाटक जोईने वल्यो, विरमी नहिं जलधारो रे ॥ मन
चिंते इहां मनुष्यनो, नहिं कोई संचारो रे ॥ वि० ॥ २२ ॥ कोण अशुक
भीना करे, वस्त्र सकल उतारी रे ॥ थई निरंशुक नीसर्यो, कक्षांतर सवि
धारी रे ॥ वि० ॥ २३ ॥ आवी निज घर आंगणे, अशुक पहेरी अंगें
रे ॥ घर पेसतां सामुही, सत्यभामा मन रंगें रे ॥ वि० ॥ २४ ॥ अशुक
पिउ आगल धर्यां, नूतन कपिल निहाली रे ॥ सुण वनिते मंत्रें करी,

कोरां वस्त्र जो ज्ञाली रे ॥ वि० ॥ २५ ॥ जलवाला उद्योतथी, देखी अंग जलनीनु रे ॥ मनमांहे चिंते ए सही, नहिं आचरण कुलीनु रे ॥ वि० ॥ २६ ॥ नग्नपणे आव्यो इहां, धिक् एहयु गृहवासो रे ॥ मद राग ते ऊपरें, नामा गुण आवासो रे ॥ वि० ॥ २७ ॥ वीवू न पडे कबलें, सहू कहेए वातो रे ॥ राम कहे वीजी ढालमा, जोई लेजो जातो रे ॥ वि० ॥ २८ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कपिल तणो हवे वाप, कर्मवर्गे थयो दूबलो ॥ प्रगटघा पूरव पाप, क्षीण थयु धन जेहनु ॥ १ ॥ जोडीजें सो वार, राख्यु एह रहे नहिं ॥ खरचे कोइ शुन्न गाम, जिम वाधे वमणुं वली ॥ २ ॥ यदुक्त नैषधे ॥ पूर्वपुण्यविजवव्ययसृष्टा, सपदोविपदएव विमृष्टा ॥ पात्रपाणिकमला पेणमासा, तासु शातिकविधिर्विधिदृष्ट ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ मूकी मननु मान, पर देशें ते सचर्यो ॥ जाणी कपिल सन्मान, रत्नपुरें आव्यो वही ॥ ३ ॥ आवत दीठो तात, दोडी लाग्यो पावले ॥ जीड्यो हियडे जात, हर्ष धरी हेजालुवे ॥ ४ ॥ कोई मिप करि सोय, जोजन अवसरें कंतने ॥ अलगो वेगो जोइ, चित्त चमक्यु जामा तणु ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नमणी खमणी नें मन गमणी ॥ ए देशी ॥ जामा कर जोडी कहे वाच, ससराजी मुज जाखो साच ॥ छु तुम अगज एह के अवर, फूठ कहो तो हत्या द्विजवर ॥ १ ॥ हत्यापातक विहितो तेह, साचु कहे सुण वहु गुणगेह ॥ ए मुज दासीनो अगजात, साजली समजी सघली वात ॥ २ ॥ धन आप्युं तिहां कपिल प्रवर, धरणीजट चाल्यो निज नगर ॥ सत्य जामा गइ नृपनी पासें, कर जोडीने एणि परें जासे ॥ ३ ॥ स्वामी तु पंचम लोकपाल, दीन अनाथ तणो रखवाल ॥ हुं डु खणी नें अवला वाल, कर कर स्वामी सार सजाल ॥ ४ ॥ यत ॥ दुर्वलानामनाथानां, वालवृद्ध तपस्विनाम् ॥ अन्यायपरिजूतानां, सर्वेपा पार्थिवोगति ॥ २ ॥ बप्पय ॥ रोपे तरु वतवात, वाल तरुवरने सींचे ॥ कटक काढे दूर, सरल तरु राखे वखे ॥ कच नमाडे जाड, जूमि पडतां केइ रखे ॥ जे फूल्या वहु फूल, तास पण स्वाद न चखे ॥ एम अनेक माली तणा, गुण सघला अगें धरे ॥ राम कहे ते जूपिति, सकल लोक सपति करे ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ जाति

॥ वि० ॥ १० ॥ नगर निरीक्षणकारणें, जमतो कपिल कदापि रे ॥ स त्यकी पाठक तिहां वसे, द्विजवर अमल अपापी रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ गात्र जणावे ते बहु, कपिल गयो तस गेह रे ॥ वेद अर्थ पूछे घणा, अगम अगोचर जेह रे ॥ वि०॥ १२ ॥ उत्तर नवि देई शक्यो, गात्र सबल मति मतो रे ॥ सत्यकी मन हरख्यो घणु, मतिगुण देखि महंतो रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ विद्यार्थी आदर लहे,विद्या सबल सखायी रे ॥ विद्या बधु विदेशमां, विद्या दैवत सहायी रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ यडुक्त ॥ हर्तुर्याति न गोचरं किम पि शं पुष्णाति सर्वात्मना, ह्यर्थिन्य प्रतिदीयमानमनिशं वृद्धिं परामृशति ॥ कल्पांतेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमतर्द्धनं, येषां तान् प्रति मानमुप्त जना कस्ते सह स्पर्द्धते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ योग्य जाणीने सत्यकी, कपिलने निजपद स्थापे रे॥ विद्यागुण ए जीवने, बहु सुख पदवी आपे रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ यडुक्तं ॥ गुणाब्धावादरं कार्यं , किमाटोपे प्रयोजनम् ॥ विक्रीयंते न घंटाभि, र्गावः क्षीरविवर्जिता ॥२॥दोहो ॥निर्गुण ठमे अप्पणा, परपुक्के गुण वत्त ॥ सिर धारिक्के वण कुसुम, अगज मल ठंमत ॥३॥ पूर्वढाल॥पाठकग्रहिणी जंबुका, तस पुत्री सत्यनामा रे ॥ कपिलने जाणी योग्यता, परणावी अभि रामा रे ॥ वि० ॥१६॥ नाम थयुं ते नयरमां, कपिल कपिल सहु बोले रे ॥ पुण्यवशा जस पाधरी, ते नरने कुण तोले रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ उपाध्याय हरख्यो घणु, मुक नार्ये ए मलियो रे ॥ पुत्री पुण्यवती घणु, सबल मनो रथ फलियो रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ जग जीवाडण एहवे, वृषा ऋतु तिहां आवे रे ॥ सबल घटा घन मेलवी, जगमाहे जल वरसावे रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ चिहु दिशें चमके दामिनी, सबल सजल घन गाजे रे ॥ जलधारा वरसे घणु, ताप जगतनो भाजे रे ॥ वि० ॥ २० ॥ इण अवसरें रयणी समे, नाटक देखण काजें रे ॥ कपिल गयो ते एकलो, बेठो जइनें समाजें रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ नाटक जोईने वल्यो, विरमी नहिं जलधारो रे ॥ मन चिंते इहां मनुष्यनो, नहिं कोई संचारो रे ॥ वि० ॥ २२ ॥ कोण अंशुक भीनां करे, वस्त्र सकल उतारी रे ॥ थई निरंशुक नीसर्यो, कक्षांतर सवि धारी रे ॥ वि० ॥ २३ ॥ आवी निज घर आंगणे, अंशुक पहेरी अंगें रे ॥ घर पेसता सामुही, सत्यनामा मन रंगें रे ॥ वि० ॥ २४ ॥ अंशुक पिउ आगल धर्या, नूतन कपिल निहाली रे ॥ सुण वनिते मंत्रें करी,

कोरां वस्त्र जो नाली रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ जलवाला ज्योतथी,
अंग जलनीतुं रे ॥ मनमांहे चिंते ए सही नहिं आचरण कुलीतुं
वि० ॥ १८ ॥ नम्रपणे आव्यो इहां नित्य एहवुं गृहवानो रे ॥ मं
ग ते ऊपरें नाना गुण आवानो रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ बीजुं न पडे कंबलें,
कहेए वातो रे ॥ राम कहे बीजी ढालमां जोई लेजो वातो रे ॥ वि० ॥ २

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कपिल तणो हवे बाप कर्मवशें थयो दूबलो ॥ प्राप्यां पूरव प
क्षीण थयुं धन जेहनुं ॥ १ ॥ जोडीजें तो वार, राख्युं एह रहे न
खरचे कोइ शुभ ठाम, जिम वाधे वनगुं वली ॥ २ ॥ यदुक्तं नैष
पूर्वपुरुषविभवव्ययनुष्टा, संपदोविपदएव विमृष्टा. ॥ पात्रपा॥पक
पणमार्ता तासु शांतिविधिर्विधिदृष्ट ॥१॥ पूर्वदोहा ॥ मूकी मनतुं मान,
देशें ते संचर्यो ॥ जाणी कपिल सन्मान, रत्नपुरें आव्यो वही ॥ ३
आवत दीठो तात, दोडी लाग्यो पायले ॥ नीरख्यो हियडे जात, हर्षे
हेजालुवे ॥ ४ ॥ कोई निय करि ताय, भोजन अवसरें कंतने ॥ अ
बेठो जोइ, चित्त चमक्युं भामा तणुं ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ रमणी रमणी नें मन गमणी ॥ ए देशी ॥ भामा कर जोडी
वाच, सतराजी मुज भांखो साच ॥ छुं तुम अंगज एह के अवर, कूड
तो हत्या द्विजवर ॥ १ ॥ हत्यापातक बिहितो तेह साचुं कहे गुण
गुणगेह ॥ ए मुज नातीनो अंगजात, भोमली सयली सयली वा
२ ॥ धन आप्युं तिहां कपिल अवर, घरपीजट चाल्यो निज नगर ॥
भामा गइ नृपनी पासें कर जोडीने एणि परें भासे ॥ ३ ॥ स्वामी तुं पं
लोकपाल, दीन अनाथ तणो रखवाल ॥ हुं दुःखणी नें अवला व
कर कर स्वामी सार संभाल ॥ ४ ॥ यतः ॥ दुर्बलानामनाथानां, बाल
तपस्विनाम् ॥ अन्यायपरिभूतानां, सर्वेषां पार्थिवोगतिः ॥ १ ॥ रूप्य
रोपे तरु उतपात, बाल तरुवरने सींचे ॥ कंटक काढे दूर, लग्न
राखे वच्चे ॥ कंच नमाडे जाड, भूमि पडतां केइ राखे ॥ जे फूल्यां बहु
तान पण लाडे न चखे ॥ एम अनेक माली तणा, गुण नवला अंग ध
राम कहे ने भूपति, सकल लोक संपति करे ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥

॥ वि० ॥ १० ॥ नगर निरीक्षणकारणें, नमतो कपिल कदापि रे ॥ स त्यकी पाठक तिहां वसे, द्विजवर अमल अपापी रे ॥ वी० ॥ ११ ॥ गात्र जणावे ते बहु, कपिल गयो तस गेह रे ॥ वेद अर्थ पूछे घणा, अगम अगोचर जेह रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ उत्तर नवि देई शक्यो, गात्र सबल मति मतो रे ॥ सत्यकी मन हरख्यो घणु, मतिगुण देखि महंतो रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ विद्यार्थी आदर लहे, विद्या सबल सखायी रे ॥ विद्या बधु विदेशमां, विद्या दैवत सहायी रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ यडुक्त ॥ हर्तुर्याति न गोचरं किम पि श पुष्णाति सर्वात्मना, ह्यर्थिभ्य प्रतिदीयमानमनिश वृद्धिं परामृशति ॥ कल्पांतेष्वपि न प्रयाति निधन विद्याख्यमतर्द्धन, येषां तान् प्रति मानमुज्झत जना कस्ते सह स्पर्द्धते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ योग्य जाणीने सत्यकी, कपिलने निजपद स्थापे रे ॥ विद्यागुण ए जीवने, बहु सुख पदवी आपे रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ यडुक्त ॥ गुणाव्धावादर कार्ये, किमाटोपै प्रयोजनम् ॥ विक्रीयंते न घंटाभि, र्गाव क्षीरविवर्जिता ॥ २ ॥ दोहो ॥ निर्गुण ठमे अप्पणा, परपुक्के गुण वत्त ॥ सिर धारिकें वण कुसुम, अगज मल ठम्मत्त ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ पाठकगृहिणी जबुका, तस पुत्री सत्यनामा रे ॥ कपिलने जाणी योग्यता, परणावी अभि रामा रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ नाम थयुं ते नयरमा, कपिल कपिल सहु बोले रे ॥ पुण्यवशा जस पाधरी, ते नरने कुण तोलें रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ उपाध्याय हरख्यो घणुं, मुफ नाग्यें ए मलियो रे ॥ पुत्री पुण्यवती घणु, सबल मनो रथ फलियो रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ जग जीवाडण एहवे, वृषा ऋतु तिहां आवे रे ॥ सबल घटा घन मेलवी, जगमांहे जल वरसावे रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ चिहु दिशें चमके दामिनी, सबल सजल घन गाजे रे ॥ जलधारा वरसे घणु, ताप जगतनो नांजे रे ॥ वि० ॥ २० ॥ इण अवसरें रयणी समे, नाटक देखण काजें रे ॥ कपिल गयो ते एकलो, बेठो जइनें समाजें रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ नाटक जोईने वल्यो, विरमी नहिं जलधारो रे ॥ मन चिंते इहां मनुष्यनो, नहिं कोई सचारो रे ॥ वि० ॥ २२ ॥ कोण अंशुक नीना करे, वस्त्र सकल उतारी रे ॥ थई निरंशुक नीसर्यो, कक्षांतर सवि धारी रे ॥ वि० ॥ २३ ॥ आवी निज घर आंगणे, अंशुक पहेरी अगें रे ॥ घर पेसता सामुही, सत्यनामा मन रंगें रे ॥ वि० ॥ २४ ॥ अंशुक पिघु आगल धर्या, नूतन कपिल निहाली रे ॥ सुण वनिते मत्रें करी,

यण नावें रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ श्रीजिनवरनी वाणी रे ॥ ... दोहिली, मीठी अमिय समाणी रे ॥ न० ॥ २ ॥ दोष अढारथी ... अरिहंत प्रभु आराधो रे ॥ सेवो सुगुरु सुसाधुजी, आतमधर्मने ... रे ॥ न० ॥ ३ ॥ एक असयम टालीयें, डुविध धर्म आदरियें रे ॥ हरियें त्रण दंमने, चित्तमां चार न धरियें रे ॥ न० ॥ ४ ॥ पंच ... हो पंचने, करि सबला मन साथें रे ॥ पचाराधनथी करो, पंचमगति ... थाशो रे ॥ न० ॥ ५ ॥ षट उपरें करुणा करो, षट लोकें नवि चलियें रे काढो षट्क मिथ्यात्वनु, षट् वैरीनें दलीयें रे ॥ न० ॥ ६ ॥ सातन नय नवि संपजे, सातने नाणे दिलमां रे ॥ सातमांहे नवि ऊपजे धर्मे शिवसुख पलमा रे ॥ न० ॥ ७ ॥ आठ जणी उन्मूलियें, ... कीजें अलगा रे ॥ अष्टम पुढवीना सुख लहे, जे ए धर्मेशु वलग्या रे ॥ न० ॥ ८ ॥ नवविध वाडि विशेषथी, धरियें शील सुरंगो रे ॥ नव निधि सहेजें रे संपजे, परजव शिवसुखयोगो रे ॥ न० ॥ ए ॥ द विध धर्म समाचरो, आणी मन वैरागो रे ॥ मंगलकलश तणी परें, धन्य ते माहाजागो रे ॥ न० ॥ १० ॥ तव श्रीषेण नरेश्वरु, बोले वे कर जोडी रे ॥ जगवन् मंगलकलशनो, कहो संबध गुण जोडी रे ॥ न० ॥ ११ ॥ एकमना जवि साजलो, एह सरस संबध रे ॥ चोथी ढालमा माहामुनि, कहे देशन अनुबधो रे ॥ न० ॥ १२ ॥ उपकारी अणगारजी, जवि जन हितना रागी रे॥कहेशे श्रीषेण आगलें, वात सबल वैरागी रे॥न० ॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीजिनवरपदकज नमी, धरि मनमा आनंद ॥ मंगलकलश कुमारनु, कहु चरित्र सुखकद ॥ १ ॥ नयरी अवंती अति जली, अमरपुरी अवतार ॥ गढ मढ मंदिर शोजती, वाप्य सरोवर सार ॥ २ ॥ वैरसिंह नामें जलो, गुणनिष्पन्न जस नाम ॥ राजा राज्य करे तिहां, सुंदर शोजा धाम ॥ ३ ॥ ते नयरीमाहे वसे, धनें धनद उपमान ॥ नामें धनदत्त शेवजी, सकलकलानो जाण ॥ ४ ॥ जाणे जीव अजीवने, सत्य शील सुविनीत ॥ नक्तिवत गुरु देवनो, पाले शील सुरीत ॥ ५ ॥ सत्यजामा नामें जली, शीलकुल रुपदेह ॥ जामिनी निज नर्त्तारशु, राखे अविचल

हीन पति मुज कर चढियो, कोइक पूरव दुष्कृत नडियो ॥ हवे एहथी के हवो रतिराग, मुज मनमां वसियो वैराग ॥ ५ ॥ ते माटें तुम पासें आवी, वात कहो तेनें समजावी ॥ जिम आ जन्म लगें हुं शील, पालुं जेहथी लहियें लील ॥ ६ ॥ श्रीषेणराय सुणी एम वात, तेम्यो कपिल जणी साक्षात ॥ तुज गृहवासथी विरमी नार, विगतनेह कपर श्यो प्यार ॥ ७ ॥ मूक तुं एहने जनकने गेह, पाले शील सुनिर्मलदेह ॥ वलतुं बोले कपिल विमासी, महाराज शी मामी हांसी ॥ ८ ॥ प्राणप्रिया ए केम मूकाय, ए विण घडी वरसा सो थाय ॥ राजन् जीवननी ए मूली, प्रीति न जाये में उन्मूली ॥ ए ॥ प्राण कहु तो ए न कहाय, ए विण प्राण घणुं सीदाय ॥ स्वामी वलि वलि शु बोलावो, प्राणप्रियाने घर वोलावो ॥ १० ॥ कहे जामा वलतु मन मेली, ए सार्थे नवि करवी केली ॥ जो नहि मेहले किमही एह, अनलशरण करशु आ देह ॥ ११ ॥ राजन कपिल जणी एम जांखे, केम माटीपणे एहने राखे ॥ मन मोती जाग्यां छे जेह, कहो किण परें संधाये तेह ॥ १२ ॥ मुज मदिरमां रहेशे एह, पुत्रीपरें साचल ससनेह ॥ वात सुणी विलखो थइ वलियो, पण मनमां कोपें कलक लियो ॥ १३ ॥ जामा रहे राणीनी पासें, पाले शील अखंम उल्लासें ॥ राम कहे त्रीजी ढाल मजार, धन्य जे राखे निज आचार ॥ १४ ॥ स० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विमलबोध इण अवसरें, सूरीश्वर जगवत ॥ बहु परिवारें परवस्था, जूमंमल विचरंत ॥ १ ॥ पावन करता पाउले, अवनीतल मुनिराज ॥ जे अगाध जवसिंधुना, तारण तरण जहाज ॥ २ ॥ समितियें समिता साधु जी, साचा जेहना वास ॥ दास कस्यो कंदर्पने, न पड्या आशापास ॥ ३ ॥ रत्नपुरीनें परिसरें, देवरमण उद्यान ॥ ते मुनि आवि समोसस्था, श्रुतज्ञानी जगवान ॥ ४ ॥ सुणि आगमन मुनीशनुं, लोकमुखें नरराज ॥ मुनिवर वदन नीसस्यो, लेई सबलो साज ॥ ५ ॥ विधिशुं वंदी साधुनें, त्रिविधें थइ उजमाल ॥ निसुणे अमृतस्राविणी, मुनिदेशन सुरसाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ चेतन चेतो रे चेतना ॥ ए देशी ॥ मानवजव सबलो लई, दुलहो दश दृष्टातें रे ॥ मूकी रे निद्रा मोहनी, धर्म करो एकांतें रे ॥ १ ॥ जवि

पूजी जिन मंदिरमां, जाये मननी खातें ॥ प्री० ॥ ११ ॥ 'च'
त्रण त्रण निसिही, दशत्रिक जाणी उरमां ॥ परमेश्वर आगल परकासे
चैत्यवदन जिन घरमां ॥ प्री०॥ १२ ॥ अथ चैत्यवदन ॥ परमेश्वर रम
तमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥
अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु ॥ जगतीजन आधार एक,
रण वधु ॥ गुण अनत प्रज्ञु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ २।
चि ... थाय ॥१॥ निजरूपें शिवस्थानकें, इय्यें
प्री, प्रगट जगमाही ॥ अध्यातमथी जोडियें
मान नाव, पामे निरधार ॥ पावन
। ते प्रज्ञु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुख
ढाल ॥ शक्रस्तव पनणे कर जोडी,
रे प्रज्ञुनु लेखवतो, निज आतमनें धन्य
राग सारंग ॥ मन मोह्यु प्रज्ञु गुणगानमां ।
मोहसुराके पानमा ॥ म० ॥ १ ॥
गयो अज्ञानमा ॥ हवे कोइक पुण्योदय
गां ॥ म० ॥ २ ॥ अतर नर्म गयो सवि दूरें
३ तुम दृष्टि नई मोहि ऊपर, अंतर
सरस देख्यो जिनजीको, लग्न लगी तु०
कृपानिधि, ऊंर न देखो जिहानमां ॥ म० ॥
ारी, परमातम शुचि वानमां ॥ राम
ग्र प्रमाणमा ॥ म० ॥ ५ ॥ इति
शुनध्यानें जिनगुण थुणतां, सुणता सद्गुरु
नावें, धनदत्त धन गुणखाणी ॥प्री०॥१४॥
एम बोले ॥ आप्यो सुत वर शेठ विचारे,
॥ १५ ॥ सत्यनामा रयणीयें दीठु, मंगल
नरशे महारु, वाजणीनु सहि महेणु ॥ प्री०
ाव्यो, सुत सुंदर सोनागी ॥ पंचमी ढालें राम
गी ॥ प्री० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

नेद् ॥ ६ ॥ सुख सघलां ते अनुनवे, पंच विषय वर नोग ॥ पण सुत नहि काइ तेहनें, सवल कर्म सयोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नाना सूडा हो, वात सुणो एक मीठी ॥ ए देशी ॥ एक दिवस ते शेठ ना चित्तमा, सुतनी चिंता पेठी ॥ कर जोडी कामिनी एम पूछे, पीयुनी पासें बेठी ॥ १ ॥ प्रीतम प्यारा रे, वात कहो मन मूकी ॥ ए आंकणी ॥ अविनय आज लगें पियु तुमचो, नवि कीधो काइ चूकी ॥ प्री० ॥ २ ॥ शेठ कहे नाखी नीशासो, कामिनी सुत विण शून्य ॥ रात दिवस ए वेदन मनमां, बीजु नहिं कांइ ऊणुं ॥ प्री० ॥ ३ ॥ यडुक्त ॥ अपुत्रस्य गृहं शून्यं, दिश शून्या ह्यबांधवा ॥ मूर्खस्य हृदय शून्य, सर्वशून्य दरिद्रता ॥ १ ॥ ॥ पूर्वढाल ॥ वलतु विनता कहे सुण कंता, शी चिंतो ए चिंता ॥ नावी नाव टले नहिं कोइ, रहियें मन निश्चिंता ॥ प्री० ॥ ४ ॥ यडुक्त ॥ प्राप्तव्योनियतिबलाश्रयेन योऽर्थ, सोवश्य नवति नृणा शुनोशुनोवा ॥ नूतानां महति कृतेपि हि प्रयत्ने, नानाव्यं नवति न नाविनोस्ति नाश ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ धर्म जगतमा सवि सुखकारी, करे धरी एकतारी ॥ जेहनी छाया सुरतरु सरिखी, वाछित फल दातारी ॥ प्री० ॥ ५ ॥ यत ॥ धर्मे सिधोर्ध्रुवा सिद्धि, र्द्युम्नप्रद्युम्नयोरपि ॥ दुग्धोपलब्धे सुलना, सपत्तिर्वेधि सर्पिषो ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ देवगुरुनी नक्ति करीजें, दान सुपात्रे दीजें ॥ परिगल वित्त पामी अवसर, शुनगामें वावीजें ॥ प्री० ॥ ६ ॥ यत ॥ व्याजे स्याद्विगुण वित्तं, व्यवसाये चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुण प्रोक्त, पात्रेऽनंतगुणं नवेत् ॥ ४ ॥ पाकारेणोच्यते पापं, त्रकारस्त्राणवाचक ॥ अक्षरद्वयसंयोगे, पात्रमुक्त मनीषिनि ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ एम करतां जो सुत नवि थाशे, परनव निर्मल होशे ॥ देवगुरुनी नक्ति जलि परें, पाप पंकज सवि धोशे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ मुफ मनडे मनमोहन वसियो, अनुनव रस अति मीठो ॥ जेह अनंते कालें प्रीतम, कहियें में नवि दीठो ॥ प्री० ॥ ८ ॥ वात सुणी विनतानी वारु, गइ विकलता मनथी ॥ वचन कहे प्रीतम ए साचु, हरख्यो हु हवे तनथी ॥ प्री० ॥ ए ॥ मंदिर मालीनें ते ठीने, धन आपीने पोष्यो ॥ प्रतिदिन परमेश्वर पूजानें, कुसुम नणी संतोष्यो ॥ प्री० ॥ १० ॥ पोतें शेठ जई तस वाडी, लावे फूल प्रनातें ॥ गृहजिन

पूजी जिन मंदिरमा, जाये मननी खांते ॥ प्री० ॥ ११ ॥ पंचाभिगमें त्रण त्रण निसिही, दशत्रिक जाणी उरमां ॥ परमेश्वर आगल परकासे, चैत्यवदन जिन घरमा ॥ प्री०॥ १२ ॥ अथ चैत्यवदन ॥ परमेश्वर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु ॥ जगतीजन आधार एक, नि कारण बंधु ॥ गुण अनत प्रजु तादृश ए, किमही कह्या न जाय ॥ रामप्रजु जिनध्यानथी, चिदानद सुख थाय ॥१॥ निजरूपें शिवस्थानकें, इण्यें पण तिमही ॥ नाम स्थापना जेदथी, प्रगट जगमांही ॥ अध्यातमथी जोडियें, निक्षेपा चार ॥ तो प्रजुरूप समान जाव, पामे निरधार ॥ पावन आतमनें करे ए, जन्म जरादिक दूर ॥ ते प्रजु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुखपूर ॥ २ ॥ इति चैत्यवदन ॥ पूर्वढाल ॥ शक्रस्तव जणे कर जोडी, जाव धरी निज मनमां ॥ स्तवन करे प्रजुनु लेखवतो, निज आतमनें धन्यमां ॥ प्री०॥ १३ ॥ अथ स्तवन ॥ राग सारंग ॥ मन मोह्यु प्रजु गुणगानमां ॥ काल अनत न जाण्यो जातो, मोहसुराके पानमां ॥ म० ॥ १ ॥ एकेंडिय बि ति चउरिंडियमा,काल गयो अज्ञानमा ॥ हवे कोइक पुण्योदय प्रगट्यो, आय मिलो प्रजु ध्यानमां ॥ म० ॥ २ ॥ अतर जर्म गयो सवि दूरें, तत्त्व सुधारसपानमा ॥ प्रजु तुम दृष्टि जई मोहि ऊपर, अंतर आतम शानमा ॥ म० ॥ ३ ॥ दरस सरस देख्यो जिनजीको, लग्न लगी तुऊ ज्ञानमां ॥ केवल कमलाकत कृपानिधि, उर न देखो जिहानमा ॥ म० ॥ ४ ॥ अशरणशरण जगत उपगारी, परमातम शुचि वानमां ॥ राम कहे तुम आण जवोजव, धारी नयर प्रमाणमा ॥ म० ॥ ५ ॥ इति साधरण जिनस्तुति ॥ पूर्वढाल ॥ एम शुजध्यानें जिनगुण थुणतां, सुणता सज्जुरु वाणी ॥ पात्रें दान दिये जले जावें, धनदत्त धन गुणखाणी ॥प्री०॥१४॥ धर्म प्रजावें शासनदेवी, तुष्ट थई एम बोले ॥ आप्यो सुत वर शेठ विचारे, नहि कोइ धर्मनें तोले ॥ प्री० ॥ १५ ॥ सत्यजामा रयणीयें दीठुं, मगल कलशनु सुहणु ॥ मन चिंते कतरशे महारु, वांऊणीनु सहि महेणु ॥ प्री० ॥ १६ ॥ सपूरण नव मासें प्रसव्यो, सुत सुदर सोजागी ॥ पंचमी ढालें राम विजय कहे, धर्म करो वडजागी ॥ प्री० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

नेह ॥ ६ ॥ सुख सघलां ते अनुनवे, पंच विषय वर नोग ॥ पण सुत नहिं कांइ तेहनें, सबल कर्म संयोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नाना सूडा हो, वात सुणो एक मीठी ॥ ए देशी ॥ एक दिवस ते शेठ ना चित्तमा, सुतनी चिंता पेठी ॥ कर जोडी कामिनी एम पूछे, पीउनी पासें बेठी ॥ १ ॥ प्रीतम प्यारा रे, वात कहो मन मूकी ॥ ए आंकणी ॥ अविनय आज लगें पियु तुमचो, नवि कीधो कांइ चूकी ॥ प्री० ॥ २ ॥ शेठ कहे नाखी नीशासो, कामिनी सुत विण शून्य ॥ रात दिवस ए मनमां, बीजुं नहिं काइ कण्य ॥ प्री० ॥ ३ ॥ यडुक्तं ॥ अपुत्रस्य गृहं शून्यं, दिश शून्या ह्यबांधवा ॥ मूर्खस्य हृदयं शून्यं, सर्वशून्यं दरिद्रता ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ वलतु विनता कहे सुण कंता, शी चिंतो ए चिंता ॥ नाव टले नहिं कोइ, रहियें मन निश्चिंता ॥ प्री० ॥ ४ ॥ यडुक्तं ॥ व्योनियतिबलाश्रयेण योऽर्थः, सोवश्य नवति नृणां शुनोशुनोवा ॥ नूतानां महति कृतेपि हि प्रयत्ने, नानाव्यं नवति न नाविनोस्ति नाशः ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ धर्म जगतमा सवि सुखकारी, करे धरी एकतारी ॥ जेहनी छाया सुरतरु सरिखी, वांछित फल दातारी ॥ प्री० ॥ ५ ॥ यत ॥ धर्मं सिधोर्ध्रुवा सिद्धि, धुंम्नप्रद्युम्नयोरपि ॥ डुग्धोपलंने सुलना, सपत्तिर्दधि सर्पिषो ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ देवगुरुनी नक्ति करीजें, दान सुपात्रे दीजें ॥ परिगल वित्त पामी अलवेसर, शुनगामें वावीजें ॥ प्री० ॥ ६ ॥ यत ॥ व्याजे स्याद्विगुणं वित्तं, व्यवसाये चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं, पात्रेऽनंतगुणं नवेत् ॥ ४ ॥ पाकारेणोच्यते पापं, त्रकारस्त्राणवाचकः ॥ अक्षरद्वयसंयोगे, पात्रमुक्तं मनीषिनिः ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ एम करतां जो सुत नवि थाशे, परनव निर्मल होशे ॥ देवगुरुनी नक्ति नलि परें, पाप पंकज सवि धोशे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ मुऊ मनडे मनमोहन वसियो, अनुनव रस अति मीठो ॥ जेह अनंते कालें प्रीतम, कहियें में नवि दीठो ॥ प्री० ॥ ८ ॥ वात सुणी विनतानी वारु, गइ विकलता मनथी ॥ वचन कहे प्रीतम ए साचुं, दरख्यो हुं हवे तनथी ॥ प्री० ॥ ९ ॥ मंदिर मालीनें तेडीने, धन आपीने पोष्यो ॥ प्रतिदिन परमेश्वर पूजानें, कुसुम नणी संतोष्यो ॥ प्री० ॥ १० ॥ पोतें शेठ जई तस वाडी, लावे फूल प्रनातें ॥ गृहजिन

। जिन मंदिरमां. जाये मननी खांतें ॥ प्री० ॥ ११ ॥ पंचाभिगमें
। त्रण निसिही, दशत्रिक जाणी उरमां ॥ परमेश्वर आगल परकाशे.
त्यवदन जिन घरमा ॥ प्री०॥ १२ ॥ अथ चैत्यवदन ॥ परमेश्वर परमा
ा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव. नयणें में दिठ ॥ अचल
कल अविकार सार, करुणारस सिंधु ॥ जगतीजन आधार एक नि का
। वंधु ॥ गुण अनंत प्रभु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ रामप्रभु
नध्यानथी. चिदानद सुख थाय ॥१॥ निजरूपें शिवस्थानकें द्रव्यें पण
मही ॥ नाम स्थापना भेदथी प्रगट जगमांही ॥ अध्यातमथी जोडियें
क्षेपा चार ॥ तो प्रभुरूप समान भाव पामे निरधार ॥ पावन आतमनें
ं ए जन्म जरादिक दूर ॥ ते प्रभु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुखपूर
२ ॥ इति चैत्यवदन ॥ पूर्वढाल ॥ शक्रस्तव भणणे कर जोडी, भाव
री निज मनमां ॥ स्तवन करे प्रभुनुं लेखवतो निज आतमनें धन्यमां
प्री०॥ १३ ॥ अथ स्तवन ॥ राग सारंग ॥ मन मोह्यु प्रभु गुणगानमां ॥
ाल अनंत न जाण्यो जातो, मोहसुराके पानमां ॥ म० ॥ १ ॥ एकें
्य बि ति चउरिंद्रियमां काल गयो अज्ञानमां ॥ हवे कोइक पुण्योदय प्रग
यो, आय मिल्यो प्रभु ध्यानमा ॥ म० ॥ २ ॥ अंतर भर्म गयो सवि दूरें
त्त्व सुधारसपानमां ॥ प्रभु तुम दृष्टि भई मोहि ऊपर. अंतर आतम
ानमां ॥ म० ॥ ३ ॥ दरस सरस देख्यो जिनजीको, लग लगी तुझ
ानमां ॥ केवल कमलाकत कृपानिधि. उर न देखो जिहानमां ॥ म० ॥
॥ अशरणशरण जगत उपगारी, परमातम शुचि वानमां ॥ राम कहे
ुम आण भवोभव धारी भयर प्रमाणमां ॥ म० ॥ ५ ॥ इति साधरण
जिनस्तुति ॥ पूर्वढाल ॥ एम शुभध्यानें जिनगुण थुणता. सुणतां सद्गुरु
वाणी ॥ पात्रें दान दिये भले भावें धनदत्त धन गुणखाणी ॥प्री०॥१४॥
धर्म प्रभावें शासनदेवी तुष्ट थई एम बोले ॥ आप्यो सुत वर ओठ विचारे,
नहिं कोइ धर्मनें तोले ॥ प्री० ॥ १५ ॥ सत्यभामा रयणीयें दीठुं, मंगल
कलशनु सुहणु ॥ मन चिंते ऊतरशे महारुं, वांझणीनुं सहि महेणु ॥ प्री०
॥ १६ ॥ सपूरण नव मासें प्रसव्यो, सुत सुंदर सोभागी ॥ पचमी ढालें राम
विजय कहे, धर्म करो वडभागी ॥ प्री० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

नेह ॥ ६ ॥ सुख सघलां ते अनुभवे, पंच विषय वर भोग ॥ पण सुत नहिं कांइ तेहनें, सबल कर्म संयोग ॥ ७ ॥

॥ढाल पांचमी॥

॥ नाना सूडा हो, वात सुणो एक मीठी ॥ ए देशी ॥ एक दिवस ते शेठ ना चित्तमा, सुतनी चिंता पेठी ॥ कर जोडी कामिनी एम पूछे, पीउनी पासें बेठी ॥ १ ॥ प्रीतम प्यारा रे, वात कहो मन मूकी ॥ ए आंकणी ॥ अविनय आज लगें पियु तुमचो, नवि कीधो कांइ चूकी ॥ प्री० ॥ २ ॥ शेठ कहे नाखी नीशासो, कामिनी सुत विण शून्य ॥ रात दिवस ए मनमां,बीजु नहिं कांइ कण्य ॥ प्री०॥ ३ ॥ यद्युक्त ॥ अपुत्रस्य गृहं दिश शून्या ह्यबांधवा ॥ मूर्खस्य हृदयं शून्य, सर्वशून्य दरिद्रता ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ वलतुं विनता कहे सुण कंता, शी चिंतो ए चिंता ॥ भाव टले नहिं कोइ, रहियें मन निश्चिंता ॥ प्री० ॥ ४ ॥ यद्युक्त ॥ प्राप्तव्योनियतिबलाश्रयेन योऽर्थ , सोवश्यं भवति नृणा शुभोशुभोवा ॥ भूतानां महति कृतेपि हि प्रयत्ने, नाभाव्यं भवति न भाविनोस्ति नाश ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ धर्म जगतमां सवि सुखकारी, करे धरी एकतारी ॥ जेहनी छाया सुरतरु सरिखी, वाछित फल दातारी ॥ प्री० ॥ ५ ॥ यत ॥ धर्मं सिंधोर्ध्रुवा सिद्धि, र्युम्नप्रद्युम्नयोरपि ॥ दुग्धोपलंभे सुलभा, सपसिर्दधि सर्पिषो ॥ २ ॥ पूर्वढाल॥ देवगुरुनी भक्ति करीजें, दान सुपात्रे दीजें ॥ परिगल वित्त पामी अलवेसर, शुभमार्गें वावीजें ॥ प्री० ॥ ६ ॥ यत ॥ व्याजे स्याद्विगुण वित्तं, व्यवसाये चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुण प्रोक्तं, पात्रेऽनतगुणं भवेत् ॥ ४ ॥ पाकारेणोच्यते पापं, त्रकारस्त्राणवाचक ॥ अक्षरद्वयसंयोगे, पात्रमुक्तं मनीषिभि ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ एम करतां जो सुत नवि थाशे, परभव निर्मल होशे ॥ देवगुरुनी भक्ति भलि परें, पाप पंकज सवि धोशे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ मुझ मनडे मनमोहन वसियो, अनुभव रस अति मीठो ॥ जेह अनंते कालें प्रीतम, कहियें में नवि दीठो ॥ प्री० ॥ ८ ॥ वात सुणी विनतानी वारु, गइ विकलता मनथी ॥ वचन कहे प्रीतम ए साचुं, हरख्यो हु हवे तनथी ॥प्री० ॥ ९ ॥- मंदिर मालीनें ते हीने, धन आपीने पोष्यो॥ प्रतिदिन परमेश्वर पूजानें, कुसुम भणी संतोष्यो ॥ प्री० ॥ १० ॥ पोतें शेठ जई तस वाडी, लावे फूल प्रभातें ॥ गृहजिन

पूजी जिन मंदिरमां, जाये मननी खांतें ॥ प्री० ॥ ११ ॥ पंचाभिगमें त्रण त्रण निसिही, दशत्रिक जाणी उरमां ॥ परमेश्वर आगल परकासे, चैत्यवदन जिन घरमां ॥ प्री०॥ १२ ॥ अथ चैत्यवदन ॥ परमेश्वर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु ॥ जगतीजन आधार एक, नि कारण बंधु ॥ गुण अनत प्रनु ताहरा ए, किमही कह्या न जाय ॥ रामप्रनु जिनध्यानथी, चिदानद सुख थाय ॥१॥ निजरूपें शिवस्थानकें, इव्यें पण तिमही ॥ नाम स्थापना नेदथी, प्रगट जगमांही ॥ अध्यातमथी जोडियें, निक्षेपा चार ॥ तो प्रनुरूप समान नाव, पामे निरधार ॥ पावन आतमनें करे ए, जन्म जरादिक दूर ॥ ते प्रनु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुखपूर ॥ २ ॥ इति चैत्यवदन ॥ पूर्वढाल ॥ शक्रस्तव पनणे कर जोडी, नाव धरी निज मनमा ॥ स्तवन करे प्रनुनुं लेखवतो, निज आतमनें धन्यमां ॥ प्री०॥ १३ ॥ अथ स्तवन ॥ राग सारंग ॥ मन मोह्यु प्रनु गुणगानमां ॥ काल अनत न जाण्यो जातो, मोहसुराके पानमां ॥ म० ॥ १ ॥ एकेंडिय बि ति चउरिंडियमा,काल गयो अज्ञानमां ॥ हवे कोइक पुण्योदय प्रगव्यो, आय मिलो प्रनु ध्यानमां ॥ म० ॥ २ ॥ अतर नर्म गयो सवि दूरें, तत्त्व सुधारसपानमां ॥ प्रनु तुम दृष्टि नई मोहि ऊपर, अतर आतम शानमां ॥ म० ॥ ३ ॥ दरस सरस देख्यो जिनजीको, लम लगी तुऊ ज्ञानमां ॥ केवल कमलाकत कृपानिधि, उंर न देखो जिहानमा ॥ म० ॥ ४ ॥ अशरणशरण जगत उपगारी, परमातम शुचि वानमां ॥ राम कहे तुम आण नवोनव, धारी नयर प्रमाणमा ॥ म० ॥ ५ ॥ इति साधरण जिनस्तुति ॥ पूर्वढाल ॥ एम शुनध्यानें जिनगुण शुणतां, सुणता सद्गुरु वाणी ॥ पात्रें दान दिये नले नावें, धनदत्त धन गुणखाणी ॥प्री०॥१४॥ धर्म प्रनावें शासनदेवी, तुष्ट थई एम बोले ॥ आप्यो सुत वर शेठ विचारे, नहिं कोइ धर्मनें तोले ॥ प्री० ॥ १५ ॥ सत्यनामा रयणीयें दीठुं, मगल कलशनुं सुहणु ॥ मन चिंते कतरशे मदारु, वांऊणीनु सहि महेणु ॥ प्री० ॥ १६ ॥ सपूरण नव मासें प्रसव्यो, सुत सुदर सोनागी ॥ पंचमी ढालें राम जिजय कहे, धर्म करो वडनागी ॥ प्री० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा ॥ १२५ ॥

नेह ॥ ६ ॥ सुख सघलां ते अनुनवे, पंच विषय वर नोग ॥ पण नहिं कांइ तेहनें, सबल कर्म संयोग ॥ ७ ॥

॥ढाल पांचमी॥

॥ नाना सूडा हो, वात सुणो एक मीठी ॥ ए देशी ॥ एक दिवस ते शेठ ना चित्तमा, सुतनी चिंता पेठी ॥ कर जोडी कामिनी एम पूछे, पीउनी पासें बेठी ॥ १ ॥ प्रीतम प्यारा रे, वात कहो मन मूकी ॥ ए आंकणी ॥ अविनय आज लगें पिउ तुमचो, नवि कीधो काइ चूकी ॥ प्री० ॥ २ ॥ शेठ कहे नाखी नीशासो, कामिनी सुत विण शून्य ॥ रात दिवस ए मनमां,बीजु नहि काइ कणु ॥ प्री०॥ ३ ॥ यडुक्त ॥ अपुत्रस्य गृहं शून्यं, दिश शून्या ह्यबाधवा ॥ मूर्खस्य हृदय शून्यं, सर्वशून्य दरिद्रता ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ वलतु विनता कहे सुण कंता, शी चिंतो ए चिंता ॥ नाव टले नहिं कोइ, रहियें मन निश्चिंता ॥ प्री० ॥ ४ ॥ यडुक्त ॥ व्योनियतिवलाश्रयेन योऽर्थ , सोवश्यं नवति नृणा शुनोशुनोवा ॥ महति कृतेपि हि प्रयत्ने, नानाव्यं नवति न नाविनोस्ति नाश ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ धर्म जगतमा सवि सुखकारी, करे धरी एकतारी ॥ जेहनी ठाया सुरतरु सरिखी, वांछित फल दातारी ॥ प्री० ॥ ५ ॥ यत ॥ धर्मं सिधोर्ध्रुवा सिद्धि, र्ध्रुवप्रद्युम्नयोरपि ॥ दुग्धोपलने सुलना, सपसिर्दधि सर्पिषो ॥ २ ॥ पूर्वढाल॥ देवगुरुनी नक्ति करीजें, दान सुपात्रें दीजें ॥ परिगल वित्त पामी अलवेसर, शुनमार्गे वावीजें ॥ प्री० ॥ ६ ॥ यत ॥ व्याजे स्याद्द्विगुण वित्त, व्यवसाये चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुण प्रोक्तं, पात्रेऽनतगुणं नवेत् ॥ ४ ॥ पाकारेणोच्यते पापं, त्रकारस्त्राणवाचक ॥ अक्षरद्वयसंयोगे, पात्रमुक्तं मनीषिनि ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ एम करतां जो सुत नवि थाशे, परनव निर्मल होशे ॥ देवगुरुनी नक्ति नलि परें, पाप पंकज सवि धोशे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ मुऊ मनडे मनमोहन वसियो, अनुनव रस अति मीठो ॥ जेह अनंते कालें प्रीतम, कहियें में नवि दीठो ॥ प्री० ॥ ८ ॥ वात सुणी विनतानी चारु, गइ विकलता मनथी ॥ वचन कहे प्रीतम ए साधु, हरख्यो हु हवे तनथी ॥प्री० ॥ ९ ॥ मंदिर मालीनें ते हीने, धन आपीने पोष्यो॥ प्रतिदिन परमेश्वर पूजानें, कुसुम नणी संतोष्यो ॥ प्री० ॥ १० ॥ पोतें शेठ जई तस वाडी, लावे फूल प्रनातें ॥ गृहजिन

हो, एहनो विरहो ॥ मा० ॥ राणी साथे हो, एम निरधारी ॥ मा० ॥ तेड्यो मंत्री हो, सुबुद्धि विचारी ॥मा०॥५॥ तुज अंगजने हो, आपु बेटी ॥ मा० ॥ बहु धन साथे हो, गुणनी पेटी ॥ मा० ॥ राजन् मूको हो, एह ठगाइ ॥ मा० ॥ सरखा सरखी हो, होवे सगाइ ॥ मा० ॥ ६ ॥ हु तुज पायक हो, तुं मुज स्वामी ॥ मा० ॥ जोडी न जुगति हो, कहु शिर नामी ॥ मा० ॥ सरिखा कुलशु हो, सबंध कीजें ॥ मा० ॥ यश जगमाहे हो, स बलो लीजें ॥ मा० ॥ ७ ॥ यत ॥ कुलं च शीलं च सुनाथता च, विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च ॥ वरे गुणा सप्त विलोकनीया, स्तत पर भाग्यव शा हि कन्या ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ राजन बोले हो, मनडुं राजी ॥ मा० ॥ तोवलि एहमा हो, शु करे काजी ॥मा०॥ एह उखाणो हो, साचो जाणी ॥ मा० ॥ बोल न बोलो हो, अम्हशु ताणी ॥ मा० ॥ ८ ॥ पुत्री देवी हो, अवश्य अमारे ॥ मा० ॥ मनमा चिंते हो, सचिव तिवारें ॥ मा०॥ व्याघ्रतटीनो हो, न्याय ए आव्यो ॥ मा० ॥ न रहे राजा हो, में सम जाव्यो ॥ मा० ॥ ए ॥ रति रंभासी हो, रायनी तनया ॥ मा० ॥ मुज सुत कुष्ठी हो, सबलो अन्या ॥ मा० ॥ योग बेहुनो हो, कहो किम म लशे ॥ मा० ॥ अथवा भावी हो, कहो केम टलशे ॥ मा० ॥ १० ॥ अ थवा कुलनी हो, देवी साधी ॥ मा० ॥ करशु कारज हो, में मति लाधी ॥ मा० ॥ मानी वातज हो, ते घर वलियो ॥ मा० ॥ नृप राणीनो हो, वांछित फलियो ॥ मा० ॥ ११ ॥ मंदिर आवी हो, देवी समरी ॥ मा०॥ हरख्यो जाणी हो, आवी अमरी ॥ मा० ॥ पूछे कारण हो, किम स भारी ॥ मा० ॥ सुत मंदिरमा हो, कोढी भारी ॥ मा० ॥ १२ ॥ शु पू छेवु हो, करो नीरोगी ॥ मा० ॥ ठगनो राख्यो हो, बहु दिन रोगी ॥ मा० ॥ भांखे देवी हो, कर्म जे कीधा ॥ मा० ॥ चीकण रसना हो, न जाये लीधा ॥ मा० ॥ १३ ॥ यत ॥ कृतकर्मक्षयोनास्ति, कल्पको टिशतैरपि ॥ अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभम् ॥ ३ ॥ आरो हतु गिरिशिखरं, समुद्रमुल्लंघ्य यातु पातालम् ॥ विधिलिखिताक्षरमालं, फलति कपालं न भूपाल ॥ ४ ॥ नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेपि वशगा, विधिर्वंद्य सोपि प्रतिनियतकर्मैकफलद ॥ फलं कर्मायत्तं य दि किममरैः किं च विधिना, नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि नयेभ्य प्रभवति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुतजन्मोत्सव बहु कस्यो, खरची इव्य अपार ॥ सुपन नणी अभि धा ठवे, मंगलकलश कुमार ॥ १ ॥ पचधावें पाली जतो, बीज तणो जिम चद ॥ माय ताय मन वल्लहो, जीवन नयणानद ॥ २ ॥ सुत कुल रावे हर्षेछु, थापी निज उत्संग ॥ दे आशीष एणी परें, माता मनने रंग ॥ ३ ॥ चिर जीवो मुज नानडा, वाहालेसर सुकुमार ॥ तुज अला बला जइ पडो, खारा समुइ मजार ॥ ४ ॥ थयो पच वरष तणो, पाठवियो नीशाल ॥ मूकी विकथा गुरु कने, शास्त्र नणे उजमाल ॥ ५ ॥ निज उद्यमगति सुगुरु, चिंता रहित सुदेह ॥ विनय शास्त्र नणवा तणा, कारण सघलां एह ॥ ६ ॥ यत ॥ आचार्यपुस्तक निवास सहाय वासो, बाह्या इमे पठन पंचगुणा नराणाम् ॥ आरोग्य बुद्धिविनयोद्यमशास्त्ररागा, अन्यतरा पठन पंचगुणा नवति ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ नणि प्रवीण पोढो थयो, आठ वरसनो जाम ॥ वाडी जाता जनकनी, साथें चाल्यो ताम ॥ ७ ॥ साथें जइ लाव्यो कुसुम, पूज्या श्रीजिनराज ॥ प्रतिदिन लावे जइ तिहां, फुल सेवानें काज ॥ ८ ॥ वाडीमा जइ एकलो, लावे कुसुम सुवास ॥ कहेण न माने ताततु, हियडे जिनगुणवास ॥ ए ॥ एम चिहु दिन वीत्या पठी, एक दिवसनें योग ॥ जेह थयुं ते सांजलो, शुन नावीने नोग ॥ १० ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ केसरवरणो हो, काढ कसुबो ॥ माहारा लाल ॥ ए देशी ॥ जबू द्वीपें हो, दक्षिण नरतें ॥ माहारा लाल ॥ चपा नामें हो, अगें वर्त्ते ॥ मा० ॥ तिहां सुर सुदर हो, राजा राजे ॥ मा० ॥ नामें गुणावली हो, राणी ठाजे ॥ मा० ॥ १ ॥ पुत्री रूडी हो, तेहनी जाइ ॥ मा० ॥ त्रैलोक्यसुदरी हो, विधि निपाई ॥ मा० ॥ रूपें सारी हो, रंजा हारी ॥ मा० ॥ गजगति सारी हो, मोहनगारी ॥ मा० ॥ २ ॥ तनु सुकुमाली हो, अग निहाली ॥ मा० ॥ सुर नर मोहे हो, मुखहुं नाली ॥ मा० ॥ वेण सुंहाली हो, नागण काली ॥ मा० ॥ मदमतिवाली हो, वाणी रसाली ॥ मा० ॥ ३ ॥ नर यौवनमां हो, नामा आवी ॥ मा० ॥ राजसनामां हो, राय बुलावी ॥ मा० ॥ पुत्रीनेदें हो, मन वेधाणो ॥ म० ॥ चिंती नृपति हो, मन सपराणो ॥ मा० ॥ ४ ॥ आपु अलगी हो, तो दरिसण झलहो ॥ मा० ॥ कण न समाये

कुमर विचारे कर्मनी लीला रे ॥ जोइ ज्वलित अनल उतरियो रे, तिण दिशें चाल्यो शीतें गरियो रे ॥ ३ ॥ अश्वारक्षक नर बहु तापे रे, आव्यो कुवर तास समीपें रे ॥ हांसी करता ते नरने जाणी रे, साकेतिक नर बोल्यो वाणी रे ॥ ४ ॥ आव्य तु मुज पासें वत्स वहेलो रे, मंदिर माहरे थाइश सोहिलो रे ॥ एम कही आण्यो मंदिर तेह रे,सोंप्यो मंत्रीने करी नेह रे ॥ ५ ॥ अशन वसन आप्या मन गमतां रे, नाव नक्तियें करी जुगते जुगता रे ॥ चिंते कुवर कारिज कोइ रे, स्वारथ विण आदर नवि होइ रे ॥ ६ ॥ यत ॥ वृक्षं क्षीणफल त्यजति विहगा, शुष्क सर सारसा, पुष्पं पर्युषितं त्यजति मधुपा दग्ध वनांतं मृगा ॥ निर्द्रव्यं पुरुषं त्यजति गणिका भ्रष्ट नृप सेवका, सर्वे स्वार्थवशोजनोन्निरमते नो कस्य कोवल्लन ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ कुवर पूछे कारज दाखो रे, मंदिरमां किम गनो राखो रे ॥ शु मुज सार्थे काम तुम्हारे रे, मनमां महोटी न्राति हमारे रे ॥ ७ ॥ सचिव कहे ए चंपानयरी रे, सुर सुंदर नृप जींत्या वैरी रे ॥ नाम सुबुद्धि तस प्रधानो रे, हु तु कारज सुण सावधानो रे ॥ ८ ॥ नृपपुत्री मुज पुत्रने आपी रे, परणी आपो रतिरसव्यापी रे ॥ कुमर नणे श्यो पाड चढावो रे, अगजने का नवि परणावो रे ॥ ए ॥ तेह कहे मुज सुत ने कोढी रे, कर्म तणी गति विषमी पोढी रे ॥ कुमर कहे कीधु अविचारयु रे, पर्यागतनु जल उतारयु रे ॥ १० ॥ कुण एवो मूरख अविचारी रे, परणी आपे परने नारी रे ॥ मंत्री मुज कुल नहि आचारो रे, का बहु बोली लज्जा हारो रे ॥ ११ ॥ कूप उतारी वरतनें कापे रे, जे परणी अवरने आपे रे ॥ ते मार्टे न करु ए कामो रे, इण वार्टे परन्नव नहि गमो रे ॥ १२ ॥ यत ॥ मित्र द्रोही कृतघ्नश्च, स्तेयी विश्वासघातक ॥ चत्वार कर्मचांमाला, पंचमो जातिसन्नव ॥ २ ॥ हस्ते नरकपालं तु मदिरामांसन्नक्षणी ॥ न्नानु प्रष्ठति चांमाली, केनेयं दीयते गटा ॥ ३ ॥ मित्रद्रोही कृतघ्नश्च स्तेयी विश्वास घातक ॥ स्वार्थे च तत्परोयोहि, तेनेयं दीयते गटा ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ मंत्री बोले, जो न करीश एह रे, तो हु मारीश नहिं संदेह रे ॥ कुमर नणे मरवानुं दुःख क्षणनु रे, पण दुःख महोटु मुज लगननु रे ॥ १३ ॥ यत ॥ लोन्नश्चेदगुणेन किं पिशुनता यद्यस्ति किं पातकै, सत्यं चेत्तपसा च किं

॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ मंत्री बोले हो, केम कुलदेवी ॥ मा० ॥ काम न आवे हो, बहु दिन सेवी ॥ मा० ॥ देवी बोले हो, नहिं अम जोरो ॥ मा० ॥ सो बहुवेला हो, एह निहोरो ॥ मा० ॥ १४ ॥ कहो तो आपु हो, एक नर आणी ॥ मा० ॥ करशो चिंतित हो, कारिज जाणी ॥ मा० ॥ सचिव पयंपे हो, वात ए वहेली ॥ मा० ॥ देवी तुमने हो, करवी सहेली ॥ मा० ॥ १५ ॥ तव कहे देवी हो, नगरनी वहारें ॥ मा० ॥ तुज अश्वप वेसे हो, लावु तेवारें ॥ मा० ॥ पुरने द्वारें हो, वाले वेगें ॥मा०॥ ते नृपकन्या हो, परणी देशे ॥ मा० ॥ १६ ॥ गइ कुल देवी हो, एहवु जाखी ॥ मा० ॥ वात ए चित्तमा हो, सचिवें राखी ॥ मा० ॥ वाध्यो उजम हो, ढाल ए छठी ॥ मा० ॥ रामें दाखी हो, रागें मीठी ॥ मा० ॥ १७ ॥ सर्व गाथा १५१

॥ दोहा ॥

॥ हवे हर्षे वीवाहना, मामे अति मंमाण ॥ राय सचिव महोटे मनें, घुरवेढोल निशाण ॥ १ ॥ सामग्री सघरी सजी, मंमप अतिहि अनूप ॥ थंन थंन मणि पूतली, सोहे अतिहि सरूप ॥ २ ॥ अश्वपाल नर तेडिनें ठानो निज आवास ॥ वात कही धुरथी सवे, मंत्री मन उल्लास ॥ ३ ॥ जे कोइ आवे तुम कनें, बालक नवले रूप ॥ तेहने तुमें इहा लावजो, भेद न जाणे भूप ॥ ४ ॥ हवे कुलदेवी सचिवनी, भाखी जाणी कंत ॥ आवी उजेणी पुरी, हियडे हर्ष धरंत ॥ ५ ॥ फूल लेइ वाडीथकी, मार्गें वलता ताम ॥ आकाशें ऊभी रही, देवी बोले आम ॥ ६ ॥ फूल लेइ जाये अछे, जे बालक निजगेह ॥ राजसुता पाणिग्रहण, भाडे करशे तेह ॥ ७ ॥ वात सुणीनें चिंतवे, जइ कहु जनकने आज ॥ घेर गयो तव वीसर्यो, वल्यो गृहने काज ॥ ८ ॥ बीजे दिन तिमहिज सुणी, चिंते जाम कुमार ॥ महेल्यो घपाडी वातुले, चंपावनह मझार ॥ ९ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ सुण मेरी सजनी, रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥ आव्यो चंपा नयरी पासें रे, मनमां मंगलकलश विमासे रे ॥ कुण ए नगरी कुण ए वाडी रे, केणें आण्यो मुजने उपाडी रे ॥ १ ॥ भमतां थाक्यो सरोवर दीठु रे, पाणी पीधु टाढुं मीठु रे ॥ सरोवर पासें वड एक अलगो रे, तिहां जइ वडनी दोरें वलगो रे ॥ २ ॥ अस्तंगत थयो रवि तिण वेला रे,

आव्या नृपति गृहनें आगणे जी ॥ हर्ष धरी मनमांहे, सासूयें पोंख्य
घरने वारणे जी ॥ ६ ॥ वेग मायरामांहे, त्रैलोक्यसुंदरी मन हरखं
घणुं जी ॥ वरियो कुमर सुरग, गयें आप्यु घन धन नूपणु जी ॥ ७
कर नवि मूके कुमार, रायें पूछ्युं शी मन कामना जी ॥ आपे प
तुरग, चपलगति पाणी पथना जी ॥ ८ ॥ माग्यु आप्यु राय, हां
हुउं विवाह सोहामणो जी ॥ देखी कन्यारूप, कुमर थयो मनमांहे दय
मणो जी ॥९॥ कीधु सबल अकाज, कुमरी अमरी सरखी पद्मिणी जी
केम कोढीनें हाथ, देता निर्गमशे दिन जामिनी जी ॥ १० ॥ इम चि
वतो तेह, मदिर आव्यो बहु आमबरें जी ॥ देखी पियु चलचित्त, कुमर
चमकी हियडा नीतरें जी ॥ ११ ॥ इंगित जाणी जाव, केड न मूके
कुमरी तेहनी जी ॥ मनमांहे दिलगीर, रागे रगाणी मींजी जेहनी जी
१२ ॥ मत्री राय दिये मान, देहचिताने मिष करी नीसस्यो जी ॥ जल
झारी लेइ नारि, चाली जावे घूघट वीसस्यो जी ॥ १३ ॥ जेह कत्सु पण
तेह, दीठो शून्यमनें उनो रह्यो जी ॥ सोंपीयो तमने देह, नूख तृपा वे
ठे मुजने कह्यो जी ॥ १४ ॥ हा ना न कहे रे काइ, मन जाणी मोदव
मगाविया जी॥ कुवर चाखी रे लेइ, अवसर वचन कहे रस नाविया जी
॥ १५ ॥ दोहो ॥ मीठा ए मोदक जला, खाता नांगे नूख ॥ पण नी
उजेणीनु मले, तो सवि थाये सुख ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ चिंते राज
कुमार, शु ए जाणे उजेणी नीरने जी ॥ अथवा तिहां कोइ दीस, गयो
होशे घर मात त्यां वीरने जी ॥ १६ ॥ जलें कीधू मुख शुद्ध, वीडुं आप्यु
हाथे कथने जी ॥ आव्यो मदिर सोय, विनता बोले लही चल चित्तने
जी ॥ १७ ॥ केम पियु थें दिलगीर, वात कहो मनमां होवे जिसी
जी ॥ डुखे उदर मुझ जोर, एम कही देहचिता उठ्यो धसी जी ॥
१८ ॥ विनता रही विश्वास, जल लेइ केडेंथी जाशुं वही जी ॥ ते पहो
च्यो ततकाल, वस्तु उजेणीपंथें जिहां रही जी ॥ १९ ॥ रथ आरोपी
वस्तु, चार तुरगम जोडें जोतस्या जी॥ वाध्यो पूठें रे एक, चाल्या तुरत
तिहांथी पाधरा जी ॥ २० ॥ पूछे पंथीने पंथ, कुमर वेगे रथ निर्जयपणे
जी ॥ थोडा दिवस मझार, कुमर पहोतो नगरें आपणे जी ॥ २१ ॥

शुचिमनोयद्यस्ति तीर्थेन किम्॥ सौजन्यं यदि किं निजे स्वमहिमा यद्यस्ति किं मण्डनै, सद्विद्या यदि किं धनैरपयशोयद्यस्ति किं मृत्युना ॥ ५ ॥ पूर्व ढाल ॥ खड्ग उपाडी मारण धायो रे, वचमा पुरुषे मंत्री साह्यो रे ॥ समझाव्यो मान ए वयण रे, नहिं इहां कोइ तादृश सयण रे ॥ १४ ॥ कुमरें दैवती वाणी सचारी रे, नावि जाण्यु मन निरधारी रे ॥ मन पासें मानी ए वात रे, हरख्यो मंत्री साते धात रे ॥ १५ ॥ वजडावे नोबत निशाण रे, वोले वदीजन कल्याण रे ॥ गाये गोरी गीत सुजाण रे, चिरं जीवो कुवर कुलनाण रे ॥ १६ ॥ हर्षे धरी कुवर न्हवरावे रे, नूषण वस्त्र नें पहेरावे रे ॥ सहु कहे धन जिण माडीयें जायो रे, बहु दिवस अमें दरिसण पायो रे ॥ १७ ॥ हरख्यो साजन वृंद विशेखी रे, कुमरतणुं मुखपंकज देखी रे ॥ सातमी ढालें वात वखाणी रे, आखर वहेशे ढालें पाणी रे ॥ १८ ॥ सर्व गाथा ॥ १७८ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कर जोडीने, मंत्रीसरनें ठेक ॥ को न करे ते में कर्यु, वात सुणो हवे एक ॥ १ ॥ जे आपे मुजने नृपति, अर्थ गरथ नंमार ॥ ते सवि लेशुं हुं सही, एम कीधो निर्धार ॥ २ ॥ वस्तु उजेणी मारगें, लेई थापजो सर्व ॥ सचिवें सघलु मानियुं, मनमा थइ निर्गर्व ॥ ३ ॥ जन्मदिवस आव्यो निकट, वाज्यां मंगलतूर ॥ वरत्या उत्सव बहु परें, सहुमन आनंदपूर ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी सोहेलानी ॥ हवे कुलवती नारी, मज्जन करावे मंगलकलशनें जी ॥ लेइ घर उपर सार, निर्मल जल जरे सोवन कलशने जी ॥ १ ॥ पहेरावे सुकुमाल, अंगें अनुपम वस्त्र सोहामणा जी ॥ दीपे सुंदर वेष, नूषणनूषित अंग रलियामणां जी ॥ २ ॥ बेसारी गजखंध, फूलतो चाले कोतल आगलें जी ॥ साबेला सें बंध, वाघे केसरीये आगें चले जी ॥ ३ ॥ टोले मलि मलि थोक, थोकें थोकें करे एम वातडी जी ॥ त्रैलोक्यसुंदरी धन्य, विधिना ए सरखी जोडी घडी जी ॥ ४ ॥ पग पग नाचे पात्र, यात्र करेवा जन बहु उलट्या जी ॥ ऊचां करि करि गात्र, दरिसण देखण न गणे गजघटा जी ॥ ५ ॥ बहु आमंबर एम,

वास वस्यो मनरंग हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ८ ॥ वासभुवनथी संभ्रमें, बाहिर आवी तेह हो ॥ सु० ॥ दासी समीप ऊनी रही, पूछे ते सस्नेह हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ ए ॥ केम स्वामिनी ऊतावला, मुख न समाये श्वास हो ॥ सु० ॥ प्रीतमथी केम ऊनगी, नाखो इम नि श्वास हो ॥ सु०॥ क० ॥ १० ॥ नहि मुफ वल्लन इहां कने, दीसे कोढी कोय हो ॥ सुं० ॥ नाह गयो किहां माहरो, कहे एम सुदती रोय हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ११ ॥ रात्रि गई रवि ऊगीयो, गइ पीयर ते बाल हो ॥ सु० ॥ वात सुणावी मातनें, सुणि ऊठी चित्त जाल हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ १२ ॥ राजसन्नामाहे आवियो, मंत्री कुबुद्धिनिधान हो ॥ सु० ॥ श्यामवदन नीचे मुखे, वो लाव्यो राजान हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १३ ॥ केम तुमें आमण दूमणा, कहो मंत्री मन मेलि हो ॥ सु० ॥ हर्षने ठामें खेद श्यो, करो यथारुचि केलि हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १४ ॥ राजन् अवली कर्मनी, गति दीसे असहाय हो ॥ सु० ॥ विधि प्रतिकूल थयो यदा, सो जग कीजें ऊपाय हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १५ ॥ यडुक्त माघे ॥ प्रतिकूलतामुपगतेहि विधौ, विफलत्वमेति बहु साधनता ॥ अवलंबनाय दिनन्नर्तुरन्नून्न पतिष्यत करसहस्रमपि ॥ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ कृत ऊदयें आवे सही, विणु कृत नावे कोय हो ॥ सु० ॥ खेद किश्यो करवो इहा, कर्म करे सो होय हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १६ ॥ यत ॥ ऊदयति यदि नानु पश्चिमाया दिशाया, प्रचलति यदि मेरु शीतता याति वह्नि ॥ विकसति यदि पद्म पर्वताग्रे शिलायां, तदपि न चलतीयं नाविनी कर्मरेखा ॥ २ ॥ तथाचान्यदप्युक्त ॥ गाथा ॥ रे जीव सुह डुहेसु, निमित्तमित्त परं वियाणाइ ॥ सकयफल नुंजतो, कस्स मुहा कुप्पसि प रस्स ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ राय कहे मंत्री कहो, ङ खनुं कारण मुफ हो ॥ सु० ॥ अंतर श्यो मुफ आगलें, प्रकासो निज गुफ हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १७॥ प्रीति तिहां पडदो, किस्यो पडदो तिहां कुण प्रीति हो ॥सु०॥ देजें हियडुं खोलियें, एहिज प्रीतिनी रीति हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १८ ॥ यडुक्त ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति ॥ नुक्ते नोनयते चैव, षड्विध प्रीति लक्षणम् ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ नाखी निसासो ते कहे, राजन् जे करे दैव हो ॥ सु० ॥ तिहा नहिं जोरो केहनो, कृत नोगवीयें सदैव हो ॥ सु० ॥ क० ॥ १९ ॥ तुम पुत्रीनी संगतें, मुफ अंगज गुणवंत हो ॥ सु०

पुण्यें सीधु रे काज, आठमी ढालें रामविजय कहे जी ॥ पुण्य करो नवि लोक, इह नव परनव जेहथी सुख लहे जी ॥ ११ ॥ सर्व० ॥ १० ५

॥ दोहा ॥

॥ मात पिता मगल तणां, झांखर झूरि थयांह ॥ सुतनी सुध लाधी नहिं, केता दिवस गयाह ॥ १ ॥ मदिर दीठो आवतो, रथ वेगे गुणवत ॥ राजकुमर कोइ अम घरे, रथ खेडी आवत ॥ २ ॥ वार्यो पण न रह्यो किमे, अरहो आव्यो जाम ॥ मात पितायें उंलख्यो, निज अगजने ताम ॥ ३ ॥ हीयडुं हरखे देजछुं, डुःख दोहग टलियांह ॥ मात पिताने पुत्र ए, बहु दिवसें मलीयाह ॥ ४ ॥ अक वेसारी पुत्रनें, रज लूहे घणे नेह ॥ सुत नवरावे माहली, आसूने नीरेह ॥ ५ ॥ वात कही सघली तिणें, भूरि हूती ससनेह ॥ हरख्या मात पिता घणां, पुण्योदय लहि तेह ॥६॥ हवे त्रैलोक्यसुंदरी तणो, नवि निसुणो अवदात ॥ परण्या पूर्वे जे थयो, कहु सविस्तर वात ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ देशी मधुकरनी ॥ राजकुवरी केहें गइ, नवि दीठो निज कत हो ॥ सुंदर ॥ मन विलखाणी मदासती, नयणें नीर झरत हो ॥ सु० ॥ १ ॥ कर्म न छूटे आपणां ॥ ए आंकणी ॥ दीजें केहने दोष हो ॥ सु० ॥ परण्यो प्रीतम परहरी, केम गयो विण रोष हो ॥ सुं० ॥ क० ॥ २ ॥ पहेरावे निजपुत्रनें, मगलकलशनो वेष हो ॥सुं०॥ राजकुमरी पासें मोकल्यो, सूवाने सन्निवेश हो ॥ सुं० ॥क०॥३॥ आव्यो शय्या उपरें, कुंमरीयें दीठो जाम हो ॥ सु० ॥ कुत्सितरूपें कोढीयो, कम्पक सन्नी थइ ताम हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ४ ॥ प्राणप्रिये केम वेगली, जइ रुभो इण वार हो ॥ सुं० ॥ आवो रमो सुखसेजमां, तुं मुफ प्राण आधार हो ॥ सु० ॥ क० ॥ ५ ॥ वलतुं कहे सा सुदरी, मूढ विमासी बोल हो ॥ सु० ॥ तुं कोण हुं कोण एम सही, कहीयें न वचन निटोल हो ॥सु०॥क०॥६॥ पूर्वे डुष्कृत आचर्यां, फल पाम्यो ठे तास हो ॥ सु० ॥ मूक डुश्शीलपणुं ईहां, नहिंतर लहिश विनाश हो ॥सु०॥क०॥७॥यत ॥ षढत्वमिन्द्रियछेद, दौर्भाग्यं च नवे नवे ॥ नवेन्नराणां स्त्रीणां चा, न्यकीयासक्तचेतसाम् ॥१॥ पूर्वढाल॥ रहे अलगो मुफथी सही, सो परनारी संग हो ॥ सुं० ॥ मुफ पिशुनपरी ढक्केशिमां,

स्तन पीतां लघु बाल ॥ क० ॥ उदरविल जलें पूरियां रे हां, के पाड्यां मद्दुश्राल ॥ क० ॥२॥ अवगुण अछता काढिया रे हां, परने दीधां आल ॥ क० ॥ के वली शीलनी खंमना रे हां, कीधी कर्मचमाल ॥ क० ॥ ३ ॥ यत ॥ कुरम रमत्तण डुन्नगाइ, विलित्त निंदू विसकन्नगाइ ॥ जम्मतरे खंमि य सीलनावा, नाउण कुया दढसीलनावा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ के पशु पखी मनुजना रे हां, कीधा बालविछोह ॥ क० ॥ के सुत शोक्यनी उपरें रे हां, विरुद्ध विमास्यो डोह ॥ क० ॥ ४ ॥ के वली दव देवराविया रे हां, वनमांहे धरि दूंश ॥क०॥ के तुच्छ कारिज आपणे रे हां, कीधा देवगुरु सूस ॥ क० ॥ ५ ॥ इत्यादिक कहो कुण लहे रे हां, ज्ञानी विण नवि वात ॥ क० ॥ ते उदयेंज थया इहां रे हां, माहरे माय ने तात ॥ क० ॥ ६ ॥ अथवा पियु उछोणमां रे हां, होशें नहि संदेह ॥ क० ॥ मोदक अवसर हितलणी रे हां, नाम कह्यु गुणगेह ॥ क० ॥ ७ ॥ धीरज धरे मनमा सती रे हां, चिंते चित्त उपाय ॥क०॥ मले मुजने जो वालहो रे हां, तो टलशे डुरित अपाय ॥ क० ॥ ८ ॥ एक दिन सिंह सामंतने रे हां, तेड्यो मंदिरमांहे ॥ क० ॥ वात कही सवि मूलथी रे हां, निसुणी धरी उत्साह ॥ क० ॥ ए ॥ सिंह कहे सुणो स्वामिनी रे हा, म धरो मन जंजाल ॥क०॥ वात कहिश जइ रायने रे हा, होशे मंगलमाल ॥ क० ॥ १० ॥ लहि अवसर जइ वीनवे रे हा, सुणो राजन् मुज वाण ॥ क० ॥ कष्टें पडी तुमची सुता रे हां, अवला बहु गुणखाण ॥ क० ॥ ११ ॥ आलापन सन्मानता रे हां, दूर रहो माहाराज ॥ क० ॥ वाक्य श्रवणमात्रे प्रभु रे हां, तनुजा अरज निवाज ॥ क०॥ १२ ॥ अश्रुजलाविल लोचनें रे हा, नृप कहे सुण सींह ॥ क० ॥ बांध्यां उदय आवे वही रे हा, वीरुई कर्मनी लीह ॥ क० ॥ १३ ॥ प्राणप्रिया ए मुज सुता रे हां, थइ कलंकित देह ॥ क० ॥ इष्ट अनिष्ट थई घणु रे हां, कहियें कोने एह ॥ क० ॥ १४ ॥ पण रूठे निज आतमा रे हा, नवि प्रलवियें लोक ॥ क० ॥ आवी कहे इहां कने सुखें रे हां, मन इछित सो शोक ॥ क० ॥ १५ ॥ अनुमति लइ आवी कहे रे हां, त्रैलोक्यसुंदरी ताम ॥ क० ॥ तात वेष नरनो दीयो रे हां, करु मनचिंतित काम ॥ क० ॥ १६ ॥ सिंह कहे कारण वशें रे हा, स्त्री ग्रहे नरनो वेष ॥ क० ॥ राजकुलें ए योग्यता रे हां, राय दीयो आदेश ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ विणठी काया कोढथी, फरसनो दोष महंत हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २० ॥ कुलखंपण ए कुवरी, का ए विधाता दीध हो ॥ सु० ॥ देव कुमर सम कतनें, जेणीयें कोढी कीध हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २१ ॥ वात सुणी वि लखो थयो, आव्यो मंत्री आवास हो ॥ सु० ॥ जामाता देखी करी, हुउ मनमांहि उदास हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २२ ॥ कर्मे ए कोढी थयो, पण पुत्री शिर दोष हो ॥ सु० ॥ एह चढयो अति आकरो, कीजें केहो रोष हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २३ ॥ राय कहे मंत्री सुणो, कीधू में सबल अकाज हो ॥ सु० ॥ जोरें आपी अंगजा, तुऊ सुत विणठो आज हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २४ ॥ दोष नहि काहि राजनो, नहिं काहिं वहूनो वाक हो ॥ सुं० ॥ त्रण भुवनमांहे वालियो, कर्मे आमो आक हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २५ ॥ मार्टे कहु बु स्वामीने, रीष न करशो कोय हो ॥सु०॥ पुत्रीनी परें पालशुं, कर्म करे ते होय हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २६ ॥ कर्मवशें सहुने मनें, वात वसी तेणि वार हो ॥ सुं० ॥ वहाली पण वैरण थइ, कोइ न ले तस सार हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २७ ॥ एक अलाइधे मंदिरें, रहे ते अबला बाल हो ॥ सु० ॥ चिंते ए मातु मरणथी, मुऊ माथे ए आल हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २८ ॥ नवि सुणो नवमी ढालमा, कहुउं कर्मजंजाल हो ॥ सु० ॥ रामविजय कहे कोइने, कहिये न दीजें आल हो ॥ सु० ॥ क० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रैलोक्यसुंदरी चिंतवे, विरुइ कर्मविलास ॥ मुऊ माथे आवी पड्यो, बेसी रहे उदास ॥ १ ॥ मुऊनें मूकीने गयो, वालम नवल सनेह ॥ अवगुण कोइ दाख्यो नहिं, साले मुऊने तेह ॥ २ ॥ वली माथे सबलु चढयु, कोढी तणु कलंक ॥ थइ सहुने अलखामणी, कर्मवशें हु रंक ॥ ३ ॥ यत ॥ कुमुदवनमपश्रि श्रीमदंभोजखंडं, त्यजति मुदमुलूकः प्रीतिमांश्चक्रवाकः ॥ उदयमहिमरश्मिर्याति शीतांशुरस्तं, हतविधिललितानां ही विचित्रोविपाकः ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ काची कली अनारकी रे हां ॥ ए देशी ॥ पूरवभव में आचर्यां रे हां, कोइक डुरित कठोर ॥ कर्म विडंबना ॥ ए आंकणी ॥ तेह उदय आव्यां इहां रे हां, पियु गयो मूकी निठोर ॥ क० ॥ १ ॥ के में दूध विलोडियां रे हां,

स्तन पीतां लघु वाल ॥ क० ॥ उदरविल जलें पूरियां रे हां, के पाड्यां मद्भुआल ॥ क० ॥२॥ अवगुण अछता काढिया रे हा, परने दीधां आल ॥ क० ॥ के वली शीलनी खंमना रे हा, कीधी कर्मचमाल ॥ क० ॥ ३ ॥ यत ॥ कुरंम रमत्तण डुम्नगाइ, विलित्त निदू विसकन्नगाइ ॥ जम्मतरे खंमिय सीलनावा, नाउण कुया दढसीलनावा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ के पछु पखी मनुजना रे हा, कीधा वालविठोह ॥ क० ॥ के सुत शोक्यनी ऊपरें रे हां, विरुड विमास्यो डोह ॥ क० ॥ ४ ॥ के वली दव देवराविया रे हां, वनमांहे धरि दूश ॥क०॥ के तुछ कारिज आपणे रे हां, कीधा देवगुरु सूस ॥ क० ॥ ५ ॥ इत्यादिक कह्यो कुण लहे रे हां, ज्ञानी विण नवि वात ॥ क० ॥ ते उदयेंज थया इहा रे हा, माहरे माय ने तात ॥ क० ॥ ६ ॥ अथवा पिउ उछ्रंगमां रे हां, होशे नहि संदेह ॥ क० ॥ मोदक अवसर हितनणी रे हां, नाम कह्यु गुणगेह ॥ क० ॥ ७ ॥ धीरज धरे मनमा सती रे हा, चिंते चित्त उपाय ॥क०॥ मले मुफने जो वालहो रे हां, तो टलशे डुरित अपाय ॥ क० ॥ ८ ॥ एक दिन सिंह सामतने रे हा, तेड्यो मंदिरमाहे ॥ क० ॥ वात कही सवि मूलथी रे हां, निसुणी धरी उत्साह ॥क०॥ ए ॥ सिंह कहे सुणो स्वामिनी रे हां, म धरो मन जंजाल ॥क०॥ वात कहिश जइ रायने रे हा, होशे मंगलमाल ॥ क० ॥ १० ॥ लहि अवसर जइ वीनवे रे हा, सुणो राजन् मुफ वाण ॥ क० ॥ कष्टें पडी तुमची सुता रे हा, अवला बहु गुणखाण ॥ क० ॥ ११ ॥ आलापन सन्मानता रे हां, दूर रह्यो माहाराज ॥ क० ॥ वाक्य श्रवणमात्रे प्रभु रे हां, तनुजा अरज निवाज ॥ क०॥ १२ ॥ अश्रुजलाविल लोचनें रे हा, नृप कहे सुण सीह ॥ क० ॥ बाध्यां उदय आवे वही रे हा, वीरुई कर्मनी लीह ॥ क० ॥ १३ ॥ प्राणप्रिया ए मुफ सुता रे हा, थइ कलंकित देह ॥ क० ॥ इष्ट अनिष्ट थई घणु रे हां, कहियें कोने एह ॥ क० ॥ १४ ॥ पण रूठे निज आतमा रे हां, नवि प्रजवियें लोक ॥ क० ॥ आवी कहे इहां कने सुखें रे हा, मन इछित सो शोक ॥ क० ॥ १५ ॥ अनुमति लइ आवी कहे रे हां, त्रैलोक्यसुंदरी ताम ॥ क० ॥ तात वेष नरनो दीयो रे हां, करुं मनचिंतित काम ॥ क० ॥ १६ ॥ सिंह कहे कारण वशें रे हा, स्त्री ग्रहे नरनो वेष ॥ क० ॥ राजकुलें ए योग्यता रे हां, राय दीयो आदेश ॥ क० ॥ १७ ॥

सोंप्यो सिंह सामंतने रे हां, तस रक्षाने काज ॥ क० ॥ कुमरी कहे सुणो तातजी रे हां, जाउं उज्जेणी आज ॥ क० ॥ १८ ॥ कारण कहीश हुं आवीने रे हां, आगलथी शी वात ॥ क० ॥ दोष न लागे वशने रे हां, तेम करो इम कहे तात ॥ क० ॥ १९ ॥ सैन्य सहित लेइ सिंहने रे हां, ति हांथी कीध प्रयाण ॥ क० ॥ शोध कारण निज कतनी रे हां, सुंदरी सु गुण सुजाण ॥ क० ॥२०॥ नावें नवियण सांनलो रे हां, मनोहर दशमी ढाल ॥क०॥ राम कहे धन्य जगतमां रे हां, जे रहे मनह्न वाल ॥क०॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अविछिन्न प्रयाणथी, चालतां निर्नीक ॥ आव्या केटले एक दिनें, नयरी उज्जेणी नजीक ॥ १ ॥ वैरसिंह नृप सांनली, लोक मुखें एम वात ॥ आवे नयरें आपणे, चपानृपनो जात ॥ २ ॥ दल लेइ साहामो चल्यो, वैरसिंह नूपाल ॥ तेडी लाव्यो कुवरनें, नयरमाहि उजमाल ॥ ३ ॥ स्वा गत पूछे कुमरने, देई वहु सन्मान ॥ कोण कारण थयु आववु, नाखो सु गुणनिधान ॥ ४ ॥ तुम नगरी निरखण तणो, हतो बहू मन कोड ॥ तिण कारण अमें आविया, कुमर कहे मद मोड ॥ ५ ॥ राजन कहे नलें आविया, अम घर पावन कीध ॥ सप्तनूमि आवासमां, नृप उतारो दीध ॥ ६ ॥ राजसुता तिहां तो रहे, साथ सवल दलपूर ॥ दे आदेश सेवक नणी, प्रह ऊगमते सूर ॥ ७ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ रामचवके बाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी ॥ तेडी सेवक तेह, कुमरी एम नणे री ॥ निरखो नीरनुं ठाम, जइनें यत्न घणे री ॥ १ ॥ पूर्वदिशें एक स्वामि, छे जलठाम नलू री ॥ बहुजंतु विश्राम, नूशिर ति लक मनू री ॥ २ ॥ लहि नृपनो आदेश, जलमारग निवसे री ॥ चर्या देख ण काज, कुमरी मन उल्लसे री ॥ ३ ॥ जल पीवानें काज, एक दिन ते निरखे री ॥ जाता हयवर पंच, मनसार्थे परखे री ॥ ४ ॥ ए मुऊ तातें दीध, हय देखी हरखी री ॥ सीधां वांछित काज, चिंते ते निरखी री ॥५॥ सेव कनें कहे आम, एह स्वामी तणो री ॥ नाम ठाम निरधार, मुऊ आगें ए नणो री ॥ ६ ॥ विनति करी कहे तेह, धनदत्त शेठ तणो री ॥ मगल कलश कुमार, एहज स्वामी सुणो री ॥ ७ ॥ सिंह नणी कहे वात, एह

कुमर तेडो री ॥ जेम हयनो संबंध, सांजलीयें निमो री ॥ ८ ॥ लेखशाला यें ताम, जातो तेह जाणी री ॥ अध्यापक सघात, प्रीति करी ताणी री ॥ ए ॥ एक दिन जोजन काज, ग्रात्र सहित आवासें ॥ अध्यापक आणद, तेड्यो मननें उल्लासें ॥ १० ॥ साथे निहाली नाथ, हियडे घणु हरखी री ॥ जेम चकोरी चइ, उलसे चित्त परखी री ॥ ११ ॥ मांफे सोवन थाल, आदरे प्रीति घणी री ॥ प्रीतमने निज पास, वेसारे सुगुणी री ॥ १२ ॥ वीजणे ढोले वाय, जोजन जलां प्रीसे री ॥ देखी प्रिय मुखचद, अतर दील हींसे री ॥ १३ ॥ वीजाने सामान्य, गौरव जक्ति करे री ॥ ते देखी सहु वाल, मनमां अणख धरे री ॥ १४ ॥ एवडुं एहने मान, कारण को न लहे री ॥ पंक्तिजेदनु डुःख, मनढामांहे दहे री ॥ १५ ॥ जमी कठ्या वलि तेह, सहुथी अवल शिरें री ॥ क्षौमयुगल पियु काज, आपे हर्षे जरें री ॥ १६ ॥ अध्यापकनें एम, वात कहे सुविचारी ॥ ए तुम सघला ग्रात्र, मांहे माहापण जारी ॥ १७ ॥ जे होय ते मुफ आज, वात कहो एक सारी ॥ ते निसुणी मुफ चित्त, हर्ष लहे सजारी ॥ १८ ॥ क्रोधतणे वश तेह, वोल्या सहु एम त्राडी ॥ कहेशे मगल एह, जक्ति करी तुमें जाडी ॥ १ए ॥ वोल्या मगल ताम, रहो तुमें सहु अलगा री ॥ जक्ति करी ते मार्टे, छु आवो वलगा री ॥ २० ॥ जक्ति करे सो वार, जिहां मन मान्युं हुवे री ॥ परने न करे कोय, टग मग साहामुं जुवे री ॥ २१ ॥ सा मन मानी वात, कहोने तेह परी री ॥ साजलियें एक चित्त, प्रीतें रीति खरी री ॥ २२ ॥ एकादशमी ढाल, वात कही रढियाली ॥ हवे मगल मन मेलि, कहेशे वात रसाली ॥ २३ ॥ सर्व गाथा ॥ २९५ ॥ श्लोक २८

॥ दोहा ॥

॥ अध्यापक आनदीयो, सांजली शिशुना वोल ॥ मगलनें कहे वत्स तुमें, दाखो वात अमोल ॥ १ ॥ मगल चिंते चित्तमा, त्रैलोक्यसुदरी एह ॥ मुफ कारण नरवेष धरि, आवी नहिं सदेह ॥ २ ॥ धन धन एहनी चातुरी, राख्यो जिणें निजधर्म ॥ मुफ जेवो पापी नहिं, कीधु जेणें विकर्म ॥ ३ ॥ कहेवा लाग्यो कुमर ते, कल्पित के अनुजूत ॥ कुमरी कहे अनुजव तणी, वात कहो अद्भुत ॥४॥ धुरहूती मांमी सकल, दाख्यो सकल सवध ॥ यावत मत्री काढीयो, तिहां लगें सवि अनुबध ॥५॥ हर्षित हुइ

सा सुंदरी,सांभली प्रीतम बोल॥रोम रोम तन उल्लस्युं,आज अधिक रंगरोल ६

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ कृत्रिमकोप करीनें जी ॥ कुमरी एम भांखे ॥ अहो ए मिथ्याभाषीनें जी ॥ सहुकोनी साखें ॥ एहतु जूतुं केम बोले जी ॥ कु० ॥ नहि ए कोइ नरनें तोले जी ॥ स० ॥ १ ॥ तेने महवा सेवक धाया जी ॥ कु० ॥ तव बालक सवि उजाया जी ॥ स० ॥ ते ग्रही गृहमाहे आण्यो जी ॥ कु० ॥ ते समज्यो मनमांहि जी ॥ स० ॥ २ ॥ उत्तम आसन बेसारी जी ॥ कु० ॥ कर जोडी रही सा नारी जी ॥ स० ॥ कहे सिंहने ए मुऊ कंत जी ॥ कु० ॥ ए आवी मिल्यो एकांत ॥ स० ॥ ३ ॥ आज मनोवांछित सवे फलियां जी ॥ कु० ॥ प्राणजीवन मुऊने मलिया जी ॥ स० ॥ आज जीवित जन्म प्रमाण जी ॥ कु० ॥ मुऊ त्रूठया श्री जिनजाण जी ॥ स० ॥ ४ ॥ मन संशय सिंहज जाणी जी ॥ कु० ॥ जइ जुवे अवर सहिनाणी जी ॥ स० ॥ भाजन मुकतां ते दीधा जी ॥ कु० ॥ नामांकित असली सीधा जी ॥ स० ॥ ५ ॥ जइ जोयो ते सवि दीठो जी ॥ कु० ॥ मन संशय सघलो नाठो जी ॥ स० ॥ धनदत्त शेठने कहे जाणी जी ॥ कु० ॥ ए तुम सुतनी धणीयाणी जी ॥ स० ॥ ६॥ सुणी वातने शेठ उजाणो जी ॥कु०॥ आवे तिहां श्वास भराणो जी ॥ स० ॥ धरि रूप रमणीनुं आगें जी ॥ कु० ॥ आवी श्वसुरने पाये लागे जी ॥ स० ॥ ७ ॥ आवे नयर नरेश्वर रंगें जी ॥ कु० ॥ जोवा मलियां बहु उछरंगें जी ॥ स० ॥ पंचसाखें राजकुमारी जी ॥ कु० ॥ थइ रही मंगल घरनारी जी ॥ स० ॥ ८ ॥ पसरी बहु नयरें वात जी ॥ कु० ॥ धन्य कुमरी एह सुजात जी ॥ स० ॥ नरवेष देइने चाल्यो जी ॥ कु० ॥ सिंह निज नयरी भणी आव्यो जी ॥ स० ॥ ए ॥ निजनृपति आगल आवी जी ॥ कु० ॥ सवि वात कही समजावी ॥ स० ॥ धन्य मुऊ तनया चतुराइ जी ॥ कु० ॥ अहो जूउ सचिव धीठाइ जी ॥ स० ॥ १० ॥ प्रीतियें न रहे छानु पाप जी ॥ कु० ॥ नवि दीजें पर उपताप जी ॥ स० ॥ पछी करशु एहने भावो जी ॥ कु० ॥ एक वार जमाइने तेडावो जी ॥ स० ॥ ११ ॥ सिंह मूकीने तेडावे जी ॥ कु० ॥ दंपती दोय चंपा आवे जी ॥ स० ॥ नृप सामो आव्यो आपें जी ॥ कु० ॥ बहु मान जमाइने आपे जी ॥

स० ॥ १२ ॥ गजवरखधें वेसारी जी ॥ कु० ॥ असवाव संघातें नारी जी ॥ स० ॥ पुरमा आवे असवारी जी ॥ कु० ॥ तिहा खलक मल्या नर नारी जी ॥ स० ॥ १३ ॥ सहु जपे ए चिरजीवो जी ॥ कु० ॥ कुवर ए कुलनो दीवो जी ॥ स० ॥ सघलो ए मत्री वक जी ॥ कु० ॥ दीधु कूडुं कोढी कलक जी ॥ स० ॥ १४ ॥ नव इजात एणें हारी जी ॥ कु० ॥ वोले पुरजन व्यवहारी जी ॥ स० ॥ मदिर आव्यो कुलनाण जी ॥कु०॥ तव वाग्यां ढोल निशाण जी ॥ स० ॥ १५ ॥ नृप सचिवनें कीधो कावो जी ॥ कु० ॥ कह्यो हुकम तलारने मागो जी ॥ स० ॥ कुण चोर तणो रखवाल जी ॥ कु० ॥ वोले एम वाल गोपाल जी ॥ स० ॥ १६॥ फल पाम्यो प्रत्यक्ष एह जी ॥ कु० ॥ दीधु आल सतीने जेह जी ॥स०॥ महोकम माखो तव मूरें जी ॥कु०॥ गडदा पाटु पड्या पूरें जी ॥स०॥१७॥ तिहा मगलकलश विचारे जी ॥कु०॥ सहु निजकृतने अनुसारें जी ॥स०॥ निजआतम दोप विनावे जी ॥ कु० ॥ इहा पर ते निमित्त कहावे जी ॥ स०॥१८॥ यडुक्तं ॥ रे जीव सुहदुहेसु० ॥१॥ अप्पा चेव दमेअव्वो, अप्पा हु खलु डुद्दमो ॥ अप्पा दतो सुही होइ, अस्सि लोए परहय ॥२॥पूर्वढाल॥ मुझ वेगा जो ए हणाय जी ॥ कु० ॥ अनुकपाव्रत डुखाय जी ॥ स० ॥ सहु जीवने जीवित प्यारु जी ॥कु०॥ कही नृपने एने उगारु जी ॥स०॥१९॥ यडुक्त ॥ अमेध्यमध्ये कीटस्य, सुरेंद्रस्य सुरालये ॥ समा च जीविताकांक्षा, सम मृत्युभयं द्वयो ॥ ३ ॥ अन्यदर्शनेपि ॥ योदद्यान्मेरुवत्स्वर्णं, कृत्स्नां चैव वसुधराम्॥ एकस्य जीवितं दद्या, न्न च तुल्य युधिष्ठिर ॥ ४ ॥ पूर्व ढाल॥ कहे नृपने प्रञ्जु अवधारो जी ॥ कु० ॥ सचिव उपरें कोप निवारो जी ॥ स० ॥ मुझ उपरें महेर करीजें जी ॥ कु० ॥ मत्रीने जीवित दीजें जी ॥स०॥२०॥ धन्य उपगारी तेह जी ॥ कु० ॥ अवगुणी उपरें धरे नेह जी ॥ स० ॥ कही वारमी ढाल विचारी जी ॥ कु० ॥ गुणवतनी जाउ व लिहारी जी ॥ स० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ ३२२ ॥ गाथा तथा श्लोक ३१

॥ दोहा ॥

॥ नृपजामाता आमहें, तेड्यो मत्री तेह ॥ जा मूक्यो तुझ जीवतो, पण इण पुर न रहेह ॥१॥ निजनगरीथी नीसर्यो, सचिव तेह मतिहीन॥ जग सघलु ए जाणजो, उदयतणे आधीन ॥ २ ॥ उदयें आवे कर्मनें,

महोटा मति मुंजाय ॥ गयो परदेशें बापडो, पण कोइ न दीये गाय ॥ ३ ॥ मान रहित मेलो मनें, मेली घरनु राज ॥ करि परघरनी चाकरी, उदर नरेवा काज ॥४॥ हवे नृप मंगलकलशनें, थाप्यो सुतने ठाम ॥ जुवो अ जब गति पुण्यनी, पुण्यें सीजे काम ॥५॥ तेडाव्यां तेहना तिहां, मात पिता तेणि वार ॥ सहु परिवारें परवस्यो, विलसे सुख संसार ॥६॥ एहवे दीधी वधामणी, वनपालक मतिमंत ॥ यशोनद्र मुनि उपवनें, समवसस्या गुणवंत ॥७॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ वारी मोरा साहेबा ॥ ए देशी ॥ नृप सुंदर सांजली हो राज, रीज्यो धर्मने राग ॥ वारी मोरा साधुजी ॥ ए आंकणी ॥ श्रीगुरुवदन नीसस्यो हो राज, आज अजब लह्यो लाग ॥ वा० ॥ १ ॥ तारण तरण नवांबुधि हो० ॥ जगमां जेम जहाज ॥ वा० ॥ पचानिगम ते साचवी हो० ॥ वांदे श्री मुनिराज ॥ वा० ॥ २ ॥ दल देखी दिल उल्लस्यु हो० ॥ दे दिल नर उपदेश ॥ वा० ॥ धर्म करो धिगड धसी हो० ॥ यौवन वय सुविशेष ॥ वा० ॥ ३ ॥ जर कुट्टी यौवन शशो हो० ॥ काल आहेडी नित्त ॥वा०॥ धर्मी विना धर्मज नहिं हो० ॥ कुशल किहांथी मित्त ॥ वा० ॥ ४ ॥ बेहु पिशून वच्चे फूपई हो० ॥ जाइ उजाणो काल ॥ वा० ॥ वहेती वारें शोधीयें हो० ॥ धर्म थइ उजमाल ॥ वा० ॥ ५ ॥ रखे प्रमादने वश पडो हो० ॥ धर्म ते शुद्ध स्वनाव ॥ वा० ॥ अशुद्ध अनादिनी चेतना हो० ॥ मोह्यो मोहविनाव ॥ वा० ॥ ६ ॥ दृष्टिविपर्यय थइ रह्यो हो० ॥ पर उपरें निज नाव ॥ वा० ॥ निजवस्तु ए जाणो नहिं हो० ॥ देखी रहो चेतनजाव ॥ वा० ॥ ७ ॥ शुं पुजलने वश पड्या हो० ॥ ए कोण कोण तुम रूप ॥ वा० ॥ निज घर तजी परघर रमो हो० ॥ शु चतुराई रूप ॥ वा० ॥ ८ ॥ मन मानी गुरुदेशना हो० ॥ आव्यो नववैराग्य ॥ वा० ॥ कहे श्रीगुरु तारो मुने हो० ॥ आज लह्यो में लाग ॥ वा० ॥ ए ॥ कहे गुरु देवाणुप्पिया हो० ॥ करीयें नवि परमाद ॥ वा० ॥ नावसधी नमतां लही हो० ॥ चाखो अनुनवस्वाद ॥ वा० ॥ १० ॥ आवी मंगलकलशने हो० ॥ सोंपीने निजराज ॥ वा० ॥ राजन संयम आदस्यो हो० ॥ आतम साधन काज ॥ वा० ॥ ११ ॥ पंच समिति सूधा यति हो० ॥ नावत अणगार ॥ वा० ॥ शुद्ध निरीह तप आदस्यो हो० ॥ करता उग्र

विहार ॥ वा० ॥ १२ ॥ गुरु आणा शिर पाघडी हो० ॥ धारी राखे सार ॥ वा० ॥ विषय न वांछे पा घडी हो० ॥ हु तेहनी वलिहार ॥वा०॥१३॥ जे सयम सुख आगलें हो० ॥ सुर सुख पण तिलमात ॥वा०॥ नर देव पण नित्य जेहना हो० ॥ चरण नमे परजात ॥ वा० ॥ १४ ॥ यडुक्तं ॥ तण सथार निविठो, मुणिवरो नग्ग राग गयमोहो ॥ ज पावइ मुत्तिसुह, कित्तो तय चक्कवट्टीवि ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ शुद्ध चरणाराधनथकी हो० ॥ सुरसुदर रुषिराज ॥ वा० ॥ सुगति लही सिद्धक दशा हो० ॥ जिहां सुख भोज समाज ॥ वा० ॥ १५ ॥ हवे पाले निजराजने हो० ॥ मगलकलश नरेश ॥वा०॥ राज्यें वणिकने थापीयो हो० ॥ निसुणुं अपर पुरेश ॥ व० ॥१६॥ दल लेइ ते आविया हो० ॥ राज्य लेवाने काज ॥ वा० ॥ मगल नृप चढती कला हो० ॥ वश कीधा सहु राज ॥ वा० ॥ १७ ॥ पुण्यदशा जस पाधरी हो० ॥ मगलमाला थाय ॥वा०॥ पदपद पामे संपदा हो० ॥ मन धारे ते उपाय ॥ वा० ॥ १८ ॥ ढाल जणी ए ते रमी हो०॥ पुण्यो दयनी वात ॥ वा० ॥ धन्य जेहनी धर्मे करी हो० ॥ रंगाणी सवि धात ॥ वा० ॥ १९ ॥ सर्व गाथा ॥ ३२९ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुख भोगवतां अनुक्रमें, त्रैलोक्यसुदरी साथ ॥ सुत जन्म्यो एक सुंदरु, उत्सव करे धरनाथ ॥ १ ॥ आनद धरी अगज तणु, यशशेखर अभिधान ॥ सज्जन सतोषी घणुं, थापे ते राजान ॥ २ ॥ जिनमडित पृथिवी करी, खरची बहु धन कोडि ॥ भक्ति करे जिनवर तणी, प्रणमे बे कर जोडि ॥ ३ ॥ द्रव्यभक्ति विरचे भली, भावभक्ति अभिलाख ॥ वरसप्रत्यें साहम्मी निमित्त, खरचे धन केइ लाख ॥ ४ ॥ जिनगुरु जिनमत सघनी, भक्ति भेद ए चार ॥ आदरता उज्ज्वल हुवे, समकितनो आचार ॥ ५ ॥ समरथ सुत आगल थयो, राजधुरधर धीर ॥ प्रजापाल पाले प्रजा, पर दुःख कायर वीर ॥ ६ ॥ इण अवसर तिहां आविया, श्री जयसिंह मुनीश ॥ अवनीपति वदन चल्यो, सार्थे सवल जगीश ॥ ७ ॥ गुरु वांदी निसुणे नृपति, देशन अमृतवाण ॥ कथा रसिक सवेगनी, निर्वेदनीव खाण ॥ ८ ॥ देशन अतें पूछीयु, नृप पूरव अवदात ॥ गुरु ज्ञानी भाखे प्रगट, पूरव भवनी वात ॥ ९ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ देशी विंदलीनी ॥ क्षेत्र नरत शुन्न गामें, पुर धरणीप्रतिष्ठित नामें हो ॥ राजन सुण वाणी ॥ वीपमी एकमेंकमाणी हो ॥रा०॥सु०॥ निवसे कुलपुत्रक एक, सोमचंद्रानिध सुविवेक हो ॥ रा० ॥ १ ॥ तस घरे कांता श्री देवी, रूपें अमरीना जेहवी हो ॥ रा० ॥ दंपती दोय प्रीति पनोतां, सुख विलसे सुर सम जोता हो ॥ रा० ॥ २ ॥ श्रावक जिनदेव सधातें, तस प्रीति बनी एकांतें हो ॥ रा० ॥ नखमांस तणी परें पाले, नेह निविड चेहू सनाले हो ॥ रा० ॥ ३ ॥ धनहूते पण जिनदेव, परदेश जावा थइ टेव हो ॥ रा० ॥ कहे मित्रनें हुं अन्य देश, जाइश व्यापार उद्देश हो ॥ रा० ॥ ४ ॥ पण मुऊ धन राखो पासें, वावरजो क्षेत्र उल्लासें हो ॥रा०॥ शुनपात्रें जो वावीजें, परनवसवल पामीजें हो ॥रा०॥ ५ ॥ यडुक्त ॥ व्याजे स्याद्विगुण वित्त, व्यवसाये चतुर्गुणम् ॥ क्षेत्रे शतगुण प्रोक्त, पात्रेऽनतगुण नवेत् ॥ १ ॥ नैषधेऽपि ॥ दानपात्रमधमर्णमिहैकग्राहि कोटिगुणित दिविदायि ॥ साधुरेति सुकृतैर्यदि कर्त्तु, पारलौकिककुसीदमसीदत् ॥ २ ॥ पाकारेणोच्यते पापं, त्रकारस्त्राणवाचक ॥ अक्षरद्वयसंयोगे, पापमाहुर्मनीषिण ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ आपी दशसहस्र दीनार, परदेश चल्यो व्यापारें हो ॥ रा० ॥ हवे सोमचंद्र विचारे, धन्य धन्य एहनो अवतार हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ मुऊ हाथे बहु धन दीधो, एणें जन्म कृतारथ कीधो हो ॥ रा० ॥ तो कांइक मुऊ नमेरी, खरचुं शुनगाम सवेरी हो ॥ रा० ॥७॥ पुजल मूर्छा कतारी, प्रशंसे तेहनी नारी हो ॥ रा० ॥ बेहु बांधी पुण्यनी राशि, सुख विलसे निज आवास हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ एक नद्रानामें नारी, श्रीदेवीनें ते प्यारी हो ॥रा०॥ नद्रशेठ सुता गुणखाणी, देवदत्तनी ते धणीयाणी हो ॥रा०॥ ए ॥ तस पीयुनें अंगें रोग, थयो कुष्टनो पूरव जोग हो ॥रा०॥ देखी नद्रा हुई दिलगीर, नयणें ऊरे आंसू नीर हो ॥रा०॥ १० ॥ श्रीदेवी साथ साहेली, करे वात बेहु मन मेली हो ॥रा०॥ कोइ कर्म तणी गति विषमी, मुऊ कंथने वेदन न शमी हो ॥ रा० ॥ ११ ॥ तब दांसीमां श्रीदेवी, बोली तुऊ संगत एहवी हो ॥ रा० ॥ तुऊ सेव्ये ए व्याधि वलगी, जा उठ मुऊथी अलगी हो ॥ रा० ॥ १२ ॥ सुणी नद्रा नीचे वयणें, जोई रही ऊरते नयणें हो ॥ रा० ॥ मनहुं थयुं मांहे दूण, सखीयें

मुझ दीधुं महेणुं हो ॥ रा० ॥ १३ ॥ मन खेद उपन्यो जाणी, श्रीदेवी बोली वाणी हो ॥रा०॥ मत खेद करो मुझ वहाली, में हांसीयें कह्यु तुझ आली हो ॥ रा० ॥ १४ ॥ थइ सुप्रसन्न मनमा तेह, पहोती पोतानें गेह हो ॥ रा० ॥ म्हाही पण चाली आमी, हांसीमां वात विगाडी हो ॥१५॥ हांसी सम नहि कोइ पाप, जाखे त्रिभुवनपति आप हो ॥ रा० ॥ बंधाये सात ने आठ, हासीमां कर्मना गठ हो ॥ रा० ॥ १६ ॥ यडुक्त मागमे ॥ जीवेणं जते हस्समाणे कइ कम्म पयडिर्ज बधएवा ॥ गोयम सत्तविह वधएवा, अठविह वधएवा ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ उत्तमने हसवुं वारु, वेह्र समयमां एम निरधारु हो ॥ यडुक्त ॥ अइरोसो अइ तोसो, अइहासो डुज्जयो हि सवासो ॥ अइ उप्पट आवेसो, पच गुरु अपि लहुयंति ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ नवि करीयें कोनी हासी, जेहथी जग होवे खासी हो ॥ रा० ॥ १७ ॥ एम आले आले जीव, वांधे परजव करे रीव हो ॥ रा० ॥ सोमचड् अने श्रीदेवी, साधुनी सगति सेवी हो ॥ रा० ॥ १८ ॥ कर्युं पुण्य ते आडुं आवे, पहेले सुरलोकें जावे हो ॥ रा० ॥ पंच पल्योपमनु आय, दोय सुर थयां सुंदरकाय हो ॥ रा० ॥ १९ ॥ सोमचंद् चवी तुं तेह, थयो जूमिपति गुणगेह हो ॥ रा० ॥ त्रैलोक्यसुदरी सारी, पहेली श्री देवी नारी हो ॥ रा० ॥ २०॥ परधनें पुण्य कीधु जारी, तिणें परएयो जाहे नारी हो ॥ रा० ॥ हांसीमा कलंक चढाव्यु, ते आ जवें उदयें आव्यु हो ॥ रा० ॥ २१ ॥ निसुणी श्रीगुरुनी वाणी, मन मोहदशा मूझाणी हो ॥रा०॥ ए चौदमी ढाल वखाणी, कहे रामविजय धन्य नाणी हो ॥रा०॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ वांदी कर जोडी कहे, तारो श्री गुरुराज ॥ जवजलमांहे मुझ मिल्यो, दर्शन तुझ झहाज ॥ १ ॥ पतित जणी पावन करो, द्यो प्रभु मुझने दीक्ष ॥ मनमां सूधी धारवी, सद्गुरु ताहरी शीख ॥ २ ॥ गुरु कहे देवाणुप्पिया, तेम करियें मन ठाम ॥ ए अनादि प्रतिबंधमां, नवि पडियें घर काम ॥ ३ ॥ गुरु वदी मदिर चल्यो, विनता सहित नरिंद ॥ राज्य ठव्यो निज तनुजने, मनमा धरि आनद ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ वीर सुणो मोरी विनति ॥ ए देशी ॥ यशशेखर आणा लही, नृप

चाल्यो हो संयमने काज ॥ वलि जयसिंह मुनीशने, कहे आपो हो मुज सं यम राज ॥१॥ बलिहारी गुणवंतनी ॥ नृप मांमे हो व्रत साथें नेह ॥ कुमति कुटिल नारी तजी, नजे समता हो सुंदरी गुणगेह ॥ ब० ॥ २ ॥ शील ग्रही नवतारिणी, गुरुसाथें हो विचरे मुनिहंस ॥ ध्यान विमल मोती चूणे, मतिहंसी हो साथें शुन वंश ॥ ब० ॥ ३ ॥ समयजलाशयने तरे, जस नेदें हो जड चेतननाव ॥ अनुनव चंचुस्वनावथी, नय धारण हो पक्ष उ ज्ज्वलनाव ॥ ब० ॥४॥ शुद्ध आहारें मन रमे, निर्दूषण हो नीरें संतोष ॥ गुरुआणायें चालता, मन वाधे हो वैराग्यनो पोष ॥ ब० ॥ ५ ॥ त्रैलो क्यसुंदरी साधवी, करे किरिया हो गुरुणीनी साथ ॥ व्रत आराधे ऊजलां, मन आण्युं हो जेणें निज हाथ ॥ ब० ॥ ६ ॥ अंतें अणसण आदरी, बेहु पहोता हो पंचम सुर गाम ॥ त्रीजे नवें शिवसुख लह्यां, धर्म तारे हो नवि निसुणो आम ॥ ब० ॥ ७ ॥ कीधो कराव्यो ए सही, अनुमोद्यो हो आपे शिव धर्म ॥ त्रिकरण योगें आदस्यो, मनचिंतित हो पूरे शिव शर्म ॥ ब० ॥ ८ ॥ श्रीषेण नृप एम सांनली, गुरुदेशने हो बूझ्यो मनमांहे ॥ समकित शुद्ध अंगीकरी, श्रावक व्रत हो ग्रहे मन उत्साह ॥ ब० ॥ ए ॥ मुनि वंदी मंदिर वल्या, मन सूधे हो पाले आचार ॥ जीवदया पाले नली, देशमांहे हो वरतावी अपार ॥ ब० ॥ १० ॥ व्यसन निवारे वेगलां, मन वारे हो विषयें सुविशेष ॥ आतमने उज्ज्वल करे, न लगावे हो कांइ का ली रेख ॥ ब० ॥ ११ ॥ चेतन शुकपक्षी थयो, तस संगतें हो अनिनं दिता नार ॥ धर्म नज्यो नगवंतनो, जे साध्यो हो आपे नवपार ॥ ब० ॥ १२ ॥ जेइकनावपणुं लहे, अनिनंदिता हो राणी नृपसंग ॥ उत्तम संगति गुण करे, पढर पण हो तरे तुंब प्रसंग ॥ ब० ॥ १३ ॥ एहवे कोसंबी धणी, बलिराजा हो बलीयो नूपाल ॥ श्रीमतीकूखें उपनी, श्रीकांता हो पुत्री सुकुमार ॥ ब० ॥ १४ ॥ यौवनवय आवी नली, मोहरायने हो रमवानुं गाम ॥ जोड न आवे तेहनी, जगतीमां हो जोतां कोइ गाम ॥ ब० ॥ १५ ॥ श्रीषेण सुत इंडुषेणने, योग जाणी हो सबले परिवार ॥ स्वयंवर साहमी मोकली, आवी उत्तरी हो वनमां तेणी वार ॥ ब० ॥ १६ ॥ पन्नरमी ढाल पूरी थइ, नवि सुणजो हो नावें उजमाल ॥ रामवि जय कहे तेहना, नाम लीजें हो जेहने धर्मनी ढाल ॥ब०॥१७॥ ३०१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूपवती कुमरी घणुं, निरखी बेहु कुमार ॥ मनमथने ते वशें पड्या, वाध्यो विषय विकार ॥१॥ निरखी निरुपम नायका, विषमी कुची जेम ॥ वेरी अंतर जायगा, नेहु तालक प्रेम ॥ २ ॥ चित्त बेहु बंधव तणां, एक इव्य अभिलाप ॥ नेह रहित नीरस थयो, लीली जेहवी लाख ॥ ३ ॥ विषयें विनय तज्यो परो, बिंदुषेण कहे एम ॥ म करिश आशा एहनी, जो तु वांछे क्षेम ॥ ४ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ हरिया मन लाग्युं ॥ ए देशी ॥ बे बंधव अमरष चढ्या, देवरमण उद्यान रे ॥ विषयें मदमाता ॥ तु तुकारें आवीया, बिहु ते योध्ध युवान रे ॥ वि० ॥ १ ॥ लाज न आणी कुल तणी, न गण्यो जन अपवाद रे ॥ वि० ॥ एक तरुणीने कारणें, मांड्यो एम सवाद रे ॥ वि० ॥ २ ॥ लाज तजी अलगी तेणें, नाख्या हथीयारें हाथ रे ॥ वि० ॥ चटपटमां खटपट थइ, आव्या बाथो बाथ रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ योध फुमा धड धडहडे, कायर कंपे प्राण रे ॥ वि० ॥ कोइ न गेडावी शके, मलिया राणो राण रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ कामणगारी कामिनी, शु कीधु एणें एह रे ॥ वि० ॥ जोतां बेहु बंधवतणो, उमी गयो एम नेह रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ वात सुणी श्रीषेणजी, वारणने असमञ्ज रे ॥वि०॥ चित्त चिंते ए उपन्यो, विषयथकी अनरञ्ज रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ धिक् धिक् ए लपटपणु, धिग् धिग् विषय विला स रे ॥ वि० ॥ युवती रूपें जगतमा, मोहचूपें घल्यो पास रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ तिलमात्र सुख विषयतणु, दुःख मेरु उपमान रे ॥ वि० ॥ विष यविलुब्धा मानवी, अगें न वले वान रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ शल्यसमा जिनवर कह्या, काम आशीविष तुल्य रे ॥ वि० ॥ जे एहथी विरम्या सही, ते नर रयण अमूल्य रे ॥ वि० ॥ ए ॥ माहापण एहनुं क्यां गयु, किहां गयो कु लआचार रे ॥ वि० ॥ निर्लज ए लाजे नहिं, विषय पड्यो धिक्कार रे ॥ वि० ॥ १० ॥ जे पुजल नासे सडे, धर्म सयोग वियोग रे ॥ वि० ॥ ते उ पर मूर्छा इसी, अहो अनादिनो रोग रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ यडुक्त ॥ एता नि तानि घनयौवनगर्वितानि, हाराऽर्द्धहारमणिनूपुरसचितानि ॥ वस्त्रान्न पानशयनासनलालितानि, भूमौ लुठंति कुपितानि कलेवराणि ॥ १ ॥

चाल्यो हो संयमने काज ॥ वलि जयसिंह मुनीशने, कहे आपो हो गुण सं यम राज ॥१॥ बलिहारी गुणवतनी ॥ नृप मांके हो व्रत सार्थे नेह ॥ कुमति कुटिल नारी तजी, नजे समता हो सुंदरी गुणगेह ॥ ब० ॥ २ ॥ शीख ग्रही नवतारिणी, गुरुसार्थे हो विचरे मुनिहंस ॥ ध्यान विमल मोती चूणे, मतिहंसी हो सार्थे शुन्न वंश ॥ ब० ॥ ३ ॥ समयजलाशयने तरे, जल नेदें हो जड चेतननाव ॥ अनुनव चचुस्वनावथी, नय धारण हो पक्ष उ ज्ज्वलनाव ॥ ब० ॥४॥ शुद्ध आहारें मन रमे, निर्दूषण हो नीरें संतोष ॥ गुरुआणायें चालतां, मन वाधे हो वैराग्यनो पोष ॥ ब० ॥ ५ ॥ त्रैलो क्यसुंदरी साधवी, करे किरिया हो गुरुणीनी साथ ॥ व्रत आराधे उजलां, मन आण्युं हो जेणें निज हाथ ॥ ब० ॥ ६ ॥ अंतें अणसण आदरी, बेहु पहोतां हो पंचम सुर गाम ॥ त्रीजे नवें शिवसुख लह्यां, धर्म तारे हो नवि निसुणो आम ॥ ब० ॥ ७ ॥ कीधो कराव्यो ए सही, अनुमोद्यो हो आपे शिव धर्म ॥ त्रिकरण योगें आदस्यो, मनचिंतित हो पूरे शिव शर्म ॥ ब० ॥ ८ ॥ श्रीषेण नृप एम सांनली, गुरुदेशने हो बूज्यो मनमांहे ॥ समकित शुद्ध अंगीकरी, श्रावक व्रत हो ग्रहे मन उत्साह ॥ ब० ॥ ए ॥ मुनि वंदी मंदिर वल्या, मन सूधे हो पाले आचार ॥ जीवदया पाले नली, देशमांहे हो वरतावी अपार ॥ ब० ॥ १० ॥ व्यसन निवारे वेगलां, मन वारे हो विषयें सुविशेष ॥ आतमने उज्ज्वल करे, न लगावे हो कांइ का ली रेख ॥ ब० ॥ ११ ॥ चेतन शुक्लपक्षी थयो, तस संगतें हो अनिनं दिता नार ॥ धर्म नज्यो नगवतनो, जे साध्यो हो आपे नवपार ॥ ब० ॥ १२ ॥ नेइकनावपणुं लहे, अनिनंदिता हो राणी नृपसंग ॥ उत्तम संगति गुण करे, पत्थर पण हो तरे तुंब प्रसंग ॥ ब० ॥ १३ ॥ एहवे कोसंबी धणी, बलिराजा हो बलीयो नूपाल ॥ श्रीमतीकूखें उपनी, श्रीकांता हो पुत्री सुकुमार ॥ ब० ॥ १४ ॥ यौवनवय आवी नली, मोहरायने हो रमवानुं गाम ॥ जोड न आवे तेहनी, जगतीमां हो जोतां कोइ गाम ॥ ब० ॥ १५ ॥ श्रीषेण सुत इन्दुषेणने, योग जाणी हो सबले परिवार ॥ स्वयंवर साहमी मोकली, आवी उतरी हो वनमां तेणी वार ॥ ब० ॥ १६ ॥ पन्नरमी ढाल पूरी थइ, नवि सुणजो हो नावें उजमाल ॥ रामवि जय कहे तेहना, नाम लीजें हो जेहने धर्मनी ढाल ॥ब०॥१७॥ ३०१ ॥

ए बूटशुं, बांध्युं अमें निर्लज्ज ॥ ५ ॥ मल्यो सहू परिवार तव, शोकाकुल ततकाल ॥ स्वामी तें माया तजी, कुण करशे संन्नाल ॥ ६ ॥ गया विदेशें वाहुडे, वाह्ला कोश्क वार ॥ पण इण वाटें जे वल्या, ते न मले बिजी वार ॥ ७ ॥ प्रेतकार्य करि पितरना, आणी मन अदोह ॥ राज दीये गोत्री नणी, मल्यो विषयनो मोह ॥ ८ ॥ एहवे आव्या सांजली, धर्मरुचि अणगार ॥ जे अगाध नवसिंधुना, सूधा तारणहार ॥ ए ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ साहिबा मोतीडो रे हमारो ॥ ए देशी ॥ आव्या दोय कुमर वदेवा, करे मुनि चरणनी सेवा ॥ साधुजी अमने अव तारो, मोहना मुने पार उतारो ॥ अमें अपराधी पापें नरिया, तुमें निरुपाधिक गुणना दरिया ॥ सा० ॥ मो० ॥१॥ अमें शब्दादिक गुण व्यासगी, तुमें तेहना सुपने नहिं सगी ॥ सा० ॥ मो० ॥ अमें क्रोधादिक कषायें नडिया, तुमें उत्तम गुणगणे चढिया ॥ सा० ॥ मा० ॥ २ ॥ अमें मदमातंगनें वश पडिया, नवि तुमें ते तिलमात्र आनडीया ॥ सा० ॥ मो० ॥ अमें अशरण अविनीत अजाण, तुमें जगशरण विनीत सुजाण ॥ सा० ॥ मो० ॥ ३ ॥ कीधी कमाइ अमें अति खोटी मुनिवरजी तुम पदवी महोटी ॥ सा० ॥ मो० ॥ नव अ निनदी अमें बुपावी, तुमें षट कायना नहि परितापी ॥ सा० ॥ मो० ॥ ४ ॥ अमो ते इन्द्रियें विषय राच्या, तुमें अनुनव सुखमां रह्या माच्या ॥ सा० ॥ मो० ॥ कीधी वात अमें अति काची, तुम किरिया नि क लंक ने साची ॥ सा० ॥ मो० ॥ ५ ॥ पतित अमें पुरुषारथ हीणा, तुमें पावन गुणज्ञान अहीणा ॥ सा० ॥ मो० ॥ हवे तुम चरणे आवी व लग्या, एक पलक नवि रहेशु अलगा ॥ सा० ॥ मो० ॥ ६ ॥ द्यो दीक्षा करो पावन काया, तो अमें जितनिशाण वजाया ॥ सा० ॥मो०॥ चार स हस्रराजेश्वर सार्थे, लीधी दीक्षा श्रीगुरुहाथे ॥ स० ॥ मो० ॥ ७ ॥ मुनि वर कीधो उग्र विहार, पाले चार माहाव्रत सार ॥ सा० ॥ मो० ॥ तप त पीयां अति डुक्कर गाढां, राखे रूडी चारित्र राढा ॥सा०॥ मो० ॥८॥ सहे परिसह तापने टाढ, खड खड हिंमता वाजे हाड ॥ सा० ॥ मो० ॥ चढीया गुणश्रेणी आरोही, मुनिवर अकल अबीह अकोही ॥ सा० ॥ मो० ॥ए॥ वाध्या उपशम गुणना जोरा, नाठा डुष्ट मदादिक चोरा ॥ सा० ॥ मो०॥

अन्यदप्युक्तं ॥ विकलयति कलाकुशलं, हसति शुचि पंमितं विडंबयति॥ अधर यति धीरपुरुषं, क्षणेन मकरध्वजोदेव ॥१॥ लीलावतीनां सहजाविलासा, स्तएव मूढस्य हृदि स्फुरति ॥ रागोनलिन्यांहि निसर्गसिद्ध, स्तत्र भ्रमत्येव मुधा षडंह्रि ॥२॥ पूर्वढाल ॥ कलहथकी विरम्या नहि, लाज्यो मन नृपाल रे ॥ वि० ॥ एणें कुपुत्रे आदस्यो, निर्मल वंशविटाल रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ केम देखाडिश लोकने, मुख दरवारें वेसी रे ॥ वि० ॥ मरण नलुं मुजने इहां, घरने खूणे पेसी रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ राणी आगल जइ कहु, धरे परमेष्ठी ध्यान रे ॥ वि० ॥ विषमिश्रित लेइ कमलनें, सूंघे मरण निदान रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ काल कस्यो श्रीषेणजी, राणी दोय पण तेम रे ॥ वि०॥ सत्यनामा चोथी वली, जूर्ज अनरथ एम रे ॥वि०॥१५॥ उत्तर कुरुमां उ पन्यां, युगलपणे ते चार रे ॥वि०॥ एक नृप प्रथम प्रिया तनु, बीजी बीजी द्विजनार रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ एहवे चारण मुनिवरु, गगनें आव्यो कोय रे ॥ वि० ॥ देवरमण उद्यानमां, जिहां जूझे छे दोय रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ अहो उत्तम कुल उपन्या, चरमशरीरी होइ रे ॥ वि० ॥ एम केम लज वाता नथी, करता कुकरम दोइ रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ एह कुचेष्टित तुम तणुं, देखी पितर परलोक रें ॥ वि० ॥ पहोता पण जाण्यु नहिं, धीक् तुम माहापण फोक रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ अनृणपणुं कीधु नलुं, थया तरुणीना यार रे ॥ वि० ॥ मरणहेतु मावित्रने, थया तुमें मूढ गमार रे ॥ वि० ॥२०॥ शब्द सुणी साधु तणो, चित्त आव्यु तव ठाम रे ॥ वि० ॥ युद्ध तजी वेहू जणा, नाखे मुनिने आम रे ॥ वि० ॥ २१ ॥ साचो शो लमी ढालमां, विषमो विषय जजाल रे ॥ वि० ॥ रामविजय कहे ते नला, जेणें टाल्यो ए जंजाल रे ॥वि०॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०७ ॥श्लो० ४१

॥ दोहा ॥

॥ तु अमने तारक मल्यो, नि कारण जगबंधु॥ युद्ध करतां तारिया, पडता नवजल अंधु ॥१॥ अशरण शरण तुमें थया, वली अनाथना नाथ ॥ आ वीने अम ऊपरें, कृपा धरी मुनिनाथ॥ २ ॥ वांदीने दोडी चल्या, आव्या तेह आगार ॥ पितर देखी धरणी ढल्या, चाली आंसुधार ॥ ३ ॥ रोता हियडें फाटते, करे विलाप अपार ॥ धार न खंचे नयण दो, जेम नाद्रव जल धार ॥ ४ ॥ हा हा हा ए शुं थयुं, अमथी सबल अकज्ज ॥ केम कुकर्मे

॥ अथ द्वितीयखंमस्य प्रारंजोऽयं ॥

॥ दोहा ॥

॥ अरिहंत सिद्ध नमूं वली, आचारिज उवझाय ॥ साधु सकल परमेष्ठिपद, जजियें नित सुखदाय ॥ १ ॥ बीजो खंम रचूं हवे, सरस कथा अधिकार ॥ शांतिनाथ जववर्णना, करता जव निस्तार ॥ २ ॥ सुर लोकें सुख जोगवे, मनोवांछित वर योग ॥ नाटक बद्ध बत्रीशमा, नित नित नवला जोग ॥ ३ ॥ वैमानिक सुख जोगवे, ते चारें पुण्यवंत ॥ चवी कीहां ते अवतरे, ते दाखुं विरतंत ॥ ४ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ देशी चोपाईनी ॥ जंबूद्वीपें जरत मकार, वैताढ्य नामें पर्वत सार ॥ पहोलपणे जोयण पच्चास, उंचपणे पचवीश विलास ॥१॥ राजे रजत तणो गिरि तेह, ऊपर सोहे जिनवर गेह ॥ पुण्यवंतने वसवा गाम, उत्तरश्रेणें पुर अजिराम ॥ २ ॥ नामें रथनूपुर चक्रवाल, ऋद्धें सोहे जाकजमाल ॥ विद्याधर सुखीया सहु कोय, छुःखीयो नामें न वसे कोय ॥ ३ ॥ साते सुख जिहां वासो वसे, धर्मी सहु धर्में उल्लसे ॥ साते सुखनां दाखुं नाम, काव्यथकी सुणजो मन गाम ॥ ४ ॥ काव्यं ॥ नीरोगत्व न जवति ऋण चाऽप्रवासी तथैव, वासोनित्यं स्वजनसहितोनिर्जयस्थानकेषु ॥ लक्ष्मी कांता तदनुसुजगा सगति श्रेष्ठपुत्रां, चित्त शुद्ध विमलकृपया सप्तधा सौख्यमेतत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ तिण नगरी विद्याधर धणी, ज्वलनजटी नामें बहुगुणी ॥ विद्यावंत वारू सुविवेक, वायुवेगा तस गृहिणी एक ॥ ५ ॥ लवणिम रूप गुणें दंपती, शोल शृंगारें ते शोजती ॥ तद्यथा ॥ श्लोक ॥ आदौ मज्जनचारुजालतिलक नेत्रांजन कुंमल, नासामौक्तिकहारचारुकुसुम जंकारवन्नूपुरम् ॥ अंगे चंदनलेपकंचुकमणिक्षुद्रावलीर्घंटिका, तांबूल करकंकण चतुरता शृंगारका षोडश ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ ए सोले ऊपर शिरदार, नारीनें लज्जा आचार ॥ ६ ॥ लज्जावती ने महासती, रूपें दासी कीधी रति ॥ अर्कसुपन सूचित सुत जण्यो, अर्ककीर्त्ति नामें बहु जण्यो ॥ ७ ॥ यौवन वय सहु मन जाविउं, युवराज पद शोजावीयुं ॥ तदनंतर एक पुत्री जणी, चंद्रलेखा सू

नवपल्लव हुइ संयमवाडी, समताजल सींचतां जाडी ॥ सा० ॥ मो० ॥ ॥ १० ॥ वेद्ध मुनि निजगुणथी वाधे, साधन साधु महीने साधे ॥ सा० ॥मो०॥ अप्रमत्त नूमि निरधारी, मोह कपरें कीधी स्वारी ॥ सा० ॥ मो० ॥ ११ ॥ नाग्यो मोह सबल नडवाह, चेतन जाति चब्यो उत्साह ॥सा० ॥मो०॥ कीणमोह गुणगणें आवी, अंतर्मुहूर्त्त स्वारी टकावी ॥ सा० ॥ मो० ॥ १२ ॥ छेद करे आवरण वेद्धनो, चेतन चढी तेरम गुण लीनो ॥ सा० ॥ मो० ॥ प्रकट्यो केवलनाण विनास, नासक लोकालोक प्रकाश ॥ सा० ॥ मो० ॥ १३ ॥ जय जय शब्द करे सुरराजी, देव निशाणें रसु अन गाजी ॥ सा० ॥ मो० ॥ वेद्ध मुनिवर केवल रुद्धि लाधी, अंते सिद्धदशा तेणें साधी ॥ सा० ॥ मो० ॥ १४ ॥ हवे श्रीषेणादिक दोय युगल, त्रण पल्य आयु पालीने विमल ॥ सा० ॥ मो० ॥ तिहांथी चवि सौधर्मे चार, त्रीजे नवें सुरसुख लह्या सार ॥ सा० ॥ मो० ॥ १५ ॥ ढाल सत्तरमी सुणतां प्यारी, शांति प्रनु गुण गाउ विचारी ॥मो०॥ सा० ॥ श्री गुरु सुमतिविजयनो शिष्य, राम कहे प्रणमो निश दीस ॥सा०॥मो०॥१६॥

॥ राग धन्याश्री ॥

॥ आतमा चित्तशुं चेत चातुरपणे, धर्म विण कोइ दूजो न जगमां ॥ धर्म ते शुद्ध सहजातमा आपणो, तारशे ते सही तुफ वगमां ॥ आ० ॥ १ ॥ निज उपादानथी निमित्त बल पामीयें, धर्म अविरुद्ध सुविशुद्ध लेशी ॥ निमित्त शुन तेह जन संकथा जाणजो, तुरत ते नकने मुक्ति वेशी ॥ आ० ॥ २ ॥ मादरे मन घणी नक्ति सुणवा तणी, शांति प्रनु रास रसनाधिकारें ॥ तेहनो खंम पहेलो थयो पुस्यथी, सांनलो नवि यणो निर्विकारें ॥ आ० ॥ ३ ॥ आगलें सरस रस शांतिजिनरासमां, तास रचना रचीशुं नलेरी ॥ वात विकथा तजी चित्त समता नजी, सांनलो छोडो निदा अनेरी ॥ आ० ॥ ४ ॥ सत्तर पंचाशीए राजनगरें रही, आदिजिन चरण सुपसाय साध्यो ॥ श्री सुमति सुगुरुतणु सान्निध्य रामनें, आज आनदनो पोष वाध्यो ॥ आ० ॥ ५ ॥ सर्वगाथा ॥ ४३७ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥ ४१ ॥ इति पंमित श्री रामविजयविरचित श्री शांति जिनवधे प्राकतप्रवधे सुकृतसंधे पूर्वनवानुबंधे मगलकलशचरित्रे प्राकृतद्वादश नवनिर्बंधे नवत्रयवर्णननामा प्रथम खम सपूर्ण ॥ १ ॥

प्रत्यें, पाठवीयो तिण गाय ॥ पोतनपुर पहोतो तुरत, जाइ विन वियो राय ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥आठ टकानो कंकणो रे॥ नणदल॥ थरकी रही मोरी बांह॥ कंकण मोल लीयो ॥ ए देशी ॥ दूत कहे कर जोडीने रे ॥ साहिबा ॥ सुण प्रजापति स्वामि ॥ वारू वयण सुणो ॥ ज्वलनजटीनो मोकल्यो रे ॥ सा० ॥ हु आव्यो शुन्न काम ॥ वा० ॥ १ ॥ स्वयप्रन्ना नामें नली रे ॥ सा०॥ कुमरी गुणनी खाण ॥ वा० ॥ तुम तनुज त्रिपृष्ठने रे ॥ सा० ॥ देवा वाछे राण ॥ वा० ॥ २ ॥ सरखे सरखी जोडली रे ॥ सा० ॥ हशे कोडी कल्याण ॥ वा० ॥ दूत सन्मानी वालीयो रे ॥ सा० ॥ मान्यु ए वचन प्रमाण ॥ वा० ॥ ३ ॥ इण अवसरें प्रतिविष्णुजी रे ॥ सा० ॥ अश्वग्रीव नरिंद ॥ वा० ॥ शोल सहस्र नूपालनो रे ॥ सा० ॥ नायक धरणी इंद ॥ वा० ॥४॥ चढयो अहमेवें आकरो रे ॥ सा० ॥ नहिं कोइ मुऊ समान ॥ वा० ॥ सहु किंकर मुऊ आगलें रे ॥सा०॥ हुं त्रिहु खम सुलतान ॥वा०॥५॥ तनमद धनमद आकलो रे ॥ सा० ॥ यौवनमद उन्माद ॥ वा० ॥ धींगो थइ धरा नोगवे रे ॥सा०॥ वींट्यो नूप गरद्द ॥वा०॥६॥ मान चढयु अंस तेहने रे ॥ सा० ॥ पूछे एकदिन तेह ॥ वा० ॥ मोत होशे कोथी मुने रे ॥ सा० ॥ कहे नैमित्तिक एह ॥ वा० ॥७॥ वलतुं कहे नैमित्तियो रे ॥ सा० ॥ मत आणो ममदोष ॥ वा० ॥ हणजे तारा दूतने रें ॥ सा० ॥ जे चढियो नर रोष ॥ वा० ॥ ८ ॥ शाल विणासे सिंहलो रे ॥ सा० ॥ ताहरी सीम मऊार ॥ वा० ॥ हणशे हाथें तेहने रे ॥ सा० ॥ ते तुऊ मारणहार ॥ वा० ॥ ए ॥ वात सुणी कोपें चढयो रे ॥ सा० ॥ फेड्डु तेहनु गम ॥ वा० ॥ सामुं कुण नाली शके रे ॥ सा० ॥ पाडुं तेहनी माम ॥ वा० ॥ १० ॥ इण अवसर कानें सुण्या रे ॥ सा० ॥ बलीया बधव बेह ॥ वा० ॥ रखे आगल जातां थका रे ॥ सा० ॥ विहणे मुऊने एह ॥ वा० ॥ ११ ॥ करूं परीक्षा एहनी रे ॥ सा० ॥ पहेली वाधुं पाज ॥ वा० ॥ वैरी व्याधि ठेदियें रे ॥ सा० ॥ऊगतां तत्काल ॥ वा० ॥ १२ ॥ सहेजें मलवानें मिषें रे ॥सा०॥ मोकलियो एक दूत ॥वा०॥ चमवेगानिध आकरो रे ॥सा०॥ पोतनपुर तेह पहुत ॥ वा० ॥ १३ ॥ नाटक जोवानें मली रे ॥ सा० ॥ चावी राज

चित बहुगुणी ॥ ८ ॥ स्वयंप्रना नामें सा हुइ, बुद्धिमती योवन वय लही ॥ अनिनंदन जगनंदन दोय, नमचारी वंदे मुनि सोय ॥ ९ ॥ निसुणी धर्मतणी देशना, लाधी समकितनी वासना ॥ पर्वदिनें पोषध अनुसरे, त्रण काल जिनपूजा करे ॥ १० ॥ एक दिन जिनपूजा आदरी, नमण तणुं जल लेइ कुमरी ॥ जनकसमीपें आवी चंग, वेसारी तेहनें उत्संग ॥ ११ ॥ जोई रूप वाध्यो मन हर्ष, पुत्री परणावा उत्कर्ष ॥ वहे जइ तप पारणुं करो, उत्तम कारजने आदरो ॥ १२ ॥ तेड्या मंत्रीश्वर गतशोक, वर जोवो पुत्रीने योग्य ॥ आप आपणी मति अनुसरी, उत्तर आपे नृपनें फरी ॥ १३ ॥ एक बोल्यो सुकृत अनिधान, मंत्रीश्वर बहुबुद्धिनिधान ॥ राजन् जेहनो वारो आज, तेहने परणावो माहाराज ॥ १४ ॥ रत्नपुरें महोटो नूपाल, अश्वग्रीव त्रिहु खंम रखवाल ॥ प्रतिविष्णु तेहनें दीजीयें, परणावी लाहो लीजियें ॥ १५ ॥ अपर कहे उत्तरश्रेणीयें, प्रनकरा नगरी तेणीयें ॥ मेघधनाभिध महोटो संत, मेघमालिनी केरो कंत ॥ १६ ॥ विद्युत्प्रन सुत बेटो वली, ज्योतिर्माला हे निर्मली ॥ तस सुतने ए पुत्री योग्य, तस पुत्री आपण सुत नोग्य ॥ १७ ॥ अपर कहे स्वयंवरने करो, पुत्री मन माने ते वरो ॥ सुणी विचार विसर्ज्या तेह, राजन पहोतो आपण गेह ॥ १८ ॥ एकदिन नैमित्तिक आवियो, सन्निन्नश्रोत्र नृप बोलावियो ॥ कहो मुज पुत्री वरनी वात, जो जाणो ज्योतिष साक्षात ॥ १९ ॥ हवे कहेशे ते वात रसाल, बीजे खंमें पहेली ढाल ॥ रामविजय नांखी मन रली, आगल वातज हे अति नली ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ २४ ॥ गाथा तथा श्लोक ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे नैमित्तिक रायने, वारू वयण विलास ॥ पोतनपुर नृपति नलो, नाम प्रजापति जास ॥ १ ॥ तस अंगज उत्तम सबल, त्रिपृष्ठ अचल बे बंधु ॥ वासुदेव बलनद्र ते, थाशे गुणमणिसिंधु ॥ २ ॥ अश्वग्रीव प्रत्यें सही, हणशे ते मदमत्त ॥ एहवु साधुमुखें सुण्युं, ते तु माने सत्य ॥ ३ ॥ तुमने अधिपति थापशे, विद्याधर शिरदार ॥ तस पटराणी होयशे, स्वयंप्रना वर नार ॥ ४ ॥ एवुं लमबर्खे जह्नु, साधु तणो वयणेह ॥ वेजो शाबासी मुने, जब देखो नयणेह ॥ ५ ॥ नृपति मन संतोषियो, सन्मान्यो दैवज्ञ ॥ नक्तियें करी बोलावियो, नरपति सबल गुणज्ञ ॥ ६ ॥ हवे दूत मारीचि

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ किसके चेले किसके पूत ॥ ए देशी ॥ आव्या सन्नामां वधव जोडी, प्रणमे पितरना पद कर जोडी ॥ वलवत वे ॥ केम दीसो चितातुर आज, नांखो ते अमनें माहाराज ॥ दिल जे होइ ॥ १ ॥ कहे जनक सुणो पुत्र सुजाण, कुलदीपक कुल अवर जाण ॥ व० ॥ विण वारे तेडुं थयुं आज, तेणें जावु चोकीने काज ॥ दि० ॥ २ ॥ राज विराजो निज आवास, हुकम करो अमने उल्लास ॥ व० ॥ ए वनचारी पशु अवतार, ए उपर शु थया असवार ॥ दि० ॥ ३ ॥ चाल्या वलीया वधव दोइ, जगमां देव करे ते होय ॥ व० ॥ जाग्य वली तेजें तेजाल, चाले जिम मयगलनी चाल ॥ दि० ॥ ४ ॥ शालक्षेत्रना कहे रखवाल, अहो तुम न मल्या कोइ नूपाल ॥ व० ॥ शु तुम निज जीवित नहि काज, जे एकला आव्या गो आज ॥ दि० ॥ ५ ॥ नहि साह्य ने नहि परिवार, सिह संघातें युद्ध विचार ॥ व० ॥ रे रे शोर करे शो गमार, करथी देखाडो वनचार ॥ दि० ॥ ६ ॥ देखाड्यु पर्वतनु द्वार, मांहे सूतो सिह हुशियार ॥ व० ॥ रथ वेसी आव्या तेणि वार, कानें सुण्यो रथनो चित्कार ॥ दि० ॥ ७ ॥ जाग्यो आलस मोडी अग, पंचानन करवाने जग ॥ व० ॥ मुख विकाश्यु उपाडी फाल, आव्यो गुफा वाहिर उजमाल ॥ दि० ॥ ८ ॥ देखी ते पदचारी सिह, रथ मूक्यो अलगो नरसिह ॥ व० ॥ देखी निरायुध ते मृगनाथ, खड्गरत्न मूके जूनाथ ॥ दि० ॥ ए ॥ केसरी चिते अचरिज एक, मुज पासें आवे ए एक ॥ व० ॥ वीजु पदचारी मुज जेम, जींती जाशे कहो ए केम ॥ दि० ॥ १० ॥ त्रीजु मूके आयुद्ध दूर, ए हना मनमा अमरप जूर ॥ व० ॥ मुज अवगणना करे निःशक, काढु मरोडी एहनो वक ॥ दि० ॥ ११ ॥ उछली नज हरि दीधी दोट, जावी हरि शिर करवा चोट ॥ व० ॥ कर्ले कर क्षेपी मुख वल पोठ, हाथे साही हरिना होठ ॥ दि० ॥ १२ ॥ नाख्यो विदारी जोतां तंत, जीरण शाटक परें वलवत ॥ व० ॥ रोपें कलेवर थरके तास, सारथि कहे सुण सिह हतासु ॥दि०॥१३॥ मत माख्यो जाणे सामान्य, सिह तु नरसिह योद्ध युवान ॥व०॥ सिहें सिह हण्यो नहिं दोप, मत आणे मनमांहे रोप ॥ दि० ॥ १४ ॥ सुणी वात न धस्या युद्ध प्राण, मरण लही नरकें गयो दीन ॥ व० ॥

कुली बत्रीश ॥ वा० ॥ इणवेलामां राउलो रे आवी, दूत नमावे शीश ॥ वा० ॥१४॥ रायने शंका उपनी रे आव्यो, प्रतिहरिनो केम दूत ॥वा०॥ नाटक नंग कस्यो एणें रे आवी, कोप्या दोय नृपपूत ॥वा०॥१५॥ ते सन्मानी था लियो रे पाछो, मद मूछे वल घालि ॥वा०॥ पूठें आवी दो जणा रे आगे, मद्दोकम कूड्यो जालि ॥ वा० ॥१६॥ नाटक नग अपराधिया रे धोडी, किहां जाइश हवे नाशि ॥ वा० ॥ वात सुणी राय आवियो रे दोडी, मूकाव्यो ए दास ॥ वा० ॥ १७ ॥ राय खमावे दूतने रे घहेला, ए दोय बाल स नाव ॥ वा० ॥ घर आणी संतोपियो रे वहेलो, प्रतिहरि नय मन नावि ॥ वा० ॥ १८ ॥ आव्यो दूत उतावलो रे वनमां, विहितो अमरपनाव ॥ वा० ॥ समग्र आगल आवीने रे जनमां, नाखे ते सद्भाव ॥ वा० ॥ १ए॥ राय प्रजापति सारिखो रे ॥सा०॥ नहिं काहिं तेहनो दोप ॥वा०॥ पण तस अगज कगता रे ॥ सा० ॥ विप अकूरा नास ॥ वा० ॥ २० ॥ वात सवे राय सांनली रे चित्तमां, चिते अतरगूढ ॥ वा० ॥ मौन धरीने ते रह्यो रे कस्यमा, मतिमूज्यो विमूढ ॥वा०॥२१॥ नावीनाव टले नहिं रे नवियां, निसुणो बीजी ढाल ॥वा०॥ धन्य मुनि टाल्यो जेणें रे विरुद्ध, मद्दोटो मवजंजाल ॥ वा० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥ ५२ ॥ श्लोक ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ शालक्षेत्र प्रतिविष्णुनें, छे बहु निज परिनोग ॥ तास उपद्रव नित्य करे, सिंह सबल बलयोग ॥ १ ॥ तस चोकी चोंपे करे, प्रतिवर्षें राजान ॥ वारें बहुपरिवारसुत, नृप आदेश सुजाण ॥ २ ॥ तिण वर्षे वारक विना, वाजिग्रीव नृपत्त ॥ हुकम प्रजापतिने करे, मूकी दूत तुरत्त ॥ ३ ॥ चित्त मां चिंता ऊपनी, दूतथकी थयु काम ॥ कस्यु कुकर्म अविचारिनें, उदयें आव्यु आम ॥४॥ यत ॥ सहसा विदधीत न क्रिया, मविवेक परमापदां पदम् ॥ वृणुते हि विमृश्यकारिण, गुणलुब्धा स्वयमेव संपद ॥ १ ॥ काज विचारीनें करे, रहे तेहनी लाज ॥ अति उत्सुक उतावला, ते विणसाडे काज ॥ ५ ॥ यहुक्त ॥ सुगुणमपगुण वा कुर्वता कार्यजातं, परिणतिरवधार्या यत्नत पंमितेन ॥ अतिरनसकृतानां कर्मणामाविपत्ते, नवति हृदयदाही शल्यतुल्योविपाक ॥ २ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ देशी कडखानी ॥ कोप चढे क्रूरलोचन कहे शूरमां, सचिव धसि जव त्यहां जाउ पहेला ॥ दोय ते डुष्टनें ज्वलन त्रीजा जणी, बाधी मुसके इहां लाउ वहेला ॥ १ ॥ जोयजो विषयथी विषम गति नीपजे, विषय नडिया वढे एम घेटा ॥ विषयथी सुरवरा नरवरा खेचरा, नारि आगें रह्या जेम चेटा ॥ जो० ॥ २ ॥ दूत आव्यो वही पोतनपुर सही, मद चढयो बोल बोले अटारो ॥ मुछ वल घालतो शत्रु दल पाडतो, वांकडो बाधि केडें कटारो ॥ जो० ॥ ३ ॥ रे सुतारत्न मूकी निजस्वामीने, ज्वलन किम रकने हाथे दीधु ॥ रत्नतु गण प्रचुरेव पुहवीतलें, नीचनु वाक्य निसुणयुं न सीधू ॥ जो० ॥ ४ ॥ यत ॥ मणिर्मेदिनी चदन दिव्यहेति, वेंर वामनेत्रांगजो वाजिराज ॥ विना नूभुज कोहि नोकु समर्थो, गृहे युज्यते नैव चान्य स्य पुंस ॥ ४ ॥ ज्वलन कहे दूत सुण एह साचु कहुं, स्वामी जाणी सुता एह दत्ता ॥ बोल तु पाधरे निजधरा ए नहिं, कां सहे अन्यथा चरणलत्ता ॥ जो० ॥ ५ ॥ कुमर कहे दूत वाचाल दीसे नलो, जा कहु जीवतो जीव लेई ॥ पारकी नारी आशा करे तादृशो, स्वामि मरशे अखूटेज एही ॥ जो० ॥ ६ ॥ जाणु मरवा तणी होंश दीसे घणी, जे अकाजें न लाजे न बूके ॥ आवियो फीटणकाल तुऊ स्वामीनो, तो सही एहवी बुद्धि सूके ॥ जो० ॥ ७ ॥ दूत आगो थयो तुरत पाछो गयो, स्वामी आगें सहू वात गाई ॥ वात सुणि कंपीयो सबल शिर चाटको, तुरत गेडी निशाणें दिवाई ॥ जो० ॥ ८ ॥ हल हल थाउ हथियार ग्रहि सावदा, सबल विद्याधरो करो सजाई ॥ तुरत पहोंच्यो जइ तेह पोतनपुरें, देखतां खेद नास्यो वमाइ ॥ जो० ॥ ए ॥ आवीया तरवरा सैन्यशु परिवस्या, नयर पोतनपुरें तेह वेला ॥ सिंहजित सामुहो आवी अडियो हवी, दोट दीधी कस्या जेल जेला ॥ जो० ॥ १० ॥ देखी नडवाय नाग सहु वापडा, कहि आकाश पाछा सिधाव्या ॥ कुमर आव्या नगरजीत फत्ते करी, सधव मार्तंगमोती वधाव्या ॥ जो० ॥ ११ ॥ त्रिपृष्ठ उर अचल बेहु खेचरें परवस्या, आविया श्वसुरगेहें जमाई ॥ कंत स्वयंप्रना कुमरीनो आवियो, घर घरे वांटे सहुए वधाई ॥ जो० ॥ १२ ॥ सामुहो आवियो शत्रु निसुणी तदा, आप हयग्रीव कीधी चढाई ॥ लाख वर्द्धताली गज हयवरा हिंसता, कोडि नव अश्वशुं आव्यो धाई ॥ जो० ॥

चर्मे लेइ हरिनुं गुणवास, मोकलावे प्रतिहरिनी पास ॥ वि० ॥ १५ ॥ कहेवाडे माने मुफ पाड, सिहतणां में पूछ्या लाड ॥ व० ॥ जम्प बेगो हवे कूर ने जात, मुफ सान्निध्य म धरिश प्रतात ॥ वि० ॥ १६ ॥ नि सुणी वैरीना वयण कठोर, मनमांहे कुहवाणो जोर ॥ व० ॥ अतर अ नल प्रज्वलियो पूर, चिते हणवा ते घेहु शूर ॥ वि० ॥ १७ ॥ पुण्यवसा जस चढती होय, शु करे वैरी साहामु जोय ॥ व० ॥ आव्यो पोतनपु रनी हजूर, हर्षे वाज्या तव जय तूर ॥ वि० ॥ १८ ॥ हवे जवि सुणजो अधिकार, आगल वधशे बहु विस्तार ॥ व० ॥ बीजे खमें त्रीजी ढाल, विरुठ क्रोध वडो चामाल ॥ वि० ॥ १९ ॥ सर्वगाथा ॥ ७७ ॥ श्लोक ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वाजिग्रीव इण अवसरें, स्वयंप्रजा सुकुमार ॥ रमणी निरुपम सां जली, वाध्यो विषयजजाल ॥ १ ॥ मानिनी ए मोहनलता, मनमानी सुखदाय ॥ ज्वलनजणी कहे तुफ सुता, मुफ सीताव परणाय ॥ २ ॥ सुखिणी थाशे तुफ सुता, वली पामिश बहु मान ॥ रस रहेशे आपण अधिक, ए वातें म करिश कान ॥ ३ ॥ यत्किंचित् उत्तर कही, वाल्यो चर राजन ॥ पोतन पुर त्रिपृष्ठने, परणावी प्रछन्न ॥४॥ वात जली अथवा बुरी, षटकर्णे हुइ जेह ॥ पसरे पणिहारी मुखें, ढांकी न रहे तेह ॥ ५ ॥ यत ॥ खंमण पीसण जलवहण, बाहर जूमि गयांह ॥ देवछुवण पप्पड वणण, रसगोठी महिलांह ॥ १ ॥ पण वधशे ए वातथी, आगल बहु सताप ॥ अश्वग्रीव मागी हती, पण परणावी नहिं बाप ॥६॥ सेवक मुख प्रतिहरि सुणी, परणावी सा बाल ॥ त्रिपृष्ठजणी सामी जइ, करी अतर जाल ॥७॥ विषयथकी वाध्यो घणो, नारीतणे निमित्त ॥ कोप चढयो जाणे नहिं, कोण शत्रु कुण मित्र ॥ ८ ॥ जगमां नारी सम नहि, अवर कोइ जंजाल ॥ विषयविलुब्धां मानवी, पडियां मोहने जाल ॥९॥ समफाव्यो समजे नहिं, मत्रीश्वर वय णेह ॥ वली अज्ञानें आवस्यो, नवि निरखे नयणेह ॥ १० ॥ यडुक्त ॥ एकं हि चक्षुरमलं सहजोविवेक, स्तद्वद्भिरेव सह सवसतिर्द्वितीयम् ॥ एतद्वयं जुवि न यस्य स तत्त्वतोऽध, स्तस्यापमार्गचलने खलु कोऽपराध ॥ १ ॥ यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शिक्षा तस्य करोति किम् ॥ लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्प्पण किं करिष्यति ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ज्वलनजटी वैताढ्यनुं, विद्याधरस्वामित्त ॥ आपे अति कलट धरी, त्रिहु खंमें अधिपत्त ॥ १ ॥ अर्ककीर्त्तिने आदरें, ज्योतिर्माला नाम ॥ विद्युत्प्रज्ञ जगिनी जणी, परणावी तिण गाम ॥ २ ॥ अति आम्बरें आवियां, निज नयरी नरसिंह ॥ बेहु बाधव सुख जोगवे, पुण्यें अकल अबीह ॥ ३ ॥ यडुक्त ॥ तावच्चन्द्रबल ततोग्रहबल ताराबल जूबलं, तावद्योगनियोगमत्रमहिमा तावत्कृतं पौरुषम् ॥ तावत्सिध्यति वांछितार्थमखिलं तावज्जन सज्जनो, यावत्पुण्यमिदं नृणां विजयते पुण्यक्षये क्षीयते ॥ १ ॥ शोल सहसमां मूलगी, स्वयंप्रजा वर नारि ॥ सुख विलसें ससारनां, प्रियछु रति अनुकार ॥ ४ ॥ हवे पहेला सुरलोकथी, श्रीषेणादिक चार ॥ जिहां आवीने अवतरे, ते दाखुं अधिकार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ नदी यमुनानुं रे तट रलीयामणु ॥ ए देशी ॥ चवि सुर लोकथकी श्रीषेणजी रे, जव चोथे अवतार ॥ अर्ककीर्त्ति विद्याधर मदिरें रे, ज्योतिर्माला रे नारी ॥ १ ॥ साजलजो जव शांतिजिणंदनो रे ॥ ए आंकणी ॥ जवि राखी मन गम ॥ गुण गातां सुणतां गिरुआ तणा रे,सीझे वांछित काम ॥सां० ॥ २ ॥ दीठो तेजें अमित रवि रातमां रे, सुपनें माहासुखकार ॥ नव मसवाडे सुत जनम्यो सही रे, प्राची जेम दिनकार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तेजें झलामल तनु देखी करी रे, हरख्यां दंपती दोय ॥ नाम ठवे साजन सतोषिने रे, अमिततेजा गुण जोय ॥ सां० ॥ ४ ॥ सुत हुलरावे माडी हर्षशुं रे, धरती अधिक जगीश ॥ चिरं जीवो मनमोहन माहरा रे, कोडा कोडि वरीस ॥ सां० ॥ ५ ॥ ज्वलनजटी इण अवसरें आदरे रे, अजिनंदन मुनिपास ॥ देशन सुणी व्रत गुणरयणें जर्यु रे, मोडी निविड जवपाश ॥ सां० ॥ ६ ॥ वलीया थइ मुनिसार्थे नीसर्या रे, हु बलिहारी रे तास ॥ लेखवीयो इन्द्रजाल समोवडें रे, जेणें जव पुद्गलवास ॥ सां० ॥ ७ ॥ सत्यजामा तदनतर छपनी रे, ज्योतिर्मालानी कूख ॥ तारकयुत रयणी सुहणु लही रे, जागी सा गतदुःख ॥ सां० ॥ ८ ॥ शुज वेला राणी रयणीसमे रे, प्रसवी सुता सुकुमार ॥ नाम सुतारा स्थाप्युं तेहनु रे, मोहनवेलि रसाल ॥ सां० ॥ ए ॥ तरुणपणु पामी सा कुंवरी

१३ ॥ धडहडे धरणि नीशान तव गडगडे, जूर रणतूर ते सबल बाजे ॥ शब्द कालह तणा अतिहि बीहामणा, शुहिर वेताढयना कुहर गाजे ॥ जो० ॥ १४ ॥ सैन्य अणीयें मल्यां लोह तव उठल्यां, नाट नट कोटि नट दपट दीनी ॥ लटपटी आविया चटपटीमांहे ते, रुधिरकर्दम मही घोर कीनी ॥ जो० ॥ १५ ॥ युद्ध विद्याधरा साथ थाके सहिं, होंश पूरी वढे सैन्य शूरा ॥ स्वामी गयवर चढया शिर वकारे नला, माहरा वीर बेहु परक पूरा ॥ जो० ॥ १६ ॥ बहुत विद्यावलें रूप कीधा घणां, छुष्ट वेताल सर्पादि जाणी ॥ फोज पाठी हठी त्रिपृष्ट अचल तणी, आवि स्वामीलगें ते उजाणी ॥ जो० ॥ १७ ॥ नागीयुं सैन्य निज देखि कोपें चढयो, आप रथ बेसीने धींग धायो ॥ पाठल कोटि नट कठले आवता, मानु महेराण ए पूर आव्यो ॥ जो० ॥ १७ ॥ पग नणी जोर आव्यु सवे कायरा, हाक वीरो तणी ताम वागी ॥ गयण गयण खलहल्यां, देव दानव मल्या, आज सबली हलां आय लागी ॥ जो० ॥ १ए॥ रथ चढी आवी साहामो अच्यो प्रतिहरि, दोय रिपु सामुहा आवि मलिया ॥ दल बेहु पासें देखे तमासो तिहा, धन्य राणीजाया एह बलीया ॥ जो० ॥ २० ॥ विष्य हथियार धारा तवा मेघ जिम, प्रतिहरि घनथकी ताम वूठी ॥ राय परजापति सुत नवल लीलथी, शस्त्र ठेदी पडी ते अपूठी ॥ जो० ॥ २१ ॥ चक्र समर्युं तवा राय हयग्रीवजी, समर रे समर जे इष्ट ताहरे ॥ नय दिखाडे किश्यो लोहना खमनो, चक्र मम मूक वलतुं वकारे ॥ जो० ॥ २२ ॥ मूकियुं चक्र तेणें मान मनमां धरी, कोपथी हाथ ऊपरें नवाडी ॥ आवि त्रिपृष्ट नी पास ते पुण्यथी, तिहां रह्यु तुंबथी वक्र ताडी ॥ जो० ॥ २३ ॥ चक्र लेइ करें कहे हयग्रीवनें, मान्य मुज आण जा तुज मूक्यो ॥ ते कहे मरण नलु वैरी नमवाथकी, नवि नमु प्रतिहरि एम कूको ॥ जो० ॥ २४ ॥ मूकीयु चक्र शिर ठेदी आव्यु करें, प्रतिहरि नरकनी वाट लीधी ॥ प्रथम हरि एम उद्घोषणा सुर करे, त्रिपृष्ठ शिर कुसुमनी वृष्टि कीधी ॥ जो० ॥ २५ ॥ साधिया खंम त्रिहु जरत नूमी तणा, सर्व नर असुरनां वृंद सार्थे ॥ वाम नुज अमर्षुं कोटि शिल ऊंहरी, पट्ट अनिषेकें कीनो सनार्थे ॥ जो० ॥ २६ ॥ राज्य धरा नोगवे पुण्य बलीया थकी, ढाल चोथी कही खम बीजे ॥ राग आशावरी जाति कडखे सही, राम कहे पुण्यथी को न सीजे ॥ जो० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुख भोगवतां अनुक्रमें, त्रिपृष्ठ हरि ते वीर ॥ काल करीने ऊपन्यो, नरकावास अपइठ ॥ १ ॥ सुख भोगवतां बहु परें, अर्ककीर्त्ति भूपाल ॥ व्रत लीधु देइ राज्य सुत, मूकी मोहजाल ॥ २ ॥ अचल वधु नेहें घणो, रुदन करे तजि लाज ॥ भाई अणबोल्यांथकी, एम केम सरशे काज ॥ ३ ॥ हसी बोलो मुझ वालहा, मूको रीष अलग्ग ॥ निपट निहेजा थायतां, न रहे जेह एकंग ॥ ४ ॥ सस्कार करवा न दे, न मरे मारो वीर ॥ जे कोइ मूउं कहे, तस हणवा धाय धीर ॥ ५ ॥ यडुक्तं ॥ तीर्थंकरणा साम्राज्यं, सपत्नीवैरमेव च ॥ वासुदेवबलस्नेह, सर्वेन्योप्यतिरिच्यते ॥ १ ॥ बंधव हुं कोण आगलें, कहीश मननी वात ॥ समजाव्यो समजे नहीं, नेहें रंगी धात ॥६॥ नेहो कहवि न किज्जइ, अह किज्जइ रयण कवल सरिछो ॥ अहिएव धोयमाणो, सहावरंगं न ठंडेइ ॥ २ ॥ जाण अजाण थई रह्यो, मोहें घेलु मन ॥ सहि जाणु बंधव मूउं, ज्यांरे विरतु तन्न ॥ ७ ॥ प्रेतकार्य करि बंधुनु, मोहवशें बलदेव ॥ ठंडयु मन निजराज्यथी, शी पुजननी सेव ॥ ८ ॥ श्रीश्रेयांस जिनवर तणा, स्वर्णकलश अनिधान ॥ आचारिज मुनि परवर्या, समवर्या उद्यान ॥ ९ ॥ अचल चल्यो वंदण नणी, सार्थे लइ परिवार ॥ मुनि वंदी देशन सुणे, जेहथी नव निस्तार ॥१०॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ राग नट ॥ मोह सगतें बिगरी हे मति जनकी, स्वर्ग मृत्यु पाताल त्रिहुं जगतमें, सबल छुहाइ फरत उनकी ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ दंसणमोह चरण दोय नेदें, स्थिति नारी हे सबल जिनकी ॥ रोकी सनाव विनावमें घेरी, चेतन चाल अनादिनकी ॥ मो० ॥ १ ॥ दोरत दोरत फिरत पवन ज्युं, हाथ न आवी वश मनकी ॥ छिनमें राग विराग तजत हे, आतप ठाही ज्यु मास सावनकी ॥ मो० ॥२॥ धन रमणीके विषयसें रातो, जेसें मधुमाखी वनकी ॥ मदमातो भींतर ज्यों सूतो, खबर परे नहिं रयतनकी ॥ मो०॥ ३ ॥ तीन तार गले राग ए नाची, तांबेकी लोटी गहि लोभनकी ॥ ऊच नीच घर अगण एणें, टहील मगाइयें ज्युं वंभनकी ॥ मो० ॥ ४ ॥ धन्य जिणें मोह महामल्ल जीत्यो, पूरित वश नाठी ठगणकी ॥ सो शुद्धातम आतम पदवी, चढियो श्रेणि लही गुणकी ॥ मो० ॥ ५ ॥ मोह अ

रे, यौवन रूप सुरंग ॥ मात पिताने वाहाली जीवथी रे, रमे जस अंगे अ नंग ॥ सां० ॥ १० ॥ स्वयंप्रजानी कुखे उपन्यो रे, अजितवितानो रे जीव ॥ वीठो श्रीअजिषेक ते सुपनमा रे, वाध्यो हर्ष अतीव ॥ सां० ॥ ११ ॥ जन्म्यो हरि उत्सव हर्षे करे रे, नाम श्रीविजयकुमार ॥ विजयजद्र नामें बीजो हुउ रे, रूपें देवकुमार ॥ सां० ॥ १२ ॥ नारायण मंदिर सिद्धनविता रे, ज्योति प्रजा अजिधान ॥ स्वयप्रजानी कूखें उपनी रे, पुत्री रूपनिधान ॥ सां० ॥ १३ ॥ अनुक्रमें यौवन वय आवी जली रे, ज्योति प्रजा रतिरूप ॥ स्वयंवर मांमयो तेहने कारणें रे, तेडाव्या बहु नृप ॥ सां० ॥ १४ ॥ मंमप रचीया अति महोटे मनें रे, अति उंचा रे आकाश ॥ मंमप स्थंज रची मणिपूतली रे, करती नाटक खास ॥ सां० ॥ १५ ॥ अर्ककीर्त्ति इण अवसर मोकले रे, सचिव नारायण पास ॥ ते कहे स्वामी सुण मुज स्वामीनी रे, एक सुंदर अरदास ॥ सां० ॥ १६ ॥ नामें सुतारा मुज पुत्री जली रे, आवी यौवन वेष ॥ ते इहां आवे स्वयंवर कारणें रे, जो होवे स्वामी आदेश ॥ सां० ॥ १७ ॥ नारायण कहे इहां आवो सुखें रे, नहिं अतर अम कोय ॥ वाहाली वेला आवे वालहो रे, तो मन हर्षित होय ॥ सां० ॥ १८ ॥ सचिवें आवी वात सर्वे कही रे, अर्ककीर्त्ति नजमाल ॥ सार्थे सुतारा लेइ संचरें रे, सुत सार्थे तत्काल ॥ सां० ॥ १९ ॥ आव्यो पोतनपुर उतावलो रे, हरि दीधुं बहु मान ॥ मगलशब्द बंदीजन उच्चरे रे, नाट करे रे कल्याण ॥ सां० ॥ २० ॥ मंमप बेठा बहु राजेश्वरा रे, विसु अने बलदेव ॥ मंमप आवी बे कुमरी जली रे, जिहां बेठा नरदेव ॥ सां० ॥ २१ ॥ ज्योतिप्रजायें पूरवनेहथी रे, अमिततेजाने रे कंठ ॥ वरमाला स्थापी वरियो जलो रे, आणी मन उत्कंठ ॥ सां० ॥ २२ ॥ श्री विजयकुमर तणे कंठें ठवे रे, कुमरी सुतारा रे माल ॥ उजय सबध थयो एम जाणीने रे, हरख्यो चित्तमां नृपाल ॥ सां० ॥ २३ ॥ सन्मानी नृप पाठा वालिया रे, निज निज कुमरी विवाह ॥ बेहु राजवीयें कीधो रंगशुं रे, खरची ड्रव्य उत्साह ॥ सा० ॥ २४ ॥ कुमरी मूकी वधूनें लेइने रे, अर्ककीर्त्ति निज धाम ॥ आव्यो ढाल थइ ए पाचमी रे, सुख विलसे शुन ठाम ॥ सां० ॥ २५ ॥

॥ सु० ॥ १० ॥ यौवन रूप रसीली देखी, मुऊ मन मन्मथ चलीयो रे ॥ चारित्र चूकी धन कारण हु, आव्यो कर्मे ए वलियो रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ सहु मन मानी वात ए साची, हा हा हवे शु थाशे रे ॥ बुद्धियें व लीया मत्री बहु मलिया, आय उपाय विमासे रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ एक कहे नृपनें राखीजें, यानारूढ ए जलमा रे ॥ यानपात्र नांगे तो शी गति, तेणें राखीजें स्थलमां रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ बीजो कहे वे ताढय गुफामां, पति राखीजें यत्नें रे ॥ त्रीजो कहे साचु पण हुं तुम, नवि अनुमोदू मतने रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ जे कीजें शुन हेतें कारज, ते होये कष्टनु हेतु रे ॥ द्विजसुतनो सवध कहु इहां, सुणजो तुमें एक चित्तें रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ द्विजसवध कहेशे मत्री, न टले नावी नाव रे ॥ बीजे खमें ढाल ए उठी, राम कहे अनिराम रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ॥१७८॥

॥ दोहा ॥

॥ जोरावर नवितव्यता, जोर न चाले कोय ॥ बलियो इहां कणे को नहीं, हृदय विमासी जोय ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कोइ नलो राह बतावे रे ॥ ए देशी ॥ विजयपुरें नयरें एक नि वसे, वाडव इड्सोम नामें हो ॥ ज्वलनशिखा तस घरणी तरुणी, दं पति बोय रति कामें हो ॥ १ ॥ कोइ नियति तणी गति न्यारी हो, नि यति करे ते कोई न करे, सुणो नाइ हृदय विचारी हो ॥ ए आंकणी ॥ नूशिख नामें नदन तेहनो, कह्यो महोटो उछेरी हो ॥ जनक गयो परलोकें तेहवे, कर्मनी रीति अनेरी हो ॥ को० ॥ २ ॥ तेणें नयरें एक राक्षस आव्यो, करें मानवसहार हो ॥ नित्यप्रत्यें एक माणस सं कल्पी, कह्यो तेहनो उपचार हो ॥ को० ॥ ३ ॥ राजहुकम तिण राक्ष सें मान्यो, सघले वात सुणावी हो ॥ नाम लखी बहु गोला नरिया, नि त्यप्रत्यें एक चढावी हो ॥ को० ॥ ४ ॥ एक दिन ते द्विजसुतनें वारे, जननी रोवा लागी हो ॥ एक आधार ए दैव न सांस्यो, कोण करम गति जागी हो ॥ को० ॥ ५ ॥ आसनगृहस्थित नूतनें करुणा, आवी कहे निर्धारी हो ॥ रे अशरण अबला मत रोवे, लेशु अमें उगारी हो ॥ को० ॥ ६ ॥ द्विजसुत राजसेवक जइ ढोयो, राक्षस आगल लेई हो ॥

न्माद झींपे सो शूरो, एह वाणी गणधर जिनकी ॥ कहे मुनि अचल अच
ल गुण ध्यावो, तजि चचलता ए निज मनकी ॥ मो० ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ मोह समो वैरी नहीं, काम समुं नहिं डुःख ॥ अनल नहिं कोह
क्रोध सम, ज्ञान समु नहिं सुख ॥ १ ॥ कहो प्रभु ते मुफ बंधवें, कुण
गति लाधी एण ॥ सत्तम पुढवीयें उपन्यो, गुरु कहे कर्म वशेण ॥ २ ॥
विभु वीर तुऊसी हुइ, गति एहवी गंभीर ॥ अचल विलाप करे घणा,
हियडुं न धरे धीर ॥ ३ ॥ कहे गुरु देवाणुप्पिया, न करो खेद लगार ॥
चरम जिणेसर वीर तुऊ, होशे भरत मऊार ॥ ४ ॥ निसुणी आनंद उ
पन्यो, आवी नयर मऊार ॥ राज्य देइ श्रीवियजने, लीधो सयमभार ॥
॥ ५ ॥ सूधो सयम आदरे, पाले निरतिचार ॥ मोह तजे सवर भजे,
चाले शुद्ध आचार ॥ ६ ॥ हवे श्रीविजय नरेश्वरु, पोतनपुरनु राज ॥
पाले अतिरूडी परें, करे धर्मनां काज ॥ ७ ॥ गोयमनें जिनवीर पर्यंपे
॥ ए देशी ॥ एक दिवसें श्रीविजय नरेसर, बेठो पर्षदा पूरी रे ॥ राजकुली
बत्रीशे आगल, क्ना सबल सनूरी रे ॥ १ ॥ सुण राजेश्वर अरज अमा
री॥ ए आंकणी ॥ आव्यो एक परदेशी रे॥ नैमित्तिक तुम मलवा हेतें, कहे
प्रतिहार संदेशी रे॥ सु० ॥ २ ॥ हुकम कस्यो आव्यो दरबारें, करमां पुस्तक
लेई रे॥ जय नृपति नरसिंह सबल दल, बेठो आशिष देई रे॥ सु० ॥ ३ ॥
कहे नृपति मुऊ आगल भांखे, वात शुभाशुभ जाणे रे ॥ कहे नैमित्तिक सवि
जाणुं पण, न कहाये इण टाणे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ नृप आग्रहथी ते एम
भांखे, आजथी सातमे दिवसें रे ॥ पोतनपुरस्वामीनें मस्तकें, सहसा
विद्युत् पडशे रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ वज्राहत एम सकल सभा कहे, रे नैमि
त्तिक हीणा रे ॥ नृपशिर विद्युत् तब तुऊ शिर छुं, पडशे कर्मविहीणा रे ॥
सु० ॥ ६ ॥ शो मुफ दोष ए ज्ञानें भांखी, वात निर्बल राजननी रे ॥ जो
कहो बो तो मुऊ शिर थाशे, वृष्टि तदा सोवननी रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रा
जन बोले रे नैमित्तिक, एह सबल किहां शीख्यो रे ॥ ते कहे बलदेव
सघातें, श्रीगुरु मुऊने दाख्यो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ भण्यो आगम आम्नाय
भली परें, वात सकल तेणें जाणु रे ॥ पयो पडिवाई आव्यो इहां किण,
खसीशु सुऊ गुणगाणु रे ॥ सु० ॥ ए ॥ पद्मिनी खंमें जनकसखानी
पुत्रीशुं विवाहो रे ॥ लेइ दीक्षा मेल्यो तदनतर, आव्यो इहां उत्साहो रे

विणु नारी पति विण, जेम जग शोन्न न पावे रे ॥ तेम मत्रीश्वर धर्मे तृपा विण, कोई काम न आवे रे॥ क०॥ ७ ॥ पुनरपि मत्री मलि मन चिंते, ए हमां नहिं कांइ काचु रे ॥ तेहमाहे एक बोल्यो चातुर, कहु तुमने हुं साचुं रे ॥ क० ॥ ७ ॥ यक्षपडिमा अनिषेक करीजें, काष्ठमयी एक आणी रे ॥ दैवत अनुन्नावें नवि पडशे, तिहां विद्युत् एम जाणी रे ॥ क० ॥ ए ॥ जो पडशे तो नविन बनावी, थापीशु तिण गमें रे ॥ नृप समान नृपनें राखेवा, ते तिम कीधु काम रे ॥ क० ॥ १० ॥ नृप पौषध धरी श्रीजिनमदिर, बेगे ध्यानें लीणो रे ॥ पच परमेश्वर चिंतन करतां, नहि मन खेद अदीणो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ सिंहासन यक्ष पडिमा स्थापी, सेव करे सहु खातें रे ॥ सातमे दिवसें गगनघन उमव्यो, हुउ तिम चपलापातो रे ॥ क० ॥ १२ ॥ विणठी यक्षपडिमा नृप कुशलो, रह्यो सहुजन मन हरख्यो रे ॥ जयजयकार थयो ते पुरमां, गणक खरो एम परख्यो रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पौषध पारी नृप घर आव्यो, नैमित्तिक सत्कार्यो रे ॥ वृष्टि थइ तस शिर सोवननी, वस्त्रानरणें न्नार्यो रे ॥ क० ॥ १४ ॥ विघन टल्युं नृपनु अति सबलु, सातमी ढाल ए गाई रे ॥ बीजे खमें रामविजय कहे, अविचल पुण्य सखाई रे ॥ क० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निजपुरमा उत्सव हुवा, घर घर मगलमाल ॥ पूजा रचावे जिनघरे, सत्तर नेदि सुविचार ॥ १ ॥ दिन दोहेला उद्धरे, धन खरचे लख कोडि ॥ पडह अमारी तणा वली, वजडावे मन कोडें ॥२॥ नगरमांहे सहुको सुखी, नहिं दुखीनुं नाम ॥ अमिततेज इण अवसरें, आव्यो तेणें गम ॥३॥ नगिनीने मलवा नणी, देखी उत्सव एह ॥ पूछे ए कारण कवण, हर्ष तणु सस्नेह ॥ ४ ॥ नगिनी मुख सवि सांनली, सन्नामांहे नूपाल ॥ बेहू राजेश्वर मल्या, फली मनोरथमाल ॥ ५ ॥ अमिततेज दैवज्ञनें, आपे बहु धन सार ॥ पंच दिवस रही आवीया, फरी निज नयर मफार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ रामघरणी कांइ आणी रे ॥ ए देशी॥ एक दिवस श्रीविजय नरेसर, वन जोवा नीसरीयो रे॥ मृगनयणी रमणी सघातें, साथ सबल परवरियो रे ॥ १ ॥ वाहाली मोहतणी ए लीला रे, जाण अजाण थइने विलसे, नृप

अपहरियो सांकेतिक अमरें, गयो निजमातनें देई हो ॥ को० ॥ ७ ॥ राक्षसजयथी गिरिनी गुफामां, द्वार शिला देइ आडी हो ॥ मूके सुतनें तेह विछुढी, यत्न करीने माडी हो ॥ को० ॥ ८ ॥ ते द्विजसुतनें रातें ग लियो, जमते अजगरें जारी हो ॥ निसुणो जाई कर्म कमाई, शुं करे नर ने नारी हो ॥ को० ॥ ए ॥ यडुक्त ॥ उदयति० ॥ १ ॥ प्राप्तव्योनियतिबला श्रयेण योऽर्थ.० ॥ २ ॥ ए उपनय दाख्यो मन्त्रीश्वर, त्रीजे नियति अनुसारी हो ॥ रामविजय कहे सुणो जवि प्राणी, जुउ तमें युक्ति विचारी हो ॥ को० ॥ १० ॥ दोहा ॥ चोथो चतुर कहे वली, जे बोलु ते साच ॥ पण पोतनपुरईश्वरें, ए नैमित्तिक वाच ॥ १ ॥ कीजें पोतनपति अवर, तस शिर विद्युत्पात ॥ पडशे स्वामी छगरे, मानी सघले वात ॥ २ ॥ नैमित्तिक कहे ए निपुण, मन्त्रीश्वर शिरताज ॥ निजपति राखेवा सबल, वात बतावी आज ॥ ३ ॥ हु पण ए कहेवा जणी, आव्यो बुं इण गाम ॥ सात दिवस लगें नियमयुत, स्वामी रहो निज धाम ॥ ४ ॥ रहो रहो रे जादव रीति नथी ॥ ए देशी ॥ कहे राजेश्वर सुणो मंत्री श्वर, एह वात केम कीजें रे ॥ परप्राणें निज प्राण उगारे, तेहने अधम कहीजें रे ॥ क० ॥ १ ॥ मर नामें कुःख पामे मानव, किम जाणी तस हणीयें रे ॥ तेहथी आप हणायो वारू, परजवें जय नवि गणीयें रे ॥ क० ॥ २ ॥ यडुक्त वसुदेवहिंमे ॥ हतूण परप्पाणे, अप्पाण जो करे इ सप्पाण ॥ अप्पाण विवसाए, कएण णासेइ अप्पाण ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सकलधर्ममां प्रथम अहिंसा, नांखी जिनवरग्रंथे रे ॥ कुहवे आप न प रने कुहवे, ते मुनि सूधे पंथें रे ॥ क० ॥ ३ ॥ तथाचोक्त ॥ हिंसा त्या ज्या नरकपदवी सत्यमाजाषणीयं, हेयं स्तेयं सुरतविरति सर्वसंगान्नि वृत्ति ॥ जैनोधर्मोयदि न रुचित', पापपंकायनेन्यस्तेन्य सर्वैर्कैटिति निवृ त्ति' सर्वदा सर्वथैव ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ शु ए प्राण सदा स्थिर रहेशे, आ खर एक दिन मरवु रे ॥ पर हणीयें निज प्राणने माटें, स्या उपर ए क रवुं रे ॥ क० ॥४॥ जीव एक उगारी तिण विणु, पडह अमारी वजाव्यो रे ॥ हिंसक जे जगमां अवतरिया, तेणें निजवंश लजाव्यो रे ॥ क० ॥ ५॥ नेह न दृष्टि विना सुख धन विणु, नारी विणु गृह जेम रे ॥ विप्र वेद विद्या विणु उपशम, विणु विद्या वली तेम ॥ रे ॥ क० ॥ ६ ॥ शूर सख

विणु नारी पति विण, जेम जग शोन्न न पावे रे ॥ तेम मंत्रीश्वर धर्म नृपा विण, कोई काम न आवे रे॥ क० ॥ ७ ॥ पुनरपि मत्री मलि मन चिंते, ए हमां नहिं कांइ काचु रे ॥ तेहमांहे एक वोल्यो चातुर, कहुं तुमने हुं साचु रे ॥ क० ॥ ८ ॥ यक्षपडिमा अन्निषेक करीजें, काष्ठमयी एक आणी रे ॥ देवत अनुन्नावें नवि पडशे, तिहां विद्युत् एम जाणी रे ॥ क० ॥ ए ॥ जो पडशे तो नविन वनावी, थापीशु तिण ठामें रे ॥ सुरप समान नृपनें राखेवा, ते तिम कीधु काम रे ॥ क० ॥ १० ॥ नृप पौषध धरी श्रीजिनमदिर, वेठो ध्यानें लीणो रे ॥ पंच परमेश्वर चिंतन करतां, नहि मन खेद अदीणो रे ॥ क० ॥ ११ ॥ सिंहासन यक्ष पडिमा स्थापी, सेव करे सहु खांतें रे ॥ सातमे दिवसें गगनघन उमट्यो, हुउ तिम चपलापातो रे ॥ क० ॥ १२ ॥ विणठी यक्षपडिमा नृप कुशलो, रह्यो सहुजन मन हरख्यो रे ॥ जयजयकार थयो ते पुरमां, गणक खरो एम परख्यो रे ॥ क० ॥ १३ ॥ पौषध पारी नृप घर आव्यो, नैमित्तिक सत्कार्यो रे ॥ वृष्टि थइ तस शिर सोवननी, वस्त्रान्नरणें नार्यो रे ॥ क० ॥ १४ ॥ विघन टल्युं नृपनु अति सवलु, सातमी ढाल ए गाई रे ॥ बीजे खमें रामविजय कहे, अविचल पुण्य सखाई रे ॥ क० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ २०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ निजपुरमां उत्सव हुवा, घर घर मंगलमाल ॥ पूजा रचावे जिनघरे, सत्तर न्नेदि सुविचार ॥ १ ॥ दिन दोहेला उद्धरे, धन खरचे लख कोडि ॥ पडह अमारी तणा वली, वजडावे मन कोडें ॥२॥ नगरमांहे सहुको सुखी, नहि दुखीनुं नाम ॥ अमिततेज इण अवसरें, आव्यो तेणें ठाम ॥३॥ न्नगिनीने मलवा न्नणी, देखी उत्सव एह ॥ पूछे ए कारण कवण, हर्षे तणु सस्नेह ॥ ४ ॥ न्नगिनी मुख सवि सांनली, सन्नामांहे नूपाल ॥ वेहू राजेश्वर मल्या, फली मनोरथमाल ॥ ५ ॥ अमिततेज देवज्ञनें, आपे वहु धन सार ॥ पंच दिवस रही आवीया, फरी निज नयर मझार ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ रामघरणी कांइ आणी रे ॥ ए देशी ॥ एक दिवस श्रीविजय नरेसर, वन जोवा नीसरीयो रे ॥ मृगनयणी रमणी सघातें, साथ सवल परवरियो रे ॥ १ ॥ वाहाली मोहतणी ए लीला रे, जाण अजाण थइने विलसे, दंप

ती दोय रसीलां रे ॥ वा० ॥ ए आंकणी ॥ क्रीडा करतां वन संचरतां, नाह रमणी ग्रहि हाथे रे ॥ रतिकारक रसमेल बनावे, मन्मथ बेहुने ता थें रे ॥ वा० ॥ २ ॥ इण अवसरें कचनमृग देखी, मनहरणी एम बोले रे ॥ प्राणजीवन मुज लागे प्यारो, ए मृग अमृत तोलें रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ आणी आपो मुजने प्रीतम, ए मन रमण कुरगें रे ॥ नेह नड्यो नृपकेडे उजाणो, रज्यो राणी रगें रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ जिम जिम नृप केडें उजाये, तिम तिम दोडी जाये रे ॥ नृप नारी मूकीने अलगो, पहोतो श्वास जराय रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ प्राणप्रिया कर्कोट अहि मशी, गाढस्वरें पोकारी रे ॥ प्राण जीवनजी वहेला आवो, ल्यो मुजने उगारी रे ॥ ६ ॥ स्वामी बाहार करो विनतानी रे ॥ ए आंकणी ॥ शी वालेसर विलवनी वेला, कां वहेला नथी वलता रे ॥ आवो उजाईने अलवेसर, जो बो मनना मलता रे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ बो अतरजामी आतमना, तो शुं घणु कहेवाडो रे ॥ करी कृपा य कमलदल नयणा, मरती मुज जीवाडो रे ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ शब्द सुणी विनतानो आव्यो, दोडी अबला पासें रे ॥ खमा खमा तुजने एम नांखे, राय जराणो श्वासें रे ॥ स्वा० ॥ ए ॥ क्षण एकमां अबला मूर्बाणी, नृप उत्सगें लीधी रे ॥ नयण निमिल्य रही जब युवती, तब नृपें हा हा कीधी रे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ मूर्बागत थइ धरणें ढलियो, मोह महा रिपु ढलियो रे ॥ नृप चेतन पाम्यो बहु कष्टे, प्रेम पयोधि उबलियो रे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥ महारे तो दूजी नहिं वल्लन, वाहाली सुतारा राणी रे ॥ तुज परण्या पूठें में बीजी, नारी न कोइ दिल आणी रे ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ हे मानिनि एम मान न कीजें, बोल हसीने दीजें रे ॥ विण वांकें केम आडो लीजें, तुज विरहें तन बीजे रे ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ हे गुणवती हसी बोलंती, गुण अणीयाले नयणें रे ॥ मुज सामु निरखो घणे हेजें, शुं नांखु बहु वयणें रे ॥ स्वा० ॥ १४ ॥ विरहव्यथा जगमां अति विरुइ, प्रीतिनी रीति अटारी रे ॥ बाहिर शीतल अतर जली, प्रीतिअगिति न्यारी रे ॥ स्वा० ॥ १५ ॥ राय विमासे ए जीव्याथी, मरण नलुं ए साथें रे ॥ ए मूके पण हु नवि मूकु, कोल दीयो में हाथे रे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ राय रचावी चिता अति महोटी, तिण अवसरें तिहां आय रे ॥ नजमारग खेचर दोय दोड्या, जिहा पोतन पुरराय रे ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ शु मोह्यो

मायाने रूपें, जल मत्री तेणें ठांटी रे ॥ थर थर ध्रूजती तिण वेला, माया सुतारा नाठी रे ॥ स्वा० ॥ १ए ॥ राय कहे ए शुं मुऊ नांखो, चिर जीवो अम स्वामी रे ॥ कर जोडी कहे खेचर वलतुं, निसुणो अतरजामी रे ॥ स्वा० ॥ १ए ॥ अमिततेजनो ठे नैमित्तिक, संभिन्नश्रोत्र उत्कर्षे रे ॥ सुतशुं ज्योतिर्वनमां रमवा, चाल्या बेहु अमें हर्षे रे ॥ स्वा० ॥ २० ॥ मारगमांहे सुतारा दीठी, आठमी ढाल एम नांखी रे ॥ बीजे खम्में रामविजय कहे, नृप सुणो धीर मन राखी रे ॥ स्वा० ॥२१॥ सर्वगाथा॥२३५॥

॥ दोहा ॥

॥ चमरचचा नयरी तणो, अशनिघोष उद्दंम ॥ तेणें सुतारा अपहरी, लही जाता अमें दिठ ॥ १ ॥ आम्हा आवो वालहा, वालेसर बलवंत ॥ महेलावी मुऊने करो, नाथ सनाथ महंत ॥ २ ॥ अमिततेज बंधव हुतो, जननीजाया वीर ॥ वाहार करो बहेनी तणी, गिरुआ साहस धीर ॥ ३ ॥ इस्यां वयण सुणी तेहनां, लही सुतारा तेह ॥ दोडी जइ रोक्यो अमें, बलियो हूतो जेह ॥ ४ ॥ रे पापी अम स्वामिनी, बहेन सुतारा लेइ ॥ केम जाइश हवे जीवतो, मेल के शुद्ध करेइ ॥ ५ ॥ कह्युं सुतारायें तदा, अल प्रयासें पंथि ॥ वेताली मोहित पिउ, समजावो जइ तेथ ॥ ६ ॥ अमें आव्या उतावला, तुम्ह राखवा काज ॥ नारी सुताराऊपिणी, वेताली माहाराज ॥ ७ ॥ चिंता मत करशो मनें, करशुं चिंतित काज ॥ आवो अम स्वामी नगर, वधशे तुम्हारी लाज ॥ ८ ॥ खबर कहावी मातने, नृप चाल्यो ते साथ ॥ रथनूपुर पुर आवियो, श्री विजयो नरनाथ ॥ ए ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ बावा किसन पुरी ॥ ए देशी ॥ अमिततेज उठ्यो गुणवंत, देखी श्रीविजयाभिध संत ॥ १ ॥ जो जो सजन मल्या, आज मनोरथ सफल फल्या ॥ ए आंकणी ॥ पूछ्युं केम चिंतातुर आज, परकाशो मुऊने महाराज ॥ जो० ॥ २ ॥ नांख्यो तिणें सघलो अवदात, अमिततेज कोप्यो सुणि वात ॥जो० ॥ ३ ॥ जेणें कीधु ए काम कुचेत्र ॥ पाधरोनेत्र करु रणक्षेत्र ॥ जो० ॥ ४ ॥ मनमां वाध्यो अमरषपूर ॥ अशनिघोष नाखूं चकचूर ॥ जो० ॥ ५ ॥ मोकलियो शिखवी एक दूत ॥ चमरचचा पहोतो थइ नूत ॥

जो० ॥ ६ ॥ रे कीधुं तें निर्लज अकाज ॥ परनारी लेइ आव्यो आम ॥ जो० ॥ ७ ॥ परशय्या परदार परान्न, परमंदिर परवसन निदान ॥ जो० ॥ ८ ॥ मूरख हृदय विमासी जोय, ए पांचे आपणां नवि होय ॥ जो० ॥ ए ॥ पररमणी नवि निरखे ऊंच ॥ तो तेहनें मुख शोने मूंछ ॥जो०॥१०॥ तुज सरिखा जे जगमां ग्रुंछ, ते तिर्यंच विण शिंग ने पुछ ॥ जो० ॥ ११ ॥ परनारी लावतां तूज, मति सघली तारी गइ मूज ॥ जो० ॥ १२ ॥ पण तारो इहां नहि वंक, मल्यो नथी कोइ सबल त्रिवंक ॥जो० ॥ १३ ॥ पण जाणुं हुं सुण नूपाल ॥ आव्यो बे तुज फीटण काल ॥ जो० ॥ १४ ॥ पण मुज स्वामी बे वडनाग्य ॥ आप सुतारा पाये लाग्य ॥ जो० ॥ १५ ॥ अशनिघोष कोप्यो अति जोर ॥ दूत प्रत्यें कहे व यण कठोर ॥ जो० ॥ १६ ॥ लाव्यो सुतारा ज्ञुज बलयोग, रयण नहिं ए रंकनें नोग्य ॥ जो० ॥ १७ ॥ शय्या वसन अने तांबूल, नारी शस्त्र रयण बहुमूल ॥ जो० ॥ १८ ॥ नोगवे जगमां वीर जे होय ॥ मूरख हृदय विमासी जोय ॥ जो० ॥ १ए ॥ मुज पासेंथी नारी आश ॥ करतो छे दशे थशें विनाश ॥ जो० ॥ २० ॥ रहे वेगे मन राखी ठाम, कहेजे दूत न घाले हाम ॥ जो० ॥ २१ ॥ तुजने ढुं मारुं कंगाल, जेम आव्यो तेम वहेजो चाल ॥ जो० ॥ २२ ॥ वल्यो दूत थइ नैरव रूप, पति आगें कहे वात स्वरूप ॥ जो० ॥ २३ ॥ बीजे खंमें नवमी ढाल ॥ पूर्व वैर तणो जुर्ठ ढाल ॥ जो० ॥२४॥ श्री सुमति सुगुरुनो कहे कवि राम, जगमां वैर न कीजें आम ॥जो०॥२५॥ सर्व गाथा ॥२६ए॥ श्लोक तथागया ॥१३॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी वैरी तणां, सबल सजाई कीध ॥ विकट कटक नट मेलिया, गोर नगारे दीध ॥ १ ॥ बहु राजेश्वर सचस्या, धर धरके दल नार ॥ कंत सुतारानो हुर्ठ, तरत तिहां असवार ॥ २ ॥ तुरत जाइ पहोंचो तुमें, चमरचचा ल्यो घेरि॥ सबल विद्याधर सैन्यशुं, करो अरिने फेर ॥३॥ ज्येष्ठ पुत्रश्रु साधवा, जाशुं हिमगिरि आज ॥ परविद्या उछेदिनी, माहाज्वाला माहाराज ॥ ४ ॥ शीघ्र आवि मलशुं अमो, अने सबल सुत साथ ॥ नावु कर्नें कहे नावथी, सिद्ध करो नूनाथ ॥५॥ पिता पुत्र हिमगिरि जइ, साधे विद्या सार ॥ हवे श्री विजयनरेंद्रजी, चढिया बहु परिवार ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ चित्रोडा राजा रे ॥ ए देशी ॥ राणीना जाया रे, चढी चपल उजाया रें, दलपूरे सिधाया, आया चोंपशु रे ॥ १ ॥ गयण गाजे रे, निशाण अवाजे रे, घन फोज विराजे, ऊंची उमती रे ॥ २ ॥ नयरी ते घेरी रे, रणभेरी नफेरी रे, सिधूडे स्वर रूडे, जागे शूरिमा रे ॥३॥ रिपु आयो जाणी रे, मूके सुत वाणी रे, देई गोर निसाणे, ते चढिया घणा रे ॥ ४ ॥ वल शूरमा चढिया रे, आवी तिहां अडिया रे, दलपूर सघातें, आयडीया तदा रे ॥ ५ ॥ अशनिघोष केरा रे, सुत सबल भलेरा रे, एक एकपें शूरा, आव्या सामुहा रे ॥ ६ ॥ सुत अमिततेजाना रे, नहिं जगमा गाना रे, अति सबल युवाना, आगल ते हूवा रे ॥ ७ ॥ भररोष भराणा रे, लहि स्वामी आणा रे, आवी साहामा मभाणा, युद्धने कारणें रे ॥ ८ ॥ रण लाग्यो मातो रे, भट रीषें रातो रे, एक मास उजातो, तिहां जाण्यो नहि रे ॥९॥ नवि कोई हारे रे, वर्षे कोइ न वारे रे, एम हुउं सहार, बहु सुभटां तणो रे ॥ १० ॥ वैरीसुत नागा रे, कर देखी कागा रे, आव्या तेह त्राग, अशनिघोष आगलें रे ॥११॥ दल देखी भाग्यो रे, फगडो बहु लाग्यो रे, आव्यो आपशुं आघो, रण मेदानमां रे ॥१२॥ मातु दल भोई रे, नाग सहु कोई रे, सुत अमिततेजाना, पाग उसख्या रे ॥१३॥ श्री विजय सवाई रे, आव्यो तव धाई रे, मांहो माहे लागि लडाई, घणी बेहुने रे ॥ १४ ॥ लइ खड्गने धायो रे, श्रीविजय उमाह्यो रे, रिपुशिर दीयो घायो, ते वैरी दोय हुवा रे ॥१५॥ दोय भेदे विशेषें रे, तव चारज देखे रे, एम वाधे असेखे, वैरी वांकडो रे ॥ १६ ॥ नृप चित्त विमासे रे, केम ए जींताशे रे, ए तो सघल तमासे, वात आवी पडी रे ॥ १७ ॥ शोचे एम जाम रे, अमित तेज ताम रे, सिद्ध विद्यायें आव्यो काम, सवे सखु रे ॥ १८ ॥ तस माया निवारी रे, बल देखी भारी रे, न रही असवारी, भजी रिपु तणी रे ॥ १९ ॥ रिपुकेडें उजाणी रे, विद्या सपराणी रे, तुमने देउ आणी, ए पापी छुउं रे ॥ २० ॥ थइ विद्या केडें रे, जाय्सु गाम ए फेडे रे, न रह्यो तेह नेहें, उ जाणो घणु रे ॥ २१ ॥ पासें जिनभुवनें रे, बल केवली चरणे रे, पेगो जइ शरणे, ते भतावलो रे ॥ २२ ॥ देवी वली आवी रे, कशु ते सम भावी रे, एम आण मनावी, बेहु वलि ए मल्या रे ॥२३॥ पुण्यें जय पायो

रे, खंम बीजे गायो रे, ढाल दशमी त्रिपृष्ठनो जायो, तीहां जीतियो रे ॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ अमिततेज मारीचने, कहे एणी परें जास ॥ नगरमांहे जाउं तुमें, वहेन सुतारा पास ॥ १ ॥ तेडी लावो अम कनें, अचलमुनिनी पास ॥ जीतनगारां देइ चल्यो, जावुक सहित उल्लास ॥ २ ॥ नगरीमें वलजइ मुनि, पासें आव्या जूप ॥ प्रथम गया जिनदेहरे, निरखे देव स्वरूप ॥ ३ ॥ निराकार जिनरूपनी, स्तवना करे अनूप ॥ जय युगादि जिन वर विजो, जय जय अकल अरूप ॥ ४ ॥ नमी स्तवी जिनराजने, आवे सज्जुरु संग ॥ मुनि देखी मन ऊपन्यो, सवल धर्मनो रंग ॥ ५ ॥ गुरु वदे गुरुजक्तिशुं, गिरुआ ते गुणवंत ॥ मुनिवर देखीने थया, तेहनां शीतल मन्न ॥ ६ ॥ शील अखंमित ते सती, नारी सुतारा नाम ॥ पूरव आवी पद्मिनी, निरुपम गुणनुं धाम ॥७॥ ते निरखी हर्षित हुआ, पति बांधव बेहु प्रेम ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं, जिनगुरुदर्शनें खेम ॥ ८ ॥ दिये दे शन मुनिवर हवे, जविक जीव हितकाज ॥ जवदव ताप शमाववा, जिम पुष्कर घनगाज ॥ ए ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ विमल केवली एक रे ॥ ए देशी ॥ केवली अचल मुणिंद, कहे ज वियण सुणो ॥ निज आतम निर्मल करो ए ॥ १ ॥ काढो मेल अनादि, मांहे जे जख्यो ॥ जव अनंत जेलो कख्यो ए ॥ २ ॥ जमो आवरणी जीव, जव चोगानमां ॥ भ्रांति विविध भ्रमजूलमां ए ॥ ३ ॥ जाणे सार असार, अस्थिरने घर कहे ॥ एम विपर्ययमां पड्यो ए ॥ ४ ॥ पीहे दोय विकल्प, राग नें द्वेष ए ॥ अरति वधारण आकला ए ॥५॥ महोटा ए परमाद, आठ मांहे कह्या ॥ कथला जग एहना घणा ए ॥ ६ ॥ कुण पावत जग छुःख, न हूतो कुण सुखी ॥ जो जग ए नडता नहीं ए ॥ ७ ॥ एक पेटमां दोय, दोय वली अन्यमां ॥ चार थाये वली चोगुणा ए ॥ ८ ॥ एहनो बहु वि स्तार, बांधे जव घणो ॥ धन्य बलिया जिणें वश कख्या ए ॥ ए ॥ कोटि कटक जट जीते, रणमां एकलो ॥ पण दोय जीते ते जलो ए ॥ १० ॥ ए जीत्ये सवि जीत्या, बाजी जीवनी ॥ एम अनंतनाणी कह्युं ए ॥ ११ ॥ अशनिघोष जूपाल, सुणी मन समजीयो ॥ धिक् में कुल मेल्युं कयुं ए ॥

१२॥ न कर्युं आतमकाज, गुण गलिया सवे ॥ वलीया पण मुऊमां किस्युं ए ॥ १३ ॥ गुरुसाखे अपराध, रे खामे तेहने ॥ रोप रखे मन राखता ए ॥ १४ ॥ केवललोकालोक, नासक प्रजु कह्यो ॥ राग केम ए कपरें ए ॥१५॥ नहिं मुऊ पापनी बुद्धि रे, महेली मायिकने ॥ एहनें में ग्रहि आणीने ए ॥१६॥ कहेशे नाणी वात रे, ढाल अग्यारमी ॥ बीजे खमें ए हुई ए ॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नपुरें पूरव नवें, गुरु कहे ए श्रीषेण ॥ अमिततेज नृपति हतो, बलियो नाग्यवशेण ॥ १ ॥ कपिल नाम द्विज तुं हुर्ज, सत्यनामा तुऊ नारि ॥ नवन्नोगें इहां अवतरी, सती सुतारा सार ॥ २ ॥ कपिल जीव बहु नव नमी, कोइक नव अज्ञान ॥ तप करिने इहां अवतख्यो, अशनिघोप राजान ॥ ३ ॥ पूरव नव सबधथी, राग विना हरि एह ॥ गतरागी पूरव नवें, तेणें तु मदसनेह ॥ ४ ॥ अमिततेज निज नव चरित, निसुणी कहे मन कोड ॥ धन्य ज्ञानी तुम ज्ञाननें, प्रणमुं बे कर जोडि ॥ ५ ॥ के हु नव्य अनव्य हु, नांखो मुऊ मुनिराज ॥ नवसायरमां तु मल्यो, तारण तरण ऊहाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ ताहारो शहेर नलो योधाणो ॥ राजा जी ॥ ए देशी ॥ नांखे अचल मुनीश्वर वाण ॥ राजा जी ॥ नाग्य महोटानो तु धणी जी ॥ इहाथी नव नवमे गुणखाणि ॥ रा० ॥ होशो जिनेश्वर बहु गुणी जी ॥ १ ॥ नव एके पंचम चक्री ॥ रा० ॥ षोडशमो जिनवर वली जी ॥ तिहां श्री विजया निय नूप ॥ रा० ॥ पहेलो सुत मन रली जी ॥ २ ॥ करी घाती कर्मनो अंत ॥ रा० ॥ थाशो तुमें तिहां केवली जी ॥ गुण गाशे तुऊ धरी रंग ॥ रा० ॥ समवसरण सुर नर मली जी ॥ ३ ॥ एम निसुणी ज्ञानीनी पास ॥ रा० ॥ दिल उद्मस्युं ऊलट घणे जी ॥ महि श्रावक व्रत मन शुद्ध ॥ नाणीजी ॥ जइयें तुमारे नामणे जी ॥ ४ ॥ कहे अशनिघोष मुनिराज ॥ ना० ॥ तारो हो मुऊ करुणा करी जी ॥ हु तो थाक्यो नवमां जोर ॥ ना० ॥ चनगतिमां फेरा फरी जी ॥ ५ ॥ तुमो जाणो सघली वात ॥ ना० ॥ जे तुम आगल दाखवु जी ॥ तेतो मातनी आगल आवि ॥ ॥ ना० ॥ जेम मोशालनुं नांखवु जी ॥ ६ ॥ हवे आव्यो तुमारी पास॥

रे, खंम बीजे गायो रे, ढाल दशमी त्रिपृष्ठनो जायो, तीहां जींतियो रे ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ अमिततेज मारीचने, कहे एणी परें नास ॥ नगरमांहे जाउ तुमें, बहेन सुतारा पास ॥ १ ॥ तेडी लावो अम कनें, अचलमुनिनी पास ॥ जीतनगारा देइ वल्यो, नावुक सहित उल्लास ॥ २ ॥ नगरीमें बलनइ मुनि, पासें आव्या नूप ॥ प्रथम गया जिनदेहरे, निरखे देव स्वरूप ॥ ३ ॥ निराकार जिनरूपनी, स्तवना करे अनूप ॥ जय युगादि जिनवर विन्नो, जय जय अकल अरूप ॥ ४ ॥ नमी स्तवी जिनराजने, आवे सद्गुरु संग ॥ मुनि देखी मन कपन्यो, सबल धर्मनो रंग ॥ ५ ॥ गुरु वदे गुरुनक्तिशुं, गिरुआ ते गुणवत ॥ मुनिवर देखीने थया, तेहनां शीतल मन्न ॥ ६ ॥ शील अखंमित ते सती, नारी सुतारा गाम ॥ पूठल आवी पद्मिनी, निरुपम गुणनुं धाम ॥७॥ ते निरखी हर्षित हुआ, पति, बांधव बहु प्रेम ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं, जिनगुरुदर्शनें क्षेम ॥ ८ ॥ दिये दे शन मुनिवर हवे, नविक जीव हितकाज ॥ नववव ताप शमावबा, जिम पुष्कर घनगाज ॥ ९ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ विमल केवली एक रे ॥ ए देशी ॥ केवली अचल मुणिद, कहे न वियण सुणो ॥ निज आतम निर्मल करो ए ॥ १ ॥ काढो मेल अनादि, मांहे जे नख्यो ॥ नव अनत नेलो कस्यो ए ॥ २ ॥ नमो आवरणी जीव, नव चोगानमां ॥ भ्रांति विविध भ्रमनूलमां ए ॥ ३ ॥ जाणे सार असार, अस्थिरने थर कहे ॥ एम विपर्ययमां पड्यो ए॥ ४ ॥ पीछे दोय विकल्प, राग नें द्वेष ए ॥ अरति वधारण आकला ए ॥५॥ महोटा ए परमाद, आठ मांहे कह्या ॥ कथला जग एहना घणा ए ॥ ६ ॥ कुण पावत जग दुःख, न हूतो कुण सुखी ॥ जो जग ए नडता नहीं ए ॥ ७ ॥ एक पेटमां दोय, दोय वली अन्यमां ॥ चार थाये वली चोगुणा ए ॥ ८ ॥ एहनो बहु विस्तार, बांधे नव घणो ॥ धन्य बलिया जिणें वश कस्या ए ॥ ९ ॥ कोटि कटक नट जीते, रणमां एकलो ॥ पण दोय जींते ते नलो ए ॥ १० ॥ ए जीत्ये सवि जीत्या, बाजी जीवनी ॥ एम अनतनाणी कह्युं ए ॥ ११ ॥ अशनिघोष नूपाल, सुणी मन समजीयो ॥ धिक् में कुल मेलुं कर्युं ए ॥

नक्रमारग दोय आविया जी ॥ जाणी ऊतरीया जिनचैत्य ॥ मु० ॥ प्रनु स्तवना करि नाविया जी ॥ १४ ॥ आवी वदे अमिततेजराय ॥ नगीनो ॥ कहे स्वामी देशना दीयो जी ॥ वीजे वारमी ढालें श्री सुमति कविनो, राम कहे ए रस पियो जी ॥१५॥ सर्व गाथा ॥३४७॥ श्लोक तथा गाथा ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ मुनिवर जाणी योग्यता, परकासे निज धर्म ॥ वस्तु विज्ञावातीत जे, क्लेश रहित आतम ॥ १ ॥ सामग्री लइ दोहिली, मत वांधो अत राय ॥ एह निरतर आदरें, चिदानद सुख थाय ॥ २ ॥ मन कुविकल्पें जे करे, सांतराय सुख तास ॥ जिम मत्स्योदरनें थयो, अतर सहित विलास ॥ ३ ॥ अमिततेज कहे कुण विन्नो, मत्स्योदर हुउ तेह ॥ कृपा करीने दाखवो, तस प्रवध गुणगेह ॥ ४ ॥ मुनिवर नांखे तेहनो, सरस सबंध रसाल ॥ निसुणो नवि नावें करी, धर्म उपर ए ढाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ प्रज्जुजी प्रसन्न होजो ॥ ए देशी ॥ क्षेत्र नरत अमरावती सरिखो, नयर कनकपुर निरखो हो ॥ नांखे सज्रुरु वाणी, मीठी अमिय समाणी, गरुआ गुणमणि खाणी, निसुणो चित्त हित आणी ॥ नविका धर्म करे जो ॥ १ ॥ नामें कनकधर तिहां माहाराजा, सबलप्रतापें ताजा हो ॥ घरणी तस गुणरंना, वीठे होय अचना, कनकश्री गतदना, देवने ते इलना ॥ रमणी पुण्ये लही जो ॥ २ ॥ शेठ रतनसार नामें सोनागी, तिहां निवसे वडनागी हो ॥ व्यवहारी गुणवतो, पोढो पुण्यपनोतो, राज डुवारें समोतो, धर्म उपर दृढचेतो ॥ वारू सुखविलसे जो ॥३॥ रत्नचूला रमणीनो जायो, कुंवर कुलमा सवायो हो ॥ नामें धनद कहायो, कुलदीपक कुल आयो, सहु साजन मन नायो, रूपें मयण हरायो ॥ वारू तनय अछे जो ॥ ४ ॥ सिंहलनामें कितव एक मदोटो, तिहां निवसे दिल खोटो हो ॥ जूआरी शिरदार, सेवे ते अनाचार, एक दिन हार्यो गमार, आव्यो देवी डुवार ॥ नांखे रीप धरी जो ॥ ५ ॥ रहुं तुफ देवकुलें हुं देवी, कां धन नापे तु सेवी हो ॥ वहेली प्रगट थइनें, आपे धन मुफ वहीने, नहिं तर गाल देश्ने, जाश्रु इहांथी लेइने ॥ वलतु देवी कहे जो ॥ ६ ॥ छुं ताह रे वापें मुफ आल्यु, के श्रु तें नूश्मांहे घाल्यु हो ॥ आव्यो ठे हलफल

स्वामी जी ॥ आश धरी हियडे घणी जी ॥ मुऊ तारशो ए विश्वास ॥ना०॥ क्षायिक समकितना धणी जी ॥ ७ ॥ कहे केवली जेम मन गम ॥ ना० ॥ तेम कीजें निश्चल थई जी ॥ सोंपी सुतनें निज साम्राज्य ॥ना०॥ अशनिघोषें दीक्षा ग्रही जी ॥ ७ ॥ वलि स्वयंप्रना बहु नारी संघात, चरण ग्रहे केवली कने जी॥ पाले पावन पंचाचार ॥ मुनिजी ॥ चरण करण गुणें एकमनें जी ॥ ए ॥ हवे वांदी नृप दोय विशेपें, निज निज नयरें आविया जी ॥ करे देवपूजा गुरु नक्ति सुवेपें, सहु जन मनमां नाविया जी ॥ १० ॥ दिये दीन दुःखीनें दान अलेखे, नक्ति करे जिनमदिरें जी॥ पाले श्रावकनो आचार अशेपें, सुख विलसे वरमदिरें जी ॥ ११ ॥ एक दिवस अमिततेज राय ॥ राजाजी ॥ उज्ज्वल एक जिनगृह करे जी ॥ मांहे स्थाप्या आदि जिणद, ते दीठे चित्तडुं ठरे जी ॥ १२ ॥ नित्य नक्ति करे प्रनात ॥ रा० ॥ अष्टप्रकारी उज्ज्वल मनें जी ॥ कहे चैत्यवदन कर जोडी ॥ रा० ॥ नाव नले उल्लसित मने जी ॥१३॥ अथ चैत्यवदन ॥ छप्पय ॥ जय सामी निज देव, जय अतिशय गुणधारी ॥ जय पारंगत परम रूप, अविचल अविकारी ॥ जय अध्यात्म नावधर्म, अकलक अमायी ॥ ज्ञानकला पूरण धणी, प्रजुताई पाई ॥ परमातम प्रेमें नमुं ए, प्रह ऊगमते सूर ॥ अमिततेज प्रजुध्यानथी, दिन दिन चढते नूर ॥ १ ॥ सिद्ध निरंजन नाथ नाम, धाता पुरुषोत्तम ॥ बुध अलख शकर सदा, पर ब्रह्मा सत्तम ॥ चिदानद चेतन कह्यो, वली आदि अनादि ॥ अव्यय अक्षय ने अरुज, प्रजु पूर्णानदी ॥ एम अनेक नामें करी ए, तुम ध्यातां कल्याण ॥ राम कहे सुर धेनुथी, अधिक तुम्हारी आण ॥२॥ अथ स्तवन ॥ राग केदारो॥आवो मुऊ मन धाम जिनजी ॥ आ० ॥ नेदथी एम रह्या अलगा, केम सरे अम काम ॥ जि० ॥ आ० ॥ ॥ १ ॥ सम अमारा तुमें न मानो, हाथ न जालो दाम ॥ नेह नजरें न कोइ निरखो, वीतराग तुम नाम ॥ जि० ॥ आ० ॥ २ ॥ हुं सरागी राग तोरे, मोहीयो गुणग्राम ॥ कोइ हरि हर बन माने, कोइ ने मन राम ॥ जि० ॥ आ० ॥ ३ ॥ तुंही तुही तुंही तुही, जाप जपतां आम ॥ केइ छुन्नरागें तथा एम, कहु केता स्वामि ॥ जि० ॥ आ० ॥ ४ ॥ लहे सरागी नावथी, वीतरागता परिणाम॥ तेहनें शी खोट जस शिर, तुंही आतमराम ॥ जि० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ एम स्तवता केते काल ॥ मुनि जी ॥

की डुष्टता, देखत उपजत लाज ॥ चांव उठेडे आपणो, परवधनके काज ॥५॥ पूर्वदोहा ॥ क्रोध नराणो शेठ, कहे पुत्रने पापीया ॥ कीधी में ताहारी वेठ, हवे जा महोलेंथी परो ॥ ६ ॥ शातादायी पूत, पण कुपुत्त रूडो नहिं ॥ शाला शूनी नव्य, पण तस्करपूरी करी ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ धन मुज वेला आज, अचिरानो नंदन जिनजी नेटणु जी ॥ ए देशी ॥ सांनली वचन धनद, मन विलखाणो घरथी नीसस्यो जी ॥ गाथा अर्थ विचार, धारे रे दिलमां ए मुज आशरो जी ॥ १ ॥ शी चिंता तुज जीव, साथे कमाई आवे आपणी जी ॥ रखे मान करतो रे जीव, ताप किस्यो रे परनी तापणी जी ॥ २ ॥ चाल्यो धरि एक तार, नीरसरोवर निरख्युं आगलें जी ॥ नाही पीधु रे नीर, विशामो लीधो जइ वडतरुतलें जी ॥ ३ ॥ धिक् धिक् क्रोध चमाल, सार न कीधी पाठी पुत्रनी जी ॥ रखे मन थाय कंगाल, जोय विचारी गाथा सूत्रनी जो ॥ ४ ॥ जिम जिम सान्नरे नाव, तिम तिम गाहा दिलमाहे धरे जी ॥ अर्थ अमृत रसनाव, ध्यान धारायें पीतां दिल ठरे जी ॥ ५ ॥ धरि अरिहंतनु ध्यान, तरुतलें सूतो करिने साथरो जी ॥ म करो कोइ गुमान, अथिर पदारथ छुं मनमां धरो जी ॥ ६ ॥ रात्रि व्याध अयाण, आव्यो रे जाणु वनचर ठे इहां जी ॥ ताकी नाख्युं रे वाण, वेध्यु रे पगमां सूतो ठे जिहां जी ॥ ७ ॥ आवे जेहवे रे व्याध, तेहवे रे जाग्यो मुखें गाहा नणे जी ॥ धिक् धिक् चिंते रे व्याध, पथी में हणीयो सूतो श्रम घणे जी ॥ ८ ॥ पगे लागी अपराध, व्याध खमावे में मातु कह्यु जी ॥ वाधे व्रण पटबंध, कुमर निवारे मुज एणें सह्यु जी ॥ ए ॥ जा तु ताहरे रे गाम, काम नहिं कोइ गाया माहरे जी ॥ करशे सघला रे काम, वाट जोतां हशे घेर ताहरे जी ॥ १० ॥ कुण आपे सुख डुःख, आप कमाइ ए आवे उदे जी ॥ लागी तरप ने नूख, वेदन वाधी कहो कोने वदे जी ॥ ११ ॥ थये प्रनातें रे तेह, मूर्छा रे आवी पुहवी तल पड्यो जी ॥ मृत जाणी रे नारंम, चचें महीने आकाशें चड्यो जी ॥ १२ ॥ पहोतो वारिधि दीप, नारम मूक्यो जइ शुन स्थानकें जी ॥ नक्षण करवाने जाम, चाहे जीवतो जाण्यो अचानकें जी ॥ १३ ॥ उडी गयो रे नारम, शीतल वायें तन चेतना वली जी ॥

तो,-पाछो जा वलवलतो, कोपें ते कलकलतो, पडर लेइ उछलतो ॥ देवी एम बोले जो ॥ ७ ॥ मूकि दीयो ए वयणना चटका, न करावो मूर्ख हम कटका हो ॥ देवी जाणो ए मागो, दीसे हियडानो कागो, जोजे मूर्ख बांगो, कांइक देइने छांटो ॥ देवी नीति लहे जो ॥ ८ ॥ आप्यो रे एक कागलीयानो कटको, बोल्यो कितव अग्निनो नटको हो ॥ रे रे शुं करुं रंक, इण पत्रने खंक, देवी कहे सुण लव, एहथी होशे घमक ॥ सांजल वात कहु जो ॥ ९ ॥ देजो गाथा तेहने सार, आपे जे सहस दिनार हो ॥ निसु णी हियडामां हरख्यो, कागल रयण ज्यु परख्यो, आव्यो चहुटे उलकर्ष्यो, कौतुक जोवाने सरिखो॥ नाखे गाथा ए लेजो ॥ १० ॥ लोक कहे शुं गा थानु मूल, कहे सहस दिनार अमूल हो ॥ सांजली मुह मचकोडे, वलतुं सादु न जोडे,कुण करे एहनी होड, धूर्त्तने शिर मोड ॥ कोइ मुह न मांगे जो ॥ ११ ॥ जमियो पुरमांहे आखो दाहाडो, लोक कहे ए पवाडो हो ॥ मलिया सांफनी वेला, कुमर धनद अलवेला, ते वेहु थया जेला, पूछे वात सलीला ॥ कारण ए शुं छे जो ॥ १२ ॥ गाथा एहे वांची धन कुमार, करे चित्तमांहे विचार हो ॥ जाइ साचु ए नांख्युं, न टले विहियें जे लेख्युं, प्रत्यक्ष नजरें में देख्युं, वयण न जाय उवेख्यु ॥ गाथा साची छे जो ॥ १३ ॥ गाथा ॥ जंचिय विहिणा लिहियं,तंचिय परिणमे सयल लोयस्स ॥ इय जाणेवि हु धीरा, विहुरेवि न कायरा हुति ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ देइ सह स दीनार ने लीधी, गाथा हो वांचे प्रसिद्धि हो ॥ ढाल तेरमी जांखी, बीजे खर्में हो आखी, राम कहे चित्त राखी, सुणजो सज्जन साखी ॥ जविका धर्म करेजो ॥१४॥ सर्वगाथा ॥३५६॥ श्लोक तथा गाथा ॥१४॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ चिंते धनद कुमार, गाथा बहु मूली मली ॥ लखमूलें पण एह, मुफने मलवी दोहिली ॥ १ ॥ वांचे वारं वार, करमां लेई पत्रिका ॥ उर उपर जिम हार, तिम ते राखी हृदयमां ॥ २ ॥ एहवे दुर्जन कोय, रत्नसार आगल कहे ॥ तुम सुत मूरख जोय, आगल ए शुं राखशे ॥ ३ ॥ परघर जजन केइ, खल दीसे जगमा घणा ॥ देखे पण न कहेइ, लीजें तेहनां जामणा ॥ ४ ॥ यडक्त ॥ दोहा ॥ एक माखी अरु डुष्ट नर, देखो इणके हान ॥ अकाज पराये कारणें, हठ करी तजे पराण ॥१॥ छगके मन

तिहां आवियो ॥ सुणो नवि ॥ सार्थवाह सुदत्त हो ॥ प्रवहण साथे घणा लीया ॥ सु० ॥ सोवनद्वीप पहुत्त हो ॥ १ ॥ कर्म अजवगति वाध्यु विविध मति, उदयें आवे अति आकरु ॥ सु० ॥ कर्म कोणें न कलाय हो ॥ ए आंकणी ॥ वदर आव्यु जाणीने ॥ सु० ॥ जल इंधणनें काज हो ॥ लोक सवे तिहां ऊतरो ॥ सु० ॥ जलसचय करो आज हो ॥ क० ॥ २ ॥ वहु नर सार्थें आवीयो ॥ सु० ॥ सार्थवाह सुजाण हो ॥ नर जल जोवा नीसस्था ॥ सु० ॥ मलियो धनद गुणखाण हो ॥ क० ॥ ३ ॥ जलस्या नक तेणें वावड्यु ॥ सु० ॥ मलिया माणस वृंद हो ॥ जल जीवन जग मां वहु ॥ सु० ॥ जल विण श्यो आनद हो ॥ क० ॥ ४ ॥ यडुक्त ॥ पृथिव्या त्रीणि रत्नानि, जलमन्न सुनापितम् ॥ मूढे पाषाणखंमेपु, रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सार्थवाह त्या आवियो ॥ सु० ॥ धनदें कस्यो प्रणाम हो ॥ आलिंगी वेहू मल्या ॥ सु० ॥ पूठ्यु कुशल तेणें ताम हो ॥ क० ॥ ॥ ५ ॥ कचन रयण ए कोण तणां ॥ सु० ॥ धनदें कही सवि वात हो ॥ मुज नयरें पहोंचाडजो ॥ सु० ॥ हरख्यो निसुणी अव दात हो ॥ क० ॥ ६ ॥ रयण सोवननी इष्टका ॥ सु० ॥ गणी सोंपें तेणि वार हो ॥ प्रवहणमांहे लेइ धरी ॥ सु० ॥ धन अनरथ करनार हो ॥ क० ॥ ७ ॥ चित्त चल्यु ते शेठनु ॥ सु० ॥ धन मेलू जगमाहि हो ॥ एक हणे एह मादरु ॥ सु० ॥ नहिं कोइ वीजो आंहि हो ॥ क० ॥ ८ ॥ शान करे सेवक नणी ॥ सु० ॥ नाखो ए कूपमझार हो ॥ प्रवहणमां आवो वही ॥ सु० ॥ धिक् धिक् लोनविकार हो ॥ क० ॥ ए ॥ लोन स मु डुख को नहिं ॥ सु० ॥ लोन वडो जगमूल हो ॥ लोनवशें हुइ जी वहो ॥ सु० ॥ नवनवमां मल्यो ब्रूल हो ॥ क० ॥ १० ॥ सेवक धनद नणी कहे ॥ सु० ॥ तु जल ताणी आप हो ॥ अहोनिश तुझ अन्यास हो ॥ सु० ॥ ए अमचो डुःख काप हो ॥ क० ॥ ११ ॥ करवाने उप गारडो ॥ सु० ॥ धनद आव्यो तत्काल हो ॥ पाप करंतां पापीया ॥ सु० ॥ निर्लज न लाजे चमाल हो ॥ क० ॥ १२ ॥ कूपकठें ते आवियो ॥ सु० ॥ अवसर लइ अविनीत हो ॥ मांहे ठेलीने नाखीयो ॥ सु० ॥ जुर्त जुर्त कर्मनी रीत हो ॥ क० ॥ १३ ॥ विश्वासघाती पापीया ॥ सु० ॥ कर तां काम ए नीच हो ॥ रुले चिहुंगति ससारमा ॥ सु० ॥ लोन कलण

कोण आण्यो मुज आंही, कोण दशा ए इहां आवी मली जी ॥ १४ ॥ जीव म थाइश भीरु, सहस दिनारें जे गाथा लही जी ॥ धर तेहनो मन भाव, शोच न लावे दिलमाहे सही जी ॥ १५ ॥ ऊठ्यो धरी मन धीर, नीर जोवाने चाल्यो जेटले जी ॥ नहि कोइ मनुष्य प्रचार, नयर निहाळे उद्दस तेटले जी ॥ १६ ॥ अस्थिर ए घरना रे मोह, मूकीनें भाग दीसे मानवी जी ॥ शुं हशे कारण एह, कर्म तणी गति दीसे अभिनवी जी ॥ १७ ॥ जोतां एक जलकूप, निरखीनें हरख्यो दिलमांहे घणुं जी ॥ जल आकर्षी रे पीध, सुखीयु थयु रे तन मन तेह तणु जी ॥ १८ ॥ फल कवलीनां रे आणि, कीधी कुमारें प्राणनी धारणा जी ॥ रहियो नयरथी दूर, रात एकांतें धर्मने धारतो जी ॥ १९ ॥ तिमिर पसर्युं अति घोर, शीतनो जोरो पवनथकी थयो जी ॥ ठरतो टाढें रे गाढ, निकटगिरि ने उपकंठें गयो जी ॥ २० ॥ मेली बहुलां रे दारु, अग्नि उपाई कीधुं वतापणु जी ॥ एकलडो वनमांहि, ढवर्यें आवे रे कीधु आपणु जी ॥ २१ ॥ प्रात समय थयो एम, भूमि थइ अग्नियें सोवनमयी जी ॥ चिंते शेठनो पूत, सोवनद्वीप सुण्यो ते में सही जी ॥ २२ ॥ हरख्यो हियडा मझार, कंचन कीजें हवे हरखें करी जी ॥ कीधो इंट संघात, माटी लेइने मन ऊजम धरी जी ॥ २३ ॥ अग्नि तणे रे संयोग, कंचन तेहनुं जाखु नीपज्युं जी ॥ करे फल फूल आहार, जो जो भवियो फल हवे पुण्यनु जी ॥ २४ ॥ बीजे खंडें रे ढाल, चौदमी दाखी अति रलियामणी जी ॥ राम कहे रे रसाल, भाव धरीनें सांभलजो गुणी जी ॥ २५ ॥ सर्वगाथा ॥ ३०८ ॥ श्लोक ॥ १५

॥ दोहा ॥

॥ एकदिवस गिरिकुंजमां, भमतां भाग्यवशेण ॥ रत्नसमुच्चय दीठडो, हृदय भर्युं हरखेण ॥ १ ॥ आण्यां तिहांथी ते घणां, राख्यां सोवन पास ॥ कुंवर देखि उल्लसित थयो, मेल्यो बहुधनराशि ॥ २ ॥ प्राणवृत्ति तिहां कणे करे, सुंदर फल लेइ आवि ॥ रहे समाधें ते द्वीपमां, कुंवर सरल स्वभाव ॥ ३ ॥ हवे भवियण तुमें सांभलो, सुख दुःख फल अधिकार ॥ भाग्यथकी जे नीपजे, सरसकथा विस्तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ हांजा मारु घडी एक करहो फुकाव हो ॥ ए देशी ॥ एणें अवसरें

॥ मो० ॥ जो० ॥ ३ ॥ कष्ट निवारे पांचमुं, एम कही देवी वाच ॥ ॥ मो० ॥ अदृश्य थइ चक्रा सुरी, कुवरें मान्यु साच॥ मो०॥ जो० ॥ ४ ॥ आगल दीठी कुवरें, व्रणसरोहणी एक ॥ मो० ॥ लीधी जथा छेदीने, स्थाप्यां रतन विवेक ॥ मो० ॥ जो० ॥ ५ ॥ व्रणसरोहणीयें थयो, साजो ते निज अंग ॥ मो० ॥ आगल पुर पातालमां, देखी वाध्यो रंग ॥ मो० जो० ॥ ६ ॥ हाट विराजे चहूवटे, मंदिर उंचा उंच ॥ मो० ॥ निर्मानुप शूनी पडी, चिहु दरवाजे पोल ॥ मो० ॥ जो० ॥ ७ ॥ धैर्य धरीने चालीयो, जोवा पुरमां ख्याल ॥ मो० ॥ देखीने थयो दूमणो, नगर जलु वेहाल ॥ मो० ॥ जो० ॥ ८ ॥ यडुक्त ॥ वसुधाजरण पुरुष , पुरुषाजरण हि चोत्तमा लक्ष्मी ॥ लक्ष्म्याजरण दान, दानाजरण सुपात्र च ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ राजभुवन एक देखियुं, पेठो जोवा तेह ॥ मो० ॥ सातमी जूमियें साहसी, चढीयो ऊचो गेह ॥ मो० ॥ जो० ॥ ए ॥ एक पासें पलंगमा, बेठी अबला बाल ॥ मो० ॥ नवयौवन आवी जली, मोहनरूप रसाल ॥ मो० ॥ जो० ॥ १० ॥ अणियाली जस आंखडी, मानु कमलदल दोय ॥ मो० ॥ जमुह भ्रमर वासो वसे, मोह्यो रमणी जोय ॥ मो० ॥ जो० ॥ ११ ॥ कठीनें ऊजी थई, कामणगारी नारि ॥ मो० ॥ आसन आप्यु बेसवा, कीधी घणी मनोहार ॥ मो० ॥ जो० ॥ १२ ॥ नयण सलूणे नेहथी, निरखे कुमर स्वरूप ॥ मो० ॥ बोले बाला तुम तणु, कहो आगमन स्वरूप ॥ मो० ॥ जो० ॥ १३ ॥ नडातम निधि जाग्यना, इहां आव्या अणजाण ॥ मो० ॥ जय सबलो इहां छे घणो, केम करी राखशो प्राण ॥ मो० ॥ जो० ॥ १४ ॥ कुमर कहे जय केहनो, ते दाखो मुज वात ॥ मो० ॥ शून्य नगर दीसे किस्यु, शो तुमचो अवदात ॥ मो० ॥ जो० ॥ १५ ॥ धैर्य रूप गुणें घणु, रजी चतुरा बाल ॥ मो० ॥ कहे पुरुषोत्तम माहरी, वात सुणो वाचाल ॥ मो० ॥ जो० ॥ १६ ॥ सुणो जरतें जूजामिनी, तिलक तिलकपुर ख्यात ॥ मो० ॥ नाम महेंड महामति, नृपति तिहां मुज तात ॥ मो० ॥ जो० ॥ १७ ॥ सीमाडिये सबलें मली, परिजवियो मुज तात ॥ मो० ॥ एहवे कोइएक व्यंतरें, आवी कही त्यां वात ॥ मो० ॥ जो० ॥ १८ ॥ राजन पूरवजव तणो, हु तुज मित्र सुजाण ॥ मो० ॥ तु मुज वहालो जीवथी, कहो कारज गुणखाण ॥ मो० ॥ जो० ॥ १९ ॥ जय जाजो वैरी

ए कीच हो ॥ क० ॥ १४ ॥ पडतां गाथा चित्त धरे ॥ सु० ॥ इहां नहिं कोइनो दोष हो ॥ कूपमेखल ऊपर पड्यो ॥ सु० ॥ न धरे जीवमां शोष हो ॥ क० ॥ १५ ॥ दीठां पावडीयां तिहां ॥ सु० ॥ कौतुक दीसे कोष हो ॥ नीचो थइने ऊतर्यो ॥ सु० ॥ आगल पहोंच्यो सोय हो ॥ क० ॥ १६ ॥ मनमांहे विस्मय पामतो ॥ सु० ॥ पन्नरमी बीजे ढाल हो ॥ रामविजय कहे रंगशुं ॥ सु० ॥ वारू वात रसाल हो ॥ क० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ आगल जातां देखीयु, देवल एक विशाल ॥ शोभा अति दीसे भली, मोहन ऊाक ऊमाल ॥ १ ॥ ते मांहे दीठी तिहां, चक्रा नामें देवि ॥ जिन शासन रखवालिका, सुर नर सारे सेव ॥ २ ॥ चरण नमी चक्री तणां, ऊनो बेहु कर जोडी ॥ हर्षेशुं स्तवना करे, मान रहित मद मोडि ॥३॥ अथ चक्रेश्वरी स्तुति ॥ राग टोडी ॥ जय जय तु चक्री अमरी रे, श्रीआदीश्वर पद पंकजमें, रसिक वसे तिम ज्युं भ्रमरी रे ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ गरुडासन बेठी गुणवती, सुर नर कोडि सदा समरी रे ॥ जे तुऊ ध्यान धरे एक चित्ते, तस घर फूले तुरंग करी रे ॥ ज० ॥ १ ॥ चक्रायुध विषमु कर लीधु, दुष्ट निवारण साची सुरी रे ॥ बावन वीर रहे तुऊ आगें, कर जोडी करे सेव खरी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ हु अनाथ तुऊ चरणें आयो, कर उपगार तु महेर करी रे ॥ विहि नडियो दु खकूपें पडियो, हवे मुऊ वांछित द्यो उद्धरी रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ कर जोडी रह्यो दास हु तोरो, मात मया कीजें सखरी रे ॥ हवे मुऊ शरण ए चरणज तोरां, एसी करो ज्यु नासे अरि रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ इति चक्रेश्वरीस्तुति ॥ पूर्वदोहा ॥ भक्त वचन एम सांभली, देवी थई प्रसन्न ॥ वत्स माग्य जे वर रुचे, बोले इम सुवचन ॥ ४ ॥ तुऊ दीठे मुऊ सवि मल्युं, फली मनोरथ माल ॥ मात भवानी शंकरी, तुऊ दर्शन देवि रसाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ कत तमाकू परिहरो ॥ ए देशी ॥ पंच रतन आपे खरां, देवी धरी उल्लट ॥ मोरा लाल ॥ फल दाखे तस रूयडां, धनद सुणे परगट ॥मो०॥१॥ जो जो भवि फल पुण्यना ॥ ए आंकणी ॥ पुण्यें वांछित थाय ॥मो०॥ पुण्य करो रे प्राणीया, इह परभवें सुखदाय ॥ मो० ॥ जो० ॥२॥ प्रथम रयण सौभाग्य दे, बीजे लक्ष्मीराशि ॥ मो० ॥ रोग हरे त्रीजु वली, चोथे विपनो नाश

धरे रे निश्चल थइ रे ॥रहो०॥ ते चूके नहिं तिल मात ॥मो०॥ खङ्ग ग्रही मुज जनकनु रे ॥रहो०॥ तुमें करजो एहनो घात ॥ मो० ॥ २ ॥ वात करे रे एम वेहु जणां रे ॥ रहो० ॥ तेउंनी नेहें रगाणी धात ॥ मो० ॥ एहवे एक शव लेइने रे ॥ रहो० ॥ ते आव्यो नीच विख्यात ॥ मो० ॥ ३ ॥ दीसे वर्ण वीहामणो रे ॥ रहो० ॥ उंचो ताडनो त्रीजो नाग ॥ मो० ॥ हड हड हसतो एम कहे रे ॥ रहो० ॥ आज आगल आव्यो लाग ॥ मो० ॥ ४ ॥ शव मूक्यु पडतु रे तिहा ॥रहो०॥ जइ वेगे जपवा जाप ॥ मो० ॥ बुद्धि ने वल वेहु शु करे रे ॥ रहो० ॥ जब आवी लागे पाप ॥ मो० ॥ ५ ॥ रयण प्रभावें तेहने रे ॥ रहो० ॥ नवि जोवे दुष्ट निहाल ॥ मो० ॥ खङ्ग उपाडी ने आवीयो रे ॥ रहो० ॥ रे रे जोजे दुष्ट सभाल ॥ मो० ॥ ६ ॥ जाण्यु हसें ए मुजने रे ॥ रहो० ॥ मुज शु हणशे ए कगाल ॥ मो० ॥ घहेलसफाइमा रह्यो रे ॥ रहो० ॥ करवालें लण्युं गलनाल ॥ मो० ॥ ७ ॥ पहोंचाड्यो यममदिरें रे ॥ रहो० ॥ एम आवी पहोतुं पाप ॥ मो० ॥ सामग्री विवाह तणी रे ॥ रहो० ॥ ते सघली लीधी आप ॥ मो० ॥ ८ ॥ विघ्न गयुं वेला वली रे ॥ रहो० ॥ शुभ वेला धनद कुमार ॥ मो० ॥ तिलकसुंदरी परणी तिहां रे ॥ रहो० ॥ पुण्यें होवे जय जयकार ॥ मो० ॥ ए ॥ दपती दोय दिल भर रमे रे ॥ रग माणो हो राज ॥ करे दिल खोलीने वात ॥ माहरो गुण मानो हो राज ॥ नवल सनेहा साहिवा रे ॥ र० ॥ मुज दाखो तुम अवदात ॥ मा० ॥ १० ॥ कामिनी आगल कंथजी रे ॥ र० ॥ कहो मूलथकी सवध ॥ मा० ॥ वात सुणी विस्मय लही रे ॥ रं० ॥ वधाणी प्रेमने वंध ॥ मा० ॥ ११ ॥ दिन केता एक तिहा रही रें ॥ र० ॥ लेइ रामा रतननी राशि ॥ मा० ॥ सार वस्तु लीधी घणी रे ॥ रं० ॥ ते आवे कूपनी पास ॥ मा० ॥ १२ ॥ चरण नमी चक्रातणे रे ॥ सुणो माता हो ॥ करे स्तवना प्रेमने पूर ॥ मा० ॥ तुज दर्शनथी माहरु रे ॥ सु० ॥ वाध्युं वमणु नूर ॥ थइ सुख शाता हो ॥ १३ ॥ चरण शरण एक ताहरा रे ॥ सु० ॥ मुज भीडनी भजण हार ॥ थइ० ॥ सान्निध्य करजो अवसरें ॥ सु० ॥ तुं निराधार आधार ॥ थइ० ॥ १४ ॥ आव्या कूपनी मेखला रे ॥ सुणो प्राणी हो ॥ वीजे खमें सत्तरमी ढाल ॥ मनहित आणी हो ॥ राम कहे रंगेकरी रे ॥ सु० ॥ आगल

तणो, कीजें मुऊ साहज ॥ मो० ॥ वैरी थाये पाधरा, पामुं असंमित राज ॥ मो० ॥ जो० ॥ २० ॥ व्यतर कहे सुण वालहा, इहां नहिं मा हरु जोर ॥मो०॥ मुऊहूंती वली ए घणा, शौर्ये सेविता चोर॥ मो० ॥जो० ॥ २१ ॥ लोक सहित मुऊ तातने, आव्यो एणे गाम ॥ मो० ॥ वैरी राख्या वेगला, इहां कीधो विश्राम ॥ मो० ॥ जो० ॥ २२ ॥ वास्यु नय र पातालमें, कूपमांहे जस मार्ग ॥ मो० ॥ वीजु वाहिर पुर कह्यु, उरस्त जोई नूनाग ॥ मो० ॥ जो० ॥ २३ ॥ लोक बहु इहांकण वस्यां, चिहुं दिशि जलनिधि पूर ॥ मो० ॥ आवे बहु वाहाण नखां, अन्न धण इहां नूरि ॥ मो० ॥ जो० ॥ २४ ॥ एहवे इहांकणे आवीयो, राक्षस अति विकराल ॥ मो० ॥ कर्म संयोगें कूपमा, पेठो ते चामाल ॥ मो० ॥ जो० ॥ २५ ॥ सहुजनने नक्षण करी, वाहिर आव्यो तेह ॥ मो० ॥ वाहाण बेसीने सहु, नाठां मूकी गेह ॥ मो० ॥ जो० ॥ २६ ॥ शून्य कर्यां बेहू तिणें, नगर माहा विपरीत ॥ मो० ॥ कर्मकथा कहेता थका, धूजे माहरु चित्त ॥ मो० ॥ जो०॥ २७ ॥ मुऊ नुर्नागिणी देखतां, थयो बहुनो सहार ॥मो०॥ राखी मुऊने एकली, पापी प्रेम विकार ॥मो०॥ जो० ॥ २८ ॥ फु ख म धर रे मानिनी, तुऊवरवानी आश ॥ मो० ॥ परणीने दिन सातमे, करशुं नोग विलास ॥ मो० ॥ जो० ॥ २९ ॥ बीजे खमें शोलमी, ढालें कुमरी वात ॥ मो० ॥ राम कहे ते नवि चले, जे दीठुं जगतात ॥ मो० ॥ जो० ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

॥ आज थयो दिन सातमो, कुमरी नांखे तास ॥ होशे पापी आ वतो, मारे माणस वास ॥ १ ॥ तेमाटे तुमने कहुं, रहेजो मन हुशि यार ॥ नहिंतर मदिर मूकीनें, रहो अलगा इण वार ॥ २ ॥ धनद कहे सुनगे सुणो, नहिं मुऊ एहनी नीति ॥ मुऊ हाथे ए पापीयो, लहेशे मरण अनीति ॥ ३ ॥ पाके नूप कुमत्रीथी, कालें फल परिपाक ॥ रोग पचे ल घनथकी, पापी कर्मविपाक ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ ताहेरो गुण मान्यो राज ॥ ए देशी ॥ तिलकसुंदरी कहे साहिबा रे, ॥ रहो ठाना हो राज ॥ तस दाखु मृत्यु उपाय ॥ मोरे मन मान्या हो राज ॥ विद्यापूजन कारणे रे ॥ रहो० ॥ ते बेसे ठे इण गाय ॥ मो० ॥ १ ॥ ध्यान

तुमें इहां आव्या, मनोवांछित सुख अमें पाया ॥ तुम दर्शन अधिक सुहाया, जिम चंद चकोरा न्याया रे ॥ ज० ॥ ए ॥ कहे सार्थवाह हरामी, अमें द्वीप कटाहने पामी ॥ आव्या जरतथकी शुज कामी, जाशु निजनयरें धामें रे ॥ ज० ॥ १० ॥ आवो तुमें अम सघातें, ल्यो वस्तु वली सहु साथें ॥ जलुं कीधु ए जगनाथें, तुम साथ मल्यो अम पथें रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ पहोंचाडो धनद कहे अमने, जाग ठहो देशु तुमने ॥ करशुं तुम सेवा सु मनें, मत मानजो कूडु कुमनें रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ देवदत्त कहे उत्क र्षी, अमें माणासना छु परखी ॥ तुम्ह सेवा मेवा सरखी, करशु अमें हियडे हरखी रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ बेहु वेग वहाण माहि, चाल्यां प्रवहण उत्साहि ॥ नारी देखी मन मांहि, चिंते ते धूरत शाह रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ रमणी ते रूपरसाली जरयौवनमांहे जाली ॥ गजगति चाले मतवाली, मृगन यनी तनसुकुमाली रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ मानु मन्मथनी ए घरणी, हणु तेहने जेणें ए परणी ॥ करु ए साथें सुख करणी, रे विषया डुर्गतिनी स रणी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ हवे सांजलजो जवि जाई, शुं विषयथकी शुं, थाइ ॥ विपथी पण अधिक कहावे, विपयामति प्रीति नसावे रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ खम बीजे अढारमी ढाल, जग महोटो विषयनो जाल ॥ कहे रामसुनि उजमाल, जग विषय वडो चमाल रे ॥ ज० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोनें पड्यो कामें नड्यो, देखी धन ऊर नारि ॥ देवदत्त निज चित्तमा, आरत करे अपार ॥ १ ॥ धन रमणी ए एकलो, केम लेइ जाशे सुख ॥ नाखु दरियामा खरो, केडें वहार न बुख ॥ २ ॥ ए तरुणी ए माल सवि, थाशे मुज आधीन ॥ परमेश्वर मुज पाधरो, करशुं काज अदीन ॥ ३ ॥ डुष्टें धनद कुमारशु, लट पट मांमी जोर ॥ सरलपणें तिणें नवि लख्युं, तेहनु हृदय कठोर ॥ ४ ॥ सज्जन जन जाणे नहिं, डुर्जननी गति जात ॥ चाल्य न जाणे उरगनी, विण भुजंगनी जाति ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥ धनदत्त खल सार्थें मल्यो रे लो, वात करे मन मेलि रे ॥ सुगुण नर ॥ तुम मलियां डुख विसरे रे लो, आज वधी रंग रेल रे ॥ सु० ॥ १ ॥ खलसगति नवि कीजियें रे लो ॥ ए आकणी ॥ जो

संबध रसाल ॥ म० ॥१५॥ सर्व गाथा ॥४७७॥श्लोक तथा गाथा ॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ आव्या कूपनी मेखला, दिलनर दंपती दोय ॥ जे तिण अवसरें नी पन्युं, ते निसुणो सहु कोय ॥ १ ॥ प्रवहण कोइ परदेशनुं, आव्युं तेणें द्वीप ॥ जल इंधणने कारणें, बंदर जाणी समीप ॥ २ ॥ आव्या जलने जोवतां, कूपकंठ नर केइ ॥ जल आकर्षण दोरिका, मूके हर्ष धरेइ ॥ ३ ॥ धनदें दोरि ग्रही तदा, बोल्यो एम वचन ॥ कूपथकी काढो मुने, महोटा तुमें माहाजन ॥ ४ ॥ तिणे जइ निजपतिने कह्युं, देवदत्तने आम ॥ आवो स्वामि उतावला, बे उपकारनु काम ॥ ५ ॥ ते आव्यो दोडी तिहां, मांची बांधी दोर ॥ धनद कुमरनें काढीयो, देवदत्त करि जोर ॥ ६ ॥ सार्थवाह दीठो सखर, सुंदर वेष अवल ॥ रे सज्जन तु कोण बे, निर्मल रूप नवल ॥ ७ ॥ केम पडियो ए कूपमां, धनद कहे एक वार ॥ प्राण प्रिया पण माहरी, कूपमांहे निर्धार ॥ ८ ॥ अवर वस्तु पण बे घणी, कूपमध्यें महाराज ॥ काढीने कहेशु पछी, वात सकल मुज आज ॥ ए ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ हु दासी राम तुमारी ॥ ए देशी ॥ देवदत्त कहे सुविचारी, तुमें काढो परणी प्यारी ॥ सवि वस्तु निकासी सारी, ते दीठी सुंदर नारी रे ॥१॥ नवि का लोभ न करजो ॥ लोभ न कर जोजी ॥ ए आंकणी ॥ बे अर्तें ए दुख दाइ, माया विषवेल सदाइ ॥ तृष्णा तरुणीनो भाइ, रह्युं एहथी जग लपटाइ रे ॥ न० ॥ २ ॥ पूछे सार्थवाह तिवार, कहो तुमचो हवे अधिकार ॥ दोय नाह रमणी निरधार, केम पडियां कूप मजार रे ॥ न० ॥ ३ ॥ ए भरत तणो हु वासी, हु जातें वणिक विलासी ॥ धन उपराजण उल्लासी, चल्यो द्वीप कटाह विमासी रे ॥ न० ॥ ४ ॥ दैवयोगें प्रवहण भाग्यु, एक फलक करें मुज लाग्यु ॥ दंपती दोय पाम्या ताग, लाध्युं ए बंदर भाग्य रे ॥ न० ॥ ५ ॥ जल जोता ए कूप दीठो, मनमांहे लाग्यो मीठो ॥ नारी पग तिहां लपट्यो, जोता मनडो करी धीठो रे ॥ न० ॥ ६ ॥ नारी केडें उजाइ आइ, पडतु मदेल्यु में धाइ ॥ कूपमेखल कपरें जाइ, पडियो हु पुण्य सखाइ रे ॥ न० ॥ ७ ॥ जलदेवी थइ सुप्रसन्न, आप्या अम वसन रतन्न ॥ कहे प्रवहण वेसी जतन, तुमें जाजो पुरप रतन रे ॥ न० ॥ ८ ॥ अम भाग्य

खास रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १७ ॥ यडुक्त ॥ क्षणेन लन्यते यामो, यामेन लन्यते दिनम् ॥ दिनेन लन्यते काल , काल कालोनविप्यति ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ मुज पियु मरवानो नहिं रे लो, रयणतणे प्रसाद रे ॥ च० ॥ तो उत्तर कहि कारिमो रे लो, करु एहने आह्लाद रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १७ ॥ तट जइ पुरना स्वामिनी रे लो, लहि अनुमति सहु साख रे ॥ च० ॥ वयण तुमारुं मानशु रे लो, हरख्यो एम सुणी नाप रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १ए ॥ निसुणो धनद तणी कथा रे लो, श्रोता वीजे खम रे ॥ च० ॥ ढाल कही उंगणीशमी रे लो, लेहशे सुरक असंम रे ॥ च० ॥ ख० ॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ पुर जइ नृपनें संतोकशु, धन देई असमान ॥ चिंतित करशु आ पणुं, चिंते ते अज्ञान ॥ १ ॥ पण जाणे नहि वापडो, परशोहें केम काज ॥ सिद्ध थाये ससारमां, जेहथी प्रजु इतराज ॥ २ ॥ हवे धनद जलनिधि पड्यो, पूर्वजन्म कोइ थान ॥ फलक वही आव्यु करें, अहो अहो पुण्यनिदान ॥ ३ ॥ ते अवलंबी चालियो, कल्लोलें लोलत ॥ पंचम दिवसें ते धनद, निजपुर निकट पहुत ॥ ४ ॥ तट देखी हरख्यो हिये, जोवे नयणें जाम ॥ मत्स्य महोटे फलकें सहित, गल्यो अचिंतित ताम ॥ ५ ॥ अहो विपमी गति कर्मनी, कोणें कली नवि जाय ॥ जे जे मनमां चितीयें, ते ते निष्फल थाय ॥ ६ ॥ नरकोपम पडियो तदा, मत्स्य उदर मां तेह ॥ चिंते ए शु नीपन्युं, कर्मवशें मुज एह ॥७॥ कष्ट हरण मणि स मरणें, ते मत्स्य धीवरें बद्ध ॥ उपकंठें आव्यो तुरत, द्विधा विदारण कीध ॥ ७ ॥ उदरमध्यथी नीसर्यो, देखी दिव्य कुमार ॥ जलें नवरावी तेहनें, मूक्यो राजडुवार ॥ ए ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ हांरे नरवा रे गइती नदी यमुनाना नीर जो॥ ए देशी॥ हांरे तव पूछे राजा अचरिज वाली वात जो, नाइ मुज नांखोने ए तुमची कथा रे लो॥ हांरे केम रहियो मत्स्य उदरमां तु सुकुमार जो, केम सहेवाणी सब ली ते व्यथा रे लो ॥ १ ॥ हारे तव कुमर कहे राजन जननु घुं जोर जो, बाध्यो रे फकडीनें कर्मे जीवडो रे लो ॥ हांरे एकेक प्रदेशें कर्म अनंती आव जो, वर्गणाथी वींटाणो रह्यो अनुदिन जडी रे लो ॥ २ ॥ हारे में

करे वानां लाख रे ॥ सु० ॥ मीठो थइ आवी मले रे लो, फल किंपाकनी साख रे ॥ सु० ॥ ख० ॥ २ ॥ एक दिवस रयणी समे रे लो, वेदचिंता स भाव रे ॥ चतुर नर ॥ वेठो माची कपरें रे लो, आव्यो वैरी दाव रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ३ ॥ जोइ अवसर तेणें पापीये रे लो, कापी दोर तुरंत रे ॥ च० ॥ करतां एम बीये नहीं रे लो, पापी काम डुरंत रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ४ ॥ लडथडतो पड्यो ठवली रे लो, सायरमाहे कुमार रे ॥ च० ॥ गाथा दिलमांहे सांजरी रे लो, जीव हुउ हुशियार रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ५ ॥ जावी जाव टले नहीं रे लो, इहां नहि केहनो वांक रे ॥ च० ॥ कर्म वशें सहु जीवडो रे लो, कोण राजा कोण रंक रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ६ ॥ सोर करी कठयो सही रे लो, जुवो निहाली कोय रे ॥ च० ॥ माणस प डियो सिंधुमां रे लो, शब्द सुण्यो इम सोय रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ७ ॥ जबकि ठवी सा सुंदरी रे लो, नवि देखे निज कंत रे ॥ च० ॥ ध्रसक पड्यो तव ध्रा सको रे लो, विंछडियो प्राणनाथ रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ८ ॥ हाथे हियडुं कूट ती रे लो, रोती अबला बाल रे ॥ च० ॥ डुख जर ठाती फाडती रे लो, उ लटी विरहनी जाल रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ए ॥ हा वालम मूकी गयो रे लो, केम डुःख सायरमांहे रे ॥ च० ॥ सोर सुणी तिहां आवियो रे लो, देवदत्त सारथवाह रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १० ॥ कृत्रिम रुदन करी कहे रे लो, शुं ए थयो उतपात रे ॥ च० ॥ हा मित्र तुऊने केम थयो रे लो, सायर ऊपापात रे ॥ च० ॥ ख० ॥ ११ ॥ मुखें रोवे हियडे हसे रे लो, पापीमां शिरदार रे ॥ च० ॥ मुख मीठो धीठो हिये रे लो, ए खलना आचार रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १२ ॥ प्राणप्रिया नवि रोइयें रे लो, रोये तन कुमलाय रे ॥ च० ॥ दैव प्रते चाले नहिं रे लो, दैव करे ते थाय रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १३ ॥ वचन सुणी चतुरा चकी रे लो, ए पापीना काम रे ॥ च० ॥ हा हा मुऊनें हवे सही रे लो, लेइ जाशे निज ठाम रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १४ ॥ शील रतन केम राखशुं रे लो, किम रहेशे कुलजाल रे ॥ च० ॥ हा हा दैव अटारडो रे लो, ए शुं कीधु अकाज रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १५ ॥ सार्थपति कहे वालही रे लो, तुऊ पियु गयो पर लोक रे ॥ च० ॥ हवे मुऊने अंगीकरो रे लो, शीयो मूआनो शोक रे ॥ च० ॥ ख० ॥ १६ ॥ चिंते ए माटीपणे रे लो, करशे शील विनाश ॥ च० ॥ काल विलंबने कारणें रे लो, उत्तर वालु

नृपपासें थगिधर कोण बे रे लो ॥ हारे शु एवडुं एहने राय तणुं सन्मान जो, के सुकृती के तेमा काहि नूतनगुण बे रे लो ॥१४॥ हांरे तिणे मामी दाख्यो सघलो तस अवदात जो, धनद सही मनमाहे तस निश्चे थयो रे लो ॥ हारे हवे चिंते डुष्ट हियामा हलुइ वात जो, धननो रे अति लोनी नीचमति हुउ रे लो ॥ १५ ॥ हारे नवि बीजे खर्मे राग अखर्मे एह जो, नांखी रे ए बीशमी ढाल सोहामणी रे लो ॥ हांरे श्री सुमति सुगुरुनो रामविजय कहे आम जो, जगमांहे डुखदायी लोन दशा घणी रे लो ॥ १६ ॥ सर्व गाथा ५५४ ॥ श्लोक तथा गाथा मली १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर राजाननो, गायक गीतरति नाम ॥ आव्यो जाणी सार्थपति, तेणें कस्यो प्रणाम ॥ १ ॥ गीत गाये उचे स्वरें, रीज्यो आपे दान ॥ तेहि एकांतें तेहने, नांखे शेठ अजाण ॥ २ ॥ जो मुज एक कारज करो, तो आपु बहु धन ॥ ते कहे कर जोडी अमें, करशु तुम्ह वचन ॥ ३ ॥ राय थगीधरने जइ, बोलावो करि बधु ॥ रूठे राजा तेहने, जेम थाये प्रतिबंध ॥ ४ ॥ वचन कबूल करी तिहा, पहोतो नृ पनी पास ॥ धनकूती सवि सपजे, सहुये धनना दास ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ कानुडो हवे वेण वजावे रे ॥ ए देशी ॥ गायक जइ दरबारें कन्ना, गावे गीत रसाल ॥ मादल ताल नफेरी नेरी, रमजम वीण विशाल ॥ गाय० ॥ १ ॥ गुण गावे सहुनें मन नावे, ठची लेई टेक ॥ राजन तुज विण कोइ अवरने, नवि जाचु सुविवेक ॥ गा० ॥ २ ॥ तूठो राजा धन मणि माणिक, आपे हर्ष धरीने ॥ ते नवि इछे पान अपावो, अमने महेर करीने ॥ गा० ॥ ३ ॥ कर ठचो करी पान अपावे, राजन रंग रसालो ॥ स हुको लोक कहे गायकने, राजा सबल वसीलो ॥ गा० ॥ ४ ॥ मत्स्योदर आव्यो जब पासें, रोई वलग्यो कंठें ॥ हा बंधव तु केम रिसाइ, जाये एम थइयें लठें ॥ गा० ॥५॥ घर एम केम चाले रीसाणे, सुख्य तुं जननी जाया ॥ तु मुज बीजी बाह नगीना, हवे नवि मेलु गाया ॥ गा० ॥ ६ ॥ एटला दिन अलगो तु रहियो, हवे में पुण्ये पायो ॥ चिरं जीव तु बंधव मोरा, आज अचिंत्यो आयो ॥ गा० ॥ ७ ॥ राजा आ

अनुनविया सुख दुःखना बहुल विपाक जो, ते कहेतां नावे रे किमही छेहडो रे लो ॥ हांरे हवे शुं नांखु तुऊ आगल हु राजान जो, पण संखेपें सांनल आणी नेहडो रे लो ॥ ३ ॥ हारे हु चढियो गर्थनें अर्थे प्रवहण माहि जो, नाग्यु रे नरदरिये वाहन वेगलु रे लो ॥ हांरे एक लाध्यु फलक फप लकमाहे आव्यो पार जो, मस्त्यें रे जपकर्वें महोटे मुऊ गल्यो रे लो ॥४॥ हांरे ते धीवर हणियो हु उगरियो आम जो, आणीने तुम आगल मुऊने रजू कस्यो रे लो॥हांरे ते निसुणी नूपति चिते चित्तमां आम जो,नावी रे जोरावर जगमांहे ठस्यो रे लो ॥ ५ ॥ हांरे हवे सोवननीरें नवरावी नरनाथ जो, नेहें रे निज पासें राख्यो तेहने रे लो ॥ हांरे तस सन्मानी मत्स्योदर दीधु नाम जो, चाहे रे सहु जिम आपाढें मेहने रे लो ॥ ६ ॥ हांरे तब राजा बोले ल्यो कोइ लायक काम जो, लीधु रे पद तेणें थगिधरनुं नलु रे लो ॥ हांरे जस तूठयो राय अपावे पान जो, तेहने एवु आपे कारिज कजलु रे लो ॥७॥ हारे एम दिवस गया केता इक नयर मकार जो, सान्नलजो हवे मूकी विकथा वातने रे लो ॥ हांरे हवे पहेलु प्रवहण जिहां बहु धन राशि जो, आव्या रे तिण बदर जोरे वायने रे लो ॥८॥ हारे तव छुटी नाल धडो धड थयो अवाज जो, जाण्युं रे पुरमां परदेशी आविया रे लो ॥ हांरें तब हरख्यो मनमां मत्स्योदर गुणवंत जो, आवे जो मुऊ वैरी तो अमें फाविया रे लो ॥ ए ॥ हांरे हवे लेइ उपायन साथें सबल परिवार जो, आव्यो रे दरबारें नृपति नेटवा रे लो ॥ हांरे सेवक विनवियो जइ नमियो नरनाथ जो, आव्यो रे तुम नयरें दुःखडुं मेटवा रे लो ॥ १० ॥ हांरे अवनीपति आप्यां बहुलां आदर मान जो, मत्स्योदर मन साथें निज कुल उंलख्यु रे लो ॥ हारे तिहां देखी धनद सुवन थयो सशंक जो, मुखडु रे फखाणु ते कुमरें उंलख्युं रे लो ॥ ११ ॥ हारे तिहां कणया आमण दूमण थइनें शेठ जो, रायें रे अपाव्युं बीडुं पाननु रे लो ॥ हांरे तिहां कुमर गयो आपेवा हाथो हाथ जो, जोइने उंगलियुं पासु माननु रे लो ॥ १२ ॥ हारे में नाख्यो कूपें दुःखरूपें जलपूर जो, आव्यो रे मुऊ आगल ए केम एकलो रें लो ॥ हांरे नाइ जो जो नारी कर्म तणो ए नोग जो, हाथे रे नवि हणियो हु थयो ए अकलो रे लो ॥ १३ ॥ हारे ते आव्यो नासी पुरवासीनी पास जो, पूछे रे

एकविशमी ढालें, हरख्यो नृप मनमांय ॥ बीजे खमें रामविजय कहे, जूठे सिद्धि न थाय ॥गा०॥१५॥ सर्व गाथा ॥५७४॥ श्लोक तथा गाथा १४

॥ दोहा ॥

॥ मातंगगृहथी मगाविया, संघाटक नृप चार ॥ द्विधा कराव्या नींतरें, धनदनाम सुविचार ॥१॥ रोपें चढयो राजा कहे, सेवकने तेणि वार ॥ वधनूमें लेइ जाइने, करो बेहुने गार ॥ २ ॥ रूपावत कुमर वडो, लागी नृपने पाय ॥ ठोडाव्या ते जीवता, उत्तम नीच न थाय ॥ ३ ॥ यडुक्त ॥ न नवति नवति च न वर, नवति चिर चेत्फलं विसवदति ॥ कोप सत्पुरुषाणा, तुल्य स्नेहेन नीचानाम् ॥ १ ॥ अंब न होवे लींवडे, लींवें न होय अब ॥ सज्जन ते डुर्जन नोहे, जो धरती होय आज ॥ ४ ॥ सज्जन ऐसा कीजियें, जेसा पाणी कोश ॥ पगहूंती जो ठेलीयें, तोही नाणे रोष ॥ ५ ॥ सज्जन जाई मनावियें, जो रूसे सो वार ॥ सज्जननो एक क्षण नलो, मूरखनो जमवार ॥ ६ ॥ जो रूठे गुणवतने, तोहे जे डुःख मोट ॥ एक न देजे देव तु, डुर्जन सार्थे गोठ ॥ ७ ॥ सगति कीजें सज्जनां, जेहथी नांजे नीड ॥ उठी सगति नीचकी, नवी कपाई पीड ॥ ८ ॥ वाह वाह सहुको करे, महोटो ए गुणवत ॥ अवगुण उपर गुण करे, तेहज कहियें सत ॥ ए ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ देशी मृगानयणीना गीतनी ॥ ए वणिकने काठो कीधो राज, धन माल छलाजीने लीधो राज ॥ नवि पुण्य तणा फल जोजो ॥ माल सोंप्यो धनदने हाथे राज, मनाव्यो ते नरनाथें राज ॥ न० ॥ १ ॥ पूर्वें हतु घणुं मान राज, वली वाध्युं वहु सन्मान राज ॥न०॥ जग उखाणो कहेवाये राज, गुण केडें पूजा थाये राज ॥न०॥२॥ कहे राजन वात प्रकासो राज, मांमो मुऊथुं सोहाशो राज ॥ न० ॥ कहे कुमर सुणो नूमीश राज, नांखुं मुऊ चरित जगीश राज ॥ न० ॥ ३ ॥ हुं तुम नयरनो वासी राज, रत्नसारनो सुत सुविलासी राज ॥ न० ॥ नामें हुं धनद कुमार राज, बहु मात पितानो प्यार राज ॥ न० ॥ ४ ॥ एकदिन एक गाथा लीधी राज, देइ सहस दीनार में लीधी राज ॥ न० ॥ मुऊ तातें दीधी गाल राज, काढयो घरथी ततकाल राज ॥ न० ॥ ५ ॥ तेथी चाल्यो परदेश राज, वींध्यो आर्घे पगदेश राज ॥ न० ॥ नारंमें उपाडी मूक्यो राज, सोवन द्वीपें जइ

गलसड्ढ मन विस्मय, पामीने एम बोले ॥ फट मूरख तें सबल विटम्बा, नहिं कोय तारे तोलें ॥ गा० ॥ ८ ॥ रे रे छु साचु ए नांखे, के वली थवा कूडुं ॥ मत्स्योदर कहे सुणो माहाराजा, ए सवि नांखे रूडुं ॥ गा० ॥ ए ॥ जो जो हवे बुद्धें करी उत्तर, कहेवो कुंवर वाले ॥ बजपें बुद्धि कही बलवती, जे उपजे तत्कालें ॥ गा० ॥ १० ॥ राजन एह नव रमां अमचो, जनक पिता मातंग ॥ प्रज्ञु आगल नित्य गुण गावाने, आवतो मन रंग ॥ गा० ॥ ११ ॥ तेहने घेर दोय दयिता रूडी, ते बेहुना अमें जाया ॥ अण मानीती मुज माता तेणें, मुज वाणी न सुहाया ॥ गा० ॥ १२ ॥ एहनी माता हूती वहाली, ए पण वह्लन्न गाढो ॥ एक दिन जनकनें करुणा आवी, बोल दियो मुज टाढो ॥ गा० ॥ १३ ॥ पंच रयण लेइ मुज जघामां, जनकें क्षेप्यां जाणी ॥ वत्स विषम वेलायें ए तुं, काढे मन हित आणी ॥ गा० ॥ १४ ॥ राजन् सघले अवयव एहने, रयण अमूलक क्षेपी ॥ बेहु सुत पासें प्रीति पटत्तर, कीधो सुमतिने रोपी ॥ गा० ॥१५॥ जो नवि मानो तो मुज परगट, जोवो नयण निहाली ॥ जंघा छेदी पंच रयण ते, देखाड्या सत्नाली ॥ गा० ॥ १६ ॥ रायतणे मन वात वसी ए, सेवकनें कहे जालो ॥ अग विदारी रयण लेइने, सघलां मुज देखाडो ॥ गा० ॥ १७ ॥ गीतरति जाण्यु गति बिगडी, मलियो ए मा थानो ॥ में जाण्यु छेतरशुं एहने, न रह्यो हुन ए छानो ॥ गा० ॥ १८ ॥ धसिया सेवक तस जालेवा, ते कहे मुजने मूको ॥ धन कारण में कूड कर्यु ए, स्वामी सबल हु चूक्यो ॥ गा० ॥ १ए॥ शेठ सुदत्त अछे परदेशी, तेणें ए वात करावी ॥ सोवन इट समर्पी मुजनें, लोन्नें घणु ललचावी ॥ गा० ॥ २० ॥ राय मत्स्योदर साहामु जोई, पूछे वात ए साची ॥ ते बोल्यो सुण तु राजेश्वर, ए पण कांहिं न काची ॥ गा० ॥ २१ ॥ अन्नय वातनो मेल मले किम, कहे मुज आगल साचु ॥ मुज मननो ए संशय वारो, साचे मारग राचुं ॥ गा० ॥ २२ ॥ सुण राजेश्वर ए वहाणमां, अष्ट सहस्स प्रमाण ॥ सोवन सघाटक छे माहारा, तेहमां नहि विनाण ॥ गा० ॥ २३ ॥ रयण अछे वली तेहथी दूणा, एक सहस्त्रें कणां ॥ ते सघाटक मुज नामांकित, ए साचा सवि वयणा ॥ गा० ॥ २४ ॥ वात सुणी

नहिं एहने नरक विण ठोर राज ॥ न० ॥ २० ॥ सुणि मन लजवाणो राणो राज, वोले बहु रोप नराणो राज ॥ न० ॥ तुऊ आशय लेवा माटें राज, हुं वोल्यो वोल ए घाटे राज ॥ न० ॥ २१ ॥ कुण ए तुऊ एहवु नाखे राज, मुऊ आगें कहो सहु साखे राज ॥ न० ॥ कहे सुंदरी सुणो सहु कोई राज, ए जेहवो नीच न कोई राज ॥ न० ॥ २२ ॥ नवि एहनु मुख जोईजें राज, परडोही दूर करीजे राज ॥ न० ॥ नरदरिये मुऊ पति नाख्यो राज, में जिम तिम आपो राख्यो राज ॥ न० ॥ २३ ॥ कहे जगमां केम रहेवाय राज, एम मफाणो अन्याय राज ॥ न० ॥ ते माटे मुऊ मूकावो राज, एहने रूडे समजावो राज ॥ न० ॥ २४ ॥ एम निसुणी रहिया केई राज, दश अंगुल मुहमां देई राज ॥ न० ॥ जुउ साहुकार कहाई राज, करें एहवी कर्मकमाई राज ॥ न० ॥ २५ ॥ एम वीजे खमें गाई राज, ढाल बावीशमी सुखदायी राज ॥ न० ॥ कहे राम करो कोइ वातु राज, पण कीधू न रहे ठानु राज ॥न०॥२६॥स०॥६१ए॥

॥ दोहा ॥

॥ तिलकसुदरी नृपनें, नांखे वे कर जोडि ॥ नृप आदेशें ताहरु, कथन करिश मन कोड ॥ १ ॥ एहवु में नाख्यु हतु, राखण शील रतन्न ॥ ते में महारु जालव्यु, सूधू करी जतन्न ॥ २ ॥ ते माटें करवो हवे, अनल शरण मुऊ देह ॥ छु वालम विण जीववू, शो धन ऊपर नेह ॥ ३ ॥ कहे नृपति मरवा तणु, साहस म कर सुजाण ॥ परख्यो प्रीतम तुऊ तणी, देखाडुं इण ठाण ॥ ४ ॥ वलतु वोले सा सती, तुमें पृथिवी प्रतिपाल ॥ लव परें हसतां हुता, नवि शोनो परवाल ॥ ५ ॥ राजन कहे हसवु किस्युं, तु मुऊ वेटी तुल्य ॥ पण देखाडु तुऊने, इहां निज कथ अमुल्य ॥ ६ ॥ किहांथी ते मुऊ वल्लहो, जे नाख्यो जलधिमऊार ॥ अनुमति द्यो मुऊ अनलनी, करुं प्रवेश निर्धार ॥ ७ ॥ राजहुकमथी कहियो, वीडां देवा काज ॥ सुंदरी नजरें निरखजे, ए तहारो नर्त्तार ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ करहलडानी देशी ॥ तिलकसुदरी निरखीनें, निरखीने मनमांहे एम विमासे ॥ हो राज ॥ ए प्रीतम होवे माहरो, माहरो पण इहा आव्यो होशे केम तमासे ॥ हो राज ॥ १ ॥ धनद कहे स्वामी एहनो, एहनो

ढूक्यो राज ॥ न० ॥ ६ ॥ तिहां कंचन रयण निपायुं राज, तेणें शेठनुं चित्त ललचायु राज ॥ न० ॥ नाख्यो मुने कूप मझारी राज, परण्यो तिहां राजकुमारी राज ॥ न० ॥ ७ ॥ नाखीने ए वलियो राज, देवदत्त आवी ने मलियो राज ॥न०॥ कूपमांहेथी मुझने काढयो राज, नरदरिये वरत एणें वाढयो राज ॥ न० ॥ ८ ॥ पडतां महोटे मत्स्यें गलियो राज, इहां आव्यो मनोरथ फलियो राज ॥न०॥ तिलकसुंदरी महारी राज, देवदत्ते राखी प्यारी राज ॥ न० ॥ ए ॥ नाग्ययोगें जो इहां आवे राज, तो माहरो जोरो फावे राज ॥ न० ॥ सुण स्वामी गुणमणिखाणी राज, में नांखी कर्म कहाणी राज ॥ न० ॥ १० ॥ सुणी राजा विस्मय पाम्यो राज, सब जो तुझ पुण्य सहायो राज ॥ न० ॥ रहे नृपगेहें वडनागी राज, हवे पुण्यदशा घन जागी राज ॥ न० ॥ ११ ॥ तिहां देवदत्त सार्थवाहो राज ॥ मलवा आव्यो सोत्साहो राज ॥ न० ॥ मल्यो नृपने रंगें आवी राज ॥ केम टाल्युं टले जे नावी राज ॥ न० ॥ १२ ॥ उंलखियो धनद कुमारें राज, रह्यो गनो गुप्ताकारें राज ॥ न० ॥ नृप पूछे कुशल सवाया राज, कुण देशथी शेठजी आया राज ॥ न० ॥ १३ ॥ वली सार्थे ए कुण नारी राज, किम वेंढारो गुण सारी राज ॥ न० ॥ कहे शेठ कटाहथी आव्यो राज, व्यापारें बहु धन पायो राज ॥ न० ॥ १४ ॥ वलतां जलनिधिमा पाई राज, एकाकी ए चित्त सुहाई राज ॥ न० ॥ करि वस्त्राजरण विजूषा राज, हुं लाव्यो इहां निर्दोषा राज ॥ न० ॥ १५ ॥ हवे तुम अनुमति आज राज, होशे मुझ घरणी माहाराज राज ॥ न० ॥ लेइ तुम आणा कृत्य कीजें राज, तो सहुमां सुयश वरीजें राज ॥ न० ॥ १६ ॥ निसुणी नृप चित्त विचारे राज, शी वात कही धूतारे राज ॥ न० ॥ कहे नृप जो तुझनें ए चाहे राज ॥ तो करो कारज उत्साहें राज ॥ न० ॥ १७ ॥ कहे तिलकसुदरी स्वामी राज, नृपतिनें महोटी खामी राज ॥ न० ॥ पररमणी परने हाथे राज, किम दीजें अनाथना नाथें राज ॥ न० ॥ १८ ॥ ए करणी जगमा नूंमी राज, परनारी नरकनी कूमी राज ॥ न० ॥ केम आगल रहीने अपावो राज, शुं छे तुम नरकें जावो राज ॥ न० ॥ १९ ॥ करे पाप करावे जेह राज, अनुमोदे त्रीजो तेह राज ॥ न० ॥ ए त्रणे कह्या गुणचोर राज,

पामी ॥ हो० ॥ रामविजय कहे पुण्यथी, पुण्यथी सुखमांहे न रहे कांइ खामी ॥ हो० ॥१४॥ सर्व गाथा ॥६४१॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नसारने मंदिरें, आव्यो कुमर सुजाण ॥ राज्यमान जाणी करी, शेठ दिये बहु मान ॥ १ ॥ मांम्युं आसन बेसवा, आगत स्वागत कीध ॥ तुम आवे आ दिवसमां, सबलो लाहो लीध ॥ २ ॥ धन्य हुउं हुं धन्यमां, तुम आवे माहाराज ॥ प्रगट्या पूरव नवतणां, पुण्य अमारां आज ॥३॥ चिंते मन कारण किस्युं, अगण आव्यो एह ॥ केम समाये बाघलो, मुज मोकरनें गेह ॥ ४ ॥ शेठ कहे फरमावियें, जे मुज लायक काम ॥ कुमर कहे तुम तातजी, केम दुर्बल तनु आम ॥ ५ ॥ नीशासो नाखी कहे, शेठ सबल दिलगीर ॥ अगज अमें रिसावियो, गयो विदेशें वीर ॥ ६ ॥ तुम दीठे ते सांभख्यो, अम जीवित आधार ॥ एम कहि रुदन करे घणुं, नयण न खेंचे धार ॥ ७ ॥ कारण मांमीनें कह्यु, धुरिहूती समजाय ॥ जाणु तुमें तेहज सही, पण में केम कहेवाय ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ आवो आवो रे शामलीया कांइ चालो ॥ ए देशी ॥ रहो रहो रे पिताजी काइ रहो, ते हु तुम अंगज जन्म्यो ॥ तुम शीख न मानी में नि गुणें, एम कहीनें पाय पड्यो सुगुणें ॥१॥ आवो आवो रे सुतजी नानकडा, ॥ ए आंकणी ॥ तुम पाखे सहियां बहु दुखडां ॥ एम कहीने पुत्र पिता म लीया, बहु दिवस तणा विरहा टलिया ॥ आ० ॥ २ ॥ जइ जननीने हेजें मलियो, कहे आज मनोरथ तरु फलियो ॥ में नयणें दीठी मुज माडी, मोरी आख कमल जिम उघाडी ॥ आ० ॥ ३ ॥ जननी पगे लाग्यो सोभागी, कहे मा मुज आज दशा जागी ॥ घणे दिवसें तुम दर्शन पायो, मह्यारो आज दिवस लेखे आयो ॥ आ० ॥ ४ ॥ बेसारे खोले सुतने, न्हवरावे आसु जल हेतनें ॥ मायडी मन नेहें घणु भीनु, मुख निरखे फरि फरि सुत जीनु ॥ आ० ॥ ५ ॥ वत्स वात कहो तुमची सखरी, अम दुखडां दूर गयां विसरी ॥ तिहा संक्षेपें सवि वात कही, सुत सहासु मायडी जोइ रही ॥ आ० ॥ ६ ॥ करो विनति नृप पासें जाउ, मुज सवधूने तेडी लावो ॥ जइ राज दुवारें अरज करी, सुत तेडी लावे हर्ष धरी ॥ आ०

स्वामी दोशे जेह शूने मदिर आव्यो ॥ हो० ॥ निज वीतकनी वात डी, वातडली निज केरी कहिनें जेस समजाव्यो ॥ हो० ॥ २ ॥ सह वियो एणें जेहनें, जेहनें एणें शान करी मदिरमांहे राख्यो ॥ हो० ॥ जेणें बलीये राक्षस नणी, राक्षसनें रंजाडी हणीने दूरें नाख्यो ॥ हो० ॥ ३ ॥ परणी जेणें ए पद्मिनी, पद्मिनीने परणीनें रगें वातो कीधी ॥ हो० ॥ इत्यादिक अतरगनी, सहिनाणी सघली साची दीधी ॥ हो० ॥ ४ ॥ मन विकस्यु तन उल्लस्यु, उल्लसियां अतरना कूपल हेडे ह रखी ॥ हो० ॥ दुःख दोहग दूरें गयां, दूरें गयां सवि दुःखडां जोवे निरखी निरखी॥ हो० ॥ ५ ॥ नृप आदेशें कन्नी रही, कन्नी रही जइ जोहें प्रेमदा गुणनी खाणी ॥ हो० ॥ धन धन दपती जोडली, जोडी ए घणु जीवो सुं दर रूप समाणी ॥ हो० ॥ ६ ॥ राज हुकम हुउं एहवो, एहवो जेणें कीधुं तेहनें तुरत खपाडो ॥ हो० ॥ उपकारी नर आवियो, आव्यो ते छजाई हणता वचमा आडो ॥ हो० ॥ ७ ॥ धन धन तेहनी माडली, माडलीयें जेणें जायो नरमा रयण समाणो ॥ हो० ॥ अपराधी छोडा वियो, छोडाव्यो जनमांहे सघले सहेर गवाणो ॥ हो० ॥ ८ ॥ सज्जन अतिहि दूहव्यो, दूहव्यो पण नाणे हियडे रूश केवारें ॥ हो० ॥ छेद्यो नेद्यो वशनें, वशनो स्वर मीठो बोले वाशु जेवारें ॥ हो० ॥ ए ॥ अगर अग्निमां खेपियो, खेप्यो पण छन्नगधें सहुकोनें सतोषे॥ हो० ॥ चदन जो घसीयें घणु, घणुये तो पण सहेजें शीतलतानें पोषे ॥ हो० ॥ १० ॥ वस्तु लिये सहु आपणी, आपणली केम होवे जे परनी लीध उधारी ॥ हो० ॥ सहु कहे धर्में जय हुवे, जय हुवे परयुवती मुख न जोबे न्याली ॥ हो० ॥ ११ ॥ हु बलिहारी तेहने, तेह तणी परतरुणी परधनथी जे न्यारा ॥ हो० ॥ ते सज्जन मन माहरे, महारा ते मनमांहे लागे अतिहि प्यारा ॥ हो० ॥ १२ ॥ यत ॥ परदारपरद्रव्य, परद्रोहपराङ्मुख ॥ गगाऽप्याह कदाप्येष, मामहो पावयिष्यति ॥ १ ॥ य परवादे मूक , परनारीवक्रवीक्ष णेऽप्यंध ॥ पंगु परधनहरणे, स जयति लोके महापुरुष ॥ २ ॥ रहे नृपदत्त आवासमा, आवासें बेय रहेता एक दिवस बहु नेहें ॥ हो० ॥ आण लही नरवर तणी, नरवरना सेवकछु आवे जनकनें गेहें ॥ हो० ॥ ॥ १३ ॥ वीजे खमें त्रेवीशमी, त्रेवीशमी ए ढालें धन रमणी सवि

आव्यो नरवरु, सुख विलसे धरि जेम सुरवरु ॥ आ० ॥ २३ ॥ हवे मत्स्योदर विलसे नोगा, निजनारीशु लहि शुन योगा ॥ दीये दीन दुखी नें अनुकपा, शुनरीतें विचरे नि कपा ॥ आ० ॥ २४ ॥ ढाल बीजे खंडे चोवीशमी, कहे रामविजय साकर समी ॥ शुन्न उदय यदा आवी मले, तव एणी परें सवि चिंतित फले ॥आ०॥२५॥ सर्वगाथा ॥६७४॥ श्लोक॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ राजकुमर यौवन लह्यु, सकल कलानो जाण ॥ मत्स्योदरसाथें घणो, राखे नेह सुजाण ॥ १ ॥ जाणे एणे जीवित दियु, उपकारी शिरताज ॥ मत्स्योदर आवे यदा, तव आधुं चाले काम ॥ २ ॥ एक दिन रयवाडी चढथो, गज बेसी नृपनद ॥ पुरमांहे एक धवल गृह, दीठुं नयनानंद ॥ ३ ॥ शूरराजनी पुत्रिका, श्रीपेणा इति नाम ॥ कुमरें दीठी क्रीडती, सौ धगवाहे ताम ॥ ४ ॥ रूपें रति दासी करी, चचल गति सुकुमार ॥ मृगनयणी मनमोहनी, फूली सुरतरु माल ॥ ५ ॥ गति नूली ग्यो कुमरजी, सुरति रहि न लगार ॥ मन वेध्युं मन्मथ सुनट, नयणबाण सविकार ॥ ६ ॥ गौरंगी ते गोरडी, कालेजानी कोर ॥ कोरीनें पेठी वचें, जुलम करे ते जोर ॥ ७ ॥ मन विण जइ पाछो वल्यो, वनहूती नृपजात ॥ घर आव्यो पण कोइनो, न गमे तस सघात ॥८॥ कुमरीना मनमा नहिं, ते ऊपर लवलेश ॥ पण ते मूरख एकलो, रागें सहे कलेश ॥ ए ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

॥ महेतोजी खणावे वावडी ॥ ए देशी ॥ लहि मित्रमुखे ते वातडी, नृपति मत्री बोलावे रे ॥ शूर समीपें मोकल्यो, जइ वात सवे समजावे रे ॥ १ ॥ जगत मोह्यो विपयनी वासना ॥ ए आंकणी ॥ सवि जीव विपयना दासो रे ॥ सुर नर पण करे अहोनिश, मनमांहे विपयनी आशो रे ॥ ज० ॥ २ ॥ शूर कहे सवे स्वामीनुं, तुमें ए आवी शु दाख्युं रे ॥ राज हुकम शिर ऊपरें, अमें वयण तुमारुं राख्यु रे ॥ ज०॥ ३ ॥ कहे कुमरी जो तुमें आपशो, तो पलकमा प्राणने काढी रे ॥ नाखीश पण हु नहि वरु, ए राजकुमर एम त्राडी रे ॥ज०॥ ४ ॥ मत्रीनें मनमाहे ऊपन्यो, ए वात सुणीने विपावो रे ॥ कुमरी तो इछे नहि, छउ राजकुमर उन्मादी रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मत्री कहे माहाराजनें, नहिं ते कन्यानो रागो रे ॥ वयण सुण्युं

॥७॥गजवरनें खंधें वेसारी, नृप साथें कीधी असवारी ॥ बहु लोक सकल मलियो जोवा, वलगाहि वत्स न रहे दोवा॥ आ० ॥ ८ ॥ कोइ कामिनी पिरसती धाई, उमते अवर ऊजाइ ॥ परवाल चढावीनें केडें, कोइ कामिनी जोवाने हींमे ॥ आ० ॥ ए ॥ एक आवे फूठे हाथे धसी, ऊनातां उंढण जाय खसी ॥ एक आवे उमती कवरी, मनु मुखकज उपर ए भमरी ॥ १० ॥ एक अलते रजीते करणा, पहेरे साडी उंठे चरणा ॥ एक कुंकुम बिंदी दे गालें, काजलनो विंडु दिये जालें ॥ आ० ॥ ११ ॥ रहि रजसपणे पियुनी जोडें, कर ऊचा करी आलस मोडे ॥ एक सुंदरी सामुं देज धरी, मत्स्योदरने जोवे फरीय फरी ॥ आ० ॥ १२ ॥ तिहां मलिया बहु माणसवृंदा, वाजे वाजींतर नवनव ठदां ॥ शेठ महाजन आगें रंग जरिया, अगें पहेस्या वाघा केसरीया ॥ आ० ॥ १३ ॥ सहु बोले मुख जय जय वाणी, धन धनदकुमर ए धणियाणी ॥ धन्य जननी जेणें कुंवर जायो, कुल अंबर ए दिनमणि आयो ॥ आ० ॥ १४ ॥ एम आर्मबरें निज घर आया, सहु साजन जन मनमें जाया ॥ बहु साथें नृपति रंग रली, मदिरमांहे बेग सुजन मली ॥ आ० ॥ १५ ॥ करे सेवा शेठ नरेश्वरनी, मुज करुणा थइ परमेश्वरनी ॥ मुज अगण जे नृपति आयो, जरि मोती थाल ए वधायो ॥ आ० ॥ १६ ॥ एहवे आव्यो मालाकार, नृप आगल फूल धर्यां सार ॥ उत्संगें राजकुमर बेगे, लिये फूल करी निज कर हेगे ॥ आ० ॥ १७ ॥ जब नाकें वास लिये सारी, तव कुंवर कह्यो पोकारी ॥ जुउ जुउ रे सेवक थइ वहेला, ए फूलमांहे ठे शी रे घला ॥ आ० ॥ १८ ॥ तब जोवे सूक्ष्म नजरें करी, मांहे देखे इयल अति निरखरी ॥ ए राजसर्प सहु एम बोले, एहनु विष नहिं कोइने तोलें ॥ आ० ॥ १ए ॥ इणे दीसे राजकुमर मश्यो, नृप मनमांहे डुःख जोरें वस्यो ॥ धाउ धाउ रे तेडो गारूडी, एम बोल्यो राजा आरडी ॥ आ० ॥ २० ॥ कहे गारुडी ए अमथी न वले, ए मश्यो कुंवर अहि सबले ॥ जोता ततक्षण मूर्छा आवी, न टले जे टाल्यु कोइ जावी ॥ आ० ॥ २१ ॥ कहे धनद करो तुमें शी चिंता, महाराज रहो थइ निर्भिंता ॥ तिहां गटघु देविदत्त मणि नीर, तव ऊठ्यो कुंवर वड वीर ॥ आ० ॥२२॥ राय कीधी हर्षे वधामणी, वधी प्रीति मत्स्योदरसु घणी ॥ निजमंदिर

ते ढे काम, रीति माहाकष्टकी ॥ ६ ॥ सकट विषम सम राज, हूती पथ जाणीयें ॥ त्रिक तजवा एक पथ, माहे मन आणीयें ॥ पर विनता विधवा निज, गणिका नारिथी ॥ पथ होवे धन्य तेह जे, विरम्या चा रथी ॥ ७ ॥ सात व्यसनमा दोय, कह्यां ढे नारिनां ॥ ग्रथमाहे वली चार, नरकना बारणा ॥ तेमाहे पण त्रीजू, एह कह्यु सही ॥ एम जोतां ए वातनी सघले ना कही ॥ ८ ॥ धनद कहे सुण कुमर, कनकप्रन्न नृपना ॥ मूकी द्यो हव एह, घटे नहि रूपना ॥ राम कहे नवि शीख, सुणीयें इकमना ॥ मूको विषयनी टेव, जिहां अवगुण घणा ॥ ए ॥ इति शीखामणकुकडी ॥ पूर्वढाल ॥ कहे राजकुमर उत्तर हवे, सुणो मत्स्योदर मन राखी रे ॥ दोष नहि ए वातमा, जे परणीजें सहु साखी रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ वहेला थइ हवे मुजनें, परणावो ए कनी सारी रे ॥ वारं वार शु दाखवु, तुमें महोटा ढो उपकारी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ मति आरत जाणी तेहनी, मणिसमरणथी ततकाल रे ॥ चित्त फल्यु कुमरी तणु, वरवानें थइ उजमाल रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ तव शूर कहे नृप आगलें, तुम सुत ऊपर रजियातो रे ॥ स्वामी सुता थइ माहरी, सुणि हरख्यो साते धातो रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ लग्न लेइ ऊतावला, विवाह कस्यो मनरगें रे ॥ धन बहुलुं रायें तिहां, खरच्यु मन धरिउढरगें रे ॥ ज० ॥ ॥ १ए ॥ कहे धनद कुमरनें राजवी, तुमें उपकारी शिरताजो रे ॥ जी वित आप्यु पुत्रनें, साथ्या अम वाढित काजो रे ॥ ज० ॥ २० ॥ बीजे खमें पचवीशमी, ए ढाल कही मुनि रामें रे ॥ सज्जन ते जगमा सही, जे अवसर आवे कामें रे ॥ ज० ॥२१॥ सर्वगाथा ॥७१३॥ श्लोक ॥२०॥

॥ दोहा ॥

एक दिवस नृपनें शिरें, शूलव्यथा अति जोर ॥ थइ आवी तेणें अति घणो, करे महीपति सोर ॥ १ ॥ रोग निवारण मणिथकी, धनदें कस्यो करार ॥ नृप मान्यो सुतथी अधिक, जाणी तस उपकार ॥ २ ॥ इण अवसर तिण नयर वन, शीलधर अनिधान ॥ मुनिवर आवी समो सस्था, वात सुणी राजान ॥ ३ ॥ बहु परिवारें वादवा, आवे धनद स मेत ॥ वादीनें बेवा सवे, मुनि कहे सकेत ॥ ४ ॥

में एहवु, जेहथी उपजे वैरागो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ राय कहे नृपनी कनी, परणावु अपर सुकुमारी रे ॥ सु नीमोही ऊपरें, मोही रह्यो अंग निहाली रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ कुमर न माने वातडी, कामिनीयें कामण कीधु रे ॥ मांहे पेशी माहरुं, एणें तन मन चोरी लीधु रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ विण प रणे अन्न न वावरु, पालव साह्या विण पाणी रे ॥ पीवू नहिं पण में कह्युं, नहि ऊपर बोलो वाणी रे ॥ज०॥ ए ॥ जुउ वात सबल वांधे पडी, बेहु पासें हठीलां एह रे ॥ पासें रही पीलाइयें, सुण मत्रीश्वर गुणगेह रे ॥ ज० ॥ १० ॥ कन्या नवि माने बापनु, मुज कहण न माने पुत्र रे ॥ एम हठ लीधे आकरे, केम मसाशे घरसूत्र रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ एहवे म त्स्योदर आवियो, कहे स्वामी सचिता दीसो रे ॥ शे कारण मुज आगलें, प्रकासो ते अवनीशो रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ समजावो जइ तुम मित्रनें, हठीयें हठ लीधो गाढो रे ॥ शीखामण देई करी, एहनी खटक हैयेथी काढो रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ धनद कहे सुणो मित्रजी, स्यो एकपखो ए नेह रे ॥ ए चचल तरुणी कारणें, काइ सबल दझाडो देह रे ॥ ज० ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ नदी यमुनाके तीर, उमे दोइ पंखीयां ॥ ए देशी ॥ सांजल मित्र कहु, तुज आगल वीनती ॥ रखे मन राखो राग, रमणीनो एक रति ॥ ए रमणी रमणीय, वेखाडी जातिनें ॥ चोरी ले चित्तमाल, लजावे जा तिनें ॥ १ ॥ नाखे मुख नि श्वास, न आवे निइडी ॥ उलस वालस थाय, के ऊक नहिं एक घडी ॥ मन्न रहे मलवानें, रात्रि दिवस रडी ॥ उघमांहे तस ध्याने, कठे आरडी ॥ २ ॥ पामे अवस्था कंप, अने श्रम स्वेदनी ॥ मूर्छा ग्लानि बलक्षय, लघुता मेदनी ॥ अवगुण एम अनेक, देखीता ऊपजे ॥ ते तरुणीनी संगतें, गुण स्यो नीपजे ॥ ३ ॥ जण जण सेंती प्रीति, न कीजें प्रेमनी ॥ निखर कसोटी एह के, आतम हेमनी ॥ दा दशमो गयासुत, वेगे तेहनें ॥ पररमणीनी लालच, लागी जेहने ॥ ४ ॥ नावे तस विश्वास, न ईजत खलकमें ॥ परियागतनु पाणी, उतारे पलकमें ॥ रात्रि दिवस गलियोमा, हींमो हेरतो ॥ हियडामां डुर्ध्याननी, माला फेरतो ॥ ५ ॥ राती देखावे रग ज्यु, कणयरनी कली ॥ विफरी करे विपरीत, के वाघण ज्युं थली ॥ व्याधि महानिर्नाम के, मदिरा दृष्टिकी ॥ तेहवु

ते ठे काम, रीति माह्राकष्टकी ॥ ६ ॥ सकट विषम सम राज, दूती पथ जाणीयें ॥ त्रिक तजवा एक पथ, मांहे मन आणीयें ॥ पर विनता विधवा निज, गणिका नारिथी ॥ पथ होवे धन्य तेह जे, विरम्या चा रथी ॥ ७ ॥ सात व्यसनमा दोय, कह्यां ठे नारिनां ॥ अथमाहे वली चार, नरकना वारणा ॥ तेमाहे पण बीजूं, एह कह्यु सही ॥ एम जोतां ए वातनी सघले ना कही ॥ ८ ॥ धनद कहे सुण कुमर, कनकप्रन्न नृपना ॥ मूकी द्यो हव एह, घटे नहिं रूपना ॥ राम कहे नवि शीख, सुणीयें इकमना ॥ मूको विषयनी टेव, जिहां अवगुण घणा ॥ ए ॥ इति शीखामणऊकडी ॥ पूर्वढाल ॥ कहे राजकुमर उत्तर हवे, सुणो मत्स्योदर मन राखी रे ॥ दोष नहि ए वातमा, जे परणीजें सहु साखी रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ वहेला थइ हवे मुऊनें, परणावो ए कनी सारी रे ॥ वार वार शु दाखवु, तुमें मह्रोटा ठो उपकारी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ मति आरत जाणी तेहनी, मणिसमरणथी ततकाल रे ॥ चित्त फस्यु कुमरी तणु, वरवानें थइ उजमाल रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ तव शूर कहे नृप आगलें, तुम सुत ऊपर रलियातो रे ॥ स्वामी सुता थइ माहरी, सुणि हरख्यो साते धातो रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ लग्न लेइ उतावला, विवाह कस्यो मनरंगें रे ॥ धन बहुलुं रायें तिहां, खरच्यु मन धरिउठरंगें रे ॥ ज० ॥ ॥ १ए ॥ कहे धनद कुमरनें राजवी, तुमें उपकारी शिरताजो रे ॥ जी वित आप्यु पुत्रनें, साख्या अम वांछित काजो रे ॥ ज० ॥ २० ॥ बीजे खमें पचवीशमी, ए ढाल कही मुनि रामें रे ॥ सज्जन ते जगमा सही, जे अवसर आवे कामें रे ॥ ज० ॥२१॥ सर्वगाथा ॥७१३॥ श्लोक ॥२०॥

॥ दोहा ॥

एक दिवस नृपनें शिरें, शूलव्यथा अति जोर ॥ थइ आवी तेणें अति घणो, करे महीपति सोर ॥ १ ॥ रोग निवारण मणिथकी, धनदें कस्यो करार ॥ नृप मान्यो सुतथी अधिक, जाणी तस उपकार ॥ २ ॥ इण अवसर तिण नयर वन, शीलधर अभिधान ॥ मुनिवर आवी समो सस्था, वात सुणी राजान ॥ ३ ॥ बहु परिवारें वांदवा, आवे धनद स मेत ॥ वांदीनें बेठा सवे, मुनि कहे सकेत ॥ ४ ॥

॥ ढाल ढवीशमी ॥

॥ आज सखि शामलीयो ॥ ए देशी ॥ अथवा ॥ राग मारु ॥ कहे मुनि वरजी हितकारी, तुमें धर्म करो नर नारी ॥ एतो प्रवहणनी परें तारे, नवसायर पार उतारे ॥ १ ॥ एहनी वाहे वलग्या जेह, सुख साधि अनंत लह्या तेह ॥ जे ए सुखमां रह्या माता, ते नरने वेहु नवें साता ॥ २ ॥ सागार अने अणागार, विहु नेदें कह्यो निर्धार ॥ कारण शिव पदना होय, परं पर अनंतर जोय ॥ ३ ॥ मन साथें कलंक लगावे, तो डुःख मिश्रित सुख पावे ॥ मदणाक परें ते माटें, नि कलंक करो सुख साटें ॥ ४ ॥ कहो स्वामी कवण मदणाक, तुमें नाखो अनोपम वाक ॥ गुरु कहे नरतें शुन गम, एक रत्नपुराभिध गाम ॥ ५ ॥ नि वसे शुनदत्त व्यवहारी, तस नारी वसुधरा सारी ॥ तस कूख सरोवरें जायो, मदणाभिध पुत्र सुहायो ॥ ६ ॥ ते आव्यो यौवन रंगें, परण्यो रमणी सुख संगें ॥ रहे नामिनीशुं नित्य नीनो, जाये यौवन पूर नदीनो ॥ ७ ॥ एक दिन रयनी असवारी, पहोतो उद्यान मकारि ॥ तिहां रंग रसें सहु रमिया, मन्मथ वेलीनें जमीया ॥८॥ फरी चाल्या वन जोवानें, मुनि कनो दीठो ध्यानें ॥ रह्यो चंपक तरुनी ढाया, मुनि कंचन वरणी काया ॥ ए ॥ प्रनुशुं एक तान लगाया, नहिं मन ममता ने माया ॥ मन आनंद अधिको पाया, वंद्या मुनिवरना पाया ॥ १० ॥ मुनि ध्यान संपूरण कीधो, उपदेश यथोचित दीधो ॥ शुद्ध देव धर्म गुरु तत्त्व, समकित मा रग ए सत्य ॥ ११ ॥ समकित सुरवृक्ष अमूल, वैमानिक सुख जस फूल ॥ शिवपद फल आपे साचो, समकित गुणमां नवि राचो ॥ १२ ॥ नहिं ए उपरात रतन्न, एहनां घणा करजो यतन्न ॥ नहिं एहथी बंधव दूजो, दरिसण गुणने नवि पूजो ॥१३॥ क्षयोपशम विचार, वेदक क्षायिक गुण सार ॥ सास्वादन पंचम जाणु, समकितना नेद वखाणु ॥ १४ ॥ मिश्र समकित मिथ्या मोह, अणाचार सबल वलि जोह ॥ ए सातना क्षय उवसमथी, क्षायिक उपशम लहती ॥ १५ ॥ वेद कह्यो ए चरम प्रदेशें, सास्वादन वमते देशें ॥ प्रदेशें वेदन हूते, खयोवसम कह्यु नगवतें ॥ १६ ॥ ए सहित षोडोही धर्म, आराध्यो दे शिवशर्म ॥ मदणाक सुणी प्रतिबुद्धो, समकित श्रावक व्रत लीधो ॥ १७ ॥ गुरु वांदी आव्यो निजपुरमां, जिन

धर्मे वस्यो निज उरमां ॥ मंडाव्यो जिन प्रासाद, खरचे धन मन आह्लाद ॥ १८ ॥ बहु धननो व्यय थयो जाणी, कर्मे तस मति मूंझाणी ॥ जाण्युं थोडे थाशे आयु, खरचतां न जोयुं पायुं ॥ १९ ॥ भांग्यो उत्साह करीने, वेगे संतोष करीनें ॥ वली लोकाग्रहथी कदापि, प्रतिमा जिननी लेइ स्थापी ॥ २० ॥ स्थापीने प्रतिष्ठा करावी, लीधो लाहो धनने वावी ॥ वली एक दिन चिंते हीणो, मन ध्यान शुद्धमां लीणो ॥ २१ ॥ धन चोथो भाग ए धर्में, करवो एम कह्युं शास्त्रमें॥ए तो अधिक इहां खरचाणुं, फलशे के नहि शुं जाणुं ॥ २२ ॥ एम संशय मनमां धरतो, जिन पूजादिक आदरतो ॥ एक दिन मुनियुग घर आव्युं, वहोरीने तेणें पडिलाभ्युं ॥ २३ ॥ वलिया वलतुं मन भाव्युं, फल दीठुं नहि कांइ फाव्युं ॥ मलें मेलू देखी शील, तेणें कीधी डुगंछा अवील ॥ २४ ॥ हा हा साधु पण चूके, कोईनें कर्म न मूके ॥ वली कीधो पश्चात्ताप, मुज मोटुं लाग्युं पाप ॥ २५ ॥ ए निर्मल अंग सदाइ, मुजनें माठी मति थाई ॥ एम अशुभ ने शुभ बेहु बांधी, ऋद्धि भुवनपतिनी लाधी ॥ २६ ॥ चवीने थयो धनद कुमार, जेम वाध्युं तिम लह्युं सार ॥ मन ऊहापोह करंत, लह्युं जातिसमरण तंत ॥ २७ ॥ कहे मुनिनें जोडी हाथ, जग तूंही अनाथनो नाथ ॥ मुज वीतक सघली वात, तुमें परकाशी भली भाति ॥ २८ ॥ तुम ज्ञान तणी बलिहारी, भव पडतो राख्यो उपगारी ॥ लेशुं दीक्षा तुम पासें, माय तायनें पूछी उल्लासें ॥ २९ ॥ मुनि वंदी आव्यो गेह, ढाल छवीशमी कहि एह ॥ रामविजय कही खंम बीजे, धन्य जे गुरुवचनें रीझे॥३०॥ सर्वगाथा॥७४७॥श्लोक तथागाथामली॥२०॥

॥ दोहा ॥

॥ मत्स्योदर आवी कहे, पितर भणी कर जोडि ॥ अनुमति आपो मुजनें, संयम लहुं मन कोडि ॥ १ ॥ मात पिता कहे जातने, जिहां तुं तिहां अमें साथ ॥ वाट जोवतां आवियो, घणे दिहाडे हाथ ॥ २ ॥ नृपति पण निसुणी कहे, वाहाला विण श्यो वास ॥ हे उपगारी ताहरो, छु घडी न महेलुं पास ॥३॥ कनकप्रभ निज कुमरने, बेसाड्यो नृप राज॥ पोतें सज थइ नीसर्यो, संयम लेवा काज ॥ ४ ॥ धनद धनावह पुत्रनें,

सोंपी घरनो भार ॥ मात पिता नारी सहित, वरवा निर्वृति नार ॥ ५ ॥ बहु परिवारें परवस्या, आव्या श्रीगुरु पास ॥ कृपा कर ओही कहे, दीक्षा द्यो गुणराशि ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्त्यावीशमी ॥

॥ ऋषन देव मोरा हो ॥ ए देशी ॥ अब मोहि तारो हो, दयानिधि पार वतारो हो ॥ नवनयथी हु कलगयो, आव्यो तुम नेरो हो ॥ अ० ॥ दयानि० ॥ ॥१॥ नाथ मुनि पट्कायना, कीजें मुने चेरो हो ॥ तारक जाणीनें सही, मन मान्यो मेरो हो ॥ द० ॥ २ ॥ स्वामि अनादिनी मूढता, हूती ईं घेस्यो हो ॥ अब तो विण ए वहीने, कुण राखे अनेरो हो ॥ द० ॥ ३ ॥ काज विचारी कीजियें, न पडे ज्युं फेरो हो ॥ कहे गुरु विलंब न कीजियें, होये कर्म निवेरो हो ॥ द० ॥ ४ ॥ चिहु जण साथें पचमे, श्री धनद कुमारें हो ॥ दीक्षा गुरुपासें ग्रही, रहे उग्र विहारें हो ॥ द० ॥ ५ ॥ चारित्र चोखु पालतां, मुनि निरतिचारें हो ॥ साथें साधु तणी क्रिया, प्रमाद निवारे हो ॥ द० ॥ ६ ॥ थिविर मुनि पासें नण्या, आगम आचारें हो ॥ वृषननपरें धोरी थया, धुरा धर्मनी धारे हो ॥ द० ॥ ७ ॥ करि अणसण आराधना, शुनध्याननी धारें हो ॥ काल करीने कपन्या, सुरलोक मफारें हो ॥ द० ॥ ८ ॥ सुख वैमानिक देवनां, रूडी परें पाले हो ॥ वरस असख्य लगें तिहां, वलता अवतारे हो ॥ द० ॥ ९ ॥ तिहांथी विदेहे पंचमे, वत्तमकुलसारें हो ॥ मनुजपणे सयम ग्रही, पहोता शिवगारे हो ॥ द० ॥ १० ॥ ए मत्स्योदरनी कथा, मुनि कही मनोहारें हो ॥ अमिततेजायें सांनली, मनने सुविचारें हो ॥ द० ॥ ११ ॥ तेमाटें तुमने कहु, खेचर अवधार हो ॥ धर्म निरंतर कीजियें, शिवसुख दातार हो ॥ द० ॥ १२ ॥ गुरु आणा शिर कपरें, राय धारी तेवारें हो ॥ साचे चित्त अरिहंतनी, नक्ति सवाई धारे हो ॥ द० ॥ १३ ॥ ननमनल मुनि चालीया, जिहां जैनविहार हो ॥ अमिततेज श्रीविजयजी, सुख विलसे अपार हो ॥ द० ॥ १४ ॥ ढाल थइ सत्त्यावीशमी, खरु बीजे उदार हो ॥ रामविजय कहे ते नला, जे राखे आचार हो ॥ द० ॥१५॥ सर्वगाथा ॥श्लोक२०॥

॥ दोहा ॥

॥ अमिततेज श्रीविजयजी, ए बेहू राजान ॥ राजनीति रूडी परें,

ले सुगुणनिधान ॥ १ ॥ यात्र करे जिनवर तणी, वेहु प्रकारें तेह ॥ दीश्वर वैताढ्यनी, सीमा नगनी जेह ॥ २ ॥ वरस प्रत्यें महोटी करे, ए यात्र गुणवत ॥ दोय नदीश्वर द्वीपनी, एक सामानिक संत ॥ ३ ॥ त्रमास उज्ज्वल पखें, तेम वली आसो मास ॥ नदीश्वर उत्सव करे, ाठ दिवस उल्लास ॥ ४ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्र करणकु ॥ ए देशी ॥ नदीश्वर वरद्वीप अनोपम, जेहां जिनगृह बावन्न ॥ तेह तणो सबध सक्षेपें, कहु सुणो सहु साजन १ ॥ नविका नाव धरीनें सार, जिनवर यात्र करीजें ॥ टालि मिथ्या ति निर्धार, नरनव लाहो लीजें ॥ ए आंकणी ॥ एकशत कोडी अने वली सठ, कोडि चोराशी लाख ॥ योजन नदीश्वर वर पहोलो, ए आगमनी ाख ॥ न० ॥ २ ॥ तेह तणे मध्यें अति महोटी, चिहु दिशें चिहु चिहुं वापी ॥ जंबूद्वीप प्रमाण ए नांखी, उंडी नहिय कदापि ॥ न० ॥ ३ ॥ एकेकी वापीने अतरें, दधिमुख एक गणीजें ॥ दधिवरणा शोले एक सरिखा, आगममाहे नणीजें ॥ न० ॥ ४ ॥ एकेकी वापीने अतर, रतिकर दो दो कहाइ ॥ वर्णे कनकसरीखा सुदर, बत्रीश चिहु दिश लहीयें ॥ न०॥ ५ ॥ बावोनी वचमां चिहु दिशें एक एक, अजनगिरि एम चार ॥ सहस्र चोराशी योजन ऊचा, अजन जिम आकार ॥ न० ॥ ६ ॥ एव बावन पर्वत उपरें, बावन जिन प्रासाद ॥ चोबारा ध्वज बापि विराजित, दीठे होय आह्लाद ॥ न० ॥ ७ ॥ शतयोजन आयाम कहीजें, पचास योजन पहोलां ॥ बहोतेर योजन ऊचां जिनघर, यात्र करे पुण्य बहुलां ॥ न० ॥ ८ ॥ चारे द्वार विराजे सुदर, ऊचा योजन शोल ॥ सुखमम्प रंग मम्प रूडा, दीठे होवे रगरोल ॥ न० ॥ ए ॥ पूर्व दिशें रुषनानन स्वामी, दक्षिणें जिन वर्धमान ॥ पश्चिमदिशें चद्रानन उत्तर, वारिषेण नगवान ॥ न० ॥ १० ॥ चोशठ्ठें ने वलि अडतालीश, प्रतिमा संख्या कहियें ॥ पंचशत धनुष प्रमाणे ऊची, जिनआणा शिर वहियें ॥ न० ॥ ११ ॥ मूल गनारे एकेक पासें, पडिमा सत्यावीश ॥ चैत्यथून चिहुनी शोलछुं, एम एकसो चोवीश ॥ न० ॥ १२ ॥ ते बावन्न गुणी तव

थाये, चोशठ्ठों ने अडयाल ॥ सख्या भांखी आगममांहे, प्रभुजी दीन दयाल ॥ भ० ॥ १३ ॥ तिहां श्रीविजय ने अमित नरेश्वर, बहुपरिवारें आवे ॥ आठ दिवस महोत्सव अठाही, पूजा विविध रचावे ॥ भ० ॥१४॥ भक्ति करे जिननी नवरंगी, नव नव अगें पूजी ॥ समकित निर्मल करवा भविने, ए सम करणी न दूजी ॥ भ० ॥ १५ ॥ पाछा फरि आवी मविरमां, जिनमदिर जूहारे ॥ तत्ता थेइ थेइ नाटक करता, पाप पमलने वारे ॥ भ० ॥ १६ ॥ एक दिन मेरुवनें नदनमा, आव्या जिन नमवाने ॥ बेहु राजेसर अति अलवेसर, कर्मनी रज दलवाने ॥ भ०॥ १७ ॥ जिणहर चार जगीश विराजे, ऊचपणे छत्रीश ॥ पचवीश योजन पहोलपणे ते,आयत वली पंचास ॥ भ० ॥ १८ ॥ प्रतिमासख्या एक प्रासादें, एकसो वीश गणि राखी ॥ भक्ति करे आवी तिहा राजा, बहु विद्याधर साखी ॥ भ० ॥ १९ ॥ पंचमेरुवन सख्या करतां, बिंब छन्नुशें कहीयें ॥ ए जिन नित्य उठीने नमतां, भवियण शिवसुख लहियें ॥ भ० ॥२०॥ भक्ति करीने नदन वनमां, फरता मुनिवर दीठ ॥ ऋजुमति विपुलमति इण नामें, जोता लाग्या मीठ ॥ भ० ॥ २१ ॥ हवे कहेशे मुनिवर उपयोगी, अठ्ठावीशमी ढाल ॥ बीजे खण्डें रामविजय कहि, धन्य जस धर्मनो ढाल ॥ भ० ॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ अतिशय नाणी मुनि कहे, निसुणो तुमें राजिद ॥ आयु अथिर जिनवर कह्यु, श्यो तेहशु प्रतिबध ॥१॥ आयु अमूलक नरतणु, जो धर्मे जो हाय ॥ नहिंतर ए भव पूरणा, कोडी काम न थाय ॥ २ ॥ ते माटें तुमने अमो, कहियें छे उपदेश ॥ चेताये तेम चेतजो, आयु रह्यु लवलेश ॥ ३ ॥

॥ ढाल उगणत्रीशमी ॥

॥ निद्रडी वैरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ निद्रडी मोहनी परिहरो, मत करो हो रहेजो सावधान ॥ कुमति रमणीनें दूरें तजो, समतानो हो भजो सग सुजाण ॥ नि० ॥ १ ॥ आयु दिवस छवीशनु, रह्यु तुमचू हो निसुणो राजिंद ॥ छो अरथी तुमें धर्मना, तिण कारण हो अमें भाख्युं नरिंद ॥ नि० ॥२॥ वात सुणी राय चितवे, हे हार्यो हो एहलें अवतार ॥ धर्म कर्यो नहिं चोंपशु, मोहभूपें हो छलिया निरधार ॥ नि०॥३॥ मन रह्या अमें मोहमां,

गुलाना हो थइ सूधा दास ॥ नीशासो नाखी कहे, मुनिवरजी हो अम कोण हवाल ॥ नि० ॥ ४ ॥ पडता नवजलकूपमां, कोण करशे हो अमची सन्नाल ॥ रामत रमणीशुं करी, नवि जोयु हो कांइ दीर्घ विमास ॥ नि० ॥ ५ ॥ लालच लोन्नमांहे पडया, परमारथ हो न लह्यो मुनि राय ॥ हाथ घसी माखी परें, शु करशु हो मुख कहे हवे हाय ॥ नि० ॥ ६ ॥ मुनि कहे खेद करो रखे, नथी विणठुं हो तुमचुं हजी कांय ॥ साधो संयम आदरें, आणा शुद्ध हो जेहथी सुख थाय ॥ नि० ॥ ७ ॥ एकदिननो शुद्धनावथी, आराध्यो हो दे संयम सुख ॥ तो तुमें शी चिंता करो, छे बहुदिन हो धरो मनमां सुख ॥ नि० ॥ ८ ॥ मुनि वदी ऊता वला, राजेश्वर हो आव्या निजगेह ॥ राज ठवी निजपुत्रनें, लिये संयम हो बेहु नृप ससनेह ॥ नि० ॥ ए ॥ अन्निनंदन मुनिवर कनें, लीई दीक्षा हो शिक्षा ग्रहि सार ॥ अणसण बेहु मुनि आदरे, करे डुकर हो तेहनी बलिहार ॥ नि० ॥ १० ॥ लख चोराशी जीवनें, खमावे हो मूकी मन रीप ॥ शरणां चार करे वली, सहे परिसह हो मुनि चढती जगीश ॥ नि० ॥ ११ ॥ पादोपगम समाचखु, अमिततेजा हो श्रीविजय मुनीश ॥ डुक्कर तप साधे नला, सुर किन्नर हो नामे तस शीश ॥ नि० ॥ १२ ॥ कर्म वशें श्रीविजयजी, मन सांन्नरे हो निज जनकनी ऋद्धि ॥ मोह पिशाचें छल्यो तिहां, बांध्यु तिहा कणे हो नीयाणु अशुद्ध ॥ नि० ॥ १३ ॥ डुक्कर तप प्रन्नावथी, मुऊ पितरनी हो सरिखो नूपाल ॥ होजो हु आव त नवें, एम चिंत्यु हो धिक् राग चमाल ॥ नि० ॥ १४ ॥ आयु क्षयें बेहु मुनि चवी, ते ऊपन्या हो प्राणत सुरलोक ॥ न्निन्नविमानें सुर थया, कीधी किरिया हो नवि थाये फोक ॥ नि० ॥ १५ ॥ नंदिकावर्त्त विमानमें, अमिततेजा हो सुर हुउ दिव्यचूल ॥ स्वस्तिकावर्त्तमा ऊपन्यो, श्रीविजय जी हो नामें मणिचूल ॥ निं० ॥ १६ ॥ प्रीति घणी बेहुनें बनी, सुख विलसे हो मनथी परिवार ॥ नंदीश्वरादिक तीर्थनी, करे यात्रा हो शुद्ध समकित धार॥नि०॥१७॥ पंचम नवें एम ऊपन्या, सुर सुंदर हो उंगणत्रि शमी ढाल॥बीजे खमें सोहामणी,रामविजयें हो नाखी ऊजमाल ॥निं०॥१८॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ कलश ॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥ नवियण निर्मल नाव ध

थाये, चोशठशें ने अडयाल ॥ सख्या नांखी आगममांहे, प्रभुजी दीन दयाल ॥ भ० ॥ १३ ॥ तिहां श्रीविजय ने अमित नरेश्वर, बहुपरिवारें आवे ॥ आठ दिवस महोत्सव अठाही, पूजा विविध रचावे ॥ भ० ॥१४॥ भक्ति करे जिननी नवरंगी, नव नव अंगें पूजी ॥ समकित निर्मल करवा भविने, ए सम करणी न दूजी ॥ भ० ॥ १५ ॥ पाछा फरि आवी मंदिरमां, जिनमंदिर जूहारे ॥ तत्ता थेइ थेइ नाटक करता, पाप पमलने वारे ॥ भ० ॥ १६ ॥ एक दिन मेरुवनें नंदनमा, आव्या जिन नमवाने ॥ बेहु राजेसर अति अलवेसर, कर्मनी रज दलवाने ॥ भ०॥ १७ ॥ जिणहर चार जगीश विराजे, ऊचपणे बत्रीश ॥ पचवीश योजन पहोलपणे ते, आयत वली पंचास ॥ भ० ॥ १८ ॥ प्रतिमासख्या एक प्रासादें, एकसो वीश गणि राखी ॥ भक्ति करे आवी तिहां राजा, बहु विद्याधर साखी ॥ भ० ॥ १९ ॥ पंचमेरुवन संख्या करता, बिंब छन्नुशें कहीयें ॥ ए जिन नित्य थवीने नमतां, भवियण शिवसुख लहियें ॥ भ० ॥२०॥ भक्ति करीने नंदन वनमां, फरता मुनिवर दीठ ॥ ऋजुमति विपुलमति इण नामें, जोता लाग्या मीठ ॥ भ० ॥ २१ ॥ हवे कहेशे मुनिवर उपयोगी, अठावीशमी ढाल ॥ बीजे खंडें रामविजय कहि, धन्य जस धर्मनो ढाल ॥ भ० ॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ अतिशय नाणी मुनि कहे, निसुणो तुमें राजिंद ॥ आयु अथिर जिनवर कह्युं, श्यो तेहशुं प्रतिबंध ॥१॥ आयु अमूलक नरतणु, जो धर्में जो डाय ॥ नहिंतर ए भव पूरणा, कोडी काम न थाय ॥ २ ॥ ते माटें तुमने अमो, कहियें छे उपदेश ॥ चेताये तेम चेतजो, आयु रह्यु लवलेश ॥ ३ ॥

॥ ढाल उंगणत्रीशमी ॥

॥ निन्दडी वैरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ निंदडी मोहनी परिहरो, मत कधो हो रहेजो सावधान ॥ कुमति रमणीनें दूरें तजो, समतानो हो भजो संग सुजाण ॥ नि० ॥ १ ॥ आयु दिवस छवीशनु, रह्युं तुमचूं हो निसुणो राजिंद ॥ छो अरथी तुमें धर्मना, तिण कारण हो अमें भांख्युं नरिंद ॥ नि० ॥२॥ वात सुणी राय चिंतवे, हे हाथो हो एहलें अवतार ॥ धर्म कर्यो नहिं चोंपसु, मोहकूपें हो छलिया निरधार ॥ नि०॥३॥ मग्न रह्या अमें मोहमां,

॥ अथ तृतीयखंमस्य प्रारंजोऽयम् ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिद्ध नमुं कर जोडिनें, धरि मनमां आनंद ॥ अंतर आतम जेहथी, थाये पूर्णानद ॥ १ ॥ प्रथम सयोगिपणु जिणें, अनुजवियुं जवमांय ॥ उत्कृष्टें नव कोडि लघु, दोय कोडि सरव्याय ॥ २ ॥ तस आणायें चालतां, मुनि नव कोडी सहस्स ॥ नमीयें दो कोडी सहस, लघु पद एह रहस्स ॥ ३ ॥ सकलगुणे करि जे जखा, मद नाख्या जेणें मोडि ॥ सकल गुणीने हु नमु, नित्यें बे कर जोडि॥ ४ ॥ वरदायी वाघेश्वरी, कविजननी आधार ॥ ते श्रुतदेवीने नमी, त्रीजो खम कहु सार ॥ ५ ॥ जवि निसुणो जावें करी, मूकोईकच पच वात ॥ कुण विमासण मन करे, पीतां दूधनी धात ॥ ६ ॥ कथा रसिक जिनशातिनी, वक्ता रसिक हवत ॥ पण श्रोता रसिया विना, केम आस्वाद लहत ॥ ७ ॥ यडुक्त ॥ ढप्पय ॥ विप विनतानें शोक्य, वली विप वयें रमापण ॥ विप दारिद्री गोष्टि, वली विप कुलनें खपण ॥ विप स्वामी अपमान, वली विप चचल गोरी ॥ विप गायनने खांसि, वली विप गलियो धोरी ॥ पूत कुपूत कुवास विप, विप विश्वास वैरी जना ॥ प्रीति कहे सुण चतुर नर, विप पंमित वचन अजावना ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ सक्ष थइने साजलो, मूको विकथा दूर ॥ जिन गुणरस श्रवणें सुणो, चिदानद जरपूर ॥ ८ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ माला किहां ठे रे ॥ ए देशी ॥ पूर्वविदेहें सुणो जवि नेहें, रमणि विजयमां वारु रे ॥ सुजगा नाम पुरी सुरपुरना, सरखी अति दीदारु रे ॥ १ ॥ रंगें सुणीयें रे, जिनगुण वात विनोद, अहोनिश जणीयें रे ॥ ॥ ए आंकणी ॥ ते नयरीमां नहि वैरीनो, वाचाट तणो न जोरो रे ॥ धर्मे सहुनी मींजी जीनी, नवि कोइ दीसे कोरो रे ॥ र० ॥ २ ॥ वधन कुसुम विना नहिं जनमा, नहिं स्नेहनो क्षय विण दीपें रे ॥ चैत्यशिखर विण दंम न दीसे, न्यायनिपुण जन दीपे रे ॥ र० ॥ ३ ॥ जिहा व्यवहार गुणें करी रूडा, निवसे व्यवहारी महोटा रे ॥ नयमारग चाले चतुराई, नहिं मनमांहे खोटा रे ॥ र० ॥ ४ ॥ परपरिवादें मूक सरीखा, पर

ीने, जिनगुणस्तवना कीजें रे॥ सांसारिक धंधो ठोडीने, शुद्ध अनुजव रत
ीजें रे ॥ज०॥१॥ परमपदारथ सुकृतकृतारथ, पुरुषारथ पामीजें रे ॥ जिन
गुण गातां निजगुणजोगी, अतरमल सवि ठीजे रे ॥ज०॥२॥ गंगाजल उज्ज्वल
जग कीर्त्ति, परजवें सुगति वरीजें रे ॥ प्रजुगुण श्रवणें श्रवण करीने, आ
तम शुद्ध करीजें रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ विकथा वारी शुद्ध विचारी, एकम
ना चाखीजें रे ॥ जिनगुण मुनिगुण मेवा मीठा, स्वाद हृदय राखीजें रे
॥ ज० ॥ ४ ॥ शांतिप्रजुनी स्तवना माला, गुण गूथी धारतां रे ॥ सुम
ति सुगृहिणी साथें चेतन, क्रीडा करो मलपता रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ वेर न
वाधे शिवसुख साधे, प्रजुगुण जे आराधे रे ॥ शातिप्रजुनें रासें रमतां,
कीर्ति कमला वाधे रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ पंचम जव एम प्रजुनी स्तवना,
बीजे खर्म्डे कीधी रे ॥ ए माहे जे न्यूनाधिक होवे, ते लेजो कवि शोधी रे
॥ ज०॥ ७ ॥ सवत सत्तर पचाशीया वर्षे, राजनगरमाहे जेट्या रे ॥ त्रिश
लानदन वीर जिनेश्वर, ङुःख दोहग सवि मेटघा रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ ते प्र
जुनी सान्निध्यें सपूरण, खम्ड थयो सुप्रमाणो रे ॥ वीजो उज्ज्वल वीज शशी
परें, चढती कला मन आणो रे ॥ ज० ॥ ए ॥ दाम न बेसे सुणतां
जिनगुण, पावन तन मन थाये रे ॥ जवकोटीसचित जवि जननां,
पातक नासी जाये रे ॥ ज० ॥ १० ॥ तपगछनायक सूरि सवाई, श्री
लक्ष्मीसागर सूरि राजे रे ॥ श्रीगुरु सुमतिविजय कवि गिरुआ, महिमा
अधिक विराजे रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ तस पद पंकज मधुकर सरिखो, राम
विजय कहे रसियो रे ॥ शांतिजिनेश्वर गुण गावानें, मुफ आतम उल्ल
सियो रे ॥ज०॥ १२ ॥ सर्व मलीने त्रीशनी संख्यायें, ढाल कही ए खर्म्डे
रे ॥ एक मनें सांजलतां जिनगुण, लहियें सुख अखंर्म्डे रे ॥ ज० ॥ १३ ॥
सर्वगाथा ॥ ८२८ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २० ॥ ढाल ॥ ३० ॥ प्रथम
खम्ड गाथा ॥ ४३७ ॥ प्रथम खम्ड श्लोक तथा गाथा ॥ ४१ ॥ प्रथम
खंम्ड ढाल ॥ १७ ॥ उजयो खम्डयोर्मिलित्वा गाथा ॥ १२६५ ॥
उजयो खम्डयोर्मिलित्वा प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ६१ ॥
खम्डद्वयढाल ॥ ४७ ॥ इति श्रीशांतिजिनप्रबधे प्राकृतप्रबधे द्वादशजवनि
बधे सुकृतानुसधे सत्यार्थसधे हरिप्रतिहरिसबधकलितोमत्स्योदरसबधमिलि
तोविद्याधरसुरपदरूपजवद्वयवर्णननामा द्वितीय खम्ड सपूर्ण ॥ २ ॥

सकलकला शीखी लघुवयथी, अनुक्रमें यौवन आयो रे ॥ सुख विलसे परणी नृपकन्या, दिन दिन चढत सवायो रे ॥ २० ॥ ११ ॥ त्रीजे खमें पहेली ढालें, रामविजय कहे वाणी रे ॥ वेहु वधव सुख विलसे वहुलां, नेह निविड गुण खाणी रे॥२०॥१३॥ सर्व गाथा॥३१॥श्लोक गाथा मलीने॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर तिण नयरीयें, उपशमजलें अगाध ॥ शमदमवता आविया, नामें स्वयंप्रन्न साध ॥ १ ॥ समवसखा वनचूमिका, मुनि म हत महनीय ॥ शूरा थइ सूथा सहे, जे जे ठे सहनीय ॥ २ ॥ एहवे रथवाही चढयो, स्तिमितसागर राजान ॥ वलतां वीशामा नणी, आव्यो तिण उद्यान ॥ ३ ॥ दीठो मुनि कंकेलितरु, नीचें निश्चल ध्यान ॥ साधे योगदशा नली, मुनि रह्यो एक तान ॥ ४ ॥ वदी कर जोडी कहे, धन्य धन्य गुणपात्र ॥ धन्य धरामां ते नरा, जे करे तुम्हारी यात्र ॥ ५ ॥ तुम पेखे पावन थयां, मुऊ लोचन माहाराज ॥ कृपा करी द्यो देशना, गिरुआ गरिब निवाज ॥ ६ ॥ काउस्सग्ग पारी प्रेमशु, वेगा उत्तम ठाम ॥ कहे उपदेश सोहामणो, शमरसगुणना धाम ॥ ७ ॥

ढाल वीजी ॥

॥ नणद हठीली ॥ ए देशी ॥ सुण सुण रे राजन रढियाला, कहुआ ए कपायना चाला रे ॥ सुण राजन रढीयाला ॥ ए आंकणी ॥ सुवसन ने वली फूल, माणलने मेलें धूल रे ॥ सु० ॥ इह नव परनव पु खदायी, एह साथें अनादि सगाइ रे ॥ सु० ॥ १ ॥ दोय नामें जग धघोल्यो, तव स्तिमितसागर नृप बोल्यो रे ॥ सु० ॥ प्रनु कहो एहना कति नेद, केम पाम्यो एहथी खेद रे ॥ सु० ॥ २ ॥ कहे मुनिवर दोयथी हुवा चार, वाध्यो एहनो विस्तार रे ॥ सु० ॥ पहेलो क्रोध ने वीजो मान, माया त्रीजी ने लोन अमान रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ जुउं क्रोधथकी शु थावे, अहोनिश आतम अवटावे रे ॥ सु० ॥ एह मानथकी मति जावे, अठता पण गुण गवरावे रे॥ सु०॥४ ॥ माया विषवेली समाणी, तेगुण ढकण सुपरें जाणी रे ॥ सु० ॥ लोन नवि टकवा दे मननें, जाणे मेलु मेलुं वहु धननें रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ एकेकना नेद ठे चार, कहे मुनि करुणानमार रे ॥ सु० ॥ क्रोध पहेलो अनतानुवधी, न टले जेहनी केइ सधि रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ करे

गुण लेवा शूरा रे ॥ पंगु परनुं धन हरवाने, परमैश्वर्यना पूरा रे ॥ रं० ॥ ॥ ५ ॥ तिण नगरीमां स्तिमितसागर इण, नामें नृपति गाजे रे ॥ स ज्जन जन रंजन उपकारी, दुःखीयानां दुःख भांजे रे ॥ रं० ॥ ६ ॥ न्यायें साजो बलथी ताजो, सबलो जेहनो आजो रे ॥ षट् गुण जाणे सवि सुख माणे, न लहे कोइ तस माजो रे ॥ रं० ॥ ७ ॥ शियलगुणें पूरी वलि वड नूरी, रमणी दोय अति रूडी रे ॥ मोहनगारी रमझम करती, हाथे सोवन चूडी रे ॥ रं० ॥ ८ ॥ एक वसुंधरा बीजी अनुधरा, चाले पतिने छंदें रे ॥ धर्में लीणी देव गुरुनें, नित्य उठीने वंदे रे ॥ रं० ॥९॥ हवे प्राण तथी अमिततेजानो, जीव चवीनि अवतरियो रे ॥ वसुधरानी कूखे वारु, भाग्यवशें गुण दरियो रे ॥ रं० ॥ १० ॥ सूतां मध्यरयणीने स मयें, दीठ अति श्रीकारो रे ॥ गजवर पद्मसरोवर शशिधर, वृषभ वली ए चार रे ॥ रं० ॥ ११ ॥ हलधर जनम तणां ए सूचक, दीठां रमणी रूडां रे ॥ कंत कहे तुझ उज्ज्वल वर्णें, सुत होशे नहिं कूडा रे ॥ रं० ॥ १२ ॥ प्रसव्यो सुत तेणें पूरणमासें, उत्सव कीधा सबला रे ॥ सुत सोभागी कुलनो दीवो, चिरंजीवो कहे अबला रे ॥ रं० ॥ १३ ॥ हर्ष धरीने "अपराजित" रूडुं, नाम ठव्युं निज तातें रे ॥ वाधे उज्ज्वल बीज तणो जिम, अहोनिश रयणीकांत रे ॥ रं० ॥ १४ ॥ बीजो ते सुर लोकथी चवियो, मणिचूलामर नामें रे ॥ राणी अनुधरा कूखें आव्यो, रत्न ए पूरण कामें रे ॥ रं० ॥ १५ ॥ सिंह तरणी पूर्णकुंभ लक्ष्मी, रयणसमुदय दरियो रें ॥ निर्धूम अग्नि ए साते देखे, जब कूखे अवतरियो रे ॥ रं० ॥ १६ ॥ प्रीतमनें परकाशे पद्मिनी, साच कहो मुझ स्वामी रे ॥ वहालेश्वर रातें में दीठ, सुहणां नहिं कांइ खामी रे ॥ रं० ॥ १७ ॥ स्तिमितसागर नरवरें बोलाव्या, शास्त्र तणा बहु जाण रे ॥ वासु देव सुत होशे बलियो, प्रकट्यो पुण्यनिधान रे ॥ रं० ॥ १८ ॥ दान दे इने तेहनें वोलाव्या, अनुक्रमें सुत सोभागी रे ॥ मध्यनिशा प्रसव्यो पुण्य वतो, भाग्यदशा एम जागी रे ॥ रं० ॥ १९ ॥ नाम "अनंतवीर्य" तस स्थापे, हियडे हर्ष धरीनें रे ॥ वेहु सुतने उत्संगें माता, तेडे लाभ करीने रे ॥ रं० ॥ २० ॥ पुत्र तमो उदरें अम आवी, हर्ष घणा उपजाव्या रे ॥ सुतजी तुम मुख देखी अमचा, दुःख सवि दूर नसाव्यां रे ॥ रं० ॥२१॥

वहु मान ॥ ३ ॥ गुणवती गोरी निपुण, चाले गजगति मत्त ॥ मानवती पण कथने, चाले अनुदिन चित्त ॥ ४ ॥ यडुक्त ॥ दोहो ॥ माणिणी तित्तउ माण करे, जीत्तउ कंत सुहाय ॥ जे लाखीणी वाणही, तोहि पहेरीजें पाय ॥ १ ॥ पूर्व दोहा ॥ एम सागर कल्पसमी, सुखमां वाहे काल ॥ पण ते सवली चोरटी, पियुचित्त चोरणहार ॥ ५ ॥ सहि ए चोर ते मानियें, जे हुवे चित्तह चोर ॥ धण कण कचन जे हरे, चोर नहिं ते ढोर ॥ ६ ॥ तेहनी कूखें ऊपन्यो, पद्मकेसर अभिधान ॥ राजकुमर रलीयामणो, सोहे सुगुणनिधान ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

अवरीयोने दूजे रे नटियाणी राणी वड चूवे ॥ ए देशी ॥ एक दिन योगें हो राजेश्वर राणी महोलमें, वेग रग विलास ॥ केश समारे हो सुकुलिणी निज वालम तणा, धरती हियडे उल्लास ॥ १ ॥ जगमांहे जो जो हो जोरावर आणा मोहनी ॥ ए आकणी ॥ दिलभर दपती दोय ॥ रंगें रमाडे हो न जगाडे सूता जीवने, नाखे डुर्गति सोय ॥ ज० ॥ २ ॥ पलीयु निहाली हो एक नामा नाखे नूपने, स्वामी दूत निहाल ॥ आव्यो अलवेसर हो आजुनो ए उतावलो, जोयु चिहु दिशें नाल ॥ ज० ॥ ३ ॥ दूत को न आवे हो अलवेली एणे मदिरें, चिहु पासें रे जूझार ॥ रहिया छे चोकी हो उंलाउलें मातरा, हाथ ग्रही हथीयार ॥ ज० ॥ ४ ॥ हासु न कीजें हो रगीली राणी रगमें, उपजावी मुझ भ्रांति ॥ तु जो निहाले हो तो मुझ नजरें केम आवे नहिं, सवली कौतुकवात ॥ ज० ॥ ५ ॥ देजें हरिणाक्षी हो हॉशीली हरखीने कहे, पियु छुं बोल्याजी बोल ॥ कहिये तुम आगल हो वालमजी में कीधी नहिं, कूडी हांसी निटोल ॥ ज० ॥ ६ ॥ राय विमासे हो तमासे वात किसी कहे, तव राणी झुन्न वेश ॥ लइ देखाड्यो हो मननो सशय वारवा, शिरनो उज्ज्वल केश ॥ ज० ॥ ७ ॥ दूत जरानो हो स्वामीजी ए आव्यो सही, कहेवा करणनी पास ॥ हुशियार रहेजो हो हुं आवु छुं उतावली, सुणि नृप चिते विमासि ॥ ज० ॥ ८ ॥ धिक् धिक् मुझने हो में पूर्वजरीति न आदरी, हुउ लोभीमाहे लीह ॥ पलीयाथी पहेला हो जे ऋद्धि मूकीने नीसख्या, छुं नाखु हवे लीह ॥ ज० ॥ ए ॥ राजाचितयति ॥ दाण सुपत्ते न

समकित गुणनो घात, एहथी होय नरकनिपात रे ॥ सु० ॥ कह्यो पत्थर रेख समाणो, वर्जे एह ते धन्य जाणो रे ॥ सु० ॥७॥ बीजो क्रोध अप्रत्याख्यान, पृथिविरेखा उपमान रे ॥सु०॥ रहे वरस लगें ए जाडो, श्रावक व्रत वेलायें आडो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिर्यंचगतिमां पहोंचाडे, पढे बहु नव मांहे नमाडे रे ॥ सु० ॥ प्रत्याख्यानावरणीय ए त्रीजो, हणे साधुना गुणनु हेजो रे ॥ सु० ॥ए॥ वेलुनी रेखा सरिखो, आपे मनुज तणी गति निरखो रे ॥सु०॥ जलरेखा सम सज्वलणो, चोथो रोध करे ज्युं बलनो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ न आवन दे यथाख्यात गुणने, सूधा पण समण माहणनें रे ॥ सु० ॥ गति नापे देवनी सारी, म करो ए क्रोधह्युं यारी रे ॥ सु० ॥११॥ चारेनो एकज ढग, विरुड ए सार्थे प्रसग रे ॥ सु० ॥ जन्म वर्ष अने चोमासी, पक्ष स्थिति अनुक्रमें नासी रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ स्थंन पाषाण अस्थि ने काष्ठ, तृण सम चिह्न मान अनिष्ट रे ॥ सु० ॥ वश मूल वली मीढसिग, गोमूत्रा वलेह सुचग रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ माया चिह्न नेदें नांखी, सुणो लोन उपम चित्त राखी रे ॥ सु० ॥ कृमि राग अने वली पंक, अजन हरिद्रानो रंग रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ एम थाये नेद ए शोल, एह वरजे ठाकमठोल रे ॥ सु० ॥ अति आदरथी जे सेवे, तेहने बहुनव डुःख देवे रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ ते मार्टे कषाय न करवा, शिवनारी उपाय ए वरवा रे ॥ सु० ॥ थोडा पण ए सेव्या माठा, नजरें जोतां केइ नाठा रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ मित्रानदादिक नडिया, कषायतणे वश पडिया रे ॥ सु० ॥ कहे स्तिमितसागर मुनिराया, कुण तेह जे तुमें गाया रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ कहे मुनि महानुनाव सुणीजें, सुणी ज्ञानतणु फल लीजें रे ॥ सु० ॥ मित्रानदादिक वात, कषाय उपर अवदात रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ त्रीजे खमें बीजी ढाल, नांखी ए रंगरसाल रे ॥सु०॥ कहे रामविजय नवि प्राणी, सुणजो सद्गुरुनी वाणी रे ॥सु०॥१ए॥ सर्वगाथा॥५७॥श्लोक॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे मुनि इणनरतें नलुं, अमरतिलक पुर सार ॥ अमरपुरी सम उपन्यु, जिहा धन धान्य अपार ॥ १ ॥ सुखीया लोक सहू वसे, डुःखी तणु नहि नाम ॥ मकरध्वज नामें नलो, नूप गुणें अनिराम ॥ २ ॥ मदनसेना तस सुदरी, राणी रूपनिधान ॥ सकलकलायें शोनती, प्रीतमनुं

तु अम ड खथी, तो लेइ जाउंजी वाल ॥ सुत लेइ चाल्यो हो व्यवहारी आव्यो निजपुरें, हर्ष धरी उजमाल ॥ ज० ॥ २१ ॥ सुतने न देखे हो पासें मायडी मोहथी, पीडाणी असमाध ॥ काल करीने हो परलोकें ते पहोती तदा, मोहनी महोटी आधि ॥ ज० ॥ २२ ॥ सुत लेइ आवी हो सोंप्यो शेठें नारीनें, नाम अमरदत्त दीध ॥ पुत्री एक तेहनें हो नामें ठे सुरसुंदरी, मनह मनोरथ सिद्ध ॥ ज० ॥ २३ ॥ त्रीजे ए खमें हो ढाल थइ त्रीजी नली, रामविजय कहे एम ॥ पूर्वं वाध्यां हो जे रसनां कर्म जेणी परें, उदयें आवेजी तेम ॥ज०॥२४॥ सर्वगाथा॥ए८॥श्लोको॥५॥

॥ दोहा ॥

॥ तेहज नयरीमां वसे, सागरशेठनो पुत्र ॥ मित्रानंद नामें नलो, जे राखे घरसूत्र ॥ १ ॥ मात पितानें वल्लहो, सोनागी सुविनीत ॥ अमरदत्त सार्थे घणी, वधाणी तस प्रीत ॥ २ ॥ गुणवंता वेहू नला, अमर ने मित्रानंद ॥ धनवंत सुत जाणी नमे, सहुको धरि आनंद ॥ ३ ॥ यत ॥ विग्गुणमविग्गुण वा रूवहीण विरम्म, जडमवि मइमंतं मंद सत्त य सूर ॥ अकुलमविकुलीणं तं पयपति लोआ, नवकमलदलच्ची ज विलोएइ लष्ठी ॥ १ ॥ वर्षाकालें एक दिन, क्रीडा करवा दोय ॥ क्षिप्रा शैवलिनी तटें, रमे अणुलिया सोय ॥ ४ ॥ कठाली उची तदा, मित्रानंदें त्याहि ॥ मोई मुहमाहे पडी, वड वाध्युं शव ज्याहिं ॥ ५ ॥ हसतो मित्र वली कहे, महोटु कौतुक एह ॥ अणचिंती ए अमोलिका, शवमुखमाहे पडेह ॥ ६ ॥ कोप्यु शव वलतु नणे, मित्रानंद म फूल ॥ ए वड वधाइश सही, मुझ जेम तु मत नूल ॥ ७ ॥ वचन सुणी विलखो थयो, नय लाग्यो मनमांहे ॥ हा हा इण ए शुं कर्युं, रखे साचु ए थाय ॥ ८ ॥ कहे अमर अपवित्र ए, थइ अमोलिका आज ॥ ल्यो बीजी ए माहरी, रामत रमवा काज ॥ ए ॥ व्यग्र थयुं मन तेहनु, दोइ आव्या फरि गेह ॥ मित्रानंदने सानरे, क्षण क्षण शव वच तेह ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ रयणीयें सूता हो मित्रानंदने, नयणें न आवे रे क्षण एक निंद ॥ अहो अहो में हांसी अण जाणता, कीधी शवनी रे धरि मन खेद ॥१॥ सुगुण सनेहा रे हांसी न कीजियें ॥ए आंकणी॥

दिन्नं चंगं, तवनियमेण न सोसियमंगं ॥ नवि पुकिउं नवि समझो, हा हा जम्म गउ अकयछो ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ देखी चिंता हो प्रीतमने पूछे पद्मिनी, पियु शुं चितो ठो चित्त ॥ मनशुं लाजो ठो जरानें आवीने जाणी, पण तुमें रहोजी निश्चिंत ॥ ज० ॥ १० ॥ जरा वजडाशु हो पुरमांहे एहवो, तुमने कहेशे गरढाजी जेह ॥ तेहनें तेडावी हो शिखामण सूधी आपशुं, मोकलशु यमगेह ॥ ज० ॥ ११ ॥ एम न बोलीजें हो ए वयण विवेकविहीननुं, जरा अमनें शणगार ॥ यडुक्त ॥ अलकरोति च जरा, राजामात्यभिपग्गुरून् ॥ विडंबयति पण्यस्त्री, मल्लगायनसेवकान् ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ पण नवि कीधो हो यौवनवयमां धर्म जे, ते मुज शोच अपार ॥ ज० ॥ १२ ॥ हांसुं में कीधुं हो वालमजी सहेजें तुम्ह तणु, मत धरजो मन खेद ॥ रगें रमीजें हो रसीला लीला प्रेमनी, न करो अंतर नेद ॥ ज० ॥ १३ ॥ कहे प्रिये आश्श हो हुं तापस वनमांहे जइ, नवि करवी हवे वार ॥ कामिनी निसुणी हो मनमांहे चिंते शुं करु, हुं एकलडी निर्धार ॥ ज० ॥ १४ ॥ राज सोंपीने हो निज अगजने नृप नीसस्यो, चाली राणी सघात ॥ बेहु जइ लीधी हो दीक्षा तापसनी नली, ठोडी अस्थिर सवि आथ ॥ ज० ॥ १५ ॥ गूढ जे हतो हो राणीनें गर्न समो तदा, न लह्यो तेहनोजी नेद ॥ दिन दिन वाध्यो हो चिंता वाधी चित्तमां, राय सुणी लह्यो खेद ॥ ज० ॥ १६ ॥ कह्युं कुलपतिने हो सघलु समजावी सही, कहे मन करिय आलोच ॥ तापसीपासें हो मूको सचवाये सही, शो करवो हवे शोच ॥ ज० ॥ १७ ॥ अनुक्रमें जणीयो हो शुनलक्षण सुत सोहामणो, मानें हुइ असमाधि ॥ वनमांहे वाये हो चिहु दिशिनो शीतल वायरो, वाधी अंगें हो व्याधि ॥ ज० ॥ १८ ॥ थयां सवि चिंतातुर हो तापस मनमां चिंतवे, केम राखीशुं ए बाल ॥ मा विण सुतनी हो कहोने चिंता कुण लहे, ए थयो महोटो जंजाल ॥ ज० ॥ १९ ॥ यत ॥ गाथा ॥ बालस्समाय मरण, नक्षा मरण च जुवणारंने ॥ वुड्ढस्स पुत्त मरण, तिन्निवि गिरुआइ डुक्काइ ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ एहवे तिहां आव्यो हो उजेणी वासी वाणीयो, नामें देवधर शाह ॥ पाय लागीने हो पूछे तेहनें प्रेमशुं, केम तुमें रहित उत्साह ॥ ज० ॥ २० ॥ कुलपति नांखे हो जो डुःखीयो

अणावी पेटिका, माहे स्थापी रें नात ने पाणी ॥ सुत वेसारी मांहे वाहिर, तालक देइ रे करि सहिनाणी ॥ सु० ॥ १७ ॥ राजन ए मजूषा माहरी, माहे घरनो रे सार सवे ठे ॥ यत्नें राखो नृप कहे शु करु, तुऊ विणधन ने रे जे मुऊ हे ठे ॥ सु० ॥ १८ ॥ मन्त्री कहे सेवकनो धर्म ए, कष्टे पडियो पण स्वामी न वंचे ॥ रायें रूडे स्थानक ते धरी, मन्त्री पहोतो रे जिनगृह सचे ॥ सु० ॥ १९ ॥ करे रे अठाहि महोत्सव आदरें, सघने पूजे रे दान डु खीनें ॥ पडह अमारीतणो वजडावीने, प्रणमे प्रेमें रे साधु ऋषिनें ॥ सु० ॥ २० ॥ चिहुं दिशें सुनट रखाव्या सज करी, पोतें वेठो रे चैत्यने आगें ॥ दिवस पनरमे रे राय अतेउरें, दासी वोली रे एहवे जगे ॥ सु० ॥ २१ ॥ धाउ धाउ लोका छुउ मंत्रीनो, सुत राणीनी रे वेणी ग्रहीने ॥ ठेदीने अलगो नासी गयो, शु हवे कहियें रे इहा कणे रहिने ॥ सु० ॥ २२ ॥ राय सुणीने कोप कलकल्यो, एणें मुऊ आणा रे पापीयें लोपी ॥ रंक रमाडुं खोलो नरे हगी, राये रीपें रे मति आरोपी ॥ सु० ॥ २३ ॥ उठी तलार हणो ए सचिवने, सुत अपराधी रे जेहनो प्रेख्यो ॥ दोड्या सुनट सीपाइ सामटा, तुरत जइने मन्त्री घेख्यो ॥ सु० ॥ २४ ॥ कहे मन्त्री मुऊने नृप आगल, तुमें लेइ जाउ रे तेणें तेम कीधो ॥ नृप उपराठो रोपें थइ रह्यो, कहे मन्त्रीश्वर में शुं लीधो ॥ सु० ॥ २५ ॥ पेटीगत सवि वस्तु तुमें लीयो, राय कहे मुऊ नहि धनकाम ॥ सचिव कहे मुऊ प्राण ए तुऊ वश, हुं नवि थाउं रे लूण हराम ॥ सु० ॥ २६ ॥ पण एक वार निहालो पेटिका, राय उघाडी रे तालक नजी ॥ त्रीजे खमें चोथी ढालमा, राम कहे सुणो साजन रजी ॥ सु० ॥ २७ ॥ सर्वगाथा ॥ १२५ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेणिदम वामे करें, दक्षिणकरें कृपाण ॥ सुत देखे तिहां सचिवनो, सहुको हुउ हेरान ॥ १ ॥ राय कहे मन्त्री किस्यु, ते कहे न लहु स्वामि ॥ तुम हाथे ए पेटिका, में सोपी गुणधाम ॥ २ ॥ राय सलज्ज थयो घणु, कहे मन्त्री मुऊ वात ॥ ते कहे कोई द्वेपथी, व्यंतरनो उत्पात ॥ ३ ॥ नहिंतर एम केम नीपजे, राख्यो पेटीमांहि ॥ मनसशय नांम्यो परो, पाम्यो परम उत्साह ॥ ४ ॥ बहु सन्मान्यो सचिवने, करे पंचाग

हृदय विमासी रे जोय सुवधो ॥ हांसी करत विसाली मीठडे, निविड कर्मनो रे होवे वधो ॥ सु० ॥ २ ॥ अरुणोदयें आवी मळ्यो मित्रने, पण मनमांहे उदास ते दीसे ॥ पूछे अमर कांइ दीसो दुमण, मित्र न ताहारु रे मुखडुं हीसे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नयण नराइ आव्यां आंसुयें, मुख करमाणुं रे कमलनु फूल ॥ अहो जीवन वधव ए ताहरुं, आज कां एहवु रे दीसे शूल ॥ सु० ॥४॥ गोप्य करी रह्यो वयण न उचरे, अमर कहे मुज आगल जांखो ॥ तुज मुज प्रीति वनी नख मस ज्यु, तो एवडो केम अतर राखो ॥ सु० ॥५॥ वात कही मित्रानदें मित्रनें, नयण जरंते रे घणुं दिलगीर ॥ निसुणी अमर कहे शव बोले नहि, पण कोइ चालो रे अमरनो वीर ॥ सु० ॥ ६ ॥ मित्र म धर मनमां कायरपणु, साहसथी सवि सपद लहियें ॥ पुरुषपणु पौरुषथी सपजे, सुख दुःख विजमां रे जाणी रहियें ॥ सु० ॥ ७ ॥ उद्यम साहस ने वली धीरता, बल ने बुद्धिपराक्रम जेहने ॥ षड्गुण जे मानवमांहे वसे, देवने दानव रे शुं करे तेहने ॥ सु० ॥ ८ ॥ ज्ञानगर्भ मत्रीनी पूर्वें, आपद नाठी रे पुरुषाकारें ॥ सांजल कहु तुज आगल ते कथा, धैर्य धरी सुणो मित्रकारे ॥ सु० ॥ ए ॥ एहिज जरतें चपानयरीयें, जितरिपु रायनो मत्री मनोहर ॥ ज्ञानगर्भ तस नारी गुणावली, सुबुद्धि तनय परनारी सहोदर ॥ सु० ॥ ॥ १० ॥ एक दिवस राजा बेठो सजा, आव्यो नैमित्तिक एक सुखाकर ॥ पूछे राजन् तु शुं शुं लहे, वात कहो सुविवेक गुणाकर ॥ सु० ॥ ११ ॥ जीवित मरण ने लाजालाजने, जाणु गमागम सुख दुःख वातो ॥ राजन् ए अष्टांग निमित्तनां, गुरु करुणाथी रे कहुं अवदातो ॥ सु० ॥ १२ ॥ राजन कहे महारा परिवारमां, पनर दिवसमां रे अद्भुत कोई ॥ जे थानार होवे ते दाखवो, चित्तमां धारी रे मयने जोई ॥ सु० ॥ १३ ॥ सुण नरवर मत्रीश कुटुंब ए, कष्ट लहेशे रे बहु मरणांत ॥ राजन जन दिलगीर थया सुणी, एम केम जांख्युं रे एणे वृत्तांत ॥ सु० ॥ १४ ॥ उठयो मंत्रीसाथें निमित्तीयो, तेडी पूछे रे तस एकांतें ॥ कोणथी कष्ट कहे ते सुतथकी, एहवु आव्युं रे मुज सिद्धांतें ॥ सु० ॥ १५ ॥ कहे मत्री सुत सांजल महारु, कहण करे जो तुं एक विचारी ॥ तो आपदथी उगरियें सवे, सुत कहे जांखो रे मुज निरधारी ॥ सु० ॥ १६ ॥ पुरुष प्रमाण

आलापे मीठडा रे ॥सा०॥ सयोगें गुण एम ॥ मो०॥ १२ ॥ नावेशुं हवे ानलो रे॥सा०॥ त्रीजे पचमी ढाल सुजाति ॥मो०॥ रामविजय कहे रग ्ु रे॥सा०॥ जगमां जोइ लीजें जाति ॥मो०॥१३॥ सर्वगाथा ॥१४७॥६॥

॥ दोहा ॥

॥ करी विचार मनशु खरो, चाल्या बधव दोय ॥ ठाना मातपिता थकी, कर्म करे सो होय ॥ १ ॥ जोतां पुर वन वाटिका, नव नव ख्याल विनोद ॥ अनुक्रमें बेहु आविया, पाटली पुरें प्रमोद ॥ २ ॥ नाही पुष्क रिणीजलें, पावन कीधां अग ॥ पुर पेसता पेखीयो, एक प्रासाद सुचग ॥३॥ दंम कलश ध्वज कोरणी, सुंदर शोना सार ॥ जिनप्रासाद कराविया, धन्य तेहनो अवतार ॥ ४ ॥ धर्मठामें धन वावरे, तो पाम्यु परमाण ॥ पामीनें खरचे नहिं, तस जीव्यु अप्रमाण ॥ ५ ॥ जोता शोना तेहनी, अमरदत्ते एक दीठ ॥ पाचाली पापाणनी, मनहुं जाय वश्ठ ॥ ६ ॥ रूप देखी रामा तणु, चित्रे लखियु तेह ॥ अहो अजब गति मोहनी, मनमा लाग्यो नेह ॥ ७ ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ वैरागी थयो ॥ ए देशी ॥ मन लोनाणु तेहनुं, जोइ रह्यो अनिमेप ॥ अग अवयव निरखतो, नवि लाज गणतो रेख रे ॥१॥ बधव मा हरा ॥ शु थयो मूढ अजाण रे, देवघर साहरा ॥ शा ढग चतुर सुजाण रे, दीसे ताहरा ॥ ए आकणी ॥ पापाण केरी पूतली रे, दीसे ते सुदररूप ॥ एमांहे शु मोहि रह्यो रे, में लह्यु ताहरु रूप रे ॥ व० ॥ २ ॥ आज मोह्यो तुं पूतली रे, काले मोहीश नारि ॥ तो केम पूरु ताहरु रे, में पढे मित्र विचार रे ॥ व० ॥ ३ ॥ परदेशें पंथें चालतु रे, पग पग सुदर नारी ॥ मित्र नजर न मांमीयें रे, ए आपणो आचार रे ॥ व० ॥ ४ ॥ तु चाल महारा मित्र जी रे, एक वार नगर मझार ॥ तुनें रूप जोवु सांनरे रे, मुने नूख लागी अपार रे ॥ व० ॥ ५ ॥ पंथ सम नहिं को जरा रे, दारिद्र सम नहिं कष्ट ॥ मरण सम नय को नहिं रे, वेयणा नूख अनिष्ट रे ॥व०॥ ६ ॥ कहे अमर सुण मित्रजी रे, में एह नवि मूकाय ॥ इहांथकी पग उपाडता रे, महारुं मन अकलाय रे ॥ व० ॥ ७ ॥ जोइ कमलस रीखु मुखडुं रे, एहना अधर लाल गुलाल॥ एह नम्मर अणियाली नली रे,

पसाय ॥ हे मंत्रीश्वर ताहरुं, फलियु नाग्य सहाय ॥ ५ ॥ मात देवद्रुपथी, सुतहूती ए कष्ट ॥ राखी पेटीमां तनय, कलु काम में ॥ ६ ॥ श्रीजिनधर्मप्रनावथी, थई विघ्न उपशांति ॥ अयश टल्युं वली, वाधी वमणी कांति ॥७॥ आव्यो एह निमित्तथी, मन वैराग्य अपार ॥ सुत स्थापी निजपद विन्हे, लीधो संयमनार ॥८॥ सुगतें गया बेहु मुनि, साध्यु आतम काज ॥ अमरदत्त कहे मित्र एम, व्यतर आणो वाज ॥ए॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हांरे मोरा वालमा ॥ ए देशी ॥ कहे अमरदत्त सुण मित्रानंद, करई काम विमास ॥ मोरा वालमा, हांरे मोरा बाधवा, हारे मोरा साजना ॥ ए आंकणी॥कलिया वलीया आगलें रे नाइ, जाये व्यतर नासी ॥मो०॥१॥ तुऊ उगारण काजें आपण, जाग्रु वे परदेश ॥ मो० ॥ तुऊ मुऊ प्रीति बनी अति गाढी, जिहां तु तिहा सहि देश ॥ मो० ॥ २ ॥ नाइ बेह न देवो तुऊने, जिहां लगें घटमां प्राण ॥ मो० ॥ शी चिंता चित्तमां धरो रे नाइ, मोजी तु महेराण ॥ मो० ॥ ३ ॥ सात मृगलानी प्रीतडी रे राखें, साजन जीवित सीम ॥ मो० ॥ नेह करी दीये नेहजो रे वालमा, मित्र नहिं ते गनीम ॥ मो० ॥ ४ ॥ मित्रानंद सुणी बोलीयो रे ॥ बंधवा ॥ तु सुकुमार शरीर ॥ मो० ॥ सुख मूकी परदेशहे रे ॥ ब० ॥ केम सहेवा शे पीड ॥ मो० ॥ ५ ॥ कहे अमर जे प्रीतिना रे ॥ ब० ॥ बोल्या बहु परे बोल ॥मो०॥ मुऊ घटमा तुऊ नेहलो रे ॥ब०॥ बेगो जेम रंगचोल॥मो० ॥६॥ ए अवसर आवी पडघे रे॥ ब० ॥ केम रहु नेहने नाखि ॥ मो० ॥ तुऊ विण सवि ग्रनु इहां रे ॥ ब० ॥ तु तो मोरी आंख ॥ मो० ॥ ७ ॥ एकमना थया ते बन्ने रे ॥ ब० ॥ जुर्ज जुर्ज नेहनी वात ॥ मो० ॥ नेह निवेहे ते नला रे ॥ ब० ॥ जननीजाया सुजात ॥ मो० ॥ ८ ॥ काम पडे कूवी चले रे ॥ब०॥ कलिमां जूवो कुजात ॥मो०॥ कामवेला आवि मले रे ॥ब०॥ खाये मारी लात ॥मो०॥ए॥ माखण साजन बेहुमां रे ॥बं०॥ सज्जन अति सुकुमाल ॥ मो० ॥ तापें माखण वीघरे ॥ साजनां ॥ प्रतापे ततकाल ॥ मो० ॥ १० ॥ सोनु सुपुरुष चवना रे ॥ सा० ॥ आपण पीड खमत ॥ मो० ॥ कुल कसवटें जाणीयें रे ॥ सा० ॥ पर उपकार करंत ॥ मो० ॥ ११ ॥ तुंब कटुक वंती नीरसा रे ॥ सा० ॥ दारुक ग्रक्क तेम ॥मो०॥ स्वर

सुणो नाविया रे लो, परदेशी तुमें आविया रे लो ॥ आवो अमारे घेर प्राहुणा रे लो, मत मनमांहे राखो मणा रे लो ॥ ४ ॥ करशुं तुम्हारी चाकरी रे लो, जे अमथी थाशे खरी रे लो ॥ शेठें वात अगी करी रे लो, अमर ने मित्र कहे फरी रे लो ॥ ५ ॥ जो तुमो आपो जी आगना रे लो, तो जइ जोइ आवु अगना रे लो ॥ अमर कहे परदेशडे रे लो, केम मूकाय इण वेशडे रे लो ॥ ६ ॥ तुज दुःख वातज सांजली रे लो, चूकी जाय मोरी झागली रे लो ॥ मूकु तुज अलगो परो रे लो, ते उंघ वेचीने उजागरो रे लो ॥ ७ ॥ तुजथी अलगो हु नवि रहु रे लो, सुख दुःख वात कोने कहुं रे लो ॥ जेम जीवाय तेम जीवशु रे लो, श्वास तिहा लगें शीव शु रे लो ॥ ८ ॥ मित्र कहे जांख्युं खरु रे लो, पण तुज दुःख टालु खरुं रे लो ॥ पण में तुज पासें रही रे लो, आरत न खमाये सही रे लो ॥ ए ॥ आवीश हु दो मासमां रे लो, मत मन पाडो विमासमां रे लो ॥ तुज पासें मुज जीवडो रे लो, तु मुज हृदयनो दीवडो रे लो ॥ १० ॥ कष्टे समजाव्यो घणु रे लो, हा कही मन करी दूमणु रे लो ॥ अमरने सोंपी शेठने रे लो, पोतें चल्यो पुर ठेठनें रे लो ॥ ११ ॥ जुर्ज प्रीति ए आकरी रे लो, परदेशमां एम चाकरी रे लो ॥ प्रीति ए वडर दीवनु रे लो, प्रीति परम सुख जीवनु रे लो ॥ १२ ॥ पहोतो तेह सोपारकें रे लो, पूछतो फरि घर पारके रे लो ॥ ढुंढता शूरने सांजल्यो रे लो, चिंते मनोरथ सहि फल्यो रे लो ॥ १३ ॥ करनी वेची मुडडी रे लो, वेश अवल शिर पाघडी रे लो ॥ ठाठ बनायो दीपतो रे लो, देवकुमरने जीपतो रे लो ॥ १४ ॥ आव्यो रें कलट आपणे रे लो, शूर सुतारने आंगणे रे लो ॥ उठीने ते ऊनो थयो रे लो, सात आठ पग साहामो गयो रे लो ॥ १५ ॥ जाग्य जे राज पधारीया रे लो, काज कहो उपगा रीया रे लो ॥ मित्र कहे हवे आदरें रे लो, देवकुल काज ठे माहरे रे लो ॥ १६ ॥ तुमें कोइ ठाम कारिगरी रे लो, करी होय तो कहो ने खरी रे लो ॥ कहे कारीगर तानमा रे लो, पाडलीपुर उद्यानमां रे लो ॥ ॥ १७ ॥ देवल में कर्युं सोहतु रे लो, देंव दानव मन मोहतु रे लो ॥ दीठु होशे तुमें काहरें रे लो, कुमर कहे हा सांजरे रे लो ॥ १८ ॥ पण तिहां एक पंचालिका रे लो, सुघड घडी ए कोनी वालिका रे लो ॥

अहो छुउं एहनुं भाल रे ॥ व० ॥ ७ ॥ तुने भूख लागी वालहा रे, भूख भागी जोइ ॥ क्षण एक एहनो सग न तजू रे, मुझने न कहेशो रे ॥ घ० ॥ ए ॥ हु देखी मोह्यो एहने रे, म्हारे ए जीवनप्राण ॥ मित्र मनमां डुःख धरे रे, ए हुउं कवण विन्नाण रे ॥ व० ॥ १० ॥ चिंता म्हारी वीसरी रे, ए थइ सवली पीर ॥ एम हृदय भितर डुःख धरे रे, झरे ते नयणे नीर रे ॥ व० ॥ ११ ॥ वेहु गाढस्वरशु रुवे रे, सवि सांजली घरबार ॥ वैरागरंगविना नहि रे, कोइ मोहनो उपचार रे ॥ व० ॥ १२ ॥ तेह वेलामां आवियो रे, प्रासादकारक शेठ ॥ रोइने कांइ थाउ डुःखीया रे, कोण करशो तुम वेठ रे ॥ व० ॥ १३ ॥ हु रत्नसारानिध भलो रे, तुमें दाखवो डुःख मुझ ॥ वात विण भांखे हुते रे, केम जणाये प्रगुझ रे ॥ व० ॥ १४ ॥ हवे वात कहेशे चित्तनी रे, सुणो खम्म त्रीजे ढाल ॥ राम कहे पर डुःख भजन रे, धन्य धन्य जे उजमाल रे ॥ व० ॥ १५ ॥ सर्वगाथा १ ६ए श्लोक१

॥ दोहा ॥

॥ मित्र कहे सुण तातजी, ए मुझ मित्र अजाण ॥ शु जाणु एहने शुं थयु, मोह्यो रूप पहाण ॥ १ ॥ शेठें समजावी कह्यु, पण नवि मूके राग ॥ शेठ सचितो चितवे, आणी मन वैराग ॥ २ ॥ कामणगारी कामिनी, मोह्यो सघलो लोक ॥ सुर नर किन्नर भोलव्या, ए जग म्होटो शोक ॥३॥ यडुक्त ॥ तावन्मौनी यतिर्ज्ञानी, सुतपस्वी जितेंद्रिय ॥ यावन्न योषितां दृष्टि, गोचरं याति पुरुष ॥ १ ॥ दोहो सोरठी ॥ तप जप सयम ताम, नर साधे निरता घणा ॥ हिये न लागे जाम, नयणबाण नारी तणां ॥ ४ ॥ मित्रानद कहे शेठजी, शो करशुंज उपाय ॥ कुण रमणीनुं रूप ए, मुझने कहो समजाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नयण सलूणा नवना रे लो ॥ ए देशी ॥ शेठ कहे सुणो भाइला रे लो, खरा दीसो छो रे काहिला रे लो ॥ खबर नहिं ए अमने रे लो, कोण रमणी कहु तुमने रे लो ॥ १ ॥ अछे कारीगर एहनो रे लो, सोपारक पुर जेहनो रे लो ॥ शूर नामें सूत्रधार छे रे लो, ते एहनो करनार छे रे लो ॥ २ ॥ मित्रानद कहे एहनी रे लो, सार करो जो वेहनी रे ॥ खबर लेइ आवु सही रे लो, शेठजी उत्तर द्यो वही रे लो ॥ ३ ॥ शेठ कहे

रे लाल, थागें जगमां कोय ॥म०॥ सा० ॥ ५ ॥ रयणी गइ रवि ऊगीयो रे लाल, शबनो कस्यो संस्कार ॥म०॥ डोप रह्यु नाडु न दे रे लाल, ईश्वर खल शिरदार ॥ म० ॥ सा० ॥ ६ ॥ मित्रानंद कहे जो हशे रे लाल, एणें नगरी कोइ राय ॥म०॥ तो माहरु रहेशे नही रे लाल, लेशु ढाक वजाय ॥म० ॥ सा० ॥७॥ ऊठी चाल्यो चहूवटे रे लाल, सत्यदाता रे सार ॥म०॥ उन्नट वेश बनावीयो रे लाल, गयो गणिका घर बार ॥ म० ॥ सा० ॥ ८ ॥ तिलक मंजरी उन्नी थइ रे लाल, दीधू बहु सन्मान ॥म०॥ आप्यु आसन बेसवा रे लाल, उन्नी जोडी पाण ॥म०॥सा०॥९॥ राज पधास्या आंगणे रे लाल, आज फली मोरी आश ॥म०॥ खीजमत करशे ए सुता रे लाल, वसततिलका खास ॥म०॥सा०॥१०॥ आवो मंदिर माहरे रे लाल, साची सुरतरु जेम ॥ म० ॥ रंगें रमो इण मालिये रे लाल, जेम मन माने तेम ॥म०॥ सा०॥ ११ ॥ आपे मनमोदें करी रे लाल, चारशें तस दीनार ॥म०॥ धन देखी रीझी घणु रे लाल, धन मोहन संसार ॥ म० ॥ १२ ॥ नक्ति युक्ति कीधी नली रे लाल, ढाली सुंदर सेज ॥ म० ॥ पुत्री पासें मोकली रे लाल, सांऊ समय धरि हेज ॥म०॥सा०॥१३॥ कन्नी आगल आवीने रे लाल, सुररमणी अनुहार ॥म०॥ मधुरस्वरें बोले हसी रे लाल, मानिनी करे मनोहार ॥ म० ॥ सा० ॥ १४ ॥ नयणविलासें चालवे रे लाल, सुर नर असुरना चित्त ॥ म० ॥ नल नोलाव्या नामिनी रे लाल, ले हरी तन मन वित्त ॥ म० ॥सा०॥१५॥ जोर करी युवती घणां रे लाल, नाखे नयननां बाण ॥ म० ॥ पण कुंवर नेदे नहि रे लाल, चिंते एम सुजाण ॥ म० ॥ सा० ॥ ॥१६॥ विषयासंगें बाहीयां रे लाल, काम न थाये सिद्ध ॥म०॥ मन राख्यु हटकी घणु रे लाल, कहे उत्तर धरि बुद्धि ॥म०॥ सा० ॥ १७ ॥ समरण करवु माहरे रे लाल, लावो आसन एक ॥ म० ॥ सोवनपट मांड्यो तिहां रे लाल, बेठो तिहां सुविवेक ॥ म० ॥ सा० ॥ १८ ॥ ओढण उंढी कपरें रे लाल, बेठो जपवा जाप ॥म०॥ नाव देखाडे नामिनी रे लाल, पण नवि ऊल्यो आप ॥ म० ॥ सा० ॥१९॥ एम रयणी वोली गइ रे लाल, प्रमदा हूइ निराश ॥ म० ॥ धन्य ते जगमां साहसी रे लाल, न पडे रमणीपाश ॥ म० ॥ सा० ॥२०॥ ढाल नणी ए आठमी रे लाल, त्रीजे खंडें रसाल ॥म०॥ रामविजय कहे सांनलो रे लाल, आगल थइ उजमाल ॥म०॥सा०॥२१

शूर कहे महसेननी रे लो, पुत्र अवंतीना ईशनी रे लो ॥ १९ ॥ मंजरी कुंवरी जली रे लो, तस अनुसारें करी पूतली रे ॥ सुणी कहे म इछा घणी रे लो, देवकुल मकावा तणी रे लो ॥ २० ॥ अवसर ने तेडावशुं रे लो, एम कही चाल्यो स्वनावशु रे लो ॥ हर्ष धरीने आवी यो रे लो, नयरि अवंती मन नावियो रे लो ॥ २१ ॥ सांजलो साहस वारता रे लो, जे इहां नीपजशे कथा रे लो ॥ त्रीजे खमें ढाल सातमी रे लो, साजन जन मन सक्रमी रे लो ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥१९६॥ श्लोक॥

॥ दोहा ॥

॥ संध्या समयें आवियो, नयरि अवंती मकार ॥ पोलतणी रखवालिका, देवीनें दरबार ॥ १ ॥ पंथीडा देवल शरण, के सरोवरनी पाल ॥ पंथी कोइ दयामणा, जेम जेम पडे वियाल ॥ २ ॥ मनमांहे चिंते माहरा, वंधवनुं जो काम ॥ थाये तो सूधी रहे, माहारी महोटी माम ॥ ३ ॥ इण अवसरें तिहां वाजतो, पडहो आव्यो एक ॥ पूछे दौवारिक प्रत्यें, पडह तणो शु विवेक ॥ ४ ॥ ते कहे सांजल पंथीया, ए नगरीनी वात ॥ मारीपरानव छे घणो, तिणे न रहे शव रात ॥ ५ ॥ ईश्वरशेठ तणो जनक, सांक समे परलोक ॥ पहोतो पोल जडी तदा, मनमांहे धरि शोक ॥ ६ ॥ शवनें राखे रात्रिमां, साहसिक शिरदार ॥ देउ सहस दीनार तस, पडह तणो ए विचार ॥ ७ ॥ मित्रानंद मन चिंतवे, धन विण काज न होय ॥ तिण कारण अंगी करु, अवसर एहवो जोय ॥८॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी अजबेलानी ॥ मित्रानंद कहे माहरे रे लाल, खोले घालो धन ॥ मन मान्या रे ॥ चार पहोर रयणी तणा रे लाल, शवनां करे यतन्न ॥ म० ॥ १ ॥ साहसथी सवि संपजे रे लाल, साहसगुणनुं गेह ॥ म० ॥ कानें कुंमल रयणमय रे लाल, आंखे आंजण रेह ॥ म० ॥सा०॥२॥ आगलथी तस आपीशुं रे लाल, ईश्वरें नाण्यु आम ॥ म० ॥ धैर्य धरी शव साचवे रे लाल, मित्रानंद निरावाध ॥ म० ॥ सा० ॥ ३ ॥ नूत पिशाच घणा तिहां रे लाल, प्रगट्यां रयणमकार ॥ म० ॥ हाकहूती रहे वेगलां रे लाल, न चले कोइनो चार ॥ म० ॥ सा० ॥ ४ ॥ कायरने करडे सहु रे लाल, न हणे धींगनें कोय ॥म०॥ वलि न दीये मजीया तणो

कुवरने, आवी गोंखे सीधी ॥ सो० ॥ ११ ॥ वप्रवलय जिहां सात विरा
जे, राजमंदिर अति रूडुं रे ॥ तिहां ए कन्यामंदिर सुंदर, दीसे मोरनु इंडु
॥ सो० ॥ १२ ॥ तेहने गोंख अछे मनमोहन, इहां जो तुमथी जवाये
रे॥ तो वहेला जावो मनोवांछित, कारिज सहेजें थाये ॥ सो० ॥ १३ ॥
कुट्टिनीनें वोलावी वलतो, प्लवग परें देइ फाल रे ॥ राज भुवनना कोट
उलंघी, पहोतो जइ ततकाल ॥ सो० ॥ १४ ॥ चिंते अक्का कोइ अतुल व
ल, पुरुषप्रधान ए दीसे रे ॥ एम चिंतवती गेहें आवी, धरती हियडे
जगीश ॥ सो० ॥ १५ ॥ कन्यामंदिर आव्यो कुंवर, देखीने विस्मय
पामी रे ॥ कोइ सबल शूरीनो जायो, नहिं वलमांहे खामी ॥ सो० ॥
१६ ॥ निद्रा कपट करीने सूती, तस चर्याने धारे रे ॥ निद्रावश देखी
नामांकित, कंकण करनु उतारे ॥ सो० ॥ १७ ॥ छुरिका लेइ दक्षिण
जघें, त्रण करी तेणें रेख रे ॥ जेम आव्यो तेम पाछो वलियो, हियडे हर्षे
अलेख ॥ सो० ॥ १८ ॥ कुमर ते नहि सामान्य ए, पण में जावा दीधो
रे ॥ माही हती पण सबली चूकी, नवि वोलाव्यो सीधो ॥ सो० ॥
१९ ॥ मित्रानंद जई देवकुलमां, रातें सुखमां सूतो रे ॥ कुमरी नयणथी
निद्रा नाठी, दिल तेमांहे खूतो ॥ सो० ॥ २० ॥ आवे उंघ करावे सब
ली, थये प्रभातें जाग्यो रे ॥ हीसे हर्ष धरि हियडामां, पासो पडयो मुंह
माग्यो ॥ सो० ॥ २१ ॥ त्रीजे खमें नवमी ढालें, वात रसिक सुणो साची
रे॥ रामविजय कहे मित्रता न कही, काम पडे जे काची॥सो०॥२२॥२५२॥

॥ दोहा ॥

चिंते मित्रानंद ते, अर्धदाम अवशेष ॥ ईश्वर मुज दीधा नहिं, पण लेवा
मीन न मेष ॥ १ ॥ जुवो ते ठग मुजने मल्यो, मांग्या जेणें मुज दाम ॥
पण दरवारें जाइने, करवु ए में काम ॥ २ ॥ चिंती चल्यो उतावलो, आ
व्यो राज डुवार ॥ रुदन करे महोटे स्वरें, उभो ते दरवार ॥ ३ ॥
राय सुणी तेडावियो, कां एम रडे अपार ॥ न्याय नहि इण नयरीयें,
मुज धूत्यो निर्धार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ कर्म परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥ कहे राजा सुण पंथी
वापडा रे, केम रुवे छे आम ॥ शुं धूतीने लीधु तांहरु रे, कहे मुज तेहनु

॥ दोहा ॥

॥ मा आगल पुत्री कहे, रात तणो विरतंत ॥ मुफ सामुं नाख्युं नहिं, ध्यान धखुं एकांत ॥ १ ॥ कहे अक्का कलट धरी, पुत्री एह रतन्न ॥ नट ट मांमी वश करो, एहनां घणां यतन्न ॥ २ ॥ वीजे दिन तिमहिज कयुं, पण नवि लोन्यो तेह ॥ अक्का रीपाणी कहे, श्यो पारखंम नित्य एह ॥ ३ ॥ राजकुमरने जेहनुं, दरिसण देवडुलन्न ॥ ए मुफ तनुजा उतरी, स गेथकी मनु रंन्न ॥ ४ ॥ ते साहामुं निरखो नहि, शी तुम मनमां आश ॥ मन सुखी वातो करी, किम थइ रह्या उदास ॥ ५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ बाले वेषें बावरी नानी ॥ ए देशी ॥ कुमर कहे सवि रूडुं थाशे, जे तुमें कहेशो ते करशुं रे ॥ पण पूछु ते वात प्रकासो, बोलथकी नवि फरशुं ॥ १ ॥ सोहागण नांखोने, तुमें नृपकुमरीनें जाणो के, ना मुफ दाखो ने ॥ ए आंकणी ॥ ते सार्थे एक काम छे माहरे, कागलीयो छे देवो रे ॥ कांइ क संदेशो नांखीनें, पाछो परुत्तर लेवो ॥ सो० ॥ २ ॥ कहे अक्का मुफ पुत्री सार्थे, तेहने प्रीति छे जाफी रे ॥ कहो ते वात कहीनें आवु, ए कामें हुं राजी ॥ ३ ॥ कुमरजी नाखोनें ॥ अम सार्थे जीवनजी आज, अंतर मत राखोने ॥ ए आंकणी ॥ ते आगल जइने एम कहेवु, गुण जेह ना सुणि उल्लसी रे ॥ तें जेहने कागल लखीयो तस, आव्यो मित्र छे मिलशी ॥ कु० ॥ ४ ॥ अक्का राजकुमरीनी पासें, आवे राग धरीने रे ॥ कन्यायें आदर देइ बोलावी, बोले प्रीति करीने ॥ कु० ॥ ५ ॥ तुफ वाल्हे सरनो संदेशो, हु कहेवाने आवी रे ॥ विस्मित राजकन्या मन चिंते, ए शुं बोले चावी ॥ सो० ॥ ६ ॥ कुण मुफ वल्लन्न कुमरी नांखे, तब अक्का तिहां वोली रे ॥ मित्रानंदें कहाव्युं सघलु, नांख्यु मनडुं खोली ॥ सो० ॥ ७ ॥ कुमरी विमासे हु कोण ते कोण, नाम अमरदत्त जेहनु रे ॥ पण कांइ कूडी रचना दीसे, गाम न जाणु तेहनुं ॥ सो० ॥ ८ ॥ पण जेणे कूड रचना कीधी, तेहने नजरें निहालु रे ॥ एम विमासि अक्काने नांखे, वाक वयण रसालु ॥ सो० ॥ ए ॥ जेणें मुफ वल्लन्न वात प्रकासी, तेहनें तेडी लावो रे ॥ गोंख तणे मार्गे रगीलो, माहरे तेहशुं दावो ॥ सो० ॥ १० ॥ सुणी हरखी अक्का गइ गेहें, वात कुमरशुं कीधी रे ॥ रात समे तेडी

वरने, आवी गोंखे सीधी ॥ सो० ॥ ११ ॥ वप्रवलय जिहां सात विरा
, राजमंदिर अति रूडुं रे ॥ तिहां ए कन्यामंदिर सुंदर, दीसे मोरनुं इंडु
सो० ॥ १२ ॥ तेहने गोंख अछे मनमोहन, इहां जो तुमथी जवाये
॥ तो वहेला जावो मनोवांछित, कारिज सहेजे थाये ॥ सो० ॥ १३ ॥
ट्टिनीनें बोलावी वलतो, प्लवग परें देइ फाल रे ॥ राज भुवनना कोट
लंघी, पहोतो जइ ततकाल ॥ सो० ॥ १४ ॥ चिंते अक्का कोइ अतुल ब
, पुरुषप्रधान ए दीसे रे ॥ एम चिंतवती गेहें आवी, धरती हियडे
जगीश ॥ सो० ॥ १५ ॥ कन्यामंदिर आव्यो कुंवर, देखीने विस्मय
ामी रे ॥ कोइ सबल शूरीनो जायो, नहिं बलमांहे खामी ॥ सो० ॥
१६ ॥ निद्रा कपट करीनें सूती, तस चर्याने धारे रे ॥ निद्रावश देखी
नामांकित, कंकण करनुं उतारे ॥ सो० ॥ १७ ॥ छुरिका लेइ दक्षिण
जघें, व्रण करी तेणें रेख रे ॥ जेम आव्यो तेम पाछो वलियो, हियडे हर्ष
अलेख ॥ सो० ॥ १८ ॥ कुमर ते नहि सामान्य ए, पण में जावा दीधो
रे ॥ मांही हती पण सबली चूकी, नवि बोलाव्यो सीधो ॥ सो० ॥
१९ ॥ मित्रानंद जई देवकुलमां, रातें सुखमां सूतो रे ॥ कुमरी नयणथी
निद्रा नाठी, दिल तेमांहे खूतो ॥ सो० ॥ २० ॥ आवे उंघ करावे सब
ली, थये प्रभातें जाग्यो रे ॥ हीसे हर्ष धरि हियडामां, पासो पड्यो मुह
माग्यो ॥ सो० ॥ २१ ॥ त्रीजे खंमें नवमी ढालें, वात रसिक सुणो साची
रे ॥ रामविजय कहे मित्रता न कही, काम पडे जे काची॥सो०॥२२॥२५२॥

॥ दोहा ॥

चिंते मित्रानंद ते, अर्धदाम अवशेष ॥ ईश्वर मुज दीधा नहि, पण लेवा
मीन न मेष ॥ १ ॥ जुवो ते ठग मुजने मल्यो, जांग्या जेणें मुज दाम ॥
पण दरबारें जाइने, करवुं ए में काम ॥ २ ॥ चिंती चल्यो उतावलो, आ
व्यो राज डुवार ॥ रुदन करे महोटे स्वरें, उनो ते दरबार ॥ ३ ॥
राय सुणी तेडावियो, कां एम रहे अपार ॥ न्याय नहिं इण नयरीयें,
मुज धूत्यो निर्धार ॥ ४ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ कर्म परीक्षा करण कुमर चल्यो रे ॥ ए देशी ॥ कहे राजा सुण पंथी
बापडा रे, केम रुवे छे आम ॥ मुज धूतीने लीधुं तांहरुं रे, कहे मुज तेहनुं

नाम ॥ १ ॥ सुण राजेश्वर माहरी विनति रे, कहु तुम आगल वाच ॥ मात पिता नृप देव गुरु आगलें रे, नित्यें भांखवु साच ॥ सु० ॥ २ ॥ लोकपाल ताहरी नवि लेखवी रे, आणा जेणें उतार ॥ देश तणो इहां ईश्वर वाणीयो रे, ते सबलो धूतार ॥ सु० ॥ ३ ॥ राख्युं रातें तेहना त तनु रे, महड में माहाराज ॥ भांग्यु अरधू भाडुं माहरु रे, वैद्य वेरी हुवे काज ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुकम करो आरक्षक नर भणी रे, बांधी आणो आज ॥ दीयो शिखामण सूधी तेहने रे, जिण लोपी मुझ लाज ॥ सु०॥ ५ ॥ तेहवे निसुण्युं तेणे वाणीये रे, फरीयादी हुउं तेह ॥ लेइ दीनारनें दोढी आवीयो रे, साहमो नृपनें गेह ॥ सु० ॥ ६ ॥ आप्या हाथोहाथ तेहने रे, कहे नृपने कर जोडि ॥ ते दिवसें कारजनी व्यग्रता रे, नापि शक्यो ए खोड ॥ सु० ॥ ७ ॥ दिवस वे त्रण लगें लोकाचारमां रे, वी त्या ए मुझ वांक ॥ लोक सहु कहे साहुकारमा रे, आडो वाल्यो आंक ॥ सु० ॥ ८ ॥ रायें खुशाल थइ वोलावीयो रे, ते पहोतो निज घेर ॥ नृप पूछे तव मित्रानदने रे, शब राख्यु शी पेर ॥ सु० ॥ ए ॥ कहे स्वामी सुण ते रयणी समे रे, शब रक्षणनें हेत ॥ बेठो छुरिका लेई हाथमां रे, प्रथम प्रहरसकेत ॥ सु० ॥ १० ॥ दारुण फेरी विरव तव सांभल्यो रे, जिणे फूटे ब्रह्मांम ॥ प्रगटी पिंगलरोम शियालिणी रे, हु रह्यो धीर अखं म ॥ सु० ॥ ११ ॥ बीजे प्रहरें प्रगटी राक्षसी रे कृष्णवर्ण अति घोर ॥ मुझ पासें वीटाणी चिह्नु दिशें रे, पण न चल्यो तस शोर ॥ सु० ॥ १२ ॥ त्रीजे प्रहरे आवी शाकिनी रे, रे रे कुण तुं रंक ॥ में हांकी त्रण की ते गई रे, जाण्यु कोइ त्रिवक ॥ सु० ॥ १३ ॥ चोथे यामें वस्त्रवि भूपिता रे, दिव्याभरण अमूल ॥ छूटे केशें कर कातीग्रही रे, धीरज मेले धूल ॥ सु० ॥ १४ ॥ में मन जाण्यु ए मारी सही रे, जेहनो पुरमां सोर ॥ छुरिका लेइ हु साहमो धश्यो रे, करशुं साही जोर ॥ सु० ॥ १५ ॥ नासण लागी कर छोडाविने रे, तस कंकण मुझ हाथ ॥ आव्यो त्रण रेखा जाघे करी रे, छुरिकायें में नाथ ॥ सु० ॥ १६ ॥ नाठी स रज उग्यो एहवे रे, हु आव्यो तुम पास ॥ वचन सुणी अपरिजतु राजीयो रे, बोल्यो चित्त विमास ॥ सु० ॥ १७ ॥ वीर पुरुष मुझ देखा डो तुमो रे, कंकण देवीनु मित्त ॥ निजनामांकित देखीनें तदा रे, राय

हुउं चलचित्त ॥ सु० ॥ १८ ॥ शुं मुफ पुत्री दीसे मारिका रे, तस कक ण सहि एह ॥ देहचितामिषें करीने आवियो रे, नृप पुत्रीनें गेह ॥ सु० ॥ १९ ॥ सूती दीठी विण ककण बालिका रे, हा हा प्रगट्यू पाप ॥ तेम वृणस्थानक पाटो देखीनें रे, उपन्यो मन सताप ॥ सु० ॥ २० ॥ हा हा कुल निर्मल मेलुं कियु रे, इण पापिणीयें आज ॥ लोक सहु मा ह्यां हत्यारीयें रे, खोवरावी मुफ लाज ॥ सु० ॥ २१ ॥ तेमाटें वहेली बाहार करु रे, नहितर सघलां लोक ॥ मारे ए चमालिणी आकरी रे, स्यो हवे एहनो शोक ॥ सु० ॥ २२ ॥ राजसनायें पाठो अवियो रे, बेठो नृप उदास ॥ जोजो नवियण तुमें नावें करी रे, कहुउं कर्मविलास ॥सु०॥२३॥ त्रीजे खमें दशमी ढालमा रे,चित्त फरियु नरराज॥रामविजय कहे धूर्तकलाथकी रे,विहि पण आवे बाज॥सु०॥२४॥स०॥२८०॥श्लोक॥७॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति ते बेसारियो, मित्रानद नजीक ॥ छु साहस के मत्रवल, नांखो वचन तहकीक ॥ १ ॥ कुलक्रमागत माहरे, मत्र अछे वलि एक ॥ पण साहस विण नवि फले, सुण राजन सुविवेक ॥ २ ॥ सना विस र्जावी तदा, बेहु बेठा एकात ॥ नृप कहे महारी पुत्रिका, मारी सही नहि भ्राति ॥ ३ ॥ हवे उपकारी तु मल्यो, तेहनो कर निस्तार ॥ कहे कुवर तुम कुल तणी, किम एहवी होय नारि ॥ ४ ॥ नृप नणे सशय किश्यो, जलद रूपनी जोय ॥ जलवाला जननें हणे, कहो कुण कारण सोय ॥ ५ ॥ हिम सदेजें शीतल हुवे, पण वाले वनराइ ॥ ए अतरनी वारता, कोणें कली न जाय ॥ ६ ॥ जाणु कुलमा रूपनी, कल्पवेली उपमान ॥ पण जनमूल वछेदवा, थइ कूहाडी समान ॥७॥ मित्र कहे माहाराजजी, म करो फिकर लगार ॥ नजरें देखाडो मुने, करशुं तस उपचार ॥ ८ ॥ राय कहे जाई जुउ, कन्या मदिरमांहे ॥ सूती कठी सा जुए, आवतो बस्साह ॥ ९ ॥ जेणें मुफ ककण हयु, छुरिप्रहार ए दीध ॥ ते ए नर होवे सही, एम मन निश्चय कीध ॥१०॥ राजहुकम विण इण समे, आ वे नहिं नि शक ॥ आसन मांमयु बेसवा, मूकी मन नि शक ॥ ११ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ देशी हमीरियानी ॥ कुमरी कहे कर जोडिनें, कुण काजें तुमें आज

नाम ॥ १ ॥ सुण राजेश्वर माहरी विनति रे, कहुं तुम आगल वाच ॥ मात पिता नृप देव गुरु आगलें रे, नित्यें नांखवु साच ॥ सु० ॥ २ ॥ लोकपाल ताहरी नवि लेखवी रे, आणा जेणें उतार ॥ देश तणो ईश्वर वाणीयो रे, ते सबलो धूतार ॥ सु० ॥ ३ ॥ राख्यु रातें तेहना तनु रे, महडं में माहाराज ॥ नांग्यु अरधू नाडुं माहरु रे, वैय वैरी हुं काज ॥ सु० ॥ ४ ॥ हुकम करो आरक्षक नर नणी रें, बांधी आणो आज ॥ दीयो शिखामण सूधी तेहने रे, जिण लोपी मुऊ लाज ॥ सु० ॥ ५ ॥ तेहवे निसुण्यु तेणे वाणीये रे, फरीयादी हुउं तेह ॥ लेइ दीनारनें दोडी आवीयो रे, साहमो नृपनें गेह ॥ सु० ॥ ६ ॥ आप्या हाथोहाथ तेहने रे, कहे नृपने कर जोडि ॥ ते दिवसें कारजनी व्यग्रता रे, नापि शक्यो ए खोड ॥ सु० ॥ ७ ॥ दिवस वे त्रण लगें लोकाचारमां रे, वी त्या ए मुऊ वांक ॥ लोक सहु कहे साहुकारमा रे, आडो वाल्यो आंक ॥ सु० ॥ ८ ॥ रायें खुशाल थइ बोलावीयो रे, ते पहोतो निज घेर ॥ नृप पूछे तब मित्रानदने रे, शब राख्यु शी पेर ॥ सु० ॥ ए ॥ कहे स्वामी सुण ते रयणी समे रे, शब रक्षणनें हेत ॥ वेगे छुरिका लेई हाथमां रे, प्रथम प्रहरसंकेत ॥ सु० ॥ १० ॥ दारुण फेरी विरव तव सांजल्यो रे, जिणे फूटे ब्रह्माम्ड ॥ प्रगटी पिंगलरोम शियालिणी रे, हु रह्यो धीर अखंम ॥ सु० ॥ ११ ॥ बीजे प्रहरें प्रगटी राक्षसी रे कृष्णवर्ण अति घोर ॥ मुऊ पासें वीटाणी चिहुं दिशें रे, पण न चल्यो तस शोर ॥ सु० ॥ १२ ॥ त्रीजे प्रहरे आवी शाकिनी रे, रे रे कुण तु रंक ॥ में हांकी उश की ते गई रे, जाणु कोइ त्रिवक ॥ सु० ॥ १३ ॥ चोथे यामें वस्त्रवि चूपिता रे, दिव्याजरण अमूल ॥ छूटे केशें कर काती ग्रही रे, धीरज मेले धूल ॥ सु० ॥ १४ ॥ में मन जाण्यु ए मारी सही रे, जेहनो पुरमां सोर ॥ छुरिका लेइ हु साहमो धस्यो रे, करछुं साही जोर ॥ सु० ॥ १५ ॥ नासण लागी कर छोडाविने रे, तस ककण मुऊ हाथ ॥ आव्यो त्रण रेखा जाघे करी रे, छुरिकायें में नाथ ॥ सु० ॥ १६ ॥ नाठी सूरज उग्यो एहवे रे, हु आव्यो तुम पास ॥ वचन सुणी अचरिजनुं राजीयो रे, वोल्यो चित्त विमास ॥ सु० ॥ १७ ॥ वीर पुरुष मुऊ वेखाडो तुमो रे, ककण देवीनु मित्त ॥ निजनामांकित देखीनें तदा रे, राय

धात ॥ र० ॥ वाह्ाली पण वेरिणी थई, सवली कर्मनी वात ॥ र० ॥
वा० ॥ १७ ॥ वडवा उपर हाथशु, वेसारी ते वाल ॥ र० ॥ साथ संप्रे
डण चालियो, पोल सुधी नृपाल ॥ र० ॥ वा० ॥ १९ ॥ ह्वे चाल्यो लेइ
चोंपशु, मित्रानद कुमार ॥ र० ॥ मनमाहे चिते माह्रो, सफल थयो
अवतार ॥ र० ॥ वा० ॥ २० ॥ वडवा चाले उतावली, सा कहे वेसो
आवि ॥ कु० ॥ कुमर कहे सीम लंघीने, वेशिश दिल तु लाव ॥ र० ॥
वा० ॥ २१ ॥ क्षण एक पडखी कुवरी, लघी देशनी सीम ॥ र० ॥ फरि
कहे वेसो इहां ह्वे, केम लेई रह्या नीम ॥ कु० ॥ वा० ॥ २२ ॥ कुमरी
कहे कारण जे अछे, प्रकासो ह्वे तेह ॥ कु० ॥ अंतर में राख्यो नहिं,
तो शियो पटतर एह ॥ कु० ॥ वा० ॥ २३ ॥ में तुमनें आण्यां सही,
मूकावी कुललाज ॥ लाली जी ॥ मुक्त अर्थें मत जाणजो, लाइ अमर
दत्त काज ॥ र० ॥ वा० ॥ २४ ॥ वात समग्र कही तिहां, मित्रानंद
उदार ॥ ला० ॥ मत चिता करजो मने, करशु घणी मनोहार ॥ ला० ॥
वा० ॥ २५ ॥ तेमाटे एक आसनें, वेसवु न घटे मुक्त ॥ ला० ॥ वात
सुणी विस्मित थइ, समजी सघलुं गुह्य ॥ ला० ॥ वा० ॥ २६ ॥ मृग
नयणी मन चितवे, अहो अहो पुरुपरतन्न ॥ देवरजी ॥ लाग्यें मल्यो
मुझने सही, उत्तम एहनु जतन्न ॥ कु० ॥ वा० ॥ २७ ॥ जे तरुणीनें
कारणें, मात पिता वली वधु ॥ कु० ॥ वचीने वाछे कामने, पुरुप घणा
कामध ॥ कु० ॥ वा० ॥ २७ ॥ घूक न देखे दिवसमां, रात न देखे का
क ॥ कु० ॥ कामी न देखे अहोनिर्शे, चीकणो विपयनो वांक ॥ कु० ॥
वा० ॥ २९ ॥ मनोहर रूप ए माहरु, नरयौवन ए वेप ॥ कु० ॥ देखे
पण मोले नहिं, दु जइ पाय पडेश ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३० ॥ स्वार्थे
सहु को दुःख सहे, पण परमारथ कोय ॥ कु० ॥ परदुःखें दुःखीया
होये, ते जग विरला जोय ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३१ ॥ यत ॥ विरला जा
णति गुणा ०॥ १ ॥ धन धन ए जग प्रीतडी, जेहवी दूध ने नीर ॥
॥ कु० ॥ आप ठतां निज बधुने, उपजावे नहिं पीर ॥ कु० ॥ वा० ॥
॥ ३२ ॥ यडुक ॥ क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ता पुरा तेऽखिला,
क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा ह्यात्मा कृशानौ हुत ॥ गतु पावकमुन्म
नास्तदभवदृष्ट्वा तु मित्रापद, युक्त तेन जलेन शाम्यति पुनर्मैत्री सतामी

॥ कुमरजी ॥ मंदिर आव्या माहरे, महेर करी माहाराज ॥ कु० ॥ वात कहो मुफ मन तणी ॥ ए आंकणी ॥ रातें आव्या तुमें रंगशुं, बज आवास ॥कु०॥ कंकण लीधुं माहरु, काम कीधु ए खास ॥कु०॥वा० मत जाणो बंधी हती, हुं कपटें रही एम ॥ कु० ॥ पण परमंदिर नें, काम कर्यु ए केम ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ नडे में तुफनें दियो, एह कलंक ॥कु०॥ दोष सहु ए माहरो,तु सूधी निकलंक ॥ रसीली ॥ वा० ॥४॥ राजा आपशे तुफ नणी, महारे हाथ सुजाण ॥ रसीली ॥ जो तुफनें गमतुं होवे, तो लेइ जावं गाण ॥ र० ॥ वा० ॥ ५ ॥ जो न रुचे तो तुफनें, करु निकलंक सनूर ॥ र० ॥ कहो मुफ ए बेहु वातमां, गमती पुण्यपमूर ॥ र० ॥ वा० ॥ ६ ॥ सानली कन्या चिंतवे, तशुण रंजी तोर ॥ र० ॥ प्रेम अकृत्रिम एहनो, मुफ ऊपर अति जोर ॥ र० ॥ वा० ॥ ७ ॥ अंगीकरीयें डुखने, पण नवि मूकु एह ॥ र० ॥ राजलाज सोह लो कह्यो, डुलहो साजन नेह ॥ र० ॥ वा० ॥ ८ ॥ वलतु बोले सुंदरी, सुनग सुणो अरदास ॥ कु० ॥ प्राण ए आधीन ताहरे, जिहां तु तिहां मुफ वास ॥ कु० ॥ वा० ॥ ए ॥ सिद्ध मनोरथ ते कहे, नडे ए अवधार ॥ र० ॥ तुफ शिर जल गंटू यदा, तव मूके फिटकार ॥ र० ॥ वा० ॥ १० ॥ ते पण कुमरीयें आदर्यु, अहो अहो मोहनो बंध ॥ कु० ॥ नेह सहे एम डुखहां, जगमां ए महोटो धंध ॥ कु० ॥ वा० ॥ ११ ॥ रायसमीपें आवीयो, कहे कुमरी मुफ साध्य ॥ राजनजी ॥ कहे नृप हवे कतावला, काढो एह असाध्य ॥ साजनजी ॥ वा० ॥ १२ ॥ वाहन आणो एहवु, जाय निशा परदेश ॥ रा० ॥ जो वचें सूरज ऊगशे, तो आवशे फरि देश ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ राजा नय पाम्यो घणो, वायुवेगा इण नाम ॥ रा० ॥ जातीली वडवा दिये, असवारीने काम ॥ रा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ सध्या समयें नृपसुता, आणी केशें फालि ॥ रा० ॥ नृपआदेशें सेवकें, सोंपी तेहने तत्काल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ सरशव गंटे तेहने, सामो करे फिटकार ॥ र० ॥ नय पाम्यो नरवर तिहां, ध्रूजे अंग अपार ॥ र० ॥ वा० ॥ १६ ॥ गाढस्वरें हांकी तिहां, सार्ये शांत स्वनाव ॥ र० ॥ मंत्रशक्ति कोइ आकरी, सबलो एहनो प्रनाव ॥ र० ॥ वा० ॥ १७ ॥ शान करे राजा तिहां, एह न अवजी

तेहा, सहुए एम वारे ॥ पण राख्यो न रहे किमे, कुवर ते तिवारें ॥ अ० ॥ ७ ॥ वनमाहे काष्टचिता रची, वहु नागर साथे ॥ चाल्यो चिता पासे आकरो, झाल्यो न रहे वाथे ॥ अ०॥ ए ॥ लोक कहे आज अवधि गो, ठेल्लो दिन रहीने ॥ काले पठी करजो तुमें, जाणो तिम वहीने ॥ अ० ॥ १० ॥ मान्यु कहण ए लोकनु, हरख्यो सहु कोई ॥ ते वेहू जण आवता, रह्या तिण दिशें जोइ ॥ अ० ॥ ११ ॥ मित्रानंद उतावलो, आव्यो तेनी पासें ॥ लोक कहे कोइ पथीडो, धश्यो आवे उल्लासें ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमर सुणी साहमु जुवे, दीठो अलगेथी ॥ चाल दीसे माहरा मित्रनी, के होशे कोइ पथी ॥ अ० ॥ १३ ॥ क्यारथी आवे ते वालहो, जोईतो आज ॥ ऊवक नजिक आव्यो जिस्यो, निरख्यो सवि साज ॥ अ० ॥ १४ ॥ उलखी सामो आवीयो, वेहु वधव मलीया ॥ घणा दिवसरा विरहरा, आसू तव गलीयां ॥ अ०॥ १५ ॥ अहो वंधव तें आवतें, मुऊ जीवतो राख्यो ॥ तुऊ दीठे डुखपुज ए, सवि अलगो नाख्यो ॥ अ० ॥ १६ ॥ कहे मित्रानद वांधवा, जोवो ए सारी ॥ रत्नमजरी लावियो, चित्त चोरणहारी ॥ अ० ॥ १७ ॥ अमर कहे तें साचलुं, तुऊ नाम निपायु ॥ मित्रनें आनद जेहथी, मित्रानद गायुं ॥ अ० ॥ १७ ॥ लोक कहे एहना रूपनें, मोह्यो ते न्यायी ॥ मधुकर मालती मोहियो, नवि धावल जाइ ॥ अ० ॥ १ए ॥ पुण्य उदय थयो वारमी, ढालें सुणो लोका ॥ रामविजय कहे सामलो, हवे पुण्यशलोका ॥ अ० ॥ २० ॥३५२॥

॥ दोहा ॥

॥ सहुने आनद उपन्यो, देखी अचरिज वात ॥ मित्र मल्यो विरहो टल्यो, रोम रोम सुखशात ॥ १ ॥ तिहां उछाह थया पठी, अमरदत्त तिण वेल ॥ नाग्य जोगें जे नीपन्यु, ते निसुणो मन मेल ॥ २ ॥ तेह नयरनो राजीयो, अपुत्रीयो तिण काल ॥ मरण लह्यो मत्री प्रमुख, करे राज्यनी नाल ॥ ३ ॥ पंच दिव्य अधिवासीयां, मल्या लोकना वृद ॥ केइ रुवे केई हसे, महामोहनो फद ॥ ४ ॥ त्रिक चतुष्कनें चाचरें, वेगा वहु गुणवत ॥ हस्ती हींमे हर्षशुं, चिहु पासें निरखत ॥ ५ ॥ जव जोये जे साहमु, तव ते विशिना लोक ॥ निरखे गज हरखी हिये, जेम सूरजने कोक ॥ ६ ॥

देशी ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ वात करें मनमोदशुं, धन धन मुज अवतार ॥ कु० ॥ जे तुमें मुज आवी मल्या, ते त्रूठयो किरतार ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३३ ॥ रत्नमंजरी सार्थे हवे, चालतां अनुक्रमें सोय ॥ कु० ॥ पाम्लीपुर निरख्यु तिहां, नयणां हर्षित होय ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३४ ॥ त्रीजे खमें अग्यारमी, रामविजय कही ढाल ॥ रंगीली ॥ अमर तणो हवे हर्षे शु,सुणो संबंध रसाल ॥रं०॥वा०॥३५॥सर्व गाथा ॥३२५॥ श्लोक ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमरदत्ते इण अवसरें, प्रतिदिन जोई वाट ॥ पण बंधव आव्यो नहिं, मनमां सबल उच्चाट ॥ १ ॥ चिंते चित्तमां माहरो, मित्र गयो पर देश ॥ कागल कोइ आव्यो नहिं, वली नाव्यो संदेश ॥ २ ॥ हा हा शुं होशे थयु, नाव्यो मित्र अमूल्य ॥ वेंग में पेदा कर्यु, पेटनें मशली शूल ॥ ३ ॥ हुं जेहवो मूरख नहिं, जगमां को वे शुद्ध ॥ आगलबुद्धि कुल उपन्यो, पण थयो पाछलबुद्धि ॥ ४ ॥ जोष तुमें जुउ जोषिया, आवे किवारें मित्र ॥ आज काल सहु एम कहे, पण न पडे खरि रीत ॥ ५ ॥ मास दोय पूरा हुवा, रत्नसारनें आम ॥ अमर कहे हवे माहरे, जीव्या नु नहिं काम ॥ ६ ॥ शेठ कहे वत्स शुं कहु, तुजने वयण अनिष्ट ॥ वहेलो मलशे ताहरो, मित्रानंद अभीष्ट ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ रावल कहे वनी रहो ॥ ए देशी ॥ अमर कहे सुण तातजी, मुज मित्र न आव्यो ॥ पूछया पंथें पंथीया, पण केणें न बताव्यो ॥ अम० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शुं ते राह भूल्यो हशे, किहां नो क्याहिं जाशे ॥ मंदिर मारा प्रेमनो, मन घणु अकलाशे ॥अ०॥२॥ में सुखकारण मूकीयो, दुःख लीधु व्हेरी ॥ ते मुज काजें विदेशमां, देतो हशे फेरी ॥ अ० ॥ ३ ॥ स्वार्थ कीधो वालहो, पण मित्र न कीधो ॥ पण ए देव छे पाधरो, घणो दुःख दीधो ॥ अ० ॥ ४ ॥ नीसर्यो हु जल दुःखना, वीसारण माटें ॥ साहमो पाव्यो ते मित्रने, सबलें उच्चाटें ॥ अ० ॥ ५ ॥ हवे वहेली विरचो चिता, काष्ठ भक्षण करवु ॥ मुज माटें मूउ ते सही, माहरे पण मरवु ॥ अ० ॥ ६ ॥ शेठें घणी ना ना कही, हठीयें हठ लीधो ॥ अति आग्रह देखी करी, तव आक्रंद कीधो ॥ अ० ॥ ७ ॥ लोक मल्यां बहुजां

तिहां, सहुए एम वारे ॥ पण राख्यो न रहे किमे, कुवर ते तिवारें ॥ श्र० ॥ ७ ॥ वनमांहे काष्ठचिता रची, बहु नागर साथे ॥ चाल्यो चिता पासे आकरो, झाल्यो न रहे बाथे ॥ श्र०॥ ए ॥ लोक कहे आज अवधि नो, छेल्लो दिन रहीने ॥ कालें पठी करजो तुमें, जाणो तिम वहीने ॥ श्र० ॥ १० ॥ मान्यु कहण ए लोकनु, हरख्यो सहु कोई ॥ ते वेहू जण आवता, रह्यां तिण दिशें जोइ ॥ श्र० ॥ ११ ॥ मित्रानद उतावलो, आव्यो तेनी पासें ॥ लोक कहे कोइ पथीडो, धस्यो आवे उल्लासें ॥ श्र० ॥ १२ ॥ अमर सुणी साहमुं जुवे, दीगे अलगेथी ॥ चाल दीसे माहरा मित्रनी, के होशे कोइ पथी ॥ श्र० ॥ १३ ॥ क्याथी आवे ते वालहो, जोईतो आज ॥ झनक नजिक आव्यो जिस्यो, निरख्यो सवि साज ॥ श्र० ॥ १४ ॥ उलखी सामो आवीयो, वेहु बधव मलीया ॥ घणा दिव सरा विरहरा, आंसू तव गलीया ॥ श्र०॥ १५ ॥ अहो बंधव तें आवतें, मुझ जीवतो राख्यो ॥ तुझ दीठे डुखपुज ए, सवि अलगो नाख्यो ॥ श्र० ॥ १६ ॥ कहे मित्रानद बाधवा, जोवो ए सारी ॥ रत्नमजरी ला वियो, चित्त चोरणहारी ॥ श्र० ॥ १७ ॥ अमर कहे तें साचलुं, तुझ नाम निपायु ॥ मित्रनें आनद जेहथी, मित्रानद गायु ॥ श्र० ॥ १७ ॥ लोक कहे एहना रूपनें, मोह्यो ते न्यायी ॥ मधुकर मालती मोहियो, नवि बावल जाइ ॥ श्र० ॥ १ए ॥ पुण्य उदय थयो बारमी, ढालें सुणो लोका ॥ रामविजय कहे साजलो, हवे पुण्यशलोका ॥ श्र० ॥ २० ॥३५२॥

॥ दोहा ॥

॥ सहुने आनद उपन्यो, देखी अचरिज वात ॥ मित्र मल्यो विरहो टल्यो, रोम रोम सुखशात ॥ १ ॥ तिहां उठाह थया पठी, अमरदत्त तिण वेल ॥ जाग्य जोगें जे नीपन्यु, ते निसुणो मन मेल ॥ २ ॥ तेह नयरनो राजीयो, अपुत्रीयो तिण काल ॥ मरण लह्यो मत्री प्रमुख, करे राज्यनी जाल ॥ ३ ॥ पंच दिव्य अधिवासीयां, मल्या लोकनां वृंद ॥ केइ रूवे केई हसे, महामोहनो फद ॥ ४ ॥ त्रिक चतुष्कनें चाचरें, वेगा बहु गुणवत ॥ हस्ती हींमे हयेछ, चिहु पासें निरखत ॥ ५ ॥ जब जोये जे साहसु, तव ते दिशिना लोक ॥ निरखे गज हरखी हिये, जेम सूरजने कोक ॥ ६ ॥

दशी ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ वात करे मनमोदशु, धन धन मुज अवतार ॥ ॥ कु० ॥ जे तुमें मुज आवी मल्या, ते त्रूठयो किरतार ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३३ ॥ रत्नमजरी सार्थे हवे, चालतां अनुक्रमें सोम ॥ कु० ॥ पाम्लीपुर निरख्यु तिहां, नयणा हर्षित होय ॥ कु० ॥ वा० ॥ ३४ ॥ त्रीजे खमें अग्यारमी, रामविजय कही ढाल ॥ रगीली ॥ अमर तणो हवे हर्ष छु,सुणो सबध रसाल ॥२०॥वा०॥३५॥सर्व गाथा ॥३३५॥ श्लोक ॥

॥ दोहा ॥

॥ अमरदत्ते इण अवसरें, प्रतिदिन जोई वाट ॥ पण वधव आव्यो नहिं, मनमा सवल उच्चाट ॥ १ ॥ चिते चित्तमां माहरो, मित्र गयो पर देश ॥ कागल कोइ आव्यो नहिं, वली नाव्यो सदेश ॥ २ ॥ हा हा शुं होशे थयु, नाव्यो मित्र अमूल्य ॥ वेग में पेदा कस्यु, पेटनें मशली शूल ॥ ३ ॥ हुं जेहवो मूरख नहिं, जगमां को वे शुद्ध ॥ आगलबुद्धि कुल उपन्यो, पण थयो पाछलबुद्धि ॥ ४ ॥ जोष तुमें जुई जोविया, आवे किवारें मित्र ॥ आज काल सहु एम कहे, पण न पडे खरि रीत ॥ ५ ॥ मास वोय पूरा हुवा, रत्नसारनें आम ॥ अमर कहे हवे माहरे, जीव्या नुं नहिं काम ॥ ६ ॥ शेठ कहे वत्स शुं कहु, तुजने वयण अनिष्ट ॥ वहेलो मलशे ताहरो, मित्रानद अजीष्ट ॥ ७ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ रावल कहे वनी रहो ॥ ए देशी ॥ अमर कहे सुण तातजी, मुज मित्र न आव्यो ॥ पूछया पंथें पंथीया, पण केणें न वताव्यो ॥ अम० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ शु ते राह नूल्यो हशे, किहां नो क्याहिं जाशे ॥ मदिर मारा प्रेमनो, मन घणु अकलाशे ॥अ०॥२॥ में सुखकारण मूकीयो, डुःख लीधु उवेरी ॥ ते मुज काजें विदेशमां, देतो हशे फेरी ॥अ०॥३॥ स्वार्थ कीधो वालहो, पण मित्र न कीधो ॥ पण ए देव छे पाधरो, घणो डुःख दीधो ॥ अ० ॥ ४ ॥ नीसस्यो हु जस डुखना, वीसारण माटें ॥ साह्मो पाम्यो ते मित्रने, सवलें उच्चाटें ॥ अ० ॥ ५ ॥ हवे वहेली विरचो चिता, काष्ठ नक्षण करवु ॥ मुज माटें मूउ ते सही, माहरे पण मरवु ॥ अ० ॥ ६ ॥ शेठें घणी ना ना कही, हठीयें हठ लीधो ॥ अति आग्रह देखी करी, तव आक्रंद कीधो ॥ अ० ॥ ७ ॥ लोक मल्यां बहुलां

तेहां, सहुए एम वारे ॥ पण राख्यो न रहे किमे, कुवर ते तिवारें ॥ अ० ॥ ७ ॥ वनमांहे काष्ठचिता रची, बहु नागर साथे ॥ चाल्यो चिता गमे आकरो, जाल्यो न रहे वार्थे ॥ अ०॥ ए ॥ लोक कहे आज अवधि गो, लेह्लो दिन रहीने ॥ कालें पछी करजो तुमें, जाणो तिम वहीने ॥ अ० ॥ १० ॥ मान्यु कहण ए लोकनुं, हरख्यो सहु कोई ॥ ते वेहू जण आवता, रह्यां तिण दिशें जोइ ॥ अ० ॥ ११ ॥ मित्रानंद उतावलो, आव्यो तेनी पासें ॥ लोक कहे कोइ पथीडो, धश्यो आवे उल्लासें ॥ अ० ॥ १२ ॥ अमर सुणी साहमुं जुवे, दीठो अलगेथी ॥ चाल दीसे माहरा मित्रनी, के होशे कोइ पथी ॥ अ० ॥ १३ ॥ क्याथी आवे ते वालहो, जोईतो आज ॥ ऊवक नजिक आव्यो जिस्यो, निरख्यो सवि साज ॥ अ० ॥ १४ ॥ उलखी सामो आवीयो, बेहु बधव मलीया ॥ घणा दिवसरा विरहरा, आंसू तव गलीयां ॥ अ०॥ १५ ॥ अहो बंधव तें आवतें, मुऊ जीवतो राख्यो ॥ तुऊ दीठे दुखपुज ए, सवि अलगो नाख्यो ॥ अ० ॥ १६ ॥ कहे मित्रानद बांधवा, जोवो ए नारी ॥ रत्नमजरी लावियो, चित्त चोरणहारी ॥ अ० ॥ १७ ॥ अमर कहे तें साचलु, तुऊ नाम निपायु ॥ मित्रनें आनद जेहथी, मित्रानद गायु ॥ अ० ॥ १८ ॥ लोक कहे एहना रूपनें, मोह्यो ते न्यायी ॥ मधुकर मालती मोहियो, नवि बावल जाइ ॥ अ० ॥ १ए ॥ पुण्य उदय थयो वारमी, ढालें सुणो लोका॥ रामविजय कहे सांजलो, हवे पुण्यशलोका ॥ अ०॥ २० ॥३५२॥

॥ दोहा ॥

॥ सहुने आनद उपन्यो, देखी अचरिज वात ॥ मित्र मल्यो विरहो टल्यो, रोम रोम सुखशात ॥ १ ॥ तिहां उछाह थया पछी, अमरदत्त तिण वेल ॥ नाग्य जोगें जे नीपन्यु, ते निसुणो मन मेल ॥ २ ॥ तेह नयरनो राजीयो, अपुत्रीयो तिण काल ॥ मरण लह्यो मत्री प्रमुख, करे राज्यनी नाल ॥ ३ ॥ पंच दिव्य अधिवासीयां, मल्यां लोकनां वृंद ॥ केइ रूवे केई हसे, महामोहनो फद ॥ ४ ॥ त्रिक चतुष्कनें चाचरें, वेगा बहु गुणवत ॥ हस्ती हींमे हर्षसु, चिहु पासें निरखत ॥ ५ ॥ जब जोये जे साहमु, तव ते दिशिना लोक ॥ निरखे गज हरखी हिये, जेम सूरजने कोक ॥ ६ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ कहो कुण ए आवे छे ॥ ए देशी ॥ पुरबाहिर गज आवियो, लीबल मलपंतो रे ॥ लोक मल्यां जिहां सामटां, तिहां आवे उलसंतो ॥१॥ अहो अहो पुण्यनी प्रबलता,पुण्यथकी डुःख नासे रे॥ पुण्यें सुर संपदा, आवे सघली पासें रे ॥ अ० ॥ २ ॥ बंधव वेहु जोडें रह्या, सीया शिरदारो रे ॥ सिंहपरें साहमा थया, गज आव्यो तिण ठारो रे ॥ ॥ अ० ॥ ३ ॥ अमर कुमर शिर ऊपरें, ढाल्यो कलश सुचंगो रे ॥ करे म ललाट ए हर्षनो, देषा ताम तुरंगो रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ आतपवारण शिर थयुं, चामर तिहां विजाणां रे ॥ वाजां वाजित्र रंगनां, धवल मंगल मंडा णां रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ ऊपाडी निजखंधथी, गज आरोपे खर्षे रे ॥ राज लखुं अण चिंतव्युं, मागध गाये प्रवर्षे रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ चिरंजीवो तुमें राजीया, कोडा कोडी वर्षो रे ॥ कर जोडी आवी नमे, राजकुली छत्रीसो रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ बहु आम्बरें नृप करे, नयरीमांहे प्रवेशो रे ॥ वधावे गजमोतीयें, सोहव सुंदरवेषो रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ कोइ रमणी कहे मात नें, मा ए कुण अभिरामो रे ॥ कुण गुणवतीनो नाहलो, रूपें जेहवो का मो रे ॥ अ० ॥ ए ॥ मात कहे महोटे स्वरें, रयणमंजरीनो कंत रे ॥ मि त्रानंदनो बंधवो, एह अमर नूकतो रे ॥ अ० ॥ १० ॥ धन्य जननी जेणें जनमीयो, ए नर रयण सरीसो रे ॥ चिरं जीवो एह जोडली, एम दीये आशीषो रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ कोइ कहे धन्य एहनो, बंधव मित्रानंदो रे ॥ जेणें मेली मृगलोचना, नाम्यपरें अमदो रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ कोइ कहे धन्य शेठनें, पुत्रपरें जेणें पाल्यो रे ॥ अणजाण्या नेहो आणीने, निजघर मांहे घाल्यो रे ॥ अ० ॥ १३ ॥ एम श्रवणें सुणतो थको, पुरप्रमदानी वाणी रे ॥ प्रीत मनें धन वरसतो, आवे ते गुणखाणी रे ॥ अ० ॥ १४ ॥ स्वंवरमथी हो कतरी, पेठो मंमपमांही रे ॥ करे उत्सव अभिषेकनो, नृप मंमल मलि त्यांही रे ॥अ०॥१५॥ रयणमंजरी स्थापी तिहां, पट्टराणी गुण गेहो रे ॥ मित्रानंदने सोंपीयो, सहु अधिकार सनेहो रे ॥ अ० ॥ १६ ॥ स्थाप्यो जनकनें स्थानकें, शेठ नणी गुणवंतो रे ॥ कीधुं यथोचित एम सहु, पाले राज्य महंतो रे ॥ अ० ॥ १७ ॥ मांमी वात कही सबे, मि त्रानंद मनोहारी रे ॥ सुणि राजेश्वर रंजियो, तुझ साहस बलिहारी रे ॥

॥ अ० ॥ १७ ॥ मित्र नणी माने घणो, जाणे जीव समानो रे ॥ राणी पण तेहने सदा, आपे बहु सन्मानो रे ॥ अ० ॥ १ए ॥ बेहु बंधव सुख जोगवे, राज्य रमणी रस राता रे ॥ ईति गइ निजदेशथी, सहुने वरती शाता रे ॥ अ० ॥ २० ॥ ढाल नणी ए तेरमी, त्रीजे खंमें विचारी रे ॥ राम कहे तस सहु नमे,पुण्यदशा जस सारी रे ॥अ०॥२१॥ सर्वगाथा ॥३७ए॥

॥ दोहा ॥

॥ अमरदत्त सुख जोगवे, निजनारीनी साथ ॥ दोगुंदक सुरनी परें, न लहे दिवस ने रात ॥ १ ॥ मन मान्याशु गोठडी, पुण्य विना नवि होय ॥ जे दिन सजन मेलावडो, जग जीवित फल सोय ॥२॥ आण अखम वहे सबल, सीमाडा राजान ॥ सप्त अंग शोने नलां, दिन दिन चढते वान ॥ ३ ॥ मित्रानंद तणे मने, शबवाणीनी खटक ॥ पलक एक नहि वीसरे, अहोनिश एह अटक्क ॥ ४ ॥ अहोनिश रहे उदासमां, न गमे कोई विलास ॥ मरण समो नय को नहीं, जीवित सम नहिं आश ॥ ५ ॥ कहे अमरने साहिबा, मुज मन महोटी नीति ॥ रखे आवे व्यंतर इहां, उपजावे अप्रीति ॥ ६ ॥ नूमिपति कहे मित्र तुं, नय न करे मनमांही ॥ दूर रह्या व्यंतर किस्युं, करशे आवी आंही ॥ ७ ॥ मित्रानंद कहे खरुं, पण नजीक ए देश ॥ तेमाटे मुज बंधवा, मूको कोइ परदेश ॥ ७ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ सुण बहेनी पियुडो परदेशी ॥ ए देशी ॥ सुण बंधव जब तुं परदेशी, तब मुज केम सरेशी रे ॥ क्षण क्षण तोरो विरह दहेशी, केम मुज ठोडि चलेशी रे ॥ सु० ॥ १ ॥ नयण जरे आंसूनी धारा, सुण सुण मारा प्यारा रे ॥ तुं मुज आतमना आधारा, म म करो एह विचारा रे ॥ सु० ॥ ॥ २ ॥ मित्र कहे गमतुं नथी मुजने, जे मूकी जाउं तुजने रे ॥ पण शबवयण वहे मुज तननें, सबल विमासण मनने रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ रयणमंजरी कहे अमनें वर्जी, किम जाशो देवरजी रे ॥ सुख दुःख वात करेशु नेली, मनडाशु मन मेली रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ पण तस मनमां वात न आवी, टाल्युं टले किम नावी रे ॥ वात करे जन सहस बनावी, पण कर्म न ले बचावी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ राय कहे सुण मित्र सोनागी, सेवकशुं बड नागी रे ॥ वसंतपुर जाउं गुणरागी, तिहां रहेजो अनुरागी रे ॥ सु० ॥

॥ ६ ॥ सेवक मोकलजो मुझ पासें, देवा खबर उल्लासें रे ॥ जिहां नहिं आवो आवासें, तिहां लगें ऊंचे श्वासें रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ बंधव हूंती न विसरशो, दण दणमां सांजरशो रे ॥ मंगलकमलानें तुमो वरशो, कांइ फिकर न करशो रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ राय चल्यो सप्रेहण सार्थे, बेहु जण वलग्या हाथे रे ॥ वलतां कहे नृप मलिने वार्थे, कां एम कस्यु अम नार्थे रे ॥ सु० ॥ ए ॥ नृप वोलावी पाछो वलीयो, आव्यो गृह उल्लस लीयो रे ॥ मित्रविरह डुखदधि उछलियो, चाप थई नीकलीयो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ न गमे राजविनोदनी लीला, सांजरे मित्रनी पीडा रे ॥ जे सार्थे करी बहु सुखक्रीडा, केम ते विसरे सखीडां रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ मंत्रीश्वर आदें सहु मलिया, कहे नृपनें तुमें वलीया रे ॥ एम नवि थाई जें प्रज्ञु गलिया, कर्म न जाये कलियां रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ कांइक शोक निवारी राज्यें, बेग आवी समाजें रे ॥ सुख संपत्ति विलसे सवि साजें, पण डुख मनमां दाजे रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ दिवस थया बहु घर कोइ नाव्यो, तब बीजो दोडाव्यो रे ॥ ते पण तिहां जइ पाछो आव्यो, कहे तस खबर न पायो रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ एम निसुणी संभ्रांत थइने, कहे राणीनें जइने रे ॥ आव्यो चर पाछो पण वहीने, खबर न पामी तेहने रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ कहे राणी अवधारो कंता, ए वातनी महोटी चिंता रे ॥ जो ज्ञानी आवे गुणवंता, तो सवि जांजे ज्रंता रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ वात करी नृप बाहिर आव्यो, तब वनपालो जायो रे ॥ नृपति पासें श्वास जरायो,अवल वधामणी लायो रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ साहिब -जीवो कोडि वरीसा, दिन दिन चढती जगीशा रे ॥ तुम वन समवसस्या मुनि इस्या, श्रीधर्मघोष सूरीशा रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ अशोकतिलक उद्यानमां किरिया, गुणरयणें करि जरिया रे ॥ प्रांशुक जूमि आवी समोसरिया,अतिशय ज्ञानना दरिया रे ॥ सु० ॥ १ए ॥ शम संवेगादिक आदरिया, बहु मुनिशुं परवरिया रे ॥ दूर कस्या रागादिक अरिया, तास्या जिण निज परिया रे ॥ सु० ॥ २० ॥ समयागमन सुणी चित्त ठरियां, नरवर जावें जरिया रे ॥ राणी संघातें तेणें वरिया, गुरुवदन नीसरिया रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ साचवी पंचाजिगम उल्लासें, आव्यो नृप गुरुपासें रे ॥ देइ प्रदक्षिण एणिपरें जासे,तुमें न पड्या जवपाशें रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ बीजे संबंधें

ोदमी जाणो, ढाल ए दिलमां आणो रे ॥ कहे गुरु नृप निसुणे सपरा
गो, करि निज आतम शाणो रे ॥सु०॥१३॥ सर्वगाथा ॥४१०॥ श्लोक॥ए

॥ दोहा ॥

॥ धर्मघोष मुनिवर कहे, देशन अमृतरूप ॥ जे निसुणी देखे प्रकट, घटमा सकल स्वरूप ॥१॥ अतिशय नाणी कर्मनो, नाखे सवि विस्तार ॥ बंध हेतु दाखे वली, तिम तेहनो निस्तार ॥ २ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ राग मलार ॥ चेतन कर्मकी चाल विलावे॥ नरक निगोद तिरियग्गतिमें, रमो नहि कबहुं सन्नावें ॥ चे० ॥ १ ॥ धनी अधनी अकुली न कुलीनो, रूप कुरूप गिणावे ॥ ईश्वर दास सुखी तिम असुखी, नाम अनेक धरावे ॥ चे० ॥ २ ॥ आठ नाम उनके गुन जूदे, सलकु आण मनावे ॥ हे रूपी पण अकल सरूपी, नजरें कोउ न पावे ॥ चे० ॥ ३ ॥ चार चारके थोक बने दो, घाति अघाति फिरावे ॥ उनमें मोह सबल मतवालो, जीउकों जोर करावे ॥ चे० ॥ ४ ॥ मिथ्या अविरति योग कषाया, चउविध हेउ कहावे ॥ पंच डुवालस पनर पणवीसा, नेद सत्तावन थावे ॥ चे० ॥ ५ ॥ लहु दीसे ए बंधनकालें, बहु डुखकों उपजावे ॥ जीवकों रोकि रखी पजरमें, उलटी चाल चलावे ॥ चे० ॥ ६ ॥ पाडघो नमें मर्म न पिछाणे, उनको गायो गावे ॥ जिनकूं करि जाणे जीउ मेरो, कहीं नरक पठावे ॥ चे० ॥ ७ ॥ तुं नहिं तेरो नहि ए कोइ, यु मन मांहे नावे ॥ फिरत फरे मतवाला जेसो, कहा सद्गुरु बतलावे ॥ चे० ॥ ८ ॥ निजगुण त्यागी मोहके रागी, उनकों शीख सुणावे ॥ देखत ख्याल ए मोह नटावो, तुमको परसें रे लरावे ॥ चे० ॥ ए ॥ निजकु निज जातो तुम चेतन, और गीनो परनावें ॥ जात इदीन पर नोहे अपने, बहुरी कहा तु कहावे ॥ चे० ॥ १० ॥ सुण गुरुकी वानी नवि प्राणी, मोहकी ठाक मिटावे ॥ रामविजय कहे तेही जगतमें, साचा पुरुष सुहावे ॥ चे० ॥ ११ ॥ इतिगुरूपदेशगीतं ॥ दोहा ॥ वचन सुणी गुरुजी तणा, समज्या चतुर सुजाण ॥ मोह मटयो मनथी परो, मानी सगुरु आण ॥ १ ॥ अशोकदत्त इण अवसरें, व्यवहारी कर जोडि ॥ पूछे मुझ पुत्री तनें, केम आवी ए खोड ॥ २ ॥ सकल अग रोगें नरी, नहिं विचिकित्सा

साध्य ॥ कुण कर्में मुऊ दाखवो, विरुई वलगी व्याधि ॥ ३ ॥ गुरु गें जाणीनें, नांखे तस अवदात ॥ राजादिक सवि सांनळे, विस्मय नी वात ॥ ४ ॥ जुवनसुंदरी, जयसुदरी, श्यामा रे लो ॥ ए देशी ॥ कहे सद्गुरु वाणी, सुणो नवि प्राणी, कर्म कहाणी रे लो ॥ नविका सुणीयें जीरे लो॥ नूतशाला गामें, नूतदेव नामें, शेठ सहु कामे रे लो ॥ १ ॥ कहुं न नणीयें जी रे लो ॥ ए आंकणी ॥ क्रूरमति तस नारी, देवमती सारी, वहू सुविचारी रे लो ॥न०॥ एक दिन मजारी पीधुं धारी, दूध निरधारी रे लो ॥क० ॥ २ ॥ कहे सासू नूमी, डुर्मति कूमी, क्रोधें उमी रे लो ॥ न० ॥ शुं शाकिनी झाली, जेह विमाली, ते नवि मारी रे लो ॥ क० ॥ ३ ॥ एम कहेतां तत्क्षण, वहू नयनीषण, ग्रही कोइ शाकणी रे लो ॥ न० ॥ तस वयणें वलगी, न रहे अलगी, आग ज्युं सलगी रे लो ॥ क० ॥ ॥ ४ ॥ सासू चितातुर, तेडे आतुर, वैद्य निरंतर रे लो ॥ न० ॥ पण न थई साजी, कर्मनी बाजी, आवी वाजें रे लो ॥ क० ॥ ५ ॥ एक आव्यो योगी, अग्निनियोगी, तेडी मातंगी रे लो ॥ न० ॥ कहे किहा तु एहनें, वलगी देहनें, मूक सनेहने रे लो ॥ क० ॥ ६ ॥ कहे सासू वाणी, बिहिनी जाणी, में ग्रहि ताणी रे लो ॥ न० ॥ खलजिह्वा सासू, लोक तमासु, कहे अविमासू रे लो ॥ क० ॥ ७ ॥ वहुअर नीरोगी, कीधी योगी, थइ सुख रोगी रे लो ॥ न० ॥ सासू रंजाडी, इज्जत पाडी, खरीय नवाडी रे लो ॥ क० ॥ ८ ॥ सयतिनी पासें, सासु विमासे, व्रत सेवासी रे लो ॥ न० ॥ चारित्र पालेइ, अणआलोइ, गइ सुरलोइ रे लो ॥ क० ॥ ए ॥ तिहा देव थइने, वलीय चवीने, इहां आवीने रे लो ॥ न० ॥ तुऊ पुत्री रूही, चवीनें कूडी, थइ सासूडी रे लो ॥ क० ॥ १० ॥ कडवुं जे नांख्यु, मनमा राख्यु, गुरुनें न आख्यु रे लो ॥ न० ॥ नजदेवी रोषें, पूरव दोषें, एहनें जोशे रे लो ॥ क० ॥ ११ ॥ कन्या इहां लावो, सवि समजावो, पूरवनावो रे लो ॥ न० ॥ जातिस्मरण लहेशे, सुख सवि कहेशे, आण वहेशे रे लो ॥ क०॥ १२ ॥ गुरुचरणे आणी, देवी वजाणी, न रही शाणी रे लो ॥ न० ॥ थइ साजी कुमरी, निजनव समरी, सूधी समरी रे लो ॥ क० ॥ १३ ॥ कहे तन रोमांचू, स्वामी साचूं,ज्ञान तुमारुं रे लो ॥ न० ॥ करि कर्मपरीक्षा, लेशु दीक्षा, सहेशु शिक्षा रे लो ॥ क० ॥

॥ १४ ॥ कहे गुरुउपगारी, सुण तुं सारी, वात अमारी रे लो ॥ज०॥ सुख भोगने कर्मे, रहे तुं घरमे, हमणा शरमें रे लो ॥क०॥ १५ ॥ पठी याइश श्रमणी, वात ए गमणी, निसुणी समणी रे लो ॥ ज० ॥ वच तहत्त करीने, पाठी फरीने, आवी घरमें रे लो ॥ क० ॥ १६ ॥ देखीने नृपति, थयो विस्मित, तेवे समयें रे लो ॥ ज० ॥ मुज मित्र न आयो, खबर न पायो, किणे भरमायो रे लो ॥ क० ॥ १७ ॥ पन्नरमी पूरी, ढाल सनूरी, वात अधूरी रे लो॥ज०॥ त्रीजे खंडें सूरि, दुःख सवि चूरी, कहेशे पूरी रे लो ॥क०॥१८॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे गुरु सांभल नृपति, विषम कर्मनी वात ॥ अणचिंती आवी नडे, कोर्णे कली न जात ॥१॥ एह कर्मनी आगलें, जोरावर नहि कोय ॥ मान म करशो मानवी, कर्म करे सो होय ॥ २ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ ठोडी हो प्रिया, ठोडी चल्यो वनवास ॥ ए देशी ॥ सांभल हो राजा सांभल ते तुज मित्र, चाल्यो हो राजा चाल्यो शीख मागी करी जी ॥ लंघी हो राजा लंघी हो जलनो डुर्ग, पहोतो हो राजा पहोतो स्थल डुरग तरी जी ॥ १ ॥ तिहां एक हो राजा तिहां गिरिनदीनें प्रपात, रहिया हो राजा रहिया हो भोजन कारणें जी ॥ आवी हो राजा आवी हो भिल्ल नी धाड, नाठा हो राजा नाठा सेवक न रह्या रणे जी ॥ २ ॥ ताहरो हो राजा ताहरो वधव तेह, एकण हो राजा एकण दिशि भजाइयो जी ॥ लाज्यो हो राजा लाज्यो हो सेवक तुज, पाठो हो राजा पाठो फरी कोइ नावीयो जी ॥ ३ ॥ मित्रे हो राजा मित्रें भजाता एक, दीतु हो राजा दीठुं सरोवर जल भर्यु जी ॥ पीधु हो राजा पीधु शीतल नीर, वडतलें हो राजा वडतलें शयन तेणें कर्युं जी ॥४॥ पडते हो राजा पडते पहरु होय, कोटरें हो राजा कोटरेंथी अहि नीसर्यो जी ॥ डस्यो हो राजा डस्यो तेहने अग, तापस हो राजा तापस एकें विष हर्यो जी ॥५॥ पूछे हो राजा पूछे तापस कोण, भाखी हो राजा भांखी यथारथ वारता जी ॥ तापस हो राजा तापस गयो निज ठाण, चिंते हो राजा चिंते हो मित्र थई आरता जी ॥६॥ हरीयो हो राजा डु हरीयो थयो जोर, मान्यु हो राजा मान्यु हो कहण न मित्रनु जी ॥ आतम हो राजा आतम उपरें आज, कीधुं हो राजा

कीधुं काम शत्रुनुं जी ॥७॥ जाउं हो राजा जाव हो मित्रनी पास, यो हो राजा सुखीयो थाइश तस संगें जी ॥ चिंती हो राजा चिंती हो कठी, पडियो हो राजा पडियो चोर कुसंगतें जी ॥ ८ ॥ फाली हो राजा फाली गया निज पास, जोजो हो राजा जोजो एम नावी नडे जी ॥ सं नरे हो राजा सांनरे ताहरो प्रेम, मनमां हो राजा मनमां महोटे स्वरें रडे जी ॥ ए ॥ वेच्यो हो राजा वेच्यो हो निर्ल्ले तेह, लीधो हो राजा लीधो एक व्यवहारीये जी ॥ आपद हो राजा आपद पडी तस एम, निसुणी हो राजा निसुणी हीये नवि हारीयें जी ॥ १० ॥ कीधां हो राजा कीधां न बूटे कोय, जाणी हो राजा जाणी कर्म न कीजीयें जी ॥ साचो हो राजा साचो एक जिनधर्म, जेहथी हो राजा जेहथी शिवसुख लीजीयें जी ॥ ११ ॥ तिहांथी हो राजा तिहांथी हो पारसकूल, चाल्यो हो राजा चाल्यो वणिक तस लेइने जी ॥ वचमां हो राजा वचमाहे आवी उके ण, रातें हो राजा रातें रह्यो सुख वेइनें जी ॥ १२ ॥ बधण हो राजा बंधण ढोडी तुऊ, नाठो हो राजा नाठो हो मित्र नयरी नणी जी ॥ खालें हो राजा खालें थइने तेह, पेसे हो राजा पेसे होंश घरनी घणी जी ॥ १३ ॥ सुणजो हो राजा सुणजो हो तेणें प्रस्ताव, नयरमां हो राजा नयरमां चोरनो नय घणो जी ॥ ठानो हो राजा ठानो फरे कोटवाल, करडो हो राजा करडो हो अमल तेह तणो जी ॥ १४ ॥ फाल्यो हो राजा फाल्यो ते ततकाल, जाण्युं हो राजा जाण्यु हो चोर ए आकरो जी॥ बांध्यो हो राजा बांध्यो मयूरनें बध, कीधो हो राजा कीधो प्रहारें जाजरो जी ॥ १५ ॥ सोंप्यो हो राजा सोंप्यो शेठनें ताम, कीधो हो राजा कीधो डु कम महोटो घणो जी ॥ क्षिप्रा हो राजा क्षिप्रातटें वडवृक्ष, बांधी हो राजा बांधी ए अपराधी हणो जी ॥ १६ ॥ फाल्यो हो राजा फाली चल्या नर तेह, चिंते हो राजा चिंते हो मनमां तिण समे जी ॥ साधु हो राजा साधु वयण थयु तेह, नांख्यु हो राजा नांख्युं शर्वे जे पूरवें जी ॥ १७ ॥ जाणी हो राजा जाणी जिहां तिहां जाउं, नावी हो राजा नावी किहां बूटे नहीं जी ॥ कीजें हो राजा कीजें हो कोडि उपाय, कडवां हो राजा कडवा हो कर्म नडे सही जी ॥ १८ ॥ यडुक्तं ॥ विजवोनिर्धनत्वं च, वधन मरणं तथा ॥ येन यत्र यदा लब्ध, तस्य तत्र तदा नवेत् ॥ १ ॥

याति दूरमसौ जीव, पापस्थानाश्रयछुत ॥ तत्रैवानीयते नूयो,ऽनिनव प्रौढकर्मणा ॥ १ ॥ ढाल पूर्वनी ॥ म म कर हो जीव म म कर रोष ल गार, उपरे हो जीव ए अपराधी ऊपरें जी ॥ ए सहु हो जीव ए सहु ता हरो दोष,परन्नवें हो जीव परन्नवें सुख तु नवि करे जी ॥१ए॥ आव्यो हो राजा आव्यो हो एम शुन्न नाव, वांध्यो हो राजा वाध्यो वढें विण वांक शु जी ॥ आवे हो राजा आवे हो साहमे पूर, अडियु हो राजा अडियुं अशुन्न नृप रांकशु जी ॥ २० ॥ एक दिन हो राजा एक दिन रमता हो गोप, मोई हो राजा मोई पडी मुख उब्रली जी ॥ ताहरा हो राजा ता हरा बंधवनी वात, नीपनी हो राजा नीपनी कर्म माहावली जी॥ २१ ॥ शोलमी हो नवि शोलमी त्रीजे खम, नांखी हो राजा नांखी ढाल ए कर्मनी जी ॥ साखी हो राजा साखी होवे एक धर्म, धर्मथी हो राजा ध र्मथी प्रापति शर्मनी जी ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६ए ॥ श्लोक ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरु मुखथी एम सान्नली, अमरदत्त नूपाल ॥ प्रेमतणे वश वलवले, पड्यो मोहनी जाल ॥१॥ गुण सन्नारे तेहना, निर्मल गंगा नीर ॥ डडकूदण लागी हीये, नयणें चाल्या नीर ॥२॥ पर उपगारी शिरोमणि, हा बंधव हा भ्रात ॥ वहेला आवो वाहला, करवा मोशु वात ॥३॥ में तुऊनें वार्यो घणु, मित्र म जाउ विदेश ॥ पण तें कहण न मानीयु, किहांथी हवे संदेश ॥४॥ सञ्जनीया साले घणु, सन्नारो सो वार ॥ जे विण घडी न चालतुं, केम चलशे जमवार ॥५॥ हियडा हवे तु शु रह्यु, गयो ते तुज आधार ॥ मित्रानंद मले किहांथकी, जीडनो न्नजणहार ॥ ६ ॥ एहवा बंधव दो हिला, जेहनी शीतल बाय॥ काम पडे विहडे नहीं, बंधव बीजी बांहि ७

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥ रत्नमंजरी सुणि एहवु रे, मूर्ग्नगत थइ ताम ॥ हा हा ए शु नीपन्यु रे, अणचिंत्युं वली आम रे ॥ १ ॥ देवर माहरा ॥ एम नवि दीजें ग्नेह रे, गुण बहु ताहरा ॥ ए आंकणी ॥ तुं मुऊ नें घणो वाहलो रे, आतमनो आधार ॥ एम किम नवेखी रह्या रे, द्यो दर्शन एक वार रे ॥ दे० ॥ एम० ॥ २ ॥ जब मुजनें आणी इहां रे,तव कीया केई उपाय ॥ आप विपत्तिवेला सही रे, किहा गइ मति निर्माय रे

॥ दे० ॥ ए० ॥ ३ ॥ तुमें अमने विसारीयां रे, वसिया तुमें अम्ह अध वचे मूकी प्रीतडी रे, नहि ए उत्तम रीत रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ४ हा हा दैव अटारडो रे, सुखमां उपायुं शूल ॥ हरे एवा गुणवतनें रे, पडो तेहनें मुख धूल रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ५ ॥ एम विलाप करे घणा रे, नय णे नीर प्रवाह ॥ हियडुं धीर धरे नहीं रे, ते केम विसरे वाहो रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ६ ॥ राय राणी एम डुःख धरे रे, डुःखीयो सहु परिवार ॥ गुरु कहे शोक न कीजीयें रे, ए संसार असार रे ॥ ७ ॥ सुण सुण प्राणीया, परिहर मोहविकार रे, धुत्तगुण गणीया ॥ ए आंकणी ॥ स्थिर न रह्यो कोइ इण जगें रे, नागेंइ इइने चंद ॥ परमारथ सहु कारिमुं रे, महोटो ए मोहनो फंद रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ८ ॥ सुख निरंतर किहांथकी रें, फूल्युं ते करमाय ॥ जे उगे ते आथमे रे, जे जायुं तेह जाय रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ए ॥ अनित्यपणे जाण्या होवें रे, जो पुजल परन्नाव ॥ शाने रहे एम जीवडो रे, नित्य एक आप स्वन्नाव रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १० ॥ मात पिता नगिनी सुता रे, कामिनी सुत अवतार ॥ वार अनंत ए ताहरे रे, तुं एहने निर्धार रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ११ ॥ जीव जिके षट्कायना रे, ते थया ताहरा रे बंधु ॥ मायाकल्पित ए सवे रे, जगमांहे संबंध रे ॥ सु० ॥प०॥ १२ ॥ कोइ न एवो जगतमां रे, मरण न पाम्यो रें जेह ॥ राज मारग एह जाणीयें रें, केहो शोक सनेहो रे ॥ सु० ॥प०॥ १३॥ शोक हरो उद्यम करो रे, धर्म करो तुमें राय ॥ जिम जनमंतर एहवुं रे, डुःख फरी नवि थाय रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १४ ॥ राजा कहे में समझ्यो रें, धर्म करेवो सार ॥ पण कहो मारा मित्रनो रे, कोण थयो अवतार रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १५ ॥ कहे गुरु तुऊ रमणी तणी रे, कूखें ते उत्पन्न ॥ शुन्नन्नावना यो गथी रे, थाशे पुत्र रतन्न रे ॥ सु० ॥प०॥ १६ ॥ कमलपत्र लोचन नलो रे, होशे माहाबलवंत ॥ राजधुरंधर ताहरो रे, थाशे ते गुणवंत रे ॥ सु० ॥प०॥ १७॥ वात सुणी हरख्यो घणु रे, धन्य प्रन्नु तुमचु रे ज्ञान ॥ देशना देइ उद्धर्यो रे, मुऊ जेहवो अज्ञानो रे ॥सु०॥प०॥ १८॥ वली तुमने प्रन्नु प्रन्नो रे, किम देवीने कलंक ॥ बंधुवियोग ए किम थयो रे, कहो कारण निःकलंक रे ॥सु०॥प०॥ १ए॥ निरपराध पण वंचता रे, किम पाम्यो जेम चोर ॥ संशय टालो माहरो रे, श्या ए कर्म कठोर रे ॥ सु० ॥प०॥ २० ॥

त्रीजे सत्तरमी ढालमां रे, कह्यो बंधव अधिकार ॥ रामविजय कहे जाणजो रे, महोटो गुरुउपगारो रे ॥सु०॥प०॥२१॥ सर्वगाथा ॥४ए७॥ श्लोक ॥११

॥ दोहा ॥

॥ पूरवनव गुरु उपदिसे, योगत्रिकें बंधाय ॥ कर्मकटुक फलने दिये, एम बोले जिनराय ॥ १ ॥ आ नवथी त्रीजे नवें, बांध्यो जिम तुमें बंध ॥ ते आ नवें आवी मल्यो, सहु सरिखो संबंध ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ पूरव नव कौटुंबिक तु हतो, क्षेमकर इण नामें जी ॥ सत्यश्री घरणी गुण धारिणी, धरणीप्रतिष्ठित ग्रामें जी ॥ १ ॥ वयण विचारी रे प्राणी उच्चरो ॥ ए आंकणी ॥ जो वांछो सुख सारुं जी ॥ अविचार्यु बोलता जीवडो, फरे चउगति संसारो जी ॥ व० ॥ २ ॥ सकल क्रियापटु सेवक तेहनें, चमसेनाभिध एको जी ॥ कारज सोप्युं रे तेहने क्षेत्रनुं, रखवालें सुविवेको जी ॥ व० ॥ ३ ॥ एक दिन परने रे क्षेत्रें पथीयो, रींवा ग्रहतो देखी जी ॥ कहे लंबावो रे जाढे एहने, पण तेणें मूक्यो उवेखी जी ॥ व० ॥ ४ ॥ तिण वयणें दुहवाणो पंथीयो, कर्म करे तिण वेला जी ॥ दुष्टवचनथी रें बाध्यु आकरुं, न करो एम अवहेला जी ॥ व० ॥ ५ ॥ सत्यश्रीनी रे वहुअर एकदा, महोटो कवल उपाडी जी ॥ महोमा मूक्यो रे ते वलग्यो गले, तव सासु एम त्राडी जी ॥ व० ॥६॥ शु एम भुजे रें पापी निशाचरी, लघुकवलें जम्य सोइ जी ॥ जेम नहिं वलगे रे कवें ताहरे, बाध्युं कर्म विगोई जी ॥ व० ॥ ७ ॥ एक दिन क्षेमकर कहे भृत्यनें, मूके गामें उजाइ जी ॥ जा वहेलो कारज करी आव्य तु, वेधु पछी वधाई जी ॥ व० ॥ ८ ॥ ते कहे बंधवने मलवे करी, में न जवाये स्वामी जी ॥ क्षेमकर कहे मत मलश्यो तुने, स्वजन केवारें हरामी जी ॥ व० ॥ ए ॥ सहेजें एम बंधाये बोलतां, कर्म कठिन एम केई जी ॥ पण रस चिक्कण बंध प्रदेशथी, विणसे विपाकने वेई जी ॥ व० ॥ १० ॥ एक दिन आव्या रे मुनिवर विहरता, गोचरीयें गुणगेहो जी ॥ क्षेमकर सूधा संयमी, गुण संपूरण देहो जी ॥व०॥११॥ पीयर सूधा रे मुनि षट्कायना, धूसर दृष्टि निहाले जी ॥ आंगण आवी रे जंगम सुरतरु, दंपती दिलभर भाले जी ॥ व० ॥ १२ ॥ कहे क्षेमकर पढि

॥ दे० ॥ ए० ॥ ३ ॥ तुमें अमने विसारीयां रे, वसिया तुमें अम्ह चित्त अध वच्चे मूकी प्रीतडी रे, नहि ए उत्तम रीत रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ४ हा हा दैव अटारडो रे, सुखमां उपायुं शूल ॥ हरे एवा गुणवतनें रे, पडो तेहनें मुख धूल रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ५ ॥ एम विलाप करे घणा रे, नय णे नीर प्रवाह ॥ हियडुं धीर धरे नहीं रे, ते केम विसरे दाहो रे ॥ दे० ॥ ए० ॥ ६ ॥ राय राणी एम छुःख धरे रे, छुःखीयो सहु परिवार ॥ गुरु कहे शोक न कीजीयें रे, ए संसार असार रे ॥ ७ ॥ सुण सुण प्राणीया, परिहर मोहविकार रे, छुन्नगुण ठाणीया ॥ ए आंकणी ॥ स्थिर न रह्यो कोइ इण जगें रे, नागेंद्र इंद्र ने चंद ॥ परमारथ सहु कारिमुं रे, महोटो ए मोहनो फंद रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ८ ॥ सुख निरंतर किहायकी रे, फूलडुं ते करमाय ॥ जे ऊगे ते आथमे रे, जे जायुं तेह जाय रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ए ॥ अनित्यपणे जाण्या होवें रे, जो पुजल परन्नाव ॥ शाने रहे एम जीवडो रे, नित्य एक आप स्वन्नाव रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १० ॥ मात पिता नगिनी सुता रे, कामिनी सुत अवतार ॥ वार अनंत ए ताहरे रे, तुं एहने निर्धार रे ॥ सु० ॥ प० ॥ ११ ॥ जीव जिके षट्कायना रे, ते थया ताहरा रे बंधु ॥ मायाकल्पित ए सवे रे, जगमांहे संबंध रे ॥ सु० ॥प०॥ १२ ॥ कोइ न एवो जगतमा रे, मरण न पाम्यो रें जेह ॥ राज मारग एह जाणीयें रें, केहो शोक सनेहो रे ॥ सु० ॥प०॥१३॥ शोक हरो उद्यम करो रे, धर्म करो तुमें राय ॥ जिम जनमंतर एहवुं रे, छुःख फरी नवि थाय रे ॥ सु० ॥ प० ॥ १४ ॥ राजा कहे में सग्रह्यो रें, धर्म करेवो सार ॥ पण कहो मारा मित्रनो रे, कोण थयो अवतार रे ॥सु०॥प० ॥ १५ ॥ कहे गुरु तुऊ रमणी तणी रे, कूखें ते उपन्न ॥ शुन्नन्नावना यो गथी रे, थाशे पुत्र रतन्न रे ॥ सु० ॥प०॥ १६ ॥ कमलपत्र लोचन नलो रे, होशे माहाबलवंत ॥ राजधुरंधर ताहरो रे, थाशे ते गुणवंत रे ॥ सु० ॥प०॥१७॥ वात सुणी हरख्यो घणुं रे, धन्य प्रत्नु तुमचुं रे ज्ञान ॥ देशना देइ उद्धर्यो रे, मुज जेहवो अज्ञानो रे ॥सु०॥प०॥१८॥ वली तुमने पूछुं प्रन्नो रे, किम देवीने कलंक ॥ बंधुवियोग ए किम थयो रे, कहो कारण निःकलंक रे ॥सु०॥प०॥१ए॥ निरपराध पण वंचता रे, किम पाम्यो जेम चोर ॥ संशय टालो माहरो रे, इहां ए कर्म कठोर रे ॥ सु० ॥प०॥ २० ॥

त्रीजे सत्तरमी ढालमां रे, कह्यो वधव अधिकार ॥ रामविजय कहे जाणजो रे, महोटो गुरुउपगारो रे ॥सु०॥प०॥२१॥ सर्वगाथा ॥४ए७॥ श्लोक ॥११

॥ दोहा ॥

॥ पूरवनव गुरु उपदिसे, योगत्रिकें वधाय ॥ कर्मकटुक फलने हिये, एम बोले जिनराय ॥ १ ॥ आ नवथी त्रीजे नवें, बांध्यो जिम तुमें बंध ॥ ते आ नवें आवी मल्यो, सहु सरिखो सवध ॥ २ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥ पूरव नव कौटुंबिक तु हतो, क्षेमकर इण नामें जी ॥ सत्यश्री घरणी गुण धारिणी, धरणीप्रतिष्ठित ग्रामें जी ॥ १ ॥ वयण विचारी रे प्राणी उच्चरो ॥ ए आंकणी ॥ जो वांछो सुख सारुं जी ॥ अविचाखु बोलता जीवडो, फरे चउगति ससारो जी ॥ व० ॥ २ ॥ सकल क्रियापटु सेवक तेहनें, चमसेनाभिध एको जी ॥ कारज सोप्युं रे तेहने क्षेत्रनुं, रखवालें सुविवेको जी ॥ व० ॥ ३ ॥ एक दिन परने रे क्षेत्रे पंथीयो, रींवा ग्रहतो देखी जी ॥ कहे लंबावो रे जाढे एहने, पण तेणें मूक्यो उवेखी जी ॥ व० ॥ ४ ॥ तिण वयणें डुहवाणो पंथीयो, कर्म करे तिण वेला जी ॥ डुष्टवचनथी रें बांध्युं आकरुं, न करो एम अवहेला जी ॥ व० ॥ ५ ॥ सत्यश्रीनी रे वहुअर एकदा, महोटो कवल उपाडी जी ॥ महोमा मूक्यो रे ते वलग्यो गले, तव सासु एम त्राडी जी ॥ व० ॥६॥ शु एम जुजे रे पापी निशाचरी, लघुकवलें जम्य सोइ जी ॥ जेम नहिं वलगे रे कवें ताहरे, बाध्युं कर्म विगोई जी ॥ व० ॥ ७ ॥ एक दिन क्षेमकर कहे भृत्यनें, मूके गामें उजाइ जी ॥ जा वहेलो कारज करी आव्य तु, वेग्रु पढी वधाई जी ॥ व० ॥ ८ ॥ ते कहे वधवने मलवे करी, में न जवाये स्वामी जी ॥ क्षेमकर कहे मत मलश्यो तुने, स्वजन केवारें हरामी जी ॥ व० ॥ ए ॥ सहेजें एम वधाये बोलतां, कर्म कठिन एम केई जी ॥ पण रस चिक्कण वध प्रवेशथी, विणसे विपाकने देई जी ॥ व० ॥ १० ॥ एक दिन आव्या रे मुनिवर विहरता, गोचरीयें गुणगेहो जी ॥ क्षेमंकर सूधा सयमी, गुण सपूरण देहो जी ॥व०॥११॥ पीयर सूधा रे मुनि पट्कायना, धूसर दृष्टि निहाले जी ॥ आगण आवी रे जगम सुरतरु, दंपती दिलभर भाले जी ॥ व० ॥ १२ ॥ कहे क्षेमकर पहि

लानो प्रिये, पात्र युगल ए आव्यु जी ॥ हर्ष धरिने रे तेणें पडिलानिया, नृत्यें एम मन जाव्युं जी ॥ व० ॥ १३ ॥ धन अहो दंपती दोये जणां, दीधु मुनिवर दानो जी ॥ पुण्याइ विण पात्र किहांथकी, एम मनोष नि दानो जी ॥ व० ॥ १४ ॥ वेहु जण नावें रे दीधु साधुने, त्रीजो तिम अनुमोदे जी ॥ त्रिहु जण उपरें तव चपला पडी, हूती जे अनोरें जी ॥ व० ॥ १५ ॥ पहेले सुरलोकें थया देवता, मित्रपणे ननरंगें जी ॥ सुख विलसे वैमानिकना घणां, लीलालहेर अनंगें जी ॥ व० ॥ १६ ॥ हेम कर चवि तु नरवर थयो, सत्यश्री तुज नारी जी ॥ सुर त्रीजो चवि आवी ऊपन्यो, मित्रानद मनोहारी जी ॥ व० ॥ १७ ॥ जेणें बांध्युं रे जेवु पूरवें, तिम पाम्यु तेणें सीधु जी ॥ राजन आवे रे उदयें एणी परें, कडवे वयणें कीधु जी ॥ व० ॥ १८ ॥ गुरुनी वाणी रे निसुणी ते सवे, मन पाम्यां वैरागो जी ॥ कर्म कमाइ रे केहें आपणी, धारो धर्मशुं रागो जी ॥ व० ॥ १९ ॥ ऊहापोहविचारें आपणी, पूर्वजात सनारी जी ॥ कहे गुरुजीनें नृप चरणे नमी, जाउ तुम बलिहारी जी ॥ व० ॥ २० ॥ मुज पतितने रे प्रज्ञु पावन करो, देइ यथोचित धर्मो जी ॥ गुरु कहे चारित्रनी नहिं योग्यता, हजी बहु जोगनु कर्मो जी ॥ व० ॥ २१ ॥ तनय थया पछी सयम आवशे, हमणा गृहिव्रत वारु जी ॥ तहत्ति करी ने रे श्रावकव्रत लीये, गुरुपासें गुणकारु जी ॥ व० ॥ २२ ॥ पुनरपि पूछे रे वात शबें कही, ते कुण कारण स्वामी जी ॥ सवि महि रे गुरु कहे पंथीयो, जूरिजवें गति पामी जी ॥ व० ॥ २३ ॥ वडपासें थयो व्यंतर ते मरी, मित्रानदनें देखी जी ॥ वैर सनारी रे पूरजव तणु, थयो ते उपर द्वेषी जी ॥ व० ॥ २४ ॥ शबना मुखमांहे तेणें संक्रमी, वात ए णी परें दाखी जी ॥ संशय वारण जवजल तारिणी, धर्मकथा मुनि जांखी जी ॥ व० ॥ २५ ॥ प्रतिबूज्या केइ निसुणी प्राणीया, मुनिवर कीध वि हारो जी ॥ मुनि वांदीने मदिर आवियो, नृपति समकित धीरो जी ॥ व० ॥ २६ ॥ पाले राज्य जली परें आपणु, एह अढारमी ढालो जी ॥ त्रीजे खंमें रे रामविजय कहे, धर्मे सुख विशालो जी ॥ व० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गर्ज वधे हवे अनुक्रमें, युवती हर्षे धरंत ॥ जे जे मोहला ऊपजे,

ते ते पूरे कंत ॥ १ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, शुभ मुहूर्त्त संयोग ॥ रत्न मंजरीयें सुत जण्यो, सुदर तन नीरोग ॥२॥ राय करे उत्सव घणो,खरचे इव्य अपार ॥ धवलमंगल गावे भलां, वेठी सोहव नार ॥ ३ ॥ पंच धाव पाली जतो, नाम कमलपत्राक्ष ॥ शैशव वय लघी करी, पाम्यो यौवन दक्ष ॥ ४ ॥ राज्यभार धोरी थयो, सघली वातें सकक्ष ॥ हवे राजा मन चिंतवे, लहुं संयम तजि रक्ष ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ थारे माथें पचरंगी पाघ, सोनारो छोगलो ॥ मारु जी ॥ ए देशी ॥ हवे एक दिन तेह मुनीश्वर, आव्या सांभली ॥ राजाजी ॥ सोंपी पुत्रनें राज्यनो भार, चल्यो वनमां रुली ॥ रा० ॥ ग्रहे गुरुजीने हाथे दीक्ष, प्रिया साथें वली ॥ रा० ॥ लीयो शुद्धमाहाव्रतभार, थया अतुली बली ॥ रा० ॥ ॥ १ ॥ तेउने दृढ करवा काज, कहे श्रुत केवली ॥ रा० ॥ तुमें चालजो सूधे पथ, मूकी मद आवली ॥ रा० ॥ भव अंबुधि तारण एह, प्रव्रज्या छे भली ॥रा०॥ तेमाटें मूकी राग, ते पालजो साचली ॥ रा० ॥ २ ॥ लेइ दीक्षा विषयने वांछे, जे मुनि कायरा ॥ वारुजी ॥ नवि कहीयें ते भव जलना, संयम वाहरा ॥ तारु जी ॥ ते विषयें नेह न करे, जी देजाहरा ॥ वा० ॥ ते मुनि परमार्थे सुखना, दरिया माहरा ॥ वा० ॥ ३ ॥ जिनरक्षित जिनपालनो, इहां भावजो ॥ मुनिवरजी ॥ संबंध अनोपम उपनय, मनमां लावजो ॥ सुखकर जी ॥ तव कहे राजर्षि मनमां, हर खी ते कहो ॥ सद्गुरुजी ॥ भावी ते वात कहु, सघली तुमें सद्दहो ॥ मु० ॥ ४ ॥ चंपानयरीमा माकंदी, नामें माहाधनी ॥मु०॥ भद्रानामें तस नारी, भली सुगुणी बनी ॥ मु० ॥ जिनपालित ने जिनरक्षित, सुत छवि कांचनी ॥ सु० ॥ करे वहाणनो रोजगार, वरी लक्ष्मी घणी ॥ मु० ॥ ५ ॥ तेवारें विचार मनोरथ, वाहणनो करे ॥ मु० ॥ घणुं वारे तेहने पितर, कह्युं चित्त नवि धरे ॥ मु० ॥ चढिया करियाणु लेइ, जोई वाहाण शिरें ॥ मु० ॥ भरदरिये भांग्युं वाहाण, फलकने आशरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ त्रिहु दिवसें रयणनो द्वीप, लही ते नीसर्या ॥ मु० ॥ जल पीधु फल ना लियेर, भखीने ते ठर्या ॥ मु० ॥ एहवे ते द्वीपनी देवी, देखीने घरह र्या ॥ मु० ॥ कहे मुज साथें तुमें सेवो, विषयसुख कां मर्या ॥ मु० ॥

जाणो प्रिये, पात्र युगल ए आव्युं जी ॥ हर्षे धरिने रे तेणें नृत्यें एम मन भाव्युं जी ॥ व० ॥ १३ ॥ धन अहो दंपती बोधे दीधु मुनिवर दानो जी ॥ पुण्याइ विण पात्र किहांथकी, एम मलेव कि दानो जी ॥ व० ॥ १४ ॥ बेहु जण भावें रे दीधु साधुने, त्रीजो तिमें अनुमोदे जी ॥ त्रिहु जण उपरें तव चपला पडी, हूंती जे अंभोदें जी ॥ व० ॥ १५ ॥ पहेले सुरलोकें थया देवता, मित्रपणे नवरंगें जी ॥ सुख विलसे वैमानिकनां घणां, लीलालहेर अभंगें जी ॥ व० ॥ १६ ॥ तेम कर चवि तु नरवर थयो, सत्यश्री तुझ नारी जी ॥ सुर त्रीजो चवि आवी ऊपन्यो, मित्रानंद मनोहारी जी ॥ व० ॥ १७ ॥ जेणें बांध्युं रे जेवुं पूरवें, तिम पाम्यु तेणें सीधुं जी ॥ राजन आवे रे उदयें एणी परें, कडवे वयणें कीधुं जी ॥ व० ॥ १८ ॥ गुरुनी वाणी रे निसुणी ते सवे, मन पाम्या वैरागो जी ॥ कर्म कमाइ रे केहें आपणी, धारो धर्मशुं रागो जी ॥ व० ॥ १९ ॥ ऊहापोहविचारें आपणी, पूर्वजात संभारी जी ॥ कहे गुरुजीनें नृप चरणे नमी, जाउं तुम बलिहारी जी ॥ व० ॥ २० ॥ मुझ पतितने रे प्रभु पावन करो, देइ यथोचित धर्मो जी ॥ गुरु कहे चारित्रनी नहिं योग्यता, हजी बहु भोगनु कर्मो जी ॥ व० ॥ २१ ॥ तनय थया पछी संयम आवशे, हमणा गृहिव्रत वारु जी ॥ तहत्ति करीने रे श्रावकव्रत लीये, गुरुपासें गुणकारु जी ॥ व० ॥ २२ ॥ पुनरपि पूछे रे वात शबें कही, ते कुण कारण स्वामी जी ॥ सवि भद्दी रे गुरु कहे पंथीयो, भूरिभवें गति पामी जी ॥ व० ॥ २३ ॥ वडपासें थयो व्यंतर ते मरी, मित्रानंदनें देखी जी ॥ वैर संभारी रे पूरभव तणुं, थयो ते उपर द्वेषी जी ॥ व० ॥ २४ ॥ शबना मुखमांहे तेणें संक्रमी, वात ए णीपरें दाखी जी ॥ संशय वारण भवजल तारिणी, धर्मकथा मुनि भाखी जी ॥ व० ॥ २५ ॥ प्रतिबूज्या केइ निसुणी प्राणीया, मुनिवर कीध विहारो जी ॥ मुनि वांदीने मंदिर आवियो, नृपति समकित धीरो जी ॥ व० ॥ २६ ॥ पाले राज्य भली परें आपणु, एह अढारमी ढालो जी ॥ त्रीजे खंडें रे रामविजय कहे, धर्में सुख विशालो जी ॥ व० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गर्भ वधे हवे अनुक्रमें, युवती हर्षे धरंत ॥ जे जे मोहला ऊपजे,

ते ते पूरे कंत ॥ १ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, शुभ मुहूर्त संयोग ॥ रत्न मंजरीयें सुत जण्यो, सुंदर तन नीरोग ॥२॥ राय करे उत्सव घणो,खरचे द्रव्य अपार ॥ धवलमंगल गावे भलां, वेठी सोहव नार ॥ ३ ॥ पंच धाव पाली जतो, नाम कमलपत्राक्ष ॥ शैशव वय लघी करी, पाम्यो यौवन दक्ष ॥ ४ ॥ राज्यभार धोरी थयो, सघली वातें सकक्ष ॥ हवे राजा मन चिंतवे, लहुं संयम तजि रक्ष ॥ ५ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ थारे माथें पचरंगी पाघ, सोनारो छोगलो ॥ मारु जी ॥ ए देशी ॥ हवे एक दिन तेह मुनीश्वर, आव्या सांभली ॥ राजाजी ॥ सोंपी पुत्रनें राज्यनो भार, चव्यो वनमां रुली ॥ रा० ॥ ग्रहे गुरुजीने हाथे दीक्ष, प्रिया साथें वली ॥ रा० ॥ लीयो शुद्धमाहाव्रतभार, थया अतुली बली ॥ रा० ॥ ॥ १ ॥ तेहने दृढ करवा काज, कहे श्रुत केवली ॥ रा० ॥ तुमें चालजो सूधे पंथ, मूकी मद आवली ॥ रा० ॥ भव अंबुधि तारण एह, प्रव्रज्या छे भली ॥रा०॥ तेमाटे मूकी राग, ते पालजो साचली ॥ रा० ॥ २ ॥ लेइ दीक्षा विषयने वांछे, जे मुनि कायरा ॥ वारुजी ॥ नवि कहीयें ते भव जलना, संयम वाहरा ॥ तारु जी ॥ ते विषयें नेह न करे, जी देजाहरा ॥ वा० ॥ ते मुनि परमार्थ सुखना, दरिया माहरा ॥ वा० ॥ ३ ॥ जिनरक्षित जिनपालनो, इहां भावजो ॥ मुनिवरजी ॥ संबध अनोपम उपनय, मनमां लावजो ॥ सुखकर जी ॥ तव कहे राजर्षि मनमां, हरखी ते कहो ॥ सद्गुरुजी ॥ भावी ते वात कहु, सघली तुमें सद्दहो ॥ मु० ॥ ४ ॥ चंपानयरीमा माकंदी, नामें माहाधनी ॥मु०॥ भद्रानामें तस नारी, भली सुगुणी बनी ॥ मु० ॥ जिनपालित ने जिनरक्षित, सुत छवि कांचनी ॥ मु० ॥ करे वहाणनो रोजगार, वरी लक्ष्मी घणी ॥ मु० ॥ ५ ॥ तेवारें विचार मनोरथ, वाहणनो करे ॥ मु० ॥ घणु वारे तेहने पितर, कह्युं चित्त नवि धरे ॥ मु० ॥ चढिया करियाणु लेइ, जोई वाहाण शिरें ॥ मु० ॥ भरदरिये भांग्युं वाहाण, फलकने आशरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ त्रिहुं दिवसें रयणनो द्वीप, लही ते नीसर्या ॥ मु० ॥ जल पीधुं फल नालियेर, भखीने ते ठर्या ॥ मु० ॥ एहवे ते द्वीपनी देवी, देखीने परवश थया ॥ मु० ॥ कहे मुझ साथें तुमें सेवो, विषयसुख कां मर्या ॥ मु० ॥

लाचो प्रिये, पात्र युगल ए आव्यु जी ॥ हर्षे धरिने रे तेणें नृत्यें एम मन नाव्युं जी ॥ व० ॥ १३ ॥ धन अहो दंपती होये सर्वो, दीधु मुनिवर दानो जी ॥ पुण्याइ विण पात्र किहांथकी, एम मन्नेव मि दानो जी ॥ व० ॥ १४ ॥ बेहु जण नावें रे दीधु साधुने, त्रीजो तिम अनुमोदे जी ॥ त्रिहु जण उपरें तव चपला पडी, हूती जे अंजोरें जी ॥ व० ॥ १५ ॥ पहेले सुरलोकें थया देवता, मित्रपणे ननरंगें जी ॥ सुख विलसे वैमानिकनां घणां, लीलालहेर अनंगें जी ॥ व० ॥ १६ ॥ त्यांथी कर चवि तु नरवर थयो, सत्यश्री तुज नारी जी ॥ सुर त्रीजो चवि आवी ऊपन्यो, मित्रानद मनोहारी जी ॥ व० ॥ १७ ॥ जेणें बांध्युं रे जेवु पूरवें, तिम पाम्युं तेणें लीधुं जी ॥ राजन आवे रे उदयें एणी परें, कडवे वयणें कीधुं जी ॥ व० ॥ १८ ॥ गुरुनी वाणी रे निसुणी ते सवे, मन पाम्यां वैरागो जी ॥ कर्म कमाइ रे केहें आपणी, धारो धर्मशुं रागो जी ॥ व० ॥ १९ ॥ कहापोहविचारें आपणी, पूर्वजात सनारी जी ॥ कहे गुरुजीनें नृप चरणे नमी, जाउ तुम बलिहारी जी ॥ व० ॥ २० ॥ मुज पतितने रे प्रनु पावन करो, देइ यथोचित धर्मो जी ॥ गुरु कहे चारित्रनी नहिं योग्यता, हजी बहु नोगनुं कर्मो जी ॥ व० ॥ २१ ॥ तनय थया पछी संयम आवशे, हमणा गृहिव्रत वारु जी ॥ तहत्ति करी ने रे श्रावकव्रत लीये, गुरुपासें गुणकारु जी ॥ व० ॥ २२ ॥ पुनरपि पूछे रे वात शबें कही, ते कुण कारण स्वामी जी ॥ सवि महीं रे गुरु कहे पंथीयो, नूरिनवें गति पामी जी ॥ व० ॥ २३ ॥ वडपासें थयो व्यंतर ते मरी, मित्रानदनें देखी जी ॥ वैर सनारी रे पुरनव तणु, थयो ते उपर द्वेषी जी ॥ व० ॥ २४ ॥ शबना मुखमांहे तेणें संक्रमी, वात ए णीपरें दाखी जी ॥ संशय वारण नवजल तारिणी, धर्मकथा मुनि नाखी जी ॥ व० ॥ २५ ॥ प्रतिबूज्या केइ निसुणी प्राणीया, मुनिवर कीध वि हारो जी ॥ मुनि वांदीने मंदिर आवियो, नृपति समकित धीरो जी ॥ व० ॥ २६ ॥ पाले राज्य नली परें आपणु, एह अढारमी ढालो जी ॥ त्रीजे खंडें रे रामविजय कहे, धर्मे सुख विशालो जी ॥ व० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गर्न वधे हवे अनुक्रमें, युवती हर्षे धरंत ॥ जे जे मोहला ऊपजे,

ते ते पूरे कंत ॥ १ ॥ शुन वेला शुन दिन घडी, शुन मुहूर्त संयोग ॥ रत्न मंजरीयें सुत जण्यो, सुदर तन नीरोग ॥२॥ राय करे उत्सव घणो,खरचे इव्य अपार ॥ धवलमगल गावे नलां, वेगी सोहव नार ॥ ३ ॥ पंच धाव पाली जतो, नाम कमलपत्राक्ष ॥ शैशव वय लघी करी, पाम्यो यौवन दक्ष ॥ ४ ॥ राज्यनार धोरी थयो, सघली वातें सकक्ष ॥ हवे राजा मन चिंतवे, लहुं संयम तजि रक्ष ॥ ५ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ थारे माथें पचरगी पाघ, सोनारो गेगलो ॥ मारु जी ॥ ए देशी ॥ हवे एक दिन तेह मुनीश्वर, आव्या सानली ॥ राजाजी ॥ सोंपी पुत्रनें राज्यनो नार, चल्यो वनमा रुली ॥ रा० ॥ ग्रहे गुरुजीने हाथे दीक्ष, प्रिया सार्थे वली ॥ रा० ॥ लीयो शुद्धमाहाव्रतनार, थया अतुली वली ॥ रा० ॥ ॥ १ ॥ तेउने दृढ करवा काज, कहे श्रुत केवली ॥ रा० ॥ तुमें चालजो सूधे पंथ, मूकी मद आवली ॥ रा० ॥ नव अंबुधि तारण एह, प्रव्रज्या ने नली ॥रा०॥ तेमाटें मूकी राग, ते पालजो साचली ॥ रा० ॥ २ ॥ लेइ दीक्षा विषयने वांछे, जे मुनि कायरा ॥ वारुजी ॥ नवि कहीयें ते नव जलना, संयम वाहरा ॥ तारु जी ॥ ते विषयें नेह न करे, जी हेजाहरा ॥ वा० ॥ ते मुनि परमार्थे सुखना, दरिया माहरा ॥ वा० ॥ ३ ॥ जिनरक्षित जिनपालनो, इहां नावजो ॥ मुनिवरजी ॥ सबध अनोपम उपनय, मनमा लावजो ॥ सुखकर जी ॥ तव कहे राजर्षि मनमां, हर खी ते कहो ॥ सद्गुरुजी ॥ नावी ते वात कहुं, सघली तुमें सद्दहो ॥ मु० ॥ ४ ॥ चपानयरीमां माकदी, नामें माहाधनी ॥मु०॥ नद्रानामें तस नारी, नली सुगुणी बनी ॥ मु० ॥ जिनपालित ने जिनरक्षित, सुत उवि काचनी ॥ सु० ॥ करे वहाणनो रोजगार, वरी लक्ष्मी घणी ॥ मु० ॥ ५ ॥ तेवारें विचार मनोरथ, वाहणनो करे ॥ मु० ॥ घणुं वारे तेहने पितर, कह्युं चित्त नवि धरे ॥ मु० ॥ चढिया करियाणु लेइ, जोई वाहाण शिरें ॥ मु० ॥ नरदरिये नांग्यु वाहाण, फलकने आशरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ त्रिक्ष दिवसें रयणनो द्वीप, लही ते नीसख्या ॥ मु० ॥ जल पीधुं फल नालियेर, नखीने ते उख्या ॥ मु० ॥ एहवे ते द्वीपनी देवी, देखीने थरह स्या ॥ मु० ॥ कहे मुफ सार्थे तुमें सेवो, विषयसुख कां मस्या ॥ मु० ॥

७ ॥ तो थाशो प्राणने कुशल, मानो कयुं माहरु ॥ मु० ॥ नहिंतर एणें खर्में, ठेदिश हु शिर थाहरु ॥ मु० ॥ नयनीत कहे परमाण,कयुं एम ता हरु ॥ मु० ॥ कहे मत बीहो तुमें अश, हु छु तुम वाहरु ॥ मु० ॥ ७ ॥ सुख विलसंतां ते साथें, गया बहु वासरा ॥ मु० ॥ एक दिन आवी कहे ते, रहेजो तुमें पांशरा ॥ मु० ॥ हु सुस्थितने आदेशें, शोधवा सायरा ॥ मु० ॥ जाउ छु कारण मार्टे, म थाशो कायरा ॥ मु० ॥ ए ॥ खाजो फल फूल तुमें, रमजो पूरव वनें ॥ मु० ॥ न साय तो उत्तर पश्चिम, जा जो कामनें ॥ मु० ॥ वारुं छु दक्षिण वन, रखे धरता मनें ॥ मु० ॥ तिहां ठे दृष्टिविष नाग, देशे दुःख तुमनें ॥ मु० ॥ १० ॥ गइ देवी कुमर बेहु, त्रिहु वनमां रमे ॥ मु० ॥ फल फूल घणां नली जांते, तिहां पण नवि गमे ॥ मु० ॥ चिंते मनमाहे न जाये, वासर ए किमे ॥ मु० ॥ सांजरे मनमां निज गाण, हेरान थया अमें ॥ मु० ॥ ११ ॥ वली वली निरखियें दक्षिण, वारिधि नेहश्यु ॥मु०॥ चिंते जइ चलो नाइ, तिहां दिल उल्लस्युं ॥ मु० ॥ हमणां दोडीनें तमासो, जोई आवशुं ॥ मु० ॥ चिंता ए टलशे दूर, अमल चेन पामशुं ॥ मु० ॥ १२ ॥ गया ते दिशें जाम, अ खत्र गध उछली ॥ मु० ॥ वस्त्रे आठादी नाक, जोइ आघा वली ॥ मु० ॥ देखी नर त्यां एक रंक, थया मन व्याकुली ॥मु०॥ एहवे शूलागत मनुज, दीठो गया फलफली ॥ मु० ॥ १३ ॥ पूठ्यु तेहनें जइ कुण, कमाइ सी करी ॥ मु० ॥ ते बोल्यो सांजलो मित्र, दशा महारी फरी ॥ मु० ॥ मुफ वाहण नांग्यु कर्मे, ए लाग्युं नीसरी ॥ मु० ॥ रत्ना अनुरागें कांइक, सेवा वीसरी ॥ मु० ॥ १४ ॥ मुफ दुःख एणें दीधु, माहारु कीधु में लह्युं ॥ मु० ॥ तेणें नर विणसाड्या कर्ष्टे, पाड्या ढुं शुं कहु ॥ मु० ॥ कहो वात तुम्हारी मुफने, सारी सहहु ॥ मु० ॥ धुरिहूती नांखी कांइ न, राखी ए सहु ॥ मु० ॥ १५ ॥ करी करुणा काहि उपाय, कहो जीव्या तणो ॥ मु० ॥ कहे ते नर शैलक यक्ष, इहां सोहामणो ॥ मु० ॥ करे अश्वतुं रूप ए पर्वे, दिने बोले घणो ॥ मु० ॥ कहो कुणने राखु कुणने, पाळुं ते नणो ॥ मु० ॥ १६ ॥ तमें जाउ तेहनी पास, करो सेवा नली ॥ मु० ॥ ते आव्या यक्ष समीप, सहु आशा फली ॥ मु० ॥ उंगणीशमी ढाल कही, त्रीजे खमें रली ॥मु०॥ जे विषयथकी रह्या दूर, तेहनी सुदशा वली १७

॥ दोहा ॥

॥ यक्षतणी सेवा करे, कुसुमें पूजे पाय ॥ राख राख स्वामी हवे, तुं अम माय ने ताय ॥ १ ॥ पर्वदिने बोल्यो यदा, यक्ष तेह उजमाल ॥ बंधव कर जोडी कहे, राख राख अम्ह पाल ॥ २ ॥ यक्ष कहे तें बेहुने, निस्तारुं निर्धार ॥ पण निश्चल थइ सांभलो, मह्यारो एक विचार ॥ ३ ॥ तुम जा तां ते आवशे, पापिणी पूठें सोय ॥ कहेशे तुमने ते घणुं, सुनजरें साहा मुं जोय ॥ ४ ॥ ते ऊपर धरशो तदा, जो अनुराग लगार ॥ तो उलाली तुमने, नाखीश समुद्र मझार ॥ ५ ॥ जो रहेशो निरपेक्षथी, तो तुमने त तकाल ॥ पहोंचाडीश चंपा पुरी, लहेशो सुख रसाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ मजरो ल्यो ने जालम झाटडी ॥ ए देशी ॥ कुमर कहे तस संगनुं, फल दीठु माहाराज ॥ ए साहामुं निरखुं नहिं, सो वानां करे आज ॥ ॥ १ ॥ हवे अम तारोजी साहिबा ॥ ए आंकणी ॥ वलग्या तुमारेजी पा य ॥ शरण प्रभु एक ताहरु, अवर नहि को उपाय ॥ ह० ॥ २ ॥ खधे चडावीने चालीयो, दरियामां यक्षराज ॥ वे बांधव हरख्या घणुं, फलीयां वांछित काज ॥ ह० ॥ ३ ॥ हवे देवीयें निजमदिरें, नवि दीठा दोय बंधु ॥ जाण्युं ज्ञाने ते यक्षजी, जाय चढावीने खंध ॥ ह० ॥ ४ ॥ खड्ग लेइने केडें थइ, क्रोध नराणी जी जोर ॥ आवो वांछोजी जीववु, एम कहे करती जी सोर ॥ ह० ॥ ५ ॥ नहिंतर एणे खड्गें सही, करछुं तुम शिरछेद ॥ यक्ष कहे रहो रंगथ्यु, अश न करशो जी खेद ॥ ह० ॥ ६ ॥ जाण्यु न भग्या ए चित्तथी, मांमी माया जी चूर ॥ मुझ मूकीनें एकाकिनी, केम जाउ छो जी दूर ॥ ह०॥ ७ ॥ वाहालपणु तुम किहा गयुं, एम नवि दीजें जी छेह ॥ रंगरसें रम्या मदिरें, ते विसाखोजी नेह ॥ ह० ॥ ८ ॥ चित्त चल्यां नहिं तेहनां, खेद लही मनमांहे ॥ कहे जिनरक्षितने घणु, वाहालो जीवितप्राण ॥ ह० ॥ ९ ॥ ईक्षण मान आलापनी, क्रिया सर खी जी दोय ॥ चित्ताह्लादक प्रेमनी, गति न्यारी छे जी कोय ॥ ह० ॥ १० ॥ तुझ साथें मुझ गोठडी, छे अतरनी जी सार ॥ ते जाणे मन माह रु, नहिं तुझ हेज लगार ॥ ह० ॥ ११ ॥ आवो मलो मुझ वालहा, द्यो सगमनुंजी सुख ॥ नहिंतर प्राण तजिश हु माहरा, दोहिलु विरहनुं

४ ॥ तो थाशे प्राणने कुशल, मानो कह्युं माहरु ॥ मु० ॥ नहितर खर्गे, छेदिश हुं शिर थाहरुं ॥ मु० ॥ जयजीत कहे परमाण, कह्युं सब हरु ॥ मु० ॥ कहे मत बीहो तुमें अश, हुं छुं तुम वाहरु ॥ मु० ॥ सुख विलसतां ते साथें, गया बहु वासरा ॥ मु० ॥ एक दिन आवी ते, रहेजो तुमें पांशरा ॥ मु० ॥ हु सुस्थितने आदेशें, शोधवा सायरा ॥ मु० ॥ जाउं छु कारण माटें, म थाशो कायरा ॥ मु० ॥ ए ॥ खाजो फल फूल तुमें, रमजो पूरव वनें ॥ मु० ॥ न साय तो उत्तर पश्चिम, जो कामनें ॥ मु० ॥ वारुं छु दक्षिण वन, रखे धरता मनें ॥ मु० ॥ तिहां छे दृष्टिविष नाग, देशे दुःख तुमनें ॥ मु० ॥ १० ॥ गइ देवी कुमर बेहु, त्रिहु वनमां रमे ॥ मु० ॥ फल फूल घणां जली जांते, तिहां पण नवि गमे ॥ मु० ॥ चिंते मनमाहे न जाये, वासर ए किमे ॥ मु० ॥ सांजरे मनमां निज गण, हेरान थया अमें ॥ मु० ॥ ११ ॥ वली वली निरखियें दक्षिण, वारिधि नेहशुं ॥ मु० ॥ चिंते जइ चलो जाइ, तिहां किश उबस्युं ॥ मु० ॥ हमणां दोडीनें तमासो, जोई आवशुं ॥ मु० ॥ चिंता ए टलशे दूर, अमल चेन पामशुं ॥ मु० ॥ १२ ॥ गया ते दिशें जाम, अ खत्र गध उछली ॥ मु० ॥ वस्त्रे आछादी नाक, जोइ आघा वली ॥ मु० ॥ देखी नर त्यां एक रंक, थया मन व्याकुली ॥ मु० ॥ एहवे शूलागत मनुज, दीठो गया फलफली ॥ मु० ॥ १३ ॥ पूछ्यु तेहनें जइ कुण, कमाइ शी करी ॥ मु० ॥ ते बोल्यो सांजलो मित्र, दशा महारी फरी ॥ मु० ॥ मुज वाहण जांग्यु कर्मे, ए लाग्युं नीसरी ॥ मु० ॥ रत्ना अनुरागें कांइक, सेवा वीसरी ॥ मु० ॥ १४ ॥ मुज दुःख एणें दीधुं, माहारु कीधु में लही ॥ मु० ॥ तेणें नर विणसाड्या कई, पाड्या हुं पण कहु ॥ मु० ॥ कहो वात तुम्हारी मुजने, सारी सहहु ॥ मु० ॥ घुरिहूंती जांखी कांइ न, रा खी ए सहु ॥ मु० ॥ १५ ॥ करी करुणा कांहि उपाय, कहो जीव्या तणो ॥ मु० ॥ कहे ते नर शैलक यक्ष, इहां सोहामणो ॥ मु० ॥ करे अश्वह रूप ए पर्व, दिने बोले घणो ॥ मु० ॥ कहो कुणने राखु कुणने, पालुं ते जणो ॥ मु० ॥ १६ ॥ तमें जाउ तेहनी पास, करो सेवा जली ॥ मु० ॥ ते आव्या यक्ष समीप, सहु आशा फली ॥ मु० ॥ उगणीशमी ढाल कही, त्रीजे खमें रली ॥ मु० ॥ जे विषयथकी रह्या दूर, तेहनी सुयशा वली १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ यक्षतणी सेवा करे, कुसुमें पुजे पाय ॥ राख राख स्वामी हवे, तुं अम माय ने ताय ॥ १ ॥ पर्वदिने बोल्यो यदा, यक्ष तेह उजमाल ॥ बंधव कर जोडी कहे, राख राख अम्ह पाल ॥ २ ॥ यक्ष कहे ते बेहुने, निस्तारुं निर्धार ॥ पण निश्चल थइ सांजलो, मद्दारो एक विचार ॥ ३ ॥ तुम जातां ते आवशे, पापिणी पूठें सोय ॥ कहेशे तुमने ते घणु, सुनजरें साहा मुं जोय ॥ ४ ॥ ते ऊपर धरशो तदा, जो अनुराग लगार ॥ तो उलाली तुमने, नाखीश समुइ मजार ॥ ५ ॥ जो रहेशो निरपेक्षथी, तो तुमने त तकाल ॥ पहोंचाडीश चंपा पुरी, लहेशो सुख रसाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ मजरो ल्यो ने जालम जाटडी ॥ ए देशी ॥ कुमर कहे तस संगनुं, फल दीतुं माहाराज ॥ ए साहामुं निरखुं नहिं, सो वाना करे आज ॥ ॥ १ ॥ हवे अम तारोजी साहिबा ॥ ए आंकणी ॥ वलग्या तुमारेजी पाय ॥ शरण ग्रह्यु एक ताहरु, अवर नहि को उपाय ॥ ह० ॥ २ ॥ खधे चडावीने चालीयो, दरियामां यक्षराज ॥ वे बांधव हरख्या घणुं, फलीयां वांछित काज ॥ ह० ॥ ३ ॥ हवे देवीयें निजमंदिरें, नवि दीठा दोय बंधु ॥ जाएयुं ज्ञाने ते यक्षजी, जाय चढावीने खंध ॥ ह० ॥ ४ ॥ खड्ग लेइने केडें थइ, क्रोध नराणी जी जोर ॥ आवो वाहोजी जीवतु, एम कहे करती जी सोर ॥ ह० ॥ ५ ॥ नहिंतर एणे खड्गें सही, करशु तुम शिरछेद ॥ यक्ष कहे रहो रंगशु, अश न करशो जी खेद ॥ ह० ॥ ६ ॥ जाण्युं न मग्या ए चित्तथी, मामी माया जी चूर ॥ मुज मूकीनें एकाकिनी, केम जाउं छो जी दूर ॥ ह० ॥ ७ ॥ वाहालपणु तुम किहां गयुं, एम नवि दीजें जी छेह ॥ रंगरसें रम्या मंदिरें, ते विसाखोजी नेह ॥ ह० ॥ ८ ॥ चित्त चल्यां नहिं तेहनां, खेद लही मनमांहे ॥ कहे जिनरक्षितने घणु, वाहालो जीवितप्राण ॥ ह० ॥ ९ ॥ ईक्षण मान आलापनी, क्रिया सर खी जी होय ॥ चित्ताह्लादक प्रेमनी, गति न्यारी छे जी कोय ॥ ह० ॥ १० ॥ तुज साथें मुज गोठडी, छे अंतरनी जी सार ॥ ते जाणे मन माह रु, नहि तुज हेज लगार ॥ ह० ॥ ११ ॥ आवो मलो मुज वालहा, द्यो संगमनुंजी सुख ॥ नहितर प्राण तजिश हु माहरां, दोहिलु विरहनुं

दुःख ॥ द० ॥ १२ ॥ नाथ अनाथ परें मुने, मरती देखीने कंत ॥ कां करुणा नथी आवती, निरखो नयणें संत ॥ द० ॥ १३ ॥ कूडो मोह देखाडी कामिनी, प्रगट पाड्योजी पास ॥ जिनरक्षित अवलोकिउं, दुःख दुर्गति जिम तास ॥ द० ॥ १४ ॥ यक्षें नाख्योजी पूठथी, पडतां वींध्यो त्रिशूल ॥ फल पाम्यो मुऊ वचना, खड्गे हणीयोजी मूल ॥ द० ॥ १५ ॥ थइ केडें जिनपालनें, बोले मीठा जी बोल ॥ गति होशे जेम बंधुनी, जो चित्त हुउं मम मोल ॥ द० ॥ १६ ॥ कूड लही तेहनु रह्यो, निश्चल चित्त विचार ॥ यक्ष सघातें जी आवियो, चंपावनह मझार ॥ द० ॥ १७ ॥ पाछी वली गइ व्यंतरी, यक्ष पण वलीयो जी तेह ॥ खम्यो कर जोडी जिनपालने, आणी भक्ति सनेह ॥ द० ॥ १८ ॥ घरे आव्यो मलीयो निज तातनें, एक दिन वीर जिणंद ॥ आव्या पुत्र पिता गया वांदवा, थया प्रभु पासें मुणिंद ॥ द० ॥ १९ ॥ जिनपालित मुनिवर भलो, कीधो उग्र विहार ॥ तप तपीयां अति आकरां, कस्यो आतमनो उद्धार ॥ द० ॥ २० ॥ कह्यो संबध मुनीश्वरें, अमरमुनिने हो काम ॥ कहे उपनय हवे एहनो, ते निसुणो मन ठाम ॥ द० ॥ २१ ॥ ढाल कही ए वीशमी, त्रीजे खंडें रसाल ॥ रामविजय कहे धन्य मुनि, छेदी विषयनी जाल ॥ द० ॥ २२ ॥ ५७६ ॥

॥ दोहा ॥

दोय वणिक जिम जीवडा, सवि संसारी जाण ॥ रत्ना देवी जेम वली, अविरति वार वखाण ॥ १ ॥ अविरतिथी जे उपन्यो, दुःख तणो समुदाय ॥ शबशूलागत नर इहां, जाणो मनमां भाय ॥ २ ॥ जेम स्वरूप तेणें कह्युं, निज अनुभूत अशेष ॥ तेम अविरति दुःख दावे, गुरुउपगार विशेष ॥ ३ ॥ जेम शैलक तारक थयो, तेम संयमगुण सार ॥ दुःखीयानां दुःख उद्धरे, उतारे भवपार ॥ ४ ॥ जेम देवीनें वश पड्यो, जिम रक्षित दुःख दीठ ॥ तेम अविरति वश जीवडो, देखे दुःख अनीठ ॥ ५ ॥ दूर रह्यो देवीथकी, नवी लोपी यक्षआण ॥ कुशलें आव्यो निजपुरि, ते जिनपाल सुजाण ॥ ६ ॥ अविरतिथी विरम्यो रहे, न विराधे चारित्र ॥ नि कर्मा थइ नीपजे, मुनि शिवसुख पवित्र ॥ ७ ॥ ते मार्टे वत्स सांभलो, विरुउं विषय विलास ॥ सुमणे मनमां नाणजो, जो शिवपुरनी आश ॥ ८ ॥ सूधा संयम धर थया, निसुणी गुरु उपदेश ॥ शुद्ध आचारे संचरे, नहिं कषाय लवलेश ॥

॥ ए ॥ रत्नमंजरी साधवी, वेहु जण सुमनोनाव ॥ घातिकर्मक्षय उपन्यो, केवलशुद्ध स्वनाव ॥ १० ॥ मुगतें गयां ते दो जणां, जिहां अनंत सुख राशि ॥ प्रणमुं प्रेमें सिद्ध प्रजु, अनुनव लीलविलास ॥ ११ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ जय सुरपादप जतुना ॥ ए देशी ॥ स्वयप्रन्न मुनिमुखथी सुणी, सघली वात वैराग्य ॥ स्तिमितसागर नरवर कहे, पाम्यो धर्मनो राग ॥ १ ॥ बलिहारी तुम ज्ञानने ॥ ए आंकणी ॥ तुमें महोटा मुनिराज ॥ सबल कपाय वशें कस्या, लीधूं त्रिनुवनराज ॥ ब० ॥ २ ॥ राज्य वेसारी रे पुत्रनें, लेई अनुमति तास ॥ तुम पासें नवतारिणी, लेशु दीक्षा उल्लास ॥ ब० ॥ ३ ॥ घरे आवीने हो थापीयो, अनंतवीर्यने पाट ॥ अपर कुमारपदें उवे, मूकी मननो उच्चाट ॥ ब० ॥ ४ ॥ चारित्र लीधु रे मुनि कने, पाले पंचाचार ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे, मार्ग खांमानी धार ॥ ब० ॥ ५ ॥ कांइक अंते विराधीयो, मन सार्थे मुनिधर्म ॥ असुर अधिप चमरेंड् जी, ते थया जिहा बहु शर्म ॥ ब० ॥ ६ ॥ हवे बधव अपराजिता, अनंतवीर्य अनिधान ॥ राजलीला सुख नोगवे, दिन दिन चढते रे वान ॥ ब० ॥ ७ ॥ खेचर कोइ आवी मल्यो, एकदिन पुण्यसहाय ॥ प्रीति बनी तेहशु घणी, उदयें अचिंतित थाय ॥ ब० ॥ ८ ॥ गगने जवाय हो जेहथी, विद्या दीधी रे सार ॥ विधि सघली रे साधन तणी, तेणें दाखी सुप्रकार ॥ ब० ॥ ए ॥ नामें चिलाती ने बर बरी, नाट्यकलानी रे जाण ॥ तेउने दोय दासी नली, रूपकला गुण खाण ॥ ब० ॥ १० ॥ एकदिन राजसन्ना मली, निरखे नाटक ख्याल ॥ नाचे चिलाती ने बरबरी, यौवन रूप रसाल ॥ ब० ॥ ११ ॥ कोकिल कंठी रे कामिनी, कामकलानी रे धाम ॥ नाव देखाडे हो अति नला, मोह्या महिपति ताम ॥ ब० ॥ १२ ॥ रंगरसें नीना सवे, नाद तणा जेह जाण ॥ नाद निसुणी जे रीझ्यो नहि, ते जगमांहे अजाण ॥ ब० ॥ १३ ॥ यडुक्त ॥ सुनापितेन गीतेन, युवतीना च लीलया ॥ मनोनन्नि द्यते यस्य, स योगी ह्यथवा पशु ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ ब्रह्मचारी कलहागरो, नारदमुनि नन्नचार ॥ आव्यो पण रहेव्यो नहिं, महोटो मोहविकार ॥ ब० ॥ ॥ १४ ॥ नारद मुनि कोपें चढयो, अवगणीयो मुनें आज ॥ चेटीने नाटकें मोहीया, राखी नहिं मुझ लाज ॥ ब० ॥ १५ ॥ ए गुणवती रे

गोरडी, जीवनप्राण आधार ॥ मूंज्या हो एहनां मोहमां, न लहे एह भव हार ॥ ब० ॥ १६ ॥ हरण करावु हो एहनु, कोइ बलवतनी पास ॥ जेम एहनो मद उतरे, उर्दु हो एम विमास ॥ व० ॥ १७ ॥ त्रिहु खंड केरो हो राजियो, विद्याधरनो रे नाथ ॥ प्रतिहरि दमितारि अछे, बलीयो जेहनो रे साथ ॥ व० ॥ १८ ॥ तास सनामांहे आवियो, उठी रे बहु मान ॥ नलें आव्या रे पावन कह्या, तुम आवे वध्यो वान ॥ ब० ॥ १९ ॥ कहो कांइ अद्भुत वारता, ते कहे सुण रे राजेंइ ॥ सुनगा पुरीन्न रे राजीया, तेजें जाणे दिणद ॥ व० ॥ २० ॥ अनतवीर्य अपराजिता, तस घर दासी रे दोय ॥ नामें चिलाती ने बरबरी, जगमां जोड न कोय ॥ ब० ॥ २१ ॥ नाट्यकलाकुशली घणु, ते नाचती रे आज ॥ दीठी हो विस्मय कारिणी, ते विण श्यु तुज राज ॥ व० ॥ २२ ॥ एम कही मुनि उतपत्यो, प्रतिहरि मोह्यो नाम ॥ मोहनगारी रे मानिनी, मोहतणु ए धाम ॥ ब० ॥ २३ ॥ नाम सुणी रे आरति करे, दीठी हरि ले रे चित्त ॥ स्पर्शी हूती हो बल हरे, सगमें वीरज वित्त ॥ व० ॥ २४ ॥ पण नावी न टले किमे, आव्यो सबंध नजीक ॥ चित्त चक्षु रे लेवा नणी, मूके दूत अनीक ॥ व० ॥ २५ ॥ हवे नवियण तुमें सानलो, एह सबध रसाल ॥ त्रीजे खंमें एकवीशमी, रामविजय कही ढाल ॥ ब० ॥ २६ ॥ ६१२ ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ दूत चाल्यो दमितारिनो, सुनगा पुरी संपत्त ॥ साहिब बल बलीयो थको, पहोतो सना तुरत्त ॥ १ ॥ रयण योग्य मुज स्वामिने, नहिं तुम लायक एह ॥ द्यो चेटी अम ईशनें, वाधे सबल सनेह ॥ २ ॥ बे बंधव वलतु कहे, करशुं काम विमासि ॥ ला सीताब स्वामी कनें, दीयो वधाइ तास ॥ ३ ॥ दूत बोलावी चितवे, बे बंधव मनमांहे ॥ करे पराजव ए सही, नवि मोकलीयें त्यांहि ॥ ४ ॥ ते माटें जइ साधीयें, विद्या खेचरें दीध ॥ दर्प टले जो एहनो, तो थाये कारिज सिद्ध ॥५॥ पूर्वजन्म साधित तिसें, आगें उनी आय ॥ विद्या सिद्ध थई कहे, म करो चिंता कांय ॥ ६ ॥ कारिज सिद्ध होशे सवे, जे चितवशो चित्त ॥ नक्ति करे विद्या तणी, गंध माल्य सुपवित्त ॥७॥ इण अवसरें फरि आवीयो, दमितारिनो दूत ॥ कोपें धडहडतो कहे, वडो जाणे यमदूत ॥ ८ ॥ रे चेटी नवि

मोकली,कां मरवानी हूंश ॥ रूठयो स्वामी न मूकशे, जूठ कहुं तो सूंस ॥ए॥

॥ ढाल वावीशमी ॥

करेलडां घढ दे रे ॥ ए देशी ॥ कहे धधव दोय ले चलो, दासीरूप निधान ॥ एहनी स्वामी ऊपरें, प्राण करे कुरवान ॥१॥ वचन अम सुण ले रे ॥ ए आंकणी ॥ रूप करी दासी तणु, विद्यावल वलवान ॥ तुरत जई पहोता तिहां, जिहां प्रतिहरि राजान ॥ व० ॥ २ ॥ कर जोडी नली रही, मृगनयणी मनोहार ॥ दमितारि देखी कहे, अहो अहो अद्भुत नारी ॥ व० ॥ ३ ॥ नाटक मांमयु मानिनी, मोह्यो नरशिरदार ॥ हाव नाव दाखे नला, लटपटाइ लीयो नारि ॥ व० ॥ ४ ॥ देखी कलाकुशलीपणु, वोल्यो एहवा बोल ॥ रूप सुगुण नारी इसी, नहि कोइ जगमां अमोल ॥ व० ॥ ५ ॥ कनक सरीखे मदिरें, जाइ रहो मनमोद ॥ राग कला सवि शीखवो, नव नव नांति विनोद ॥ व० ॥ ६ ॥ ज्यु पयनाजन नालवे, हर्पित होय विमाल ॥ तेम नृपनी लही आगना, थया मनमाहे खुशाल ॥ व० ॥७॥ देखी ते रंना जिसी, रूपवत अनिराम ॥ कुमरी गुणनी उरही, मोही रह्या गुणधाम ॥ व० ॥ ८ ॥ गीतकला गुण केलवे, नाटक नव नव नाति ॥ प्रीति घनी पासें रहे, ते दासी दिन रात ॥ व० ॥ ए ॥ ले वीणा निज हाथमां, तंती चढावी धून ॥ विच विच गाये तानमें, अनतवीर्यके गुन ॥ व० ॥ १० ॥ मुख पूनम मानुं शशी, अर्धचंद्र सम नाल ॥ लोचन पंकज पांखमी, अधर ते लाल गुलाल ॥ व० ॥ ११ ॥ अहो विधिना ए नर घड्यो, वीठे नांजे रे नूख ॥ मानु महियल ए फल्यो, कल्पतरुको रूख ॥ व० ॥ १२ ॥ कहे दासी प्यासी नइ, देखन उन दीदार ॥ अनतवीर्यके ऊपरें, तन मन धन ए उवार ॥ व० ॥ १३ ॥ जिणे उनको देख्यो नहिं, मुखपंकजको फूल ॥ सो नारी लेखे नहि, जीवित तिनकु कबूल ॥ व० ॥१४॥ अपराजित रूपें रही, कहे दासी गुण एम ॥ सुणत नइ ते रागिणी, वाध्यो विपयनो प्रेम ॥ व० ॥ १५ ॥ त्रीजे खर्मे वावीशमी, ढाल नली सुरसाल ॥ राम कहे जग को नहिं, प्रेम समो कोइ साल ॥ व० ॥ ॥ १६ ॥ राग नैरव ॥ मुने कांइ न गमे ॥ ए देशी ॥ मुजकु आण मिलावो, मनमोहनतें राजन ॥ मुज० ॥ ए आंकणी ॥ कनकसिरी कहे सहियर मोरी, मोही रसु मोरुं मन ॥ मु० ॥ १ ॥ अनतवीर्य रजपूत रंगी

लो, अणीयालां लोचन ॥ मु० ॥ २ ॥ गुण निसुणी जइ नता, तरसे मोरु मन ॥ मु० ॥ ३ ॥ प्राण करु कुरबान ए उपर, ए साजन ॥ मु० ॥ ४ ॥ दिन रयणी दिलध्यानें लीनो, आवे एह ॥ मु० ॥ ५ ॥ सागरजल सम तिहां मुज नेलो, सुरसरिता ज्युं ॥ मु० ॥ ६ ॥ कहुं कर जोडी सयानी मोरी, वात सुणो एक ॥ मु० ॥ ७ ॥ स्तिमितसागर कुल शुचि वयरागर, उपन्युं एह रतन ॥ मु० ॥ ८ ॥ मुज डुस्थितनें आपो आणी, नहिंतर शरण अगन ॥ मु० ॥ ए ॥ जइ प्यासी उनको मुख देखन, चातक चाहे ज्युं घन ॥ मु० ॥ १० ॥ उन विण उंर सबे मन मेरे, जनक सहोदर सन ॥ मु० ॥ ११ ॥ लगन लगी मोहे उनके गुनकी, कहा रे कहु हु बचन ॥ मु० ॥ १२ ॥ में सोंप्यु सवि सहीयर एहने, माहरुं तन मन धन ॥ मु० ॥ १३ ॥ जो न मिले मन मोहन मेरो, जाउगी होय योगन ॥ मु० ॥ १४ ॥ कनक सरिखो पूरण पेखी, प्रगट हुवे परसन ॥ मु० ॥ १५ ॥ कर जोडी कहे हाजर बदी, अब में तुम आधीन ॥ मु० ॥ १६ ॥ राग विक लता कारक एसो, नांख्यो श्री जगवन्न ॥ मु० ॥ १७ ॥ वात सुणो अब आगें रसीली, कान धरी सूरि जन्न ॥मु०॥१८॥ सर्व० ॥६५६॥श्लोक॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे हरि जो मुज उपरें, तुज मन मान्यु एम ॥ चालो जइयें निज पुरी, बेसी विमानें क्षेम ॥१॥ कनकसिरी वलतु कहे, करे माहरो तात ॥ तुमने पराजव अति घणो, तेणें मुज मन शकात ॥ २ ॥ बोल्या ते बेहु जणा, मत बीहे मनमांहे ॥ अम आगल शो आशरो, ए कुण गणती मांहे ॥ ३ ॥ वचन सुणी विस्मित हुई, पडी प्रेमके पास ॥ रूप सोंपे गुण मोहिता, साथें चली उल्लास ॥ ४ ॥ विद्याबलें कीधुं नवुं, सुवर एक विमान ॥ संजलावे नृप लोकने, उचा रही असमान ॥ ५ ॥ जो जो सामतादिको, सबल सेन जूजार ॥ हरी जाउं हु नृपसुता, पीछें कीजो वाहार ॥ ६ ॥ सुणि ततखेव कोपें चढयो, कहे प्रतिहरि दमितारि ॥ रे रे सुजट शीपाइयो, जान न पावे गमार ॥७॥ कनकसिरीको ले चल्यो, तुरत विमान उमाइ ॥ पूठेसें वाहर चढी, लियो लपेट अब जाइ ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ कंदर्पना शर रे कांइ करे, कटकें सुगुण राण सधीर ॥ ए देशी ॥

वालम देख रे कांइ चढयो कटकाइ, जनक राण सधीर ॥ मारशे तोकुं आइ अडियो, सवल मोकू पीर ॥ वालम० ॥ १ ॥ चढयो दल चिहु पासें हूती, मेघ ज्यु गंन्नीर ॥ गाजे घन नीशान गाजे, तीर वरसत नीर ॥ वा० ॥ २ ॥ कुंत चमके अणी ऊबके, निसुण नणदल वीर ॥ मानुं चपला चलत चिहुं दिशि, आइ पहुचे वीर ॥ वा० ॥ ३ ॥ सुन्नट दूर व फ्लीय दइने, हाकशे ज्युं हमीर ॥ देखी निजन्नट हटत पीठें, आव्यो प्रति हरि पीर ॥ वा० ॥ ४ ॥ रे रक तु कित जात लेकें, सुता रुचिर शरीर ॥ मारके चक चूर करस्सी, वडे एह अमीर ॥ वा० ॥ ५ ॥ धुजती तव देखे थर थर, कहे हरि सुण नारी ॥ सिंह अके फिकर तनकी, कांइ करत विचार ॥ वा० ॥ ६ ॥ देइ आश्वासन एणी परें, सैन्य सजीशुं जोर ॥ दोडी चिहु दिशि वीर धाये, तव मच्यो रणसोर ॥वा०॥७॥ न्नट ऊट्ट तव उठली, दमितारि सेना साथ ॥ देखी निज वल मद चिते, शोचशु हरि नाथ ॥ वा० ॥ ८ ॥ प्रगट हूए रत्न ततक्षण, शंख धनु वनमाल ॥ गदा मणि उंर खड्ग देखत, हुए दोय वजमाल ॥ वा० ॥ ९ ॥ शंख लेइ करि पूरीयो तब, जोरसें नरसिंह ॥ सैन्य मूर्छित न्नई रिपुकी, आप फोज अवीह ॥ वा० ॥ १० ॥ प्रतिहरि तब आइ ढूक्यो, वैर लेण विचार ॥ रथ चढी रणखेत दोडें, दोय वधु तिवार ॥ वा० ॥ ११ ॥ नजरें नजरें मल्या दुशमन, चढयो क्रोध कराल ॥ रंगें रणमेदान ऊटपट, लडे दोन्नुं व्याल ॥ वा० ॥ १२ ॥ शस्त्रनी जलधार वरसे, रोपशु दमितारि ॥ शस्त्र तो सब न्नये नि फल, खलें ज्यु उपकार ॥ वा० ॥ १३ ॥ शस्त्र खूटे फरिय पूठें, देखी प्रतिहरि दीन ॥ चक्र समरयु आय बेठु, करें कहे सुण हीन ॥ वा० ॥ १४ ॥ देइ तनुजा पाउ पर अब, काहें मरत अकाल ॥ मर विखावत लोहखर्में, वडो तु कगाल ॥ वा० ॥ १५ ॥ कनकसिरि तव कपती यु, धरत मनमां खेद ॥ हा कत प्राणाधार केरो, करेंगो शिरछेद ॥ वा० ॥ १६ ॥ म मर मनमां कत बोले, देख तुं क्या होय ॥ चक्र गेहयु तेणें हरिकर, आय बेठु सोय ॥ वा० ॥ १७ ॥ कहे हरि दमितारि सुण तुं, म मर न्नोगव्य राज ॥ कनकसिरि कुतात उठसी, गइ कीनी आज ॥

लो, अणीयालां लोचन ॥ मु० ॥ २ ॥ गुण निसुणी जइ प्या[illegible] वि नता, तरसे मोरु मन ॥ मु० ॥ ३ ॥ प्राण करु कुरबान ए उपर, [illegible] ए साजन ॥ मु० ॥ ४ ॥ दिन रयणी दिलध्यानें लीनो, आवे एह [illegible] ॥ मु० ॥ ५ ॥ सागरजल सम तिहां मुज नेलो, सुरसरिता ज्युं [illegible] ॥ मु० ॥ ६ ॥ कहुं कर जोडी सयानी मोरी, वात सुणो एक [illegible] ॥ मु० ॥ ७ ॥ स्तिमितसागर कुल शुचि वयरागर, उपन्युं एह रतन ॥ मु० ॥ ८ ॥ मुज इ स्थितनें आपो आणी, नहिंतर शरण [illegible] ॥ मु० ॥ ए ॥ जइ प्यासी उनको मुख देखन, चातक चाहे ज्युं घन ॥ मु० ॥ १० ॥ उन विण डर सवे मन मेरे, जनक सहोदर सन ॥ मु० ॥ ११ ॥ लगन लगी मोहे उनके गुनकी, कहा रे कहु हु वचन्न ॥ मु० ॥ १२ ॥ में सोंप्यु सवि सहीयर एहने, माहरु तन मन धन ॥ मु० ॥ १३ ॥ जो न मिले मन मोहन मेरो, जाउगी होय योगन ॥ मु० ॥ १४ ॥ कनक सरिखो पूरण पेखी, प्रगट हुवे परसन ॥ मु० ॥ १५ ॥ कर जोडी कहे हाजर बदी, अब में तुम आधीन ॥ मु० ॥ १६ ॥ राग विक लता कारक एसो, नांख्यो श्री जगवन्न ॥ मु० ॥ १७ ॥ वात सुणो अब आगें रसीली, कान धरी सूरि जन्न ॥मु०॥१८॥ सर्व० ॥६५६॥श्लोक॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे हरि जो मुज उपरें, तुज मन मान्युं एम ॥ चालो जइयें निज पुरी, बेसी विमानें क्षेम ॥१॥ कनकसिरी वलतु कहे, करें माहरो तात ॥ तुमने पराजव अति घणो, तेणें मुज मन शकात ॥ २ ॥ बोल्या ते बेहु जणा, मत बीहे मनमांहे ॥ अम आगल शो आशरो, ए कुण गणती मांहे ॥ ३ ॥ वचन सुणी विस्मित हुई, पडी प्रेमके पास ॥ रूप शौर्य गुण मोहिता, साथें चली उल्लास ॥ ४ ॥ विद्यावलें कीधु नवुं, सुंदर एक विमान ॥ सजलावे नृप लोकने, उंचा रही असमान ॥ ५ ॥ जो जो सा मतादिको, सबल सेन जूजार ॥ हरी जावं हु नृपसुता, पीछें कीजो वाहार ॥ ६ ॥ सुणि ततखेव कोपें चढयो, कहे प्रतिहरि दमितारि ॥ रे रे सुजट शीपाइयो, जान न पावे गमार ॥७॥ कनकसिरीको ले चल्यो, तुरत विमान उमाइ ॥ पूठेसें वाहर चढी, लियो लपेट अब जाइ ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ कंदर्पना शर रे कांइ करे, कटकें सुगुण राण सधीर ॥ ए देशी ॥

वालम देख रे कांइ चढयो कटकाइ, जनक राण सधीर ॥ मारशे तोकुं आइ अढियो, सबल मोकूं पीर ॥ वालम० ॥ १ ॥ चढयो दल चिहुं पासें हूंती, मेघ ज्यु गम्नीर ॥ गाजे घन नीशान गाजे, तीर वरसत नीर ॥ वा० ॥ २ ॥ कुंत चमके अणी ऊबके, निठुण नणदल वीर ॥ मानुं चपला चलत चिहुं दिशि, आइ पहुंचे वीर ॥ वा० ॥ ३ ॥ सुनट दूर व ह्मीय दश्ने, हाकशे ज्यु हमीर ॥ देखी निजनट हटत पीछें, आव्यो प्रति हरि पीर ॥ वा० ॥ ४ ॥ रे रक तु कित जात लेकें, सुता रुचिर शरीर ॥ मारकें चक चूर करसी, वडे एह अमीर ॥ वा० ॥ ५ ॥ भुजती तव देखे घर घर, कहे हरि सुण नारी ॥ सिंह अके फिकर तनकी, काइ करत वि चार ॥ वा० ॥ ६ ॥ देइ आश्वासन एणी परें, सैन्य सजीयुं जोर ॥ दोडी चिहु दिशि वीर धाये, तव मच्यो रणसोर ॥वा०॥७॥ नट ऊट तव उछली, दमितारि सेना साथ ॥ देखी निज वल मद चिते, शोचह्युं हरि नाथ ॥ वा० ॥ ७ ॥ प्रगट हूए रत्न ततक्षण, शंख धनु वनमाल ॥ गदा मणि उर खड्ग देखत, हुए दोय बजमाल ॥ वा० ॥ ए ॥ शंख लेइ करि पूरीयो तव, जोरसें नरसिंह ॥ सैन्य मूर्छित नई रिपुकी, आप फोज अवीह ॥ वा० ॥ १० ॥ प्रतिहरि तब आइ ढूक्यो, वैर लेण विचार ॥ रथ चढी रणखेत दोडे, दोय बधु तिवार ॥ वा० ॥ ११ ॥ नजरें नजरें मल्या डुशमन, चढयो क्रोध कराल ॥ रंगे रणमेदान ऊटपट, लडे दोनुं व्याल ॥ वा० ॥ १२ ॥ शस्त्रनी जलधार वरसें, रोषह्यु दमितारि ॥ शस्त्र तो सव नये नि फल, खलें ज्यु उपकार ॥ वा० ॥ १३ ॥ शस्त्र त्रूटे फरिय पूठें, देखी प्रतिहरि दीन ॥ चक्र समरयुं आय वेठुं, करें कहे सुण हीन ॥ वा० ॥ १४ ॥ देइ तनुजा पाव पर अब, काहें मरत अकाल ॥ मर दिखा वत लोहखमें, बडो तुं कगाल ॥ वा० ॥ १५ ॥ कनकसिरि तब कंपती यु, धरत मनमां खेद ॥ हा कंत प्राणाधार केरो, करेंगो शिरछेद ॥ वा० ॥ १६ ॥ म मर मनमां कंत बोले, देख तुं क्या होय ॥ चक्र छोडयु तेणें हरिकर, आय बेठु सोय ॥ वा० ॥ १७ ॥ कहे हरि दमितारि सुण तुं, म मर नोगव्य राज ॥ कनकसिरि कुतात वछसी, गइ कीनी आज ॥

वा० ॥ १८ ॥ मान धरि करवाल ले कर, दोडियो आकाश ॥ आवतो देखी चक्रसें हरि, छेदियु शिर तास ॥ वा० ॥१९॥ हुउ जयजयकार नभमें, कुसुमको वरसात ॥ अनतवीरय स्वामी तेरो, प्रबल पुण्य सघात ॥ वा० ॥ २० ॥ विजयअर्धे वासुदेवो, अपर ए बलदेव ॥ चिरं जीवो कोडि खेचर, करण लागे सेव ॥ वा० ॥ २१ ॥ जीत हुइ तब अनतवीरय, उदय ए बल वान ॥ ढाल त्रेवीशमी त्रीजे खण्डें, सुणो सुगुण निधान ॥ वा० ॥२२॥ ६०४॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकसिरी मन चितवे, नागो मुझ आचार ॥ छानी आवी तातथी, में कियो कुलसहार ॥१॥ धिक् धिक् माहापण माहरु, धिक् धिक् माहरु रूप ॥ जोतां मुझ आगल इस्युं, कारिज थयुं विरूप ॥ २ ॥ कुल खंपण हु कुंवरी, का अवतरी जगमांय ॥ जनक अने वली वधुनो, कस्यो विना श इण ठाय ॥ ३ ॥ बे बांधव चाल्या तुरत, बेसी विमान मझार ॥ कनक सिरीकों साथ लइ, बहु खेचर परिवार ॥ ४ ॥ निज नगरी नणी चालतां, विच कनकाद्रि उदार ॥ आव्यो तब खेचर कहे, इहा छे जैनविहार ॥५॥ चैत्य जुहारी जिन तणां, वलतां दीठो साध ॥ कीर्त्तिधर नामें नलो, गुणमणि नखो अगाध ॥ ६ ॥ वरसी तपसी पामियो, उज्ज्वल केवल नाण ॥ दोय नरेश्वर पद नमी, करे मुनि तणा वखाण ॥ ७ ॥ धरा पीठ बेठा बिहु, कर जोडीने ताम ॥ नविक जीव प्रतिबोधवा, कहे मुनि देशन आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ तुगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर वात मीठी, सांनलो नवि वृंद रे ॥ पामियो ए डुलह नरनव, करो धर्म अमंद रे ॥ क० ॥ १ ॥ प्रथम चुल्लक अने पाशक, धान्य द्यूत विचार रे ॥ रयण सुमिण ते चक्र जाणो, कूर्म युग तिम धार रे ॥ क० ॥ २ ॥ दशमे परमाणु वखा णो, एह दश दृष्टांत रे ॥ जाणि डुर्लन एह ज्ञुगतें, मनुज नवनी वात रे ॥ क० ॥ ३ ॥ देश आरिज कुल अरोगी, नाव डुलह सदाव रे ॥ लही योग ए बंध कारण, दूर छांमध विनाव रे ॥ क० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्व अविरति डुष्ट योगा, तिम कषाय प्रमाद रे ॥ कह्या पंच ए बंध हेतु, तजो मन उन्माद रे ॥ क० ॥ ५ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म केरा, सगसें मिथ्यात

रे ॥ पाप विरमण नहि तिल नर, कही अविरति जात रे ॥ क० ॥ ६ ॥ क्रोध मानो माय लोन्नो, मूल चार कषाय रे ॥ खंति आर्जव मुक्ति मार्दव, ए विपर्यय थाय रे ॥ क० ॥ ७ ॥ कहु मदिरा विषय निद्रा, तिम कषाय निवार रे ॥ पचमी विकथा गाम परही, ए प्रमाद म वधार रे ॥ क० ॥ ८ ॥ योग मन वच काय केरा, जाणवो तुमें सार रे ॥ तेरमा गुण गण सूधी, जे रहे निर्धार रे ॥ क०॥ ए ॥ हेतु तूटे गुण प्रगटे, करो तास उपाय रे ॥ कहे केवली धर्मनी मति, करो जिम सुख थाय रे ॥ क० ॥ १० ॥ नव स्वरूपें अधकूपें, मोह नूपें पाश रे ॥ विषयनार्मे मांहे पडि या, होय गति मति नाश रें ॥ क० ॥ ११ ॥ एक विषय विलासहेतें, जे हणे बहु लोक रे ॥ तेहनां फल दोहिलां ते, सहे परन्नव रोक रे ॥ क० ॥ १२ ॥ शैल्य सरिखा कह्या विष सम, कामिनीना न्नोग रे ॥ सुख माने मूढ न लहे, अनादिनो रोग रे ॥ क० ॥ १३ ॥ एह सुख मधुबिंदु सरिखु, अंते कटुक विपाक रे ॥ धन्य एहथी रह्या अलगा,जाणी फल कि पाक रे ॥क०॥१४॥ कनकसिरि कर जोडी जपे, कहो सत्य अवदात रे ॥ विषय चितनथकी डुःख दे, सेविया शी वात रे ॥ क०॥ १५ ॥ पण कहो कुण कर्म हूउं, पितर बधु वियोग रे ॥ कहे नाणी सुणो प्राणी, कर्म सब लो रोग रे ॥ क० ॥१६॥ ढाल चोवीशमी त्रिजे खमें, रंगें दाखी एह रे ॥ रामविजय कहे सुणो हवे, पूर्वन्नव सस्नेह रे ॥ क० ॥ १७ ॥ ७११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे कीरतिधर केवली, शुद्ध नाण उपयोग ॥ देवाणुप्पिय सांन्नलो, पूरवकृतनो न्नोग ॥ १ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

॥ प्रथम अहिरावण दीठो ॥ ए देशी ॥ पूरव धातकीखमें,शखपुर न्नरतें अ खमें ॥ उच्छिन्नवश एक नारी, श्रीदत्ता निरधारी ॥ १ ॥ परघरे करे नित्य काम, अबला डुःखनु ए ठाम ॥ कर्म कमाइनो योग, न मले वांछि त न्नोग ॥ २ ॥ एकदिनें मुनिवर मलिया, मनह मनोरथ फलिया ॥ कहे स्वामी हित दाखो, मुऊने जीवती राखो ॥ ३ ॥ कहे मुनि धर्मचक्र वाल, तप करो थइ उजमाल ॥ प्रथम अठ्ठम दोय करीयें, साडत्रीश चोथ आदरीयें ॥ ४ ॥ देव गुरु न्नक्ति अति सारी, पूजा सत्तर प्रकारी ॥ धन

वा० ॥ १८ ॥ मान धरि करवाल ले कर, दोडियो आकाश ॥ देखी चक्रसें हरि, छेदियु शिर तास ॥ वा० ॥१९॥ हुई जयजयकार नभमें, कुसुमको वरसात ॥ अनतवीरय स्वामी तेरो, प्रबल पुण्य सघात ॥ वा० ॥ २० ॥ विजयअर्धे वासुदेवो, अपर ए बलदेव ॥ चिर जीवो कोडि खेचर, करण लागे सेव ॥ वा० ॥ २१ ॥ जीत हुइ तब अनतवीरय, उत्तम ए बल वान ॥ ढाल त्रेवीशमी त्रीजे खमें, सुणो सुगुण निधान ॥ वा० ॥२२॥५८५॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकसिरी मन चितवे, नाठो मुझ आचार ॥ ठानी आवी तातथी, में कियो कुलसहार ॥१॥ धिक् धिक् माह्यपण माहरु, धिक् धिक् माहरुं रूप ॥ जोतां मुझ आगल इस्युं, कारिज थयु विरूप ॥ २ ॥ कुल खंपण हु कुवरी, का अवतरी जगमांय ॥ जनक अने वली बधुनो, कर्यो विनाश इण ठाय ॥ ३ ॥ बे बांधव चाल्या तुरत, बेसी विमान मझार ॥ कनकसिरीकों साथ लइ, बहु खेचर परिवार ॥ ४ ॥ निज नगरी जणी चालतां, विच कनकाद्रि उदार ॥ आव्यो तब खेचर कहे, इहां छे जैनविहार ॥५॥ चैत्य जुहारी जिन तणा, वलता दीठो साध ॥ कीर्त्तिधर नामें जलो, गुणमणि जस्यो अगाध ॥ ६ ॥ वरसी तपसी पामियो, उज्ज्वल केवल नाण ॥ दोय नरेश्वर पद नमी, करे मुनि तणा वखाण ॥ ७ ॥ धरा पीठ बेठा विहु, कर जोडीने ताम ॥ जविक जीव प्रतिबोधवा, कहे मुनि देशन आम ॥ ८ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ तुगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर वात मीठी, सांजलो जवि ढूंव रे ॥ पामियो ए डुलह नरजव, करो धर्म अमद रे ॥ क० ॥ १ ॥ प्रथम चुल्लक अने पाशक, धान्य धूत विचार रे ॥ रयण सुमिण ते चक्र जाणो, कूर्म युग तिम धार रे ॥ क० ॥ २ ॥ दशमे परमाणु वखाणो, एह दश दृष्टांत रे ॥ जाणि डुर्लज एह जुगतें, मनुज जवनी वात रे ॥ क० ॥ ३ ॥ देश आरिज कुल अरोगी, जाव डुलह सदाव रे ॥ लही योग ए बध कारण, दूर छांमध विजाव रे ॥ क० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्व अविरति डुष्ट योगा, तिम कषाय प्रमाद रे ॥ कह्या पंच ए बध हेतु, तजो मन उन्माद रे ॥ क० ॥ ५ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म केरा, सगसें मिथ्यात

॥ दोहा ॥

॥ कहे मुनि उपनय एहवो, नयरी उज्जेणी नाम ॥ नृप जितरिपु धारिणी तनय, नरसिंह सुत अभिराम ॥ १ ॥ सकलकला पूरण शशी, यौवनरूप रसाल ॥ कन्या परणावी पिता, द्वात्रिंशत सुकुमार ॥ २ ॥ अतुली बल सुख भोगवे, मनोवांछित संयोग ॥ मात पिता मनवल्लहो, विलसे विषयिक भोग ॥ ३ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

॥ मगध देशको राज राजेश्वर ॥ ए देशी ॥ एकदिवस ते पुरनें परिसरें, आव्यो हो वननो हाथी ॥ उज्ज्वल वर्णें गज तिम उंचो, नृपनें कशु कोइ साथी के ॥ १ ॥ राजन् अरज सुणो एक मोरी ॥ हुं बलिहारी तोरी ॥ बा लेसर ॥अ०॥ ए आंकणी ॥ गज कोप्यो जन विप्लव करतो, राख हो अमचा स्वामी ॥ अमो अनाथ अशरण कोण आगें, कहियें जइ शिर नामी के ॥ रा० ॥ २ ॥ सुणि राजा सेना दोडावी, सबल राणीना जाया ॥ देखी गज मदमत्त मदोद्धत, दीन थइ फरी आया के ॥ रा० ॥ ३ ॥ आप थयो असवार नरेश्वर, पहेरी सन्नाह ते शूरो ॥ आवी नमे नरसिंह कुम रजी, बोले एम गुणपूरो के ॥ रा० ॥ ४ ॥ राज बिराजो महोलें छाजो, हुकम करो अब अमने ॥ फुरमावो तेहनें बांधीने, गुजरावु लेइ स्थानें के ॥ रा० ॥ ५ ॥ हुकम हुवो गज लावो हो जाली, दोड्यो थइ असवार ॥ केसरीया रजपुत रढियाला, साथे सबल परिवार ॥ रा० ॥ ॥ ६ ॥ दीठो गज नव हाथनो लांबो, सात उन्नत त्रण पहोलो ॥ दीर्घ दंत कर पिंगल नयणें, दरिसण जेहनो न सोहिलो के ॥ रा० ॥ ७ ॥ चारशें चालीश लक्षणें पूरो, दीठो गयंद कुमारें ॥ सिंधुर राजकुमर भणी धसियो, लोक सहूको वारे ॥ ८ ॥ कुमरजी ए गज झाल्यो न जाय ॥ देखि ततखेव ए यमना सरिखो, ए पासें जाय बलाय ॥ कुम० ॥ ए० ॥ कुमर कहे तुमें दूरें रहो सवि, ए गजनें नसाडुं ॥ तो जितरिपु कुलनो हुं जायो, गज आणु मही चाडुं के ॥ रा० ॥ ए ॥ चक्रपरें गजने फेरवियो, पकड्यो हो तेहनें गाढो ॥ चरणें खेदाणो श्वासें भराणो, उभो रह्यो थइ टाढो के ॥ रा० ॥ १० ॥ जई वेगें ऊपर लघु कलश, बलीयो राजकुमार ॥ विस्मय पाम्या आलानें आण्यो, वरत्यो जय जय

होय तो एम कीजें, ज्ञान संपत्ति सारु दीजें ॥ ५ ॥ गुरु दीधुं तप लीधु, माने कारिज सीधुं ॥ धन्य गुरु मुज समजावी, सूधी राह बतावी ॥ ६ ॥ गुरु वदी घरे आवी, कहे पाढोशण नावी ॥ तप करे मन शिव आणी, लोकें उत्तम जाणी ॥ ७ ॥ पारणे खबर ले सारी, ए छे कर्म विचारी ॥ तप महोटुं जिन साध्युं; आतम गुणथी ए वाध्युं ॥ ८ ॥ साख्विक राजसी जोय, तामस त्रीजुं ए होय ॥ दोय तजी एक करीयें, सदेजें शिवसुख वरीयें ॥ए॥ तपस्वी घणी थइ नारी, एक दिन चिंत मणारी ॥ जोता कचन पायो, हियडे हेज न मायो ॥ १० ॥ वाधी तपनी प्रतीति, उजमणुं करे रीति ॥ जिनवर पूजा रचावे, साहामी तेडी जिमावे ॥ ११ ॥ तप कजमणुं ए कीधु, मणुज जन्म फल लीधु ॥ तप उजमणा थी वाधे, निज उल्लाहें जो साधे ॥ १२ ॥ तपथी होवे व्यवदान, तप ए मुक्ति निदान ॥ तप तपीयुं ए नीराशी, प्रगटे निजगुण राशि ॥ १३ ॥ यडुक्त ॥ यदूर यद्वरा० ॥ १ ॥ मासखमण उपवासी, समगुणनो जल राशि ॥ एहवे एक मुनि आव्यो, श्रीदत्ता मन नाव्यो ॥ १४ ॥ उठी गइ तस सामी, पाउ धारो मुज स्वामी ॥ पतितने पावन कीजें, आहार निरवद्य लीजें ॥ १५ ॥ पडिलाने मुनि नावें, अशनादिक वहोरावे ॥ कहे कृतकृत्य छुं आज, संतोष्या मुनिराज ॥ १६ ॥ धर्म कहो मुज मीठो, फल जस नयणडे दीठो ॥ पाछली पोरसी आइ, सुणजो धर्म सखाइ ॥ १७ ॥ मुनिवरें कीधो आहार, मास खमण चोविहार ॥ धासो दिवस बीजाथी, सूधो मुक्तिनो साथी ॥ १८ ॥ श्रीदत्ता तिहां आवे, मुनि वर वांद्या ते ए नावें ॥ मुनि कहे जिनवर धर्म, निसुणो एहनो मर्म ॥१ए॥ त्रीजा मित्र समान, आपे शिवसुखदान ॥ एहना तीन प्रकार, सुणजो ते निर्धार ॥ २० ॥ प्रथम त्वचागत कहीयें, दिलमांहे वहीयें ॥ बीजो अ स्थिगत साचो, पण परमारथ काचो ॥ २१ ॥ त्रीजो मज्जामां नेवो, धर्म न जाये उच्छेद्यो ॥ प्राणांतें नवि मूके, कष्ट पडे नवि चूके ॥ २२ ॥ एह अर्थ एम ध्यावे, परअनर्थ मन लावे ॥ केम अमूरत धर्मे, अस्थि मज्जा कहो मर्मे ॥ २३ ॥ श्हां उपनय बतलावे, मुनि हवे एम समजावे ॥ कही पच वीशमी ढाल, त्रीजे खंडें रसाल ॥२४॥ सर्वगाथा ॥७३८॥ श्लोक ॥१२॥

॥ ढाल सत्यावीशमी ॥

॥ देशी ऊकडीनी ॥ सुण योगींदा वे, वात कहुं अव मेरी ॥ धनके कारण वे, बहुत देइ में फेरी ॥ त्रू० ॥ फेरी दीधी देश विदेशें, बहुत दिवस हूआ मोकुं ॥ नूख्या तरष्या धन मेलणकु, बहुत क्या में कहु तोकु ॥ पण उपगारी कोउ न मलिया, जासु टले ए डु खदंदा ॥ थाका आया देखी तरुछाया, सुख पाया सुण योगींदा ॥ सुण योगींदा वे ॥ १ ॥ धन मन मानु वे, ओर कहा जगमांये ॥ धनसे इज्जत वे, जिहां जावे उहां पावे ॥ त्रू०॥ पाइ इज्जत दोलत डुनियां, धन विण काज न कोइ सरे ॥ निर्धन उर मृत दोउ बरोबर, कवि ग्रथांतर यु उच्चरे ॥ परणी घरणी ते पण ठमे, फरे कुलीन पण अणमान्यु ॥ न गणे कोइ प्रतीति ते नरनी, ते माटें धन मन मान्यु ॥ ध० ॥ २ ॥ अब तु पाया वे, नाग्यदशा मुऊ जागी ॥ कर सुपसाया वे, हो मुऊ उपर रागी ॥ त्रू० ॥ रागी होइ करो मुऊ करुणा, करणी तुमची अति सारी ॥ अवधूत कहावो अलक जगावो, डुनियामें तुम गति न्यारी ॥ आलसुआ घर आवी गंगा, रंग नया मोरे मन नाया ॥ दरिद्र डु ख ठेहा जोय नमेहा, ताप टले अब तु पाया ॥अ०॥ ३ ॥ कहे ते हरखी वे, कुण कुण देश तें देखे ॥ कहो मुऊ आगें वे, वात विचार शुं लेखे ॥ त्रू० ॥ लेखे वात विचारी पंथी, कहे चोराशी फरि आयो॥ कुण कुण तेह बताव ते मोकु, नांखे कलट मन पायो ॥ मेंनी देखे देश बहुत हे, उनकी रीति मिले सरखी ॥ तामें जाणु तरत पिठाणु, साची ते कहे ते हरखी ॥ क० ॥ ४ ॥ सोरठ देख्यो वे, चतुर जिहां नर नारी॥ मधुरु बोले वे, मानु सुर अवतारी ॥ त्रू० ॥ सुर अवतारी जिहा दो तीरथ, शत्रुंजय गढ गिरनारी॥ आदीश्वर अलवेसर स्थाप्या, जाउं उनकी बलिहारी ॥ कोडाकोडि अनंता सिद्धा, जिहां मुनिवर सो में पेख्या ॥ बहु दिन उहां फरिया बहु नीसरीया, योगीश्वर सोरठ देख्या ॥सो०॥ ५ ॥ कुकण देख्या वे, जिहां पग पग पनवाडी ॥ नालीयेर कवली वे, नोजन सुंदर शाली ॥ त्रू० ॥ शाली नोजन चतुरविचक्षण, लोक सहूको नहिं डुखीयो॥ गयो गुजरान करन उनदेशें, तोनी में न नयो सुखीयो ॥ कामण दूमण वाले बहुले, सबही मोकुं उवेख्यो ॥ कहु अवधूता सुण तु मित्ता, ऐसो मे कुकण देख्यो ॥ कु० ॥ ६ ॥ यूं बहुतेरे वे, अंग तैलंग कलिंगा ॥ लाट

कार के ॥ रा० ॥ ११ ॥ जनक समीपें आव्यो कर जोडी, विनये नामे शीश ॥ सहु आशिष दीये चिरं जीवो, कुंअर कोटि वरीस के ॥ रा० ॥ १२ ॥ चिंतवे नरवर राजधुरंधर, पुत्र सुकुल सुह आगे ॥ न घटे राज्यमा रहेवु, आव्यु मन वेराग्यें के ॥ रा० ॥ १३ ॥ यडुक्तं ॥ जारं जाणे वि पुत्ते, जो नियनारं ठविज्जु निभ्रंतो ॥ न य साहेइ सकज्जं, सो मुत्तलिंके मणि नणिउ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ लहि सम्मति सुत राज्यें थापी, नृप अर्थप्त मुनि पासें॥लोच करी मन शोप हरीने, चारित्र पाले ठलासें के ॥ रा० ॥ १४ ॥ चपकवरणी काया हो कोमल, कीधो उग्र विहार ॥ पंच समिति त्रण गुप्ति संनाले, पाले पचाचार के ॥ रा० ॥ १५ ॥ हवे नरसिंह नरेसर रूडे, पाले प्रजाने प्रेमें ॥ न्यायमार्गे नवि चूके कोइ, सहुको वर्ते खेम के ॥ रा० ॥ १६ ॥ अन्य दिवस अतिमायी प्रकट्यो, आकरो चोर प्रचंड ॥ नगर मुष्यु सघलु तिण धूर्त्ते, कोइ न देई शके दंम के ॥ रा० ॥ १७ ॥ महाजन लोक मलीने आवे, राजन किम रहेवाये ॥ धोले दहाडे धूर्ते हो धूरत, रातें बाहार न जाय के॥रा०॥१८॥ देइ दिलासो महाजन वास्यो, आरक्षक रखवालें ॥ पुनरपि महाजन फरियाद कीधी, का नृप अम नवि पाले के ॥ रा० ॥ १९ ॥ नहितर स्थानक आपो अलगु, तिहां अम्नें अमें वसीयें ॥ तिहां आरक्षक काठो कीधो, बोलाव्यो रायें रसीये के ॥ रा० ॥ २० ॥ कहे महाजन राजन इहां एहनो, वाक न कांइ दीसे ॥ वहूअर बेटी जाय ठकेटी, धूरत रात न दीसे के ॥ रा० ॥ २१ ॥ ए कोइ बलीयो ने वली ठलियो, कोइ प्रपंचें जीताये ॥ कहे राजा करिश हुं रूडुं, महाजन कीधु विदाय ॥रा०॥२२॥ कहे सुव्रत श्रीदत्ता सुण हवे, अस्थिर मज्ञानी घात॥ त्रीजे खंर्मे ढाल ठवीशमी, साजलो मूकी वात के ॥२३॥७४२॥

॥ दोहा ॥

॥ वठ वेष धरि नीसर्यो, रातें ते राजान ॥ सघले शका स्थानकें, भ्रमण करे धरि शान ॥ १ रात्रिमांहे बाहिर दिने, फरे अहोनिश ते नूप ॥ पण किहांये दीठु नहिं, तस्करतणुं स्वरूप ॥ २ ॥ अन्य दिवस संध्या समय, बेठो तरुतलें राय ॥ वस्त्र कषाय त्रिदंमियो, दीठो मारगमांय ॥ ३ ॥ निज समीप आव्यो यदा, नम्यो नरेश्वर ताम ॥ कुण तुं किहांथी आवीयो, तिणे पण पूठ्यु आम ॥ ४ ॥

थयो तिहां जी, जाण्युं लाकड एक ॥ निजस्थानक मूकी करी रे, तरु कोटरें रह्यो धरि टेक रे ॥ चो० ॥ ४ ॥ ठग कठी जोयु जिस्यें जी, सूतो जाणी तास ॥ खड्ग हणी कथा खम्ड वे रे, नृपभ्रांतें रे अविमास रे ॥ चो० ॥५॥ पट परहु करी जोइयु जी, अहो अहो ठगीयो मुझ ॥ पश्चात्ताप करे घणो जी, नवि जाण्यु रे में एहनु गुझ रे ॥ चो० ॥ ६ ॥ राजन कहे सुण पापीया जी, थाजे हवे हुशियार ॥ पापनो घट पूरण हुउ रे, नहि मूकु रे हवे निर्धार रे ॥ चो० ॥ ७ ॥ नलु नलुं कहेता सामुहो जी, थयो झाली तरवार ॥ खड्गाखड्गे तेहनु रे, युद्ध मातु रे थयु बहु वार रे ॥ चो० ॥ ८ ॥ कल पामीने राजवी जी, चोरनें हणीयो मर्म ॥ लडथड तो नीचे पड्यो रे, एम आव्यु रे उदय निज कर्म रे ॥ चो० ॥ ए ॥ विधु र थयो ते घातथी जी, नृपप्रत्यें कहे वात ॥ वीर ठग्युं पुर ताहरु रे, तो पाम्यो रे अचित्यो घात रे ॥ चो० ॥ १० ॥ सुण मरवु सही माहरे जी, ए देवलनी पूठ ॥ पाताल मदिर ठे नलु रे, तुमें जाउ रे सितावी ऊठ रे ॥ चो० ॥ ११ ॥ बहु नयरनी नारीयां जी, घाली नूमि मझार ॥ इव्य अठे वलि त्यां घणु रे, तुमें करजो रे हो तेहनी सार रे ॥ चो० ॥ १२ ॥ खड्ग लेइ जाउ माहरु जी, देजो हो विवरें साद ॥ तुरत आवीने उघाड शे रे, निसुणीने रे तुमारो नाद रे ॥ चो० ॥ १३ ॥ मरण कहेजो माहरुं जी, देजो खड्ग निशानि ॥ द्वार उघाडी ताहरी रे, एह सेवा करशे सुजाण रे ॥ चो० ॥ १४ ॥ खड्ग लेई नृप चालीयो जी, पहोतो भुवन द्वार ॥ सवि वृत्तांत सुणी करी रे, पेसाड्यो रे भुवन मझार रे ॥ चो० ॥ १५ ॥ इण पर्यंकें साहिबा जी, वेसो आवी राज ॥ तुम दर्शनथी माहरां रे, सवि सीध्यां रे वांछित काज रे ॥ चो० ॥ १६ ॥ द्वार देई आ रुं तवा जी, प्रछन्न जोतां रे वीठ ॥ सा शकी नृपें उलखी रे, करे कांइ रे एह अनीठ रे ॥ चो० ॥१७॥ निज उपधाननें स्थापीने जी, आप दीप घन ठाय ॥ रहियो यंत्रशिला तदा रे, तेणें मूकी रे तिण ठाय ॥ चो० ॥ १८ ॥ शय्या शतखमित थइ जी, ताली देती ताम ॥ अहो मुझ बंधव तणा रे, वैरीनु रे कीधुं काम रे ॥ चो० ॥ १ए ॥ दोडी राजा आवीने जी, केशें झाली प्रचम्ड ॥ हवे पहोंचाडुं तुनें रे, निजबंधव रे मार्गे रम्ड ॥ चो० ॥ २० ॥ दीन वचन मुख बोलती जी, जीवती मूकी मांहे ॥ द्वार

कुणाला वे, मरुधर गुज्जर घणा ॥ त्रू० ॥ घणा देस जिहां नवरंगा, निर्मल नीर वहे ॥ काशी देश सुवेशा मानव, जिण दीठे आनंद नव नापा नव नव शाखा, दाखी सुण साई मेरे ॥ धन नवि पायो गमायो, देखे देश शु वहुतेरे ॥ दे० ॥ ७ ॥ धूरत चिंते वे, साधु एवे ख्यु ॥ करशे महारु घे, कारिज पासें राखु ॥ त्रू० ॥ राख्या पासें विमासे, मत फिकर मनमांहे धरे ॥ मन चाहे सो लछमी लेनां, कहु सो तु काज करे ॥ अंगीकार कखु तस नाख्यु, जाण्यो चोर ए चित्तें ॥ रात पडी पसखुं तम वहुलु, तव मनमा धूरत चिंते ॥ धू० ॥ ८ ॥ सुण वैदेशी वे, तस्करने जे प्यारी ॥ सन्मुख आवी वे, रयणी ए अंधारी ॥त्रू०॥ रात अंधारी आपण प्यारी, ले कृपाण करमें तेरा ॥ चाल नवरमें ईश्वर घरमा, धन लावे जइ वहुतेरा ॥ सत्त्यावीशमी त्रीजे खंडें, ढाल कही ठकडी देशी ॥ आव्यु पाप उदय हवे एहनु, राम कहे सुण वैदेशी ॥ क० ॥ ए ॥ सर्वगाथा ॥ ७७५ ॥ श्लोक तथा गाथा मली॥१५

॥ दोहा ॥

॥ काढयुं खड्ग पडिहारथी, ऊबके ज्योति अपार ॥ चिंते नृप एहने हणु, वली मन करे विचार ॥ १ ॥ एक वार जोऊ चरित, हणवो महारे हाथ ॥ एम चिंतीनें चालीयो, नृपति तेहनी साथ ॥ २ ॥ धूरत मन शोचे इस्यु, नहिं खड्ग सामान्य ॥ इण खड्गें जाणु सही, दीसे ठे राजान ॥ ३ ॥ तो उपाय काइक करी, कूटी मारु राय ॥ वेहु धूर्त्ते धूर्तज मल्या, जोजो शु हवे थाय ॥ ४ ॥ आघो जइ पाछो वल्यो, कहे धूरत पुरलोक ॥ हमणा जागे ठे इहां, सूईजें गतशोक ॥ ५ ॥ राजायें दोय कीधला, पत्र व संस्तर ताम ॥ एकण वीशामो स्वयं, बीजे चोर हराम ॥ ६ ॥

॥ ढाल अठ्ठावीशमी ॥

॥ मूकी धो मति दंजनी जी ॥ ए देशी ॥ चोर विचारे चित्तमां जी, मुफ मायानो एह ॥ मुफ जागतां ए केम मरे, नवि सूवे कपटनुं गेह रे ॥ १ ॥ चोर कला नवि कीजीयें जी ॥ ए आंकणी ॥ चोरीयें जय नवि थाय ॥ धन मेले धूती घणु रे, पण आखर जीवथी जाय रे ॥ चो० ॥ २ ॥ लांबो सोडो ताणीने जी, सूतो चोर तिवार ॥ एम ठग ताके पापिया रे, नवि जोवे रे विपाक विचार रे ॥ चो० ॥ ३ ॥ नृप हलवे

॥ ३ ॥ तप करी काया शोषवी, हालंतां हे वाजे वलि हाड के ॥ सहे परीसह आकरा, नूख तृषा हे वली ताप ने टाढ के ॥ न० ॥ ४ ॥ घाती कर्मक्षयथी लह्या, नाण पचम हे पचमगति वास के ॥ करुं कर जोडी वदणा, सिद्धरूपी हे थया लीलविलास के ॥ न० ॥ ५ ॥ कहे सुव्रत जेम योगीने, चूरणें करी हे वासी तस मीज के ॥ तेम धर्मे ए आतमा, वासीजें हे आणी शुद्ध रीऊ के ॥ न० ॥ ६ ॥ एम उपदेश सुणी नलो, श्रीदत्ता हे ग्रहे श्रावकधर्म के ॥ मुनि वदी मदिर वली, मनमाहे हे जाण्या व्रतमर्म के ॥ न० ॥ ७ ॥ सामायिक पोसह करे, छठ अठम हे आंबिल उपवास के ॥ नित्यें विगय न वावरे, शुन्न नावना हे नावे उल्लास के ॥ न० ॥ ८ ॥ एक दिन कर्म तणे वशें, मनमाहे हे आव्युं तस एम के ॥ शुं फल होशे के नहिं, पालु हुं हो सूधो धरी प्रेम के ॥ न० ॥ ए ॥ विचिकित्सा एहवी करी, चवि तिहांथी हे जिहां उतपन्न के ॥ कहे कीर्त्तिधर केवली, ते दाखुं हे सुणो राजन के ॥ न० ॥ १० ॥ इण विजयें वैताढ्यमां, सुरमदिरें हे नगरें गुणवत के ॥ कनकपूज्य राजा नलो, वायुवेगा हे राणीनो कत के ॥ न० ॥ ११ ॥ कीर्त्तिधर सुत जेहनो, नरयौवन हे आव्यो नूपाल के ॥ अनिलवेगा मुऊ कामिनी, गुणवती हे रूपें रतिबाल के ॥ न० ॥ १२ ॥ कुन्न वृषन्न गजराजने, स्वप्न त्रयें हो सूचित सुत सार के ॥ प्रसव्यो आगल ते थयो, जोरावर हे प्रतिहरि दमितारि के ॥ न० ॥ १३ ॥ बहुकन्या परणावियो, में सोंप्युं हो तेहने निजराज्य के ॥ गुरुपासें अणगारता, में लीधी हो लेवा शिवराज के ॥ न० ॥ १४ ॥ ते दमितारिनी वल्लन्ना, मदें राती हो कूखें सजात के ॥ कनकसिरी पुत्री नली, तुं हुइ हे इहां गुण विख्यात के ॥ न० ॥ १५ ॥ करी विचिकित्सा पूर्वे, तेमाटें हे थयो बंधुवियोग के ॥ सकल कमाइ आपणी, जग महोटो हे ए कर्मनो रोग के ॥ न० ॥ १६ ॥ निज पूरव नव सान्नली, मुनि मुखथी हो पामी वैराग्य के ॥ धिक् धिक् विषयी जीवने, विषयाथी हे नावे नवताग के ॥ न० ॥ १७ ॥ बेहु बधवने विनवे, जो अनुमति हे आपो मुऊ आज के ॥ तो दीक्षा जिनराजनी, ग्रही सारु हे आतमनां काज के ॥ न० ॥ १८ ॥ अनंतवीर्य अपराजिता, कहे सुनगे हे सुनगा पुरी जाय के ॥ स्वयंप्रन्न जिनपासें तुमें,

छयाडी आवियो रे, निजमंदिर रे नृप उत्साह रे ॥ चो० ॥ ११ ॥ ऊ
गयो रवि ऊगीयो जी, पुरजन साथें राय ॥ आवे तिहां उत्सावलो
कहे सहुने रे जोवो आय रे ॥ चो० ॥ १२ ॥ जे जेहनुं होय ते
जी, नारी अने धनराशि ॥ लेई सहु पुर आवीया रे, नृप
सुजसविलास रे ॥ चो० ॥१३॥ जे नारी आणी घरे जी, ते रति न लहे
लगार ॥ दस्यु उपर मोही रही रे, दोडी जावे रे चोरके गार रे ॥ चो०
॥ १४ ॥ जन आवी कहे रायनें जी, रायें बोलाव्या वैद्य ॥ कहे उप
चार ते कीजियें रे, गुटिकादि करे बलि नैवेद्य रे ॥ चो० ॥ १५ ॥ ते
कहे कामण चूरणें जी, थइ परवश ए बाल ॥ निजचूरण आपी करी रे,
करु साजी रे हु ततकाल रे ॥ चो० ॥ १६ ॥ राजहुकम वैद्यें करी जी,
ते सवि मूल स्वनाव ॥ एक रही कांगहु परें रे, नवि गमे रे तेह विजाव रे
॥ चो० ॥ १७ ॥ विस्मय पाम्यो राजीयो जी, पूछे हो कारण तेह ॥
वैद्य कहे सुण साहिबा रे, कहु कारण रे हु ससनेह रे ॥ चो० ॥ १८ ॥
ढाल नणी अवधावीशमी जी, त्रीजे खमें विचार ॥ कहेशे राजा आगलें
रे, चूर्णनो रे हवे अधिकार रे ॥ चो० ॥१९॥ सर्वगाथा ॥८१०॥ श्लोक१५॥

॥ दोहा ॥

॥ चूर्णथी रे वासी त्वचा, कोइकनी माहाराज ॥ मांस रुधिर कोइक
तणां, वास्यां गरिव निवाज ॥ १ ॥ ते में सवि प्रतिचूर्णथी, करी नीरो
गी काय ॥ पण एहनी अस्थिमज्जा, वासी छे माहाराज ॥ २ ॥ ते माटें
दस्यु तणां, अस्थि घसीनें पाय ॥ तो राजन ए कामिनी, सहेजें साजी
थाय ॥ ३ ॥ ते तिम राय करावियु, निर्विकार थइ ताम ॥ सकल लोक
आनंद नयो, चिर जीवो ए स्वामि ॥ ४ ॥

॥ ढाल ओगणत्रीशमी ॥

॥ राजुल बेठी मालीये ॥ ए देशी ॥ इण अवसरें तिहां आवीया,
निजजनकना हे दीक्षा गुरुराज के ॥ श्रीजयंधरनामें नला, नवजलनिधि हो
तारणना जहाज के ॥१॥ नरसिंह नृप वैरागीयो, गुणसागर हे सुतनें
देइ राज के ॥ पोतें संयम आदर्यो, गुण गीरुउ हे निज आतम काज
के ॥ न० ॥ २ ॥ पंचाचार विचारना, गुण पाले हो चाले शुद्ध पंथ
कें ॥ मारग मुनिवरनो नलो, आराधे हो नहिं कोइ पलिमंथ के ॥ न०

कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी, सुणे पर्षदा वार वेठी नलेरी ॥ सुधांनोद धारा समी ताप टाले, वेहु वधवा साम्नले एक ढालें ॥ ७ ॥ सुणे वाणी वैराग्यनी चित्त चगें, कहे सोवनश्री दियो दीक्ष रगें ॥ हतो नावचारित्र अन्यास पूरो, हवे साधशे योग करि चित्त शूरो ॥ ८ ॥ ग्रही आगना श्री हरि शौरि पासें, वरे उत्सवें साधुधर्म उल्लासें ॥ नमी नाथनें तेह निज गेह आव्या, जिनध्यानथी पूर्ण आनद पाव्या ॥९॥ करे एक चित्तें तपस्या अ माया, शुन्नध्यानथी कर्मघाती खपाया ॥ चढी श्रेणिमा केवलज्ञान पाया, नमुं साहुणी सोवनश्री सुहाया ॥१०॥ लहे मोक्षनां सौख्य लीला अनंती, वर क्षायिक ज्ञान नावें लसती ॥ चिदानद चित्ते धरो ध्येय जाणी, कहे राम नित्यें जपो जैनवाणी ॥ ११ ॥ इति श्रीजीनस्तुतिसदर्भित कनकश्री स्तुति ॥ पूर्वदोहा ॥ बल अपराजितनें घरे, विरता नामें नारि ॥ गुणवत्ती गुण आगली, गुणमणिनो नमार ॥ ७ ॥ सुमति इस्ये नामें हुइ, तेहने पुत्री एक ॥ नामें परिणामें समी, जाणे सयल विवेक ॥ ८ ॥ सज्गुरुनी सग ति लहे, तत्त्वाऽतत्त्व विचार ॥ तप करवे शूरी घणु, बालपणाथी सार ॥ ९ ॥ जैनग्रथ जाणे नला, सूधी समकितवत ॥ नूषण पंच समाचरे, टाले दूषण तंत ॥ १० ॥ आवश्यक विहु टकना, साचवती शुन्न चित्त ॥ सामायिक सूधा धरे, जाणे सहु जग मित्त ॥ ११ ॥ दूषण टाले तेहनां, बोल्यां जे बत्रीश॥कामिनी चिते घरतणां, न धरे मनमा रीश ॥१२॥ एक दिन चोथनें पारणे, आव्यो मुनि तस गेह ॥ कहीने कन्नी थइ, आणी धर्म सनेह ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ देशी चावलीयानी॥ इण आंगणीये पाय धारो, साधूजी मुज साधारो, नवजलनिधि पार उतारो रे ॥ मुनिवरजी॥१॥ नरि थाल थपाडीनें लावी, मामथो पडघो समन्नावी, कहे नावें नीनी आवी रे ॥ मु० ॥ २ ॥ मुज पतितनें पावन कीजें, प्रनुजी आहार ए लीजें, तुम दीठे दिलडुं रीजे रे ॥ मु० ॥ ३ ॥ आज नाग्यदशा मुज जागी, तुज दर्शननी थइ रागी ॥ करो पावन वड वैरागी रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ दीये उलट नावें दान, करती तपसी गुणगान, हियडे धरे हर्ष असमान रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ तस दान प्रनावें आव्या, पंच दिव्य करे सुर नाव्या, अहो महोटा मुनि पडिलाम्या

लेइ दीक्षा हे करजो शुचि काय के ॥ न० ॥ १९ ॥ तेह तपोवनमें वली वेहु बधव हे कनकश्री साथ के ॥ थेसी विमानें चालीया, सुणजो हवे आव्या नरनाथ के ॥ ना० ॥ २० ॥ लाख बहेंतालीश गज जला, तेम वली हे रथ तुरग वखाण के ॥ सोल सहस्र सेवे नला, मउली वड हे महोटा राजान के ॥ न० ॥२१॥ बे बाधव धरा नोगवे,अतुलीबल हे ते बल देव के ॥ बत्रिश सहस्र अतेउरी, हरिनें घर हे सुर सारे सेव के ॥ न० ॥ २२ ॥ हवे कनकसिरीनो सुणो, शुनजावें हे दीक्षा अधिकार के ॥ त्रीजे उंगणत्रीशमी, ढाल नाखी हे रामविजय उदार के ॥न०॥२३॥०॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे आवी समोसख्या, श्रीस्वयंप्रन्न जिनराज ॥ चउविह वेहें परखदा, सार्थे बहु मुनिराज ॥ १ ॥ पावन करता पाउले, गुण अनत अरिहंत ॥ समवसरण देवें रच्यु, नामभल ऊलकत ॥ २ ॥ वेगें दीधि वधामणी, वनपालक तेणि वार ॥ लाधो साडाबार लाख, सोवणनो अधार ॥ ३ ॥ बे बधव वदण चल्या, कनकसिरी सुरंग ॥ सेना लइ चतुरगिणी, आव्या श्रीजिनसग ॥ ४ ॥ समवसरण दीठु तिहा, वाध्या मनना कोड ॥ बेहु बधव आवी करी, वदे त्रिहु कर जोडि ॥ ५ ॥ जिन देखीनें उल्लस्या, जिम कोकिल मकरद ॥ करे स्तवन जिनराजनु, मनमा धरे आनद ॥ ६ ॥ अथ श्रीजिनस्तुति ॥भुजगीछद॥ जगन्नाथनें ते नमे हाथ जोडी,करे वीनति नक्ति शु मान मोडी ॥ कृपानाथ ससारकूपार तारु, लह्यु पुण्यथी आज दीदार तहारु ॥ १ ॥ सोहिलो मिले राजदेवादि नोगो, पर दोहिलो एक तुज नक्तियोगो ॥ घणा कालथी तु लह्यो स्वामी मीठो, प्रन्नो पारगामी सहू छु:ख नीठो ॥२॥ चिदानदरूपी परब्रह्म लीला, विलासी विन्नो त्यक्तकामाग्नि कीला ॥ गुणाधार योगीश नेता अमायी, जय त्व विन्नो नूतले सौम्य दायी ॥ ३ ॥ न दीठी जेणें तादृरी योगमुद्रा, पड्या रात दिवसें महा मोह निद्रा ॥ किसी तास होशे गति ज्ञानसिंधो, नमतां नवें हे जगब्धंधो ॥ ४ ॥ सुधास्पंदि ते दर्शन नित्य देखे, गणु तेहनो हु विन्नो जन्म लेखें ॥ त्वदाज्ञावशें जे रह्या विश्वमांहे, करे कर्मनी हानि क्षण एक मां हे ॥ ५ ॥ जिनेशाय नित्यं प्रजाते नमस्ते, नवे ध्यान होजो त्वदीयं समस्ते ॥ स्तवी देवना देवने हर्ष पूरे, मुखांनोज नाले नली हेम सूरें ॥६॥

अपराजित तस विरहथी, मनमां घणुं विखिन्न ॥ ४ ॥ शोक धरे मनमां घणो, बधवतणे वियोग ॥ गीत गान न गमे किस्युं, न रुचे रमणीनोग ॥ ५ ॥ नीतिचतुर मत्री घणो, समजाव्यो सुविवेक ॥ मोहपिशाच छले किस्युं, तुम जेहवाने छेक ॥ ६ ॥ वचन सुणी कांइक थयो, गतशोको नूपाल ॥ नाम यशोधर गणधरा, आव्या तिहां तिण काल ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ आंगी अवल वनी छे रे ॥ ए देशी ॥ गणधर आव्या छे जी रे, वनमा वदननें जइयें ॥ यशोधर नामें छे जीरे, पावन देखीने थइयें ॥ ए आंकणी ॥ शोल सहस्र राजेश्वर साथे, गणधरनें वांदेवा रे ॥ आव्यो तीन प्रदक्षिणा देई, प्रणमी सारे सेवा ॥ ग० ॥ १ ॥ देशन निसुणे मुनिवर केरी, करसपुटनें मेली रे ॥ अपराजित शोचे मनमांहे, गयो मुज बधव वेली ॥ ग० ॥ २ ॥ योगीश्वर कहे इष्ट वियोगें, शोक हुवे जगमांहे रे ॥ पण परिहरवो माह्ये पुरुषें, जाणी रूप उत्साहें ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रगट मेल पिशाच परो ए, नामांतर नीपायो रे ॥ तरुणपणो विषयानो विरुद्ध, जगमा एह गवायो ॥ ग० ॥ ४ ॥ इष्टवियोगें रोगें नडिया, कीजें औषध साचुं रे ॥ सुश्रुत नाख्यु किरिया राख्युं, धर्मऔषध ए साचु ॥ ग० ॥ ५ ॥ शोक रोग आवे नहि नेडो, जो मन शुद्धें करीयें रे ॥ जिनवर वैद्य तणी आणायें, सहेजें शिवसुख वरीयें ॥ ग० ॥ ६ ॥ मुनिवर वाणी मत्र महातम, शोकपिशाच पणास्यो रे ॥ शुन्न नावन फूलें बहुमूलें, निज आतमनें वास्यो ॥ ग० ॥ ७ ॥ घर आवी सुत राज्य नलावी, व्रत लेवा नीसरीयो रे ॥ नृपमंमल सघातें महोटो, सयमव्रत आदरियो रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ खती दंता बहुगुणवता, उपशम रसना दरिया रे ॥ जयणायें मुनि मारग पाले, चोखी जेहनी किरिया ॥ ग० ॥ ए ॥ सिहपरें लेई व्रत पहेला, सिहपरें ते पाले रे ॥ समिति गुप्ति सूधी सनाले, व्रतमां दूषण टाले ॥ ग० ॥ १० ॥ धन्य मुनि जे ए गुण साधे, आतमवीरज वाधे रे ॥ मनमां नो हे कणो दूणो, अन्न पाणी अणलाधे ॥ ग० ॥ ११ ॥ तप तपीया डुस्तर बहुतेरा, गुण रयणागर गिरुआ रे ॥ उपंसी तेर्यसी जससी, विषय कषायथी निरुआ ॥ ग० ॥ १२ ॥ अणसण अंतें करीने अच्युत, कल्पें सुरना स्वामी रे ॥ अपराजित मुनिवरजी हूवा, पुण्यें प्रभुता पामी ॥ ग० ॥ १३ ॥

रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ निर्ग्रंथ पधास्था वनमां, हरखी सुमति मनी उलट नवि माये तनमां रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ बल केशव निसुणी चिते धन्य कुमरी जात, नरयौवन आवी तात रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ [illegible] मत्री सुविचारी, मान्ड्यो स्वयंवर गुण धारी, आव्या नूमिपति ॥ मु० ॥ ए ॥ नामांकित आसन उली, बेसे नरवरनी टोली, बाधा [illegible] केशर घोली रे ॥ मु० ॥ १० ॥ कन्या लेइ वरमाला, सखीसार्थे बाल सुकुमारा, घनमा मनु ए जलनाला रे ॥ मु० ॥ ११ ॥ पूरव जव तात जीव, एहवे आवे तिहा देव, पहेलां सचित हेज रे ॥ मु० ॥ १२ ॥ [illegible] सांजलता ते आवी, कहे कुमरीने समजावी, जीव ए विषयानो जावी रे ॥ मु० ॥ १३ ॥ नोगवीया वार अनत, तृप्तो न थयो ए जत, विषयामिष नोग उरंत रे ॥ मु० ॥ १४ ॥ हु पहेला नवनी सासू, आराध्यु संयम पासु, पद पाम्यु वैमानिक खासु रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ कुमरी निसुणी कहे साचू, ए सुख सासारिक काचु, हवे हु एहथी नवि राचु रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ कहे नूपने आणा आलो, सयम लेता मत वालो, हवे पूछीश म्हाक म्हालो रे ॥ मु० ॥ १७ ॥ बलनद मुरारि विचारी, कहे तनया गुण मनि सारी, धन धन तु बालकुमारी रे ॥ मु० ॥ १८ ॥ अनुमति आपी निज तातें, पंचशत कुमरी सघातें, ग्रह्यु सयम सुव्रता हाथे रे ॥ मु० ॥ १९ ॥ तप तपती ते अति सारां, वाधी निर्मल ध्यानननी धारा, कीधा तेणें कर्म विहारा रे ॥ मु० ॥ २० ॥ करी घाती कर्म क्षय पामी, केवललीला सुख कामी, अनुक्रमें हुइ शिवगतिगामी रे ॥ मु० ॥ २१ ॥ खम्न त्रीजे त्रीशमी ढाल, गुणगाया सतीना रसाल, रामविजय कही उजमाल रे ॥ मु० ॥ २२ ॥ ८७२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मुरारि ऋद्धि नोगवे, खंम त्रिहूनी सार ॥ रणरसमां बांधी घणां, चिक्कण कर्म अपार ॥ १ ॥ यक्तकमागमे ॥ चत्तारि सूरा पन्नत्ता तं जहा, खतिसूरा तवसूरा जुधसूरा दाणसूरा खंतिसूरा अरिहंता जगवता तवसूरा अणगारा जुधसुरा वासुदेवा दाणसूरा वेसमणा॥इति पूर्व दोहा॥प्रीति घणी बेहु बधुने, रमतां रंगें काल ॥ घणो गयो जाण्यो नहिं, मोह वडो जंजाल ॥ २ ॥ चोराशी लक्ष पूर्वनुं, पाली पूरण आय ॥ ते हरि चवियो अवतरो, पहेली नरकें जाय ॥ ३ ॥ सहस बहेंतालीश वर्षनुं, मध्यम आयु उप्पन्न ॥

अपराजित तस विरहथी, मनमां घणुं विखिन्न ॥ ४ ॥ शोक धरे मनमां घणो, बंधवतणे वियोग ॥ गीत गान न गमे किस्युं, न रुचे रमणीभोग ॥ ५ ॥ नीतिचतुर मंत्री घणो, समजाव्यो सुविवेक ॥ मोहपिशाच टले किस्युं, तुम जेहवाने छेक ॥ ६ ॥ वचन सुणी कांइक थयो, गतशोको भूपाल ॥ नाम यशोधर गणधरा, आव्या तिहां तिण काल ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ आंगी अवल बनी छे रे ॥ ए देशी ॥ गणधर आव्या छे जी रे, वनमां वंदननें जइयें ॥ यशोधर नामें छे जीरे, पावन देखीने थइयें ॥ ए आंकणी ॥ शोल सहस्र राजेश्वर साथे, गणधरनें वांदेवा रे ॥ आव्यो तीन प्रदक्षिणा देई, प्रणमी सारे सेवा ॥ ग० ॥ १ ॥ देशन निसुणे मुनिवर केरी, करसपुटनें मेली रे ॥ अपराजित शोचे मनमांहे, गयो मुज बंधव वेली ॥ ग० ॥ २ ॥ योगीश्वर कहे इष्ट वियोगें, शोक हुवे जगमांहे रे ॥ पण परिहरवो माह्ये पुरुषें, जाणी रूप उत्साहें ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रगट मेल पिशाच परो ए, नामांतर नीपायो रे ॥ तरुणपणो विषयानो विरुउ, जगमां एह गवायो ॥ ग० ॥ ४ ॥ इष्टवियोगें रोगें नडिया, कीजें औषध साचुं रे ॥ सुश्रुत भाख्यु किरिया राख्युं, धर्मऔषध ए साचु ॥ ग० ॥ ५ ॥ शोक रोग आवे नहि नेडो, जो मन शुद्धे करीयें रे ॥ जिनवर वैद्य तणी आणायें, सहेजे शिवसुख वरीयें ॥ ग० ॥ ६ ॥ मुनिवर वाणी मंत्र महातम, शोकपिशाच पणास्यो रे ॥ शुद्ध भावन फूलें बहुमूलें, निज आतमनें वास्यो ॥ ग० ॥ ७ ॥ घर आवी सुत राज्य भलावी, व्रत लेवा नीसरीयो रे ॥ नृपमंडल सघातें महोटो, संयमव्रत आदरियो रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ खतीदंता बहुगुणवंता, उपशम रसना दरिया रे ॥ जयणायें मुनि मारग पाले, चोखी जेहनी किरिया ॥ ग० ॥ ९ ॥ सिंहपरें लेई व्रत पहेला, सिंहपरें ते पाले रे ॥ समिति गुप्ति सूधी संभाले, व्रतमां दूषण टाले ॥ ग० ॥ १० ॥ धन्य मुनि जे ए गुण साधे, आतमवीरज वाधे रे ॥ मनमा नो हे कणो दूणो, अन्न पाणी अणलाधे ॥ ग० ॥ ११ ॥ तप तपीया डुस्तर बहुतेरा, गुण रयणागर गिरुआ रे ॥ उपंसी तेयंसी जससी, विषय कषायथी निरुआ ॥ ग० ॥ १२ ॥ अणसण अतें करीने अच्युत, कल्पें सुरना स्वामी रे ॥ अपराजित मुनिवरजी हूवा, पुण्ये प्रभुता पामी ॥ ग० ॥ १३ ॥

त्रीजे खंमें रामविजय कहे, सुणो एकत्रीशमी ढालें रे ॥ धन्य
शोक तजीनें,धर्म मनडुं वाले ॥ग०॥१४॥ सर्वगाथा ॥ ७०
॥ दोहा ॥
॥ सुणो वेहू बधव तणो, कहु सयोग संबध ॥ बीजे जवें वेमल
सुणो तेह प्रबध ॥ १ ॥ जबूद्दीपें जरतमा, नगर वैताढ्य उदार ॥
श्रेणी दीपतु, गगनवल्लज पुर सार ॥२॥ मेघवाहन विद्याधरो,
नारि ॥ दपती दोय सुख जोगवे, दोगुदक अवतार ॥ ३ ॥
॥ ढाल बत्रीशमी ॥
॥ वे वे मुनिवर विहरण पांगुस्या जी ॥ ए देशी ॥ अनतवीर्यनो जीव
हवे चवी जी, पहेली नरकहूंती ते ताम रे ॥ आव्यो मेघवाहन मेघमालि
ने जी, वंशें उपन्यो मेघनाद नाम रे ॥१॥ अनंतवीर्यनो जीव हवे चवी जी
॥ ए आंकणी ॥ पाम्यो यौवन वय रलीयामणु जी, जेहवो रति रमणी
नो कंत रे ॥ परणाव्यो कुमरी खेचर तणी जी, पाट पितायें थाप्यो संत
रे ॥ अ० ॥ २ ॥ सयम लीधो मेघवाहन नृपें जी, पाले मुनिवर पंचा
चार रे ॥ करे रे क्रिया ते सूधि साधुनी जी, नित्य नित्य जइयें तस बलि
हार रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रेणी वेहुनो स्वामी ते हुउ जी, महोटो खेचर ते
नृप मेघनाद रे ॥ देश देशातर सत्य ने दया जी, मनमांहे धरीने आह्लाद
रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ एक दिन मेरुवने यात्रा गयो जी, पूजे जिनपडिमा ब
नाव रे ॥ तेम वली विद्या प्रज्ञप्ति जणी जी, महोटो जेहनो जग प्रजा
व रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ एहवे आव्या सुर सर्वे कल्पना जी, जिनयात्रा नंद
न वनमांहे रे ॥ दीठो अच्युत इंद्रें जिन पूजतो जी, बोलाव्यो धरि मन उ
ल्लाहें रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ मनमां विस्मय तेहनें ऊपन्यो जी, केम बोलावे
मुफने एह रे॥ कां मेघनाद तु मुफनें न उलखे जी,तुफ मुफ पूर्व जवनो नेह
रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ जांखी पूर्व जवनी वारता जी, निसुणी पाम्यो मन वैरा
ग्य रे ॥ इंद्र गया जिन पूजी स्थानकें जी, वेहु मनमां वस्यो अनुराग
रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ आव्यो अपर वली निजमदिरें जी, मन संजारे बंधव
वात रे ॥ मुनि थया जइने अमर मुनि कने जी, उत्तम तेहनां कुल जात
रे ॥ अ० ॥ ९ ॥ नदनवनमां तप तपे आकरुं जी, रह्या एक रयणी
पडिमा तेह रे ॥ मेरुशिखर परें न चले चालव्यो जी, नहिं निजदेह ऊप

र जस नेह रे ॥ अ० ॥ १० ॥ एहवे असुरकुमार निकायनो जी, अश्व
ग्रीवना सुतनो जीव रे ॥ अमर आवीने पूरववैरथी जी, करे उपसर्ग
मुनिनें अतीव रे ॥ अ० ॥ ११ ॥ एए धीरपणुं मुनिवरतणु जी, न
चल्या ध्यानथकी तिलमात्र रे ॥ प्रगटे पुण्य जो पूरव नवतणां जी, तो
मले एहवा मुनिनी यात्र रे ॥ अ० ॥ १२ ॥ थये रे प्रनातें प्रतिमा पारि
नें जी, विचस्या जगतीतल अणगार रे ॥ चरण आराधी साधी ध्याननें जी,
अंतें अणसण कीध उल्लास रे ॥ अ० ॥ १३ ॥ पहोता ते पण अच्युत
कल्पमा जी, सुर सामानिक इंड् समान रे ॥ विलसे बेहु बधव ते सुख
घणां जी, जगमां जोजो पुण्यप्रधान रे ॥ अ० ॥ १४ ॥ सुखनर बावीश
सागर आउखु जी, बावीश सहस वरस एकवार रे ॥ ले आनोग निव
र्त्तित ते नलो जी, शुनचिंतित पुजल आहार रे ॥ अ० ॥ १५ ॥ बहु
सुख पाम्या नव एम सातमे जी, सुणतां आतम निर्मल थाय रे ॥ ए खम
त्रीजे ढाल बत्रीशमी जी, रामविजय जिनना गुण गाय रे ॥अ०॥ १६ ॥

॥ कलश ॥

॥ तूठो तूठो रे मुऊ साहिब जगमां तूठो ॥ ए देशी ॥ गावो गावो रे जि
नराज तणा गुण गावो ॥ शांति प्रनु पूरव नव सुणतां, घर घर होवे वधावो
रे ॥ जि० ॥ १ ॥ जिनगुणनी स्तुति मंगल नणता, कीर्त्तिस्थंन रोपावो ॥
ध्रु करे दोपी डुशमन तेहनें, जस शिर ए प्रनु चावो रे ॥ जि० ॥ २ ॥
द्रव्य नाव बेहु नेदनी नक्ति, होवे सुजस जमावो ॥ अच्युत शिवलीला
सुख एहथी, पद उत्कृष्टें पावो रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ हृदयमांहे प्रनुपदनें ध्या
वो, प्रनुपदें हृदय लगावो ॥ जिहां लगें मुक्ति नहिं त्यां लगें ए, माहरे
प्रनुछं दावो रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ कामित पूरण संकट चूरण, प्रनुगुण ध्यान
सुहावो ॥ एह अतींडिय सुखनु कारण, अहोनिश दिलमा नावो रे ॥
॥ जि० ॥ ५ ॥ चिरसंचित अघ टालणहारी, जैनकथामांहे मावो ॥ एह
रसायण पामी प्रमादें, का नवहारी जावो रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ शांतिप्रनु
गुणनास सुणतां, मंगलमाल उपावो ॥ त्रीजो खम थयो संपूरण, जगी
ढोल वजावो रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ उठे नवें अपराजित स्वामी, सातमे इंड्
जणाव्यो ॥ द्रव्यनिक्षेप अध्यातम नावें, नणता नाव जगावो रे ॥ जि०
॥ ८ ॥ राजनगरमांहे पास चिंतामणि, प्रनुछं तान मिलावो ॥ द्रुइ

त्रीजे खंमें रामविजय कहे, सुणो एकत्रीशमी ढालें रे ॥ धन्य धान्यो शोक तजीनें,धर्मे मनहुं वाले ॥ग०॥१४॥ सर्वगाथा ॥ ७

॥ दोहा ॥

॥ सुणो वेहू बंधव तणो, कहुं सयोग सनध ॥ बीजे नवें भेला सुणो तेह प्रबंध ॥ १ ॥ जबूद्दीपें नरतमा, नगर वैताढ्य उदार ॥ श्रेणें दीपतु, गगनवल्लन्न पुर सार ॥२॥ मेघवाहन विद्याधरो, नारि ॥ दंपती दोय सुख नोगवे, दोगुंदक अवतार ॥ ३ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ वे वे मुनिवर विहरण पांगुरया जी ॥ ए देशी ॥ अनंतवीर्यनो जीव हवे चवी जी, पहेली नरकहूंती ते ताम रे ॥ आव्यो मेघवाहन मेघमालि ने जी, वशें उपन्यो मेघनाद नाम रे ॥१॥ अनतवीर्यनो जीव हवे चवी जी ॥ ए आंकणी ॥ पाम्यो यौवन वय रलीयामणु जी, जेहवो रति रमणी नो कंत रे ॥ परणाव्यो कुमरी खेचर तणी जी, पाट पितायें थाप्यो संत रे ॥ अ० ॥ २ ॥ सयम लीधो मेघवाहन नृपें जी, पाले मुनिवर पंचा चार रे ॥ करे रे क्रिया ते सूधि साधुनी जी, नित्य नित्य जइयें तस बलि हार रे ॥ अ० ॥ ३ ॥ श्रेणी वेहुनो स्वामी ते हुउ जी, महोटो खेचर ते नृप मेघनाद रे ॥ देश देशांतर सत्य ने दया जी, मनमाहे धरीने आल्हाद रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ एक दिन मेरुवनें यात्रा गयो जी, पूजे जिनपडिमा ए नन्नाव रे ॥ तेम वली विद्या प्रज्ञप्ति नणी जी, महोटो जेहनो जग प्रन्ना व रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ एहवे आव्या सुर सर्वे कल्पना जी, जिनयात्रा नंद न वनमांहे रे ॥ दीठो अच्युत इंद्रें जिन पूजतो जी, बोलाव्यो धरि मन उ त्साहें रे ॥ अ० ॥ ६ ॥ मनमां विस्मय तेहनें ऊपन्यो जी, केम बोलावे मुऊने एह रे॥ कहे मेघनाद तुं मुऊनें न उंलखे जी,तुऊ मुऊ पूर्व नवनो नेह रे ॥ अ० ॥ ७ ॥ नांखी पूर्व नवनी वारता जी, निसुणी पाम्यो मन वैरा ग्य रे ॥ इंद्र गया जिन पूजी स्थानकें जी, वेहु मनमां वस्यो अनुराग रे ॥ अ० ॥ ८ ॥ आव्यो अपर वली निजमंदिरें जी, मन संनारे बंधव वात रे ॥ मुनि थया जइने अमर मुनि कने जी, उत्तम तेहनां कुल जात रे ॥ अ० ॥ ए ॥ नवनवनमां तप तपे आकरुं जी, रह्या एक रयणी पडिमा तेह रे ॥ मेरुशिखर परें न चले चालव्यो जी, नहिं निजदेह उप

नवि सुणो नव जिन शांतिनो जी ॥ ए आंकणी ॥ जिम हुवे लीलविलास ॥ डुरित दूरें टले नवतणां जी, संपजे वाछित आश ॥ न० ॥ २ ॥ तीर्थंकर आदि नर रयणनो जी, जिहांकणे सचय सार ॥ सूत्रविख्यात नयरी कही जी, रयणसचय गुणधार ॥ न० ॥ ३ ॥ चोरनु जोर तिल नर नहीं जी, वलि नहि विटतणो वास ॥ नयरीयें न्याय वरते घणो जी, धन कण ऋद्धि निवास ॥ न० ॥ ४ ॥ वारे डुर्नीतिने जे सदा जी, सकल प्रजा करे क्षेम ॥ नृप क्षेमकर जिनतणी जी, आण माने सहु प्रेम ॥ न० ॥ ५ ॥ मइ सुई उही त्रण ज्ञानना जी, धारक त्रिहु जगमित्त ॥ पण निजकर्मनें काढवा जी, रहे गृहवास शुनचित्त ॥ न० ॥ ६ ॥ तास घरे शीलगुण शोनती जी, उंपती पुण्यनी राशि ॥ रत्नमाला रलियामणी जी, कामिनी गुण आवास ॥न०॥७॥ जीव अपराजितनो चवी जी, उपन्यो ते हनी कूख ॥ सुपन तेणे चौद दीग नला जी, तेहिज रातें गतडु ख ॥ न० ॥ ८ ॥ प्रहसमे पियुकनें आवीने जी, नाखियु सयल विरतंत ॥ पुत्र होगे सही ताहरे जी, दीपतो बहु गुणवत ॥न०॥९॥ कत क्षेमकर मुखथकी जी, सानली थई सुप्रसन्न ॥ सकल होजो पियु तुम कह्यु जी, विकसीयां नयण तन मन्न ॥ न० ॥ १० ॥ गर्न वाधे हवे अनुक्रमें जी, पूरण मासें सुत सार ॥ जन्मीयो दीधी वधामणी जी, दासीयें हर्ष अपार ॥ न० ॥ ११ ॥ आपीयु धन बहु तेहने जी, सात पेढी लगें जेह ॥ खरचतां केमे खूटे नहि जी, राखियो अविहड नेह ॥ न० ॥ १२ ॥ जन्म उत्सव करे अति नलो जी, पन्नरमु वज्र आयुध ॥ स्वप्न दीठु मायें तेणें धर्यु जी, नाम "वज्रायुध" शुद्ध ॥ न० ॥ १३ ॥ शुक्ल पक्ष बीजनो चंइमा जी, दिनप्रत्यें जेम वाधत ॥ सकल जनना मन मोहतो जी, अनिनव नानु रतिकत ॥ न० ॥ १४ ॥ रंगें रमाडे उत्सगमा जी, मायने मन घणी आश ॥ सुतमुख देखी मन हरखती जी, बोलती एणि परें नास ॥ न० ॥ १५ ॥ सुत चिरंजीव रहो माहरा जी, ताहरा डुशमन दूर ॥ दिन दिन कल्पतरु परें फलो जी, अम मनोवाछित पूर ॥ न० ॥ १६ ॥ अनुपम अगें लक्षण धरे जी, अडहिय सहस उदार ॥ वय थयो वरस एआठनो जी, शीखीयो शास्त्र विचार ॥ न० ॥ १७ ॥ जाण बहोंत्तेर कलानो थयो जी, सवि लहे जीवना नेद ॥ शुद्ध नयरी ते व्यवहारनी जी,

तस सान्निध्य त्रीजे खम्ँ, पूरण कलश चढावो रे ॥ जि०॥ ९ ॥ त्तर पचाशिया वर्षे, कीधो ढालरनावो ॥ शांति जिनेश्वररासनें परिगल वित्त ए पावो रे ॥ जि० ॥ १० ॥ श्रीगुरु सुमतिविजय की न्निध्य, चिंतित सघलां थावो ॥ रामविजय कहे शांति प्रनुजी, मुज दिर आवो रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ॥ ८३४ ॥ श्लोक तथा मली ॥ १५ ॥ सर्वढाल ॥ ३२ ॥ खम्ड त्रय गाथा ॥ २०९९ ॥ खम्ड प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ७६ ॥ खम्ड त्रय ढाल ॥ ७९ ॥ इति शांतिजिनप्रबंधे प्राकृतबंधे द्वादशनवनिबंधे सत्यार्थसंधे कृतसुकृतानुसंधे अम रदत्तमित्रानंदचरित्रानुविद्धपष्ठसप्तमनववर्णननामा तृतीय खंम समाप्तः॥३॥

॥अथ चतुर्थखंमस्य प्रारंनोऽयम्॥

॥ दोहा ॥

॥ चउविह चउमुह जिन कह्यो, दान शील तप नाव ॥ धर्म ए चार प्रकारनो, प्रणमुं नवजल नाव ॥ १ ॥ ज्ञान अनय अन्न ओषधें, विहुं नेदें होय दान ॥ ज्ञानवंत निर्नय हुवे, सुखी नीरोगी निदान ॥ २ ॥ प्रथ म दान प्रत्नुयें कह्युं, अर्थ लह्यानुं सार ॥ ते जो पात्रे दीजीयें, तो हुवे नव निस्तार ॥ ३ ॥ तत्त्वविचार ए बुद्धिफल, फल व्रतधारण देह ॥ पात्रदान ए अर्थफल, वचन प्रीतिकर जेह ॥ ४ ॥ शील कुलक्रम आत्मगत, त्रि विध होय जगमांहि ॥ वेदुथी यश सुख सपजे, त्रीजो मोक्ष उपाय ॥५॥ सात्त्विक राजस तामसी, तप त्रिहु नेदें होय ॥ दोय नेद किंचित् होश, सात्त्विकमां गुण जोय ॥ ६ ॥ नाव तणा बहु नेद ठे, शुन्न अशुन्न वि स्तार ॥ शुन्न आदरवा जिन कह्या, अशुन्न तणो परिहार ॥ ७ ॥ विहुं नेदें शुद्ध धर्मनें, हुं नित्य करूं प्रणाम ॥ खम्ड कहुं चोथो हवे, सुणो मन राखी गम ॥ ८ ॥ देवलोक सुख नोगवे, श्री अपराजित इंद ॥ हवे जिहां आवी अवतरे, ते निसुणो नविवृंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ राणी पूछे रायने ॥ ए देशी ॥ पूर्वविदेहें जंबूतणो जी, सती नलीनी रे पास ॥ मध्यविजय मंगलावती जी, जिहां बहु सुगुणिनिवास ॥ १ ॥

नवि सुणो नव जिन शांतिनो जी ॥ ए आंकणी ॥ जिम हुवे लीलविलास ॥ डुरित दूरें टळे नवतणा जी, सपजे वांछित आश ॥ न० ॥ १ ॥ तीर्थंकर आदि नर रयणनो जी, जिहांकणे सचय सार ॥ सूत्रविख्यात नयरी कही जी, रयणसचय गुणधार ॥ न० ॥ ३ ॥ चोरनु जोर तिल नर नहीं जी, वलि नहि विटतणो वास ॥ नयरीये न्याय वरते घणो जी, धन कण रूद्धि निवास ॥ न० ॥ ४ ॥ वारे डुर्नीतिने जे सदा जी, सकल प्रजा करे क्षेम ॥ नृप क्षेमकर जिनतणी जी, आण माने सहु प्रेम ॥ न० ॥ ५ ॥ मइ सुई उंही त्रण ज्ञानना जी, धारक त्रिहु जगमित्त ॥ पण निजकर्मेने काढवा जी, रहे गृहवास शुनचित्त ॥ न० ॥ ६ ॥ तास घरे शीलगुण शोनती जी, उंपती पुण्यनी राशि ॥ रत्नमाला रलियामणी जी, कामिनी गुण आवास ॥न०॥७॥ जीव अपराजितनो चवी जी, उपन्यो ते हनी कूख ॥ सुपन तेणे चौद दीठा नला जी, तेहिज रातें गतडुख ॥ न० ॥ ८ ॥ प्रहसमे पियुकनें आवीने जी, नाखियु सयल विरतंत ॥ पुत्र होशे सही ताहरे जी, दीपतो बहु गुणवत ॥न०॥९॥ कत क्षेमकर मुखथकी जी, सानली थई सुप्रसन्न ॥ सकल होजो पियु तुम कह्यु जी, विकसीयां नयण तन मन्न ॥ न० ॥ १० ॥ गर्न वाधे हवे अनुक्रमें जी, पूरण मासें सुत सार ॥ जन्मीयो दीधी वधामणी जी, दासीयें हर्ष अपार ॥ न० ॥ ११ ॥ आपीयु धन बहु तेहने जी, सात पेढी लगें जेह ॥ खरचता केमे खूटे नहि जी, राखियो अविहड नेह ॥ न० ॥ १२ ॥ जन्म उत्सव करे अति नलो जी, पन्नरमु वज्र आयुध ॥ स्वप्न दीठु मायें तेणें थयु जी, नाम "वज्रायुध" शुद्ध ॥ न० ॥ १३ ॥ शुक्ल पक्ष बीजनो चंडमा जी, दिनप्रत्यें जेम वाधत ॥ सकल जनना मन मोहतो जी, अभिनव मानु रतिकत ॥ न० ॥ १४ ॥ रंगें रमाडे उत्सगमां जी, मायने मन घणी आश ॥ सुतमुख देखी मन हरखती जी, बोलती एणि परें नास ॥ न० ॥ १५ ॥ सुत चिरजीव रहो माहरा जी, ताहरा डुशमन दूर ॥ दिन दिन कल्पतरु परें फलो जी, अम मनोवांछित पूर ॥ न० ॥ १६ ॥ अनुपम अगें लक्षण धरे जी, अडहिय सहस उदार ॥ वय थयो वरस एआठनो जी, शीखीयो शास्त्र विचार ॥ न० ॥ १७ ॥ जाण बहोंत्तेर कलानो थयो जी, सवि लहे जीवना नेद ॥ शुद्ध नयरी ते व्यवहारनी जी,

दील वस्यो श्रीजिनवेद ॥ भ० ॥ १८ ॥ सात नय सप्तभंगी ज्ञायक जाण निजरूप ॥ नवि नमे एक श्रीजिनवर विना जी, शुद्ध स्वरूप ॥ भ० ॥ १९ ॥ अनुक्रमें योवन वय लह्यां जी, नाम वती एक ॥ उत्सव करी परणावियां जी, भोगवे सुख अतिरेक ॥ २० ॥ जीव अनंतवीरज तणो जी, सुरतनु भोगवी आय ॥ सागरें अवतस्यो जी, कूख लक्ष्मीवती आय ॥ भ० ॥ २१ ॥ जन्मीओ र कुलकेसरी जी, नाम "सहस्रायुध" दीध ॥ पूरव भवतणो नेहलो एह संबंध प्रसिद्ध ॥भ०॥२२॥ ढाल पहेली कही ए सही जी, खम सार ॥ आठमे भवें चक्रधर हुवा जी, वरत्यो जयजयकार ॥भ०॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ बालपणुं वीत्या पछी, आव्यु योवन पूर ॥ तरुणी मन मृगपाश ते, दिन दिन चढते नूर ॥ १ ॥ परणाव्यो प्रीतें करी, कनकसिरी सुकुमाल ॥ कुमर सहस्रायुध सदा, विलसे भोग रसाल ॥ २ ॥ खेमकर नृप अन्यदा, पुत्र पौत्र परिवार ॥ सिंहासन बेठो करे, वंदीजन जयकार ॥३॥ छत्र धर्यु शिर ऊपरें, बेहु पख चमर ढलंत ॥ युगल मनु कलहंसनु, मुख अरविंद मिलंत ॥ ४ ॥ वासी कल्प ईशाननो, अमृताशन चित्रचूल ॥ आव्यो मिथ्यात्वी तिहां, तिण अवसर प्रतिकूल ॥ ५ ॥ नहिं देव गुरु धर्म नहिं, नहीं पाप पर लोक ॥ ए बालक बीहामणा, बीहिना सघला लोक ॥ ६ ॥ मत थापे नास्तिक तणो, नहिं आस्तिक लगार ॥ पंचभूतथी ऊपन्यो, चेतनगुण सुविचार ॥ ७ ॥ वज्रायुध वलतो कहे, नहि युक्त ए वात ॥ अनुमानें जोतां थका, वली जोता साक्षात ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ वज्रायुध वलतु कहे रे, सुण सुर मोरी वाण ॥ ए नास्तिकता नवि घटे रे, युक्ति रहित मन जाण रे ॥ १ ॥ प्राणी धरियें समकित शुद्ध ॥ सत्ता नवि टाली टले रे, जोय विचारी बुद्धि रे ॥प्रा०॥ध०॥ ए आंकणी॥ अहं सुखी अहं दुःखी रे, कुण जाणे विण जीव ॥ त्रिहु कालें अविछिन्न छे रे, धारा ज्ञान सदैव रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ छे भोक्ता ए भाग्यनो रे, ओदनने दृष्टांत ॥ चेतन गुण अलमां नहिं रे, चेतन जीव कहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ अग्नि ज्युं अरणीकाष्ठमां रे,

फूलमांहे जेम गंध ॥ जेम पयमां घृत तिम मल्यो रे, जीव पुज्ल संबंध रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ प्रत्यक्ष इहां कने ताहरो रे, तु दृष्टांत विचार ॥ जो पुण्य न करत पाछले रे, तो किहांथी सुर अवतार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ मनुज थयो तु पूरवें रे,आ नव थयो सुररूप ॥ जीव विना ए घटे नहि रे, मान तु जीव स्वरूप रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ भ्रम भांग्यो निज चित्तनो रे, प्रतिबूज्यो ते देव ॥ सत्ता मानी जीवनी रे, कहे सुर करतो सेव रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ साधु तुमें राख्यो मुनें रे, नवजल पडतां आज ॥ तेइ अव लंबन उद्धर्यो रे, साध्यु आतमकाज रे ॥प्रा०॥ ८ ॥ देवें समकित आदर्युं रे,वज्रायुधनी पास ॥ कहे स्वामी प्रिय शु करु रे, कहो कृत्य उचित विमास रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ नि स्पृह जाणीने तेहने रे, देइ आनरण अमूल ॥ सुर प्रणमी पाछो गयो रे, ईशानें अनुकूल रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ ईशानेंइनी आगलें रे, सुर मामी कहे वात ॥ सुरपति गुण रीज्यो कहे रे, सुण एह नो अवदात रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ कोडी जिह्वा जो मुख हुवे रे, नव नव गुण वली गाय ॥ अम जेवाना आउखा रे, केई पूरा थाय रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ ए प्रनु इहांथी पाचमे रे, नवें शोलम जिनराज ॥ शांति जिनेश्वर नामथी रें, गुण गाशें सुरराज रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ एम गुण गाता तेहना रे, समकित निर्मल कीध ॥ ईशानेंदें पूजीया रे,द्रव्यजिन जाणि प्रसिद्ध रे ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ सुखकर कामी पुरुषने रे, एहवे मास वसंत ॥ कोकिल कल कूजित करे रे, आव्यो हेजें हसत रे ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ फल फूले ना रे घणु रे, मोरी सबल वनराइ ॥ गुजे भ्रमर ए कामनी रे, फेरे मानु इहाइ रे ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ नोगी पुरुष वनमा घणा रे, जोवे नव नवा ख्याल ॥ अबील गुलाल उमाहता रे, गुणियल गाय धमाल रे ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ एहवे आवी सुदर्शना रे, दासी लेई फूल ॥ नेट करी एम विनवे रे, साहिब सुण तुं अमूल रे ॥प्रा०॥ १८ ॥ प्रीतिमती लक्ष्मीवती रे, रा णी तुमारी साथ ॥ वाछे लील वसंतनी रे, उपवन सूरिनिपात रे ॥ प्रा० ॥ १ए ॥ सप्तशती राणी तणी रे, तेहमांहे शिरदार ॥ लक्ष्मीवती राणी तणो रे, पियुडो प्रेम अपार रे ॥ प्रा० ॥ २० ॥ चोथे खर्मे सोहा मणी रे, बोली बीजी ढाल ॥ रामविजय कहे सानलो रे, आगल वात रसाल रे ॥ प्रा० ॥ २१ ॥ सर्व गाथा ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीवज्रायुध कुवरजी, लाठलील नत्तार ॥ अतेउर लेई संचरचो, वा वनह मझार ॥ १ ॥

॥ ढालत्रीजी ॥

॥ फागनी देशी ॥ श्रीवज्रायुध कुमर सुदर रूप तरुण रसाल, हो वनमांहे रमवा मनमोहन उजमाल ॥ सार्थे सोहागण सारी तन सुकुमाल, मोहनगारी कामिनी चालती गजगति चाल ॥ १ ॥ सिरसें थो नकवेसर केसर वरणी रे अग, चड्मुखी मृगलोयणी पहेरण चीर सुरग॥प्रीतम सार्थे पनोती पहोती वनहमझार, रंगें रमे मधुमासनी क्रीडा अनेक प्रकार ॥२॥ पिककठी कठीरव कटितट लक कुलीन, मोह जीवार ण हारी नारी रमण आधीन ॥ जाइ जूई वर चपक मोघर लाल गुलाल, दंपतीना दिल मेलवे मन्मथ माहे दयाल ॥ ३ ॥ वाजे चग मृदग अनग तणो रस जोर, रंग रमाडे हसाडे वजाडे ए मोहनो तोर ॥ अलवेसर नरि केसर सगीयें गंटे रे नीर, केलि करे मन मेली रे वाय सुगध समीर ॥ ४ ॥ सूरिनिपात उद्यानमा लील करे बहु लोक, फूलि रही वनराई अव कदव अशोक ॥ कोकिल पचमनाद विनोद सुणी ने रे साद, कामी जन मन मोहे रे वाधे विपय उन्माद ॥ ५ ॥ वर तरुणी सघातें रे वज्रा युध नृपनद, वावमाहे जलक्रीडा रे करवा मन आनद ॥ रस व्यापी जल वापी रे माहे करे जलकेलि, लक्कानें सतापी हो नाठी परी मन मेलि ॥ ६ ॥ एकण पासें हो कतजी बीजे पासें हो नारी, राग निरंतर ह दयथुं गंटे अन्यो अन्य वार ॥ रखे सूकाइ न जाये रे मांहे ए कामनो राग, रंगें रसें एम रमतां हो पाम्यां ते जलनो ताग ॥ ७ ॥ इण अवसरें दमितारिनो जीव नमी नवमांहे, कोइक कर्मने योगें हो देव थयो जग मांहे ॥ विद्युद्दष्ट्र ए बलीयो रे जलक्रीडापर देख, पूर्ववेरें वज्रायुध उपर आव्यो द्वेष ॥ ८ ॥ मूके ए पर्वत पडतो रे वाव उपर एकत, अध अहि पाशें बांधीयो करवाने तेहनो अत ॥ जोजो रे नवि एम वैर वधार्यु करे रे जंजाल, वैर वैश्वानर व्याधि वधे जगमा ततकाल ॥ ९ ॥ वज्रायुध चक्रीतणो महा बलीयो दृढकाय, दोय सहस्र यक्षसेवित सबलो पुण्य स खाय ॥ अहिबंधन सवि त्रोडियां नाखीयो पर्वत दूर, राणीगणें परवरियो

रे नीसरीयो सुखपूर ॥ १० ॥ अद्भुत अग कुमार चिर विचस्यो वनमादे, फूल लेइ तव पूजे हो नामिनी कतनी वाहे ॥ इण अवसर सुरनाथ वि देह नमी जिननाथ, नदीश्वर वर चाल्यो हो देवदेवी बहुसाथ ॥ ११ ॥ पास ठेदी नग नेदी रे सप्रिय निसस्यो जाण, इइ जोइ वल तेहनु मनमांहे हुउ हेरान ॥ ज्ञान तणे उपयोगे रे नावी हो जाणी जिनद, इइ नमे कर जोडी हो धरतो अधिक आनद ॥ १२ ॥ धन्य तुमें सुकुमार सवअगें महागु णधार, सोलसमा जिनशातिजी थाशो हो नरतमझार ॥ पावन हुउं हु देखी हो लोचन विकस्यां रे आज, नाल नमु कर जोडी हो तुमने इव्यजिन राज ॥ १३ ॥ एम स्तवी सुर लोकनो नाथ गयो निज गम, श्रीवज्रायुध कुवर आविया आपणे धाम ॥ वात सुणी सवि नयरीयें वरत्यो जयजय कार, धवल मगल गाय गोरडी वोले ए मगल चार ॥ १४ ॥ हर्षे वधाम णा अति घणां आवे ए सोवन कोडी, स्वामी अमारा ए जीवजो, वरसनी कोडा कोडी ॥ राजलीला सुख नोगवे नामिनीशु नर्त्तार, हवे क्षेमकर जि नतणो सुणो दीक्षा अधिकार ॥ १५ ॥ चोथे खर्मे रसीली ए त्रीजी ढाल रसाल, उत्तमना गुणगावता वाधे मनोरथमाल ॥ रामविजय कहे रंगशु धन्य एहना अवतार, पुत्र पिता दोय जिनवर नामथकी जयकार ॥ १६ ॥४७॥

॥ दोहा ॥

॥ क्षेमकर नृप एकदा, वेठा सना मजार ॥ मुखआगल पाये नलां, नाटक विविध प्रकार ॥ १ ॥ नवस्वरूप नावे तदा, ए अनादिनो खेल ॥ सो पर सार्थे ताहरे, ए विजातिनो मेल ॥ २ ॥ जाण्युं आसनकपथी, तव लोका तिक देव ॥ जिनकल्प आवी कहे, बूफ बूफ जिन देव ॥ ३ ॥ तारो त्रि नुवन लोकमें, उपगारी असमान ॥ धर्मतीर्थ स्थापी करी, आपो शिवसुख दान ॥ ४ ॥ दीक्षा अवसर आपणु, जाणी अवधिज्ञान ॥ वरिस लगें वालेसरु, दिये अवारित दान ॥ ५ ॥ आठ लाख एक कोडीशुं, वरहवर एणे घोष ॥ प्रतिदिन दे त्रिनुवन धणी, सहु जगशु सतोष ॥ ६ ॥ त्रणगें कोडि उपर वली, कोडि अठयाशी जाण ॥ लाख एशी ऊपर अधिक, वरसें दीधूं दान ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ कलालणीना गीतनी देशी ॥ राय वज्रायुधने ठवि हो लाल, सहु

जगमें हितकार ॥ जिणदजी ॥ सुर नर असुर मळ्या तिहां हो लाल, संयम नार ॥ जि० ॥ १ ॥ क्षेमकर जिन वदीयें हो लाल ॥ वांछित सुख थाय ॥ जि० ॥ दोहग डुरित दूरें टळे हो० ॥ दर्शन बोलत ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ २ ॥ सर्व सामायिक उच्चरे हो० ॥ तिहने करे ॥ जि० ॥ मन पर्यव तिहा उपन्यु हो० ॥ जाणे मन परिणाम ॥ क्षे० ॥ ३ ॥ विचरे जिन पुहवीतले हो० ॥ उपशम रसना सिंधु ॥ जिन चाले ईर्या शोधता हो० ॥ निरुपम जग जनबंधु ॥जि०॥ क्षे० ॥४॥ कर्म क्षयें कपन्यु हो० ॥ उज्ज्वल केवलरूप ॥ जि० ॥ लोकालोक प्रकाशतु हो० ॥ क्षायिक नाव स्वरूप ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ५ ॥ वीश नुवनपति आवीया हो० ॥ बत्रीश व्यतर इद ॥ जि० ॥ दश वेमानिक ज्योतिषी हो० ॥ दोय चोशठ मली इंद ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ६ ॥ समवसरण देवें रच्यु हो०॥ रचिया त्रण प्राकार ॥जि०॥ रौप्य कनक मणि रत्नना हो०॥ ज्बके तेज अपार ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ७ ॥ पूर्वद्वारें पेसीने हो० ॥ सिंहासन वेसत ॥ जि० ॥ क्षेमकर अरिहतजी हो० ॥ देखी नवि उल्लसंत ॥ ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ८ ॥ रयणसचय पुरि परिसरें हो० ॥ उत्सव अति मंमाण ॥ जि० ॥ आव्या वज्रायुध वादवा हो० ॥ नमे प्रनुचरण सुजाण ॥ जि० ॥ क्षे० ॥ ए ॥ क्षेमकर जिन देशना हो० ॥ नय उपनय अद्भुत ॥ नविक जीव ॥ कर जोडीने सानले हो० ॥ सवि सुर नर पहुत ॥ ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १० ॥ कल्पतरु सुरधेनुथी हो० ॥ अधिक महोदय हेतु ॥ न० ॥ मूकी निद्रा मोहनी हो० ॥ धर्मशुं राखो हेत ॥ न० ॥ क्षे० ॥ ॥ ११ ॥ करीयें परीक्षा एहनी हो० ॥ चिहु नेदें श्रुत शील ॥ न० ॥ तप करुणा शुद्ध सेवतां हो० ॥ आपे शिवसुख लील ॥ न०॥ क्षे० ॥ १२ ॥ जेम आयुर्वेदें कह्युं हो० ॥ करवु पयनुं पान ॥ न० ॥ अविचारें अकालिमुं हो० ॥ पीतां होवे गुणहानि ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १३ ॥ बुध विचारे येपदुं हो० ॥ वायक पीवे तेह ॥ न० ॥ बलपुष्टिकर धेनुनुं हो० ॥ पय मूकी सदेह ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १४ ॥ तेम आदरियें धर्मने हो० ॥ ए वायक अविचार ॥ न० ॥ माने निजकुल चालने हो० ॥ धर्म करी निर्धार ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १५ ॥ धर्म अहिंसा लक्षणें हो० ॥ आतम शुद्धसनाव ॥ न० परखी लीजें प्रेमथी हो० ॥ सद्हगुणें सन्नाव ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १६ ॥

अविचार्यु करतां थकां हो० ॥ होवे दोष महंत ॥ न० ॥ काज विचारी जे करे हो० ॥ तेहिज कहियें संत ॥ क्षे० ॥ १७ ॥ आम्रनिपाति नृपा दिना हो० ॥ इहां सुणवा दृष्टांत ॥ न० ॥ तव पर्षद पूछे तिहां हो० ॥ ते कुण कहो नगवंत ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १८ ॥ केम अविचारित कामथी हो० ॥ श्यो तेहोनो हुर्ज दोष ॥ न० ॥ पूछे परिषद नावशु हो० ॥ कहे प्रनुजी गतदोष ॥ न० ॥ क्षे० ॥ १९ ॥ ढाल ए चोथा खमनी हो० ॥ ए सख्यायें जाण ॥ न० ॥ रामविजय कहे सानलो हो० ॥ कहेशे प्रनु हित आण ॥ न० ॥ क्षे० ॥ २० ॥ सर्वगाथा ॥ १०५ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ क्षेमंकर जिनराज, नांखे नवियण हित नणी ॥ सुणीयें आतम काज, साधेवा सवि प्राणीया ॥ १ ॥ उत्तम मुखनी वात, उत्तम कारज ऊपरें ॥ सुणतां दिन ने रात, धर्मतणी दृढता हुवे ॥ २ ॥ परखी करतां धर्म, नर्म रहित नार्वे करी ॥ लहियें शिव पद शर्म, मर्म लहेवो दोहिलो ॥ ३ ॥ जेम सुतने निज तात, अशुद्ध्रयण शखा दीया ॥ जाणि अशुद्ध शुद्ध वात, दृष्टिपरीक्षा जव हुई ॥ ४ ॥ अविमास्यु कोइ काम, करतां पस्तावो घणो ॥ आम्र निपाती ताम, आदि तणो उपनय सुणो ॥ ५ ॥

॥ ढाल पाचमी ॥

॥ सांनल सनतकुमार हो ॥ राजेश्वर ॥ ए देशी ॥ देश अवतिमांहे हो ॥ नवि प्राणी ॥ नयरी उज्जेणी नाम वखाणीयें ॥ तिहा जितशत्रुराय हो ॥ न० ॥ वैरिगज कंठीरव जाणीयें ॥ १ ॥ तस घर राणी अदंन हो ॥ न० ॥ नामें विजयसिरी सोहामणी ॥ कीधी दासी रत्न हो ॥ न० ॥ रूपें मथरगति रलियामणी ॥ २ ॥ सुखसागरमा दोय हो ॥ न० ॥ रगें रमे ते कछपनी परें ॥ एक दिन हर्षित होय हो ॥ न० ॥ बेठो सनामा नृप आम्बरें ॥ ३ ॥ दौवारिक तेणि वार हो ॥ राजेश्वर ॥ अर्ज करे आवी नृप आगलें ॥ आव्या राय डुवार हो ॥ न० ॥ ॥ कोइक चार पुरुष रूपें नले ॥ ४ ॥ तुम मलवानी आश हो ॥ रा० ॥ हुकम होवे तो आवे अंदरें ॥ कहे नृप तेडो तास हो ॥ दौवारिक ॥ आदर दीजें आव्या मदिरें ॥ ५ ॥ हुकम हुवो नृप जाम हो ॥ रा० ॥ चार ते चतुर सनामा आविया ॥ देखी आकृति ताम हो ॥ रा० ॥ सकल सनाना मनमा नावीया ॥ ६ ॥

जाण्यो उत्तम वश हो ॥ रा० ॥ तांबूलादिक देइ सन्मानिया ॥
रहे हस हो ॥ रा० ॥ वगर कह्याथी सहुयें जाणीया ॥ ७ ॥
पूछे तास हो ॥ कुंवरजी ॥ कहो कुण कारण किहांथी पधारिया ॥
स्वामी अरदास हो ॥ रा० ॥ देश अवतिप्रभु उपगारिया ॥ ८ ॥
तेहमां अनुजात हो ॥ रा० ॥ उत्तरपंथें अति रलीयामणुं ॥
विख्यात हो ॥ रा० ॥ पुर अवनीमां उपे अति घणु ॥ ए ॥
तिहां राय हो ॥ रा० ॥ पाले निज प्रजा रगें करी ॥ सबलो वरते
हो ॥ रा० ॥ रूपवती तस राणी सुंदरी ॥ १० ॥ दपती दोय रसाल हो
॥ रा० ॥ सुख विलसंता सुत सोहामणा ॥ चार थया सुकुमार हो ॥
रा० ॥ रायें कीधां बहुत वधामणां ॥ ११ ॥ प्रथम हुउ देवराज हो ॥
रा० ॥ वत्स ने कुलेन कीर्तिथीवली ॥ जोडीजें पद राज हो ॥ रा० ॥ एम
चिह्न सुत देखी आशा फली ॥ १२ ॥ सकल कला अन्यास हो ॥ रा० ॥
जनकें शीखवीया यत्नें करी ॥ नर यौवनमां नूप हो ॥ रा० ॥ चारे पर
णाव्या नृपदीकरी ॥ १३ ॥ इण अवसरें निजतात हो ॥ रा० ॥ अने
अनिवर्त्तक रोगें पीडियो ॥ राज्य प्रथमसुत हाथ हो ॥ रा० ॥ सोंपीडुं ते
परन्नव हिंमियो ॥ १४ ॥ राज्य लही देवराज हो ॥ रा० ॥ पाले रूडी
रीतें आपणु ॥ वलीया अम माहाराज हो ॥ रा० ॥ गोत्रीयें जोरो पडो
माड्यो घणो ॥ १५ ॥ पुण्यदशा अम हीण हो ॥ रा० ॥ देस हुवा वश
सहु दायादने ॥ नीसरीया थइ दीन हो ॥ रा० ॥ कीधा शुं हुवे ए वि
षादनें ॥ १६ ॥ दिन पतले सवि लोक हो ॥ रा० ॥ पाणी वलमां सहु ए
पारकुं ॥ केहो कीजें शोक हो ॥ रा० ॥ धर्म समो नहिं कोइ तारकुं
॥ १७ ॥ विहडे सुत ने बंधु हो ॥ रा० ॥ विहडे वहाली परणी कामि
नी ॥ पडिया कर्मने बंध हो ॥ रा० ॥ एक न विहडे धर्म ए सुरमणि
॥ १८ ॥ ते माटें सुण राज हो ॥ रा० ॥ आव्या तुम पासें उतावला ॥
बधव ए देवराज हो ॥ रा० ॥ सेवा कारण हर्ष समाकुला ॥ १९ ॥
सेव्या तुज गुण दूत हो ॥ रा० ॥ बांहे महाने तुं तारे सही ॥ तें उत्तम
कुल पुत्त हो ॥ रा० ॥ प्रारथीया लाजण पीठे नहिं ॥ २० ॥ यत ॥
पर पत्तणापवन्नं, मा जणणि जणेसि एरिस पुत्त ॥ मा उयरेवि धरिज्जसु, पत्र
णभगो कउ जेण ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ कहे जितशत्रु नरिंद हो ॥ रा० ॥

चिता मत करजो चित्तमांहे तुमें ॥ रहो अम पासें आनद हो ॥ रा० ॥ सेवा थाशे ते करशु अमें ॥ २१ ॥ तुम जेवा गुणवत हो ॥ कुमरजी ॥ आव्या आंवे ज्यु वायें कोकिला ॥ शरण ए सतने सत हो ॥ कु० ॥ चपल कमला स्थिर न रहे इला ॥ २२ ॥ मत थाउ दिलगीर हो ॥ कु० ॥ वीर विराजो सुदर मालीये ॥ अशन वसन वर चीर हो ॥ कु०॥ ल्यो तुमें सुखमांहे दीहा गालीयें ॥२३॥ बहुत करी सुपसाय हो ॥ कु० ॥ सेवक थाप्या चोकी अगनी ॥ बहु सन्मान्या राय हो ॥ कु० ॥ सुजस वाध्यो वेला उत्तरगनी ॥२४॥ चोथे खमें रसाल हो ॥ नवि प्राणी॥ ढाल नणी ए रगें पांचमी॥ राम कहे उजमाल हो ॥ न० ॥ धर्म करीजें परखी उद्यमी ॥२५॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ रात तणा चिहुं याम, चिहु वधव चोकी करे ॥ अनुक्रमें अनुक्रमें काम, राय नलाव्यु आदरें ॥ १ ॥ आप आपणे याम, तिलनर को कधे नहि ॥ दोहिली सेवा आम, देव म देजे तु सही ॥ २ ॥ यत ॥ आहारयति न स्वस्थो, विनिद्रो न प्रवुध्यते ॥ वक्ति न स्वेछया किंचित्, सेवक किं नु जीवति ॥ १ ॥ कष्टं नो सेवकानां तु, परछदानुवर्त्तिनाम् ॥ स्वयं विक्रीतदेहस्य, सेवकस्य कुत सुखम् ॥ २ ॥ दोहा ॥ जोडक सोनैया दिये, तोहि न कर सेवाकर्म ॥ नरने नारी एम नणे, शु जीवितनुं शर्म ॥ ३ ॥ यत ॥ मौनान्मूक प्रवचनपटुर्वातुलोजल्पकोवा, क्षांत्या नीरुर्यदि न सहते प्रायशोनाभिजात ॥ धृष्ट पार्श्वे वसति च यदा दूरतश्चाप्रगल्न, सेवाधर्म परमगहनोयोगिनामप्यगम्य ॥ ३ ॥ सोरठी दोहो ॥ मूकोव्यु निज राज, वेठ वलगाडी पापीयें ॥ इष्ट दैवथी आज, राखे तिम रहीयें सही ॥ ४ ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥ थारा महोला ऊपर मेह, ऊबूके वीजली ॥ हो राज ॥ऊ०॥ ए देशी ॥ लही नृपनो आदेश, के कोइक कामने ॥ हो लाल के ॥को०॥ गयो एक दिन देवराज, नजीकने गामनें ॥हो०॥ न० ॥ करि कारज मध्यान्ह, समय पाछो वल्यो ॥ हो० ॥स०॥ विचमांहे चढीयो जोर, पवन घनछु मल्यो ॥हो० ॥ प० ॥ १ ॥ वाये वायलीया ऊर्ध्व, धूल धोरण चढी ॥ हो० ॥ धू० ॥ कंकर तृण तिम पत्र, दोडी जाय ऊपडी ॥ हो० ॥ दो० ॥ चिहुं

दिशदूती ताम, उठी कादंबिनी ॥ हो० ॥ उ० ॥ करे कटाको जोर, दामिनी ॥ हो० ॥ क० ॥ १ ॥ वरसे वरसलो विंदु, धरोपरि ॥ हो० ॥ ध०॥ क्षणमांहे रहि जाय, रमाडे गोटका ॥ हो०॥ र० ॥ आवे देइ दोट, लपेटे भूमिनें ॥ हो० ॥ ल० ॥ कां रमे ग्रीषम विसाखो तें मुनें ॥ हो० ॥ वि० ॥ २ ॥ वायु शीतल वाय, रा घणी ॥ हो० ॥ ज० ॥ थर थर धूजे अंग, वितूटे कपनी ॥ हो० वि० ॥ तव देवराज कुमार, विचारी वडतले ॥ हो० ॥ वि० ॥ ऊभो उंढण, उंढी निश्चलें ॥ हो० ॥ उं० ॥ ४ ॥ वड उपरथी शब्द, सुणु तव तिहांकणे ॥ हो० ॥ सु० ॥ मनमांहे चिंते एम, इहां ए कुण नणे ॥ हो० ॥ इ० ॥ निसुणुं मांडी कान, जोउ शु उच्चरे ॥ हो० ॥ जो० ॥ सुणे पैशाची वाचें, पिशाच वातो करे ॥ हो० ॥ पि० ॥ ५ ॥ लावी करीनें वाद, गाहा एक कहे ॥ हो० ॥ गा० ॥ वीजो मांडी कान, के साची सद्दहे ॥ हो० ॥के०॥ त्रीजो चिंते ताम रह्यो हेठल थकी ॥हो० ॥ र० ॥ जोयु अचरिज एह, कहेशे शी वकी ॥ हो० ॥ क० ॥ ६ ॥ अत्र चरित्रोक्तं गाथाद्वय ॥ फो फो जाणसि किंची, सो पन्नरदिनो कहेहि मह किं तं ॥ जपइ इमोवि अक्क, लहीए सो नरिंदोत्ति ॥ ४ ॥ वीएण तउ पुत्तो, केण निमित्तेण कीइ वेलाए ॥ सो जपइ सप्पाउ, पढमे पहरंमि लंबी ए ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ जाणे पिशाची वाणीनो, अर्थ ते आपथी ॥ हो० ॥ अ० ॥ हा हा माहारो स्वामि, मरशे सापथी ॥ हो० ॥ म० ॥ पहेला प्रहर मझार, दैवें शुं कीधलु ॥ हो० ॥ दै० ॥ अथवा नलु लख्युं एह, में कारिज सी धलु ॥ हो० ॥ में० ॥ ७ ॥ करीश हु एह उपाय, साहिब उगारशुं ॥हो०॥ सा० ॥ यत्न करीने सर्पनु, विघ्न निवारशु ॥ हो० ॥ वि० ॥ थाशुं नहिं गुणचोर के, ढोर परें हवे ॥ हो० ॥ढो०॥ स्वामी जनक समान, सहु कवि श्रम स्तवे ॥ हो० ॥ स० ॥ ८ ॥ यत ॥ अन्नद प्राणदश्चैव, स्यानवोनय रक्षक ॥ ज्ञानदोजनकश्चैव, सप्तैते पितर स्मृता ॥ ६ ॥ पूर्वढाल ॥ एम चिंतवतो चित्त, आव्यो नृप अंतिकें ॥ हो० ॥ आ० ॥ वर्षा टाढ उकंट, चढयो शिर चितके ॥ हो० ॥ च०॥ सांझ समयमां सजानें, विसर्जी राज वी ॥हो०॥वि०॥ वादल घोर घटा घन, रहियो गाजवी ॥ हो० ॥ र० ॥ ॥ ए ॥ आवी निज आवास, नरेश्वर पोढीयो ॥ हो० ॥ न० ॥ जांबो सो

हो ताणी, उपर पट उंढीयो ॥ हो० ॥ उ० ॥ पासे रही पटराणी, वडी ते सेजमां ॥हो०॥व०॥ नीडी विहु नुजवथ, ते सूतां हेजमां ॥हो०॥ते०॥ १० ॥ आव्यो पहेले पहोर, चोकीने कारणे ॥हो०॥चो०॥ जोवे ते देव राज, रह्यो गुह्य वारणें ॥हो०॥र०॥ अथ ऊपरें ते वास, नुवन नीहालतो ॥हो०॥नु०॥ वारी जाली गोंख, विवर सवि नालतो ॥हो०॥वि०॥ ११ ॥ खड्ग ग्रही निजहाथ, रह्यो एकण मने ॥हो०॥ र० ॥ चशोदयने विवरें, अ हि लवित तने ॥हो०॥ अ० ॥ देखी ग्रहियु एक, करें मुख साहसी ॥ हो० क० ॥ वीजे करें दोय खम्म, कस्या ग्रहीनें असि ॥ हो० ॥ क० ॥ १२ ॥ गोपविया एक गोर, जइ ते खम्मने ॥ हो०॥ ज० ॥ मन चिंते थयु कारज, हणीयो लवने हो ॥ ह० ॥ निशा विवसन देवी, उर स्थल ऊपरें ॥हो०॥ ॥ उ० ॥ देखी पडिया विंड, रुधिरना डु ख धरे ॥ हो० ॥ रु० ॥१३॥ रखे विपसक्रम होय, इस्यु मन चिंतवे ॥ हो० ॥इ०॥ जूठे स्वामीनक्त, कलाने केलवे ॥ हो० ॥ क० ॥ निशाक्ष्यथी ताम, अञ्जनना उदयथी ॥ हो० ॥ अ० ॥ कुच ऊपर कर देखी, गव्यो नृप हृदयथी ॥ हो० ॥ ग० ॥ १४ ॥ क्रोध धरी मन चिंते, मारु एहने ॥ हो० ॥ मा० ॥ अशन वसन सवि पूरुं, नितप्रत्यें जेहने ॥हो०॥नि०॥ कीधुं एणे हराम, सवि ते माहरु ॥ हो०॥ स० ॥ कीधु कर्म कगेर, थइने वाहरु ॥ हो० ॥ थ० ॥ १५ ॥ हु एहने विश्वास, रहुं रयणी समे ॥ हो० ॥ र० ॥ करे ए एहवु काम, हवे मुख नवि गमे ॥ हो० ॥ ह० ॥ प्रीति तणु जिहा गम, तिहा त्रण टालीयें ॥ हो० ॥ ति० ॥ अर्थसवध विवाद, रमणी न निहालीयें ॥ हो० ॥ र० ॥१६॥यत ॥ यदीछेद्विपुला प्रीर्ति, त्रीणि तत्र निवारयेत् ॥ विवाद चार्थ सवध,परोक्षे दारदर्शनम् ॥१॥ पूर्वढाल ॥ ब्रह्महत्या ने प्रनास, (प्रनासशब्देन साधारण इर्व्य) दरिद्र धन देवकु ॥हो०॥द०॥ गुरुपत्नी वली तेम,ए पातकका रकु ॥हो०॥ए०॥ नवि पामे ते स्वर्ग,नरक अधिकारिया ॥हो०॥न०॥ उत्तो जाणो कृतगुण, जेणें विसारिया ॥ हो० ॥ जे० ॥१७॥ वली नृप चिंते एह, जोरावर छे घणु ॥ हो० ॥जो०॥ कोण जाणे हणे एह, के हु एहने हणु ॥हो०॥ के० ॥ मार्टे कोइ उपाय, करीने मारशु ॥ हो० ॥ क० ॥ वैरीने विषवेल, नणी न वधारशु ॥ हो०॥ न० ॥ १८ ॥ जोजो गुणनो दोप, थइनें नीप न्यो ॥हो०॥थ०॥ जलनालेरकपूर, थकी विष ऊपन्यो ॥ हो० ॥ थ० ॥

सूतो फरीने राय, के निद्रामिष करी ॥ हो०॥के०॥ पहेलो पहोर पूरी थइ चाकरी ॥ हो० ॥ पू० ॥१ए॥ आव्यो तव वत्सराज, कहे तुमें ॥ हो० ॥ व० ॥ राज पधारो गेह, हवे रहेशु अमें ॥ हो० ॥ निजमंदिरें देवराज, पहोंच्यो जई तिहां ॥हो०॥प०॥ नृप पूछे पहोरायत कोण अछे इहां ॥हो०॥को०॥२०॥ कहे स्वामी वत्सराज, हुं सेवक ॥ हो० ॥ हुं० ॥ कन्नो छु सेवामांहे, के पूरो साजनो ॥हो०॥के०॥ छठी चोथे ढाल, सीराडे ए चढी ॥ हो० ॥ स० ॥ राम कहे क्रोधांध, न राखे प्रीतडी ॥ हो० ॥न०॥२१॥ सर्व गाथा ॥१६०॥ श्लोक तथा गाथा ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कहे नरवर एक काम, वत्स करीश तु माहरु ॥ कहे शिर जोरें स्वामि, वचन न लोपु तुम्ह तणा ॥ १ ॥ द्यो आदेश सुजाण, शी शंका मुफथी करो ॥ प्रनु तुम वचन प्रमाण, शेप परें शिरें धरु ॥ २ ॥ प्रेषण नृत्य परीक्ष, व्यसनें बंधव परखीयें ॥ आपत्तिकाल सरीख, विनव कर्ये वलि नारजा ॥ ३ ॥ कहे राजा जो एम, तुम मनमा आवे अछे ॥ कर कारज तजी प्रेम, हण बंधव देवराजने ॥ ४ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उमे दोय पंखीयां के ॥ उमे० ॥ ए देशी ॥ तहत्ति करी नृप आण, सुजाण ते नीसख्यो के ॥ सु० ॥ मंदिरथी वत्सराज, हृदयथी थरहख्यो के ॥ हृ० ॥ चिंते कोप्यो जोर, राजन देवराजनें के ॥ रा० ॥ विरुद्ध करे निर्धार, ए वयणे आजने के ॥ ए० ॥ १ ॥ तनु दारा धन छोडी, कपरें एहवो के ॥ क० ॥ कोप होय जगमांहे, ए दीसे तेहवो के ॥ ए० ॥ पण मुफ बंधवमांहे, न को अवगुण अछे के ॥ न० ॥ जे उत्तम होय तास, अकारिज नवि रुचे के ॥ अ० ॥ २ ॥ सज्जन जन अपवाद, थकी रहे बीहता के ॥ थ० ॥ जेह जितेंद्रिय तेह, अकाज न ईहता के ॥ अ० ॥ मरण करे उंकारें, न चाले उतपथें के ॥ न० ॥ लज्जावंत सुशील, सुलक्षण संकथे के ॥ सु० ॥ ३ ॥ यतः ॥ मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा, स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिनिः प्रीणयंतः ॥ परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं, निजहृदि विकसंत संति सत किंयंतः ॥ १ ॥ विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा, सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः ॥

पशलि चान्निरतिर्व्यसन श्रुतौ, प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥ २ ॥ पू र्वढाल ॥ मुऊ बांधव देवराज, ए सज्जन जातिनो के ॥ ए० ॥ न मले ए हमा कोइ, विचार कुजातिनो के ॥ वि० ॥ केम कोप्यो नरराज, निवाजने स्थानकें के ॥ नि० ॥ सवल विमासण कपनी, आज अचानकें के ॥ आ० ॥ ४ ॥ पण कुपरीक्षक राय, अज्ञानें आवस्यो के ॥ अ० ॥ विण परमारथ जाणे, हुकम एणे कस्यो के० ॥ हु० ॥ पण इहा काल विलंब, करु शुन्न कारणें के ॥ क० ॥ नांख्यो प्रथमां एहज, अशुन्न निवारणें के० ॥ अ० ॥ ॥ ५ ॥ चितवी राय समीप, वही आव्यो वली के ॥ व० ॥ कां रे न लाव्यो तस शिर, शु तुऊ मति गली के ॥ शु० ॥ कहे वत्सराज नरेश्वर, ते जागे सही के ॥ ते० ॥ जागतां देवराज, ह णाये नहि सही के ॥ ह० ॥ ६ ॥ मारीश हु निशान्नर, ते थाशे यदा के ॥ते०॥ नृपतियें पण वात, हृदय धारी मुदा के ॥ हृ० ॥ स्वामी विनिइ कहो कोइ, वात सोहामणी के ॥वा०॥ वत्स कहे अहवा, निसुणो महारी नणी के ॥ सु० ॥ ॥ ७ ॥ वात विनोद विना ए, न जाये यामिनी के ॥ न० ॥ राय कहे तुं दाख, कथा मुऊ कामनी के ॥ क० ॥ सुण नृपवर बहु नरवर, पाटली पुरमां के ॥ पा० ॥ पृथ्वीराज नरेश्वर, चावो शत्रुमां के ॥ चा० ॥ ० ॥ सुन्नगा सुन्नगा नामें, राणी तस वालही के ॥ त० ॥ रतिरमणी अनुहार के, रूप गुणें सही के ॥ रू० ॥ शेठ तिहा रत्न सार, वसे एक गुणनिलो के ॥ व० ॥ सहु व्यवहारीमांहे के, सोहे शिर तिलो के ॥ सो० ॥ ए ॥ तस घर नारी सलज्जा, नामें रत्नुका के ॥ ॥ ना० ॥ गौरंगी रतिमय, विचारनी पजिका के ॥ वि० ॥ धनदत्त नामें एक, तनय तस कूखनो के ॥ त० ॥ मात पितानो नक्त, न रागी दोपनो के ॥ न० ॥ १० ॥ एकदिन कृतश्रृंगार, सुमित्रशु परवस्यो के ॥ सु० ॥ आव्यो चहुटामांहे, ते धनमदशुं नस्यो के ॥ ते० ॥ कोइ प्रशसे धन्य ए, नोगी प्राणीया के ॥ नो० ॥ विलसे लछि विलास, सोन्नागी जाणीया के ॥ सो० ॥ ११ ॥ तव बीजो कहे एह, नणी न वखाणीयें के ॥ न० ॥ आप तणी उपराजि न, आय ए वाणीये के ॥आ०॥ बाप तणे परसाद, करे ठे साहिबी के ॥ क० ॥ वेगे करे ठे तान, वनी तननी ढबी के ॥ व० ॥ १२ ॥ वात सुणी मनमांहे, शोचे ते इस्युं के ॥ शो० ॥

विण भुजबल उपराजण, मुझ जीव्युं किस्यु के ॥ मु० ॥ धन करु धर्म, सुगमें वावरुं के ॥ सु० ॥ जइ परदेशें कलंक ए, उतारुं के ॥ ए० ॥ १३ ॥ कमल उदधि हरिउरमा, वसे ए वारता के ॥ पण व्यवसाय उदधिमाहे, दीसे शाश्वता के ॥ दी० ॥ ते माटे करी श्री जोडश्युं के ॥ क० ॥ एह तणुं सवि कहेण, एणी परें मोडशुं के ॥ ए० ॥ १४ ॥ यत ॥ या श्री सरोरुहांनोधि, विप्मोर्वक्षसि च श्रुति ॥ या पुनर्व्यवसायाब्धो, लक्ष्मी साध्यक्रमीहते ॥ ३ ॥ व्यापारे वसते लक्ष्मी, किंचित् किंचिच्चकर्षणे ॥ अस्ति नास्तीव सेवाया, निक्षयां नैव संजव ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ तेणें कह्यो निज आशय, मित्रनी आगळें के ॥ मि० ॥ ते पण कहे सुण साच, लख्यु एम कागलें के ॥ ल० ॥ निजगुणथी विख्यात, कह्या उत्तम गुणी के ॥ क० ॥ बापगुणें विख्यात, कीर्त्ति मध्यम तणी के ॥ की० ॥ १५ ॥ यत ॥ उत्तमा स्वगुणे ख्याताः, मध्यमाश्च पितुर्गुणे ॥ अधमामातुले ख्याता, श्वसुरैश्चाऽधमाऽधमा ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ घरे आवी निजताततें, वात सर्वे कही के ॥ वा० ॥ जाइश हुं परदेश, रजा मुझ द्यो वही के ॥ र० ॥ जनक हिये धरे दुःख, कहे वत्स शुं कर्युं के ॥ क० ॥ ल्यो ए धन अपार, में ताहरु मन लह्युं के ॥ में० ॥ ॥ १६ ॥ विलसो वांछित जोग, रमो रंग मालीये के० ॥ र० ॥ चित्तथकी परदेशनी, चिंता टालीयें के ॥ चि० ॥ ढाल कही ए चोथे, खमें सातमी के ॥ खं० ॥ कहे वत्स वात सुणो नृप, आगल मन गमी के ॥ आ० ॥ १७ ॥ १८१ ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धनद कहे सुणो तातजी, तुमें उपराजी लाठ ॥ न घटे जोगववी प्रञ्जु, जेम विणसे सवि साच ॥ १ ॥ इण वचनें जाण्यु पिता, न रहें राख्यो एह ॥ शीख समर्पी पुत्रनें, सिद्ध करो गुणगेह ॥ २ ॥ त्यागी कृपण मजो तुमें, निर्दय वली दयाल ॥ परदेशें होजो सही, शूर अने उजमाल ॥ ३ ॥ शिक्षा दीधी पुत्रनें, चाल्यो सबले साथ ॥ करियाणु लीधु बहु, चित्त समरी जिननाथ ॥ ४ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ देशी जुहारीनी ॥ हवे साथ सघातें हो, कुंवर हर्ष धरी ॥ परदेशें चाल्यो हो, मालें शकट जरी ॥ केतेएक दिवसें हो, श्रीपुर नयर लही ॥

परिसर कतरीया हो, सरोवर पास सुही ॥ १ ॥ सारथपति वसिया हो, के उज्ज्वल वसन कुटी ॥ ध्वजनी सहिनाणी हो, के सोहे श्वेतपटी ॥ तिण वेला कोइक हो, के धूजतो धायो ॥ नयें चचल लोचन हो, के शरणा गत आयो ॥२॥ मुज राखो राखो हो, के करुणा स्वामी करो ॥ हु नागो आव्यो हो, के शरणें महेर धरो ॥ मत बीहे बोले हो, के सारथवाह इस्यो ॥ मुज आगल नांखो हो, के ठे अपराध किस्यो ॥ ३ ॥ एहवुं जव पूछे हो, के तावत तुरत धस्या ॥ हणो हणो बोलता हो, के आव्या सु भट कस्या ॥ धनदत्तने नाखे हो, के मूको एह जणी ॥ अपराधी नृपनो हो, के महोटो ठे अगुणी ॥ ४ ॥ ठे दास ए घरनो हो, के नृप आजरण हरी ॥ जूवटनें काजें हो, के रामत नहि सखरी ॥ ए व्यसनज जूरुं हो, के सातेमां राजा ॥ एहने सेवता हो, के अगें नहिं साजा ॥५॥ नृप वात ए जाणी हो, के जूआरी तेडी ॥ लीधुं तिण वेला हो, के कान करी जेडी ॥ हणो स्वामी डोही हो, के व्यसनी दास जणी ॥ मूको मत एहने हो, के रायनें रीप घणी ॥ ६ ॥ करुणा मन आणी हो, के कहे मत्री स्वामी ॥ कारामांहे राखो हो, के कहुं तुम शिर नामी ॥ मत्रीश्वर वयणें हो, के तालामाहे जड्यो ॥ मूक्यो चर चोकी हो,के ठो रह्यो मांहे पड्यो ॥७॥ नांजी काराग्रह हो, के सेवकने निहणी॥ नागो तुम पासें हो, के आव्यो वात जणी॥ तेमाटें काढी हो, के आपो चोर जलो ॥ नहिंतर इण माटें हो, के थाशे सहिय कलो ॥ ८ ॥ कहे सारथवाहो हो, के वात खरी तुमची ॥ शरणागत आपु हो के शान नहिं अमची ॥ कहे सेवक नृपना हो, के अमें आदेशकरा ॥ जो लोपु आणा हो, के कोपे अमउपरि ॥ ए ॥ धनदत्त उपगारी हो, के कहे नृपति पासें ॥ चालो हु आवु हो, के नृपति आवासें ॥ आवी नृप आगें हो, के रुनो कर जोडी ॥ नेटें एक मूकी हो, के रत्नावलि रूडी ॥ १० ॥ कोण देशथी आव्या हो, के निरु पम व्यवहारी ॥ कहो काइ अपूरव हो, के वात सजल सारी ॥ धुर हूती मामी हो, के निज वृत्तांत कह्यो ॥ राजेश्वर रूडो हो, के मानव तेह लह्यो ॥ ११ ॥ सुण साहिब मोरा हो, के तोरा चरण महु ॥ करु सहस नीहोरा हो, के चोरने मान लहु ॥ आजरण तुमारुं हो, के तुम हाथे आ व्यु, शरणागत स्वामी हो, के चोरनें हु पाउ ॥ १२ ॥ कहे राजा मूकण

हो, के जोगो एह नहि ॥ पण केम लोपाये हो, के तें जे वात में जा ए मूक्यो हो, के तुज वक्षीस कस्यो ॥ सुणि धनदत्त बोले हियडे हेज नस्यो ॥१३॥ महोटो ए मुजनें हो, के तुमें सुपसाय एम कही लइ आव्यो हो, के स्थानक तेह गयो ॥ सतोष्यो तेहनें के जोजन देइ नलो ॥ चोरने शीखामण हो, के आपे सुगुण निजे १४॥ राग आशावरी ॥ क्या करु मंदिर क्या करु दमरा ॥ ए देशी ॥ सन विचार सुणो मेरे नाइ, इह नव परनव हे उ खदायी ॥ दोष नेद जाव हे उनके, पार न पावे रे कोउ उंगुनके ॥ व्य० ॥ १ ॥ यूत मदिरा उंर वेस्या, करत आहेडो फिरत वनदेसा ॥ चोरी परनारीसें इष्यसें सातो विसन कहे नारी ॥ व्य० ॥२॥ द्यूत वडो कुलखंपण उनसें इज्जत कबहु न लहीयें ॥ हे सबहूमें ए सिरदारा, सोइ उत्तम इनसें न्यारा ॥ व्य० ॥३॥ करे जीववध उंर मांसको चाहे, सो फरि फरि चिहु गति अवगाहे ॥ जो मद्यपानें रहे मतवालो, उनकु लम्यो मन्त्रं मंत तर चालो ॥ व्य० ॥ ४ ॥ सब जग धूते जो गणिका निगुरी, उनसें मिले तिनकी गति बिगरी ॥ जो मृगजीव हनत वन पेठो, उनको माटीपनो जाउ हेगो ॥ व्य० ॥ ५ ॥ परके बाहिर प्रानकों लेवे, अपने अंतरप्रान कों देवे ॥ कह्यो उनु लोक विराधक उनको, चोरी करे सोही धिक्र धिक जनकों ॥ वि० ॥ ६ ॥ देखत परनारी रहे फिरते, जानत नांही जहेरसें मरते ॥ परनिजनारी देखे उख पावे, तो काहेकु तु परघर जावे ॥ व्य० ॥ ७ ॥ ए सातोसें जे रहे अलगे, तुरत जइ सुरपदसों वलगे ॥ जो उनकों नावें करी उमे, तो सहजानद सुखमु मम्मे ॥ व्य० ॥ ८ ॥ सोगठ सोल कषाय निवारो, राग द्वेष दोउ पासा मारो ॥ आरत ध्यान चोपाइ उपारो, अपने आनद महोल सिधारो ॥ व्य० ॥९॥ परपरिवाद ए कबहु न कीजें, कोपूठें पीठमांस नखीजें ॥ धन रमणी पर प्रेम न धारो, मोहमदिरा बिजमें न संचारो ॥ व्य० ॥ १० ॥ कुमति बडी धूतारी है वेस्या, उनको मत कोउ करहो वेसासा ॥ जिण कीया सोइ बहु उःख पाये, बहु रिनह ज्युं कचे न आये ॥ व्य० ॥ ११ ॥ मनमें आहट है आहेडो, इनकों निवारे में उनको चेरो ॥ चउविह अदत्त निवारो चोरी, पर आशा परचचल गोरी ॥ व्य० ॥ १२ ॥ ए सातों कहे नाव विचारी,

जो वर्जे तिनकी वलिहारी ॥ रामविजय कहे एसे जगतमें, तुरत चढी वेसे ध्यानतखतमें ॥ व्य० ॥ १३ ॥ इति सप्तव्यसनोपरि अध्यात्म गीतं ॥ पूर्वढाल ॥ कहे धनदत्त प्यारा हो, के वारुं तु तुऊने ॥ चोरी मत करजे हो, के लाज दियो मुऊनें ॥ पगे लागी पयंपे हो, के धन तु उप गारी, तें गुण मुऊ कीधो हो, के लीधो कगारी ॥ १५ ॥ जग दोय विशा मा हो, के ससारें नारी ॥ अर्थीने वीजो हो, के सत्संगति सारी ॥ धार्खां तुम वयणां हो, के रयण करी मनमां ॥ न धरुं वकाइ हो, के आ जथकी तनमां ॥ १६ ॥ यत ॥ पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्न सुनापि तम् ॥ मूढै पापाणखम्ॆपु, रत्नसंज्ञा विधीयते ॥१॥ पूर्वढाल ॥ हवे तु मुऊ स्वामी हो, के दास अबु तोरो ॥ कहु कर जोडीने हो, के वचन करो मोरो ॥ बे एक मुऊ पासें हो, के मत्र सवल काजू ॥ करे चूत पराजय दो, के शु नांखु जाजू ॥१७॥ तस आग्रह जाणी हो, के मत्र लियो कुमरें ॥ तस्कर निज स्थानक हो, के पहोतो तस समरे ॥ ढाल चोथे खर्मे हो, के आवमी एह कही ॥ जे व्यसन न सेवे हो, तेणें नवनिधि लही ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

॥ सार्थवाह त्यांथी चल्यो, जातां अनुक्रमें एक ॥ अटवी लही कादंवरी, ऊतरीयो सुविवेक ॥ १ ॥ जल स्थानक जोई चलु, करे रसोई तेह ॥ एह वे आव्यो पारधी, कृष्णवर्ण जस देह ॥ २ ॥ धनुप वाण हाथे ग्रह्यां, सा रमेय दश पाच ॥ रुदन करे डुखीयो घणु, धनदत्त कहे एम वाच ॥ ३ ॥ केम दीसे एम दूमणो, कहे मुऊ आगल आज ॥ ते कहे मुऊ स्वा मी डुखे, रोवु बुं माहाराज ॥ ४ ॥ शामाटे तव ते कहे, गिरिकुम्भिका पालि ॥ तिहा पल्लीपति शूर बे, सवल शत्रु कगाल ॥ ५ ॥ सिंहचम ना में नजो, सिंहवती तस नारी ॥ जीवितर्पे अति वालही, रमणी गुणभंमा र ॥६॥ चूतदोप तेहनें नही, तस विरहें अम नाथ ॥ मरशे तस डुख डुखी यो, हु रुदन करु बु नाथ ॥ ७ ॥ सार्थवाह कहे तेहने, एक वार मुऊ दृष्टि ॥ आणो तेहने सज करुं, मत्र सवल मन इष्ट ॥ ० ॥ तेणें पल्ली पतिनें कह्यु, आणी तेह तुरत्त ॥ मत्रवलें साजी करी, अहो उपगार वि चित्र ॥ ए ॥ जीवित दान मुऊने दियो, वली जीवाडी एह ॥ चरण नमीने आवीयो, पल्लीपति निजगेह ॥ १० ॥ धनदत्त तिहांथी चालीयो,

गुणगिरुउं गभीर ॥ वेलाकुल गत पामीयो, पाटण पुर गंभीर ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ साथ निवेश करी तिहां रे, पंच रात ॥ धनरा रागी ॥ वस्तु लीये वेचे बहु रे, पुरमांहे हुश ध० ॥ १ ॥ जूउं जूउं रे सुजाण ॥ वडभागी ॥ नहि धन जेहवुं प्रिय सहु धनरागी ॥ ए आंकणी ॥ तिहां मन मान्यो नवि थयो रे, व्यापारें लाभ ॥ध०॥ तृष्णा अनंती जिन कही रे, जेम जगमाहे आभ ॥ध० ॥ २ ॥ यडुक्तमागमे ॥ सुवण्ण रुप्पस्स उपव्वया भवे, सयाहु केलास असंखया ॥ नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छाहु आगास समा अणंतया ॥ १ ॥ दोहो ॥ तनकी तृष्णा सही जहे, सवाशेरके शेर ॥ मनकी तृष्णा नवि मटे, जो आणे घर मेर ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ पश्चिम रयणीयें चिंतवे रे, करु हवे जलनिधियात्र ॥ ध० ॥ द्रव्य घणु लावु रली रे, हर्षे चढी यानपात्र ॥ ध० ॥ जू० ॥ ३ ॥ थये प्रभातें आवियो रे, जोवा जलनिधि वेल ॥ ध० ॥ जल कल्लोल जिहा घणा रे, उछलता करे केल ॥ ध० ॥जू० ॥४॥ सार्थपति सरितापति रे, देखी लह्यो आनंद ॥ ध० ॥ चिंते ए सुप्रसन्न हुई रे, दूर टले छु खदंद ॥ ध० ॥जू०॥ ५ ॥ गुणगणनो आधार जे रे, धीवर सेवित जेह ॥ ध० ॥ ससाराबुधि तारकू रे,नैगमयुत गुणगेह ॥ध० ॥जू० ॥६॥ देव अधिष्ठित सितपटें रे, स्फीत इस्यु एक यान ॥ध०॥ जैनवाक्य परें संग्रह्युं रे, धन देई असमान ॥ ध० ॥जू०॥७॥ भांड सवे भरियु तिहां रे, जे देशातर योग्य ॥ध० ॥ वहाण चढी चाल्यो सुखें रे, सबल पवन अनुकूल ॥ ध० ॥जू० ॥८॥ उदधि घणो उल्लंघीयो रे, सढ पूस्था पवणेण ॥ध०॥ वहाण चाले वेगशु रे, जोयण जाय क्षणेण ॥ ध० जू० ॥ ए ॥ मार्गवर्षे एक सूयडो रे, मुख ग्रहि अंबफल सार ॥ ध० ॥ उडतो अंबर लडथडे रे, थाक्यो तेह अपार ॥ ध० ॥ जू० ॥ १० ॥ धनदत्त धीवरनें कही रे, तेह अणाव्यो पास ॥ध०॥ पंख उपर कर फेरियो रे, क्षण एक करि आश्वास ॥ध०॥जू०॥११॥ फल देइ मूकी कहे रे, मनुज परें शुक वाणि ॥ध०॥ ईशिगण ताहरो रे, किमही न थाउं सुजाण ॥ध०॥जू०॥ १२ ॥ तुमें जीवित मुजनें दीधु रे, कीधो बहु उपगार ॥ध०॥ मुफ जीवे दोय जीवियां रे, वृद्ध पितर निर्धार ॥ध०॥जू०॥ १३ ॥ तेमाटे कांइक करुं रे, तुमने हु प्र

त्युपकार ॥ ध० ॥ गुण कीधो जाणे नहि रे, ते सही मूढ गमार ॥ ध० ॥जू०॥१४॥ नेट करु फल ए ग्रहो रे, साहिब चतुर सुजाण ॥ ध० ॥ शुं अमें कीजें एहने रे, नक्ष्य ए तुऊ गुणखाण ॥ध०॥जू०॥१५॥ लीयो अवर तुऊ जे रुचे रे, तव कहे शुक सुण स्वामि ॥ ध० ॥ बहु गुणकारक एह बे रे, एहनु अमृतफल नाम ॥ ध० ॥जू०॥ १६ ॥ सुण कारण एहनु कहुं रे, विंध्य महीधर पास ॥ ध० ॥ विंध्या अटवी डुम वसे रे, कीरमिथुन एक खास ॥ ध० ॥जू०॥ १७ ॥ सुत हूउं हु तेहने रे, नेढ मूक हुयां तेह ॥ ध० ॥ वृद्धपणाथी आणीने रे,नक्ष्य आपु सस्नेह ॥ध०॥जू०॥ १८ ॥ अन्य दिवस एक आवियु रे, अटवीयें मुनियुग मीठ ॥ ध० ॥ आम्रतरु तलें आविने रे, बेतु में नयणें दीठ ॥ ध० ॥१९॥ देखि विजन मुनिजन कहे रे, आम्र उपर एक वात ॥ध०॥ पादशैल दरिया विचें रे, तिहा एक तरु विख्यात ॥ ध० ॥ २० ॥ ते सहकार सदा फले रे, तस फल खाये जे एक ॥ध०॥ रोग पणासे अगना रे, जाय जरा पण ठेक ॥ध०॥जू०॥२१॥ तेज रूप सौनाग्यना रे, गुण वाधे अति जोर ॥ध०॥ निगुणी हु दर्पित हुवो रे,ज्युं चकवा हुवे नोर॥ ध० ॥जू०॥ २२ ॥ मुनिवचन न होवे मृषा रे, फल आणीयु तेह ॥ ध० ॥ दिव्य लोचन होवे माहरा रे, तरुण पितर गुणगेह ॥ध०॥जू०॥२३॥ फल लेवा कारण गयो रे, आवता विचमां आ ज ॥ ध० ॥ तें राख्यो मुऊ जीवतो रे, जीव तु गरिवनिवाज ॥ ध० ॥जू० ॥ २४ ॥ हु बीजु फल आणीने रे, देईश मुऊ मावित्र ॥ ध० ॥ फल राखो अनुग्रह करी रे, करो मुऊ जन्म पवित्र ॥ ध० ॥जू०॥ २५ ॥ फल देइने कम्मियो रे, कीर विचारे शेठ ॥ ध० ॥ धन्य पक्षी पण एहवो रे, गुणवत दीठो डेठ ॥ ध० ॥ जु० ॥ २६ ॥ सार्थपतियें गोपव्युं रे, बहु उपगारीने हेत ॥ ध० ॥ देशु कोइएक नूपने रे, धारी मन सकेत ॥ध०॥जू०॥ २७ ॥ अनुक्रमें जातां पामीयो रे, दिन केते परकूल ॥ ध० ॥ लेइ नेटण जइ मिल्यो रे, ते पुरनृप अनुकूल ॥ध०॥जू०॥ २८ ॥ फल आप्यु तस गुण कह्यो रे, रायें मूक्यु ठाण ॥ ध० ॥ महाप्रसाद कही आवियो रे, सार्थपति निज ठाण ॥ ध० ॥ जू० ॥ २९ ॥ लान्न अधिक तिहां कणे लह्यो रे, नवमी ढाल रसाल ॥ ध० ॥ राम कहे नर ते नला रे, जस उपगारनो ढाल ॥ ध० ॥ जू० ॥ ३० ॥ सर्व गाथा ॥२५७॥ श्लोक तथा गाथा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेची क्रियाणक वली अवर, ग्रही तेह धनदत्त ॥ पाछो वली दिने, पुर गंभीर पहुत्त ॥ १ ॥ साथ लेइ तिहांथी चल्यो, निजपुर माल ॥ विच अटवी कादवरी, आवी ते विकराल ॥ २ ॥ रात रह्या को तिहां, सुजट बहु परिवार ॥ रह्या चिहुदिशि मोरचे, ग्रही विविध थियार ॥ ३ ॥ पाछले पहोरे रयणीने, हत हत करती धाड ॥ आवी पडी कतावली, अटवी जिहां उजाड ॥ ४ ॥ धनदत्त सजी साहामो थयो, साहसिक शिरदार ॥ वदी कहे जय जय चिर, श्रीधनदत्त कुमार ॥ ५ ॥ धाड स्वामी पल्लिपतें, धनदत्त निसुणु नाम ॥ रखे होइ उपगारीयो, जेणें साधु मुज काम ॥ ६ ॥ शस्त्र रहित जट वारिनें, साहामो पल्लीनाथ ॥ आव्यो तव वेहु उंलखी, मलिया घाली वाथ ॥७॥ पूछे तब प्रेमें करी, कुशल क्षेम विरतत ॥ अहो बहु दिवसें वालहा, मलिया तुमें महंत ॥ ८ ॥ तुमछु अज्ञानें इहां, कीधी घणी अयुक्त ॥ खमो अपराध ए माहरो, घणी करी प्रणपत्य ॥ ९ ॥ तेडी लाव्या मदिरें, कीधी जक्ति जुगत्त ॥ जोजन वस्त्रादिक तणी, करि मनुहार विचित्र ॥ १० ॥ तस आणा लेइ चालियो, निजपुर आव्यो क्षेम ॥ मात पिता परिवारशुं, म लियो बहुले प्रेम ॥ ११ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग केदारो ॥ सुखदायी रे सुखदायी रे ॥ ए देशी ॥ पुर आवी रे पुर आवी रे, बहुयश कीर्त्ति उपजावी रे ॥ परिगल घरे संपद लावी रे, धन वावे सुक्षेत्रे हो जावी रे ॥ पु० ॥ १ ॥ जिनजुवन ते नविन करावे रे, बहु जीरणनें समरावे रे ॥ जिनपडिमा अनेक जरावे रे, एम पापे अशुज क्षय जावे रे ॥ पु० ॥ २ ॥ करे ज्ञाननी जक्ति विशाला रे, होवे दूर अज्ञानतमजाला रे ॥ विरचे मुनिजक्ति रसाला रे, प्रगटे गुणमं गलमाला रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ वली अन्नवगुण सजाली रे, पडिलाभे अशन शुद्ध जाली रे ॥ साहामी साहमिणी सतोषे रे, क्षेत्र साते सूधा पोषे रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ क्षीण दीन प्रत्यें उद्धारे रे, दुःखीयानां दुःख सवि वारे रे ॥ जिन वयण हियामां धारे रे, जे सहेजें जवजल तारे रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ नृप दीधी नगरशेठाई रे, थइ प्रगट सबल पुन्याई रे ॥

एक दिन पुर उपवन आइ रे, मुनि समवसख्या सुखदायी रे ॥ पु० ॥ ६ ॥ मुनि वादीनें देशन निसुणी रे, वधी वात वैराग्यनी वमणी रे ॥ तजी कचन कोडी ने रमणी रे, मुनि हुउ माहातम सुगुणी रे ॥ पु० ॥७॥ धनदत्त मुनि चारित्र पाली रे, कर्म कोडी सवे परजाली रे ॥ घनघाति कर्म तपें गाली रे, शिवरमणी वरी लटकाली रे ॥ पु० ॥ ८ ॥ कहे राम विजय कर जोडी रे, तेहना पाय नमु मद मोडी रे ॥ जेणें कचन कामिनी ठोडी रे, तस शिवसुख हाथ करोडी रे ॥पु०॥ए॥ इति सप्तक्षेत्रनाम स्तुति ॥ ढाल ॥ काहानजी मेह्लोने कावली रे ॥ ए देशी ॥ हवे ते फल लेइ राजवी रे, चिते हो एम विचार ॥ ए फल खाधे रे शु होवे रे, कीजें हो पर उपगार ॥ १ ॥ राजन सांजलो वातडी रे ॥ ए आंकणी ॥ कहे वत्सराज कुमार ॥ काज विचारिने जे करे रे, ते नर लहे सुख सार ॥ रा० ॥ २ ॥ फल उपजावु बहु एहथी रे, आवे बहुने रे जोग ॥ तो महोटो गुण निपजे रे, स जारे बहु लोग ॥ रा० ॥ ३ ॥ सेवक तेडीने एम जणे रे, ए फल वावो सुगम ॥ चोकी करो नित्य एहनी रे, एह तुमारडुं काम ॥ रा० ॥ ४ ॥ वाव्यु उत्तम वाडीयें रे, जतन करतां रे तास ॥ दिन केतेइक निपन्यो रे, सुदर आवो रे खास ॥ रा० ॥ ५ ॥ वात सुणी फल फूलनी रे, रीज्यो राय अपार ॥ दान दीये रखवालने रे, रहेजो तुमें हुशियार ॥ रा० ॥६॥ रात दिवस रहे पोपता रे, केड न मूके लगार ॥ दैववशें रे एक रातमा रे, जूमि पड्यु फल सार ॥ रा० ॥ ७ ॥ दीठु प्रजातें ते सेवकें रे, फल परिपक्क रसाल ॥ नजरें कछु जइ रायने रे, जूपें लीधुं ततकाल ॥ रा० ॥ ८ ॥ तेडी पुरोहितनें दीधुं रे, थयो मनमाहे खुशाल ॥ घर जइ तेणें ते वावखु रे, ते पहोतो तब काल ॥ रा० ॥ ए ॥ वात सुणी विलखो थयो रे, रायें धस्रो मन शोच ॥ हा हा अकार्य केम थयुं रे, करे मनमांहे आलोच ॥ रा० ॥ १० ॥ ए विषवृक्ष्ज ठे सही रे, कोइ वैरी मुज काज ॥ मूक्यु प्रपंच करी इहा रे, राखेवु नहिं आज ॥ रा० ॥ ११ ॥ ठेदो रे तुरत उतावला रे, काढो एहनो कंद ॥ कोपीयो राय हुकम करे रे, हुवो सबलो मतिमंद ॥ रा० ॥ १२ ॥ सेवक लेइ कुठारने रे, धाया हो तेणें रे स्थान ॥ मूल उछेदी पाडीयो रे, हा हा कीधु अकाम ॥ रा० ॥ १३ ॥ इण समे रोगी कोढी नरा रे, जीवितथी निर्विंसु ॥ विप

॥ दोहा ॥

॥ वेची क्रियाणक वली अवर, ग्रही तेह धनदत्त ॥ थाडो थोडी दिने, पुर गंजीर पहुत्त ॥ १ ॥ साथ लेइ तिहांथी चल्यो, निजपुर ते माल ॥ विच अटवी कादंबरी, आवी ते विकराल ॥ २ ॥ रात रह्या को तिहां, सुजट बहु परिवार ॥ रह्या चिहुदिशि मोरचे, ग्रही विविध थियार ॥ ३ ॥ पाठले पहोरे रयणीने, हत हत करती धाड ॥ पडी कतावली, अटवी जिहां ऊजाड ॥ ४ ॥ धनदत्त सजी साहामो थयो, साहसिक शिरदार ॥ वदी कहे जय जय चिर, श्रीधनदत्त कुमार ॥ ५ ॥ धाड स्वामी पल्लिपतें, धनदत्त निसुण्यु नाम ॥ रखे होइ उपकारीयो, जेणें साख्यु मुऊ काम ॥ ६ ॥ शस्त्र रहित नट वारिनें, साहामो पल्लीनाथ ॥ आव्यो तव बेहु ठलखी, मलिया घाली वाथ ॥७॥ पूछे तव प्रेमें करी, कुशल क्षेम विरतंत ॥ अहो बहु दिवसें वालहा, मलिया तुमें महंत ॥ ८ ॥ तुमह्यु अज्ञानें इहां, कीधी घणी अयुक्त ॥ खमो अपराध ए माहरो, घणी करी प्रणपत्य ॥ ए ॥ तेडी लाव्या मंदिरें, कीधी नक्ति जुगत्त ॥ नोजन वस्त्रादिक तणी, करि मनुहार विचित्र ॥ १० ॥ तत्त आणा लेइ चालियो, निजपुर आव्यो क्षेम ॥ मात पिता परिवारशुं, म लियो बहुले प्रेम ॥ ११ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ राग केदारो ॥ सुखदायी रे सुखदायी रे ॥ ए देशी ॥ पुर आवी रे पुर आवी रे, बहुयश कीर्त्ति उपजावी रे ॥ परिगल घरे संपद लावी रे, धन वावे सुक्षेत्रे हो नावी रे ॥ पु० ॥ १ ॥ जिनजुवन ते नविन करावे रे, बहु जीरणनें समरावे रे ॥ जिनपडिमा अनेक नरावे रे, एम पापे अघन क्षय जावे रे ॥ पु० ॥ २ ॥ करे ज्ञाननी नक्ति विशाला रे, होवे दूर अज्ञानतमजाला रे ॥ विरचे मुनिन्नक्ति रसाला रे, प्रगटे गुणमें गलमाला रे ॥ पु० ॥ ३ ॥ वली अक्षवगुण सन्नाली रे, पडिलाने अशन शुद्ध नाली रे ॥ साहामी साहमिणी सतोपे रे, क्षेत्र साते सूधां पोषे रे ॥ पु० ॥ ४ ॥ क्षीण दीन प्रत्यें उद्धारे रे, दुःखीयानां दुःख सवि वारे रे ॥ जिन वयण हियामां धारे रे, जे सहेजें नवजल तारे रे ॥ पु० ॥ ५ ॥ नृप दीधी नगरशेठाई रे, थइ प्रगट सबल पुण्याई रे ॥

अति नखुं, लोक वसे धनवत रे ॥ १ ॥ वा० ॥ वात विचारी कीजीयें, जेम लहीयें यशोवाद रे ॥ वा० ॥ अविचार्यु कारज करे, जनमां लहे अ पवाद रे ॥ २ ॥ वा० ॥वा०॥ शत्रुदमन नामे नलो, नरपति अति विकराल रे ॥वा०॥ रत्नमाला रलियामणी, राणी अति सुकुमार रे ॥३॥वा०॥वा०॥ एक दिवस बेठो सन्ना, राजकुली बत्रीश रे ॥वा०॥ एक वटुक आव्यो तिहां, कनो देइ आशीष रे ॥४॥वा०॥वा०॥ व्यग्रपणे नाल्यो नहिं, सना विसर्जी ताम रे ॥ वा० ॥ अमहर स्नान कर्यु नृपें, गयो देवसेवा काम रे ॥ ५ ॥ वा० ॥ वा० ॥ फूल आणी मुह आगलें, वटुकें कखा तिहा नेट रे ॥वा०॥ देवसेवाने कारणें, रायें निहाल्यो मीट रे ॥६॥ वा० ॥ वा० ॥ पूछे नइक तु कोण छो, ते कहे सुण अवनीश रे ॥वा०॥ नामें शुनकर विप्र हुं, यज्ञ दत्त सुत ईश रे ॥७॥ वा० ॥ वा० ॥ वासी अरिष्ट पुरनो सही, नव नव देश विनोद रे ॥ वा० ॥ जोतो इहां आव्यो प्रन्नु, देखी पाम्यो प्रमोद रे ॥८॥ वा० ॥ वा० ॥ देखि विनीत सोहामणो, दिलमांहे रीज्यो राय रे ॥ वा० ॥ निज पासें ते राखीयो, गुणथी आदर थाय रे ॥ ए ॥ वा० ॥ यत ॥ शूरस्त्यागीविनीतश्चा, कृतघ्नोदृढसौहृद ॥ विद्यानी स्वामिनक्तश्च, सर्वत्र लनते यश ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ वा० ॥ गुण देखी गौरव कर्यो, अतेउर आदेश रे ॥ वा० ॥ विश्वासी जाणी करी, अतर नहिं लवलेश रे ॥ १० ॥ वा० ॥ ॥ वा० ॥ एक दिवस पुर उपवनें, आव्यो एक मृगराज रे ॥ वा० ॥ व्याध कहेणथी नीसर्यो, नृप चतुरग लेइ साज रे ॥११॥ वा० ॥ वा० ॥ फोज चढी चिहु दिशि खडी, चढी कुजर नरसिंह रे ॥वा०॥ बेठो शुनकर आगर्ले, अकुश लेइ अबीह रे ॥ १२ ॥ वा० ॥ वा० ॥ आव्यो उद्यान उतावलो, नरपति मृगपति पास रे ॥वा०॥ नृप ऊपर हरि आवियो, उछजतो आकाश रे ॥१३॥ वा०॥वा०॥ ताम शुनकर चितवे, रखे करे स्वामिविनाश रे ॥वा०॥ अकुश मुखमां क्षेपीनें, कीधो सिंहनो नाश रे ॥१४॥ वा० ॥ वा० ॥ नृप शुनंकरनें कहे, रूडुं न कीधु एह रे ॥ वा० ॥ मुज चिंतित ए सिंहनें, वचमां हणि यो जेह रे ॥ १५ ॥ वा० ॥ वा० ॥ ए हणतां तें माहरो, सहु नृपमा यश वाद रे ॥ वा० ॥ कीधो कमी तो एम सही, वटुक कहे तज विखवाद रे ॥१६॥ वा० ॥ वा० ॥ राजयत्नने कारणें, में निहण्यो हरि एह रे ॥ वा० ॥ निज उत्कर्ष न चितव्यो, सुण साहिब गुणगेह रे ॥१७॥ वा० ॥ वा० ॥ तुम

फल जाणीने आवीया रे, मृत्युने काजे आसन्न ॥ रा० ॥ १४ ॥ अपक्क ते वावरे रे, केइ फल फूल ने पान ॥ मजर केइ नक्षण करे रे, गयो वल्यो वान ॥ रा० ॥ १५ ॥ अद्भुतरूप धारी थया रे, देखीने हो नूप ॥ अहो विपरीत सहकारनु रे, दीसे ए कांइ स्वरूप ॥ रा० ॥ १६ ॥ जन सामान्यनें गुण थयो रे, वेदनो जाण विपन्न ॥ एम . चर तेडीयो रे, पूछे हो तेह राजन्न ॥ रा० ॥ १७ ॥ शु फल चूंटयुं ए थयी रे, के पडीयु स्वयमेव ॥ स्वामी पड्यु अमें लावीया रे, साच कहुं नरदेव ॥ रा० ॥ १८ ॥ वात सुणी राय चितवे रें, नूइ पडे विषनाव ॥ कोइक जीव तणो थयो रे, तेणे धिक्जाति अनाव ॥ रा० ॥ १९ ॥ हा हा में अविचारिने रे, कीधु अकारिज एह ॥ रोपे अमृततरु छेदीयो रें, मूर्खमांहे हु रेह ॥ रा० ॥ २० ॥ यत ॥ सुगुणमपगुण वा कुर्वता कार्य जातं० ॥ शोच घणो मनमां धरे रे, जेम जेम सान्नरे वात ॥ विण परी छें क्रिया करे रें, तेहनें एह दृष्टांत ॥ रा० ॥ २१ ॥ ढाल नणी दशमी सही रे, चोथे खर्मे रे एह ॥ राम कहे नर ते नला रे, काज विचारी करे जेह ॥ रा० ॥ २२ ॥ सर्व गाथा ॥२९९॥ श्लोक तथा गाथा ॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ जेम अपरीक्षित काजथी, शोच लह्यो तिण राय ॥ तेम अपरें करवुं नहिं, कहे वस्स सुण नरराय ॥१॥ कथा कहेतां ए नली, बीजो पहोर व्यतीत ॥ वस्स वल्यो आव्यो तदा, डुर्जनराज विनीत ॥ २ ॥ चिंते राजा चित्त मां, वस्स कही मुज वात ॥ पण इर्णे कारिज नवि कछु, आव्यो एहनो भ्रात ॥ ३ ॥ तेहने पण तिमहिज कह्यु, हा कही कहयो ताम ॥ आयो जइ पाछो वल्यो, नृपनें करे सलाम ॥ ४ ॥ कां रे कारज नवि कर्युं, ते कहे धधव वोय ॥ जागे छे माहाराज मुज, किहांथी चिंतित वोय ॥ ५ ॥ ते माटे कांइ कहो, वेला निर्गम थाय ॥ नहिंतर सांनल साहिबा, कहुं कथा सुखदाय ॥ ६ ॥ राज हुकम हूउं नलो, कहो कथा सुविवेक ॥ ड र्जन अवसर जाणि तब, कहे कथा धरि टेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ सहीयो मोरी राखलियो नीम वधाइ से ॥ ए देशी ॥ वाहाला स्वामी ॥ क्षेत्र नरतमां उपतु, राजपुर नयर महंत रे ॥ वा० ॥ पर्वत उपरें

शुं अविचाखुं उच्चरो जी ॥ ७ ॥ उत्तमवश उत्पन्न, तुमें महोटा राजन्न ॥ मोजी लाल ॥ लाजो नहिं केम ए कहे जी ॥ ८ ॥ उत्तम आप वखाण, न करे हो चतुर सुजाण ॥ धीठे लाल ॥ मांमी प्रशंसा न कीजीयें जी ॥ ॥९॥ हणीयो शुनकर सिंह, तुमें जूगमांहे लीह ॥ प्रीतम लाल ॥ फोगट फूले शु हुवे जी ॥ १० ॥ अवला हो आगल वात, कूडी न नीठो ख्याा त ॥ फीके लाल ॥ एह वचन मुज नवि गमे जी ॥ ११ ॥ राय सुणी चढ्यो रोप, होठें पडे तव शोप ॥ चिंते लाल ॥ वात शुनंकरें ए कही जी ॥ १२ ॥ कोइ आगल ए गुज, नहि परकाशु तुज ॥ नांख्युं लाल ॥ पण वचनें ए नवि रह्यो जी ॥ १३ ॥ नापक मर्मनो एह, पहोंचाडुं यम गेह ॥ ठाने लाल ॥ काज करेवु में सही जी ॥१४॥ आवी हो नृप एकांत, तेडीया रक्षक तंत ॥ आ० ॥ एह शुनकरनें हणो जी ॥ १५ ॥ ठल जोई ततकाल, कीधु ए कर्म चांमाल ॥ धिक् धिक् लाल ॥ जे हण्यो एम गुणवतनें जी ॥ १६ ॥ अन्य दिवस पट्टराणी, कहे साहिब गुणखाणि ॥ प्यारे लाल ॥ वटुक शुनकर किहां गयो जी ॥ १७ ॥ कहे राजा तस नाम, लीजें नहि ए हराम ॥ पूठे लाल ॥ राणी हो कुण कारण कह्यो जी ॥ १८ ॥ अतर केम करो आज, मुज आगल माहाराज ॥ नाखो लाल ॥ जो जाणो ठो तो वारता जी ॥१९॥ रायें कह्यु सवि रूप, राणी कहे ए विरूप ॥ नीके लाल ॥ एणें मुज आगल नवि कह्यु जी ॥ २० ॥ सातमी नूमि आवास, व्ची चढी उल्लास ॥ नीके लाल ॥ ए सवि जोयुं में सही जी ॥२१॥ नहिं तस दोप लगार, ए तुम नक्त उदार ॥ प्यारे लाल ॥ ते जीवे ठे के नहिं जी ॥ २२ ॥ शोकातुर थइ राय, वात कही समजाय ॥ हा हा लाल ॥ सबल अकारज में कर्युं जी ॥ २३ ॥ शोक करे ते दोय, जेम जेम सांनरे सोय ॥ प्यारे लाल ॥ एम अविचाखु पुःख होये जी ॥ २४ ॥ एणि परें ते नर नारि, पुःख लह्यु मनमाय ॥ नीके लाल ॥ एम कोई करता रखे जी ॥ २५ ॥ चोथे खर्मे ढाल, बारमी सुणो उजमाल ॥ प्यारे लाल ॥ काज विचारिनें कीजीयें जी ॥ २६ ॥ यत्र ॥ सहसा विदधीत न क्रिया० ॥ १ ॥ सर्व गाथा ॥ ३५९ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥१९॥

॥ दोहा ॥

॥ वात कही विरम्यो जिस्ये, त्रीजो पुर्लनराज ॥ त्रीजो प्रहर व्यतीत

प्रभाव ए जाणवो, जे अकुर्शे हरियात रे ॥ वा० ॥ कहेवं हो गलें, नृपें टाल्यो उत्पात रे ॥ १८ ॥ वा० ॥ वा० ॥ कोप म कर एॆं, नहि त्रीजो इहां कोय रे ॥वा०॥ चउकन्नी ए वातनुं, भेदन न होय रे ॥१ए॥वा०॥ यत ॥ पट्कर्णोभिद्यते मंत्र, अतु कर्णोन द्विकर्णस्य च मंत्रस्य, ब्रह्माप्यंतं न गछति ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ वा० ॥ कहे जो मंत्र ए, नेदाशे जनमांय रे ॥ वा० ॥ तो मुज मुखकलंक ए, स्तरशे इण गाय रे ॥ २० ॥ वा० ॥ वा० ॥ कहे शुजकर साहिबा, सोंप्युं गुज्ऊ रे ॥ वा० ॥ बाहिर नेद लहे नहि, प्राण जते पण मुज रे ॥२१ ॥ वा० ॥ वा० ॥ वात सुणी राय हर्षीयो, ग्रही हरिशव तेणि वार रे ॥ वा० ॥ सैन्य समीपें आवियो, वरत्यो जय जयकार रे ॥२२॥वा०॥वा०॥ ढाल नणी अग्यारमी, चोथे खर्मे उदार रे ॥ वा० ॥ जे निज गुण जांखे नहि, धन्य तेहनो अवतार रे ॥२३॥वा०॥ सर्वगाथा॥३२ए॥श्लोक॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे शुनकर सुनटने, प्रभुनो प्रबल प्रताप ॥ परगट पंचानन हणी, टाल्यो सबल संताप ॥ १ ॥ वात सुणी चित्त चमकिया, मांमलीक सामंत ॥ अहो अहो भुजबल स्वामीनुं, सहू वखाणे संत ॥ २ ॥ नृप आव्या मंदिर नणी, वाजंते वाजित्र ॥ पुरमांहे यश विस्तर्यो, नूप तणो सुपवित्र ॥ ३ ॥ नगरमांहे उत्सव हुउ, चोकें चोक ए वात ॥ सिंह सबल नरपति हण्यो, रहेशे जग अख्यात ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी आठे लालनी ॥ सना विसर्जी हो राय, आव्यो अंतेउरमांय ॥ आठे लाल ॥ पटराणी पायें पडे जी ॥ १ ॥ आवो जी प्राण आधार, साहिब नर शिरदार ॥ आ० ॥ वात्त कहो हेजें हसी जी ॥ २ ॥ स्यो उत्सव माहाराज, नगरमांहे बहु आज ॥ प्यारे लाल ॥ सांजलवा अलजो घणो जी ॥ ३ ॥ कहे वालम सुण नार, साचुं कहुं निर्धार ॥ मीठे लाल ॥ आज में हरि हणियो सही जी ॥ ४ ॥ वृद्धपणामें एह, लोक करे सस्नेह ॥ नीके लाल ॥ को न करे ते में कर्युं जी ॥ ५ ॥ मुज जेहवो बलवंत, कोइ नहिं दृढचित्त ॥ प्यारे लाल ॥ पंचानन सार्यो अख्यो जी ॥ ६ ॥ तब रीसाणी हो नारि, दे उत्तर तेणी वार ॥ स्वामी लाल ॥

पाम्यो रे ॥ नृप नमतो तरष्यो घणु, वड हेठल जइ वीशाम्यो रे ॥ सु० ॥ १० ॥ मनमां इछे नीरने, वडशाखाहूंती हेठे रे ॥ झरता जल विंड लहु, मनमां एम चिंत्युं वेठे रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ शाखाविच फाविल नणु, वर्षा रुतुनु जल एह रे ॥ नाजन करीय पलाशनु, नरी पान करु सस्नेह रे ॥ ॥ सु० ॥ १२ ॥ तिम करी जल पीवा लिस्ये, थयो नृपति उजमाल रे ॥ वट पखी एक आवीने, करथी ढोल्यु ततकाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ थइ विलखो नरराजीयो, फरि नरीयु ते जलपात्र रे ॥ तेम वली ढोल्यु पंखीयें, नृप चिंते एह कुपात्र रे ॥ सु० ॥ १४ ॥ कोप्यो राय कशा ग्रही, मन चिंते त्रीजी वार रे ॥ आवे तो मारु सही, न करु हवे ढील लगार रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ जल अर्थे नाजन धर्युं, कर एकें पंखी विमासे रे ॥ कोप्यो राय ए मारशे, नवि मूके विशवा वीशें रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ पण मुऊ मरण नलु इहां, नहिं मरण नलु नूपालो रे ॥ ए जीव्ये बहु जीवशे, मुऊ जेवा केइ कगालो रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ धन्य धरा जिहां एहवा, पखी पण ठे उपकारी रे ॥ प्राण उगारे पारका, ते जीव तणी बलिहारी रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ पत्रनाजन नरी जव पीये, तव आवते नाख्यु उमाडी रे ॥ पखी कशाघातें हणी, नृप रीऊ्यो हेठो पाडी रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ फरी पलाशनो पुट धर्यो, जलबिंड तिहां थी आगें रे ॥ पडतां देखी चिंतवे, ए कौतुक सरिखु लागे रे ॥ सु० ॥ २० ॥ वटशाखा जोउ चढी, तरुकोटर अजगर मागो रे ॥ सूतो गरल मुखथी गले, ते जोइ तिहांथी नागो रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ ए में पीधु होत जो, तो मरत सही इण गमो रे ॥ जूउं पखी उपगारीये, अहो शु कीधु ए कामो रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ प्राण कर्या अलखामणा, पण मुऊने एणें उगार्यो रे ॥ शान करी आवी घणी, पण मूढ हु न रह्यो वार्यो रे ॥ सु० ॥ २३ ॥ हा हा महोटु पाप ए, मुऊ पापीने आवी लाग्यु रे ॥ एह हवे केम बूटशु, क्रोधें मुऊ मन थयु कागु रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ एम मन शोक करे घणो, तस पूठल सेना आवी रे ॥ हर्षित थइ पति देखीने, सवि वात कही समजावी रे ॥ सु० ॥ २५ ॥ स्वस्थ थइ नरवर चल्यो, पंखीशव साथे लेई रे ॥ पुर उद्याने चंदनें, तस तनसंस्कार करेई रे ॥ सु० ॥ २६ ॥ देइ जलांजलि आवियो, नृप मदिर अति दिलगीरो रे ॥ नृप कहे विसरशे नहिं, ए नि कारण मुऊ वीरो रे ॥ सु० ॥ २७ ॥ प्राण

तव, न थयुं नृपनुं काज ॥ १ ॥ निजमंदिर नणी चालीयो, राज ॥ कर जोडी आगल रह्यो, तव वोले नरराज ॥ २ ॥ माहरु, होशे तुजथी काम ॥ ते कहे हु सेवक किस्यो, जो न तुज स्वामि ॥ ३ ॥ लेइ आव्य कतावलो, देवराजनु शीश ॥ हुकम वी शिर चल्यो, दीये नृपति आशीष ॥ ४ ॥ कालविलंब करी पछे, व्यो नरपति पास ॥ कर जोडी ऊनो रही, एम करे अरदास ॥ ५ ॥ बधव जागे अछे, त्रसे समरथ धीर ॥ केम हणाये माहरो, देवराज वीर ॥ ६ ॥ तिणे प्रस्तावें कीजशु, ए तुमचो आदेश ॥ पण हमणां ने कहो, कोइ सवध उपदेश ॥ ७ ॥ नृपति कहे कोइक तुमें, करो वात ॥ कीर्त्तिराज कहे सानलो, स्वामिन् एक अवदात ॥ ८ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ काया कामिनी वीनवे ॥ ए देशी॥ कीर्तिराज कहे सुणो, नरतें मल्ल पुर नाम रे ॥ शत्रुजयानिध राजीयो, राणीनाम प्रियगु अनिराम रे ॥१॥ सुगुण सनेहा एक वातडी॥ ए आंकणी ॥ अवधारो अतर्यामी रे ॥ साव करीने जाणजो, मोरा साहिव कहु शिर नामी रे ॥ सु० ॥ २ ॥ एक दि न तें नृपनी सना, देशातरथी नर आव्यो रे ॥ अश्वरयण आगल धर्यो, देखी रायतणे मन नाव्यो रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ चिंते नृप सोनागियो, ए वारु तुरंगम दीसे रे ॥ रूप जिसी गति जो हुवे, तो महारु मनडुं हीसे रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ यत ॥ जवोहि सप्ते परम विनूषण, त्रपागनाया कृशत्व तपस्विन ॥ द्विजस्य विद्यैव मुनेरपि क्षमा, पराक्रम शस्त्रबलोपजीवि नाम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ राय तुरंगम सज करी, पलाण उपर मकावी रे ॥ गति विज्ञाननें जोयवा, गयो बाहिर ते दोडावी रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सैन्य सहू पूठल रह्यु, नृप अदृश्य थयो क्षणमांय रे ॥ सामत चितातुर थया, कहे ते नर आवी त्याय रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ वक्रशिक्षित ए अश्व छे, मुजनें कहेवुं वीसरीयु रे ॥ नदय जलाविक लेइ करी, नृपपूठें सैन्य नीसरीयु रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ वेग जोइने वालवा, वलगा खेंची नरनाथें रे ॥ तव पवन परें दोडीयो, राख्यो न रहे जोर साथें रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ उलंघी बहु नूमि का, नृप थाक्यो वलगा मेहेली रे ॥ अश्व ऊनो रह्यो ततक्षणें, थयो तेम स्वनावें वेली रे ॥ सु० ॥ ९ ॥ नृपें पलाण उतारीयुं, हय ओढ जही मुनि

राजन सर्पना खम ठे दोय, जो नवि मानो तो नजरेंजी जोय ॥ हो० ॥ ४ ॥ आणी देखाड्या रे ऋद्दि दोय नाग, रायना मनमां रे ऊपन्यो राग ॥ हो० ॥ राजन विषसक्रम नय जाणी, तन फरस्यु रे मुझ मात ए राणी ॥ हो० ॥ ५ ॥ टलीया अतर भ्रमतमजाला, विकस्यां रे हृदय कमल ततकाला ॥ हो० ॥ वूगे राय विचारे मनशु, एह उत्तम नर राखु यतनशु ॥ हो० ॥ ६ ॥ अहो उपकारी उपर थयो रोपी, मुझ जेवो जग कोइ न दोपी ॥ हो० ॥ अहो एहना वांधव गुणवता, कहेवा कह्या मुझनें दृष्टांता ॥ हो० ॥ ७ ॥ एह न मार्यो ते थयु घणु सारु, राज देइ व्रत लेइ सधारु ॥ हो० ॥ कहे परिवारनें चार ए वंधु, गुणमणि रयण अगाध ए सिंधु ॥ हो० ॥ ८ ॥ कुलदेवीयें एह अगज दीधा, मुझ अपुत्रियानां वाठित सीधां ॥ हो० ॥ राज्य स्थापी रे देवराज कुमार, सूधो हु लेइश सयमभार ॥ हो० ॥ ए ॥ कहे परिवार पडखो पंच रात, चारित्र दोहिलु वय कोमल जात ॥ हो० ॥ कहे राजा मुझ पूर्वज पहेला, पलित थया विण निसर्या वहेला ॥ हो० ॥ १० ॥ पाम्या हो शिवपद हु मदभागी, कटुकविषय ऊपर रह्यो रागी ॥ हो० ॥ हवे निश्चे मुझ सयम लेवो, राज्य कुवर देवराजनें देवो ॥ हो० ॥ ११ ॥ तद नतर शुभ दिन निरधारी, राज्य ठव्यो देवराज विचारी ॥ हो० ॥ पद युवराज वत्सराजने दीधु, पुण्यें वाठित कारज सीधु ॥ हो० ॥ १२ ॥ एहवे अवसरें नदन वनमां, श्रीदत्त सूरि आव्या वाहाला रे मनमां ॥ हो० ॥ वनपालक जइ राय वधाव्यो, मन मानी ते वधामणी पायो ॥हो०॥१३॥ लेइ परिवारनें वदण चाल्यो, मुनि नमवानी वेला मनमांहे माल्यो ॥हो०॥ धन्य दिवस मुझ आजनी वेला, प्रभु तुम दर्शनथी लहि लीला ॥ हो० ॥ १४ ॥ गुरु वदी वेठो मन खातें, मुनिदेसण निसुणे रे एकांतें ॥ हो० ॥ चोथे हो खमें ढाल चौदमी सारी, रामविजय कहे सुणो नर नारी ॥ ॥ हो० ॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ४१० ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ योग्य जाणी ते पर्षदा, दीये गुरुजी उपदेश ॥ भविक जीव हरखे हिये, भांजे सकल कलेश ॥ १ ॥

पोताना अवगुणी, मुऊ जीवित वहालुं कीधुं रे ॥ ते वहालो नवि मुऊ चित्तहुं चोरी लीधुं रे ॥ सु० ॥ २० ॥ एहवा उपकारी जणी, में थकी चूकाव्यो रे ॥ एम वल वलतां रायनें, मत्रीश्वर मनि ॥ सु० ॥ २ए ॥ शोच किशो गतवस्तुनो, एम अर्थातर प्रकाश्युं रे ॥ त्त विषाद मटे नहि, पंखी गुण मनहु वास्युं रे ॥ सु० ॥ ३० ॥ एम विमास्याथी घणो, ते नृप पछ्यो पस्तावे रे ॥ तेम अवर पण कारजथी सहि डुःख पावे रे ॥ सु० ॥ ३१ ॥ चोथे खमें तेरमी, राम रामविजयें परकाशी रे ॥ सुयश महोदय ते लहे, जग जे करे काम वि मासी रे ॥ सु० ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा ॥३एए॥ श्लोक तथा गाथा ॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ कीर्त्तिराज जव कहि रह्यो, तव प्रजातनां तूर ॥ वाज्यां अति आनं द जर, प्रह् ऊगमते सूर ॥ १ ॥ वंदीजन जय जय कहे, मंगल पाव जणंत ॥ चिरं जीव तुं साहिबा, महोटा महिपति संत ॥ २ ॥ कीर्त्तिराज मंदिर गयो, मन चिंते माहाराज ॥ एकचित्त चारे सही, चिंतित न कर्युं राज ॥ ३ ॥ जल लेइ दासी तदा, आवी दातण काज ॥ पावन करि शुजवेष धरि, वेगो आवी समाज ॥ ४ ॥ मो आगल आवी कहे, कर जो डी देवराज ॥ हुकम होय तो हुं कहुं, वात अपूरव आज ॥ ५ ॥ रीष जयो राजा तदा, कीधी सुखनी शान ॥ नृप कोप्यो दीसे अठे, समज्यां सहु अनुमान ॥ ६ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ लुंगाकी लकरी हो रसीया गांठ गठीली ॥ ए देशी ॥ हो रहीयाला राजन रीष न कीजें ॥ रीष न कीजें लालन रीऊ धरीजें ॥ हो रही० ॥ ए आंकणी ॥ गुण गेहि अवगुण नवि लीजें, वात सुणीने शाबाशी हो दीजें ॥ हो० ॥ १ ॥ बांहे ग्रह्यानी प्रजुजी लाज धरीजें, अवगुण होय तो एकांत कहीजें ॥ हो० ॥ साहिबकुं रे हम दास न ढीजें, सेवा हो करतां दिलमां कांइ न लींजे ॥ हो० ॥ २ ॥ नेह न तोडो साहिब वात न ताजी, मो पर दीसे इतनी क्युं इतराजी ॥ हो० ॥ गुनह न कोइ कीयो में तुमचो, चारों बांधवमांहे दोष न अमचो ॥ हो० ॥ ३ ॥ वात कही रे सवि मांमी मफाणें, वात पिशाचनी निसुणी राणे ॥ हो० ॥

नमां, करवा तुऊने पीर रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ६ ॥ मारु ए पूरवकंतने, परहरी पापीयें एणें रे ॥ सू० ॥ वैर ने ऋण जूनां नो हे, मत बाधो ए ते ण रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ७ ॥ एहवे तुऊ कुलदेवीयें, करीय पिशाचनु रूप रे ॥ सू० ॥ तुऊ कल्याणने कारणें, जणाव्यु ए स्वरूप रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ८ ॥ वात सुणी देवराजजी, टाल्यो तुऊ अपाय रे ॥ सू० ॥ नाठी हो देवी तेजथी, सबलो पुण्य सखाय रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ए ॥ वात सुणी नर राजीयो, कहे मुनिनें कर जोडि रे ॥ सू० ॥ कष्ट गयु मुऊ नाग्यथी, हवे संयमनो कोड रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १० ॥ कहे मुनि देवाणुप्पिया, रूण लाखेणो जाय रे ॥ सू० ॥ गयो पाठो आवे नहि, धर्में ढील न खटाय रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ११ ॥ यत ॥ अऊ कल्ल पर परारि, पुरिसा चितीय अठ संपत्तिं ॥ अंजलिगय व तोय, गलंतमाउ न पिडति ॥ १ ॥ मासुअ अह ज० ॥ २ ॥ लोच कीधो वेहु नेदथी, ग्रहे संयम व्रतनार रे ॥ सू० ॥ धन्य धन्य सहु मुख वदरे, ए महोटो अणगार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥१२॥ गुरुशिक्षा दिये तेहने, संघ चतुर्विध साख रे ॥ सू० ॥ व्रत लीधां विस्तार जो, अनुनव रस मन राख रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १३ ॥ नावि कथानक तेहने, नांखे गुरु हितकार रे ॥ सू० ॥ मगधें राजगृही वसे, शेठ धनाव ह सार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १४ ॥ धारिणी तस घरणी तणा, कुंवर चार सुजाण रे ॥ सू० ॥ धनपाल धनदेव धनपति, धनरक्षित तेम जाण रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १५ ॥ ते चिहुने परणावीया, चारे वहू सुविचार रे ॥ सू० ॥ शेठ विचारे चित्तमा, कुण ग्रहेशे गृहनार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १६ ॥ तास परीक्षा कारणें, स्वजन जमाडी सच रे ॥ सू० ॥ सहु साखें चिहुनें दीया, शालि तणा कण पंच रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १७ ॥ मागु तेवारें आप जो, वहीयें विचार्यु ताम रे ॥ सू० ॥ ससरोजी घेला थया, छुं राख्यानुं ए काम रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १८ ॥ नगाली नाखी दिया, बीजीयें खाधा तेह रे ॥ सू० ॥ त्रीजीयें यत्ने गोपव्या, चोथीयें वधवगेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १ए ॥ वाव्याथी वाध्या घणा, पंचम वर्षे शेठ रे ॥ सू० ॥ पुन रपि ते कण मागीया, विलखी वहूअर जेठ रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २० ॥ ना रव्याथी नारवण तणु, काम नलाव्यु तास रे ॥ सू० ॥ खाधा तिण रांधण थइ, काम करे उल्लास रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २१ ॥ यत्ने हो राख्या तेहने, सोंप्यो

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ रंग ठे जी रंग ठे जी रंग ठे जी राज ॥ ए देशी ॥ रलो रली रंगरली रे, धर्मध्यानमांहे रग रली रग रली रे ॥ ए आंकणी ॥ ए नर नव तुमें पायो, हास्यो किहां लहेशो वली रे ॥ लहेशो वली रे ॥ १ ॥ पुज्जलनाव विनाव ए टालो, साधो ए सहज दशा नली रे ॥ ॥ र० ॥ २ ॥ क्रोडों हो वासित मनह्व रे वाली, करो किरिया गुणकी मली रे ॥ गु० ॥ र० ॥ ३ ॥ एक दिवस सयम गुण साधे, अशुन कर्म जाये टली रे ॥ जा० ॥ र० ॥ ४ ॥ ते परिणाम अशुद्धने त्यागें, थाउ अचमा ल महाबली रे ॥ म० ॥ र० ॥ ५ ॥ साधनयोगें ए साध्यनें लहेवा, पुण्ययोगें पाम्यो रली रे ॥ पा० ॥ र० ॥ ६ ॥ थाउ साधक हवे बाधक मूकी, पांच प्रमाद ए निर्दली रें ॥ अब नि० ॥ र० ॥ ७ ॥ कुमति कुना री सग निवारी, सुमतिवधू वरो निर्मली रे ॥ व० ॥ र० ॥ ८ ॥ होबो षटकायना पीयर सूधा, काइ नव खोवो ठो अली रे ॥ खो० ॥ र० ॥ए॥ श्रीदत्त मुनि वाणी सुणी रीज्यो, मुनिपद कमल नमे लली रे ॥ न० ॥ र० ॥ १० ॥ कहे नृप दीक्षा दीयो अब मुजने, योगदशा सूधी कली रे ॥ सू० ॥ र० ॥ ११ ॥ रामविजय कहे धन्य ते मानव, मोह न जाये जेहवे ठली रे ॥ जे० ॥ र० ॥ १२ ॥ दोहो ॥ कर जोडी मुनिने कहे, शत्रु नूपाल ॥ न थयु वचन पिशाचनुं, कारण कोण कृपाल ॥ १ ॥ ढाल ॥ सालुडामा मोतीडो बन रह्यीयो ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर नृप रे ॥ सूरिजन ॥ वेर न कीजें कोइशुं ॥ वेश्यने वशें छपनी, रूपवती कुमाल रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १ ॥ गोरी तुज घरणी हुइ, यौवन रूप रे ॥ सू० ॥ तुज मन मानेती घणु, सहुमांहे शिरदार रे ॥ सु० ॥ वेखाई करे, पण ताहरो बहु प्यार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २ ॥ हांरे कोइ कर्मना दोषथी, थइ दोनागण तेह रे ॥ सू० ॥ दीठी हो न गमे तुज मूक्यो तेहशुं नेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३ ॥ मनमाहे चिंते मानिनी, मूकी नरतार रे ॥ सू० ॥ अवर सहूने आदरे, धिक् माहरो अवता ॥ सू० ॥ वै० ॥ ४ ॥ मन वैराग्यें वालीयुं, जइ निजबापने गेह रे तप अज्ञानपणे करी, मरी थइ व्यंतरी तेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ नव सजारी आपणो, सकर्मी सर्प शरीर रे ॥ सू० ॥ पेठी हो तहारा

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ रंग ठे जी रंग ठे जी रंग ठे जी राज ॥ ए देशी ॥

रली रंगरली रे, धर्मध्यानमांहे रग रली रग रली रे ॥ ए आंकणी ॥ ए नर जव तुमें पायो, हाख्यो किहा जदेशो वली रे ॥ जदेशो वली रे ॥ १ ॥ पुज्जलजाव विजाव ए टालो, साधो ए सहज दशा जली रे ॥ ज० ॥ र० ॥ २ ॥ क्रोधें हो वासित मनडुं रे वाली, करो किरिया गुणजली रे ॥ गु० ॥ र० ॥ ३ ॥ एक दिवस सयम गुण साधे, अशुन कर्म जावे टली रे ॥ जा० ॥ र० ॥ ४ ॥ ते परिणाम अशुद्धने त्यागें, थाउं उज्ज्वल महावली रे ॥ म० ॥ र० ॥ ५ ॥ साधनयोगें ए साध्यनें लहेवा, पुण्ययोगें पाम्यो रली रे ॥ पा० ॥ र० ॥ ६ ॥ थाउं साधक हवे बाधक मूकी, पांच प्रमाद ए निर्दली रें ॥ श्रव नि० ॥ र० ॥ ७ ॥ कुमति कुनारी सग निवारी, सुमतिवधू वरो निर्मली रे ॥ व० ॥ र० ॥ ८ ॥ होवो षटकायना पीयर सूधा, काइ जव खोवो ठो अली रे ॥ खो० ॥ र० ॥ ए ॥ श्रीदत्त मुनि वाणी सुणी रीज्यो, मुनिपद कमल नमे लली रे ॥ न० ॥ र० ॥ १० ॥ कहे नृप दीक्षा दीयो अव मुजने, योगदशा सूधी कली रे ॥ सू० ॥ र० ॥ ११ ॥ रामविजय कहे धन्य ते मानव, मोह न जाये जेहने छली रे ॥ जे० ॥ र० ॥ १२ ॥ दोहो ॥ कर जोडी मुनिने कहे, जित शत्रु नूपाल ॥ न थयु वचन पिशाचनु, कारण कोण कृपाल ॥ १ ॥ ॥ ढाल ॥ सालुडामा मोतीडो बन रहीयो ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर सुण नृप रे ॥ सूरिजन ॥ वैर न कीजें कोइशुं ॥ वैश्यने वशें उपनी, रूपवती सुकुमाल रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ १ ॥ गोरी तुज घरणी हुइ, यौवन रूप रसाल रे ॥ सू० ॥ तुज मन मानेती घणु, सहुमांहे शिरदार रे ॥ सु० ॥ अवर अवेरवाई करे, पण ताहरो बहु प्यार रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २ ॥ हारे कोइक कर्मना दोषथी, थइ दोजागण तेह रे ॥ सू० ॥ दीठी हो न गमे तुजने, मूक्यो तेहशुं नेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३ ॥ मनमांहे चिंते मानिनी, मुज मूकी जरतार रे ॥ सू० ॥ अवर सहूनें आदरे, धिक् माहरो अवतार रे ॥ ॥ सू० ॥ वै० ॥ ४ ॥ मन वैराग्यें वालीयुं, जइ निजबापने गेह रे ॥ सू० तप अज्ञानपणे करी, मरी थइ व्यतरी तेह रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ५ ॥ जव ससारी आपणो, सक्रमी सर्प शरीर रे ॥ सू० ॥ पेठी हो तहारा अ

नमा, करवा तुऊने पीर रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ६ ॥ मारुं ए पूरवकंतने, परहरी पापीयें एणें रे ॥ सू० ॥ वेर ने रूण जूना नो हे, मत वांधो ए ते ण रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ७ ॥ एहवे तुऊ कुलदेवीयें, करीय पिशाचनु रूप रे ॥ सू० ॥ तुऊ कल्याणने कारणें, जणाव्यु ए स्वरूप रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ८ ॥ वात सुणी देवराजजी, टाल्यो तुऊ अपाय रे ॥ सू० ॥ नाठी हो देवी तेजथी, सबलो पुण्य सखाय रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ए ॥ वात सुणी नर राजीयो, कहे मुनिनें कर जोडि रे ॥ सू० ॥ कष्ट गयु मुऊ नाग्यथी, हवे सयमनो कोड रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १० ॥ कहे मुनि देवाणुप्पिया, रूण लाखेणो जाय रे ॥ सू० ॥ गयो पाठो आवे नहि, धर्में ढील न खटाय रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ११ ॥ यत ॥ अऊ कल्ल परं परारि, पुरिसा चितीय अछ सपत्तिं ॥ अजलिगय व तोय, गलतमाउ न पिछति ॥ १ ॥ मासुअ अह ज० ॥ २ ॥ लोच कीधो वेहु नेदथी, ग्रहे सयम व्रतनार रे ॥ सू० ॥ धन्य धन्य सहु मुख वचरे, ए महोटो अणगार रे ॥ सू० ॥ वे० ॥१२॥ गुरुशिक्षा दिये तेहने, सघ चतुर्विध साख रे ॥ सू० ॥ व्रत लीधां विस्तार जो, अनुनव रस मन राख रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १३ ॥ नावि कथानक तेहने, नाखे गुरु हितकार रे ॥ सू० ॥ मगधें राजगृही वसे, शेठ धनाव ह सार रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १४ ॥ धारिणी तस घरणी तणा, कुवर चार सुजाण रे ॥ सू० ॥ धनपाल धनदेव धनपति, धनरक्षित तेम जाण रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १५ ॥ ते चिहुने परणाविया, चारे वहू सुविचार रे ॥ सू० ॥ शेठ विचारे चित्तमा, कुण ग्रहेशे गृहनार रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १६ ॥ तास परीक्षा कारणें, स्वजन जमाडी सच रे ॥ सू० ॥ सहु साखे चिहुनें दीया, शालि तणा कण पंच रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १७ ॥ मागु तेवारें आप जो, वडीयें विचार्यु ताम रे ॥ सू० ॥ ससरोजी घेला थया, छु राख्यानुं ए काम रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १८ ॥ उठाली नाखी दिया, वीजीयें खाधा तेह रे ॥ सू० ॥ त्रीजीयें यत्ने गोपव्या, चोथीयें वधवगेह रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ १ए ॥ वाव्याथी वाव्या घणा, पंचम वर्षें शेठ रे ॥ सू० ॥ पुनरपि ते कण मागीया, विलखी वहूअर जेठ रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ २० ॥ नाख्याथी नाखण तणु, काम नलाव्यु तास रे ॥ सू० ॥ खाधा तिण रांधण थइ, काम करे उल्लास रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ २१ ॥ यत्नें हो राख्या तेहने, सोंप्यो

हो सघलो माल रे ॥सू०॥ वृद्धि करी तेणे सहु शिरें, पद्म बोधी रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २२ ॥ उज्झिया जोगिया रक्षिया, बोधी रोहिणी रे ॥ सू० ॥ एह उपनय मुनि ऊपरें, गुरुजीयें दीधो ताम रे ॥ सू० ॥ २३ ॥ शेठ सुगुरु दीक्षित वहू, कण पचक व्रत जाण रे ॥ सू० ॥ संघ न मिलावडो, नाख्या ते दुखखाण रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २४ ॥ केइ आजीविका, व्रत उखें अविनीत रे ॥ सू० ॥ केइ व्रत पाले ऊजलां, प्रति बोधी न शकत रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २५ ॥ बूज्या बहुने बूजवे, सम मतिमत रे ॥ सू० ॥ तेह परें विस्तारजो, व्रत गिरुआ गुणवत रे ॥सू०॥ वै० ॥२६॥ श्रीजिन वीरतणे समे, होशे एह सबध रे ॥सू०॥ भव ज्ञानी परकाशीयो, सुणी थया सहु दृढ सध रे ॥ सू० ॥ वै० ॥२७॥ दीक्षा लेइ देवराजनी, मुनि विचरे उजमाल रे ॥ सू० ॥ सयम साधि अति जलो, कर्म कियां विसराल रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २८ ॥ अनुक्रमें केवल पामीने, नृप साध्यु अरिहत रे॥सू०॥ सिद्ध थया जिहां सहजना, शाश्वत सुख अनत रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ २९ ॥ श्री क्षेमकर जिनवरें, जाख्यो ए अवदात रे ॥ सू० ॥ परखी लीजें हो प्राणीया, धर्मरयण एकात रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३० ॥ प्रथम अहिंसा तिम मृषा, स्तेय विषयनो त्याग रे ॥सू०॥ परि ग्रह विरमण जाणीने, जे करे ते माहाजाग रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३१ ॥ जिनवाणी निसुणी घणा, प्रतिबूज्या जविवृद रे ॥ सू० ॥ सयम देशविर ति धरे, जइक गुण आनद रे ॥ सू० ॥ वै०॥ ३२ ॥ वज्रायुध जिन वां दीने, धर्म तणो लेइ लाज रे ॥ सू० ॥ निज नयरीयें आविया, पाळे रा ज्य अदज रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३३ ॥ चोथे खर्मे पन्नरमी, ढाल कही जि नवाणी रे ॥ सू० ॥ रामविजय कहे सांजली, करो आतमहित जाणी रे ॥ सू० ॥ वै० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४६८ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सघ चतुर्विध स्थापियो, बहु साधु परिवार ॥ क्षेमकर अरिहंतजी, पुहवी करे विहार ॥ १ ॥ हवे वज्रायुध राजियो, न्यायरीतें चालत ॥ वैरी वश कीधा सवे, गुणमणि रोहण सत ॥ २ ॥ अन्यदिन आयुधशा लामा, चक्र ऊपन्यु सार॥अठाई उत्सव करी,साध्या षट् खंम सार ॥३॥ विजय जलु मगलावती, वरती सघले आण ॥ लाख चोराशी गज तुरी

लख चोराशी निशाण ॥ ४ ॥ चोसठ सहस अंतेउरी, रूपें रंन समान ॥ जनपद सहस बत्रीश पति, बत्रीश सहस राजान ॥ ५ ॥ श्री वज्रायुध चक्रधर, बेठा सनामझार ॥ तिण अवसर जे नीपन्युं, ते निसुणो अधिकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ वृंदावनमां रे नाथ पधारीया जी ॥ ए देशी ॥ इण अवसर रे तिहां एक आवीयो जी, खेचर धूजते अंग ॥ सुण मंगलावती विजयना साहिबा जी, शरण ग्रह्यु तुऊ चंग ॥ १ ॥ प्रभुजी मुऊ अनाथने उद्धरो जी, कहे नभचर कर जोडि ॥ मरण समो भय जगमां को नहिं जी, हवे मुऊ बंधन छोड ॥ प्र० ॥ २ ॥ एहवे आवी रे पूठें खेचरी जी, खड्ग ग्रही करमांहे ॥ वली तस पूठें विद्याधर परवडो जी, आव्यो गदा करें साहि ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कहे विद्याधर चक्रायुध सुणो जी, ए पापीनी वात ॥ सुकच्छ विजयमा वैताढ्यें वसे जी, शुक्ला पुरी छुन ख्यात ॥ प्र० ॥ ॥ ४ ॥ दत्त नरेश्वर विद्याधर तिहां जी, तेहनो हुं सुत वायुवेग ॥ मुऊ सुकांता कूखनी ऊपनी जी, शांतिमती गुणदेग ॥ प्र० ॥ ५ ॥ एक दिवस में विद्या दिधली जी, प्रज्ञप्ति इण नाम ॥ गइ मणिसागर पर्वत साधवा जी, साधे करि मन ठाम ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ विद्यासाधन करता आवीयो जी, ए विद्याधर ताम ॥ रूपें मोह्यो पुत्री मुऊ हरी जी, जो जो दुष्टनां काम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ पुत्रीभक्तियें रीजी देवता जी, तुष्ट थइ तेणि वार ॥ नाठो रे तिहांथी ए कतावलो जी, आव्यो इहां निर्धार ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिहां नवि दीठी में पुत्री तदा जी, केडें धायो हु आज ॥ राजन् मूको अपराधी भणी जी, नहिं मूकु महाराज ॥ प्र० ॥ ९ ॥ अभिलाषी पुत्रीशिलभंगनो जी, करवो एहनो में अंत ॥ अवधि निहाले रे वज्रायुध विभु जी, पूरवभव विरतंत ॥ प्र० ॥ ॥ १० ॥ कहे प्रतिबोधने कारण तुमें सुणो जी, तुऊ पुत्री हरी जेह ॥ पूरवभवनो नेह न थ्यो इहां जी, सांभलो सहुजन एह ॥ प्र० ॥ ११ ॥ निज प्रभु ज्ञानी जाणी हरखीया जी, थया सुणवा सावधान ॥ देइ उपयोगने वज्रायुध कहे जी, सुणो तुमें मांभीने कान ॥ प्र० ॥ १२॥ चोथे खंडें रे ढाल थइ

हो सघलो माल रे ॥सू०॥ वृद्धि करी तेणें सहु शिरें, पइ चोथी रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ २२ ॥ उज्ञिया जोगिया रक्तिया, चोथी रोहिणी रे ॥ सू० ॥ एह उपनय मुनि ऊपरें, गुरुजीयें दीधो ताम रे ॥ सू० ॥ २३ ॥ शेठ सुगुरु दीक्षित वहू, कण पंचक व्रत जाण रे ॥ सू० ॥ न मिलावडो, नाख्या ते डु खखाण रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ २४ ॥ केइ आजीविका, व्रत उलें अविनीत रे ॥ सू० ॥ केइ व्रत पाले ऊजलां, बोधी न शकत रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ २५ ॥ वूज्या वहुने बूजवे, रोहिणी सम मतिमत रे ॥ सू० ॥ तेह परें विस्तारजो, व्रत गिरुआ गुणवत रे ॥सू०॥ वे० ॥२६॥ श्रीजिन वीरतणे समे, होशे एह सवध रे ॥सू०॥ नव ज्ञानी परकाशीयो, सुणी थया सहु दृढ सध रे ॥ सू० ॥ वे० ॥२७॥ दीक्षा लेइ देवराजनी, मुनि विचरे उजमाल रे ॥ सू० ॥ सयम साधि अति नलो, कर्म किया विसराल रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ २८ ॥ अनुक्रमें केवल पामीने, नृप साध्यु अरिहंत रे॥सू०॥ सिद्ध थया जिहा सहजनां, शाश्वत सुख अनत रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ २९ ॥ श्री क्षेमकर जिनवरें, नाख्यो ए अवदात रे ॥ सू० ॥ परखी लीजें हो प्राणीया, धर्मरयण एकात रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ३० ॥ प्रथम अहिंसा तिम मृषा, स्तेय विषयनो त्याग रें ॥सू०॥ परिग्रह विरमण जाणीने, जे करे ते महानाग रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ३१ ॥ जिनवाणी निसुणी घणा, प्रतिबूज्यां नविवृंद रे ॥ सू० ॥ सयम देशविरति धरे, नइक गुण आनद रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ३२ ॥ वज्रायुध जिन वांदीने, धर्म तणो लेइ लान्न रे ॥ सू० ॥ निज नयरीयें आविया, पाले राज्य अदंन रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ३३ ॥ चोथे खमें पन्नरमी, ढाल कही जिनवाणी रे ॥ सू० ॥ रामविजय कहे सांजली, करो आतमहित जाणी रे ॥ सू० ॥ वे० ॥ ३४ ॥ सर्व गाथा ॥ ४९८ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥११॥

॥ दोहा ॥

॥ सघ चतुर्विध स्थापियो, बहु साधु परिवार ॥ क्षेमकर अरिहंतजी, पुहवी करे विहार ॥ १ ॥ हवे वज्रायुध राजियो, न्यायरीतें चालत ॥ वैरी वश कीधा सवे, गुणमणि रोहण सत ॥ २ ॥ अन्यदिन आयुधशालामां, चक्र ऊपन्यु सार॥अठाही उत्सव करी,साध्या षट् खंम सार ॥३॥ विजय नलु मगलावती, वरती सघले आण ॥ लाख चोराशी गज तुरी

लख चोराशी निशाण ॥ ४ ॥ चोसठ सहस अतेउरी, रूपें रंज समान ॥ जनपद सहस बत्रीश पति, बत्रीश सहस राजान ॥ ५ ॥ श्री वज्रायुध चक्रधर, वेठा सजामजार ॥ तिण अवसर जे नीपन्युं, ते निसुणो अधिकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ वृंदावनमां रे नाथ पधारीया जी ॥ ए देशी ॥ इण अवसर रे तिहां एक आवीयो जी, खेचर धूजते अंग ॥ सुण मंगलावती विजयना साहिबा जी, शरण ग्रह्यु तुज चंग ॥ १ ॥ प्रभुजी मुज अनाथने उद्धरो जी, कहे नजचर कर जोडि ॥ मरण समो नय जगमा को नहिं जी, हवे मुज वधन छोड ॥ प्र० ॥ २ ॥ एहवे आवी रे पूठें खेचरी जी, खड्ग ग्रही करमाहे ॥ वली तस पूठें विद्याधर परवडो जी, आव्यो गदा करें साहि ॥ प्र० ॥ ३ ॥ कहे विद्याधर चक्रायुध सुणो जी, ए पापीनी वात ॥ सुकच्छ विजयमां वैताढ्ये वसे जी, शुक्ला पुरी शुज ख्यात ॥ प्र० ॥ ॥ ४ ॥ दत्त नरेश्वर विद्याधर तिहां जी, तेहनो हुं सुत वायुवेग ॥ मुज सुकांता कूखनी जपनी जी, शातिमती गुणदेग ॥ प्र० ॥ ५ ॥ एक दिवस में विद्या विधली जी, प्रज्ञप्ति इण नाम ॥ गइ मणिसागर पर्वत साधवा जी, साधे करि मन ठाम ॥ प्र० ॥ ॥ ६ ॥ विद्यासाधन करता आवीयो जी, ए विद्याधर ताम ॥ रूपें मोह्यो पुत्री मुज हरी जी, जो जो डुष्टनां काम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ पुत्रीनक्तियें रीजी देवता जी, तुष्ट थइ तेणि वार ॥ नाठो रे तिहांथी ए जतावलो जी, आव्यो इहां निर्धार ॥ प्र० ॥ ८ ॥ तिहां नवि दीठी में पुत्री तदा जी, केडें धायो हुं आज ॥ राजन् मूको अपराधी नणी जी, नहिं मूकुं माहाराज ॥ प्र० ॥ ए ॥ अनिलापी पुत्रीशिलनगनो जी, करवो एहनो में अंत ॥ अवधि निहाले रे वज्रायुध विजु जी, पूरवनव विरतंत ॥ प्र० ॥ ॥ १० ॥ कहे प्रतिबो धने कारण तुमें सुणो जी, तुज पुत्री हरी जेह ॥ पूरवनवनो नेह न ज्यो इहां जी, सांजलो सहुजन एह ॥ प्र० ॥ ११ ॥ निज प्रभु ज्ञानी जाणी हरखीया जी, थया सुणवा सावधान ॥ देइ उपयोगने वज्रायुध कहे जी, सुणो तुमें मांमीने कान ॥ प्र० ॥ १२ ॥ चोथे खमें रे ढाल थइ

शोलमी जी, नवि सुणो वात रसाल ॥ रामविजय कहे धन्य जी, वज्रायुध रे नूपाल ॥ प्र० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ॥ ४८३ ॥ ११

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मरु रे सुहावा नयणडे ॥ ए देशी ॥ वात सुणो वेरागनी, सुध नरदेव ॥ वाहाला ॥ पूरवजव सवधथी, होवे राग वेरागनी टेव ॥ १ ॥ वात सुणो वैरागनी ॥ ए आकणी ॥ ऐरवतें जवुद्दीपमां, एक पुर नामें गाम ॥वा०॥ वध्यदत्त राजा जलो, करे धर्म तणां शुज काम ॥वा० ॥वा०॥२॥ राणी सुलक्षणा कूखनो, एक तनय नलिनकेतु सार ॥वा०॥ मात्रने वहालो घणु, नरयौवन कांति अपार ॥वा०॥वा०॥३॥ तेहज नगर मांहे वसे, एक धनमित्र सारथवाह ॥ वा० ॥ श्रीदत्ता नारी जली, सुत जनम्यो उत्साह ॥ वा० ॥वा० ॥ ४ ॥ यौवन वय परणावियो, तेह मनोहर रूप निधान ॥ वा० ॥ कन्या नामें प्रजकरा, सबली अति सुंदर वान ॥ वा० ॥ वा० ॥ ५ ॥ नर यौवन नामिनी थइ, मन्मथ वसवानुं धाम ॥ वा० ॥ प्रीतमसाथें प्रेमनी, करे क्रीडा अति अजिराम ॥ वा० ॥ वा० ॥ ६ ॥ एक दिन मास वसंतमां, लेइ नारी प्रजकरा साथ ॥ वा० ॥ दत्त ते वनमाहे आवीयो, करे क्रीडा जलसघात ॥ वा० ॥ वा० ॥ ७ ॥ देवकुंवर देवांगना, मानु उतरियां आकाश ॥ वा० ॥ दंपती दोय विलसें मल्या, विरुडं एह विषयनो पास ॥ वा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ तब राजकुंवर तिहां आवियो, तेह नलिनकेतु तिण ठाय ॥ वा० ॥ देखी प्रजकरा मोहियो, मन अटकि रह्युं तिहां जाय ॥वा०॥वा०॥९॥ मृगनयनी मनमोहनी, मनमांहे वसी ते आय ॥वा०॥ शुद्धि बुद्धि सवि नूली गयो, रह्यो कुमर त्यां लगन लगाय ॥वा०॥वा०॥१०॥ कामातुर सबलो थयो, तेणें लज्जा मूकी दूर ॥वा०॥ विकल करे माणास नणी, ए प्रेमपयोनिधि पूर ॥वा०॥वा० ॥ ११ ॥ यडुक्त ॥ विकलयति कलाकुशलं, हसति शुचि पंमितं विडंबयति ॥ अधरयति धीरपुरुषं, क्षणेन मकरध्वजोदेव ॥ १ ॥ कृश काण ० ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ यौवनगर्वित राजसु, कुल शील न कीध विचार ॥ वा० ॥ तेह प्रजकरा अपहरी, आव्यो गृह राजकुमार ॥ वा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ पियु तस टलवलतो रह्यो, अहो अहो जुउं जोरनी वात ॥वा०॥ भींगो परथम जोगवे, दंड खाये वेइ लात ॥वा०॥वा०॥१३॥ जुलम इस्यो जाणी करी,

बहु लोक थया दिलगीर ॥ वा० ॥ जोर न चाले रायशुं, तस विरहें कत अधीर ॥ वा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ हा हा प्रजंकरा कामिनी, तें अघटतुं कीधु केम ॥ वाहाली ॥ विरहव्यथामां नाखीयो, विसायो नवरस प्रेम ॥ वा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ एक दिन दत्त उद्यानमां, मुनि केवलज्ञान दिणंद ॥ वाहाला ॥ वांदीने निसुणी देशना, मन पाम्यो परमानंद ॥ वा० ॥ वा० ॥ १६ ॥ देशन सुणी घरे आवियो, करि दानादिक शुजधर्म ॥ वा० ॥ आयु दयें चवि ऊपन्यो, कच्छविजयमांहे निज कर्म ॥ वा० ॥ वा० ॥ १७ ॥ महेंड्विक्रम वैताढ्यमां खेचर जूपति बलवंत ॥ वा० ॥ तास तणे कुलें उपन्यो, नामें अजितसेन गुणवंत ॥ वा० ॥ वा० ॥ १८ ॥ कमला हो तस कामिनी थइ, हवे नलिनकेतु कुमार ॥ वा० ॥ पितरनु राज्य लही करी, करे क्रीडा अनेक प्रकार ॥ वा० ॥ वा० ॥ १९ ॥ प्रजंकराशुं रंगशुं, सुख माणे रात ने दीस ॥ वा० ॥ बेठा सातमी जूमिका, एक दिन मन धरिय जगीश ॥ वा० ॥ वा० ॥ २० ॥ पंच वरण बादल थया, सोहे बावती रंग बनाव ॥ वा० ॥ नजरें निहाले दोय जणा, थयो कौतुक ख्याल जमाव ॥ वा० ॥ वा० ॥ २१ ॥ थया विसराल ते ततक्षणे, पवनें दल नाख्यां दूर ॥ वा० ॥ स्वप्नोपम एम देखिने, मनें आव्यु वैराग्यनु पूर ॥ वा० ॥ ॥ वा० ॥ २२ ॥ धन योवन सवि कारिमु, जेवु बादलनु स्वरूप ॥ वा० ॥ अहो जुठ एहने कारणें, श्या श्या करे प्राणी विरूप ॥ वा० ॥ वा० ॥ २३ ॥ पुजल ए सवि कारिमा, सवि अस्थिर ए तन धन जोग ॥ वा० ॥ साचा करीने सद्द्या, हुं जीनो जामिनी जोग ॥ वा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ में मलिन कयो निज आतमा, परतरुणी केरे राग ॥ वा० ॥ क्षणिक ए सुखने कारणें, बहु पाप कयु निर्जाग्य ॥ वा० ॥ वा० ॥ २५ ॥ पतित घणो मुज जेहवो, कुण तारे विणु जिन माग ॥ वा० ॥ हवे संयम तप आदरुं, तरवा जवसिंधु अताग ॥ वा० ॥ वा० ॥ २६ ॥ निज सुत राज्य ठवी करी, क्षेमकर प्रजुने हाथ ॥ वा० ॥ नलिनकेतु व्रत आदस्यो, विचयो महि थइ मुनिनाथ ॥ वा० ॥ वा० ॥ २७ ॥ शम दमवंतो साधुजी, गिरुउ गुणमणि जंमार ॥ वा० ॥ दोष रहित आहार ले, मुनि पाले पंचाचार ॥ वा० ॥ वा० ॥ २८ ॥ नहि ममता निज देहनी, पट्काय तणा गोवाल ॥ वा० ॥ घाती करम क्षय केवली, थइ मुक्तियें गया तत

काल ॥ वा० ॥ वा० ॥ २ए ॥ नलिनीकेतु सिद्धने नमुं, हुं कर जाल ॥ वा० ॥ कर्मनो कचरो काढीयो, धरियें तस ध्यान ॥ वा० ॥ ३० ॥ चोथे हो खमें सत्तरमी, कही रामविजयें एह ढाल बलिहारी गुणवतनी, जे राखे हो मनडुं वालि ॥वा०॥वा०॥३१

॥ दोहा ॥

॥ वली वज्रायुध नृप कहे, प्रजंकरा जे नारि ॥ सुव्रता चांद्रायण तप सार ॥ १ ॥ शुनजावें तप आदरी, मरण लही ते शांतिमती हुइ ताहरी, पुत्री गुण जंमार ॥ २ ॥ पूरवजव जरतार ए, जितसेन नजचार ॥ दीठी विद्या साधती, प्रगट्यो मोह विकार ॥ तिण कारण इण अपहरी, पवनवेग सुण साच ॥ कोप म कर ए रें, साचे मारग राच ॥ ४ ॥ शांतिमती तु पण निसुणी, मूक्य कोप ण काज ॥ वेर नेह जीरण नहि, एम बोले मुनिराज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ म्हाने दीधो आइ जी आदेश के, हु वढी रामतमें रम्यां हो राज ॥ए देशी॥ निसुणी निसुणी वज्रायुधनी वात के, विहु विद्याधर चितवे हो राज॥ धन धन एहनुं ज्ञान अपूरव जाति के, कर जोडीने वीनवे हो राज ॥ १ ॥ मलिया मलिया थें अमने महाराज के, दिन वलीया हवे माहरा हो राज टलिया टलिया जरम गरीबनिवाज के, में सेवक ठां थाहरा हो राज ॥२॥ जांखे जांखे शांतिमती तजि रीष के, पूरव जवना नाथने हो राज ॥ खमजो खमजो गुनहो मुफ जूमीश के, जे मूक्यो तुम साथने हो राज ॥३॥ कीधो कीधो बिहुं राजवीयें मेल के, श्री वज्रायुध आगलें हो राज ॥ सीधां सीधां मन कीधां जेलसेल के, साजन न रहे आमले हो राज ॥ ४ ॥ बोले बोले श्री वज्रायुध राय के, सजा सहु उवेशीने हो राज ॥ एतो एहनो पूरवजव कह्यो जाय के, हवे सुणो आगल बेसिने हो राज ॥ ५ ॥ लेशे लेशे शांतिमती ए दीख के, विहुं विद्याधरशुं मली हो राज ॥ करशे करशे अव गुणने उवेखि के, निर्मल तप रत्नावली हो राज ॥ ६ ॥ पाली पाली सण साथक दोय के, सागर आय ईशानमां हो राज ॥ होशे होशे इंद बहु सुरलोक के, गुण गाशे सुर तानमां हो राज ॥ ७ ॥ तेणें अवसरें वासुपूज्य मुणिंद के, अजितसेन मुनिने वली हो राज ॥ परगट होशे केवल नाण

दिणद के, आवशे इड् ए मन रली हो राज ॥ ८ ॥ करशे करशे उत्सव विविध प्रकार के, ईशानेंड्जी लाल लली हो राज ॥ लेई लेई लाभ अपार के, सुरलोकें जाशे वली हो राज ॥ ए ॥ इड् तिहांथी उत्तम कुल अवतार के, लहीने दीक्षा साधशे हो राज ॥ करतां करतां उग्र विहार के, उत्तम गुणठाणे वाधशे हो राज ॥१०॥ शोधी शोधी कर्मतणो करि अंत के, शिवलीलाने पामशे हो राज ॥ धरशे धरशे एहनु ध्यान सुचित के,ते सवि डुखने वामशे हो राज ॥ ११ ॥ दाख्यु दाख्यु षट खम केरे नाथ के, अवधिज्ञानें वालहे हो राज ॥ सांभली सांभली सयलडो साथ के, हर्षे हियडले बहुलो लहे हो राज ॥ १२ ॥ साचु साचु तुम्ह तणु ज्ञान के,कालत्रय दीपक जिस्यु हो राज ॥ कीजें कीजें तास गुणज्ञान के, अवर कोइनु नहि इस्यु हो राज ॥ १३ ॥ शातिमती ने वायुवेग महीश के, अजितसेन त्रीजो सही हो राज ॥ प्रणमी प्रणमी पाय चक्रीश के, निजस्थानक पहोता वही हो राज ॥ १४ ॥ रूडे रूडे राज्य हवे नरदेव के, पाले नित्य चढती कला हो राज ॥ कुवर रूडा सहस्रायुध करे सेव के, विनय गुणें करी आगला हो राज ॥ १५ ॥ सहस्रायुध घरे नाम जयतीनारी के, तेनी कूखें ऊपन्यो हो राज ॥ रूडो रूडो कनकशक्ति कुमार के, नवयौवन वय नीपन्यो हो राज ॥ १६ ॥ परणावी तस कामिनी दोय रसाल के, कनक वसत जोडियें हो राज ॥ माला सेना पद सुकुमार के, रंभा न आवे होडियें हो राज ॥१७॥ सुख विलसतां रात ने दीस के, काल गयो केतो वही हो राज ॥ ढाल अढारमी चोथे खमें जगीश के, रामविजय भांखी सही हो राज ॥ १८ ॥ सर्वगाथा ॥ ५४१ ॥ २२ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ कनकशक्ति कुमार, स्त्रीसघातें एकदा ॥ पहोतो गहन मझार, क्रीडा करतो अभिनवी ॥ १ ॥ पतनोत्पतन करंत, कोइ नर दीठो कुवरें ॥ तिहां जइने पूछंत, कहो मुझ ए कारण किस्यु ॥ २ ॥ तेह कहे वैताढ्य, वासी हु नभचारीयो ॥ पण सुण गुणरयणाढ्य, विद्यापद एक भूलियो ॥ ३ ॥ कही न शकु आकाश, ऊंचेथी नीचो पडुं ॥ कुमर कहे परकाश, पद पूरु तुझ परवडुं ॥ ४ ॥ पद लब्धि अनुसार, पूछ्युं प्रेम लह्यो घणो ॥ तिण खेचर तिण वार, विद्या दीधि कुमारने ॥ ५ ॥ तेण प्रकाशी रीति, विद्या

काल ॥ वा० ॥ वा० ॥ १९ ॥ नलिनीकेतु सिद्धने नमुं, हुं कर जाल ॥ वा० ॥ कर्मनो कचरो काढीयो, धरियें तस ध्यान ॥ वा० ॥ २० ॥ चोथे हो खर्में सत्तरमी, कही रामविजयें एह ढाल बलिहारी गुणवतनी, जे राखे हो मनडुं वालि ॥ वा० ॥ वा० ॥ २१

॥ दोहा ॥

॥ वली वज्रायुध नृप कहे, प्रभकरा जे नारि ॥ सुव्रता चांड्रायण तप सार ॥ १ ॥ शुभभावें तप आदरी, मरण लही ते नारि, शांतिमती हुइ ताहरी, पुत्री गुण भंमार ॥ २ ॥ पूरवभव भरतार ए, जितसेन नभचार ॥ दीठी विद्या साधती, प्रगट्यो मोह विकार ॥ ३ तिण कारण इण अपहरी, पवनवेग सुण साच ॥ कोप म कर ए रें, साचे मारग राच ॥ ४ ॥ शांतिमती तु पण निसुणी, मूक्य कोप ण काज ॥ वैर नेह जीरण नहि, एम बोले मुनिराज ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ म्हाने दीधो आइ जी आदेश के, हु वही रामतमें रम्यां हो राज ॥ ए देशी ॥ निसुणी निसुणी वज्रायुधनी वात के, बिहु विद्याधर चिंतवे हो राज ॥ धन धन एहनु ज्ञान अपूरव भाति के, कर जोडीने वीनवे हो राज ॥ १ ॥ मलिया मलिया थें अमने महाराज के, दिन वलीया हवे माहरा हो राज टलिया टलिया भरम गरीबनिवाज के, में सेवक छां याहरा हो राज ॥ २ ॥ भांखे भांखे शांतिमती तजि रीष के, पूरव भवना नाथने हो राज ॥ खमजो खमजो गुनहो मुज भूमीश के, जे मूक्यो तुम साथने हो राज ॥ ३ ॥ कीधो कीधो बिहु राजवीयें मेल के, श्री वज्रायुध आगलें हो राज ॥ सीधां सीधां मन कीधां भेलसेल के, साजन न रहे आमले हो राज ॥ ४ ॥ बोले बोले श्री वज्रायुध राय के, सभा सहु उद्देशीने हो राज ॥ एतो एहनो पूर्व भव कह्यो भाय के, हवे सुणो आगल वेसिने हो राज ॥ ५ ॥ लेशे लेशे शांतिमती ए दीख के, बिहु विद्याधरथी भली हो राज ॥ करशे करशे अब गुणने ववेखि के, निर्मल तप रत्नावली हो राज ॥ ६ ॥ पाली पाली अण सण साधक दोय के, सागर आठ ईशानमां हो राज ॥ होशे होशे इड बडो सुरलोक के, गुण गाशे सुर तानमा हो राज ॥ ७ ॥ तेणें अवसरें वासुदेव मुणिंद के, अजितसेन मुनिने वली हो राज ॥ परगट होशे केवल नाण

प्रीतमशुं बहु नेह, सुरूप सोहागणी रे के ॥ सु० ॥ गुण सघला संतान, नहि एक तेहने रे के ॥ न० ॥ एहिज महोटी खोट, चाहे जग जेहने रे के ॥ चा० ॥ २ ॥ पुत्र तणी बहु आश, स्वजन प्रेरे घणु रे के ॥ स्व० ॥ नवी परणे रखे थाय, प्रिया दिल दूमणु रे के ॥ प्रि० ॥ कुलदेवी आगल जइ, वेहु एम उच्चरे रे के ॥ वे० ॥ स्वामिनि सुतनी चिंता, क्षण क्षण सांजरे रे के ॥ क्ष० ॥ ३ ॥ कोण करशे तुज जक्ति, विमासण छे घणी रे के ॥ वि० ॥ जूवो ज्ञान प्रयुंजी, मया करो अम जणी रे के ॥ म० ॥ देवी कहे सुण शेठ, होशे सुत सुंदरु रे के ॥ हो० ॥ पुण्य करतां गुणमणि, रोहण जूधरु रे के ॥ रो० ॥ ४ ॥ हर्षित हूउ शेठ, घणु मनमा रली रे के ॥ घ० ॥ चिंते माहरी आजथी, जाग्यदशा वली रे के ॥जा०॥ पुण्य तणा करे काज, दयागुण आदरे रे के ॥ द० ॥ दीन दुःखी जे लोक, तेहने उद्धरे रे के ॥ ते० ॥ ५ ॥ पुण्यसिरी कुलदेवी, संजारी हेजमा रे के ॥ स० ॥ एक दिन रयणी मकार के, सूती सेजमा रे के ॥ सू० ॥ दीठो शोलकला, संपूरण चंदलो रे के ॥ पू० ॥ विनवियो जइ शेठ के, सुपन लह्यो जलो रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ होशे पुत्ररतन्न, मनोरथ पूरशे रे के ॥ म० ॥ शेठ कहे सुत आव्यो, संकट चूरशे रे के ॥ स० ॥ हर्ष लही मनमाहि, गर्भ प्रतिप्रालना रे के ॥ ग० ॥ कालें जनम्यो पुत्र, करे बहु लालना रे के ॥ क० ॥ ७ ॥ उत्सव कीध अपार, अनेक वधामणा रे के ॥ अ० ॥ नाम धरयु पुण्यसार, मली साजन घणां रे के ॥ म० ॥ फलिया मनोरथ सार के, मात पिता तणा रे के ॥ मा० ॥ देखी सुतमुख चंद के, हर्षनी नहि मणा रे के ॥ ह० ॥ ८ ॥ पंच धाव सुत केडें, वींटाई रहे रे के ॥ वीं० ॥ चिर जीवो सुत एम, सहु मुखथी कहे रे के ॥ स० ॥ पंच वरस थया ताम, निशालें पाठव्यो रे के ॥ नि० ॥ सकल कला अन्यास, करे नित्य अजिनवो रे के ॥ क० ॥ ९ ॥ रत्नसार एक शेठ, तणी तिहां दीकरी रे के ॥ त० ॥ रत्नसुंदरी इण नाम, जणे तिहां गुणजरी रे के ॥ ज० ॥ ते बिहु जोडे होडा, दोहुँ जणे जला रे के ॥ हो० ॥ माहो माहे विवाद, करे ते गुणनिलां रे के ॥ क० ॥ १० ॥ चपलपणाथी जोरें के, बोले आकुली रे के ॥ बो० ॥ पुण्यसार संघातें, जगडे व्याकुली रे के ॥ ज० ॥ शास्त्र तणो रे विवाद, करे अमरष चढी रे के ॥क०॥

साधी कुवरें ॥ वेहु स्त्रीशुं शुभचित्त, मन मानी मोजें फरे ॥ ६ हिमगिरि गाम, गयो कुमर ते अन्यदा ॥ दीठ विपुलमति नाम, याधर वखाना ॥ ७ ॥ तास चरण प्रणमेवि, प्रिया सहित बहु वेसे कर जोडेवि, कनकशक्ति वहु विनयशु ॥ ८ ॥ धर्मतणो उपदेश, वरजी भांखे भलो ॥ दूरें होय किलेश, शिवसुखनो दायक सही ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ रे जीव जगत सुपनो जाण ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवर प्राणी, कारिमो ससार ॥ ए रूप यौवन पूर जलनु, विणसतां वार ॥ मनमांहे आशा वहुत धरतो, फरत देश विदेश ॥ धन काज दिवस धावे, धर्म नहि लवलेश ॥ १ ॥ रे जीव चेत चतुर सुजाण ॥ आंकणी ॥ आण माने मोह केरी, जिण कीयो हेरान ॥ प्रपंच पुत्रल न लहे, ए अनादि पुराण ॥ सयोग एह वियोग सार्थे, नित्य माने भ्रम जाल पडियो प्राणीया, युंही गयो भव खोय ॥ रे जी० ॥ २ ॥ शुद्ध चेतन रूप तेरो, अनतगुण पर्याय ॥ ऋद्धि घटमें प्रगट दीसे, करे सोइ उपाय ॥ निरावरण समाधि भोगी, योगसें चित्त लाय ॥ आनवघन उपगार तेरो, बुद्धि एक सहाय ॥ रे जी० ॥ ३ ॥ करि धर्मवस्तु सभाव जाणी, मोहमिथ्या दूर ॥ ध्येय ध्याता ध्यान एकी,भावथी सुखपूर ॥ नूर प्रगटे विषय विघटे, भेद जाये नासी ॥ यू शुद्धधर्में साध्य साधन, सहज लील विलास ॥ रे जी० ॥ ४ ॥ परभाव पुत्रल कच कुलमां, रूप लक्ष्मी विलास ॥ वर कामिनीके भोग सुदर, बहुरी दासी दास ॥ ठकुराइ चिंतित काम होवे, सबहि माने आण ॥ धर्मसाधन करत ए फल, आनु षंगिक जाण ॥ रे जी० ॥ ५ ॥ ज्यु पुण्यसार कुमार पायो, सर्व चिंतित भोग ॥ वर ऋद्धि लाधी कीर्त्ति वाधी, कामिनी सयोग ॥ कहे कनक शक्ति कुमार मुनिकों, कहो उनकी बात ॥ कहे ज्ञानी सुन हो प्रानी, पुण्य सें सुखशात ॥ रे जी०॥६॥ ढाल ॥ त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणि रे॥ ए देशी॥ गोपालक पुर क्षेत्र,भरतमां हे दीपतु रे के॥ भरतमांहे दीपतुं ॥ सुदर शोभा सार,सवि पुर झीपतु रे के ॥ स० ॥ तिहां धर्मीसिरदार, पुरंदर नामथी रे के ॥ पु० ॥ शेठ वसे गुणवत, प्रसिद्धो नामथी रे के ॥ प्र० ॥ १ ॥ तस घर पुण्यसिरी इण, नामें पद्मिनी रे के ॥ नामें० ॥

थें विवाह, मेलो हमणा जइ रे के ॥ मे० ॥ पबें तुम साथे नोजन, कर शु हुं वही रे के ॥ क० ॥ कहे पुरदर ऊव, जमीजें हा कही रे के ॥ ज० ॥ २१ ॥ चोथे खमें ढाल, कही उंगणीशमी रे के ॥ क० ॥ वालप णानी वात, कही साकर समी रे के ॥ क० ॥ बुध श्रीसुमतिविजय कवि, सेवक विनवे रे के ॥ से० ॥ रामविजय कहे धन्य, विचारी जे लवे रे के ॥ वि० ॥२२॥ सर्वगाथा ॥५७८॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ नोजन करि ऊठया पठी, लइ सायें परिवार ॥ शेठ पुरदर आवीयो, रत्नसार घरबार ॥ १ ॥ आदर मान दियें घणा, मांमे आसन सार ॥ स्वामी पधास्या आगणे, धन्य अमचो अवतार ॥ २ ॥ कहो स्वा मी कारण किश्यु, कहे पुरदर वात ॥ रत्नसुदरी तुम सुता, पुण्यसार अम जात ॥ ३ ॥ जोडी नली जुगती अछे, मेलीजें विवाह ॥ इण का रण आव्या अबु, मनमां धरि उत्साह ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे शेठजी, ए तो महारु काज ॥ तुमें कह्यु करुणा करि, सीधा वांछित राज ॥ ५ ॥ देवी तुम सुतने सुता, रत्नसुदरी सार ॥ पुण्य विना किहांथी मले, पुण्यसार नरतार ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ तात समीपें बेठी कन्या, बोले इण परें चावी ॥ ना ना नहिं परणु हु एहने, वात ए मुज न सुहावी ॥१॥ नाय कहोजी ॥ हा रे तुमें शीदने समजावो, अलगा रहो जी ॥ ए आंकणी ॥ जे जाणो ते अवर कोइने, तातजी मुज परणावो ॥ वरकुवारी रहिश ते वारु, पण पुण्यसार न गावो ॥ नाय० ॥ २ ॥ शेठ पुरदर चिंते मनमां, जुठ बोले शु वाला ॥ मुज सुत आशा करे परणवा, पण खोटा एहना चाला ॥ ना० ॥ ३ ॥ वालपणे ए एहवु बोले, यौवनमद मतवाली ॥ आगल मुज सुतने ए सार्थे, न मले सुखनी ताली ॥ ना० ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे मुग्धा बाला, ए शु बोली जाणे ॥ पीत बाल विटनु जे बोल्युं, ते कुण मनमा आणे ॥ ना० ॥ ५ ॥ एहने हु समजावीश सुधी, तुम सुतने परणेशे ॥ ए कुलवती कन्या महारी, साहामो जबाप न देशे ॥ना०॥६॥ वचन सुणीने पाछो वलीयो, परिजनशु घरे आव्यो ॥ सुत पुण्यसार उत्स

तिल नवि साखे बोल के, बोले चडवडी रे के ॥ बो० ॥ ११ ॥ पुण्यसार, कुमार कहे इस्युं रे के ॥ कु० ॥ रे मुग्धा मुज साथ, करे किस्यु रे के ॥ वि० ॥ यद्यपि तु गुणवत, कलावत पडवडी रे के क० ॥ आखरु परण्या पूठे, पुरुष पग मोजडी रे के ॥ पु० ॥ १२ ॥ पनोता सार, कह्या ससारमा रे के ॥ क० ॥ दासीपरें घरकाज, परिवारमां रे के ॥ क० ॥ त्रटकी बोले बोल, चढावी रीषने रे के कोइक नाग्यविशालने, वरिश हु ईशने रे के ॥ व० ॥ १३ ॥ तुज जेवा कगाल, घणा जगमा फरे रे के ॥ घ० ॥ मुज जेवी गुणवती, किमही म आदरे रे के ॥ कि० ॥ बोल्यो ताम कुमार, वरु जो तुजने रे के ॥ व० ॥ जो करु किंकरी तुज तो, माने मुजने रे के ॥ मा० ॥ १४ ॥ बोली चप की चम्क रे, मूरख शु लवे रे के ॥ मू० ॥ जोरें अनन्यप्रीति, दपती केम सन्नवे रे के ॥ द० ॥ थयो बहु वार विवाद, हैयाना रोपशु रे के ॥ हे० ॥ कुंवर चिते रीष ए, अवसरें पोषशु रे के ॥ अ० ॥ १५ ॥ जो जो बोले बोल, किहांनी किहां थइ रे के ॥ कि० ॥ विद्यावादनी वातें, वात हार्रे गइ रे के ॥ वा० ॥ ते पुण्यसार कुमार, आव्यो निज घर नणी रे के ॥ आ० ॥ मुखपंकज थयुं म्लान, आरति मनमा घणी रे के ॥ आ० ॥ १६ ॥ सूतो त्रूटी खाट, जइ एकण दिशें रे के ॥ ज० ॥ शेठ पुरंदर नोजन, काज आव्या तिस्यें रे के ॥ का० ॥ देखी पुत्रने सूतो, ठेकाणे शून्यमां रे के ॥ ठे० ॥ पूछे कारण कोण, शु चितो मन्नमां रे के ॥ शुं० ॥ १७ ॥ वात कहे वत्स आज, विचार जे ताहरे रे के ॥ वि० ॥ जीवन प्राण आधार, तु एकज माहरे रे के ॥ तु० ॥ पूछयु आग्रह जोरें, तदा कहे तात जी रे के ॥ त० ॥ रत्नसुदरी परणावो, मुज ए वातजी रे के ॥ मु० ॥ १८ ॥ रत्नसार व्यवहारी, नी ए अगजा रे के ॥ नी० ॥ ए परणावे पुत्र, होशे महारी मज्जा रे के ॥ हो० ॥ तात कहे सुण पुत्र, हजी तु बाल छे रे के ॥ ह० ॥ तो हमणां शी वात, नण्यानो काल छे रे के ॥ न० ॥ १९ ॥ यौवन समयें तास, करेशु विवाहलो रे के ॥ क० ॥ परणाव्या नो अम्ह, घणो छे उमाहलो रे के ॥ घ० ॥ परणवा मार्टे आम, थाके कां काहलो रे के ॥ था० ॥ नाग्यवती ते नारी, थइश जस नाहलो रे के थ० ॥ २० ॥ पुण्यसार कहे वात, न मानु ए सही रे के ॥ न० ॥ ते सा

थें विवाह, मेलो हमणां जइ रे के ॥ मे० ॥ पछें तुम साथें जोजन, कर शु हुं वही रे के ॥ क० ॥ कहे पुरंदर ऊठ, जमीजें हा कही रे के ॥ ज० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें ढाल, कही उंगणीशमी रे के ॥ क० ॥ बालप णानी वात, कही साकर समी रे के ॥ क० ॥ बुध श्रीसुमतिविजय कवि, सेवक विनवे रे के ॥ से० ॥ रामविजय कहे धन्य, विचारी जे लवे रे के ॥ वि० ॥२२॥ सर्वगाथा ॥५७८॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ जोजन करि ऊठया पछी, लइ साथें परिवार ॥ शेठ पुरंदर आवीयो, रत्नसार घरबार ॥ १ ॥ आदर मान दियें घणा, मांमे आसन सार ॥ स्वामी पधास्या आंगणे, धन्य अमचो अवतार ॥ २ ॥ कहो स्वा मी कारण किश्युं, कहे पुरंदर वात ॥ रत्नसुंदरी तुम सुता, पुण्यसार अम जात ॥ ३ ॥ जोडी जली सुगती अछे, मेलीजें विवाह ॥ इण का रण आव्या अछुं, मनमां धरि उत्साह ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे शेठजी, ए तो महारु काज ॥ तुमें कह्युं करुणा करि, सीधा वांछित राज ॥ ५ ॥ देवी तुम सुतने सुता, रत्नसुंदरी सार ॥ पुण्य विना किहांथी मले, पुण्यसार जरतार ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ वेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ तात समीपें वेठी कन्या, बोले इण परें चावी ॥ ना ना नहिं परणु हुं एहने, वात ए मुज न सुहावी ॥१॥ नाथ म्होजी ॥ हां रे तुमें शीदने समजावो, अलगा रहो जी ॥ ए आंकणी ॥ जे जाणो ते अवर कोइने, तातजी मुज परणावो ॥ वरकुंवारी रहिश ते वारु, पण पुण्यसार न गावो ॥ नाथ० ॥ २ ॥ शेठ पुरंदर चिंते मनमां, सुउं बोले श्यु बाला ॥ मुज सुत आशा करे परणवा, पण खोटा एहना चाला ॥ ना० ॥ ३ ॥ बालपणे ए एहवु बोले, यौवनमद मतवाली ॥ आगल मुज सुतने ए साथें, न मले सुखनी ताली ॥ ना० ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे मुग्धा बाला, ए शुं भोली जाणे ॥ पीत बाल विटलु जे बोल्युं, ते कुण मनमां आणे ॥ ना० ॥ ५ ॥ एहने हुं समजावीश सूधी, तुम सुतने परणेजे ॥ ए कुलवती कन्या महारी, साहामो जबाप न देशे ॥ना०॥६॥ वचन सुणीने पाछो वलीयो, परिजनश्यु घरे आव्यो ॥ सुत पुण्यसार उत्स

तिल नवि साखे बोल के, बोले चडवडी रे के ॥ बो० ॥ ११ ॥ पुण्यसार, कुमार कहे इस्यु रे के ॥ कु० ॥ रे मुग्धा मुज साथ, करे किस्युं रे के ॥ वि० ॥ यद्यपि तु गुणवत, कलावत पडवडी रे क० ॥ आखर परण्या पूठे, पुरुष पग मोजडी रे के ॥ पु० ॥ १२ ॥ पनोता सार, कह्या ससारमा रे के ॥ क० ॥ दासीपरें घरकाज, परिवारमा रे के ॥ क० ॥ त्रटकी बोले बोल, चढावी रीषने रे के कोइक भाग्यविशालने, वरिश हु ईशने रे के ॥ व० ॥ १३ ॥ तुज कगाल, घणा जगमा फरे रे के ॥ घ० ॥ मुज जेवी गुणवती, किमही न आदरे रे के ॥ कि० ॥ बोल्यो ताम कुमार, वरु जो तुजने रे के ॥ व० ॥ जो करु किंकरी तुज तो, माने मुजने रे के ॥ मा० ॥ १४ ॥ बोली फर की चम्द रे, मूरख शुं लवे रे के ॥ मू० ॥ जोरें अनन्यप्रीति, दंपती प्रेम संभवे रे के ॥ द० ॥ थयो बहु वार विवाद, हैयाना रोपश्यु रे के ॥ है० ॥ कुंवर चिंते रीष ए, अवसरें पोषश्यु रे के ॥ अ० ॥ १५ ॥ जो जो बोले बोल, किहांनी किहा थइ रे के ॥ कि० ॥ विद्यावादनी वातें, वात हार्मे गइ रे के ॥ वा० ॥ ते पुण्यसार कुमार, आव्यो निज घर भणी रे के ॥ आ० ॥ मुखपंकज थयुं म्लान, आरति मनमा घणी रे के ॥ आ० ॥ १६ ॥ सूतो त्रूटी खाट, जइ एकण दिशें रे के ॥ ज० ॥ शेठ पुरंदर भोजन, काल आव्या तिस्यें रे के ॥ का० ॥ देखी पुत्रने सूतो, ठेकाणे शून्यमां रे के ॥ ठे० ॥ पूठे कारण कोण, शु चितो मनमां रे के ॥ शुं० ॥ १७ ॥ वात कहे वत्स आज, विचार जे ताहरे रे के ॥ वि० ॥ जीवन प्राण धार, तु एकज माहरे रे के ॥ तु० ॥ पूछ्यु आग्रह जोरें, तदा कहे तात जी रे के ॥ त० ॥ रत्नसुदरी परणावो, मुज ए वातजी रे के ॥ मु० ॥ १८ ॥ रत्नसार व्यवहारी, नी ए अगजा रे के ॥ नी० ॥ ए परणावे पुत्र, होशे महारी मज्ञा रे के ॥ हो० ॥ तात कहे सुण पुत्र, हजी तु बाल छे रे के ॥ ह० ॥ तो हमणां शी वात, भण्यानो काल छे रे के ॥ भ० ॥ १९ ॥ यौवन समयें तास, करेशुं विवाहलो रे के ॥ क० ॥ परणावा नो अम्ह, घणो छे उमाहलो रे के ॥ घ० ॥ परणवा मार्टे आम, था का काहलो रे के ॥ था० ॥ भाग्यवती ते नारी, पश्श जस नाहलो रे के घ० ॥ २० ॥ पुण्यसार कहे वात, न मानु ए सही रे के ॥ न० ॥ ते ता

थें विवाह, मेलो हमणा जइ रे के ॥ मे० ॥ पछें तुम साथें जोजन, कर शुं हुं वही रे के ॥ क० ॥ कहे पुरंदर ठव, जमीजें हा कही रे के ॥ ज० ॥ २१ ॥ चोथे खंमें ढाल, कही उंगणीशमी रे के ॥ क० ॥ वालप णानी वात, कही साकर समी रे के ॥ क० ॥ बुध श्रीसुमतिविजय कवि, सेवक विनवे रे के ॥ से० ॥ रामविजय कहे धन्य, विचारी जे लवे रे के ॥ वि० ॥२२॥ सर्वगाथा ॥५७८॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥२२॥

॥ दोहा ॥

॥ जोजन करि ऊवधा पठी, लइ सायें परिवार ॥ शेठ पुरंदर आवीयो, रत्नसार घरबार ॥ १ ॥ आदर मान दिये घणा, मांमे आसन सार ॥ स्वामी पधास्या आंगणे, धन्य अमचो अवतार ॥ २ ॥ कहो स्वा मी कारण किश्युं, कहे पुरंदर वात ॥ रत्नसुंदरी तुम सुता, पुण्यसार अम जात ॥ ३ ॥ जोडी जली जुगती अछे, मेलीजें विवाह ॥ इण का रण आव्या अबु, मनमां धरि उत्साह ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे शेठजी, ए तो महारु काज ॥ तुमें कह्युं करुणा करि, सीधां वांछित राज ॥ ५ ॥ देवी तुम सुतने सुता, रत्नसुंदरी सार ॥ पुण्य विना किहांथी मले, पुण्यसार जरतार ॥ ६ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ बेडो नाजी ॥ ए देशी ॥ तात समीपें बेठी कन्या, बोले इण परें चावी ॥ ना ना नहि परणुं हुं एहने, वात ए मुफ न सुहावी ॥१॥ नाथ कहोजी ॥ हा रे तुमें शीदने समजावो, अलगा रहो जी ॥ ए आंकणी ॥ जे जाणो ते अवर कोइने, तातजी मुफ परणावो ॥ वरकुंवारी रहिश ते वारु, पण पुण्यसार न गावो ॥ नाथ० ॥ २ ॥ शेठ पुरंदर चिंते मनमा, जुठ बोले शुं बाला ॥ मुफ सुत आशा करे परणवा, पण खोटा एहना चाला ॥ ना० ॥ ३ ॥ बालपणे ए एहवु बोले, यौवनमद मतवाली ॥ आगल मुफ सुतने ए साथें, न मले सुखनी ताली ॥ ना० ॥ ४ ॥ रत्नसार कहे मुग्धा बाला, ए शुं बोली जाणे ॥ पीत बाल विटलु जे बोल्युं, ते कुण मनमां आणे ॥ ना० ॥ ५ ॥ एहने हुं समजावीश सुधी, तुम सुतने परणेशे ॥ ए कुलवती कन्या महारी, साहामो जवाप न देशे ॥ना०॥६॥ वचन सुणीने पाछो वलीयो, परिजनशुं घरे आव्यो ॥ सुत पुण्यसार वत्स

गें तेडी, भेद सहू समजाव्यो ॥ ना० ॥ ७ ॥ वत्स तुम्हे ए कन्या, बालपणे वाचाली ॥ आगल थापे ए शिर ठाणी, एहवी भाली ॥ ना० ॥ ८ ॥ यडुक्तं ॥ कुदेहा विगतस्नेहां, ताम् ॥ अतिप्रचमां डुस्तुमा, गृहिणीं परिवर्जयेत् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ सार पुनरपि एम बोले, तात कह्यु ए साचु ॥ पण परख्या विण पिताजी,वचन थाय छे काचु ॥ना०॥९॥ बुद्धिमत मनमाहे विचारे,वांक हिं पितानो ॥ अवर उपाय करी परणेशु,एम चिंती रह्यो छानो ॥ ना० १० ॥ एक दिन जनकवयणथी जाणी, सचोवाइ कुलदेवी ॥ कुसुम नैवेद्य करीने, बहु आदरशु सेवी ॥ ना० ॥ ११ ॥ कर जोडी आकल मद मोडी, कलो तन सकोडी ॥ मा हु ते पुण्यसार पनोतो, वर दीयो तें कोडि ॥ ना० ॥१२॥ माटे मुझ तरुणीनु वांछित, जब पूरेशो माता ॥ तब उठीश हु इहांथी अलगो, थाशे मुझ सुखशाता ॥ ना० ॥ १३ ॥ करी प्रतिज्ञा अन्न जल त्यागें, बेठो धरि एकतारी ॥ कहे देवी हलवे तुझ होशे, कारजसिद्धि विचारी ॥ ना० ॥ १४ ॥ चिंता म म कर मनमां कुंवर, कर पारण पुण्यसार ॥ भोजन करि लेइ तात अनुज्ञा, गयो निशा लें तिवार ॥ ना० ॥ १५ ॥ थइ निश्चिंत करे अवशेषित, सकलकला अभ्यास ॥ बालपणु वीत्युं तब यौवन, पाम्यो लील विलास ॥ ना० ॥ १६ ॥ चोथे खंडें बीशमी ढालें, रामविजय कहे वाणी ॥ जे सबध होवे ते न टले,साभलो श्रोता प्राणी ॥ना०॥१७॥सर्वगाथा॥६०१॥श्लोक॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यसार कुवर भलो, सकल कलानो जाण ॥ दैवयोग वांछित हुउं, द्यूतव्यसन सहिनाण ॥ १ ॥ लाग्यो रंग कुसगनो, जिम उज्ज्वल पट नील ॥ वासित आतम इव्यने, विणसतां नहि ढील ॥ २ ॥ डुर्जन सग न कीजियें, जो लहियें लख दीनार ॥ कीर्त्ति जाये कुल तणी, मेलो होय अवतार ॥ ३ ॥ वाख्यु मात पिता तणु, न करे तेह लगार ॥ व्यसन विलुद्धो ते घणु, धिक् धिक कर्मविकार ॥ ४ ॥ लक्ष मूल्यनुं एकदा, नृप आभरण अमूल्य ॥ निजगृहथी लेइ नीसर्यो, पुण्यसार प्रतिकूल ॥ ५ ॥ द्यूतकारनु लाख धन, माथे चढीयु तास ॥ तेमांहे गइ सोंपियुं, आ

नूषण उल्लास ॥ ६ ॥ एम धन विणसाडयु घणु, न गणे कोइनी लाज ॥ द्यूत समु नहि जगतमा, व्यसन कोइ शिरताज ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ मात पिता घणुए कहे रे, पण वार्यो न रहे सोय ॥ धिक् धिक् कर्मने रे ॥ उलज्जा आवे घणा रे, अहोनिश झूरे दोय ॥ धि० ॥१॥ जीवहूती वाहालो घणो रे, पण थयो वैरी समान ॥ धि० ॥ साजन बोलावे नहि रे, न लहे आदर मान ॥ धि० ॥२॥ एकदिवस नृपें मागीयु रे, नूषण शेठनी पास ॥ धि० ॥ जइ जोयु आवासमा रे, न लह्युं चिते विमासि ॥ धि० ॥ ३ ॥ पुण्यसारें ग्रह्यु ए सही रे, नहि बीजो लेवणहार ॥धि०॥ गूढ वली अन्यवस्तुनो रे, एह विनाशणहार ॥धि०॥४॥ ए राखण योगो नहि रे, पुत्ररूपें रिपु एह ॥धि०॥ घरहूती हवे काढवो रे,श्यो एह सार्थे नेह ॥धि०॥५॥ यत ॥ यदर्थं खिद्यते लोकैयत्नश्च क्रियते महान् ॥ तेपि संतापदा एव, इ पुत्रा हा नवत्यहो ॥१॥ पूर्वढाल ॥ हाटे पुरदर आवीयो रे, तिहा आव्यो पुण्यसार ॥धि०॥ पूछी खबर अलकारनी रे, जिम तिम लव्यो तेणी वार ॥ धि० ॥ ६ ॥ कोप्यो शेठ कहे इस्यु रे, जा जा दुष्ट गमार ॥ धि० ॥ ते नूषण लाव्या विना रे, नाविश मुज घर वार ॥ धि० ॥ ७ ॥ वचनें तरज्यो ते घणु रे, निर्दय जाली कर ॥ धि० ॥ वाहालो पण वैरी थयो रे, काढयो ते उल्लर॥ धि० ॥ ८ ॥ तातवचन सुणि नीसर्यो रे, पुरबाहिर तेणि वार ॥ धि० ॥ साज पडी दिन आथ म्यो रे, करे मनमांहे विचार ॥ धि० ॥ ९ ॥ हवे किहा जाउ एकलो रे, न लहु मार्गनी शुद्धि ॥ धि० ॥ अहो कुकर्म में शु कर्यु रे, किहा गइ महारी बुद्धि ॥ धि० ॥ १० ॥ एहवे एक वड देखीयो रे, कोटर बहु विस्तार ॥ धि० ॥ निर्नय जाणी जायगा रे, पेठो तेह मजार ॥ धि० ॥ ११ ॥ शेठ पुरंदर आवियो रे, साज समे घरबार ॥ धि० ॥ नामिनी पूछे कथने रे, किहा पुण्यसार कुमार ॥ धि० ॥ १२ ॥ राजनूषणनी वार ता रे, सवि नाखी आमूल ॥ धि० ॥ में शिक्षाने कारणें रे, काढयो ते प्रतिकूल ॥ धि० ॥ १३ ॥ वात सुणी विलखी थइ रे, आव्यु हृदय नराय ॥ धि० ॥ शु मुख देखाडो मुने रे, सुत काढी सध्याय ॥ धि० ॥ १४ ॥ तन सुकुमार ए वालुडो रे, शी गति होशे तास ॥

धि० ॥ वछभन केम लाजो नहि रे, ते सुतने निष्कासि ॥ धि० ॥ जो तुम्हें काढघो पुत्रने रे, तो तुम्हें केडें जावो ॥ धि० ॥ ते रा रे, मदिरमांहे आवो ॥ धि० ॥ १६ ॥ एम निर्भृछ्यो नारीयें पुत्र सनारी चित्त ॥ धि० ॥ पुरमां जोवा नीसस्यो रे, विरुइ रीति ॥ धि० ॥ १७ ॥ पिउ अगज घर को नहि रे, एकलडी नारि ॥ धि० ॥ मदिर शून्य देखीने रे, चाली आसुनी धार ॥ ॥ १८ ॥ हा घरहूती नाहलो रे, काढयो में रीसाल ॥ धि० ॥ में कोप करी घणो रे, काढघो बाल वियाल ॥ धि० ॥ १९ ॥ एम चिन्त्युं शुं थयु रे, चितातुर चित्तमांहि ॥ धि० ॥ कनी उबर आवीने रे, जोउ आवतो नाह ॥ धि० ॥ २० ॥ चोथे खमें एकवीशमी रे, राम विजय कहि ढाल ॥ धि० ॥ हवे सबध पुण्यसारनो रे, सांजलो नवि उजमाल ॥ धि० ॥२१॥सर्व गाथा ६२९॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ पुण्यसार तिण रातमां, वड उपरें दोय सार ॥ देवी दीठी अति जली, तेज तणो नहिं पार ॥ १ ॥ मांहोमांहे वातो करे, निसुणे मांडी कान ॥ साहसिकमां शिरतिलो, पुण्यसार बलवान ॥ २ ॥ एक कहे बीजीप्रत्यें, सुण बहेनी गुणवत ॥ रातें एह रमवा तणी, वेला छे एकांत ॥ ३ ॥ बीजी बोले शुं हुवे, व्यर्थ जमे नूमाहि ॥ कौतुक देखीजें किहां, तो जश्यें उल्लाहि ॥ ४ ॥ ते बोली सांजल बहेनी, वल्लनि पुर परधान ॥ तिहां निवसे व्यवहारियो, धनप्रवर अनिधान ॥ ५ ॥ धन वती तेहनी जारजा, तस पुत्री छे सात ॥ धर्मसुदरी नयसुदरी, काम सुदरी विख्यात ॥ ६ ॥ मुक्तिसुदरी मनमां वसी, नाग्यसुदरी जाण ॥ सोना ग्यसुदरी सातमी, गुणसुदरी सुणखाण ॥ ७ ॥ कन्या वरने कारणें, धन शेठें बहु मान ॥ लवोदर आराधियो, देई मोदकदान ॥ ८ ॥ प्रत्यक्ष थइ बोल्यो निपुण, आजथी सप्तम दीस ॥ लग्नवेलायें रातमां, धरतो अधिक जगीश ॥ ९ ॥ वेहु स्त्रीपुरें आवशे, शेठ तणो एक नद ॥ ते परणेशे ताहरी, कन्या धरि आनद ॥ १० ॥ आज दिवस सहि सातमो, जइयें जोवा काज ॥ कौतुक होशे अति जलु, बहेनी तिहां कणे आज ॥

११ ॥ ए तरु उपर वेसीने, चालीजें आकाश ॥ जीव्यापें जोयु नलु, पूरीजें मन आश ॥ १२ ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ नोली नावजजी नावज म्हारी नात रधाव्य, सेले मारुजी हो नात मगावीयो जी ॥ ए देशी ॥ सुणि वाणी जी वाणी सुणि ते पुण्य सार, मनडानी मांहे हो अति हर्षित हुउ जी ॥ गुणखाणी जी गुण खाणी ए देवी रे दोय, नाग्यें मली मुजने अचरिज हुउ जी ॥ १ ॥ हवे जोउ जी जोउ रे हवे कौतुक वात, तेह जोउ वल्लनीपुर केहवो जी ॥ जोउ शे ठने जी शेठ किस्यो धनवत, कुमरें विचार कस्यो मन एहवो जी ॥ २ ॥ दोय देवी जी देवीयें कीध हुकार, तेह वडपादप चाल्यो अवरें जी ॥ वड कोटर जी वडकोटर पुण्यसार, रह्यो रे प्रजुजीनु समरण करे जी ॥ ३ ॥ जो इहांथी जी जो इहांथी पहु रे निर्धार, तो रे चेतन ताहरी गति शी हुवे जी ॥ शी चिंता जी रे शी रे चिंता एह योग, मले तस जव प्रजुजी सहामुं जुवे जी ॥ ४ ॥ क्षणमांहे जी रे क्षणमांहे ततकाल, ते वल्लनीपुर वन वड आवीयो जी ॥ दोय उतरी जी रे दोय उतरी देवी सुरंग, नवल निरुपम वेष बनावीयो जी ॥ ५ ॥ दोय चाली जी रे चाली हो रमझम रात, वात करती हो हसि हसि प्रेमनी जी ॥ तस पूठें जी रे तस पूठें पुण्य सार, चाल्यो हो ठानो अजवतनु ठवी वनी जी ॥ ६ ॥ लवोदर जी रे लवोदर गृहद्वार, वेदिका उपर मम्प तिहां रच्यो जी ॥ सहु मलिया जी रे मलिया हो साजनवृंद, नव नव रंगें हो रस सबलो मच्यो जी ॥ ७ ॥ तिहां कुमरी हो जी तिहां कुमरी हो सोहे रे सात, मनु सुरलोकथी अमरी कतरी जी ॥ तिहां सोहव हो जी सोहव गाये सोहलारां गीत, हर्षेहुं हेज हिये बहुलो धरी जी ॥ ८ ॥ मम्पनी हो जी मम्पनी रे पास, ते नारी जाती देखी रे दिनहुं वल्लस्यु जी ॥ तस पूठें रे पूठें वीगो तेह कुमार, निरखे हो रढ लागे मनहे तिस्यो जी ॥ ९ ॥ तुम्हें आवो जी रे आवो रे म्हारे आगणें आज, अरज करा तुमने कर जोडीने जी ॥ हसि बोलो जी रे हसि बोलो अम साथ, वात करो कुंवर मद मोडीने जी ॥ १० ॥ वेसारी जी हो वेसारी बहु मान, शेठ करे एम कुंवरने विनति जी ॥ लवोदरजी हो लवोदरें तुम्ह दीध, परणो सुता माहरी रूपें रति जी ॥ ११ ॥ एम कहिने हो जी एम

कहिने शुभ चीर, वसनयुगल तेहने पहेरावियां जी ॥ लखमूल्यने लखमूल्यने अलंकार, सोहे कुवर सहुने मन नाविया जी ॥ १२ ॥ वेला जी हो शुन वेला रे मम्राण, धवल मंगल गाये सुंदर गोरडी जी करमेलो हो जी करमेलो तिहां कीध, परण्यो कन्या साते शुभ जी ॥ १३ ॥ मुफ तातें जी हो मुफ तातें नलु कीध, रीष करी मुफ उपर अति घणी जी ॥ नहितर मुफ जी हो नहितर मुफ एह लाज्य होत किहांथी अचिंत्यो सुखघणी जी ॥ १४ ॥ करि विवाहजी हो करि विवाह मनरंग, वधूसहित ते शेठने मंदिरें जी ॥ बहु उत्सव हो जी बहु उत्सव करे इन्य, प्रेमशुं पधराव्या सौध ऊपरें जी ॥ १५ ॥ सिंहास न हो जी सिंहासन निज कंथ, रहि मुख आगल ऊनी कामिनी जी ॥ कहो वालम हो जी कहो वालम अम आज, सकल कला शीखी जेह स्वामिनी जी ॥ १६ ॥ सुणो नोली हो जी नोली सुणो मोरी वात, एह कला मुफ मनडे नवि गमे जी ॥ यडुक्त ॥ अत्यंतविडुषा नैव, सुखं मूर्ख नृणां न हि ॥ अर्जनीया कलावह्नि ,सर्वथा मध्यमा कला ॥१॥ पूर्वढाल ॥ एह पद्यनो हो जी पद्यनो अरथ विचार, करवा हो लागी कामिनी तिण समे जी ॥ १७ ॥ मन चिंते हो जी मन चिंते पुण्यसार, वृक्ष रखे जाये गगनें वही जी ॥ जो थाशे हो जी थाशे जी कालविलंब, तो ते देवी उमी जाशे सही जी ॥ १८ ॥ करे कुंवर हो जी कुंवर दिशि अवलोक, तव गुणवती बोली गुणसुंदरी जी ॥ शु स्वामी हो जी देहचिंता उत्पन्न, जे एम जूवो छो विहु दिशि फरी फरी जी ॥१९॥ कहे एमहीज हो जी एम हीज मुफ मनमाहि, वात सुणी कहे ते निजस्वामीने जी॥ हु आवु होजी प्रीतमजी तुम्ह साथ,प्रेमशुं पाउधारीजें हो कामने जी ॥२०॥ अधनूमियें होजी रहि अबला एक पास, मनमां करे पुण्यसार विचारणा जी ॥ लेइ खटिका हो जी एक लखीयो तिहा श्लोक, नारवटें करी सूधी धारणा जी ॥२१॥ यत ॥ दोहो ॥ किहां गोवालो किहां वल्लही, किहां लंबोदर देव ॥ आव्यो बेटो विहिवसीण, गयो सत्त य परणेवि ॥१॥ पूर्वढाल ॥ नामि नीने होजी कुमर कहे रहो दूर,देहचिंता जिम मुफ सुखथी हुवे जी ॥ गुण सुंदरी हो जी ऊनी रही तिण ठाय, वाट तिहा वालमनी घणी जोवे जी ॥२२॥चोथे खंमें हो जी ए बावीशमी ढाल,रामविजय कहे नवि नावें सुणो जी ॥ पुण्य कथ

रें हो जी ए संवध रसाल,आगल वात तणो रस ठे घणो जी॥२३॥६६५॥२५॥

॥ दोहा ॥

पुण्यसार कतावलो, आव्यो वटतरु पास ॥ कोटरमां पेठो जई, पाम्यो चित्त उल्लास ॥ १ ॥ एहवे ते पण देवता, आवी नाग्यवशेण ॥ वड ऊप र उची चडी, वेठी रग रसेण ॥ २ ॥ देवशक्तियें ते ऊमियो, वड अंबर अनिराम ॥ तुरत क्षेत्र जइ कतस्यो, पुर गोवाल वन गाम ॥ ३ ॥ एहवे शहेर नमी घणु,तेह पुरंदर शेठ ॥ थये प्रनातें आवीने, विशाम्यो वड हेठ ॥४॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ आज रहो रगमहोलमें केसरीया ॥ ए देशी ॥ रयणी विहाणी रवि ऊगीयो ॥ हु वारी ॥ पुहवीय थयो प्रकाश रे ॥ हु वारी लाल ॥ बोल ण लाग्या पखीयां॥ हु० ॥ गयो अधकार सवि नाश रे ॥ हुं वा० ॥ १ ॥ वटकोटरथी नीसस्यो ॥ हु० ॥ तव पुण्यसार कुमार रे ॥ हु० ॥ वस्त्राजर ण विराजतो ॥ हु० ॥ देवकुमर अवतार रे ॥ हु० ॥२॥ सुत देखी दिल उल्लस्युं ॥ हुं० ॥ वत्स वत्स कहेतो तात रे ॥ हु० ॥ दोडीने आवी म ल्यो ॥ हु० ॥ हरखी साते धात रें ॥ हु० ॥ ३ ॥ वत्स तुऊ विण ए यामिनी ॥ हु० ॥ वैरिणी गइ विकराल रे ॥ हु० ॥ सूरज परें तुने देखीने ॥ हु० ॥ मुऊ मनकज उजमाल रे ॥ हु० ॥ ४ ॥ वत्स आव्यो तु वालहो ॥ हु० ॥ फलिया वाछित आज रे ॥ हु० ॥ में तुऊ रीष करी घणी ॥ हु० ॥ तुऊ शीखामण काज रे ॥ हु० ॥५॥ पठी मन पस्ताणो घणु ॥ हु० ॥ सुत विना शून्य ससार रे ॥ हु० ॥ तुम शुद्धि लेवा नी सस्यो ॥ हु० ॥ नमतां प्रहर गया चार रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ सुत कर जोडी वीनवे ॥ हुं० ॥ सबल ए महारो वाक रे॥ हु० ॥ अपराधीमाहे में सही ॥ हु० ॥ आडो वाल्यो आंक रे ॥ हु० ॥ ७ ॥ गुनो खमोजी हवे माह रो ॥ हु० ॥ सुतवत्सल तुमें सत रे ॥ हु० ॥ पुत्र कुपुत्र जगमा हुवे ॥ हु० ॥ मावित्र नवि विहडत रे ॥ हु० ॥ ८ ॥ पुत्र पिता बेहु आविया ॥ हु० ॥ हियडे हर्ष न माय रे ॥ हु० ॥ जननीने सुत जइ मिल्यो ॥ हुं० ॥ आव्यां आसु नराय रे ॥ हु० ॥ ए ॥ सुत खोले बेसारीने ॥ हु० ॥ नेहें घेली माय रे ॥ हु० ॥ सुत शोना तुम्ह एहवी ॥ हु० ॥ किहा हुइ कहो समजाय रे ॥ हु० ॥ १० ॥ मात पिता बेहु सांनले ॥ हु० ॥ कहे

मांमी सवि वात रे ॥ ढु० ॥ विस्मय मनमां ऊपन्यो ॥ ढुं० अहो सुत अवदात रे ॥ ढु० ॥ ११ ॥ नाग्य जुउ सुतनुं वडुं ॥ एह्वी ऋद्धि विशाल रे ॥ ढु० ॥ रातमांहे आवी मली ॥ ढुं० ॥ पुण्य रसाल रे ॥ ढु० ॥ १२ ॥ कहे पुण्यसार तुम्ह शीखडी ॥ ढुं० कल्पतरुनी वेल रे ॥ ढु० ॥ वांछितदायक ए डुइ ॥ ढुं० ॥ मूकी व्यसननी हेल रे ॥ ढु० ॥ १३ ॥ आनूपण लक्ष मूल्यनुं ॥ ढुं० तनढूती कतार रे ॥ ढुं० ॥ देइ द्यूतकारने लावियो ॥ ढु० ॥ नृपनूषण तेणिवार रे ॥ ढु० ॥ १४ ॥ लइ नृपने ते सोंपियुं ॥ ढु० ॥ शेठ पुरंदरें ताम रे ॥ ढु० ॥ ह्वे पुण्यसार समाचरे ॥ ढु० ॥ गृहीनां उत्तम काम रे ॥ ढु० ॥ १५ ॥ व्यसन निवार्यां वेगलां ॥ ढु० ॥ थयो सुधो शाहुकार रे ॥ ढु० ॥ पितर हैये हरख्यां घणु ॥ ढु० ॥ सोंप्यो सवि व्यापार रे ॥ ढुं० ॥ १६ ॥ चोथे खमें त्रेवीशमी ॥ ढु० ॥ ढाल कही नित्यमेव रे ॥ ढु० ॥ राम कहे नर ते नला ॥ ढु० ॥ वारे व्यसननी टेव रे ॥ ढु० ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ॥ ६७६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ ह्वे निसुणो नारी तणो, पूवल जे अधिकार ॥ गुणसुंदरी पाछी वली, आवी कहे विचार ॥ १ ॥ गयो मूकीने नाहलो, धूरत जिम धूतेवि ॥ खोटारे खोटु कर्युं, नूंमी एहनी टेव ॥ २ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे ॥ ए देशी ॥ सुणी वात सहू विलखाणी रे, टोळें मली श्वास नराणी ॥ फट नूंमी ए शुं कीधो रे, कंथने तें जावा दीधो ॥ १ ॥ केड कामणगारानी मूकी रे, इण वातें सघली चूकी ॥ तुं तो हती घणु मांही रे, केम गइ एम एणें वाही ॥२॥ कहे बहेनड हुं तो नोली रे, में जाण्यो रंग छे चोली ॥ नवि जाशे वाहालो उवेखी रे, हुं तो रही सामु देखी ॥ ३ ॥ अहो आपणी शी गति थाशे रे, कंथ विण केम दीहा जाशे ॥ विरहातुर रोवे गाढी रे, ते नवपरिणीता लाडी ॥ ४ ॥ थयो सोर ते महोल मझारें रे, माय ताय आव्यां तिण वारें ॥ कही वात घणु दिलगीर रे, मूकी गयो नणदल वीर ॥ ५ ॥ तेह नाखती घणा आंसु रे, बोले पुण्यसारनी सासू ॥ में गुणवत जाणी आपी रे, परणीने

तें सतापी ॥६॥ रामत रसमां रगीलो रे, पियुछ मेल्यो तुम्हें मेलो ॥ तुमें कां न कछु कर जाली रे,कथ जाउ उत्तर आली ॥७॥ लवोदर देवें दीधो रे, पण लक्षण ए नहि सीधो ॥ व्यसनी दीसे ए मागो रे, आनूपण लेई नागो ॥ ८ ॥ कोण आगल वात ए कहियें रे,प्रज्ञु जेम राखे तेम रहियें ॥ कहे जनक सुणो तुम्हें बेटी रे, सवली चूकी गुणपेटी ॥ ए ॥ पण वात करंता मीठी रे, सहिनाणी काइ तस दीठी ॥ नाम गाम तुमें काहि जाणो रे, मुज आगल तेह वखाणो ॥ १० ॥ कहे गुणसुंदरी गुण जाची रे,तात वात सुणो मुज साची ॥इण दीप तणे परकाशें रे,लख्यु नारवटे उल्लासें ॥ ११ ॥ परनातें वाचशु जोई रे, नावी होवे ते होई ॥ लखियो ते लेख न चूके रे, अणचित्यां आणी मूके ॥ १२ ॥ नवि जाये वेरिणी रात रे, छ खणी थइ वेरीसात ॥ ज्ञुवो सुखमा शूल उपायु रे, कछु आपणु उदयें आव्यु ॥ १३ ॥ प्रजात समय थये वाची रे, कहे ते गुण सुदरी राची ॥ गोपालय पुरथी आवी रे, परणी गयो ते फरि नावी ॥ १४ ॥ सुणो तात ए देवने योग रे, आवी मलीयो ए जोग ॥ वेप नरनो मुजने आपो रे, वहु साथ सघातें थापो ॥ १५ ॥ ते नगर जणी हु जावु रे, पियुहाने खोली लावुं ॥ षटमासमांहे करुं काम रे, नहितर मुज व ह्निनुं गाम ॥ १६ ॥ सुणी वात पिता मन नावी रे, कन्या नरवेष व नावी ॥ वोलावी सवले साथ रे, हियडे समरी जगनाथ ॥ १७ ॥ गुण सुदर सारथवाह रे, एम नाम धराव्यु उत्साह ॥ गोपालय पुरने मार्गे रे, चाल्या हियडे धरी राग ॥ १८ ॥ केतेइक दिवसे आवी रे, उ तख्या मेरा देवरावी ॥ लइ नेटणु अति वहु माल रे, नेट्यो पुरनो नूपाल ॥ १ए ॥ राय रीज्यो दे वहु मान रे, अपावे बीडां पान ॥ नलें आव्या तुमें व्यवहारी रे, दीसो गे माणस नारी ॥ २० ॥ रहो अम नगरीमां आहीं रे, व्यापार करो उत्साही ॥ न करें तुम को तुकार रे, तुम्ह सायें वन्यो अम प्यार ॥ २१ ॥ एक वार इहा आवेवु रे, जे काज होये ते कहेवु ॥ रहे ते नगरीमा रगें रे, व्यापार करे उछरंगें ॥ २२ ॥ पुण्यसार सुणी गुणवत रे, आव्यो मलवाने सत ॥ गुणसुदर ने पुण्यसार रे, मलिया विहु हर्ष अपार ॥ २३ ॥ थइ माहोमाहे मित्राई रे, प्रगटी पु रव पुण्याई ॥ वाला मनमांहे हरखी रे, प्रीतम जेहवु मुख निरखी ॥

२४ ॥ चोवीशमी चोथे खमें रे,ढाल पूरण राग अखमें ॥ कहि सुविचारी रे,धन्य ए गुणसुंदरी नारी ॥२५॥ सर्व गाथा ॥७१३॥ श्लोक

॥ दोहा ॥

॥ रात्रि दिवस नेला रहे, प्रीति परस्पर जोर ॥ मुख हरखे नजरें, जेणि परें चंद चकोर ॥ १ ॥ अम नयरें नलें आवीया, .. मो सुजाण ॥ तुम ऊपर रीझे घणु, अहो अमारां प्राण ॥ २ ॥ र तुमें सही, नाम धराव्यु नित्य ॥ पण अमचित्त चोरी लियु, चोर तुमें मित्त ॥ ३ ॥ मित्र तुमें इहां कणे रहो, मत जाशो निज धाम ॥ करे मावो अम चाकरी, जे तुम होये काम ॥ ४ ॥

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥

॥ राजेंद्र मुने वहाला लागो ॥ ए देशी ॥ एणें अवसरें हवे सांनलो रे, रत्नसुंदरीनी वात ॥ यौवन आवी अति नली ॥ योवन आवी अति नली ॥ एतो कामरमणी साक्षात ॥ १ ॥ पिताजी हो वात सुणो मुझ सार ॥ ए तो गुणसुंदर नरतार ॥ पिता० ॥ महारे अवर नहिं निरधार ॥ पि० ॥ महारुं नलु रे कीधु किरतार ॥ पि० ॥ मुने न गमे ए पुण्यसार ॥ पि० ॥ घणु शुं कहुं वारंवार ॥पि०॥ एहनी थाइश खिजमतगार॥पि०॥ मुझ न फरे एह विचार॥पि०॥ वा०॥ ए आंकणी ॥ नाव लही तनया तणो रे, गुणसुंदरनी पास ॥ रत्नसार आव्यो वही॥र०॥ एतो धरी मनमां उल्लास ॥ पि० ॥२॥ करी आसन आपीयु रे,पूछ्यु कहो मुझ काज ॥ केम करुणा कीधी इहां ॥ के० ॥ अम उपर एवडी आज ॥ पिता० ॥३॥ रत्नसार कहे शेठजी रे, तुमचुं हो तनया रे मुझ ॥ परणवा इछे अछे रे ॥ प० ॥ एतो करवा वातनुं गुझ ॥ पिता० ॥ ४ ॥ गुणसुंदर चित्त चिंतवे रे, खोटी हो एहनी रे आश ॥ बिहु नारी विवाह्यी रे ॥ बि० ॥ एतो केम चाले घरवास ॥ पि० ॥ ५ ॥ यत्किंचित् उत्तर देइ रे, वारुं हो एहने विमास ॥ नहिंतर जे गति माहरी रे ॥ न० ॥ एतो होशे ते गति तास ॥ पि० ॥ ६ ॥ एम चिंती कहे शेठने रे, जे तुमें कह्यो रे विचार ॥ विण पूछे मावित्रने रे ॥ वि० ॥ ए तो न होय कुल आचार ॥ पि० ॥ ७ ॥ वासी हुं देशांतरी रे, नवि जाण्यु मुझ गाम ॥ तो गुणवंती नंदिनी रे ॥तो०॥ एतो केम काढी यो आम ॥ पि० ॥८॥ यत ॥ कुग्राम

वासिदूरस्थ, शूरमोक्षाभिलाषिणाम् ॥ त्रिगुणाधिकवर्षाणां, नैव देया सुक न्यका ॥१॥ पूर्वढाल ॥ रत्नसार कहे तु सही रे,पुत्रीयें थाम्योचित्त ॥ अवरनु नाम न सांजले रे ॥ अ० ॥ ए तो मानो वात एं मित्त ॥ पि० ॥ ए ॥ यत ॥ श त्रुनिर्वंधुरूपे सा, प्रक्षिप्ता डुखसागरे ॥ या दत्ता हृदयानिष्ट,रमणस्य कुलागना ॥२॥ पूर्वढाल ॥ आग्रहथी तेणें मानीयु रे, सबल जावीनो योग॥ माह्या रे माहापण करे रे ॥ मा० ॥ एतो आवी मले ते योग ॥ पि० ॥ १० ॥ उत्सव कीधो अति घणो रे, रत्नसारें तेणि वार ॥ परणावी निज पुत्रिका रे ॥ प० ॥ ए तो गुणसुंदरने सार ॥ ११ ॥ सुणो नवि, नियति वडी संसार ॥ मत करजो को अहंकार ॥ सु० ॥ तमें बोलो बोल विचारि ॥ सु० ॥ इहां न चले हो कोइ उपचार ॥ सु० ॥ एहना अवर सखाइ चार ॥सु०॥नि०॥ए आंकणी ॥ पुण्यसार तेजाणीने रे,गयो कुलदेवी पास ॥ मात जुर्च ए शुं थयु रे ॥ मा० ॥ मुज महोटी हती तुज आश ॥ सु० ॥ १२ ॥ हवे मद्दारे नहि जीववु रे, शिर बेदी दीयु तुज ॥ बोल गयो हवे शु रह्यु रे ॥ बो० ॥ मुने कांइ पडे नहिं सुज ॥ सु० ॥१३॥ देवी कहे कां आकलो रे,तु वत्स थाये एम ॥ रत्नसुंदरीशु ते कहे रे ॥ रत्न० ॥ मुजचिंतित न हुर्च प्रेम ॥ सु० ॥१४॥ देवी कहे दीधी जिका रे, तेहमां नहिं संदेह ॥ सहि ए जावी ताहरी रे ॥स०॥ म म कर मन साहस एह ॥ सु० ॥१५॥ पुण्यसार कहे नवि घटे रे, सग्रहवी परनारि ॥ परणी ए गुणसुंदरें रे ॥ प० ॥ नहिं इहां कोइ विचार ॥ सु० ॥ १६ ॥ देवी कहे वली एहवु रे, शुं समजे नहीं शान ॥ ए सही तहारी वल्लना रे ॥ ए० ॥ मुज साख दीये एम ज्ञान ॥ सु० ॥ १७ ॥ माथे चढावीने देवीनु रे, कहण कत्यो उजमाल ॥ मन चिंते पुण्यसारजी रे ॥ म० ॥ मुज फलशे मनोरथ सार ॥ सु० ॥ १८ ॥ चोथे खमें पंचवीशमी रे, ढाल सुणो एक चित्त ॥ राम कहे पीयु नारीनी रे ॥ रा० ॥ हवे परगट होशे प्रीति ॥ सु० ॥१ए॥ सर्वगाथा ॥७३६॥ श्लोक तथा गाथा ॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणसुंदरी चित्त चिंतवे, परगट न लह्यो नाथ ॥ डुख न खमाये विरहनु, में हवे रह्यु न जात ॥ १ ॥ पूर्णावधि खट मासनी, संपूरण पर पंच ॥ काष्ठचिता महोटी रची, मेल्यो सघलो संच ॥ २ ॥ पुर बाहिर

चाल्यो तदा, वह्निप्रवेश निमित्त ॥ वात सकल पुर विस्तरी, जिम जल्ल ॥ ३ ॥ सुंदर बाला वेशमा, गुणसुंदर मुखफूल ॥ वैराग्यें नज्यो, मरण करे ठे कबूल ॥ ४ ॥ जनमुखथी नृप शेठ पुरंदर लेइ ॥ रत्नसार पुण्यसारछु, आव्या तिहां दोडेइ ॥ ५ ॥ मल्या लाखो गमे, कहे राजा सुण वत्स ॥ आण किर्यो तुज नाखो करि मन स्वस्थ ॥ ६ ॥ म मर म मर बालुआ, कां करे क्लण काठ ॥ तु म्हाह्यो हूतो घणो, शो ए ताहारो गाठ ॥ ७ ॥ कहे माहरी, तनुजा अति सुकुमार ॥ का संतापो तेहने, विरुई जाल ॥ ८ ॥ जो अपराध तिर्णे कियो, तो दाखो मुज कां न रोष निवारो वालहा, आपो मुजने मान ॥ ए ॥ आण न लोपी माहरी, नवि कोइनो अपराध ॥ पण मुज इष्ट वियोगनु, मनमां दुःख अगाध ॥ १० ॥ एम कहेतो मुख बाहिरें, नाखतो निःश्वास ॥ कतावलथी आवीयो, कुमर चितानी पास ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥

॥ सलुणी योगिणी रूडी बे ॥ ए देशी ॥ राय विचारुं सहि ए मरशे, जाको न रहे जोर ॥ वालेसर कोई एहवो ठे, एम कहे करतो सोर ॥ १ ॥ सितावीमें कोइ राखो बे, अरे हा वालेसर ते मुज दाखो बे ॥ ए आंकणी ॥ जेह कहे ते काज करुं हुं, कां मरे मुज हजूर ॥ वाट जोतां हशे एहनां, मावित्र रह्या ते दूर ॥ सि० ॥ २ ॥ अहो एहनु मुखफूल सलूणु, अहो एहनी तनुकांति ॥ विण कारण ए का मरे एहनी, कल न पडे गति भ्रांति ॥ सि० ॥ ३ ॥ नागर कहे पुण्यसार ठे एहनो, साचो अंतर मित्त ॥ वात माने ए एहनी, साहिब निसुणो सुपवित्त ॥ सि० ॥ ४ ॥ राय कहे पुण्य सार जइने, समजावो अविलंब ॥ मित्रनुं दुःख एम देखीने, शा माटे करो ठो विलंब ॥ सि० ॥ ५ ॥ पुण्यसार पासें जइ तेहनी, एम करे अरदास ॥ आ सुखलीला मूकीने, मरवानी कां करे आश ॥ सि० ॥ ६ ॥ तरुण पणे तुम रूप अनोपम, ठो संपद आवास ॥ मन मूकी मुज आगलें, दुःखनु कारण प्रकाश ॥ सि० ॥ ७ ॥ सा कहे एहवो कोइ न कहियें, जस आगल दुःखवात ॥ हृदयथी कठें आविने, पाठी फरी हृदयें जात ॥ सि० ॥ ८ ॥ कहे पुण्यसार ए ताहरी चेष्टा, हास्य तणी करनार ॥

मुझ आगल पडदो किस्यो कह्यो, जिम लहु सुख अपार ॥ सि० ॥ ए ॥ कहे प्रीतमने पुण्यपनोती, ते सन्नलावी शलोक ॥ तुमें लख्यो किं वा नहिं,साचु कहो मूकी शोक ॥सि०॥१०॥ कहे पुण्यसार सही में लखीयो, सा कहे ते हुं नारी ॥ गुणसुंदरी नामें तुमें जे, मूकी तोरण द्वार ॥ सि० ॥ ११ ॥ कंत तुमारे कारण सघलो, ए में कीध प्रयास ॥ वालेसर मूकी मने, न्नला आव्या तुमें इहां नासि ॥ सि० ॥ १२ ॥ करि प्रसाद मगावी आपो, मुजने हवे स्त्रीवेष ॥ कुंवर वात सुणी इसी, मनमां समज्यो सुविशेष ॥ सि० ॥१३॥ वेष मगाव्यो हो घरथी वारु, विनतानो तेणि वार ॥ तन पहेख्यो शोन्ने न्नली, मानु रन्न तणो अवतार ॥ सि० ॥ १४ ॥ रम कम नूपुर पाय मनोहर, कर चूडी उर हार ॥ तिलक वन्यु शिर शोन्नतु, गोरी गुणनो न्नमार ॥ सि० ॥ १५ ॥ कहे पुण्यसार नरपति आगल, वहू वदे तुम नेह ॥ देखी सहु विस्मय लह्यु, अहो कौतुक महोटु एह ॥ सि० ॥ १६ ॥ ए कोण रूपवती अति रूडी, रामा रमा अनुहार ॥ सारथवाह केम थइ, रही ए नयर मकार ॥ सि० ॥ १७ ॥ वात सहू पुण्यसार प्रकासी, धुरहूंती आमूल ॥ सांन्नली सहुने उपन्यो आनंद, ए वात अमूल्य ॥ सि० ॥ १८ ॥ पाय लागी सासु ससराने, दीये एम ते आशीष ॥ ए वर वहूनी जोडली, चिर जीवो कोडि वरीस ॥ सि० ॥ १ए ॥ कुलवती तुझ पाखे कहो कोण, शोधी लीये न्नरतार ॥ ए चतुराइ ताहरी, नवि दीठी अमें संसार ॥ सि० ॥ २० ॥ रत्नसार विलखो थइ मनमां, वीनवियो पुर नूप ॥ मुझ पुत्री परणी एणें, तेहनु हवे कवण स्वरूप ॥ सि० ॥ २१ ॥ राय कहे इहां श्यु पूछवु, ते पण एहनी नारि ॥ जे माटें एहनी प्रिया, परणी एणें प्रेम अपार ॥ सि० ॥ २२ ॥ पुण्यदशा जूवो एम जागी, न्नांगी न्नावठ तंत ॥ रत्नसुदरी थइ न्नारजा, पुण्यसार थयो तस कंत ॥ सि० ॥२३॥ सहु हर्षे आव्या निज मंदिर,वरत्यो जय जय कार ॥ मात पिता हरख्यां घणुं, वडवखती एह कुमार ॥ सि० ॥ २४ ॥ चोथे खमें छवीशमी ढालें, श्री सुमतिविजय गुरु शिष्य ॥ रामविजय कहे एम पुण्यथी,पहोंचे मन सयल जगीश ॥ सि० ॥ २५ ॥७७२॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ वात गइ वलन्नीपुरें, प्रगट थयो निज कंत ॥ जाणीने पट अंगना,

चाल्यो तदा, वह्निप्रवेश निमित्त ॥ वात सकल पुर विस्तरी, जलमें जिम जत्त ॥ ३ ॥ सुंदर वाला वेशमा, गुणसुंदर मुखफूल ॥ वैराग्यें नड्यो, मरण करे ठे कबूल ॥ ४ ॥ जनमुखथी नृप शेठ पुरंदर लेइ ॥ रत्नसार पुण्यसारछु, आव्या तिहां दोडेइ ॥ ५ ॥ मल्यां लाखो गमे, कहे राजा सुण वत्स ॥ आण किणें तुऊ नांखो करि मन स्वस्थ ॥ ६ ॥ म मर म मर बालुआ, कां करे क्षण काठ ॥ तु माह्यो हूतो घणो, शो ए ताह्यारो गाठ ॥ ७ ॥ कहे माहरी, तनुजा अति सुकुमार ॥ का संतापो तेह्नने, विरुई जाल ॥ ८ ॥ जो अपराध तिणें कियो, तो दाखो मुऊ कां न ॥ रोष निवारो वालहा, आपो मुऊने मान ॥ ए ॥ आण न लोपी माहरी, नवि कोइनो अपराध ॥ पण मुऊ इष्ट वियोगनु, मनमां दुःख अगाध ॥ १० ॥ एम कहेतो मुख बाहिरें, नाखंतो निःश्वास ॥ कतावलशुं आवीयो, कुमर चितानी पास ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठवीशमी ॥

॥ सलुणी योगिणी रूडी वे ॥ ए देशी ॥ राय विचाखुं सहिए मरशे, जाणो न रहे जोर ॥ वालेसर कोई एह्वो ठे, एम कहे करतो सोर ॥ १ ॥ सितावीयें कोइ राखो वे, अरे हा वालेसर ते मुऊ दाखो वे ॥ ए आंकणी ॥ जेह कहे ते काज करु हु, कां मरे मुऊ हजूर ॥ वाट जोतां हशें एह्नां, मावित्र रह्यां ते दूर ॥ सि० ॥ २ ॥ अहो एह्नु मुखफूल सलूणु, अहो एह्नी तनुकांति ॥ विण कारण ए कां मरे एह्नी, कल न पडे गति भ्रांति ॥ सि० ॥ ३ ॥ नागर कहे पुण्यसार ठे एह्नो, साचो अंतर मित्त ॥ वात माने ए एह्नी, साहिब निसुणो सुपवित्त ॥ सि० ॥ ४ ॥ राय कहे पुण्य सार जइने, समजावो अविलंब ॥ मित्रनुं दुःख एम देखीने, शा माटे करो ठो विलंब ॥ सि० ॥ ५ ॥ पुण्यसार पासें जइ तेह्नी, एम करे अरदास ॥ आ सुखलीला मूकीने, मरवानी का करे आश ॥ सि० ॥ ६ ॥ तरुण पणे तुम रूप अनोपम, ठो संपद आवास ॥ मन मूकी मुऊ आगलें, दुःखनु कारण प्रकाश ॥ सि० ॥ ७ ॥ सा कहे एह्वो कोइ न कहियें, जस आगल दुःखवात ॥ हृदयथी कठें आविने, पाठी फरी हृदयें जात ॥ सि० ॥ ८ ॥ कहे पुण्यसार ए ताहरी चेष्टा, हास्य तणी करनार ॥

यो रे, धर्म न विहडे जाचो ॥ साची धर्मतणी ए सगाइ, इह नव परनव बहु सुखदायी ॥ मित्र जुहार समो ए कहियें, रात्रि दिवस ए ध्यानमां रहियें ॥जी वा०॥६॥ ते बेहु नेदें नाखीयो रे, श्रावक ने अणगार ॥ पहेलो परपर हेतु छे रे, बीजो अनतर सार ॥ बीजो अनतर कारण कहियें, अतर मुहूरतमा शिव लहियें ॥ उत्कर्षे करे नव सात आठ, एवो श्रीजिन आगमपाठ ॥ जी वा० ॥ ७ ॥ धर्म धर्म सहुको कहे रे, पण न लहे तस मर्म ॥ आतमधर्मने आदरे रे, नवि वधाये कर्म ॥ नवि वधाये कर्म ए नामें, स्थापनाद्रव्यें सहु जग कामें ॥ नावनिक्षेपा नामें राचो, ते मुनि मारगमांहे साचो ॥ जी वा० ॥ ८ ॥ पूछे सुणि गुरुदेशना रे, शेठ पुरदर साधु ॥ कहो पुण्यसारें शु कयु रे, पूरवनव पुण्य जाधु ॥ पूरवनवनु पुण्य प्रकासो, कहे मुनिवर मत राखो सासो ॥ नीतिपुरें कोई कुलपूत, पहेले नवें हूतो गतसुत ॥ जी वा० ॥ ए ॥ खेद लह्यो ससारथी रे, चरण ग्रह्यु गुरु पासें ॥ लइ दीक्षा शिक्षा सहे रे, सयमपंथ अन्यासें ॥ सयमपंथें सूधो चाले, पच समिति त्रण गुप्तिने पाले ॥ कायगुप्ति दृढता नहिं तेहवी, मुनिमारगमा दाखी जेहवी ॥ जी वा० ॥ १० ॥ मश मशादि परिसहें रे, कायोत्सर्गे मझार ॥ स्थिरता न रहे देहनी रे,वलि वलि वहेलो पारे॥पारे वली वली वहेलो जेवारें,नाखे सद्गुरु शीख तेवारें ॥ आवश्यक खमन नवि कीजें, प्राण जते पण नवि चूकीजें ॥ जी वा० ॥ ११ ॥ यत ॥ वरमग्गिम्मि पवेसो, वर विसुद्धेण कम्मणा मरण ॥ मा गहिय वयनगो, माजीयं खलिय सीलस्स ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ फरि फरि मारग बोहिलो रे, हाथ्यो न आवे हाथे ॥ शाता गारवमां पड्यो रे, लहे दुःख कह्युं जिननाथें ॥ कह्यु साचु जिननु सद्दहियें, जिम लीधु ते तिम निर्वहियें ॥ व्रत पालता नीरु न थइयें, तो सहेजें शिव पुरमा जइयें ॥ जी वा० ॥ १२ ॥ पापनीरु नय पामियो रे, हूतो असह पणें पाले ॥ निर्वहे त्रणे गुप्तिनें रे, वेयावच्च सनाले ॥ वेयावच्च करे गुरुजीनी, धर्में अतर मींजी नीनी ॥ मरण लही थयो सुर सौधर्म्में, तिहांथी चवी तुऊ सुत थयो कर्में ॥ जी वा० ॥ १३ ॥ प्रवचन माता सातनें रे, पाली सुखें तिण हेतें ॥ सात प्रिया परणी सुखें रे, पूरव पुण्य सकेतें ॥ पूरवें पाली एक तेणें कष्टें, आठमी नारी लही इण दृष्टे ॥ ते

आवी तिहां गुणवत ॥ १ ॥ सासु ससराने नमी, बे कर जोडी मंदिर आवी कंतनें, पाय पडे ततकाल ॥ २ ॥ मोहनगारा ठांमी अम निर्धार ॥ कोण भरोंसे मूकीने, इहां आव्या आधार जाणी प्रीति तुमारडी, नर कोइना नवि थाय ॥ अमें घहेली रहियें एम अवटाय ॥ ४ ॥ पण पीयु सार्थे रूपणुं, कीधे केही छुं म्हापण तुम आगलें, अमें अबला निर्बुद्धि ॥ ५ ॥ दोहा पियु तुम सार्थे मान, अमने करवु नवि घटे ॥ पग पहेरीजें निशान, खेणी पण पानही ॥ ६ ॥ रत्नसुंदरी मनमाहे, चिंते इणे साउं पुरुष वडा जगमांहि,गर्व कस्यो घेली थइ ॥७॥ महोटा बोल म बोल, पडे ए कर्मनी ॥ माणस फूटा ढोल, ताणी वात करे जिके॥ ८ ॥

॥ ढाल सत्त्यावीशमी ॥

॥ देशी चउावलानी ॥ पुण्यसार माने घणु रे, आठे नारी प्रीतम सार्थे प्रेमनी रे, वात करे मुख जोती ॥ त्रू० ॥ वात करे जोती रे श्यामा, हेज घणुं हैये धरती वामा ॥ दोगुंदकपरें ते सुख भज्यो आयम्यो दीह न जाणे ॥ १ ॥ जी वालेसरजी रे ॥ ए कणी ॥ कबही रमे रग महोलमें रे, कबही वाडी जाय ॥ कबही करे रे, भामिनीछुं मन लाय ॥ भामिनीछुं मन लाइ रे भाइ,देखो पूरवली कमाइ ॥ आवी तेवारें अचिंती आइ, क्षणमा दोलत डुनियां पाइ ॥ ॥ २ ॥ पुरमां नामीचो थयो रे, पुण्यथकी पुण्यसार ॥ वोरा तणो रे, वाध्यो बहु विस्तार ॥ वाध्यो बहु विस्तार करता कंचन कोडि भपाई ॥ सहेर तणी पामी ठोठाई, लीधी इज्जत भलाई ॥ जी वा० ॥ ३ ॥ इण अवसरें भूमहलें रे, बूजवता भवि जीव भवसायरमा बूडतां रे, जेह असवीन दीव ॥ जेह असवीन सरिखा, सूधी जीवाजीव परीक्षा ॥ ज्ञानसागर मुनि वनमां आवे, विक सहु वादण जावे ॥ ४ ॥ जी मुनीश्वरजी रे ॥ ए आंकणी ॥ पुरदर आवीयो रे, सार्थे लेइ पुण्यसार ॥ गुरु वांदी सुणे देशना आणी भाव अपार ॥ आणी भाव अपार रे प्राणी, ए ससारने जाणी॥कूडी काया कूडीमाया,आडो आवे ए धर्म सहाया ॥जीरे मुनी ५॥ विहडे सुत तन कपन्यो रे,विहडे बधव साथो ॥ विहडे अर्थ ए

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

॥ गुण गिरुआ गुण गिरुआ गोडी पास हो ॥ ए देशी ॥ गुण नरिया गुण नरिया दरीयानी परें, मुनिजनने मुनिजनने बहु परिवार हो ॥ जय वता जयवता हो जिनवर आविया जी ॥ घणु प्यारा घणु प्यारा सहु मन नाविया जी ॥१॥ नव कमलें नव कमलें कनकने पद धरे, वर अतिशय वर अतिशय गुणनमार हो ॥ जग वहाला जग वहाला जिणद पधारीया जी ॥ २ ॥ तिण नयरीयें तिण नयरीयें तिण उद्यानमा, तिण वेला तिण वेला त्रिभुवन नाण हो ॥ जगनायक जगनायक आवि समोसख्या जी ॥ ३ ॥ सुर मलिया सुर मलिया चार निकायना, वर ऊद्धि वर ऊद्धि गयण घुरंत हो ॥ जगवहाला जग वहाला जिणद पधारिया जी ॥ ४ ॥ क्षेम कर क्षेमकर जिननी वधामणी, वनपालक वनपालक दीधी तिवार हो ॥ मनमोहन जगसोहन श्रीजिन आवीया जी ॥५॥ धन आपी धन आपी बहु वनपालने,नृप चाल्यो नृप चाल्यो वदन काज हो॥ मन मोहन जग सोहन श्रीजिन आवीया जी ॥ ६ ॥ प्रदक्षिणा परदक्षिणा त्रण वेई करी, पर मेश्वर परमेश्वरने परणाम हो ॥ कर जोडी कर जोडी एम स्तवना-करे जी ॥७॥ त्रिगुणातम त्रिगुणातम त्रिगुण व्यतीत छो,त्रिभुवनना त्रिभुवनना नायक त्रिहु काल हो॥ त्रिकरणशुं त्रिकरणशुं हो में दिलमें धख्या जी ॥८॥ आज पावन आज पावन थइ मुफ देहडी, नलें नेट्या नलें नेट्या श्रीजिन पद हो ॥ मुफ दोहग मुफ दोहग सवि नाशी गया जी ॥ ए ॥ आज जाणु आज जाणु फल्यो मुफ आगणे, सुरपादप सुरपादप तुफ दीदार हो ॥ शुनयोगें शुनयोगें हो तु प्रनु नेटीयो जी ॥ १० ॥ स्तवि जिनने स्तवि जिनने हो वेठा आगलें, वज्रायुध वज्रायुधजी कर जोडि हो ॥ प्रनु नांखे प्रनु नाखे हो सुललित देशना जी ॥११॥ नवकूपें नवकूपें हो मोहनूपें धख्यो, नवि जाणे नवि जाणे विषयनो पास हो ॥ घणु राता घणु राता हो मोहमां प्राणीया जी ॥१२॥ अवलवे अवलवे हो विषय शिला जिस्या, नवजलमा नवजलमा बूडता जीव हो ॥ धर्मवाहण धर्मवाहण दूर नवे खीने जी ॥ १३ ॥ शुं कहियें शु कहियें हो इण केई नड्या, सुर किन्नर सुर किन्नर नरवर कोडि हो ॥ जग एहनो जग एहनो हो जोरो सवल कह्यो जी ॥१४॥ कह्या तेरे कह्या तेरे हो धर्मना काठीया, तेहमा ए

मार्टे परमाद निवारी, सपूरण पालो सुविचारी ॥ जी वा० ॥ १४ ॥ पुरंदर सांजली रे, मन पाम्यो वैराग्य ॥ ग्रहे दीक्षा गुरुजीकने रे, अनुजव राग ॥ अनुजव वात हैयामां राखी, पुण्यसार श्रावक साखी ॥ वदी जनक मुनि घर आया, रात दिवस तेहना गुण गाया जी वा० ॥ १५ ॥ श्रावक व्रत आराधतो रे, पाले शुद्ध आचार ॥ सुपात्रे दे नत्तां रे, पुण्य करे पुण्यसार ॥ पुण्यसार करे पुण्य कमाई, आठ रमणी सार्थे उत्साही ॥ अनुक्रमें पुत्रने सोंपी नार, सगुरु पासें थया अणगार ॥ जी वा० ॥ १६ ॥ चारित्र पाली रूयडुं रे, जाव धरी उजमाल ॥ मुक्तें गयो मुनिराजीयो रे, वदू हुं त्रण काल ॥ वदू वात मुनीश्वरें जांखी, कनकशक्ति आगल हित राखी ॥ चोथे सत्यावीशमी ढाल, रामें मुनि गुण गाया रसाल ॥ जी वा० ॥ १७ ॥ इति पुण्यसारसबंध ॥ ७९७ ॥ २७

॥ दोहा ॥

॥ निसुणी श्री गुरुदेशना, कनकशक्ति नृपनद ॥ सयम सूधु आदरे, मनमां धरि आनद ॥ १ ॥ विपुलमति मुनि तेहने, दे हितशिक्षा सार ॥ संयम मारग दोहिलो, जेहवी खंमाधार ॥ २ ॥ निरतिचारपणे तुमो, पालेजो निर्धार ॥ व्रत लेई पाले खरा, धन्य तेहनो अवतार ॥ ३ ॥ व्रतिनी विमलमति कने, दोय नारी लिये दिख ॥ तजि ससार विराग जली, चाले रूडी शीख ॥ ४ ॥ कनकशक्ति मुनि विचरतो, सिद्धपर्वतें आय ॥ एक रात पडिमा रह्यो, शिला उपर शुज गय ॥ ५ ॥ पूरव जवनो मत्सरी, हेमचूलानिध देव ॥ करे उपसर्ग तिहां घणा, वैरजावनी टेव ॥ ६ ॥ मुनि निश्चल ध्यानें रह्यो, जाणे सुरगिरि टूक ॥ विद्याधर मलि वारियो, देव गयो मुनि मूक ॥ ७ ॥ प्रहसमे प्रतिमा पारिनें, विचरंतो नूपीठ ॥ रत्नसचया आवियो, गिरुउ सुगुण गरिष्ठ ॥ ८ ॥ सूरिनिपात उद्यानमां, काउस्सग्ग रहियो सोय ॥ मुनिध्यानें लीनो सबल, घातिकर्म मल धोय ॥ ९ ॥ उज्ज्वल केवल ऊपन्युं, फलदल जाणे दिणद ॥ सुर नर विद्याधर मली, उत्सव करे अमद ॥ १० ॥ वज्रायुध करि नक्ति बहु धन धन तुम्हो मुणिद ॥ कर्मकटक जीत्युं सबल, निर्मल ज्ञान दिणद ॥ ११ ॥ देशन सुणि घेर आविया, वज्रायुध नरदेव ॥ अहोनिश सारे जेहनी, सोल सहस यक्ष सेव ॥ १२ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

॥ गुण गिरुआ गुण गिरुआ गोडी पास हो ॥ ए देशी ॥ गुण नरिया गुण नरिया दरीयानी परें, मुनिजनने मुनिजनने बहु परिवार हो ॥ जय वता जयवता हो जिनवर आविया जी ॥ घणु प्यारा घणु प्यारा सहु मन नाविया जी ॥१॥ नव कमलें नव कमलें कनकने पद धरे, वर अतिशय वर अतिशय गुणनमार हो ॥ जग वहाला जग वहाला जिणद पधारीया जी ॥ २ ॥ तिण नयरीयें तिण नयरीयें तिण उद्यानमा, तिण वेला तिण वेला त्रिभुवन नाण हो ॥ जगनायक जगनायक आवि समोसस्या जी ॥ ३ ॥ सुर मलिया सुर मलिया चार निकायना, वर रुद्धि वर रुद्धि गयण घुरत हो ॥ जगवहाला जग वहाला जिणद पधारिया जी ॥ ४ ॥ क्षेम कर क्षेमकर जिननी वधामणी, वनपालक वनपालक दीधी तिवार हो ॥ मनमोहन जगसोहन श्रीजिन आवीया जी ॥५॥ धन आपी धन आपी बहु वनपालने,नृप चाल्यो नृप चाल्यो वदन काज हो॥ मन मोहन जग सोहन श्रीजिन आवीया जी ॥ ६ ॥ प्रदक्षिणा परदक्षिणा त्रण देई करी, पर मेश्वर परमेश्वरने परणाम हो ॥ कर जोडी कर जोडी एम स्तवना-करे जी ॥७॥ त्रिगुणातम त्रिगुणातम त्रिगुण व्यतीत हो,त्रिभुवनना त्रिभुवनना नायक त्रिहु काल हो॥ त्रिकरणशु त्रिकरणशु हो में दिलमें धस्या जी ॥८॥ आज पावन आज पावन थइ मुज देहडी, नलें नेव्या नलें नेव्या श्रीजिन पद हो ॥ मुज दोहग मुज दोहग सवि नाशी गया जी ॥ ए ॥ आज जाणु आज जाणु फल्यो मुज आगणे, सुरपादप सुरपादप तुज दीदार हो ॥ शुनयोगें शुनयोगें हो तु प्रभु नेटीयो जी ॥ १० ॥ स्तवि जिनने स्तवि जिनने हो वेग आगलें, वज्रायुध वज्रायुधजी कर जोडि हो ॥ प्रभु नाखे प्रभु नाखे हो सुललित देशना जी ॥११॥ नवकूपें नवकूपें हो मोहनूपें धस्यो, नवि जाणे नवि जाणे विषयनो पास हो ॥ घणु राता घणु राता हो मोहमां प्राणीया जी ॥१२॥ अवजवे अवजवे हो विषय शिला जिस्या, नवजलमा नवजलमा बूडता जीव हो ॥ धर्मवाहण धर्मवाहण दूर नवे खीने जी ॥ १३ ॥ शु कहियें शु कहियें हो इण केई नख्या, सुर किन्नर सुर किन्नर नरवर कोडि हो ॥ जग एहनो जग एहनो हो जोरो सबल कह्यो जी ॥१४॥ कह्या तेरे कह्या तेरे हो धर्मना काठीया, तेहमा ए

तेहमां ए अतिहि अवज्ञ हो ॥ मोहराजा मोहराजा ए रागरूपें रह्यो १५ ॥ कह्यो पहेलो कह्यो पहेलो हो आलस नामथी, मोह बीजे बीजे हो त्रीजे अवर्ण हो ॥ दंज चोथो दंज चोथो हो क्रोध ए मो जी ॥ १६ ॥ गंमीजें गंमीजें प्रमाद छठो सही, वली सत्तम सत्तम कृपणनो जाव हो ॥ जय अष्टम जय अष्टम शोक नवम कह्यो जी ॥ १७ ॥ वलि दशमु वलि दशमुं अज्ञानपणु कह्यु, अग्यारमो ग्यारमो कह्यो व्याक्षेप हो ॥ द्वादशमो द्वादशमो कुतूहल वारीयें जी ॥ १८ ॥ सद्गुथी ए सद्गुथी ए बलीयो कह्यो तेरमो, विषयानो विषयानो सघले वाक हो ॥ काम जोगें काम जोगें ए दोय शबद जजे जी ॥ १९॥ यडुक्तमागमे ॥ जीवाण जते कामी जोगी गो० जीवा कामीवि जोगी वि से केणहाण जते एव वुच्चइ जीवा कामीवि जोगीवि सोतिंदिय चक्खिंदिया इ पडुच्चकामी जिप्निंदिय घाणिदिय फासिंदियाइ पडुच्च जोगी नेरइयाण जंते कामी जोगी गो० नेरइया कामीवि जोगीवि एव असुरकुमाराण जीव थण य कुमाराण पुढवीकाइयाण जते कामी जोगी गो० नोकामी जोगी नेरइया एव जाव तेइंदियाण चउरिंदियाण कामीवि जोगीवि एव जीव वेमाणियाण इत्यादि॥पूर्वढाल॥कहि देशन कहि देशन क्षेमकर विजुजी, विषयानें विषयानें निवारो दूर हो॥तो शिवसुख तो शिवसुख पामी शाश्वतां जी ॥२०॥ प्रजुजीयें प्रजुजीयें प्रकाशी देशना,अडवीशमी अडवीशमी चोथे खम्न हो ॥ ढाल निसुणी ढाल निसुणी हो हृदयमां राखजो जी ॥ २१ ॥८२०॥२८

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर पूछे तिहां, सहस्त्रायुध नृपनंद ॥ कर जोडी चरणे नमी, जाखो नयनानंद ॥ १ ॥ जगवन् तातें केम लही, पूर्व अपर जववात ॥ वायुवेगादि खेचर तणी, ते जांखो अवदात ॥ २ ॥

॥ ढालउंगणत्रीशमी ॥

आज हजारी ढोलो आवशे ॥ ए देशी ॥ कहे एम क्षेमकर जगधणी, सान्नल सहस्त्रायुध नृप ॥ सुगुण प्राणीजी ॥ ज्ञानरयण जगमा वडुं ॥ तुज तातें हो अवधिज्ञानथी, जाख्युं ए जवनु स्वरूप ॥ १ ॥ सुगु० ॥ ॥ ज्ञा० ॥ ए आंकणी ॥ प्रजु कहो केता जेद छे तेहना, कीर करुणा जगदाधार ॥ जिणंद राय जी, वलिहारी प्रजुनामनी ॥ कहे

अछे पंच एहना, मति श्रुत ने अवधि मन धार ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ तिम मन पर्यव चोथु सही, पचम केवल नि कलक ॥ सु० ॥ दोय नेदें परोक्ष ए जाणीयें,प्रत्यक्ष त्रिहु नेदें नि.शक॥ सु० ॥ज्ञा०॥२॥ दोय विकल्प एक सकल्पथी,प्रत्यक्षमाहे त्रिहु नेद ॥ सु० ॥ नेद अठावीश प्रथमना, श्रुत चउदस जाणो अखेद ॥ सु०॥ज्ञा०॥४॥ षट नेद अवधि मन आणीयें, मन पर्यव दोय विकल्प ॥ सु० ॥ क्षायिक ज्ञान ते पाचमु, तेहमा नहि कोय सकल्प ॥ सु० ॥ज्ञा०॥५॥ एम नेद एकावन ज्ञानना, मतिना तेहमा बहु होय ॥ सु० ॥ मतिपर्याय घणा अछे, बुद्धि स्मृति प्रज्ञा जोय ॥ सु० ॥ज्ञा०॥६॥ मति कहीयें हो नावी कालनी, बुद्धि सप्रतिकालनी जाण ॥ सु० ॥ स्मृति लहीयें काल अतीतनी, प्रज्ञा त्रिहु काल वखाण॥ सु० ॥ज्ञा०॥७॥ वली ए चिहु नेदें जाणीयें,औत्पातिकी पहेली बुद्धि ॥सु०॥ वैनयिकी बीजी वली, कार्मणकी त्रीजी विशुद्ध ॥ सु० ॥ज्ञा०॥८॥ चोथी कही पारिणामिकी, बुद्धि ए चिहु नेद विचार ॥ सु० ॥ अणदीठुं अण सान्नल्यु, उपजे ते पहेली सार ॥सु०॥ज्ञा०॥९॥ ए उपर रोहा तणो, प्रनु प्रकासे सबध ॥ सु० ॥ निसुणो सघली ए पर्षदा, मति उपर ए प्रबध ॥ सु० ॥ज्ञा०॥१०॥ अथ रोहकसबध ॥ नयरि अवतीमाहे वसे, अरिकेशरी नामें नरेश ॥ सु० ॥ ते नयरीनी समीप छे, एक महोटी शिला सुविशेष ॥ सु० ॥ज्ञा०॥११॥ तास समीपें हो नट तणु, एक गाम अछे ऋद्धिवत ॥ सु० ॥ नट रंगशूर वसे तिहा,सबल गुणी कलावत ॥ सु० ॥ज्ञा०॥१२॥ तस घर पुत्र सोहामणो, रोहक नामें एक बाल ॥ सु० ॥ लघुवयमा माता मुइ,मन कपन्यु दुःख असराल ॥ सु० ॥ज्ञा०॥१३॥ रुक्मिणी नामें बीजी वरी, तस जनकें हो तरुणी सार ॥ सु० ॥ यौवन मद उन्मत्त थइ, न गणे रोहकने लगार ॥ सु० ॥ज्ञा०॥१४॥ शोक्य अने वली शोक्यना,जगमाहि कुवाहला होय ॥ सु० ॥ बालपणे माता मरे, जग ए सम दुःख न कोय ॥ सु० ॥ज्ञा०॥१५॥ रोहक चिते हो माहरी, जो माय मुई इण वार ॥ सु०॥ ए रुक्मिणी गणती नथी,मुज मानवी मात्र लगार ॥सु०॥ज्ञा०॥१६॥ रोहक कोप्यो एम कहे, न करे तु मुफ सन्नाल ॥ सु० ॥ पण आगल रूडु नहीं, जोजे हवे रूडे निहाल ॥ सु० ॥ज्ञा०॥१७॥ सा त्रटकी बोली तिहा, अरे शु शिशु तुफथी थाय ॥ सु० ॥ तुफ रूठे तूठे किस्यु, तुफ

तेहमां ए अतिहि अवञ्च हो ॥ मोहराजा मोहराजा ए रागरूपें रह्यो जी ॥ १५ ॥ कह्यो पहेलो कह्यो पहेलो हो आलस नामथी, मोह बीजे मोह बीजे हो त्रीजे अवर्ण हो ॥ दन चोथो दन चोथो हो क्रोध ए पांच मो जी ॥ १६ ॥ गंमीजें गंमीजें प्रमाद बठो सही, वली सप्तम वली सत्तम कृपणनो नाव हो ॥ नय अष्टम नय अष्टम शोक नवम कह्यो जी ॥ १७ ॥ वलि दशमुं वलि दशमुं अज्ञानपणुं कह्यु, अग्यारमो अ ग्यारमो कह्यो व्याक्षेप हो ॥ द्वादशमो द्वादशमो कुतूहल वारीयें जी ॥ १८ ॥ सद्गुरुथी ए सद्गुरुथी ए बलीयो कह्यो तेरमो, विषयानो विषयानो सघले वांक हो ॥ काम नोगें काम नोगें ए दोय शबद नजे जी ॥ १९॥ यडुक्तमागमे ॥ जीवाण नते कामी नोगी गो० जीवा कामीवि नोगी वि से केणघाण नते एव वुच्चइ जीवा कामीवि नोगीवि सोतिंदिय चस्किंदिया इ पडुच्चकामी जिप्निंदिय घाणिंदिय फासिंदियाइ पडुच्च नोगी नेरइयाण नंते कामी नोगी गो० नेरइया कामीवि नोगीवि एव असुरकुमाराण जीव थण य कुमाराण पुढवीकाइयाण नते कामी नोगी गो० नोकामी नोगी नेर इया एव जाव तेइंदियाण चउरिंदियाण कामीवि नोगीवि एव जीव वें माणियाण इत्यादि॥पूर्वढाल॥कहि देशन कहि देशन क्षेमकर विभुजी,विषयानें विषयानें निवारो दूर हो॥तो शिवसुख तो शिवसुख पामी शाश्वतां जी ॥२०॥ प्रभुजीयें प्रभुजीयें प्रकाशी देशना,अडवीशमी अडवीशमी चोथे खम्म हो ॥ ढाल निसुणी ढाल निसुणी हो हृदयमा राखजो जी ॥ २१ ॥८३०॥२९

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर पूढे तिहां, सहस्रायुध नृपनंद ॥ कर जोडी चरणे नमी, नाखो नयनानंद ॥ १ ॥ नगवन् तातें केम लही, पूर्व अपर नववा त ॥ वायुवेगादि खेचर तणी, ते नाखो अवदात ॥ २ ॥

॥ ढालउंगणत्रीशमी ॥

आज हजारी ढोलो आवशे ॥ ए देशी ॥ कहे एम क्षेमकर जगधणी, सानल सहस्रायुध नूप ॥ सुगुण प्राणीजी ॥ ज्ञानरयण जगमा वडुं ॥ तुऊ तातें हो अवधिज्ञानथी, नारव्युं ए नवनु सरूप ॥ १ ॥ सुगु० ॥ ॥ ज्ञा ० ॥ ए आंकणी ॥ प्रभु कहो केता नेद बे तेहना, कर करुणा जगदाधार ॥ जिणंद राय जी, बलिहारी प्रभुनामनी ॥ कहे नेद

वीशें ॥ ए आकणी ॥ एम मनमान्याशु सदा जी, करती होशे केलि ॥ तो हवे ए साथे किसी जी, प्रीति ए विपनीवेल के ॥ र० ॥ २ ॥ कुल लज्जा लोपी इणे जी, न गणी परजव जीति ॥ नारी वेद कुशीलिणी जी, एह थी शु विपरीत के ॥ रम० ॥ ३ ॥ यत ॥ अनूसणो सोहइ वजयारी, अकिंचणो सोहइ दिरकयारी ॥ लज्जाजुआ सोहइ एकपत्ती, बुध्दीजुउ सो हइ रायमती ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ जोवो वातनी वातमा जी, चित्त फरियु ततकाल ॥ ते सामु जोवे नहि जी, भ्रांति वडी चमाल के ॥ र० ॥ ४ ॥ नजर न माफे नाहलो जी, केम दीसे दिल रोप ॥ हसी न वोले हेजशु जी, किण कारण ए शोप के ॥ र० ॥ ५ ॥ आण न लोपी एहनी जी, चालतां एक चित्त ॥ रसमाहि केम रूपणु जी, पडीयु आवि अचित के ॥ र० ॥ ६ ॥ परनर साथे नवि रमी जी, वु सूधी निकलंक ॥ काली कीकी किम थइ जी, कंत तणी विण वक के ॥ र० ॥ ७ ॥ दिवस वे चार थया जिस्ये जी, न शम्यो रोप लगार ॥ अलगी शय्या लेइ रह्यो जी, मन उचे नर तार के ॥ र० ॥ ८ ॥ यत ॥ आज्ञाजंगोनरेंद्राणा, गुरूणा मान मर्दनम् ॥ पृथक् शय्या च नारीणा, मशस्त्रवध उच्यते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ एम जूरे वेठी घणु जी, गलहत्थो देइ गाल ॥ एहवे रमतो आवीयो जी, नाहानो रोहक वाल के ॥ र० ॥ ए ॥ आवीने कहतो रह्यो जी, कां रोवे एम मात ॥ ते कहे मुज उपर घणु जी, रीसाणो तुज तात के ॥ र० ॥ १० ॥ वत्स काइ जाण्युं होवे जी, तो कहे मुजने साच ॥ ताहरी गति तुहिज लहे जी, कहे उघडतो वाच के ॥ र० ॥ ११ ॥ चमकी चिंते चित्तमा जी, दीसे एह बलाय ॥ कर जोडी एम वीनवे जी, वत्स तु ताहरी माय के ॥ र० ॥ १२ ॥ थाउ प्रसन्न तुज उपरें जी, नहि लोपु तुज आण ॥ करि अनुकूल पिता हवे जी, हठ मह्ल्यो में जाण के ॥ र० ॥ १३ ॥ रोहो कहे म करो तुमें जी, चिंता किसी मनमाहि ॥ पुनरपि पुत्र पिता वने जी, वेग रयणीयें त्यांहि के ॥ र० ॥ १४ ॥ चटकी चिहु दिशि चांदनी जी, वात करे ते वोय ॥ वोली उठयो आकलो जी, जाये ए नर कोय के ॥ र० ॥ १५ ॥ जनक कहे किहां मुजने जी, देखाडो ते लठ ॥ निज करशुं तनुछांहडी जी, वतलावे ते जम के ॥ र० ॥ १६ ॥ ठाया नर ए तो सही जी, किहां छे ते नर धीठ ॥ रोहो कहे में पूरवें जी, एहवो

जेवो हो नावे दाय ॥सु०॥ज्ञा०॥१७॥ वचन सुणी अनिमाननुं,मन चिंते रोहक बाल ॥ सु० ॥ विण मान उतारे हो एहनु, मुज जन्म जीवित आल ॥सु०॥ज्ञा०॥१ए॥ यत ॥ अवध्यकोपस्य निहतुरापदां, नवति वश्याः स्वयमेव सपद ॥ अमर्षशून्येन जनस्य जतुना, न जातहार्देन नवि हिषा दर ॥ १ ॥ ज्वलितं न हिरण्यरेतस, चयमास्कदति नस्मनां जन ॥ अनिनूतनयादसूनत , सुखमुज्फति न धाममानिन ॥२॥ पूर्वढाल॥ अपराध देइने एह शिरें, मुज जनकने करु अनिष्ट ॥ सु० ॥ एह मान उतारु हो एहनु, तो मुज चिंतित होवे इष्ट ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥२०॥ नवि सुणो हवे बुद्धि औत्पातिकी, करे रोहक ते अधिकार ॥सु०॥ चोथे उंगणत्रीशमी ढालमां, मतिज्ञान तणो विस्तार॥सु०॥ ज्ञा०॥२१॥ सर्वगाथा ॥७५३॥ श्लोक॥३१॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन घरने आगणे, सूता जनक ने जात ॥ यामिनिमां सहसा कहे, अहो अहो नर कोइ जात ॥१॥ घरमाथी कोइ नीसस्यो, कहे पिता देखाड ॥ ते कहे ते कमी गयो, पाम्यो पिता भ्रममांह ॥२॥ रंगशूर मन चिंतवे, अहो मुज कुलटा नारि ॥ वृद्धपणे परण्यो सही, मुजने पड्यो धिक्कार ॥३॥ यत ॥ मूर्खस्य काव्यकरण, गीतमकंठस्य द्यूतमधनस्य ॥ वृद्धस्य विषयवांछा, परिहासपदानि चत्वारि ॥ १ ॥ एकोगोत्रे स नवति पुमान् य , कुटुंब विनर्ति, सर्वस्य हे सुमतिकुमती सपदापन्निमित्ते ॥ स्त्री पुवश्च प्रनवतितरा तस्य गेहं विनष्ट,वृद्धो यूना सह परिचयात्त्यज्यते कामिनीनि ॥२॥ छप्पय ॥ एकां करे अवाज,लाज एकाशु मरे॥एकांसोंपे देह, नेह एकाशु छमे ॥ एकां करे सकेत,एक जाली समजावे ॥ तन मन अतर उंर, एक शिर वाय ढोलावे ॥ कामिनी जाति अवगुण घणा,मीठे बोल न धीजीयें ॥ इसी निर्लज नफट नारिशु, कबू नेह न कीजीयें ॥१॥ कवित ॥ करिकोकउ० ॥ रविचरियं० ॥ जलमये० ॥ इस्यु विचारी नारिशु, थयो विरक्त मन तेह ॥ लाख कह्या गुण एहने, पण नहि मुक्शु नेह ॥ ४ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ उदयापुररी राजरना, म्हें दीठा एक अचना ॥ ए देशी ॥ रंगशूर मन चिंतवे जी, जूठी नारी जात ॥ मुह मीठी वातो करे जी, जहेर गले पुनि वात के ॥ १ ॥ रमणी रूडी राज दीसे, पण ए खोटी विशवा

खूशी थई नृपति एम पूछे, अहो केहनो ए जायो ॥ सेवक कहे रणशूर नटावो, तस सुत रोहक गायो ॥ ६ ॥ बाले वेशें बहु बुद्धिमतो, सकल कलानो ज्ञाता ॥ वात सुणी नरपति मनमाहे, पाम्यो सघली शाता ॥ ७ ॥ घेर आवी नरपति एम चिंते, बुद्धिपरीक्षा कीजे ॥ जो मन माने तो रोहकने, मंत्रीश्वरपद दीजें ॥ ८ ॥ कहेवाडयुं एक नर सघातें, तिण गामें राजाये ॥ बहु द्रव्यें तुम एक द्रव्य केरो, करो प्रासाद उत्साहें ॥९॥ गाम लोक मलिया सहु नेलां, वात विचार ए उंमो ॥ जो नवि कहेवा दीशु उत्तर, मानशे नृपति भूंमो ॥ १० ॥ पण कोइने मति एह न सूजे, चिंतातुर थइ रहिया ॥ रोतो रोहक कहे जनकने, नूख न जाये सही आ ॥ ११ ॥ कहे रणशूर पडख वत्स हमणा, विषमो नृप आदेश ॥ आव्यो ठे तस चिंता महोटी, कहे रोहक कहो लेश ॥ १२ ॥ वात कही सहु ए तव बोल्यो, एहमाहे शुं गूढा ॥ कठो जाउ नोजन काजें, वेग शुं दिखूढा ॥ १३ ॥ पठे कहीश हुं उत्तर एहनो, सहु नोजन करि आव्या ॥ रोहापासे तिणें नृपनरने, सहु साखे समजाव्या ॥ १४ ॥ जा कहेजे तुज नरपति आगल, महोटी शिला इहां एक ॥ तेणे नृपयोग्य मंदिर निपजशे, द्रव्य मूको सुविवेक ॥ १५ ॥ सुणि हरख्यां सहुयें नृप आगल, जइ तिण सेवक नाख्यो ॥ कहे राजेश्वर एह प्रत्युत्तर, तुजने केणें आख्यो ॥ १६ ॥ दीधो उत्तर बालक रोहें, वात सुणी नृप हरख्यो ॥ जेहवो दीठो तेहवोहीज में, इण वातें ए परख्यो ॥ १७ ॥ एक दिवस नृप एक वस्तने, मेहलीने सनलावे ॥ साचवजो ए चारे ने पाणी, मत मत्त दुर्बल थावे ॥ १८ ॥ रोहकने वली पूछे सघला, कहे वृकपास ए बाधो ॥ अधिक नजीकें न कणे दूरें, जतन करी ए साधो ॥ १९ ॥ ते आदेश प्रमाण कखाथी, राय घणुं रीजाणो ॥ एक दिन एक कुर्कुटने मूकी, कहे नृपति सपराणो ॥ २० ॥ एकला एहने युद्ध करावो, कहे रोहक सहु पहेलो ॥ एहना मुख आगल आणीने, मूको दर्पण वहेलो ॥ २१ ॥ तेम कीधुं प्रतिबिंबने निरखी, कुर्कुट जूजण लागो ॥ नृप आदेश प्रमाण कख्यो इम, सहुनो संशय नाग्यो ॥ २२ ॥ तदनंतर तिल शकट नरीने, मोकलियुं नृप गामें ॥ जिण माने तिल तेहिज माने, तेल देवु अम कामें ॥ २३ ॥ कहे रोहक आरीसा पूठें, तिल लीजें ए तोली ॥ सम

इज नर वीठ के ॥ र० ॥ १७ ॥ रंगशूर मन चिंतवे जी, हा हा बुद्धि ॥ विण वांके विनता तजी जी, सबल थयो निर्बुद्धि के ॥ र० १८ ॥ रोषशम्यो मन माहिलो जी, थयो रमणी अनुकूल ॥ चूक्यो अजाणते जी, में कीधु प्रतिकूल के ॥ र० ॥ १९ ॥ रूपमां जोवां रूपणां जी, जामिनी ने जरतार ॥ सुख विलसे ससारनां जी, गणे अवतार के ॥ र० ॥ २० ॥ रुक्मिणी रहे कर जोडीने जी, नवि करे जरपूर ॥ तु वत्स मारे वालहो जी, तुज अला वला रहो दूर के ॥ र० ॥ २१ ॥ पण न करे वेसासडो जी, माय तणी जे शोक्य ॥ जो धीरुं हुं एहने जी, तो फल पामु रोक के ॥ र० ॥ २२ ॥ जोजन करवाने समे जी, बेसे जनकनी साथ ॥ पण मरती ते अहोनिशें जी, राखे सुतने हाथ के ॥ र० ॥२३॥ चोथे खमें त्रीशमी जी, ढाल कही मन रंग ॥ हवे श्रोता निसुणो तुम्हें जी, आगल वहु उछरंग के ॥ र० ॥२४॥८८२॥२५

॥ दोहा ॥

॥ रोहक साथें एकदा, रगशूर निज काम ॥ गयो वज्जेणी नयरीयें, जोवा सरिखु गाम ॥ १ ॥ चोरासी चहुटा जलां, दीपे अति मनमाण ॥ देवजुवन रलियामणा, निरखे तेह सुजाण ॥ २ ॥ क्षिप्रातट बेसारीने, रोहक ने रंगशूर ॥ काज निमित्तें नयरमां, पहोता आनदपूर ॥ ३ ॥ बुद्धि मत रोहो तदा, नगरी तणु स्वरूप ॥ आलेखे निज अकलथी, क्षिप्रातटें अनूप ॥ ४ ॥ तस पोळे थइ पोलीयो, जलो रहियो आप ॥ रेणुमयी नगरी जोइ, मनमां नहिं संताप ॥ ५ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ आख्याननी देशी ॥ तिण अवसर नयरीनो नरपति, आव्यो अल्प परिवारें ॥ अश्व उपर चढियो असवेसर, जोतो ख्याल तेवारें ॥ १ ॥ नयरी अवंती जिहां आलेखी, तिहां दोडीने आवे ॥ तब रोहो आवीने आडो, नरपतिने समजावे ॥ २ ॥ हा हा किहां जाय छे ध सीयो, कां नगरीने जांजे ॥ वाल तुरंगम वहेलो पाछो, गइ करु छु लाजें ॥ ३ ॥ चित्त चमक्यो नरपति इम वोले, वाग तुरंगम केरी ॥ जो साहे तो निरखी जोय, नयरि वज्जेणि जलेरी ॥ ४ ॥ ते कहे हुं नहिं तादृशो चाकर, जा चाल्यो इण वाटें ॥ एतु जे खाइजें जगमा, ते मीठाई माटें ॥५॥

खूशी थई नृपति एम पूछे, अहो केहनो ए जायो ॥ सेवक कहे रगशूर नटावो, तस सुत रोहक गायो ॥ ६ ॥ बाले वेशें बहु बुद्धिमतो, सकल कलानो ज्ञाता ॥ वात सुणी नरपति मनमाहे, पाम्यो सबली शाता ॥ ७ ॥ घेर आवी नरपति एम चिंते, बुद्धिपरीक्षा कीजे ॥ जो मन माने तो रोहकने, मंत्रीश्वरपद दीजे ॥ ८ ॥ कहेवाडयुं एक नर सघातें, तिण गामें राजायें ॥ बहु द्रव्यें तुम एक द्रव्य केरो, करो प्रासाद उत्साहें ॥ए॥ गाम लोक मलिया सहु नेला, वात विचार ए उन्नो ॥ जो नवि कहेवा हीशुं उत्तर, मानशे नृपति मूंनो ॥ १० ॥ पण कोइने मति एह न सूजे, चिंतातुर थइ रहियां ॥ रोतो रोहक कहे जनकने, नूख न जाये सही आ ॥ ११ ॥ कहे रगशूर पडख वत्स हमणा, विषमो नृप आदेश ॥ आव्यो छे तस चिंता महोटी, कहे रोहक कहो लेश ॥ १२ ॥ वात कही सहु ए तव बोल्यो, एहमाहे शुं गूढा ॥ जावो जाउं नोजन काजें, वेग शुं दिङ्मूढा ॥ १३ ॥ पछे कहीश हुं उत्तर एहनो, सहु नोजन करि आव्या ॥ रोहापासे तिणें नृपनरने, सहु साखे समजाव्या ॥ १४ ॥ जा कहेजे तुज नरपति आगल, महोटी शिला इहां एक ॥ तेणें नृपयोग्य मंदिर निपजशे, द्रव्य मूको सुविवेक ॥ १५ ॥ सुणि हरख्या सहुयें नृप आगल, जइ तिण सेवक नाख्यो ॥ कहे राजेश्वर एह प्रत्युत्तर, तुजने केणें आख्यो ॥ १६ ॥ दीधो उत्तर बालक रोहें, वात सुणी नृप हरख्यो ॥ जेहवो दीगे तेहवोहीज में, इण वातें ए परख्यो ॥ १७ ॥ एक दिवस नृप एक वस्तने, मेहलीने सनलावे ॥ साचवजो ए चारे ने पाणी, मत मत्त दुर्बल थावे ॥ १८ ॥ रोहकने वली पूछे सघला, कहे वृकपास ए बाधो ॥ अधिक नजीकें न जणे दूरें, जतन करी ए साधो ॥ १ए ॥ ते आदेश प्रमाण कर्यायी, राय घणुं रीजाणो ॥ एक दिन एक कुर्कुटने मूकी, कहे नृपति सपराणो ॥ २० ॥ एकला एहने युद्ध करावो, कहे रोहक सहु पहेलो ॥ एहना मुख आगल आणीने, मूको दर्पण वहेलो ॥ २१ ॥ तेम कीधुं प्रतिबिंबने निरखी, कुर्कुट जूजण लागो ॥ नृप आदेश प्रमाण कर्यो इम, सहुनो संशय नांग्यो ॥ २२ ॥ तदनंतर तिल शकट नरीने, मोकलियुं नृप गामें ॥ जिण माने तिल तेहिज माने, तेल देवुं अम कामें ॥ २३ ॥ कहे रोहक आरीसा पूठें, तिल लीजें ए तोली ॥ सम

आरीसे तेल समर्प्यो, सांजलि सहुयें तोली ॥ २४ ॥ ते तिम कारिज सीधु, राय तणुं दिल उल्लस्युं ॥ वली मगावे वाट वेलुनी, बधन करघु ॥ २५ ॥ रोहें कहाव्यु राजनु कारिज, करवु अमें पण प्रमाण जोवा एक जीरण, मोकलो कटको कोर ॥ २६ ॥ प्रत्युत्तर दीधो पुनरपि, जीरण गज मोकलियो ॥ कहेवाडयुं यत्नें वजो, ए हाथी दुर्बलीयो ॥ २७ ॥ एहनी हकीगत मुज सोंपवी, पण मूउ नवि कहेवो ॥ पालता मूउ तव चिते, लोक शो उत्तर ॥ २८ ॥ रोहें कहायु ए तुम हस्ती, न लिये जल ने चारो ॥ नयणें न जोवे नृप कहे शु मृत, जन कहे तुम अवधारो ॥२९॥ नृप कहेवायुं कूप मोकलजो, ग्राम तणो एक मीठो ॥ रोहो कहे पुर कूपने मूको, एणे मारग नवि दीठो ॥ ३० ॥ नृप कह्यु अग्नि विना मुज पायस, रांधीने तुमें आपो ॥ चूर्णक उपर पायस पाचवी, दीधु टल्यो संतापो ॥ ३१ ॥ चोथे खमें एकत्रीशमी ढालें, बुद्धि परीक्षा कीधी ॥ मति उपर क्षेमकर जिन जी, एहवी देशना दीधी ॥३२॥ सर्व गाथा ॥९१९॥ श्लोक तथा गाथा ॥१५॥

॥ दोहा ॥

॥ बुद्धिमत जाणी जलो, नृप तेडाव्यो पास ॥ विरुद्ध अवस्थायें आवजे, सहुको सुणे उल्लास ॥१॥ स्नान करी मत आवजे, मलेलो पण नावेश ॥ यान चढी नवि आववुं, पालो पण न चलेश ॥ २ ॥ उघाडे मत आवजे, नव शिर ढांक्यु जोय ॥ नवि रात नवि दिवसमा, बिहु पक्षें एक न होय ॥ ३ ॥ नवि छाया नवि आतपें, नवि खाली नवि नेट ॥ जो तु बुद्धिबली अछे, एम मुज आवी नेट ॥ ४ ॥ गाडर उपर ते चडयो, भूतल धरतो पाय ॥ नाही चदन लेपयुत, सध्या काल उत्साह ॥५॥ शुदि पडवे दिन चालणी, शिर परि धरी सुरंग ॥ माटी लेई हाथमा, चाल्यो धरि उछरग ॥ ६ ॥ नृपपर्षद ते आवीने, करे नृपने परणाम ॥ भेटण [illegible]पगलें, माटीमय अभिराम ॥ ७ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

[illegible] रूपने जी ॥ ए देशी ॥ नृप पूछे रोहाप्रत्यें जी, तें [illegible] कहे जगमां तावडी जी, ए माटी शुणगेह ॥ १ ॥ [illegible] एं ए काम, बुद्धि जग माने घणु जी, बुद्धियकी अछे

तेर्ह पूछ्
ज्ञाक्यो

ताम ॥ सुणो० ॥ ए आंकणी ॥ स्वागत पूछी नृप घणुं जी, दीधु बहु सन्मान ॥ पर्षदमांहे प्रशसीयो जी,सबलो बुद्धिनिदान ॥ सु० ॥ २ ॥ बहु रत्ना वसुधा कही जी, तेहमा नहि सदेह ॥ नीतिशास्त्रमां एहवु जी, वचन कह्यु धरि नेह ॥ सु० ॥ ३ ॥ यत ॥ दाने तपसि शौर्ये च, विज्ञाने विनये नये ॥ विस्मयोनैव कर्त्तव्यो, बहुरत्ना वसुंधरा ॥ १ ॥ वाजिवारणलोहाना, काष्ठपाषाणवाससाम् ॥ नारीपुरुषतोयाना, मतर महत्तरम् ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ अगरक्षक करी थापियो जी, रोहाने तिण रात ॥ नृप कपटें सूतो तदा जी, तें सूतो साक्षात ॥ सु० ॥ ४ ॥ पहेले पहोरें जगाडीयो जी, रोहा ऊघे रे केम ॥ चितु छु कहो कुण करे जी, बकरी लींडी एम ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ कहे रोहा मुज आगलें जी, जो जाणी होय वात ॥ कहे राजन इम जाणियें जी, एहने कोठे वात ॥ सु० ॥ ॥ ६ ॥ बीजे पीपल पाननोजी, आदि अंत गुरुजाव ॥ नृप पूछे निर्णय कह्यो जी, ए बेहु सरखे जाव ॥ सु० ॥ ७ ॥ तिमहीज त्रीजा याममा जी, खिल्लहडी सदेह ॥ श्वेत श्याम तनु पुछनो जी, सम पण कहे गुण गेह ॥ सु० ॥ ८ ॥ चोथे प्रहरे कटकें जी, बींध्यो बोले रे ताम ॥ पूछुं कहो मुज केटला जी,जनक तुम्हारा स्वामि ॥ सु० ॥ ९ ॥ रे पापी शुं बोलीयो जी, केता जनक हवत ॥ सत्य कहु छुं ताहरे जी, पंच जनक छे सत ॥सु०॥१०॥ ते केहा कहे राजवी जी, धनद रजक अलि होय ॥ कहुं छु मातंग पांचमो जी, एहमां जूठ न कोय ॥ सु० ॥ ११ ॥ कहे नृप तें केम जाणीया जी, तुज गुणथी राजिद ॥ ते गुण केहा तव कहे जी, रोहो धरि आनद ॥ सु० ॥ १२ ॥ परजा पाले नृप सही जी, धनद घणे धनदान ॥ रजक रुठ धनने हरे जी,कटक अलिनु निदान ॥सु०॥१३॥ गाढ कोप करवाथकी जी, कहु चमाल नरेश ॥ निश्चय करवा मायने जी, आवी पूछे महीश ॥ सु० ॥ १४ ॥ माय कहे नाह्या पछी जी, सम कालें दोय दीठ ॥ रजक अलि सुणि समजीयो जी, ए बुद्धिमत गरिष्ठ ॥ सु० ॥ १५ ॥ रायें सन्मान्यो घणु जी, शतमत्रीमाहे मुख्य ॥ तेहने कीधो बुद्धिथी जी, पाम्यो इणपरें सुख ॥ सु० ॥ १६ ॥ बुद्धि पहेली ऊपर कह्यो जी, रोहकनो दृष्टांत ॥ चोथे खडें बत्रीशमी जी, ढाल सुणो सहु सत ॥ सु० ॥ १७ ॥९४३॥ सर्व गाथा ॥ श्लोक तथा गाथा ॥३७॥

आरीसे तेज समर्प्यो, सांजलि सहुयें तोली ॥ २४ ॥ ते तिम कारिज सीधु, राय तणुं दिल उल्लस्युं ॥ वली मगावे वाट वेलुनी, वधन करछु ॥ २५ ॥ रोहें कहाव्यु राजनुं कारिज, करवु अमें पण प्रमाण जोवा एक जीरण, मोकलो कटको कोर ॥ २६ ॥ प्रत्युत्तर दीधो पुनरपि, जीरण गज मोकलियो ॥ कहेवाड्युं यत्नें वजो, ए हाथी दुर्बलीयो ॥ २७ ॥ एहनी हकीगत मुज सोंपवी, पण मूठ नवि कहेवो ॥ पालता मूठ तव चिते, लोक शो उत्तर ॥ २८ ॥ रोहें कहायु ए तुम हस्ती, न लिये जल ने चारो ॥ नयणें न जोवे नृप कहे शुं मृत, जन कहे तुम अवधारो ॥२९॥ नृप कहेवायुं कूप मोकलजो, ग्राम तणो एक मीठो ॥ रोहो कहे पुर कूपने मूको, एणें मारग नवि दीठो ॥ ३० ॥ नृप कह्यु अग्नि विना मुज पायस, रांधीने तुमें आपो ॥ चूर्णक ऊपर पायस पाचवी, दीधु टल्यो सतापो ॥ ३१ ॥ चोथे खर्मे एकत्रीशमी ढालें, बुद्धि परीक्षा कीधी ॥ मति उपर क्षेमकर जिन जी, एहवी देशना दीधी ॥३२॥ सर्व गाथा ॥९१९॥ श्लोक तथा गाथा ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ बुद्धिमत जाणी नलो, नृप तेडाव्यो पास ॥ विरुद्ध व्यवस्थायें आवजे, सहुको सुणे उल्लास ॥१॥ स्नान करी मत आवजे, महेलो पण नावेश ॥ यान चढी नवि आववुं, पालो पण न चलेश ॥ २ ॥ कपाडे मत आवजे, नव शिर ढाक्यु जोय ॥ नवि रात नवि दिवसमा, बिहु पर्के एक न होय ॥ ३ ॥ नवि छाया नवि आतपें, नवि खाली नवि नेट ॥ जो तु बुद्धिबली अछे, एम मुज आवी नेट ॥ ४ ॥ गाडर ऊपर ते चढ्यो, नूतल धरतो पाय ॥ नाही चवन लेपयुत, सध्या काल उत्साह ॥५॥ छवि पडवे दिन चाजणी, शिर परि धरी सुरंग ॥ माटी लेई हाथमां, चाल्यो धरि उछरंग ॥ ६ ॥ नृपपर्षद ते आवीने, करे नृपने परणाम ॥ नेटण [illegible]आगलें, माटीमय अनिराम ॥ ७ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

[illegible]रूपने जी ॥ ए देशी ॥ नृप पूछे रोहाप्रत्यें जी, तें [illegible] कहे जगमां तावडी जी, ए माटी गुणगेह ॥ १ ॥ [illegible]ी ए काम, बुद्धि जग माने घणु जी, बुद्धिपकी लहे

तेथे मूं [illegible]
लाव्यो [illegible]

आव्या वनह मकार रे, देव करे जयकार रे ॥ स० ॥ ३ ॥ प्रजुचरणे कर जोडिने, कहे वज्रायुध नूप रे ॥ तारो त्रिभुवन तातजी, तहारु अकल सरूप रे ॥ पडिया नवजल कूप रे, तु अवलंबनरूप रे ॥ केवलज्ञान अनूप रे, टाल्यो मोह विरूप रे ॥ स० ॥ ४ ॥ ले दीक्षा प्रजुजी कने, वज्रायुध नरदेव रे ॥ राज्य तजी समता नजी, थया ततक्षण धर्मदेव रे ॥ सारे सुर नर सेव रे, नवि राखे अहमेव रे, साची जेहनी टेव रे, अहोनिश चरणनी हेव रे ॥ स० ॥ ५ ॥ शम दमवता रे साधु जी, विचरे मही ततकाल रे ॥ उग्र विहारने आदरी, पाले मुनि उजमाल रे ॥ षट कायना प्रतिपाल रे, विपयथकी मन वाल रे, मदने मीण ज्युं गाल रे, वयण न नाखे आल रे ॥ स० ॥ ६ ॥ एक दिन मुनिवर आवीया, वज्रायुध रुपिराय रे ॥ सिद्धगिरिनी हो ऊपरें, रहिया काउस्सग्ग ठाय रे ॥ वज्र परें दृढकाय रे, टाल्या डुरित अपाय रे, एकाकी असहाय रे, ध्यान धर्म चित्त लाय रे ॥ स० ॥ ७ ॥ एक वरस पडिमा तणो, अनिग्रह मनमांहे धार रे ॥ मेरु शिखर जेम स्थिर रह्या, वज्रमुनि गुणधार रे ॥ सूधा श्रीअणगार रे,वदू हु वारो वार रे,धन्य तेहनो जमवार रे,गुणमणिरयण नमार रे ॥स०॥८॥ एहवे हयग्रीव सुत हुता, मणिकुन मणिध्वज नाम रे ॥ बहु नव नमता रे ते हुवा, सुर अनुपम तनु धाम रे ॥ तिण दीठो मुनि ताम रे, रह्यो निश्चल एक ठाम रे, जाग्यु वैर निकाम रे, करे उपसर्ग उद्दाम रे ॥ स० ॥ ९ ॥ तीखी दाढे फाडता, मुख नीषण विकराल रे ॥ एक सिंह बीजो रे वाघलो, थइ आव्या ततकाल रे ॥ पडिया मुनिने ख्याल रे, दलें उखेडे खाल रे, मुनि चिंते उजमाल रे, रखें जीव थाये सुकुमाल रे ॥ ॥ स० ॥ १० ॥ मुनिवर धारा हो ध्याननी, तिम तिम वाधे रे जोर रे ॥ हाथी थइ वली आविया, साथें विछु करे सोर रे ॥ गुदे दंतनी कोर रे, जीव तु थाजे कठोर रे, डुःख सह्या नरकें घोर रे, कीधा कर्म ए दोर रे ॥ स० ॥ ११ ॥ थया वली साप ने सापिणी,फण मांमी फुफुआड रे ॥ आवी समीपें हो साधुने,पग वींटे जिम जाड रे ॥ कड कड नाजे हो हाड रे, मुनि रह्या ध्यानस्थ मांम रे, नाखे कर्म उपाड रे, पूरे मनहरुल्हाड रे ॥ स० ॥ १२ ॥ धन्य वज्रायुध साधुजी, नहिं मन रागनो अंश रे ॥ दूर कर्यो तिम क्रोधने, दीपायो निजवंश रे ॥ सकल मुनि अव

॥ दोहा ॥

॥ बीजी वैनयिकी कही, गुरुविनयें जे हुत ॥ थोडी पण दीसे गुरु उपकार महत ॥ १ ॥ यत ॥ शुचिर्भूपय० ॥ विनय वडुं कारण कह्यु, विद्यानें अधिकार ॥ शोन्ने विनयथकी नणुं, शास्त्रमांहे ए सार ॥ २ ॥ यत ॥ पुस्तक प्रत्ययाधीत, नाधीतं गुरुसन्निधौ ॥ सन्नामध्ये शोन्नते, जारगर्ना इव स्त्रिय ॥ १ ॥ यदुक्तमागमे ॥ विणयाउ नाण हि, नाणाउ दसण दसणाउ चरण ॥ चरणेहितो मोरको, मोरके सुरक अणाबाहं ॥१॥ करिणीपदगायक तणा, बात्र तणो उपदेश ॥ ए बुद्धि ऊपर जाणजो, शास्त्रथकी सुविशेष ॥ ३ ॥ घट चित्रादि क्रिया नली, शिल्पी तणु विन्नाण ॥ कर्मथकी जे ऊपजे, सा कार्मिकी वखाण ॥ ४ ॥ सर्ववस्तुकृत निश्चया, जे परिणाम वशेण ॥ बुद्धि होय पारिणामिकी, वयरस्वामी परें जेण ॥ ५ ॥ सघली बुद्धि ऊपर कह्या, आगममां सबंध ॥ ग्रंथ तणुं गौरव हुवे, न कह्या तस परबंध ॥ ६ ॥ मति आश्ये सहचारियुं, प्रगटे श्रुत घटमाहि ॥ वस्तु त्रैकालिक जे नणे, वेदीजें जगमांहि ॥७॥ काल असख्य तणा लहे, अतीत अनागत नाव ॥ अवधि सहित चिहुं दिशि हुवे, अवधिनाण सन्नाव ॥ ८ ॥ नाव मनोगत जाणीयें, सज्ञी तणा अशेष ॥ जिनें मन पर्यव ते कह्युं, चोथु ज्ञानविशेष ॥ ए ॥ नासक लोकालोकनु, निरावरण निरुपाधि ॥ प्रगटे केवल पांचमु, विलसे सहज समाधि ॥ १० ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ राम नणे हरि ऊठीयें ॥ ए देशी ॥ क्षेमकर जिनजी कहे, सुण सहस्रायुध सार रे ॥ ज्ञान अवधियी रे जाणिया, वज्रायुधें अवतार रे ॥ तहत्ति करी तेणिवार रें, चरण नमे सुखकार रें, वज्रायुध हितकार रे, नवजल पार उतार रे ॥ १ ॥ सहज सुहालो रे राजवी ॥ ए आंकणी ॥ प्रभु वांदी घरे आवीयो, वज्रायुध नरराय रे ॥ षट् खंम केरो रे राजियो, ठवे सुतने निज ठाय रे ॥ सहस्रायुध सुखदाय रे, पोतें थयो निर्माय रे, समता साथें सहाय रे, संयम लेवा उत्साह रे ॥ सहज० ॥२॥ चार सहस राणी नली, राजन चार हजार रे ॥ साथें शूरा रे नीसर्या, धन्य तेहना अवतार रे ॥ नव ए जाण्यो असार रे, सातशें पुत्र परिवार रे,

आव्या वनह मकार रे, देव करे जयकार रे ॥ स० ॥ ३ ॥ प्रभुचरणे कर जोडिने, कहे वज्रायुध नूप रे ॥ तारो त्रिभुवन तातजी, तह्यारुं अकल स्वरूप रे ॥ पडिया नवजल कूप रे, तु अवलंबनरूप रे ॥ केवलज्ञान अनूप रे, टाल्यो मोह विरूप रे ॥ स० ॥ ४ ॥ ले दीक्षा प्रभुजी कने, वज्रायुध नरदेव रे ॥ राज्य तजी समता नजी, थया ततक्षण धर्मदेव रे ॥ सारे सुर नर सेव रे, नवि राखे अहमेव रे, साची जेहनी टेव रे, अहोनिश चरणनी हेव रे ॥ स० ॥ ५ ॥ शम दमवता रे साधु जी, विचरे मही ततकाल रे ॥ उग्र विहारने आदरी, पाले मुनि उजमाल रे ॥ षट कायना प्रतिपाल रे, विषयथकी मन वाल रे, मदने मीण ज्यु गाल रे, वयण न नाखे आल रे ॥ स० ॥ ६ ॥ एक दिन मुनिवर आवीया, वज्रायुध रुषिराय रे ॥ सिद्धगिरिनी हो उपरे, रहिया काउस्सग्ग ठाय रे ॥ वज्र परें दृढकाय रे, टाल्या दुरित अपाय रे, एकाकी असहाय रे, ध्यान धर्म चित्त लाय रे ॥ स० ॥ ७ ॥ एक वरस पडिमा तणो, अभिग्रह मनमांहे धार रे ॥ मेरु शिखर जेम स्थिर रह्या, वज्रमुनि गुणधार रे ॥ सूधा श्रीअणगार रे, वंदू हु वारो वार रे, धन्य तेहनो जमवार रे, गुणमणिरयण नंमार रे ॥स०॥ ८॥ एहवे हयग्रीव सुत हुता, मणिकुंभ मणिध्वज नाम रे ॥ वहु नव नमता रे ते हुवा, सुर अनुपम तनु धाम रे ॥ तिण दीठो मुनि ताम रे, रह्यो निश्चल एक ठाम रे, जाग्यु वैर निकाम रे, करे उपसर्ग उद्दाम रे ॥ स० ॥ ९ ॥ तीखी दाढे फाडता, मुख नीषण विकराल रे ॥ एक सिंह दूजो रे वाघलो, थइ आव्या ततकाल रे ॥ पडिया मुनिने ख्याल रे, दतें उखेडे खाल रे, मुनि चिते उजमाल रे, रखें जीव थाये सुकुमाल रे ॥ ॥ स० ॥ १० ॥ मुनिवर धारा हो ध्याननी, तिम तिम वाधे रे जोर रे ॥ हाथी थइ वली आविया, साथें विहु करे सोर रे ॥ गुदे दतनी कोर रे, जीव तु थाजे कठोर रे, दुःख सह्या नरकें घोर रे, कीधां कर्म ए दोर रे ॥ स० ॥ ११ ॥ थया वली साप ने सापिणी, फण मांमी फूफूआड रे ॥ आवी समीपें हो साधुने, पग वींटे जिम जाड रे ॥ कड कड नाजे हो हाड रे, मुनि रह्या ध्यानछु माम रे, नाखे कर्म उपाड रे, पूरे मनह रुल्हाड रे ॥ स० ॥ १२ ॥ धन्य वज्रायुध साधुजी, नहिं मन रागनो अश रे ॥ दूर कर्यो तिम क्रोधने, दीपायो निजवश रे ॥ सकल मुनि अव

॥ दोहा ॥

॥ बीजी वैनयिकी कही, गुरुविनये जे हुत ॥ थोडी पण दीसे गुरु उपकार महत ॥ १ ॥ यत ॥ शुचिर्भूपय० ॥ विनय वडुं कह्यु, विद्यानें अधिकार ॥ शोभे विनयथकी नएयु, शास्त्रमांहे ए ॥ २ ॥ यत ॥ पुस्तक प्रत्ययाधीतं, नाधीतं गुरुसन्निधौ ॥ सनामध्ये शोभते, जारगर्भा इव स्त्रिय ॥ १ ॥ यदुक्तमागमे ॥ विणयाउ नाण नाणाउ दसण दसणाउ चरण ॥ चरणेहितो मोरको, मोरके सुरक अणाबाहं ॥ २ ॥ करिणीपदगायक तणा, ठात्र तणो उपदेश ॥ ए बुद्धि ऊपर जाणजो, शास्त्रथकी सुविशेष ॥ ३ ॥ घट चित्रादि क्रिया जली, शिल्पी तणु विज्ञाण ॥ कर्मथकी जे ऊपजे, सा कार्मिकी वखाण ॥ ४ ॥ सर्ववस्तुकृत निश्चया, जे परिणाम वशेण ॥ बुद्धि होय पारिणामिकी, वयरस्वामी परें जेण ॥ ५ ॥ सघली बुद्धि ऊपर कह्या, आगममा सबंध ॥ ग्रंथ तणुं गौरव हुवे, न कह्या तस परबंध ॥ ६ ॥ मति आश्रये सद्दारियुं, प्रगटे श्रुत घटमांहि ॥ वस्तु त्रैकालिक जे नणे, वेदीजें जगमांहि ॥७॥ काल असरव्य तणा लहे, अतीत अनागत नाव ॥ अवधि सहित चिहुं दिशि हुवे, अवधिनाण सङ्गाव ॥ ८ ॥ नाव मनोगत जाणीयें, सङ्गी तणा अशेष ॥ जिनें मन पर्यव ते कह्यु, चोथुं ज्ञानविशेष ॥ ए ॥ नासक लोकालोकनुं, निरावरण निरुपाधि ॥ प्रगटे केवल पांचमु, विलसे सहज समाधि ॥ १० ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ राम नणे हरि कठीयें ॥ ए देशी ॥ क्षेमकर जिनजी कहे, सुण सहस्रायुध सार रे ॥ ज्ञान अवधिथी रे जाणिया, वज्रायुधें अवतार रे ॥ तहत्ति करी तेणिवार रे, चरण नमे सुखकार रे, वज्रायुध हितकार रे, नवजल पार उतार रे ॥ १ ॥ सहज सुहालो रे राजवी ॥ ए आंकणी ॥ प्रजु वादी घरे आवीयो, वज्रायुध नरराय रे ॥ षट् खम्ड केरो रे राजियो, ठवे सुतने निज ठाय रे ॥ सहस्रायुध सुखदाय रे, पोतें थयो निर्माय रे, समता साथें सहाय रे, सयम लेवा उत्साह रे ॥ सहज० ॥२॥ चार स हस राणी नली, राजन चार हजार रे ॥ साथें शूरा रे नीसर्या, धन्य तेहना अवतार रे ॥ नव ए जाण्यो असार रे, सातशें पुत्र परिवार रे,

णी, एम अनेक जस नाम ॥ प्रह् ऊठी नित्य समरतां, सीझे वांछित काम ॥ ३ ॥ पिहिताश्रव नामे नला, ते प्रभुना गणधार ॥ एकदिन आवि समोसखा, चरण करण गुणधार ॥ ४ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

॥ आज हु तो अजजइ रे वहेनी ॥ ए देशी ॥ श्रीसहस्रायुध रे स्वामी, तुम्हने अरज करु शिर नामी ॥ श्री स० ॥ ए आकणी ॥ वनपालक उजाणो आवी, दीधी हर्षे वधामणी लावी ॥ श्री स० ॥ १ ॥ आज मुझ वनमा रे आव्या, श्रीपिहिताश्रव गणधर नाव्या ॥ श्री० ॥ २ ॥ उपशम रसना रे दरिया, मुनि पट्काय तणा पीयरीया ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जोता मुझ मन रे वसीया, साम्नलि नूरमणीना रसीया ॥ श्री० ॥ ४ ॥ राज्य सहु छे रे सारु, पण ए मुनिनु दरिसण प्यारु ॥ श्री० ॥ ५ ॥ वात सुणी सहस्रायुध राया, करवा निर्मल आपणी काया ॥ श्री० ॥६॥ वहु जन साथे रे आया, वांदण श्री गणधरना पाया ॥ श्री० ॥ ७ ॥ तीन प्रदक्षिण रे देवे, वांदी वेसे मुनिपद सेवे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ कहे गणधर गुण धरीयें अगें, परहरीयें परमाद असगें ॥ श्री० ॥ ए ॥ पच ने आठनी सख्यायें कहीयें, क्षेमकर जिनवाणी सद्दहीयें ॥श्री०॥१०॥ एहनें सेव्ये वहु थया दुखीया, जिणे ए मूक्या ते सहु सुखीया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ यत ॥ प्राणीनामतरस्थायी, नह्यालस्य समोरिपु ॥ नास्त्युद्यमसम मित्र,य कृत्वा नावसीदति ॥१॥ पूर्वढाल ॥ रहे अनादिनो विषयनी वगमा,ते हनु कारण कामिनी जगमा ॥ श्री० ॥ १२ ॥ यदुक्त ॥ स्मितेन नावे न च लज्जया निया, पराङ्मुखैरर्धकटाक्षवीक्षितै ॥ वचोन्निरीर्ष्याकलहेन लीलया, समस्तनावै खलु वधन स्त्रिय ॥ २ ॥ सत्य जना वच्मि न पक्षपाता, लोकेषु सर्वेष्वपि तथ्यमेतत् ॥ नान्यन्मनोहारि नितंविनीन्यो, दुखैकहेतुर्न च कश्चिदन्य ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ इणपरें निसुणी गणधर वाणी, सहस्रायुध कहे जोडी पाणी ॥ श्री० ॥ १३ ॥ तु मुझ तारक रे मलियो, आजथी मह्यारो दाहाडो वलियो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ प्रभु मुझने कीजें हवे चेलो, वाधे माहरो पुण्यनो वेलो ॥ श्री० ॥ १५ ॥ अनुक्रमें तात साधुने मलीया, मनना सयल मनोरथ फलीया ॥ श्री०

तंस रे, गुण उज्ज्वल जिम हंस रे, नहि प्रमादनो अंश रे, करे सहु प्रशंस रे ॥ स० ॥ १३ ॥ राक्षस ने वली राक्षसी, रूप करी अति रे ॥ पासें आवी हो साधुने, बीवरावे परचम्ड रे ॥ रोष चढया दोष रे, साधु चिंते घमम्ड रे, निमित्त मत्यु उद्दम्ड रे, कर्म कस्यु शत खंम रे, ॥ स० ॥ १४ ॥ एहवे आवी तिलोत्तमा, रंना दोय रसाल रे ॥ तणी रे इंद्राणीयो, रूपें ऊाकजमाल रे ॥ वज्रायुध मुनि नाल रे, जोडी निज नाल रे, वदन काज विशाल रे, आवी ते ततकाल रे ॥ स० ॥ १५ ॥ बीहिना देवी रे देखीने, नासण लाग्या रे ताम रे ॥ तरक्या देवीयें अति घणा, का रे डुष्ट अलाम रे ॥ कीधु तुमें कांइ काम रे, खोई निज नव माम रे, जाशो डुर्गति गाम रे, वेगा जाउ तुम नाम रे ॥ स० ॥ १६ ॥ वांदी मुनिवर पावला, कर्नी जोडीने हाथ रे ॥ जय वज्रायुध मुनीश्वरा, शमतानारी नाथ रे ॥ क्रोध कस्यो जिण मात रे, साचा शिवपुर साथ रे, मद कीधो तुमें हाथ रे, तरिया नवजल पाथ रे ॥ स० ॥ १७ ॥ मुनिगुण गाये रे मानिनी, नाटक करे बहु रंग रे, वीणा वंश ने वासली, वाये बहु उछरंग रे ॥ वालीने निज अंग रे, मुनि मुख जोती सुचंग रे, वज्रायुधजी नि संग रे, रहिया ध्यान अनंग रे॥ स० ॥ १८ ॥ मुनि स्तवना करि वहीने,समकित निर्मल कीध रे ॥ ते देवी निजस्थानकें, पहोती कारज सिद्ध रे ॥ वज्रायुध सुप्रसिद्ध रे, त्रिहु भुवनें यश लीध रे, अनुनवरस बहु पीध रे, दान अनय जग दीध रे ॥ स० ॥ १९ ॥ एक वरस पडिमा रही, पारी विचरे मुनीश रे ॥ श्रीवज्रायुध साधु जी, नहिं जेहने मन रीश रे ॥ दिन दिन चढती जगीश रे, सेवे सुर नर ईश रे, साधु तणा अहोनिश रे,गुण धारे सत्तवीश रे ॥ स० ॥२०॥ चोथे खंमें ते त्रीशमी, ढाल कही अनिराम रे॥ धन्य मुनि जे एहवा, तेहना सिजशे काम रे॥ नित्य उठी लीजें नाम रे, करो प्रनातें प्रणाम रे, शांतिप्रभु गुणगान रे, हर्षें करे मुनि राम रे ॥ स० ॥२१॥ सर्व गाथा ॥९७४॥ श्लोक ॥ ३९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ श्री क्षेमकर जिनवरु, लक्ष चोराशी मेल ॥ पूरव पाली आवखुं, सिद्ध थया गुणकेलि ॥ १ ॥ सिद्ध बुद्ध परमातमा, पारंगत परमिष्ठ ॥ परमज्योति पावन पुरुष, प्रभु प्रणमु ते इष्ठ ॥ २ ॥ चिदानंद चेतनघ

॥अथ पंचमखंमस्य प्रारंनोऽयम्॥

॥ दोहा ॥

॥ विहरमान जिन वंदियें, सीमंधर नगवंत ॥ युगंधर बीजा नमुं, अतुली बल अरिहंत ॥ १ ॥ त्रीजा बाहु जिणंदने, हुं नित्य करुं प्रणाम ॥ श्री सुजात स्वयप्रन्न वली, रुषनानन गुणधाम ॥ २ ॥ अनंतवीर्य सूरि प्रनो, श्री विशाल जिनराज ॥ वज्रधर चंद्रानन नमो, चंद्रबाहु शिवकाज ॥ ३ ॥ श्री नुजंग ईश्वर विज्ञु, नेमिप्रन्न वीरसेन ॥ महानंद देवजस जयो, अजितवीर्य शुनसेण ॥४॥ ए वीशे वंदी विज्ञु, रचशुं पंचम खंम ॥ कान देइ श्रोता सुणो, ए संबंध अखंम ॥ ५ ॥ नव दशमो श्री शांतिनो, सुणतां मंगलमाल ॥ निज्ञा विकथा परहरी, निसुणो थइ उजमाल ॥६॥ जिनगुण साजलतां थकां, जन्म होय सुपवित्र ॥ बोधिबीज निर्मल करे, मुनिजन कहे महंत ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ माली केरे बागमां, दोय नारिंग पक्के लो ॥ दो० ॥ ए देशी ॥ जंबुपूर्व विदेहमां, पुष्कलावइ विजया लो ॥ अहो पुष्कलावइ विजया लो ॥ नयरी तिहां पुंमरिगिणी, दीपे अति विजया लो ॥ अहो० ॥दी०॥१॥ लाख वसे वासो जिहां, सुख संपत्ति सघली लो ॥अ०॥सु०॥ चोराशी बाजारनी, दीपे कांति सबली लो ॥अ०॥दी०॥२॥ तिहां राजे राजेश्वरु, घनरथजी नामें लो ॥अ०॥घ०॥ अरिहंत पदवीयें उपन्या, सुर नर शिर नामे लो ॥अ०॥सु०॥ ॥३॥ अडहिय सहस लक्कण धरे, अंगें अति चारु लो ॥अ०॥अ०॥ अंतर लक्कण अति घणा, दीपे दीदारु रे लो ॥अ०॥दी०॥४॥ तस गृहिणी दोय सुंदरी, प्रीतिमती पहेली लो ॥ अ० ॥ प्री० ॥ बीजी मनोहरी मानिनी, पिउ नेहें घहेली लो ॥अ०॥ पि० ॥ ५ ॥ हवे वज्रायुधजी चवी, प्रीतिमती नी कूखें लो ॥ अ० ॥ प्री० ॥ मेघ सुपनसूचित सही, अवतरिया सचूखे लो ॥अ०॥अ०॥६॥ रथसुपनें सूचित नलो, सहस्रायुध आयो लो॥अ०॥ स०॥ मनोहरी उयरमां उपन्यो, पुण्यवंत सुहायो लो ॥अ०॥ पु० ॥७॥ पूरण कालें पुत्र दो, दोय राणीयें जाया लो ॥अ०॥दो०॥ उत्तम लक्कणें उंपता, कंचनवर्णकाया लो ॥ अ० ॥ कं० ॥ ८ ॥ मायतणां मन मोहतां,

॥ १६ ॥ शतवल सुतने राज्य भळावी, ले सहस्त्रायुध संयम भावी ॥ श्री०
॥ १७ ॥ थइ गीतारथ विचरे वसुधा, मुखथी बोले वाणी न मुधा ॥ श्री०
॥ १८ ॥ श्रीवज्रायुध साथें विचरे, संवेगरंगमां हैयडुं पसरे ॥ श्री०
॥ १९ ॥ करता विविध तपस्या सारी, प्रतिबोधता बहु नर नारी ॥
श्री० ॥ २० ॥ आव्या नगर ईषत्प्राग्भार ॥ मुनिवर करता दोय विहार
॥ श्री० ॥२१॥ चोथे खंमें चोत्रीशमी ढालें, राम कहे धन्य जे एम पाळे
॥ श्री० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥१०००॥ श्लोक तथा गाथा मळीने ॥४२॥

॥ अथ कलश ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ धन धन ए मुनिवर वड भागी ॥ श्रीवज्रायुध ने सहस्त्रायुध, शुद्ध किरिया गुणरागी ॥ ध० ॥ १ ॥ चोरासी लख योनि ख मावी, सुमति दशा मति जागी ॥ दुष्कृत पाप आलोई सघलां, चउशरणां करे त्यागी ॥ ध० ॥ २ ॥ अणसण पादपोपगम आराधे, मुनिवर दोय वैरागी ॥ अष्टम भव एम योग विलासी, कीर्ति जइ जग वागी ॥ ध० ॥३॥ काल करी नवमे ग्रैवेयकें, कृद्धि बहुली कर लागी ॥ एकत्रीश सागर आयु उपना, बेहु थया सोभागी ॥ध०॥४॥ सुख विलसे अति सुंदर वांछित, भव नवमे अनुषंगी ॥ इव्य जिनेश्वरके गुण गावो, दरिसण गुणके प्रसंगी ॥ ध० ॥ ५ ॥ ते प्रभुके गुणराशिकी रचना, रास कीयो में उमंगी ॥ चोथो खंम संपूरण कीनो, सुणजो सहु एकरंगी ॥ ध० ॥ ६ ॥ मंगलमाला फाकजमाला, सुणतां होवे सुचंगी ॥ श्री सुमतिविजयगुरु चरण प सायें, कीर्त्ति कमला अभंगी ॥ ध० ॥ ७ ॥ सर्वगाथा ॥ १००७ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ४२ ॥ प्रथम खंम गाथा ॥ ४३७ ॥ द्वितीय खंमगाथा ॥ ८२८ ॥ तृतीयखंम गाथा ॥ ८३४ ॥ चतुर्थखंम गाथा ॥ १००७ ॥ चारे खंमनी गाथा ॥ ३१०६ ॥ चारे खंमना प्रास्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ११८ ॥ खंम चारनी ढाल ॥ ११३ ॥ इति श्रीशांतिनाथप्रबंधे रासबंधे द्वादशभवनिबंधे आम्रनिपात्याद्यनेकाविमृश्यकारिनृपचरित्रानुविद्धपुरुषसाराधिकारसंबंधोऽष्टमनवमभववर्णननामा चतुर्थः खंमः संपूर्णः ॥ ४ ॥

पुरनो धणी, निहतारि नरिंदनी लो ॥ अ० ॥नि०॥ प्रियमित्रा ने मनोरमा, मेघरथ वर्या सुकनी लो ॥अ०॥मे०॥२६॥ तेहज नृपनी लघु कनी, दृढर थनें आपी लो ॥अ०॥दृ०॥ सुमतिनामें सुखदायिनी, रतिरसनी वापी लो ॥अ०॥ र० ॥ २७ ॥ सुख विलसत ससारनां, मेघरथजीनी जाया लो ॥ अ०॥मे०॥ सुत नदिपेण मेघसेन ठे, प्रसव्या सुखदाया लो ॥अ०॥प्र०॥ २८॥ दृढरयने एक सुत थयो, रथसेन विचारी लो ॥ अ० ॥ र० ॥ ते त्रणे जणे एकठा, बुद्धि सहुनी सारी लो ॥अ०॥बु०॥२ए॥ सुख सपत्ति वि लसे घणी, अहो पुएयनी लीला लो ॥अ०॥पु०॥ नेह घणो वहु बधवने, रहे अहोनिश नेला लो ॥अ०॥र०॥३०॥ पहेली हो पंचम खम्नी, ढाल रूडी वखाणी लो ॥अ०॥ ढा० ॥ श्री सुमतिसुगुरु सेवक कहे, धन्य एह कमाणी लो ॥ अ०॥ ध० ॥ ३१ ॥ सर्वगाथा ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ घनरथ राजा एकदा, पुत्र पौत्र परिवार ॥ तखतें बेंठा आवीने, सुदर शोना सार ॥ १ ॥ मेघरथ नांखे तिण समे, निज पुत्रोने आम ॥ वत्स कला मुफ आगलें, परकासो गुणधाम ॥ २ ॥ प्रश्नोत्तर पूठो तुमो, कहो तस उत्तर सार ॥ जनकवचन सुणी बोलियो, लघु बधव तेणि वार ॥३॥ तद्यथा ॥ श्लोक ॥ कथ सवोध्यते ब्रह्मा,दानार्थे धातुरत्र क ॥ कः पर्यायश्च वाक्याना,कोवाऽलकरण सताम् ॥१॥ ज्येष्ठ कहे सुण बाधवा,एहनो उत्तर खास ॥ " कलाज्यास " इति वली, कहे लघु बधव उल्लास ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ द्वितीय प्रश्न ॥ दम्नीति कथ पूर्वे,महाखेदे क उच्यते ॥ कोऽवलाना गतिर्लोक, पाल क पचमोमत ॥२॥ ज्येष्ठ कहे ए प्रश्न कसु, "महिपति" एवु नाम ॥ हवे हु पूछु ते कहो, मेघसेन अनिराम ॥५॥ तद्यथा तृतीयप्रश्न ॥ श्लोक॥ किमाशीर्वचन राज्ञ,का शत्रोस्तनुमम्न ॥ क कर्त्ता सुख ड खानां, पात्र च सुकृतस्य किम् ॥३॥ ए उत्तर देवा नणी, अणजाण्या सहु कोय ॥ मेघरथजी तव कहे, "जीवरक्षाविधि" जोय ॥ ६ ॥ पुनरपि मेघरथेनोक्त ॥ श्लोक॥ सुखदा का शशाकस्य, मध्ये च भुवनस्य क ॥ निषेधवाचक कोवा, का ससारविनाशिनी ॥ ४ ॥ कहे घनरथ जी "नावना", पद चिहु प्रश्न थाय ॥ उत्तर एवो सांजली, सहु हरख्या मनमांहि ॥७॥ इण विनोद एहवो कर्यो, प्रश्नोत्तरनो सार ॥ इण अवसर जे नीपन्युं, ते निसुणो नर नारि ॥ ८ ॥

रूपें रगीला लो ॥अ०॥रू०॥ मुख पूरण शारदशशी, रतिकांत गर्वीला लो ॥अ०॥र०॥९॥ नाम धरे उत्सव करी, "मेघरथ" "दृढरथजी" लो॥अ०॥मे०॥ सज्जन सहुने वालहा, टाले अनरथ जी लो॥अ०॥टा०॥१०॥ गिरि चंपक परें वाधता, पच धावें पालीता लो॥अ०॥प०॥ योग्य कला अभ्यासने, सुख मां लालिता लो ॥अ०॥सु०॥११॥ अध्यापक पासें वन्ने, नणवाने मूक्या लो ॥अ०॥न०॥ सकल कला शीखे तिहां, कोइ वात न चूक्या लो ॥अ० को० ॥ १२ ॥ पुरुष तणी वहोंतेर कला, रूडी अभ्यासें लो ॥ अ०॥रू०॥ लिखित गणित आलेख्यनी, नाटय गीत सरासे लो ॥अ०॥ना०॥१३॥ वादित स्वर तिम द्यूत ए, अन्न पान विधि जाणो लो ॥अ०॥अ०॥ शयन आनू षणविधि नली, आर्या गाथा वखाणो लो ॥अ०॥आ०॥१४॥ गीति प्रहेलिका श्लोक ए, गधयुक्तिने कहीयें लो ॥अ०॥ग०॥ तरुणीप्रसाधन लक्षणों, नर स्त्री हय लहियें लो ॥अ०॥न० ॥ १५ ॥ गजलक्षण वावीशमी, गोलक्षण रूडां लो ॥ अ० ॥गो०॥ ताम्रचूड लक्षण नला, मींढना नहिं कूडां लो ॥अ०॥ मीं०॥१६॥ चक्र छत्र मणि दमना, काकिनी असि केरा लो ॥ अ० ॥ का० ॥ चर्मलक्षण ए प्रथमा, दाख्या छे नलेरा लो ॥ अ० दा०॥ १७ ॥ चइ सूरज ग्रह राहुना, लहे चरित्र विचारा लो ॥ अ० ॥ ल०॥ सूपकार विद्याकार वे, मत्रगत निर्धारा लो ॥अ०॥म०॥१८॥ रहगत व्यूह प्रतिव्यूहने, लहे चार प्रतिचारा लो ॥ अ० ॥ल०॥ परिमाण स्कंधा घोरनुं, पुर वास्तु स्कंधावारा लो॥अ०॥पु०॥१९॥ निवेश वली ए त्रण्यना, हय गजनी शिक्षा लो ॥अ०॥ ह० ॥ तत्त्ववाद नयशास्त्रमां, धनुर्वेद दक्षा लो ॥अ०॥ध०॥२०॥ तेम मणि सोवननी कला, धातुवादें ग्राह्या लो ॥अ० धा० ॥ बाहुदंम दृष्टि मुष्टिने, युद्धे जाये न वाह्या लो ॥अ०॥ यु० ॥२१॥ नियुद्ध वली वाग्युद्धमां, बेहु बांधव कुशला लो ॥ अ० ॥ बे० ॥ सर्प वह्नि जल स्थंजन, अतर केणें न कल्या लो ॥ अ० ॥अ०॥२२॥ पत्रछेद वैदक तणी, कृषि वाणिज्यकर्मनी लो ॥अ०॥कृ०॥ वली पलितनाशनकरी, कला कारक शर्मनी लो ॥अ०॥क०॥ २३ ॥ अथवा पक्षीरुत तणी, बहोंतेरमी कहियें लो ॥अ०॥ब०॥ कला वहोत्तेर नर तणी, आगमथी ए लहीयें लो ॥अ०॥आ०॥२४॥ जाण थया एहना घणु, यौवन वय पाया लो ॥अ०॥ यौ०॥ मनमोहन मनवालहा, सहुने मन नाया लो ॥अ०॥स०॥२५॥ सुमंदिर

ताम्रकलश अभिधान ॥ रा० ॥ वीजो वेढु निज युद्धना, थया स्वामी बलवान ॥ रा० ॥ वा० ॥ १६ ॥ हो० ॥ एक दिवस तटिनीतटें, अटता दोय अमल्ल ॥ रा० ॥ पडिया युद्धनी लालचें, नडिया ते जेम मल्ल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १७ ॥ हो० ॥ पूरववैरे प्रेरिया, रोप चढया मदवत ॥ रा० ॥ वींधाणा दतोशलें, वेढु ते पाम्या अत ॥ रा० ॥ वा० ॥ १८ ॥ हो० ॥ नयरी अयोध्या ऊपन्या, दोय सैरज उद्दम ॥ रा० ॥ नांदीमित्रने मदिरें, शिगाला परचम ॥ रा० ॥ वा० ॥ १९ ॥ हो० ॥ राजकुमरें ते संग्रह्या, वेढु लडाव्या ताम ॥रा०॥ मरण लह्यु रोपे नया, जोजो वैरनां काम ॥ रा० ॥ वा० ॥ २० ॥ हो० ॥ तेह्जि नयरमा ऊपन्या, दोय घेटा दृढकाय ॥ रा० ॥ नडता ते शृगाग्रशु, निधन लह्या तिण ठाय ॥ रा० ॥ वा० ॥२१॥ हो० ॥ कुर्कुट ए वेढू थया, पूरव नवने वैर ॥ रा० ॥ रोपारुण नयणां करी, युद्ध करे एणि पेर ॥ रा० ॥ वा० ॥ २२ ॥ हो० ॥ तेमाटे वेढुमाहीथी, कोइ न जीत्या जाय ॥ रा० ॥ वैर वधार्यां नव नवें, आवी आफ्तां थाय ॥ रा० ॥ वा० ॥ २३ ॥ यत ॥ वैर विश्वानरो व्याधि, विंपया व्यसनानि च ॥ महानर्थाय जायते, वकारा पच वर्धिता ॥ ५ ॥ हो० ॥ पंचम खमें सोदामणी, वीजी ढाल विचार ॥ रा० ॥ वैर न कीजें कोइशु, समजानो ए सार ॥ रा० ॥ वा० ॥ २४ ॥ ७० ॥ ५ ॥

॥ दोहो सोरठी ॥

॥ कहे मेघरथजी कुमार, घनरथजीने आदरें ॥ तात कह्यु ते सार, वीजु पण कारण इहां ॥१॥ दोहो ॥ केवल वैर नहिं इहा, छे वीजु पण हेत ॥ कहु पिताजी सांभलो, ते तुम्हने सकेत ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ मोरा साहिव हो, श्री शीतल नाथ के ॥ ए देशी ॥ इह भरतें हो वरतें वैताढय के, नयर सुवर्णनाभ नामथी ॥ श्रेणि उत्तरें हो खेचर शिरदार के, गरुडवेग छे शुभमति ॥ १ ॥ तस अगज हो चद सूरथी दोय के, तिलक पदें सोहामणा ॥ जिनपडिमा हो सुरगिरिने टूक के, नमवा चाल्या दो जणा ॥ २ ॥ मुनि दीठा हो तिहां सागरचद के, चारण श्रमण गुणें भर्या ॥ प्रणमीने हो वेग जइ पास के, सकल कलायें अल

॥ ढाल बीजी ॥

॥ चूडले जोवन झल रह्यो ॥ ए देशी ॥ हो राजन ॥ गणिका एक तिहां, कुर्कुट लेई एक ॥ राजन ॥ हारे न महारो कूकडो, कोइ आगल वेक ॥ राजन ॥ १ ॥ वात सुणो वारू परें, न करो कोइ गुमान ॥ रा० जो कोइ गर्व करे मनें, तो आणो कूकड इण गण ॥ रा० ॥ वा० ॥ हो राजन ॥ जो हारे मुज कूकडो, तो आपु धन लक्ष ॥ रा०॥ जो हारे अवरनो, तो लक्ष लहु प्रत्यक्ष ॥ रा० ॥ वा० ॥ ३ ॥ हो० ॥ गर्व घणो करती तदा, निसुणी मनोरमा नारी ॥ रा० ॥ नृप हुकमथी मोकल्यो, निज कुर्कुट तेणि वार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ४ ॥ हो० ॥ जूजण लाग्या कूकडा, नृप आगल दरबार ॥रा०॥ उलट पालट थाये वने, चचू चरण प्रहार ॥ रा० ॥वा०॥५॥हो०॥ अरुण नयण ततक्षण थया, आपथिया जेम योध ॥ रा० ॥ वाद्या पण न रहे केमें, वैरथकी डुर्बोध ॥ रा० ॥ वा० ॥६॥ हो० ॥ त्रिहु ज्ञाने शोभित प्रज्ञु, श्रीघनरथ राजान ॥ रा० ॥ कहे मेघरथ कुवर जणी, सुण वत्स सुगुण निधान ॥ रा० ॥ वा० ॥७॥ हो० ॥ ए बे पंखीमांहिलो, नहि हारे कोइ एक ॥ रा० ॥ कहे मेघरथ कारण किस्युं, कहे नृप वैर ए ठेक ॥ रा० ॥ वा० ॥ ८ ॥ हो० ॥ ऐरवतानिध क्षेत्रमां, रत्नपुरें दोय सार ॥ रा० ॥ धनद सुदत्त नामें वसे, वणिक करे व्यापार ॥ रा० ॥ वा० ॥ ए ॥ हो० ॥ मित्राई बेहुने बनी, पण घरनामसकीन ॥ रा० ॥ गत्रीयें जोडी बलदने, जाय पर गामें दीन ॥ रा० ॥ वा० ॥ १० ॥ हो० ॥ जार जरे अतिही घणो, नूख तृषा वली तेम ॥ रा० ॥ बलद बिचारा शुं करे, सहे निज कृतने एम ॥ रा० ॥ वा० ॥११॥ हो० ॥ मिथ्यात्वें मोह्या घणु, कूड तोला ने मान ॥ रा० ॥ करे अन्याय उपार्ज्यु, धन मेल्युं ए निदान ॥ रा० ॥ वा० ॥ १२ ॥ हो० ॥ एक दिवस धन कारणें, वढीया ते बेहु जोर ॥ रा० ॥ अन्योन्यें एकेकने, दीध प्रहार कठोर ॥ रा० ॥ वा० ॥ १३ ॥ हो० ॥ आरतध्यानें ते मुआ, धन अनरथ करनार ॥ रा० ॥ नेह तोडावे पलकमें, हुवे प्रत्यक्ष सहार ॥ रा० ॥ वा० ॥ १४ ॥ हो० ॥ नरजव हारी ते हुवा, स्वर्णकुलाने कूल ॥ रा० ॥ दोय हस्ती सोहामणा, जोज बन्यो प्रतिकूल ॥ रा० ॥ वा० ॥ १५ ॥ हो० ॥ कंचनकलश पहेलो थयो,

यां ॥ १ए ॥ नमी नेहें हो पहोता निज गेह के, गुरुपासें व्रत आदरी ॥ तप डुष्कर हो करे किरिया सार के, चरण नृपतिनी चाकरी ॥ २० ॥ घनघाती हो क्षय कीधा चार के, उज्ज्वल केवलसिरि वस्या ॥ सुख पाम्या हो शिवपदना सार के, पलकमांहे नवजल तस्या ॥ २१ ॥ चरणायुध हो हवे ते निजवात के, पूरव नवनी सांजली ॥ मनमांहें हो कीधा निज पाप के, निंदे दोय वली वली ॥ २२ ॥ प्रणमीने हो घनरथ प्रनु पायके, अरज करे निज वाणीयें ॥ अपराधी हो स्वामी अम्हें जोर के, पाप प्रचुर कस्यां प्राणीयें ॥ २३ ॥ घनरथजी हो कहे समकित शुद्ध के, धर्म अहिंसा लक्षणे ॥ नावपूर्वक हो सद्दहिने दोय के, काल करे तिहां ततक्षणे ॥ २४ ॥ नूताटवी हो मांहे ताम्रचूल के, स्वर्णचूल नामें नला ॥ देवयोनिमा हो थया ते नूतदेव के, अद्भुत रूपें ऊजला ॥ २५ ॥ उपयोगी हो ज्ञानें ते जोय के, वेसि विमानें आविया ॥ प्रणमीने हो घनरथना पाय के, कर जोडी कहे नाविया ॥ २६ ॥ धन्य स्वामी हो तु जगदाधार के, अम्ह अनाथने उद्धस्या ॥ तुम्हें कीधो हो महोटो उपकार के, ध्येयपणे हवे आदस्या ॥२७॥ लहि आणा हो पहोता निज ठाय के, पाचमे त्रीजी ढालमा ॥ शुनसगति हो करता निश दीस के, फल लहीयें ततकालमा ॥२८॥ सर्व गाथा ॥१००॥ श्लोक तथा गाथा ५

॥ दोहा ॥

॥ हवे घनरथजी राज्यने, पालता एक दीस ॥ नव असारता मन वसी, चिंते एम जगदीश ॥१॥ विषय अनंता कालना, वलग्या ए जीव केड ॥ चेत चेत चेतन चतुर, टेव विषयनी फेड ॥२॥ लोकांतिक सुर आवीया, इण अवसर उजमाल ॥ बूऊ बूऊ त्रिभुवनधणी, विषयथकी मन वाल ॥३॥ तीरथ स्थापी नविकने, करो क्षेम कल्याण ॥ जय जय प्रनु चिरनंद तु, कहे सुर जोडी पाणि ॥४॥ दान देइ संवत्सरी, थापी मेघरथ पाट ॥ घनरथजी संयम लीये, मूकी सवि उच्चाट ॥५॥ केते काले पामिया, उज्ज्वल केवल नाण ॥ नव्य जीव प्रतिबोधता, विचरे श्रीजिननाण ॥ ६ ॥ मेघरथजी सुख नोगवे, नयरी पुंमरिगिणीराज ॥ दढरथ नाईशु नला, करे धर्मना काज ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वाडी फूली अति नली ॥ मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥ एक दिन नृप

कह्या ॥३॥ कर जोडी हो निसुणे मुनि वाणी के, पूरवनव पूछे किस्यो ॥ कहे नाणी हो सुणो धातकी खम्ड के, ऐरवतें वज्रपुर इस्यो ॥ ४ ॥ तिहां अजयथी हो घोपानिध राय के, हेमतिलकानो नाहलो ॥ दोय कुंमर हो जय विजयनो तात के, सोनागी महिमानिलो ॥ ५ ॥ शखनृपति हो पुर एहवे सुवर्ण, के तस पृथिवीराणी जणी ॥ एक तनया हो हे कचनवर्ण के, पृथ्वीसेना बहु गुणी ॥ ६ ॥ आवी साहमी हो स्वयंवर थइ तेह के, परणी अजयघोप कथने ॥ मृगनयणी हो मनोहर सुकु मार के, मन मानी घणु सतने ॥ ७ ॥ वनमाहे हो अन्य दिवस वसंत के, नृप चाल्यो रमवा जणी ॥ शतराणी हो सार्थे उद्यान के, वनशोना जोवे घणी ॥ ८ ॥ तिहा जोती हो वनतरुवरराजि के, पृथ्वीसेना पदमि णी ॥ मुनि देखे हो दात मद न महत के, धन्य घडी मुऊ आजनी ॥९॥ सुणी देशन हो पामी प्रतिबोध के,आण लही जरतारनी॥ग्रहे दीक्षा हो शिक्षा धरे अग के, समजावें जवतारिणी ॥ १० ॥ अनुमोदी हो वलीयो नृपाल के, निजपुरमाहे आवीयो ॥ पडिलाने हो एकदिन श्री अनत के, जिन उद्मस्थनो जावियो ॥ ११ ॥ नृप आगण हो प्रगट्यां पंच दिव्य के, जय जय सुर मुख उच्चरे ॥ लह्यु केवल हो जगवत अनत के, अनुक्रमें सुर सेवा करे ॥ १२ ॥ तस पासें हो बेहु तनय सघात के, दीक्ष अजय घोष आदरे ॥ वीश स्थानक हो सेवे मुनिराय के, जिनपद नीकाचित करे ॥१३ ॥ सुत मुनिशु हो अच्युत सुरलोक के, अजयघोष सुरवर थया ॥ तिहांथी चवी हो श्री अजयघोषजीव के, राजा घनरथजी हुवा ॥ १४ ॥ जयविजयना हो चवीया दोय जीव के, तुम्हें बधव बेहु अवतस्था ॥ एम जांख्युं हो सागरचद साधु के, पूरवजव सुणी चित्त उर्ध्वा ॥ १५ ॥ कहे मेघरथ हो ते खेचर दोय के, पूरवजव नेहें करी ॥ तुम नमवा हो मल वाने काज के, आव्या इहां चित्त हित धरी ॥ १६ ॥ चरणायुध हो जू जता देखि के, बेहुजण बेहु अहिन्निया॥ निज आतम हो गोपवीने आंहिं के, विद्यावलछ्छ पइठीया ॥१७॥ सुणी एहवु हो मेघरथजीनुं वयण के, ते खे चर परगट थइ ॥ कर जोडी हो घनरथजीना पाय के, प्रणमे हियडे गह गही ॥ १८ ॥ अम्ह पूरव हो जवचा तुम्हें तात के, जाग्यजले प्रजु जे टीया ॥ थया लोचन हो सफला जगनाथ के, कुःख दोहग सवि मेटी

यां ॥ १९ ॥ नमी नेहें हो पहोता निज गेह के, गुरुपासें व्रत आदरी ॥ तप डुष्कर हो करे किरिया सार के, चरण नृपतिनी चाकरी ॥ २० ॥ घनघाती हो क्षय कीधा चार के, उज्ज्वल केवलसिरि वस्था ॥ सुख पाम्या हो शिवपदनां सार के, पलकमाहे नवजल तस्था ॥ २१ ॥ चरणायुध हो हवे ते निजवात के, पूरव नवनी सानली ॥ मनमाहें हो कीधां निज पाप के, निंदे दोय वली वली ॥ २२ ॥ प्रणमीने हो घनरथ प्रनु पायके, अरज करे निज वाणीयें ॥ अपराधी हो स्वामी अम्हें जोर के, पाप प्रचुर कस्यां प्राणीयें ॥ २३ ॥ घनरथजी हो कहे समकित शुद्ध के, धर्म अहिंसा लक्षणें ॥ नावपूर्वक हो सद्दहिने दोय के, काल करे तिहां ततक्षणे ॥ २४ ॥ नूताटवी हो माहे ताम्रचूल के, स्वर्णचूल नामें नला ॥ देवयोनिमा हो थया ते नूतदेव के, अद्भुत रूपें ऊजला ॥ २५ ॥ उपयोगी हो ज्ञानें ते जोय के, वेसि विमानें आविया ॥ प्रणमीने हो घनरथना पाय के, कर जोडी कहे नाविया ॥ २६ ॥ धन्य स्वामी हो तु जगदाधार के, अम्ह अनाथने उद्धस्था ॥ तुम्हें कीधो हो महोटो उपकार के, ध्येयपणे हवे आदस्था ॥२७॥ लहि आणा हो पहोता निज गाय के, पाचमे त्रीजी ढालमा ॥ जिनसंगति हो करता निश दीस के, फल लहीयें ततकालमा ॥२८॥ सर्व गाथा ॥१००॥ श्लोक तथा गाथा ५

॥ दोहा ॥

॥ हवे घनरथजी राज्यने, पालता एक दीस ॥ नव असारता मन वसी, चिंते एम जगदीश ॥१॥ विषय अनंता कालना, वलग्या ए जीव केड ॥ चेत चेत चेतन चतुर, टेव विषयनी फेड ॥२॥ लोकांतिक सुर आवीया, इण अवसर उजमाल ॥ बूझ बूझ त्रिभुवनधणी, विषयथकी मन वाल ॥३॥ तीरथ स्थापी नविकने, करो क्षेम कल्याण ॥ जय जय प्रनु चिरनंद तु, कहे सुर जोडी पाणि ॥४॥ दान देइ संवत्सरी, थापी मेघरथ पाट ॥ घनरथजी संयम लीये, मूकी सवि उच्चाट ॥५॥ केते काले पामिनु, उज्ज्वल केवल नाण ॥ नव्य जीव प्रतिबोधता, विचरे श्रीजिनजाण ॥ ६ ॥ मेघरथजी सुख नोगवे, नयरी पुंमरिगिणीराज ॥ दृढरथ नाईशुं नलां, करे धर्मना काज ॥ ७ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ वाडी फूली अति नली ॥ मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥ एक दिन नृप

कह्या ॥३॥ कर जोडी हो निसुणे मुनि वाणी के, पूरवभव पूछे किस्यो ॥ कहे नाणी हो सुणो धातकी खम्म के, ऐरवतें वज्रपुर इस्यो ॥ ४ ॥ तिहां अजयथी हो घोषाभिध राय के, हेमतिलकानो नाहलो ॥ दोय कुंमर हो जय विजयनो तात के, सोजागी महिमानिलो ॥ ५ ॥ शस्त्रनृपति हो पुर एहवे सुवर्ण, के तस पृथिवीराणी जणी ॥ एक तनया हो छे कचनवर्ण के, पृथ्वीसेना बहु गुणी ॥ ६ ॥ आवी साहमी हो स्वयंवर यइ तेह के, परणी अजयघोष कथने ॥ मृगनयणी हो मनोहर सुकु मार के, मन मानी घणु सतने ॥ ७ ॥ वनमाहे हो अन्य दिवस वसंत के, नृप चाल्यो रमवा जणी ॥ शतराणी हो सार्थे उद्यान के, वनशोना जोवे घणी ॥ ८ ॥ तिहा जोती हो वनतरुवरराजि के, पृथ्वीसेना पदमि णी ॥ मुनि देखे हो दात मद न महत के, धन्य घडी मुऊ आजनी ॥९॥ सुणी देशन हो पामी प्रतिबोध के,आण लही नरतारनी॥ग्रहे दीक्षा हो शिक्षण धरे अग के, सम्नावें नवतारिणी ॥ १० ॥ अनुमोदी हो वलीयो नृपाल के, निजपुरमाहे आवीयो ॥ पडिलाने हो एकदिन श्री अनत के, जिन उद्मस्थनो नावियो ॥ ११ ॥ नृप आंगण हो प्रगट्या पंच दिव्य के, जय जय सुर मुख उच्चरे ॥ लहु केवल हो नगवत अनत के, अनुक्रमें सुर सेवा करे ॥ १२ ॥ तस पासें हो बेहु तनय सघात के, दीख अजय घोष आदरे ॥ वीश स्थानक हो सेवे मुनिराय के, जिनपद नीकाचित करे ॥१३ ॥ सुत मुनिछु हो अच्युत सुरलोक के, अजयघोष सुरवर थया ॥ तिहांथी चवी हो श्री अजयघोषजीव के, राजा घनरथजी हुवा ॥ १४ ॥ जयविजयना हो चवीया दोय जीव के, तुम्हें बधव बेहु अवतस्या ॥ एम नाख्यु हो सागरचद साधु के, पूरवनव सुणी चित उर्ध्या ॥ १५ ॥ कहे मेघरथ हो ते खेचर दोय के, पूरवनव नेहें करी ॥ तुम नमवा हो मल वाने काज के, आव्या इहां चित्त हित धरी ॥ १६ ॥ चरणायुध हो पू जता देखि के, बेहुजण बेहु अहिन्निया॥ निज आतम हो गोपवीने आहिं के,विद्यावलथ्रु पइठीया ॥१७॥ सुणी एहवुं हो मेघरथजीनुं वयण के,ते खे चर परगट थइ ॥ कर जोडी हो घनरथजीना पाय के, प्रणमे हियडे गह गही ॥ १८ ॥ अम्ह पूरव हो नवचा तुम्हें तात के, नाग्यनले प्रनु ने टीया ॥ थया लोचन हो सफलां जगनाथ के, दुःख दोहग सवि मेटी

आ० ॥ पारणे एक दिन साध ॥ ध० ॥ प्राशुक अन्न ने पाणीयें ॥आ०॥ पडिलाभ्यो निराबाध ॥ ध० ॥ १६ ॥ काले ग्रहे अणगारता ॥ आ० ॥ नारी ने ते नाह ॥ ध० ॥ राजगुप्त गुरुथी सुणे ॥ आ० ॥ तप अधिकार उत्साह ॥ ध० ॥१७॥ तप कह्या विविध प्रकारना ॥ आ० ॥ बोल्या शक्ति विशेष ॥ ध० ॥ पण आंबिल वर्धमानने ॥ आ० ॥ महिमा अधिको रेष ॥ ध० ॥ १८ ॥ एकेक वधते आंबिलें ॥ आ० ॥ शतसंख्या लगें सार ॥ ध० ॥ उलीने छेहडे करे ॥ आ० ॥ पारणु निरतिचार ॥ ध०॥ १९ ॥ उली उलीने छेहडे ॥ आ० ॥ एकेक कह्यो उपवास ॥ ध० ॥ मन चढते अतर विना ॥ आ०॥ नहितर पारण खास ॥ ध० ॥ २० ॥ सहस पंच आंबिल कह्यां ॥ आ० ॥ तेम उपरें पचास ॥ ध० ॥ शत उपवास उली तणा ॥ आ० ॥ ए तप कीजें उल्लास ॥ ध० ॥ २१ ॥ चौद वरस त्रण्य मासनी ॥ आ० ॥ उपरें दिन वलि वीश ॥ ध० ॥ मान कह्यु ए तप तणु ॥ आ० ॥ सूत्रमांहे जगदीश ॥ ध० ॥ २२ ॥ राजगुप्त रुषि आदरे ॥ आ० ॥ ए तप आनद पूर ॥ ध० ॥ शमतारसमां झीलतो ॥ आ० ॥ दिन दिन चढते नूर ॥ ध० ॥२३॥ काल करी सुर ऊपन्यो ॥ आ० ॥ ते पचम सुरलोक ॥ ध० ॥ तिहांथी चवी सिंहरथ थयो ॥ आ० ॥ इण भवें ए गतशोक ॥ ध० ॥ २४ ॥ शंखिका पण तिहां अवतरी ॥ आ० ॥ वेगवती थइ नारि ॥ ध० ॥ सिंहरथने वल्लभ घणु ॥ आ० ॥ पूरवनेह विचार ॥ ध० ॥ २५ ॥ मेघरथना मुखथी सुणी ॥ आ० ॥ निज पूरव अवदात ॥ ध० ॥ प्रतिबूझ्यो सिंहरथ तदा ॥ आ० ॥ धन धन उत्तम जाति ॥ ध० ॥ २६ ॥ मेघरथने वदी वल्यो ॥ आ० ॥ सिंहरथ निजघर आवि ॥ ध० ॥ तनयने राज्य बेसारिने ॥ आ० ॥ ग्रहे सयम समभाव ॥ ध० ॥ २७ ॥ श्रीघनरथ जिनवरकनें ॥ आ० ॥ तप तपियां असराल ॥ ध० ॥ कर्म खपी केवल लही ॥ आ०॥ मुक्ति गया ततकाल ॥ ध० ॥ २८ ॥ हवे मेघरथ नृप आविया ॥ आ० ॥ वनहूंती निज धाम ॥ ध० ॥ जीवदया पाले भली ॥ आ० ॥ करे शुभ धर्मना काम ॥ ध० ॥ २९ ॥ ढाल-चोथी खम्ड पंचमे ॥ आ० ॥ भव दशमो अधिकार ॥ ध० ॥ रामवि जय कहे सांभलो ॥आ०॥ आगल बहु विस्तार ॥ ध०॥ ३० ॥१३७॥५॥

मेघरथजी ॥ आणदा रे ॥ वधु रमणी परिवार ॥ घणुं सुखकंदा रे ॥ देवरमण उद्यानमा ॥ आण० ॥ आव्यो अवनि आधार ॥ घणुं० ॥ १ ॥ शोकें रहित अशोकने ॥ आ० ॥ नीचे बेगे राय ॥ ध० ॥ तारकमां जेम चड्मा ॥ अ० ॥ तिम शोजे समुदाय ॥ ध० ॥ २ ॥ एहवे नूतें आवीने ॥ आ० ॥ मांमचु नाटक सार ॥ ध० ॥ चर्म वसन आयुध धर्या ॥ आ० ॥ नाचे विस्मयकार ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते नाचतां आवीयुं ॥आ०॥ एक विमान उत्तग ॥ ध० ॥ सुंदर एक नरनारीनु ॥ आ० ॥ तेमांहि युगल सुचग ॥ ध० ॥ ४ ॥ नारी पूछे पियु कोण ए ॥ आ० ॥ कहे मेघ रथ मनरंग ॥ ध० ॥ सुण वैताढयथी उतरे ॥ आ० ॥ नयरी अलका पुरी चग ॥ ध० ॥ ५ ॥ विद्युतरथ कुल उपन्यो ॥ आ० ॥ ए खेचर सिंह रथ ॥ ध० ॥ वेगवती एहनी नारजा ॥ आ० ॥ धर्म करण समरथ ॥ ध० ॥ ६ ॥ धातकी खर्मे जिन वांदवा ॥ आ० ॥ गया ए दंपती दोय ॥ ध० ॥ वादी पाछा वलता इहां ॥ आ० ॥ गति प्रतिघातने जोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ सहसा ए केम नीपन्यु ॥ आ० ॥ दीठो मुफने एण ॥ ध० ॥ सामान्य ए नरपति नहीं ॥ आ० ॥ चिंते एम दर्पेण ॥ ध० ॥ ८ ॥ विमान तणी खलना हुइ ॥ आ० ॥ एहने प्रजावें आज ॥ ध० ॥ नूत रूप कीधां घणां ॥ आ० ॥ नाटक करवा काज ॥ ध० ॥ ए ॥ पूछे राणी इण पूरवें ॥ आ० ॥ शुं कीधुं पियुं पुण्य ॥ ध० ॥ जे एहवी रूद्धि पामीयो ॥ आ० ॥ कहो गुणरयण अगण्य ॥ध०॥१०॥ नृप कहे सिंहपुरें पुरी ॥ आ० ॥ कुलपुत्रक राजगुप्त ॥ ध० ॥ शखिका नारी तेहनी ॥ आ० ॥ निर्धनतायें विलुप्त ॥ ध० ॥ ११ ॥ करे परघरनी चाकरी ॥ आ० ॥ एक दिन काठने काज ॥ ध० ॥ गया वनमां दु खीयां बन्हे, ॥ आ० ॥ तिहां दीठो मुनिराज ॥ ध० ॥ १२ ॥ नमि बेठां रुषि आगलें ॥ आ० ॥ कहे मुनिवरजी धर्म ॥ ध० ॥ आराध्यो सुरतरु परें ॥ आ० ॥ दे मनोवाछित शर्म ॥ ध० ॥ १३ ॥ कहे दंपती कर जोडिने ॥ आ० ॥ प्रच्छु कहो कांइ उपाय ॥ ध० ॥ जिम सुखीया थाइयें अमें ॥ आ० ॥ करो करुणा सुपसाय ॥ ध० ॥ १४ ॥ नवसंचित अघनाशनो ॥ आ० ॥ तप बत्रीश कल्याण ॥ ध० ॥ चोथ बत्रीशें कीजियें ॥ आ० ॥ अठ्ठम दोय गुणखाणि ॥ ध० ॥ १५ ॥ गुरुदत्त तप ए आदरे ॥

आ० ॥ पारणे एक दिन साध ॥ ध० ॥ प्राशुक अन्न ने पाणीयें ॥आ०॥ पडिलाच्यो निराबाध ॥ ध० ॥ १६ ॥ कालें ग्रहे अणगारता ॥ आ० ॥ नारी ने ते नाह ॥ ध० ॥ राजगुप्त गुरुथी सुणे ॥ आ० ॥ तप अधिकार उत्साह ॥ ध० ॥१७॥ तप कह्यां विविध प्रकारनां ॥ आ० ॥ बोल्यां शक्ति विशेष ॥ ध० ॥ पण आंबिल वर्धमाननो ॥ आ० ॥ महिमा अधिको रेष ॥ ध० ॥ १८ ॥ एकेक वधते आंबिलें ॥ आ० ॥ शतसख्या लगें सार ॥ ध० ॥ उंलीने बेहडे करे ॥ आ० ॥ पारणु निरतिचार ॥ ध०॥ १९॥ उंली उंलीने बेहडे ॥ आ० ॥ एकेक कह्यो उपवास ॥ ध० ॥ मन चढते अतर विना ॥ आ० ॥ नहितर पारण खास ॥ ध० ॥ २० ॥ सहस पंच आंबिल कह्या ॥ आ० ॥ तेम उपरें पचास ॥ ध० ॥ शत उपवास उंली तणा ॥ आ० ॥ ए तप कीजें उल्लास ॥ ध० ॥ २१ ॥ चौद वरस त्रण्य मासनी ॥ आ० ॥ उपरें दिन वलि वीश ॥ ध० ॥ मान कह्यु ए तप तणु ॥ आ० ॥ सूत्रमाहे जगदीश ॥ ध० ॥ २२ ॥ राजगुप्त रूपि आदरे ॥ आ० ॥ ए तप आनद पूर ॥ ध० ॥ शमतारसमा झीलतो ॥ आ० ॥ दिन दिन चढते नूर ॥ ध० ॥२३॥ काल करी सुर ऊपन्यो ॥ आ० ॥ ते पंचम सुरलोक ॥ ध० ॥ तिहांथी चवी सिंहरथ थयो ॥ आ० ॥ इण जवें ए गतशोक ॥ ध० ॥ २४ ॥ शखिका पण तिहां अवतरी ॥ आ० ॥ वेगवती थइ नारि ॥ ध० ॥ सिंहरथने वल्लन्न घणु ॥ आ० ॥ पूरवनेह विचार ॥ ध० ॥ २५ ॥ मेघरथना मुखथी सुणी ॥ आ० ॥ निज पूरव अवदात ॥ ध० ॥ प्रतिबूज्यो सिंहरथ तदा ॥ आ० ॥ धन धन उत्तम जाति ॥ ध० ॥ २६ ॥ मेघरथने वदी वल्यो ॥ आ० ॥ सिंहरथ निजघर आवि ॥ ध० ॥ तनयने राज्य वेसारिने ॥ आ० ॥ ग्रहे सयम समजाव ॥ ध० ॥ २७ ॥ श्रीघनरथ जिनवरकनें ॥ आ० ॥ तप तपियां असराल ॥ ध० ॥ कर्म खपी केवल लही ॥ आ० ॥ मुक्ति गया ततकाल ॥ ध० ॥ २८ ॥ हवे मेघरथ नृप आवियां ॥ आ० ॥ वनहूंती निज धाम ॥ ध० ॥ जीवदया पाले जली ॥ आ० ॥ करे शुन्न धर्मना काम ॥ ध० ॥ २९ ॥ ढाल-चोथी खम्म पंचमे ॥ आ० ॥ नव दशमो अधिकार ॥ ध० ॥ रामविजय कहे साजलो ॥आ०॥ आगल बहु विस्तार ॥ ध० ॥ ३० ॥१३७॥५॥

२५

मेघरथजी ॥ आणदा रे ॥ वधु रमणी परिवार ॥ घणुं सुखकंदा रे देवरमण उद्यानमां ॥ आण० ॥ आव्यो अवनि आधार ॥ घणु० ॥ १ ॥ शोकें रहित अशोकने ॥ आ० ॥ नीचे बेठो राय ॥ ध० ॥ तारकमां जेम चंद्रमा ॥ अ० ॥ तिम शोने समुदाय ॥ ध० ॥ २ ॥ एहवे सूरी आवीने ॥ आ० ॥ मांक्युं नाटक सार ॥ ध० ॥ चर्म वसन आयुध धर्या ॥ आ० ॥ नाचे विस्मयकार ॥ ध० ॥ ३ ॥ ते नाचतां आवीयुं ॥आ०॥ एक विमान उत्तंग ॥ ध० ॥ सुंदर एक नरनारीनुं ॥ आ० ॥ तेमांहि युगल सुचंग ॥ ध० ॥ ४ ॥ नारी पूछे पियु कोण ए ॥ आ० ॥ कहे मेघ रथ मनरंग ॥ ध० ॥ सुण वैताढयथी उतरे ॥ आ० ॥ नयरी अलका पुरी चंग ॥ ध० ॥ ५ ॥ विद्युतरथ कुल उपन्यो ॥ आ० ॥ ए खेचर सिंह रथ ॥ ध० ॥ वेगवती एहनी नारजा ॥ आ० ॥ धर्म करण समरथ ॥ ध० ॥ ६ ॥ धातकी खंर्फे जिन वांदवा ॥ आ० ॥ गया ए दंपती दोय ॥ ध० ॥ वादी पाठा वलतां इहां ॥ आ० ॥ गति प्रतिघातने जोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ सहसा ए केम नीपन्यु ॥ आ० ॥ दीठो मुजने एण ॥ ध० ॥ सामान्य ए नरपति नहीं ॥ आ० ॥ चिंते एम दर्पेण ॥ ध० ॥ ८ ॥ विमान तणी खलना हुइ ॥ आ० ॥ एहने प्रजावें आज ॥ ध० ॥ नूत रूप कीधां घणां ॥ आ० ॥ नाटक करवा काज ॥ ध० ॥ ए ॥ पूछे राणी इण पूरवें ॥ आ० ॥ शुं कीधुं पियु पुण्य ॥ ध० ॥ जे एहवी रुद्धि पामीयो ॥ आ० ॥ कहो गुणरयण अगण्य ॥ध०॥१०॥ नृप कहे सिद्धपुरें पुरी ॥ आ० ॥ कुलपुत्रक राजगुप्त ॥ ध० ॥ शंखिका नारी तेहनी ॥ आ० ॥ निर्धनतायें विलुप्त ॥ ध० ॥ ११ ॥ करे परघरनी चाकरी ॥ आ० ॥ एक दिन काठने काज ॥ ध० ॥ गयां वनमां दुखीयां बन्हे, ॥ आ० ॥ तिहां दीठो मुनिराज ॥ ध० ॥ १२ ॥ नमि बेठां ऋषि आगलें ॥ आ० ॥ कहे मुनिवरजी धर्म ॥ ध० ॥ आराध्यो सुरतरु परें ॥ आ० ॥ दे मनोवांछित शर्म ॥ ध० ॥ १३ ॥ कहे दंपती कर जोडिने ॥ आ० ॥ प्रजु कहो काइ उपाय ॥ ध० ॥ जिम सुखीयां थाइयें अमें ॥ आ० ॥ करो करुणा सुपसाय ॥ ध० ॥ १४ ॥ नवसंचित अघनाशनो ॥ आ० ॥ तप बत्रीश कल्याण ॥ ध० ॥ चोथ बत्रीशें कीजियें ॥ आ० ॥ अट्ठम दोय गुणखाणि ॥ ध० ॥ १५ ॥ गुरुदत्त तप ए आदरे ॥

॥ यडुक्तमागमे ॥ कइस्सु नंते नेरश्या उयत्ताए कम्म पकरति गो० चउहि कारणेहि नेरयिया उयत्ताए कम्म पकरति त महारत्नयाए महापरिग्गहि याए पंचिदिय वहेण कुणपाहारेण ॥२॥ इति नगवत्या ॥ पूर्वढाल ॥ हिंसा थकी निसुणो सही रे, नरकें गयो रे निषाद ॥ जीवदयाथी वानरी रे, स्वरग गइ रे आह्लाद ॥ रा० ॥ ११ ॥ कहो स्वामी ते कोण हुआ रे, तव मेघरथ नूपाल ॥ श्येनपखी प्रतिबोधवा रे, कहे उपदेश रसाल ॥ रा० ॥ १२ ॥ हरिकाता नामें नली रे, नयरी निरुपम गाम ॥ त्या हरिपालानिध नलो रे, राजेश्वर गुणधाम ॥ रा० ॥ १३ ॥ तिण नयरी परिसर घणां रे, शाखामृगना रे वृंद ॥ वनमाहे क्रीडा करे रे, फल फूल खाइ आनद ॥ रा० ॥ १४ ॥ निर्दयने कृतघ्नी घणो रे, यम किंकर उपमान ॥ घातक नाम निषाद ठे रे, ते नयरीमा अजाण ॥ रा० ॥ १५ ॥ व्यसन आहेडानु घणु रे, लाग्यु पूर्वनु पाप ॥ नित्यप्रतें जीव हणे वहु रे, उपजावे परिताप ॥रा०॥ १६ ॥ श्यो मृगयामा दोष ठे रे, ते बोले एम आल ॥ निज आतमने पोषवा रे, डुष्ट घणुं उजमाल ॥ रा० ॥ १७ ॥ यडुक्त मृगयानिलापुके ॥ अवलस्वकुलाशिनोऊपान्, निजनीडडुमपीडिन खगान् ॥ अनवद्यतृणादिनोमृगान्मृगयान्नून्नहि नून्नृता घ्नताम् ॥३॥ पूर्वढाल ॥ तेहमा हरिप्रिया नामथी रे, वानरी नडक एक ॥ मांसविरत माही घणु रे, मनमाहे वस्यो रे विवेक ॥ रा० ॥ १७ ॥ हवे ते निषाद एकण समे रे, शस्त्र ग्रही निज पाणि ॥ वनमाहे मृगया आवीयो रे, करवा जीवनी हानि ॥ रा० ॥ १ए ॥ आगल जातां देखीयो रे, वाघ सवल विकराल ॥ नय पामी वृक्षें चढयो रे, ते घातक ततकाल ॥ रा० ॥ २० ॥ पादप ऊपर पूरवें रे, रहि कपिविनता तेह ॥ वाघनयें मुख फाडिने रे, थर थर धूजे देह ॥ रा० ॥२१॥ ते देखी बीहिनो वली रे, तव वानरी निज रूप ॥ थइ तस पासें आवियो रे, तेह निषाद विरूप ॥ रा० ॥ २२ ॥ विश्वासें तस वानरी रे, जोवे शिरना केश ॥ मस्तक मूकी उत्संगमा रे, सूतो विटप सन्निवेश ॥ रा० ॥ २३ ॥ वाघ जोइ नीचो रह्यो रे, निडामांहे निषाद ॥ वानरीने नांखे इस्यु रे, सुण मुग्धा गतसाद ॥ रा० ॥ २४ ॥ छु उपकार कस्य एवडो रे, नहीं कोई तस जाण ॥ जे उपकारने उलखे रे, चाकरी तास प्रमाण ॥ रा० ॥२५॥ वली

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे एक दिन मेघरथ, पौषध व्रत लेवा भणी ॥ भूषण मूकि भरथ, आवे पौषधशालमा ॥१॥ बेठो आसन योग, योगीश्वर जिम मन रली ॥ मूकी इंद्रिय भोग, पौषध व्रत लेई करी ॥ २ ॥ धर्म कहे एकचित्त, राजे श्वर आगें तदा ॥ एहिज छे जगमित्र, अवर न को उगारशे ॥ ३ ॥ जोतां ए संसार, लाग्यु जेवु पलेवडुं ॥ कोइ न ठारणहार, जीवदया विण जीवने ॥ ४ ॥ मानी लीधु सुख, मुझ मनमां माने नहिं ॥ जस अतें होय दुःख, ते सुख केहा कामनु ॥५॥ सुख सहजें जे होय, जे उपाधि ते सुख नहीं ॥ ए गति न्यारी कोय, सुख दुःख पुजलथी लह्यु ॥ ६ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जगतगुरु हीरजी रे ॥ ए देशी ॥ एणे अवसर एक पंखियो रे, थर थर ध्रूजते अंग ॥ पारावत आवी पड्यो रे, नृप मेघरथने उत्संग ॥ १ ॥ राजेश्वर राखीयें रे ॥ तुं शरणागत साधार, घणुं शुं भांखीयें रे ॥ ए आंकणी ॥ मनुज वाणी एम बोलतो रे, तरल नयन भयभीत ॥ मत बीहे तुं बापडा रे, नृप संतोषे हित रीत ॥ रा० ॥ २ ॥ एम नरपति बोलावियो रे, खेचर थयो निर्भीक ॥ तावत् त्यां एक आवियो रे, पंखी सिंचाणो नजीक ॥ रा० ॥ ३ ॥ सुण राजन तुज कोडमा रे, छे पंखी मुज भक्ष ॥ मूक मूक पारेवडो रे, हुं भूख्यो छुं घणुं दक्ष ॥रा०॥४॥ कहे मेघरथ ए माहरे रे, शरणागत थयो जेह ॥ मुक्त न काढी आपतां रे, जीवतां ए देह ॥ रा० ॥ ५ ॥ क्षतहूती राखे तेणें रे, क्षत्र कह्यु जगमांहि ॥ ते पद जो हुं न जालवु रे, तो नामें शुं थाय ॥ रा० ॥ ६ ॥ यत ॥ दोहो ॥ केशरीकेश भुजंगमणि, शरणां ए सुहडांह ॥ सती पयोहर कृपण धन, चढशे हाथ मुवांह ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ परप्राणें निजप्रा णनुं रे, पोषण न घटें तुज ॥ नरक कारण हिंसा कही रे, कारज म करश अबूझ ॥ रा० ॥७॥ एक पिंड छेदे ताहरे रे, अगें होय असमाधि ॥ तेम बीजाने पण सही रे, हिंसा ए महोटो व्याधि ॥ रा० ॥ ८ ॥ पल भखतां एहनुं रे, तृप्ति होशे तिलमात्र ॥ पण पंखीना प्राणनी रे, शी गति होशे भ्रात ॥ रा० ॥ ए ॥ वध पंचेंद्रियनो करे रे, महापरि ग्रह आरंभ ॥ मास तणा आहारथी रे, नरकायुनो प्रारंभ ॥ रा० ॥ १०

जीरण कूपें जलहकाजे, पड्यो तृषातुर थयो ॥ उगीयो कूपकमांहे तरुवर, शाखा अवलंबी रह्यो ॥४॥ एहवे तरण्या वे लाल, अहिमुख आवीया ॥ जल पीवाने वे लाल,कूप लवावीया ॥ त्रू० ॥ लवाविया सम डु ख माटे,वैर गंमीने रह्या॥उगारीया तें सुगुण आवी,एह वीतक सवि कह्यां ॥५॥ सुण उपकारी वे लाल, मथुरा आववु ॥ अहोनिश तुम्हचु वे लाल, समरण नाववु ॥ त्रू० ॥ आववु अमचे नयर द्विजवर, नक्ति करशु तुम तणी ॥ इम कही चाल्यो तेह सोवन, कार नयरी आपणी ॥ ६ ॥ तीरथ करतां वे लाल, ते द्विज अनुक्रमें ॥ केते दिवसे वे लाल, मथुरा सक्रमे ॥ त्रू० ॥ सक्रमे मथुरावनमाहि, आवीयो तव उंलख्यो ॥ वानरो हरख्यो हृदय माहे, तेह अनुमानें लख्यो ॥ ७ ॥ चरणे नमियो वे लाल, फल आगल धर्या ॥ कहे उपशमियो वे लाल, तुम गुण सांनस्या ॥ त्रू० ॥ सांनस्या तेहवे वाघने पण, करे नक्तिनावें नस्यो ॥ अज्ञानथी वनराजसुतने, हणी नूपण ढग कस्यो ॥८॥ जूउ तिर्यंचें वे लाल,गुण नवि उंलव्यो ॥ वाचा पाली वे लाल, धिक् नरनो लव्यो ॥ त्रू० ॥ जुउ नरनो लव्यो हवे तुम्हें, देइ आशिष पुर गयो ॥ करी तीरथयात्र पूठे, किहां नाडिंधम रह्यो ॥ ए ॥ खोली काढयो वे लाल, तेह कलादने ॥ नयणे निरखी वे लाल, लह्यो आह्लादने ॥ त्रू० ॥ आह्लाद लहियो द्विजें पण तिणे, निरखी नीचु नालीयु ॥ मनमांहि चिंते रखे मागे, हेज सघलु गालीयु ॥ १० ॥ वानण वोल्यो वे लाल, नाडिंधम गुणी ॥ शु नवि जाणो वे लाल, माया अवगुणी ॥ त्रू० ॥ अवगुणी माया हवे नाया, अटवी तुम नूली गइ ॥ सुणी कलधो तुरत प्रणमे, सुरत मुजने नवि रही ॥ ११ ॥ कहे कर जोडी वे लाल, परकासो मुने ॥ कारज वहालु वे लाल, जे होये तुने ॥ त्रू० ॥ ते कहे मुजने एह नूपण, किणही दीधु दक्षिणा ॥ एहनु मुज मूल्य आपो, सुणि कलाद विचक्षणा ॥ १२ ॥ तेहने सोंपी वे लाल, गयो तटिनीजलें ॥ स्नान करेवा वे लाल, तन मेलो मलें ॥ त्रू० ॥ मलें मेलो स्नान करवा, गयो हवे इण अवसरें ॥ वाजतो पडहो देखी पासें, कान ते उंचा धरे ॥ १३ ॥ किणहिक मास्यो वे लाल, नृपअंगज नलो ॥ नूपण काजें वे लाल, ए कुल चाहलो ॥ त्रू० ॥ चहलासम ते होय दीठो, जेणें ते सवि दाखजो ॥ वध्य नर होशे नहीं तर, हियामां मत राखजो ॥ १४ ॥

विशेषे मानवी रे, जगमा हे गुणचोर ॥ सांजल हु कहुं सुणजो रे, [illegible] सघी जला ढोर ॥ रा० ॥ २६ ॥ पचमखंर्मे पाचमी रे, ढाल कही [illegible] रग ॥ वातज कहेशे वायलो रे, माणस कपर चग ॥रा०॥२७॥१०॥

॥ दोहा ॥

॥ वाघ कहे सुण वानरी, एकण ग्राम मजार ॥ शिवस्वामी नामें वसे, वाडव वेदविचार ॥ १ ॥ एक दिवस ते नीसस्यो, करवा तीरथ यात्र ॥ नमतां अटवीमा पड्यो, सूधो हुवो तृपार्त्त ॥ २ ॥ जल खोजंतां चिहुं दिशें, जीरण दीगे कूप ॥ जल कारण आव्यो तिहां, वाडव आतुररूप ॥ ३ ॥ रज्जु करी तृणमय तदा, करपत्रक तिहां वांधि ॥ जल कारण माहे धस्यो, ब्राह्मण रूडी सधि ॥ ४ ॥ तिण दोरें वलगी तदा, कूपथकी कपि एक ॥ वाहिर आव्यो ते तदा, चिंते हिजवर ठेक ॥ ५ ॥ सफल थयो आयास मुज, थयु एहने आशान ॥ कूप पड्यो में उद्धस्यो, महोटु जीवितदान ॥ ६ ॥ बीजी वारें नीसस्या, वाघ भुजग सन्नात ॥ दोरी ब्राह्मण पग पड्या, हरख्या मन अत्यंत ॥७॥ उपगारी जाणी नमे,ते त्रिहुं मां कपि ताम ॥ जातिस्मृति अक्षर लखी, हिजने जणावे आम ॥ ८ ॥ अहो मथुरा नगरी वसु, अनु तुम्हारे वश॥एक वार तिहां आवजु, करशुं नक्ति अवश्य ॥ ए ॥ वली तमने एक वीनवु, एहमा अछे मनुष्य ॥ ते मत काढो तुम्ह नणी, करशे अहित प्रत्यक्ष ॥ १० ॥

॥ ढाल छठी ॥

॥काया कामिनी वे लाल ॥ ए देशी ॥ ते एम नांखी वे लाल, निज स्थानक गया॥ हिज एम चिंतेवेलाल,ए उत्तम हुया॥ त्रूटक ॥ ए हुया उत्तम मनुज सत्तम, सकल जीवमांहे शिरें ॥ मुज पास हूतां एह मानव, कहो ने ते केम मरे ॥ १ ॥ कीजें सहुने वे लाल, शक्तियें उपकारडो ॥ मानो सहुने वे लाल, जीवित प्यारडो ॥ त्रू० ॥ प्यारडो जीवित जगत जनने, तिहां नहिं संदेह ए॥ते मार्टे एहने करु उपकृति,सफल होवे देह ए ॥२॥ काढयो तेहने वे लाल, दोरी मूकी करी ॥ पासें आव्यो वे लाल, प्रणमे हित धरी ॥ त्रू० ॥ हित धरी प्रणमे चरण तेहनां, पूछियुं तु कोण छे ॥ ते कहे मथुरा नयरिवासी, स्वर्णकार अनु रुचे ॥ ३ ॥ काज उद्देसी वे लाल, आव्यो इहां कणे ॥ हु परदेशी वे लाल, कूपें जीरणे ॥ त्रू० ॥

जीरण कूपें जलहकाजे, पड्यो तृषातुर थयो ॥ उगीयो कूपकमांहे तरुवर, शाखा अवलंबी रह्यो ॥४॥ एहवे तरप्या वे लाल, अहिमुख आवीया ॥ जल पीवाने वे लाल,कूप लंबावीया ॥ त्रू० ॥ लंबाविया सम उख माटें,वैर बांधीने रह्या॥उगारीया तें सुगुण आवी,एह वीतक सवि कह्या ॥५॥ सुण उपकारी वे लाल, मथुरा आववु ॥ अहोनिश तुम्हचु वे लाल, समरण नावबु ॥ त्रू० ॥ आववु अमचे नयर द्विजवर, नक्ति करशु तुम तणी ॥ इम कही चाल्यो तेह सोवन, कार नयरी आपणी ॥ ६ ॥ तीरथ करतां वे लाल, ते द्विज अनुक्रमें ॥ केते दिवसें वे लाल, मथुरा सक्रमे ॥ त्रू० ॥ सक्रमे मथुरावनमाहि, आवीयो तव उंलख्यो ॥ वानरो हरख्यो हृदय माहे, तेह अनुमानें लख्यो ॥ ७ ॥ चरणे नमियो वे लाल, फल आगल धस्या ॥ कहे उपशमियो वे लाल, तुम गुण सांनस्या ॥ त्रू० ॥ सांनस्या तेहवे वाघने पण, करे नक्तिनावें नस्यो ॥ अज्ञानथी वनराजसुतने, हणी नूपण ढग कस्यो ॥८॥ जूउ तिर्यंचें वे लाल,गुण नवि उलव्यो ॥ वाचा पाली घे लाल, धिक् नरनो लव्यो ॥ त्रू० ॥ जूउ नरनो लव्यो हवे तुम्हें, वेइ आशिप पुर गयो ॥ करी तीरथयात्र पूठे, किहा नाडिंधम रह्यो ॥ ए ॥ खोली काढयो वे लाल, तेह कलादने ॥ नयणे निरखी वे लाल, लह्यो आह्लादने ॥ त्रू० ॥ आह्लाद लहियो द्विजें पण तिणें, निरखी नीचु नालीयुं ॥ मनमाहि चितें रखे मागे, हेज सघलु गालीयु ॥ १० ॥ बांनण वोल्यो घे लाल, नाडिंधम गुणी ॥ शु नवि जाणो वे लाल, माया अवगुणी ॥ त्रू० ॥ अवगुणी माया हवे नाया, अटवी तुम नूली गइ ॥ सुणी कलघो तुरत प्रणमे, सुरत मुजने नवि रही ॥ ११ ॥ कहे कर जोडी घे लाल, परकासो मुने ॥ कारज वदाघु वे लाल, जे होये तुने ॥ त्रू० ॥ ते कहे मुजने एह नूपण, किणही दीधु दक्षिणा ॥ एहनु मुज मूल्य आपो, सुणि कलाद विचक्षणा ॥ १२ ॥ तेहने सोंपी घे लाल, गयो तटिनीजलें ॥ स्नान करेवा वे लाल, तन मेलो मलें ॥ त्रू० ॥ मलें मेलो स्नान करवा, गयो हवे इण अवसरें ॥ वाजतो पडहो देखी पासें, कान ते उंचा धरे ॥ १३ ॥ किणहिक मास्यो वे लाल, नृपअगज नलो ॥ नूपण काजें वे लाल, ए कुल चावलो ॥ त्रू० ॥ पवलासम ते होय दीठो, जेणें ते सवि दाखजो ॥ वध्य नर होशे नहीं तर, हियामा मत राखजो ॥ १४ ॥

सोनी चिंते वे लाल, ए महारु पडगु ॥ कर्म सयोगे वे लाल, कर कर्मी चढगु ॥त्रू०॥ आवी चढगु मुज तेह महारो,नहि गोत्री नहिं सगो ॥ तिण कारण का करु अनरथ, एम थयो मन कलगो ॥ १५ ॥ गुण वीसारी वे लाल, जइ पडहो ठव्यो ॥ नूपण वेइ ने लाल, नृप आगें लव्यो ॥ त्रू० ॥ लव्यो ब्राह्मण वात दाखी, नृपे वाधी मगावीयो ॥ पूठीया पौराणिक घणा, इयो दम इणु शिर आवियो ॥ १६ ॥ ते कहे स्वामी वे लाल, ज्ञात वेदनो ॥ करता महोटो वे लाल, वश उछेदनो ॥ त्रू० ॥ वशनो छेद करता, हण्या नहि कोइ दोप ए ॥ रासनारोहण कस्यो ततक्षण, नृप चढयो घण रोप ए ॥ १७ ॥ राजादेश वे लाल, वाहिर काढीयो ॥ चवन लेपी वे लाल, वाध्यो गाढीयो ॥ त्रू० ॥ गाढीयो बांध्यो वध नूमि, लेई जाता चितवे ॥ मुज कस्या पूरव उदय आव्या, रोये हुं होवे हवे ॥ १८ ॥ मुजने मलियो वे लाल, रुतघ्न ए वडो ॥ वानर वार्यें वे लाल,कह्यो मुज परवडो ॥ त्रू० ॥ परवडु कस्यु मे न कीधु, अपिती आपद नडी ॥ कहे द्विजवर श्लोक दोय तिहा, सुणे खलक तिहां खडी ॥ १९ ॥ तद्यथा ॥ व्याघ्रवानरसर्पाणा यन्मया न कृत वच ॥ तेनाहं डुर्विनीतेन, कलादेन विनाशित ॥ १ ॥ वेश्याऽक्षाराजचौराभ्र, नीरमार्जार मर्कटा ॥ जातवेदा कलादश्च, नविश्वास्या इमे क्वचित् ॥२॥ पूर्वढाल ॥ दोय पद्य नणता वे लाल, श्रवणें सानल्या ॥ वाड विचालें वे लाल, भुजगें अट कल्या ॥ त्रू० ॥ अटकल्या भुजगें एह द्विजवर, जिणें अमने उद्धस्या ॥ हा हा ते गुणवत महोटा, आज एम कष्टें नस्या॥२०॥ उक्त च ॥ उपकारिणि विश्रब्धे, साधुजने य समाचरेत्पापम् ॥ तं जनमसत्यसध, नगवति वसुधे कथ वहसि ॥ ३ ॥ अशनमात्ररुतज्ञतया गुरोर्न पिशुनोपि शुनो लनते तुलाम् ॥ अपिबहूपरुते सखिता खले, न खलु खेलति खेलतिका यथा ॥४॥ रूपवत गुणहीन० ॥ पूर्वढाल ॥ अहि मन चितवे वे लाल, बहुगुण जेहनो ॥ कांइक थाउ वे लाल, करण एहनो ॥ त्रू० ॥ थाउं करण मन विमासी, गयो वाडी क्रीडती ॥ तिहां राजकन्या मसी ततक्षण, पडी धब वेइ दोडती ॥ २१ ॥ दासीमुखथी वे लाल,नृप ए सांनल्युं ॥ हा हा नांखे वे लाल, मन थयुं व्याकुलुं ॥ त्रू० ॥ व्याकुलु मन करि चिच चिंते, डुःख समकालें नडयुं ॥ हजी एकनो मुज पार नाव्यो; बीजु एम

आवी पडयुं ॥२२॥ नृपे बहु तेडया वे लाल, तिहां कणे मांत्रिका ॥ जाण ने जोषी वे लाल, बहुला तान्त्रिका ॥ त्रू० ॥ तान्त्रिका कोइथी पार नाव्यो, कहे एम मन्त्रवादीयो ॥ मुज अछे निर्मल ज्ञान सूधु, नहिं हु उन्मादीयो ॥ २३ ॥ जेहने निहाणे वे लाल, ते निकलंक छे ॥ इणे कातारें वे लाल, उध्दरिया अछे ॥ त्रू० ॥ उध्दर्या एणें व्याल वानर, वाघ नाडिं धम वली ॥ ते इहा आव्यो पूजियो फल, फूलश्यु कपि मन रली ॥ २४ ॥ तेम वली वाघें वे लाल, एहनी भक्तिने ॥ तुज सुत हणियो वे लाल, वलीये शक्तिने ॥ त्रू० ॥शक्ति वलीये एह नृपण, आपीयु लेइ एहने ॥ ते माटें राजन् कहु तुजने,म मारिश गुणगेहने ॥२५॥ इण द्विज बोले वे लाल,मौष्टि कने कह्यु ॥ ते कृतघनथी वे लाल, तें सघलु लह्यु ॥ त्रू० ॥ लह्यु सघलु दुष्ट जाणी, हुकम मारणनो कीयो ॥ विचमाहि जाता तेह भुजगें, एह द्विज अवलोकियो ॥ २६ ॥ मूकावणने वे लाल, तुज पुत्री डसी ॥ जो ए मूको वे लाल, तो जीवे हसी ॥ त्रू० ॥ हसी जीवे राय पूछे, कोण प्रत्यय ए सही ॥ अवतारीयो जिण मन्त्रवादीयें, ते भुजगम तिहा वसी ॥२७॥ तिणे सवि मान्यु वे लाल, द्विज नृपे मेलीयो ॥ सर्पं चूशी वे लाल, विष पाछो लियो ॥ त्रू० ॥ लीयो विष सा हूइ निर्विष, हर्ष सहु कोई लह्या ॥ कहे मन्त्रवादी निसुणि बाडव, धन्य अहि जातें कह्या ॥ २८ ॥ पचम खण्डें वे लाल,छठी ढालमां ॥ प्रत्युपकारी वे लाल, एहवी चालमा ॥ त्रू० ॥ चाल एहवी जेह राखे,गुण कर्यो न विसारे ए॥ मुनि रामवाणी सुणो प्राणी, जइयें तस बलिहार ए ॥ २९ ॥ २०९ ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ क्रूर जीव कृतगुण लहे,न लहे मनुष्य कृतघ्न ॥ कगाख्यो अहियें एने, कर्युं कलाद विघन्न ॥१॥ वात सकल मामी कही, नृप आगल द्विजराज ॥ तुष्टचित्त राजा थइ, दीधु देशनु राज ॥ २ ॥ शिवस्वामी द्विज देश निज, पूजा नागविधान ॥ नागपंचमी पर्वनु, वरताव्युं मण्डाण ॥ ३ ॥ एह कथा वाघें कही, वानरी आगें सार ॥ माणस जेहवो को नहिं, कृतघ्न वडो गमार ॥ ४ ॥ जेम दुःख दीधु सोनीयें, ब्राह्मणने निर्धार ॥ तेम तुज दुःख देशे सही, एह निपाव विचार ॥ ५ ॥ भक्ष मदेल ए माहरु, युं कहु वारो वार ॥ हरिप्रिया हर्षें करी, निज जीवित वगार ॥ ६ ॥ कपि

नारी सारी घणुं, मूके नही निषाद ॥ विश्वासें रह्यो माहरे, आह्लाद ॥ ७ ॥ जो नाखु हु एहने, तो लागे मुज पाप ॥ चिंती रही, नहि मनमा संताप ॥ ८ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ वीरमाता प्रीतिकारिणी ॥ ए देशी ॥ वाघ बेसी रह्यो तकतावें, मन एम विमासे॥धन्य तिर्यंच पण एहवी,धरे प्रीति उल्लासें ॥१॥ धन धन तेह जग प्राणीया, मल्या छेह जे नापे ॥ दुर्जन दुष्ट जूठा सही, प्रीति अधविच कापे ॥ ध० ॥ २ ॥ तेह निषाद जब जागीयो, तब वानरी सूती ॥ देइ उत्संग शिर तेहनें, सुवे पुण्य पनोती ॥ ध० ॥ ३ ॥ व्याघ्र आवी समीपें कहे, सुण व्याध तु वात ॥ म कर विश्वास वानरी तणो, सहि जहिश उपघात ॥ ध० ॥ ४ ॥ तु सुखे जीव दीये मुजने, एह वान री वाला ॥ सप्तदिन क्षुधित आजीविका, शमे अग्निनी ज्वाला ॥ ध० ॥ ५ ॥ नहि दीये तो तुजने सही, थशे दुःखनु हेतु ॥ वानर जाति कोइनी नो हे, जिम जूत ने प्रेत ॥ ध० ॥ ६ ॥ निसुण न सुण्यु पुररायने, हण्यो वानरे मूढें ॥ कहे रे निषाद मुज आगलें, कहो वातए रूडे ॥ ध० ॥७॥ ते कहे नागपुर नयरमा, नृप पावक नामें ॥ एकदा वक्रतुरंगे चढी, गयो केलि आरामें ॥ ध० ॥ ८ ॥ अश्व दोडावता अपहरी, गयो रायने लेइ ॥ जमतां वनमा तृषातुर थयो,उदयें अद्युत आवेइ ॥ध०॥ए॥ एक वानर मल्यो तेहने, फल उत्तम दीधा ॥ वारिसर तास देखाडीयु, नृप कारज सीधां ॥ ध० ॥ १० ॥ वारिपान फलनक्षण करी, तरु शीतल छाही ॥ राय बेठो तदा पूठथी, सहु आवीयु धाई ॥ ध० ॥ ११ ॥ सैन्य साथें नृप पुर व ल्यो, मही वानर साथें ॥ जाणि उपकार आपे जला, फलमोदक हाथें ॥ ध० ॥ १२ ॥ पासें राख्यो नृपें तेहने, अगसेवना काज ॥ मास वर्ष तमा एकदा, गयो वनतर राज ॥ ध० ॥ १३ ॥ केलिघर पुष्पक्रीडा करी, नृप शांत थइ सोवे ॥ अंगरक्षक कपि पासें ते, रह्यो चिहु दिशि जोवे ॥ ध० ॥ १४ ॥ भ्रमर गुंजित आव्यो तदा, नृप अंगपर वेगे ॥ खड्गधारी तदा वानरें, निज नयणले दीठो ॥ ध० ॥ १५ ॥ स्वामिनी जक्ति करते थके, कपि बुद्धि उछेदी ॥ भ्रमर मारण मिषें रायनी, मूकें कंधरा छेदी ॥ ध० ॥१६॥ जे हूतो अति हितकारीयो, थयो अतिहि दुःखकारी ॥ जाति

ए मूढ वानर तणी, किसी एहशु यारी ॥ ध० ॥ १७ ॥ वात निसुणी
निषादें करी, तदा वानरी नाखी ॥ वाघ आगल पडी वापडी, धिक् एह
वा साखी ॥ ध० ॥ १८ ॥ वाघ कहे खेद नवि कीजियें, कस्यो जेहवो
संग ॥ तेहवु फल तुजने हूवु, नहि नीचथी रंग ॥ ध० ॥ १९ ॥ यडुक्त
॥ चोपाइ ॥ नीच तणो नव कीजें संग, जो कीजें तो होवे नंग ॥ हाथ
अंगारो ग्रहे जेकोय, का दाझे का कालो होय ॥ १ ॥ दोहो ॥ संगति की
जें साधुकी, हरे उरकी व्याधि ॥ उठी संगति नीचकी, आठे पहोर उपाधि
॥२॥श्लोक॥ गुणिन समीपवर्त्ती,पूज्योलोकेषु गुणविहीनोपि ॥ विमलेक्षण
प्रसंगा,दंजनमाप्नोति काणाक्षि ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ तव उत्पन्नमति
वानरी, जणावे निज शानें ॥ हित कहु प्राण छे माहरा, एह पुरुने गानें
॥ध०॥२०॥ आगलथी ग्रहो एहने,पछे अंग तुज हाथे ॥ तेम कस्यु तेणे
लेइ पुरुने, चढी वृक्षने माथे ॥ ध० ॥ २१ ॥ वाघ विलखो थइने वल्यो,
थयो अदृश्य तिण वेला ॥ उतस्या वृक्षथी ततक्षणें, नर वानरी नेला ॥
ध० ॥ २२ ॥ निजलतावास लेई गई, अवगुण न संभास्यो ॥ धन्य जगत
जिहां एहवा, करे पछु उपकारो ॥ध०॥२३॥ निज शिशु पास मूकी करी,
गइ फुल फल लेवा ॥ दुष्ट भूखे भस्या वाल ते, जूउ नीचना हेवा ॥
ध० ॥ २४ ॥ यडुक्त ॥ गाथा ॥ अलमेव विसुआण, सुहमेव अहीण
तंहय मदस्स ॥ दिहि विय पिसुणाण, सच्च सवस्स नयजणयं ॥ ४ ॥
खमीकउवि पक्खालीउवि चुंसीकउवि चुंसु व ॥ जीहाफलाइउवि हु, जणेइ
दाह अहो पिसुणो ॥ ५ ॥ दोहो ॥ भट्टा नूप भुयगमह, ए सुह डहिजा
हूंति॥वैरीवींछीवाणीयो,पूठें दाह दियंत ॥६॥पूर्वढाल॥ फल लेइ आवी ते
वानरी, सूतो ते नर देखि॥ पासें निजबाल दीठा नहीं, पडी भ्रांति सुवि
शेष ॥ ध० ॥ २५ ॥ तोहि उगाडी तेहने दीया, फल अति घण
मीठा ॥ बाल जोवा भणी नीकली, तिण सायें नवि दीठां ॥ध०॥२६॥
वृक्षशाखाहूती परखें,जूउ पापीयें पाडी ॥ बाल भक्षण कस्या पणतदा, न
बोली किस्यु आडी ॥ ध० ॥२७॥ जुवो गुणवंत तिर्यंचमा, कह्या सातमी
ढालें ॥ धन्य जेह कष्टआवी पडे,एम निज मन वाले॥ध०॥२८॥२४५॥१८॥
॥ दोहा सोरठी ॥
॥ चिंते दुष्ट विचार, मनमां खेदाकुलपको ॥ अहो महारो आपार,

आज सकल निष्फल थयो ॥ १ ॥ खाली केम जाय गेह, बीजो को मलियो नहीं ॥ एम चिंती इणि तेह,वानरी खंधे लेइ चल्यो॥२॥आवे घर जणी जाम, प्रकट थई कहे वाघलो ॥ नीच करयुं शुं काम, विण वांके हणी वानरी ॥ ३ ॥ पुत्र तणी परें जेण, पापी तुजने पालियो ॥ ए हता केम करेण, तुज हियडुं चाल्युं दहा ॥ ४ ॥ रे पापीया अज्ञान, मुह लेईने जा परो ॥ कृतघ्नी तुज समान, अवर कोइ दीठो नहिं ॥ ५ ॥ एम निर्भृंठी वाघ, विटने मूकीने गयो ॥ कुकर्मजलधि अताग, घेर आव्यो ते पापीयो ॥ ६ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ घरे आवोजीआवो मोरीयो ॥ ए देशी ॥ वात सुणी जनमुख थकी, पुरनाथ कोप्यो ततकाल ॥ जग कडवा कर्म न कीजियें ॥ ए आंकणी ॥ हुं वानर प्रतिपालना, करुं ए थयो वानरकाल ॥ ज० ॥ १ ॥ आण लोपी एणें माहरी, ग्रही लावो बांधी मुज पास ॥ ज० ॥ काम कर्युं एणें आकरुं, नवि जोयुं रे काही विमासि ॥ ज० ॥ २ ॥ यडुक्त ॥ आज्ञा जगो० ॥ राजसेवकें जइ आणीयो, मार्यो महोकम तेणी वार ॥ ज० ॥ हुकम कर्यो मारवा तणो, लेइ चाल्या ते निरधार ॥ ज० ॥ ३ ॥ वाघ मल्यो मारग कहे, एहनुं मारण नहीं युक्त ॥ ज० ॥ सेवकें जइ नृपने कह्युं, आव्यो कौतुकथी सुणि उक्ति ॥ ज० ॥ ४ ॥ वाघ कहे पापी घणुं, मत मारो एहने राय ॥ ज० ॥ पापी पापें हो आपणे, लेवाये रे एम कहेवाय ॥ ज० ॥ ५ ॥ विस्मय लही राजा कहे, तुम्हें पशु रूपी नरवाणी ॥ ज० ॥ मुज मन ए कौतुक घणुं, परकासो तुम्हें गुण खाणी ॥ ज० ॥ ६ ॥ कहे वाघ वयानमां आवीया, मुनि नांखशे मा हरी वात ॥ज०॥ एम कही गयो वाघलो,हरख्यो नृप सुणी अवदात ॥ज० ॥ ७ ॥ देशथकी काढ्यो परो, नरपतियें तेह निषाद ॥ ज० ॥ बहु लोक निर्भृंठ्यो अति घणुं, गयो धरि मनमां विखवाद ॥ ज० ॥ ८ ॥ आगमन सुणि गुरुराजनुं, नृप आव्यो वंदन काज ॥ ज० ॥ वेगे आवी ने आगलें, गुरु देशन दे घनगाज ॥ ज० ॥ ए ॥ गुरु कहे द्रोह न कीजि यें, कोइ ऊपर सुण नरचंद ॥ ज० ॥ वली विश्वासीनो द्रोह जे, सहु पातकमांहे इंद ॥ ज० ॥ १० ॥ नृप अंजलि जोडी कहे, प्रभु नांखो निर्म

ल ज्ञान ॥ ज० ॥ कपिनारी मरी किहां गइ, मुज दाखो माणु मान ॥ ज० ॥ ११ ॥ कहे गुरु सुण सावधानछु, मरी तेह गई सुरलोक ॥ ज० ॥ यडक्तमागमे ॥ गाथा ॥ तव संजम दाण जुडं, पगईए जहडं किवाजूडं ॥ गुरुव यण रडं निच्चं, मरीड देवे सुरो जाई ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ कहे पुनरपि नृप गुरु जणी, जाखो मुजने गतशोक ॥ ज० ॥ १२ ॥ विह्रु जेदें नीच निषाद ते, कुण गति लहेशे जगवंत ॥ ज० ॥ कहे मुनि नरक विना नहि, एह ने अन्य स्थानक संत ॥ ज० ॥ १३ ॥ पंचाश्रवने सेवतो, विषयें विव शीकृत जेह ॥ज०॥ कृतघ्न निर्दय पापीयो, परद्रोहकारीमां रेह ॥ज०॥१४॥ इर्ष्यानी क्रूराशयी, नर नरक तणो अधिकारी ॥ ज० ॥ कहे मुनिवर प्र स्तावथी, वीजी दोय गति विस्तार ॥ ज० ॥ १५ ॥ माया नियडीने सेव तो, शठतारत होय सदाय ॥ ज० ॥ आर्त्तध्यानमांहे मरी, जीव तिर्यं चगतिमां जाय ॥ज०॥१६॥ मार्दव आर्जव गुण जर्यो, गतदोष ने अल्पकषा य ॥ ज० ॥ न्यायी गुणग्राही जीवडो, मरिने ते मानव थाय ॥ ज० ॥ १७ ॥ कहे नृप मुनिवरने वली, केम वाघ वोल्यो नरवोल ॥ ज० ॥ सुण नूप कारण एहनु, पहेले सुरलोकें अमोल ॥ ज० ॥ १८ ॥ सामा निक सुरनी प्रिया, चवी आवी मनुज मजार ॥ ज० ॥ देवी रखवाल सुरें मली, पूबघु देवी जरतार ॥ ज० ॥१९॥ स्वामिन् एह विमानमां, कुण देवी होशे इण ठार ॥ज०॥ कहे ते वननी एक वानरी, लेहेशे आवी अवतार ॥ ॥ ज० ॥ २० ॥ तेमांहेलो एक देवता, आव्यो करी वाघनुं रूप ॥ ज० ॥ तास परीक्षा कारणें, वोल्यो नरवाणी अनूप ॥ ज० ॥ २१ ॥ निषाद अने वली वानरी, तेह सार्थे वहुत विवाद ॥ ज० ॥ कह्यो वली दृष्टांत कह्यां घणां, मनमांहे धरि आह्लाद ॥ ज० ॥ २२ ॥ वाघ स्वरूप गुरुयें कह्यु, नृप निसुणि लह्यो वैराग्य ॥ज०॥ निजसुतने राज्य जलाविने, नृप च रण ग्रहे वडजाग्य ॥ ज० ॥ २३ ॥ राजरूषि हरिपालजी, पाली संयम व्रत सार ॥ ज० ॥ सौधर्म सुरलोकमां, पाम्यो सुरनो अवतार ॥ ज० ॥ २४ ॥ पंचमे आठमी ढालमां, कही ए मेघरथजी वात ॥ ज० ॥ राम विजय कहे सांजलो, हवे श्येनतणो अवदात ॥ ज० ॥ २५ ॥ इति निषाद वानरीकथा समाप्ता ॥ सर्वगाथा ॥२७६॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥१९॥

॥ दोहा ॥

॥ जीवहिंसाथी जिम लह्यो, नरक तणो अवतार ॥ ते निषाद जो पंखीया, का जाये जव हारि ॥१॥ पाप करमथी पामियो, पंखीजव जव मांहि ॥ वली कुकर्म करवायकी, दीसे नरकनी चाहि ॥२॥ तव सिंचाणो बोलीयो, तुं सुखीयो राजन्न ॥ धर्माधर्म विचारमा, वरते तहारु मन्न ॥३॥ मुऊ जक्ष्य तुऊ शरणु ग्रह्यु, पण हवे शी मुऊ पेर ॥ क्षुधा राक्षसी ईं ग्रह्यो, जाउ कोने घेर ॥ ४ ॥ सुण जलि शाह पुरुप तु, वांछे नहिं विरूप ॥ राख्यो जूख्यो मुऊने, सघले सत सरूप ॥ ५ ॥ जूख्याने सूजे नहिं, कृत्याकृत्यविचार ॥ साजन्न शु जाणे नहि, नीतिशास्त्र अधिकार ॥ ६ ॥ यडक्तं ॥ विवेकोह्रीर्दयाधर्मो, विद्यास्नेहश्च सौम्यता ॥ सत्त्व च आयते नैव, क्षुधार्त्तस्य शरीरिण ॥ १ ॥ प्रतिपन्नमति प्रायो, लुप्यते क्षुत्रिपीडिते ॥ इत्यर्थ नीतिशास्त्रोक्तो, दृष्टांत श्रूयतां प्रजो ॥ २ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ वाइ रे अमने रेंटीयडे ममाण्या ॥ ए देशी ॥ सुण मेघरथ राजेश्वर वाहला,जीवदयाना रागी रे ॥ जूख उपर एक नीतिशास्त्रनी, वात कहुं वैरागी रे ॥ १ ॥ रायजी मुऊने जूखडली सतापे रे ॥ जूखडली निठुरतानु कारण रे, जूखडली नेहनु निवारण रे ॥ रा० ॥ ए आंकणी ॥ निर्जल मरुमंमलमा कूउ, प्रियदर्शन अहि निवसे रे ॥ नीर समीपें बिलमां रहेतां, अहोनिश बिलमा कल्लसे रे ॥ रा० ॥ २ ॥ जेकादिक बहु जीवनु जक्षण, करतो तिहां सुखे रहेतो रे ॥ एक गगदत्त दर्डर सघातें, प्रीति घणी ते वहेतो रे ॥ रा० ॥ ३ ॥ कूपमध्यवासी वली तिहांकणे, एक चित्र लेखा नामें रे ॥ सारिका सुगुणा सार्थे अहिजी, वहालपणु घणु कामे रे ॥ रा० ॥ ४ ॥ एम करतां कोइ कालें द्वादश, वार्षिक हुइ अनावृष्टि रे ॥ जल नीठुं कूपकनु जलचर, जीव तणी नहिं सृष्टि रे ॥ रा० ॥ ५ ॥ तृषि खेद अहिनो तव हूउ,गगदत्त पंक खाई रे॥ वेला निर्गम करे एक दिन ते, जुजग कहे सुण जाई रे ॥ रा० ॥ ६ ॥ मित्र घणी पीडा छे मुऊने, ते कहे शुं मुऊ जांखो रे ॥ वहालेसर मन मलियु तिहां कण, गाना गानी म राखो रे ॥ रा० ॥ ७ ॥ क्षुधावेदना गाढी मुऊने, मित्र वमे छे जाणो रे॥ मरण समान नहिं जय महोटो, परजव दलिद्र समाणो रे ॥ रा० ॥८॥

पंथ समान जरा नहिं जगमां, नूख समी नहिं वेयण रे ॥ ते माटें वालेश्वर तिम करि, जिम थिर रहे मुज चेयण रे ॥ रा० ॥ ए ॥ गगदत्त चिंते इण कूपक, सघला जीव विणास्या रे ॥ ए डुष्टातमनी मुऊ ऊपर, हणवा दीसे आशा रे ॥ रा० ॥ १० ॥ करि उपाय ए डुष्टातमथी, आप जणी ऊगारु रे ॥ स्वारथ साधीजें आपणनो, नीतिवचन सजारु रे ॥ रा० ॥ ११ ॥ यत ॥ स्वार्थं च साधयेद्धिमान्, स्वार्थत्रशोहि मूर्खता॥नास्त्युपाय स कोऽप्यत्र,येन सर्वोपि रज्यते ॥ ३ ॥पूर्वढाल॥कहे प्रियदर्शनने ते गगदत्त,सुण स्वामी तुऊ काज रे॥ महानदी इहना ललचावी,जलचर लावु आज रे॥रा०॥१२॥ पण तिहा जावा शक्ति नहि मुऊ, चञ्चुपुटें चित्रलेखा रे ॥ जो ऊपाडी तिहा पहोचाडे,करु उपगार विशेषा रे ॥ रा० ॥ १३ ॥ थइ प्रसन्न जुजग आदेशें, चित्रलेखा लेइ उमी रे ॥ कोइक महोटा इहमा महेली, वाट जोवे तट रूडी रे ॥ रा० ॥ १४ ॥ कहे सारिका निसुणो गगदत्त, कहो वेला केम कीजें रे ॥ स्वामी प्रियदर्शन नूख्या ठे, काज करी आवीजें रे ॥ रा० ॥ १५ ॥ गगदत्त कहे सुण चित्रलेखा, वात विचारी करीयें रे ॥ नूख्या प्रियदर्शननी सगति, हवे केमही नादरीयें रे ॥ रा० ॥१६॥ सारिका प्रति गगदत्त कथयति ॥श्लोक॥ बुज़ुक्षित किं न करोति पापं, क्षीणा नरा निःकरुणा जवति ॥ आख्याहि जद्रे प्रियदर्शनस्य, न गगदत्त पुनरेति कूपम् ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ ते माटे तुऊने हु वारु, म करिश सगति एहनी रे ॥ नूख अने वली माकण वेद्धु, जगमा नोहे केहनी रे ॥ रा० ॥ १७ ॥ एम समजी ते मनमा आठी, पाठी फरि गइ गाणे रे ॥ श्येन कहे मेघरथजी नूख्यो, कृत्याकृत्य न जाणे रे ॥ रा० ॥ १८ ॥ तेमाटे मुऊने सतोषो, कहे मेघरथ सुण जाई रे ॥ शामाटे तूं रहे ठे नूख्यो, देव आहार मगाई रे ॥ रा० ॥ १९ ॥ कहे पखी आमिष विण मुऊने, अन्य आहार न जावे रे ॥ कहे नृप ते मगावी आपु, एम कां आकुल थावे रे ॥ रा० ॥२०॥ मुऊ नजरें प्राणी तन ठेदी, जो तु आपे ताजूं रे ॥ तो मुऊ आतम सतोषाये, न मले तुऊ मुऊ वाजूं रे॥रा०॥२१॥पंचम खमें नवमी ढालें, आवी मलियुंटाणु रे ॥ हवे मेघरथजी सत्य राखशे, आगल तेह वखाणु रे ॥रा०॥२२॥२०४॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ मेघरथजी मन चिंतवे, परने नव दुहवाय ॥ निज तनु छेदीने दीये, जिम एसतोपाय ॥ १ ॥ कहे नृप साजन श्येन तु, ए पंखी नारोच्चार ॥ मुऊ तनुमास तुला धरी, आपु करि आधार ॥ २ ॥ वात पंखी तिम पडिवज्जी, तुला मगावी ताम ॥ पारावत एकण दिसे, मूक्यो तेह अभिराम ॥ ३ ॥ तीखी छुरिकायें छेदीने, निज तनु मासना खम ॥ मूके बीजे त्राजुवे, धीरज धरी अखम ॥ ४ ॥ देवमाया कोइ आकरी, न हुवे सरिखो तोल ॥ मास खम तिम तिम धरे, मनसा करी अमोल ॥ ५ ॥ तो पण सम थाये नहि, तव राजन निज अंग ॥ सकल्पी बेठो तुला, अहो दयागुण चंग ॥ ६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ रंगीला राणा, रहो रहो सनतकुमार ॥ ए देशी ॥ अतेउर सघलो मल्यो जी, मलीयो रे सवि परिवार ॥ अहो स्वामी शु मांमीयो जी, जीवित त्याग विचार ॥ १ ॥ रगीला राणा, रहो रहो मेघरथ राय ॥ रंगीला स्वामी, कहो अम अवगुण काय ॥ हठीला स्वामी, एम केम छेदीयें काय ॥ ए आंकणी ॥ एक पखीने कारणें जी, कां करो साहस एम ॥ तमें अमने घणु वालहा जी,अविहड तुमशुं प्रेम ॥ रगीला० ॥२॥ हा हा सहुये करे जी,नयण न खेंचे रे धार ॥ वालेसर केम अवगणो जी, तुम्हें अम प्राण आधार ॥ रगी० ॥ ३ ॥ ए दीसे काइ कारिमो जी,देवतणो रे प्रकार ॥ नहितर एह कपोतमां जी, केम होवे एवडो भार ॥ रं० ॥ ४ ॥ ज्ञानवत पण नवि लहे जी, पर उपकार रसेण ॥ सरलपणे देयुं नहिं जी, चिंतवे करुणा वशेण ॥ रं० ॥ ५ ॥ धन जगतीमां जे करें जी, अंगीकृत निर्वाह ॥ ए पुजल परकामने जी, आवे ए लाभ अथाह ॥ रं० ॥६॥ दान सार छे वित्तनो जी, सत्य छे वचननो सार ॥ आयुसार ए कीर्त्ति छे जी, देहनो सार उपकार ॥ रं० ॥ ७ ॥ स्वारथीयुं सहुये मल्युं जी, वारे छे मुऊ आज ॥ पण ए प्राण भवोभवें जी, वार अनती ए राज ॥ रं० ॥ ८ ॥ मन देखी दृढ रायनुं जी, चलत कुमलश्रुति होय ॥ भूषण अंगें विराजता जी, आवी नम्यो सुर कोय ॥ रं०॥९॥ जो राजेश्वर धन्य तुं जी, धन धन तोरी रे माय ॥ धन तुम अन्वय उजलो जी,

धन्य धन्य घनरथ ताय ॥ रा० ॥ १० ॥ वीरशिरोमणि तुं वडो जी, जीवित जन्म प्रमाण ॥ ईशानेंद्रं तुम तणां जी, प्रभु आज कीध वखाण ॥ रा० ॥ ११ ॥ अणसहेतो ते वर्णना जी, आव्यो परीक्षा काज ॥ वढता पूरव मत्सरें जी, दीठा कपोत ने बाज ॥ रा० ॥ १२ ॥ ते बेहुने में आश्रयी जी, आण्या तुम्हारी रे पास ॥ तुम परख्या हरख्यो मनें जी, हवे तुम चरणनो वास ॥ रा० ॥ १३ ॥ हवे नृप पूछे एहने जी, वैर हुउं केम देव ॥ सुर कहे अनरथ कारिणी जी, माठी ए लोजनी टेव ॥ राजेश्वर महोटा, सुण सुण वैरनी वात ॥ १४ ॥ ए आंकणी ॥ एहिज नयरी मां हुवो जी, सागरदत्त अनिधान ॥ वणिक विजयसेना जली जी, घरणी ए सुगुण निधान ॥रा०॥१५॥ युगल पणे तस उपन्या जी,धन नंदन सुत दोय ॥ यौवन वय धन कारणे जी, गया परदेशें रे दोय ॥ रा० ॥ १६ ॥ नागपुर नगरें गया जी, करताजी वणिक व्यापार ॥ बहुमूल्य उपराजियुं जी, रयण तिहां एक सार ॥ रा० ॥ १७ ॥ ते बेहु बंधव रयणने जी, लोनें पड्या रे निर्लज्ज ॥ माहोमाहे एकेकनो जी, चिंतवे घात अकज्ज ॥ रा० ॥ १८ ॥ एक दिन नदीयें नाहता जी, माड्यो तिहां रे विवाद॥ धिक् धरतीमा को नहि जी, लोन समो उन्माद ॥ रा० ॥ १९ ॥ एक कहे उपराजियु जी, रयण ए में बहुमूल्य ॥ बीजो कहे महारी कला जी, नणियु सवे तुऊ धूल ॥ रा० ॥ २० ॥ रोष चढ्यो बिहुने मनें जी, अरुण नयण थयां ताम ॥ जल अगाधमा जूऊता जी, पडीया ते दोय अकाम ॥ रा० ॥ २१ ॥ आर्त्तध्यानें ते मूवा जी, थया पंखी वनमांहि ॥ पूरवजव वैरें मल्या जी, युद्ध करे माहोमांहि ॥रा०॥२२॥ एम कही सुर लोकें गयो जी,सुर करतो गुणग्राम ॥ सज्ज अंग नृप देखिने जी,हरख लह्यो सहु ताम ॥ रा० ॥ २३ ॥ पंचमे खंर्मे सांजलो जी, दशमी ढाल सुरंग ॥ राम कहे धन्य जेहने जी, अविहड धर्मनो रंग ॥ रा० ॥२४॥२२४॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ कहो स्वामी ए कोण हतो, निरपराध जे आय ॥ एम तुमने संकट दियुं, नाखो सहु समजाय ॥ १ ॥ कहे मेघरथ कीधां करम, पूरव वैर निबंध ॥ नव नमता आवे उदे, बलीयो अहो संबंध ॥ २ ॥ आ नवथी नव पांचमे, जव हरि ने बलदेव ॥ अनंतवीर्य अपराजिता, हुता कत

सुरदेव ॥ ३ ॥ तिण नव अम्हचो रिपु हतो, दमितारि इण नाम ॥ तस तनया अम्हें अपहरी, कीधु नमलु काम ॥ ४ ॥ ते नमी नवकांतारमां, नरताष्टापद पास ॥ तापस सुत तपि बालतप, थयो ईशान सुर खास ॥५॥ इद्रप्रशसा सानली, अणसद्दहतो ताम ॥ इहां आवीने जे कर्युं, ते नहि अजाण्यु काम ॥ ६ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

मोजा मारे रे साघूडावाली ॥ ए देशी ॥ मेघरथजीना मुखथी निसुणी, सना सहु जन वाणी ॥ धन धन ए राजेश्वर गिरुआ, मलीया अमने नाणी रे ॥१॥ ए सुत रूडो रे घनरथजी वालो ॥ प्राण देइ पोताना परगट,पारेवो कस्यो वहालो रे ॥ ए सुत० ॥ ए आंकणी ॥ जीवदया कीधी जेणें वहा ली, धन जननीनो जायो ॥ अतेउर पुरजन सहु मलि मलि, मेघरथजीने गायो रे ॥ ए० ॥२॥ वात सुणी निजनव सुरनवनी,पखी बेहु समजाणा॥ जाति समरण पामी ततक्षण, क्रोध तजी हुआ शाणा रे ॥ ए० ॥ ३ ॥ कहे स्वामी अम्ह संवेग आव्यो, तुम्ह करुणाथी साचो ॥ हवे प्रकासो आतमने हित, जाण्यो नव करि काचो रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ कहे मेघरथ मदथी मन वालो, समकित सूधु पालो ॥ पाप नाशन अणस ण सनालो, निज आतम अजुवालो रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ बेहु पंखी करे अणसण किरिया, उपशमरसना दरीया ॥ सनारे मन पंचम किरिया, सुरनुवनें अवतरीया रे ॥ ए० ॥ ६ ॥ पौषध पारीने कीधु पारणु, रा ज्यलीला सुख विलसे ॥ पण जाणे प्रनाव पोतानो, नावमांहि विल ससे ॥ ए० ॥ ७ ॥ परिसह उपसर्गे नवि बीहे, संवेगवासी अदीणो ॥ एक दिन अष्टम करि पडिमायें, मुनि जेम ध्यानें लीणो रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ अडविस लाख विमाननो स्वामी, अड इंद्राणीनो कामी ॥ एंशी सहस सामानिक केरो, कहे अधिपति शिर नामी रे ॥ ए० ॥ ए ॥ निज माहा त्म्यें निर्जित सहु जग,गतकल्मष जितकामो॥ नावी जिन तुमने कर जोडी, एह करु परणामो रे ॥ ए० ॥ १० ॥ पासें रही निसुणी कहे देवी, कुण गुणवत निहाली ॥ स्वामी तुमें प्रणाम ए कीधो, कहो अम उत्तर वाली रे ॥ ए० ॥ ११ ॥ इंद्र कहे सुण त्रैलोक्यसुंदरी, नयरी पुंमरिगिणीस्वामी ॥ मेघरथ अष्टम तप रह्यो ध्यानें, तास नम्यो शिर नामी रे ॥ ए० ॥

१२ ॥ ध्यानमां लीन रह्यो जेम योगी, कोइ चलावी न शकें ॥ इंड्रादिक बहु देव मले पण, अंश न ध्यानथी चसके रे ॥ए०॥१३॥ निसुणी सुरूपा ने अतिरूपा, इइतणी इझाणी ॥ आवी चलावा मेघरथजीने, पासें ते रूजाणी रे ॥ ए० ॥ १४ ॥ रूप करी रमणीनु वारू, कामणगारी कांते ॥ शोल शृंगार करीने सुदरी, आवी जनी एकांतें रे ॥ ए० ॥१५॥ तन सुकुमारी रूप रसाली, नमुद वनी अणियाली ॥ मेघरथजीने जोवे नाली, कामिनी घणु लटकाली रे ॥ ए० ॥ १६ ॥ तन अंशुक परहु करि कामिनी, कनी अगने मोडे ॥ मेघरथजीनें निरखे सहामी, पण ते न यण न जोडे रे ॥ ए० ॥ १७ ॥ अम्हें अमरी तुम कपर मोहन, आवी रूपनी मोही ॥ पूरो अम्हारो मनोरथ वहाला, एक वार साहामुं जोई रे ॥ ए० ॥ १८ ॥ तुज दरिसणनी तरशी प्रीतम, रुजाणी अम्हें आवी ॥ मूकी सुरपति जेवो स्वामी, तुम मुझा अम नावी रे ॥ ए० ॥ १९ ॥ नयण वयणना चाला करती, वलि वलि जोवे फरती ॥ मेघरथजीनी ध्यानदशा तव, नहि तिलमात्र उसरती रे ॥ ए० ॥ २० ॥ भुजआलिंगन देती पासें, आवी कहे नहिं कूडुं ॥ कहे मुखचुंबन करती प्रीतम, ए मुखपंकज रूडु रे ॥ ए० ॥ २१ ॥ हाव ने नाव विलास ने विभ्रम, करि करिने ते थाकी ॥ कीधा अनेक उपाय चलाववा,कांहिं न राख्युं वाकी रे ॥ ए० ॥ २२ ॥ एम अनुकूल कष्ट बहुतेरा, आखी रयण विहाणी ॥ थयो प्रनात मग्या नहि ध्यानें, तेह घणु जंखाणी रे ॥ ए० ॥ २३ ॥ शात थई निज रूप देखाडी,स्तुति करवाने लागी ॥ धन्य धन्य मेघरथजी तुम जीवित, रागदशा नवि जागी रे ॥ ए० ॥ २४ ॥ अम चेष्टायें लोह मयी पण, पुरुष गलीने जाइ ॥ पण लवलेश चल्युं नहिं तुमचु, चित्त ए अधिक वडाई रे ॥ ए० ॥ २५ ॥ धन्य तुम्हो कृतपुण्य तुम्हो गो, इंडें व खाण्या तेहवा ॥ नूमंमलआखमंमलसुगुणा,कोइ नहिं तुमजेहवा रे ॥ए०॥ २६ ॥ खमो अपराध न करशुं एहवु, पुनरपि काम कदापि ॥ मेघरथजी अमो घणु पस्ताणी, तुमने इहां सतापी रे ॥ ए० ॥ २७ ॥ ते अमरी प होती निज स्थानक,मेघरथ पडिमा पारी ॥ करे पारण विधिशुं बहु सार्थे, देव गुरुने संनारी रे ॥ ए० ॥ २८ ॥ धन मनना वलीया दृढधर्मी,

मेघरथजीने वदो ॥ पंचम खमे ढाल अग्यारमी, राम कहे चित्त मंगे रे ॥ ए० ॥ २ए ॥ सर्वगाथा ॥ ३६ए ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन राजसना जोडी, वेठा मेघरथ राय ॥ वनपालक आवी करी, अरज करे सुखदाय ॥ १ ॥ स्वामिन् तुम मनवंछका, समर्थ बहु परिवार ॥ समवसस्था घनरथ प्रनु, जगतीजन आधार ॥ २ ॥ देइ पारितोपिक घणु, धन हिरण्यनी राशि ॥ मेघरथजी परिवारशुं, वंदण चल्या उल्लास ॥ ३ ॥ जिनवर वांदी नावशु, वेठा मनने कोड ॥ दीये देशन प्रनु नवि जना, निसुणे वे कर जोडि ॥ ४ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ देशी वणजारानी ॥ सुणो प्राणी जी ॥ कहे घनरथजी नगवान्, ध्यान धरो मन धर्मनो ॥ सुणो प्राणी जी ॥ सु० ॥ सहु आय ए अथिर निदान, फलपाक ए शुन कृतकर्मनो ॥ सु० ॥१॥ सु० ॥ मेली अनती वार, पुजल राशि ए प्राणीये ॥ सु० ॥ सु० ॥ फरि फरि चाहे तास, शी मति तास वखाणीयें ॥ सु० ॥ २ ॥ सु० ॥ नहिं कोइनु जग कोय, स्वारथनुं सहुये सगु ॥ सु० ॥ सु० ॥ जेहने मलीयें आपणो जाणि, ते जाणे एहने ठगुं ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥ नवि जाणे ठगातो आप, माया विलुब्धो जीवडो ॥ सु० ॥ सु० ॥ एतो ज्ञाननयणे करी अंध, शु करे सद्गुरु दीवडो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ जलहां जे चल अग, तेहमा मूल तुम्हें लह्यो ॥ सु० ॥ सु० ॥ हाथु न आवे हाथ, पछें केहेशो जे नवि कह्यो ॥सु०॥५॥ सु०॥ सार्थे न आवे कोय,धन रमणी नवि ताहरी ॥ सु० ॥ सु० ॥ जाणे तु मूढ सनाव,में मेली ए माहरी ॥ सु० ॥६॥सु०॥ मान चढयो मद जोर, हु करतो ए नावनो ॥ सु० ॥ सु० ॥ ए व्यवहारनी चाल, निश्चय आप स्वनावनो ॥ सु० ॥७॥ सु० ॥ जो सुखनां रे सरीख,तो दुःख कारण कां वहो ॥ सु० ॥ सु० ॥ ते सुखनु एक हेतु,सार धर्म ते सद्दहो ॥ सु० ॥ ८ ॥ सु० ॥ परहरिने परमाद, धर्म करे जे सम्मह्या ॥ सु० ॥ सु० ॥ आपद पण होय सुख, शूर तणी परें सुख लह्यां ॥ सु० ॥ ए ॥ सु० ॥ इण अवसर गणधार, पूछे शूर कवण हुउ ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहे घनरथजी अरिहंत, धर्म तणुं माहातम जूउ ॥ सु० ॥१०॥ सु० ॥ जंबूद्वीप मझार,

मध्य खंडमां नारतें ॥ सु० ॥ सु० ॥ धरणीप्रतिष्ठित नाम, पुर गुणसमु दायांचितें ॥ सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ तिहां प्रजाप्रतिपाल, वीरसेन नामें जयो ॥ सु० ॥ सु० ॥ न्यायवतमां लीह,धर्म करणने अलजयो ॥ सु० ॥ १२ ॥ सु० ॥ धारिणी नामें देवि, मनु देवी धरणी गता ॥ सु० ॥ सु० ॥ रायने वल्लन जोर, महियलमा मोहनलता ॥ सु० ॥ १३ ॥ सु० ॥ एक दिन सूती सेज, सुपनु लहे सुरराजनु ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहे पियुनें धरि नेह,धन्य विहाणु मुज आजनु ॥ सुणो स्वामी जी ॥१४॥ सुणो स्वामी जी॥में जातो दीगे इंद, मुह आगल फल शु हशे ॥ सुणो स्वामीजी ॥ सुणो राणीजी ॥ तुम सुत होशे बलवत, नाव चलाचल पामशे ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ राणी रे आवी धाम, नव मसवाडे सुत जण्यो ॥ सु० ॥ सु० ॥ " देवराज " इति नाम, दीध महोत्सव अति घणो ॥ सु० ॥१६॥ सु० ॥ ते वधते वली एक, रयणसमे नृप कजलो ॥ सु० ॥ सु० ॥ दीगे निज उत्संग,क्रीडा करतो अति नलो ॥ सु० ॥१७॥ सुणो राणी जी ॥ निसुणी कहे नरइंद, तुज सुत होशे सुंदरु ॥ सु० ॥ सु० ॥ नृपन्न परें बलवत, होशे राजधुरंधरु ॥ सु० ॥१८॥ सुणो प्राणी जी ॥ थयो जन्मसमय सुख कार, " वत्सराज " अनिधा ठवी ॥ सु० ॥ सु० ॥ वरत्यो जयजयकार, नाग्यदशा जागी नवी ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ वरस थया जव आठ, तव नीशालें मूकीयो ॥ सु० ॥ सु० ॥ सकल कला तिण सार, शीखी किहां नवि चूकीयो ॥ सु० ॥२०॥ सु० ॥ पुण्य तणी ए वात, पुत्र सुगुण एहवा मले ॥ सु० ॥ सु० ॥ पंचमे खंडें बारमी ढाल, पुण्यथकी वांछित फले ॥ सु० ॥२१॥ सु० ॥ सर्वगाथा ॥३९४॥ श्लोक तथा गाथा॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरसेन नृप एकदा, दाघज्वरने रोग ॥ अति आतुर अंगें थयो, स बल कर्मनो नोग ॥ १ ॥ पृथिवीपति पीडित थयो, तस दुःखे परिवार ॥ दुःखीयो सवि एकत्र मलि, एणी परें करे विचार ॥ २ ॥ वयें वडो गुणें नानडो,देवराज नृपनंद ॥ पण गुण महोटो वय लघु,वत्सराज सुख कंद ॥३॥ जगमां गुण दीसें वडा, गुण विण वडो न कोय ॥ वडो करतां दीपने, छवो घर कहेवु होय ॥ ४ ॥ वत्सराज होय तो नलो, नरपति सबल सकज्ज ॥ देवराज वयथी वडो, योग्य नहि ए रज्ज ॥ ५ ॥ देव

राज एम सांभळ्यो, लोक तणो आलोच ॥ रखे राजा वत्सराज हुवे, मनमा धरे सकोच ॥ ६ ॥ मन्त्रीश्वर हाथे कर्यो, देई बहु सम्मान ॥ सैन्य गजादिक वश करी, आप थयो राजान ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ पंचसयां धण परहरी ॥ ए देशी ॥ नृप वीरसेनजी सांभळ्युं, सुर पति हुउं देवराजो रे ॥ आधि ने व्याधि निपीडियो, करे ए कीधुं अ काजो रे ॥ १ ॥ धिक् धिक् राजनी मोहनी ॥ ए आकणी ॥ न गणे बंधव लाजो रे ॥ नेह न राखे रे बापशु, एम कहे नरराजो रे ॥ धि० ॥ २ ॥ गुणवतो ए वेसी रह्यो, अगुणी आगल कीधो रे ॥ पण मुज कांइ चाले नहिं, चिंतित काज न सीधो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ राज लही देवराजीयो, थयो बलियो सपराणो रे ॥ सहु सामतने वश करी, देशमांहे गवराणो रे ॥धि०॥४॥ जन अनुराग न को धरे,सहु वत्सराज वखाणे रे ॥ एक माता ना रे उदरना, पण अतर बहु जाणे रे ॥ धि० ॥५॥ राजसभामां रे नित्य प्रतें, आवे वत्सराज कुमारो रे ॥ विनयी वडा बधव तणो, विनय न चूके लगारो रे ॥ धि० ॥६॥ कुण आंजे नयन मृगागना, कोण चीतरे मोरना पिछो रे ॥ उत्पलदल सधि कुण रचे, एम उत्तम विनयने प्रीछो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ सहज विनयगुण देखिने, सकल प्रजा धरे रागो रे ॥ अहो वत्सराज समोवडे, नहि नृपसुत वडभागो रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ दुष्ट हृदयनो रे चितवे, मन्त्रीशुं देवराजो रे ॥ गुणें वधतो जन वालहो, वेरी ए वत्सराजो रे ॥ धि० ॥ ९ ॥ राज्य हरशे रे आपणु, बांधव एह म जाणो रे ॥ शत्रु वध्यो गुण नवि करे, नीतिनु वचन प्रमाणो रे ॥ धि० ॥ १० ॥ बेहु मल्या दुर्बुद्धिया, वायु अनल जेम होइ रे ॥ करे कुविकल्प नी कल्पना, कीजें उपाय ए कोई रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ कहे मन्त्री सुण साहिबा, जो इहां रहे वत्सराजो रे ॥ तो नहिं हित तुजने सही, एम जाणो महाराजो रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ काढो बाहिर एहने, पुरथकी इण वारो रे ॥ करशे अनिष्ट कनिष्ट ए, पाम्युं राज म हारो रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ नृप मनमां वसी वातडी, निर्लज थइ निठोरो रे ॥ बंधव तेहने अवगुणी, बोले वयण कठोरो रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ तेडी कहे वत्सराजनें, जा मुज नयरने मूकी रे ॥ कुलनी लज्जा रे लोपिने, बोल्यो नीतिने चू

की रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ कहे वत्सराज विचारिने, वाधव आए प्रमाणो रे ॥ आव्यो मदिर मातने, नमवा सत सुजाणो रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ चरण नमी आगल रह्यो, वोले सुण गुणवाडी रे ॥ सगे रे सहोदरें काढीयो, देशहूती मुने माडी रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ वात सुणी डुखणी थई, नयण झरें बहु नीरो रे ॥ हृदय नराइ रे आवीयु, लूहे आंसूडां चीरो रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ सुण वत्स तुझ विण माहरा, प्राण घणु अकलाये रे ॥ जीवन जाया रे तुझ विना, घडी वरसा सो थाये रे ॥ धि० ॥ १९ ॥ तुझ विण मदिर मालीया, ए मुझ खावा धायो रे ॥ तुझ विण रयणी वैरण थइ, मुझने केमही न जायो रे ॥ धि० ॥ २० ॥ माटें वत्स सुण माहरा, आविश तहारी हु सार्थे रे ॥ सुख डुख सहेशु रे एकठां, मात ग्रही रही हाथे रे ॥ धि० ॥ २१ ॥ वत्स कहे सुण मावडी, अति विषमो परदेशो रे ॥ तुम्हें इण मदिरमा रहो, द्यो मुझने आदेशो रे ॥ धि० ॥ २२ ॥ मात कहे सुण वालुडा, शी ए वात प्रकाशो रे ॥ इहा रहेवु मुझ नवि गमे, तुझ श्वासें मुझ श्वासो रे ॥ धि० ॥ २३ ॥ अरथ नहि देवरा जह्यु,जे तुझने अपकारी रे ॥ वहेन सघातें रे आवशुं, तुझ सार्थे निर्धारी रे ॥ धि० ॥ २४ ॥ सुत माडी मासी वली, कीध विचार विमासी रे ॥ राम कहे खम पंचमे,तेरमी ढाल ए नासी रे ॥ धि० ॥२५॥ सर्वगाथा॥४२६॥

॥ दोहा ॥

॥ रोपें चढघो तव राजियो, देवराज तेणि वार ॥ वाहन सवि खोंची लियां, माय तणा निर्धार ॥१॥ वत्सराज वहालो कियो, इण मूक्यो मुझ आज ॥ श्यानी ए मुझ मावडी, अश न राखु लाज ॥२॥ जे कोइ जाशे एहोनी, सार्थे सेवक आज ॥ तेहने में हणवो सही, एम वोले देवराज ॥३॥ नहिं आनूषण तेहवां, नहिं वसन धनपास ॥ ठवाली लीधां सवे, अहो अहो कर्म विलास ॥ ४ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ डुखनी मारी हे, सूतीथी सरोवरियारी पाल हे, कागवियो न आयो महारा राज, विण परदेशरो ॥ ए देशी ॥ डुखनी मारी हे, मायडी नयण झरते नीर हे, सुतने रे लेइने वहेनी साथ, वाहेर नीसरी ॥ पुरना वासी हे,निसुणीने वात मल्या नरवृंद हे, हा हा ए हुवो कवण प्रकार, सुध

बुध वीसरी ॥ १ ॥ धिक् धिक् सुतने हे, नेहडलो गंमीने दीधो छे द हे,नफट निहेजो महारा राज,राजा ए हुवो॥काहि न चाले हे,जोरावर जे श्रापण कीधा कर्म हे, उदयें एम श्रावे महारा राज, प्रत्यक्ष ए जुर्ज ॥ २ ॥ कोइ न करशो हे, कोइ न करशो गर्व गुमान हे, सार्थे मे कमाइ महारा राज,श्रावे याहरी ॥ सहु स्वारथना हे,स्वारथना सहु ए छे जगमां मित्र हे,पडती रे वेलामा महारा राज,न कोइ पाहरी ॥३॥ रोयण लाग्यां हे,पुरवा सी साजनना वृंद हे, फट फट रे श्रन्यायी महारा राज, देव तें शुं कर्युं ॥ वत्स सारीसा हे, वत्सने सारीसा कुमर सुजाण हे,वनमा रे काढतां थाकें राज, काज किस्युं सर्युं॥४॥साजन महारा हे,मे ग याहारा पगनी रजने तोल हे,प्रजा पोकारे ञ्नी राज,जीवनजी रहो ॥ साहिब महारा हे,ए शुं कवण विचार हे, ञ्ना रे रहीने महारा राज, वातडली कहो ॥५॥ कुवर वोले हे,सहुने ठे महारो जुहार हे,गुनह खमेजो महारा राज,जे कीधो दोष याहरो॥कुवर वोले हे,वहेला मिलस्यां श्रावी कहेस्या वात हे,हमणा रे नट काये महारा राज,वीरो कोप्यो माहरो॥६॥पुरथ्रु चाल्या हे,सार्थे माता ने मासी दोय हे,श्रागल चालता वाटें राज,सवल वेला पडी ॥ कुवर नानो हे, साथे घरडी मोकरडी दोय नारी हे, मारगमाहे नूला महारा राज, एम श्रापद नडी ॥७॥ कोने कहीयें हे,कोने कहियें सुख ड खडानी वात हे,एवो रे नहिं कोइ महारा राज,कान वेई सुणे ॥ त्रिहु जण चाले हे,त्रिहु जण किहां इक सरोवरीयारी पाल हे, ञ्नां रे न राखे महारा राज, कोइ घर श्रांगणे ॥८॥ मोशी महारी हे,दीसो गो सवल सुहाली जाति हे,कहोने किण कार ण महारा राज,सुत लेइ नीसर्यां ॥ ड:खनी मारी हे, धारिणी राणी कहे ताम हे, श्रमें दोय मोशी महारा राज, मरमेश्वरनां विसर्यां ॥ए॥ ड खनी मारी हे, कथ विहूणी सुत लेइ साथ हे, चाल्या रे वर्तवा महारा राज, श्रमें परदेशमां ॥ उत्तर देवे हे,उत्तर देवे लोक नणी ते श्राम हे,कोइ नथी रे महारा राज,एवा वेशमां ॥१०॥ श्रनुक्रमें श्राया हे, देश श्रवतीमांहे नय रि उज्जेणी हे, वाडीमां वडगया महारा राज, वीशामो लियो ॥ धारिणी चिंते हे,फट फट रे तें दैव कीधुं ए कीध हे, मुने वीरसेनवधूने कष्ट सवल दीयो ॥११॥ नविका सुणजो हे, कहे धनरथजी श्ररिहंत हे, कीधी रे क

माइ महारा राज, एम आवे वदे ॥ पचम खर्मे हे, राग अखंर्मे चौदमी ढाल हे, कठिण न कीजें महारा राज रामविजय वदे ॥१२॥४४२॥२३॥

॥ दोहा ॥

॥ विमलाने कहे धारिणी, जाउ नयर मझार ॥ जोइ आवो कोइ आशरो, वहेनी प्राणाधार ॥ १ ॥ तु मुझ जीवननी जडी, थइ डु खनी सारीख ॥ साची तु मानी जणी, नली कबूली नाख ॥ २ ॥ विमला आवी नयरमा, इत उत जोवे गाम ॥ पण कोइ बोलावे नहिं, वाई आवो आम ॥ ३ ॥ एक लक्ष्मी वाइ विना, धाइ न दे कोइ मान ॥ नला शहेरमा नामिनी, फिरे विहूणी शान ॥ ४ ॥ सोमदत्तने मदिरें, नामिनी नमती नूर ॥ पहोती प्रेमें पारखी, दीसे कोइ सनूर ॥५॥ तात विदेशी तु अमो, मुझ नगिनी नाऐज ॥ वसवानी कोइ जायगा, बतलावो धरि हेज ॥ ६ ॥ कहे शेठ आ उरडी, वसवानी ठे खास ॥ पण नाडुं देशो किस्यु, आगलथी परकाश ॥ ७ ॥ विमला कहे ञ्यु आपीयें, नाटक नहि कांइ पास ॥ पण स्वामी घर ताहरे, थई रहेञ्यु दास ॥ ८ ॥ नो जन अमने आपजो, शेठ तमे शिरदार ॥ कुजर मुखथी कण गिरे, कीडीने आधार ॥ ए ॥ बात कबूल करी तेणें, आवी वहेनी पास ॥ तेडी लावी धारिणी, अगज सहित वह्लास ॥ १० ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ एण रुगरीये मन मोहिउ ॥ ए देशी ॥ धारिणी विमला वत्सराजञ्यु, तिहां आवी रही शुन गामो ॥ करे सोमदत्त शेठनी चाकरी, ञ्जुउ कर्म तणा ए कामो ॥ १ ॥ जग कीधा हो कर्म न बूटियें ॥ ए आकणी ॥ एम नांखे हो त्रिजुवन नाय ॥ सुर असुर नरादिक सानले, सहु सांजले मुनिवर सार्थे ॥ ज० ॥ २ ॥ जीहो उदरनरण अति दोहिलु, करे परघर केरु काजो ॥ वत्सराज चिते चित्तमा घणु, हा हा किहां गयु महारुं राजो ॥ज०॥३॥ जीहो मुझ माडी मासी वडी, करता जेहनी बहु सेवो ॥ ते पाणी नरे परघर रही, अहो अहो ए ञ्यु कयु देवो ॥ ज० ॥ ४ ॥ वत्सराज चरावे हो वाठरु,जेम तेम चाले गुजरानो ॥ वनमा नमता एकण दिनें, वीशमियो शुन तरुगणो ॥ ज० ॥ ५ ॥ राजकुवरना शब्द सुण्या तिहा,करे शस्त्र तणो अन्यास ॥ धेनु चरती हो मूकीने वत्सजी,तिहां पहो

तो धरि उल्लासो ॥ ज० ॥ ६ ॥ तेहमांहे जइ कन्नो रह्यो, कोवै लक्ष्नो वेध सुजाणो ॥ यदि चूके समीपग नर तदा, तब पाये बहु मलाणो ॥ज०॥७॥ जेह विध्य न चूके हो तेहने, प्रशंसे पइने सुजाणो॥ तेह देखी कलाचार्य चिंते, कोइ दीसे कोविद बालो ॥ज०॥८॥ तब पूछे कलाचारज तिहां, वत्स तु कोण किहांथी रे आव्यो ॥ वत्सराज कहे हुं तातजी, देशांतरी एम समजाव्यो ॥ ज० ॥९॥ कहे आचारज हर्ष करी, वत्स लेइ करे धनु तीरो ॥ देखाड कलाकुशल पणु, अम आगल ता हस धीरो ॥ ज० ॥ १० ॥ अवसर जाणीने कला तणो, अतिसय प्रकासे वीरो ॥ जोइ कुंवर सहु चित्त चमकिया, अहो गुणजलनिधि गंभीरो ॥ ज० ॥ ११ ॥ भीरे भोजन आव्या हो भावता, राजकुवरने काजे रसालो ॥ गुणी जाणीने पासें बेसारीयो, जमाड्यो भाग्य विशालो ॥ ज० ॥ १२ ॥ यत ॥ कला कलौ कामगवी समाना, सर्वार्थससाधनसावधाना ॥ कला विदेशे परम हि मित्रं, कलासमं नास्त्यमृतं पवित्रम् ॥१॥ पूर्वढाल ॥ भीरे सगति सरखानी मली, मन पाम्यो हो प्रीति अपारो ॥ गुणीने हो गुणीशु गोठडी, सहु जाणे रे एह विचारो ॥ ज० ॥ १३ ॥ यत ॥ मृगा मृगैः सगमनुव्रजंति, गावश्चगोभिस्तुरगास्तुरंगैः ॥ मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः समानशीलव्यसनेषु सख्यम् ॥२॥ पूर्वढाल ॥ दिन बधो वहि गयो वातमा, रखवाल विना वत्स तेहो ॥ समकालेंवलि तेह आवियो, पुरमां सोमदत्तने गेहो ॥ ज० ॥ १४ ॥ कहे शेठजी विमलाने तिहां, आज वहेलां केम वत्स रूपो ॥ रखवाल एहनो क्यां गयो, वत्सराज ए कवण सरूपो ॥ ज० ॥ १५ ॥ बाल नावे ए सार्थे रूडुं नहीं, एम वात करंतां तेहो ॥ वत्सराज आव्यो संध्यासमे, मल्यो मायने अधिक सनेहो ॥ज०॥१६॥ वत्स वेला केम थइ एवडी,कहे कल्पित वात विचारी ॥ मुज अघ आवी वनमां घणी,रह्यो सूइ तिहां निर्धारी ॥ज०॥१७॥ कोइक आवीने जगाडीयो, हमणा हु आव्यो माहीं ॥ वत्स एम असुर न कीजियें, कहे विमला हो प्रीति जाडी ॥ज०॥१८॥ तिम वली बीजे दिन एम रह्यो, त्रीजे दिन एमज कीधुं ॥ शेठें उंजनो दीठो घणो, एहथी मुज काज न सीधुं ॥ ज० ॥ १९ ॥ कहे रीस भराणी मावडी, परदेश आव्यां इण गामो ॥ परमंदिरवास ए कष्टथी, भोजन पर हाथ ए कामो ॥ज०॥२०॥

जीरे कर्मकरीनुं आकरु, मुफ माथे कलंक असारो ॥ वली उलंना ए तादृश,न खमाये वत्सकुमारो ॥ज०॥२१॥ जीरे वयण सुणी माडी तणा, वोल्यो वत्सराज कुमारो ॥ माय वाठरुआ चारिश नहीं, नहि मह्वारो वश गमारो ॥ ज० ॥ २२ ॥ ढाल ॥ नहि चारु रे नव लख धेनु ॥ ए देशी ॥ नहि चारु रे मोरी माय, ना रे मा नहि चारु ॥ मह्वारे केडें कोण वजाय ॥ना०॥ हारे ए तो दोडीने अलगां जाय ॥ना०॥ हारे ए तो अटवु उपवनमाय ॥ ना० ॥ ए आकणी ॥ श्री वीरसेन नरेश्वर मह्वारो, सवल पिता गुणधार रे ॥ धारिणी माता तह्वारो जायो, न करु ए काम गमार ॥ ना० ॥ १ ॥ कड वाधी लइ लाकडी हाथे, आखो दिन केड करवी रे ॥ वर जूख्यो रहिश पण माडी, ए सेवा नादरवी ॥ ना० ॥ २ ॥ कला वहुतेरी मह्वारी शीखी, सघली जूली जवाय रे ॥ सुणो माडी मासी वलि मह्वारी, ए मुफने न सोहाय ॥ ना० ॥ ३ ॥ कहेवु ए सोमदत्तने अमचो, सुत वाठरुआ न चारे रे ॥ मन माने तेहने ए सोंपो, उलनो न देशो लगारे ॥ ना० ॥ ४ ॥ घणु करशे तव घर राखेशे,जेम सो तेम पच्चास रे ॥ माडी मनमां चिंता न करशो,शी करवी परआश ॥ ना० ॥ ५ ॥ कहे माडी सुण वत्स वालुडा, जोजन कि हाथी करशो रे ॥ जो एहना मुख सामु जोशो,तो कोइ दिन उदरने जरशो ॥ ना० ॥ ६ ॥ वत्स कहे हु आजथी जोजन, मन माने त्या करछु रे ॥ पण एहनी उंशीयाल न राखु, जेम तेम करि निर्वहछुं ॥ ना० ॥ ७ ॥ नित्य प्रत्यें राजकुमरनी पासें, जोजन करवा जाय रे ॥ वत्स अवेलो का एम आवे, घर तु का नवि खाय ॥ ना० ॥ ८ ॥ वत्स एम किम रीसाणो सरशे, के अथवा जमे क्याहीं रे ॥ वात कही माडीने मांमी, हर्षे लही मनमाहि ॥ना०॥ए॥ ढाल विचालें मात ने सुतनी,वत्स चरावण वात रे ॥ जांखी रे निसुणो जवियण जावें, धन धन एहनी जाति ॥ ना० ॥१०॥ ढाल पूर्वनी ॥ जीरे एक दिन आव्यो हो आगणे, देखे माय घणु दिलगीर ॥ तव पूछे हो शी तुम एवडी,दिलमांहे दीसे छे पीर ॥ ज० ॥ २३ ॥ वत्स तु घरचिंता नवि करे, नहिं तुफ विण को आधार ॥ रखु अन्य सर्वे अलगु इहा, नहि घरमाहे इंधणजार ॥ज०॥२४॥ जीरे शहेरनो वास ए साकडो, सवि वात तणी तंगास ॥ जीरे जल इंधण वली

दोहिला, दोहिलानी न पूगे आश ॥ ज० ॥२५॥ जीरे कहे वत्स साहसिक शिरे, जइ लावु इंधण नार ॥ मुफ एक अपावो कुगरिका, कावा करि तिम सुविचार ॥ ज० ॥ २६ ॥ प्रजात थये सवि तेम करशुं पछ, पूरी ए पन्नरमी ढाल ॥ खम पचमे रामविजय कहे, हवे आगें संबंध रसाल ॥ ज० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४०९ ॥ श्लोक ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ खांधे कुहाडी लेइ चल्यो, वनह नणी वत्सराज ॥ नाना द्रुम जोतो थको, वन गह्वर तरुराज ॥ १ ॥ जो देखु कोइ सरल तरु, तो ठेदी तस खम ॥ कावा नरीने पूरु हु, मनोरथ माय अखम ॥ २ ॥ तिहां एक दीठु देवकुल, माहे विराजे यक्ष ॥ नक्ति करे नागर जना, महिमा जास प्रत्यक्ष ॥ ३ ॥ तस आगल एक सरल ठे, चदनतरु सुगंध ॥ कुवर विचारे वावना, चदननो ए गंध ॥ ४ ॥ तस अनुसारें तिहां गयो, साहसथी अहिराज ॥ नासीने दूरें गया, कुमरना सीध्यां काज ॥ ५ ॥ यक्षनु कानन जाणीने, किणें नवि ठेद्यो पूर्व ॥ ते तरु ठेदीने लिया, काष्ठना खम अपूर्व ॥ ६ ॥ कावा नरीने चालीयो, निज घर ते वजमाल ॥ पुरपोलें आव्यो तदा, पोल जडी ततकाल ॥ ७ ॥ ते नगरी मांहे अठे, शाकिनीनु नय जोर ॥ पुर कपाट नवि ऊघडे, रवि प्रगट्या विण कोर ॥८॥ रात पडी पाठो वल्यो, आव्यो यक्षने ठाम ॥ कावा तरु अवलविने, माहे पेठो ताम ॥ ९ ॥ देइ कपाट आमां तदा, मूकी कुहाडी पास ॥ एकदेशें सूतो जई, वत्सराज सुविलास ॥ १० ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ आवे रे ऊलगाणा तहारी कांकणीने फुबे ॥ ए देशी ॥ इण अवसर वैताढयथी रे, मध्यरात्रि मनोहार रे सोहे ॥ आव्यो रे तिहां खेचरीनो वृंद मन मोहे ॥ १ ॥ रम्य विमानथी ऊतरी रे,आवी मंडपमांहि रे नामा ॥ यौवनना पुरमांहे शोनती ते श्यामा ॥२॥ करि शृंगार टोलें मली रे, करे विनोदनी वात रे ठबीली ॥ सहीयो रे आजनी ए यामिनी रंगीली ॥ ३ ॥ रस नरी रमियें रातमां रे, मनमां धरी आणद रे टोली ॥ नृत्य कीजें अग वाली आज नावनोली ॥ ४ ॥ घम घम घमके घूघरी रे, ठम ठम ठवती पाय रे बाला ॥ हाथे विणा ताल लेइ किन्नरी रसा

ला ॥ ५ ॥ उर कंचुक कसिया नला रे, उंढण नवरग चीर रे रूडी ॥ कर दीपे ककणा ने सोवननी चूडी ॥ ६ ॥ थेइ थेइ करती नाचती रे, लीये घूमणली घेर रे माती ॥ विच विच जीऐ स्वरें वासलीने वाती ॥७॥ कुचिकाविवरें देखतो रे, मन हरखे वत्सराज रे वारु ॥ नलु थयु आज दीगे नाच में दीदारु ॥ ८ ॥ रमि रमि रग नरी रातमा रे, स्वेदें नीनां चीर रे धामी ॥ क्षण एक कामिनी ते नूतलें विशामी ॥ ए ॥ नूतन पहेरी वस्त्रने रे,मूकी नीना चीर रे दोडी ॥ रात थोडी जाणिने उजाणी जेम घोडी ॥ १० ॥ रजसपणे रयणे जड्यो रे, पडीयो कचुक एक रे दीपे ॥ नूमितल शोनतो ए इडुविव जीपे ॥११॥ वार उघाडी उतावलो रे, वोडी लीधो तेणे रे रगें ॥ मांहे पेगो द्वार देइ यक्षने प्रसगें ॥ १२ ॥ आगल जाता सानल्यु रे, माहे प्रनावती ताम रे वोली ॥ सहीयरो वारवाण माहरो हु नूली ॥ १३ ॥ ते कहे जा उतावली रे, वेगवती लेइ साथ रे चावी ॥ वहेनी तुं चाल वेगें मीलि लेइ आवी ॥ १४ ॥ आवी तिहां जोवे घणु रे, नव दीगे तिण गण रे चिते ॥ किहां गयो नहिं कोइ मानवी एकातें ॥ १५ ॥ शु थयु केणें लीधो हशे रे, तेह अमूलक माल रे तहारो ॥ प्राणजीवन महारो ए कंचुउ घणु प्यारो ॥ १६ ॥ कोण लीये एटली वारमां रे, लागी वेला नहिं कांइ रे आली ॥ प्राणप्रिय देशे मुने आज घणी गाली ॥ १७ ॥ कहे सखी आतुर शुं हुवे रे,नहिं इहा माहक कोई रे धाय्यो ॥ तें पण सहि इहां कचुउ विसाय्यो ॥ १८ ॥ खोली हमणां काढशु रे, उमथो वायुथीदूर रे दीसे ॥ धर मन धीरज विशवा विशे ॥ १९ ॥ जोती ताम विह्रुजणी रे, देखी विहगिका एक तरुमालें ॥ नर इहां गूढ कोइ देवलें निहाले ॥२०॥ द्वार देखी दृढ गर्नेनां रे, वोली अवला दोय रे त्राडी॥ आप अम कचुउ तु द्वारने उघाडी ॥२१॥ मूरख काइ मरवा तणी रे, होंश थई तुझ आज रे पापी ॥ किहा हवे जाइश अमने तु सतापी ॥ २२ ॥ वयण सुणीपण एहवां रे, न चल्यो चित्त लगार रे वीरो ॥ वीरसेन वशजात साहसिक धीरो ॥२३॥ यक्ष तणो नय आणीने रे,नवि उघाडे द्वार रे सेइ ॥ आवी नुवन वाहार ते मत्रणु करेइ ॥२४॥ चालो नयरमा जोइयें रे,एहनो सगो कोइ होय रे मीगे ॥ तेहनो वोलाव्यो ए बोले सही धीगे ॥२५॥ चितीने

दोहिला, दोहिलानी न पूगे आश ॥ ज० ॥२५॥ जीरे कहे वत्स साहसिक शिरे, जइ लावु इंधण नार ॥ मुज एक अपावो कुहारिका, कावा करी तिम सुविचार ॥ ज० ॥ २६ ॥ प्रनात थये सवि तेम कर्युं पह, इसी ए पन्नरमी ढाल ॥ खम्म पचमे रामविजय कहे, हवे आगें संबंध रसाल ॥ ज० ॥ २७ ॥ सर्व गाथा ॥ ४७९ ॥ श्लोक ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ खांधे कुहाडी लेइ चव्यो, वनह नणी वत्सराज ॥ नाना द्रुम जोतो थको, वन गह्वर तरुराज ॥ १ ॥ जो देखु कोइ सरल तरु, तो ढेदी तस खम्म ॥ कावा नरीने पुरु हु, मनोरथ माय अखम्म ॥ २ ॥ तिहां एक दीवु देवकुल, मांहे विराजे यक्ष ॥ नक्ति करे नागर जना, महिमा जास प्रत्यक्ष ॥ ३ ॥ तस आगल एक सरल ढे, चंदनतरु सुगंध ॥ कुंवर विचारे वावना, चंदननो ए गंध ॥ ४ ॥ तस अनुसारें तिहां गयो, साहसथी अहिराज ॥ नासीने दूरें गया, कुमरना सीध्यां काज ॥ ५ ॥ यक्षनु कानन जाणीने, किणे नवि ढेद्यो पूर्व ॥ ते तरु ढेदीने लिया, काष्ठना खम्म अपूर्व ॥ ६ ॥ कावा नरीने चालीयो, निज घर ते वजमाल ॥ पुरपोलें आव्यो तदा, पोल जडी ततकाल ॥ ७ ॥ ते नगरी मांहे अढे, शाकिनीनु नय जोर ॥ पुर कपाट नवि ऊघडे, रवि प्रगट्या विण कोर ॥८॥ रात पडी पाढो वव्यो, आव्यो यक्षने ठाम ॥ कावा तरु अवलंबिने, मांहे पेठो ताम ॥ ९ ॥ देइ कपाट आम्हा तदा, मूकी कुहाडी पास ॥ एकदेशें सूतो जई, वत्सराज सुविलास ॥ १० ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ आवे रे ढलगाणा तहारी काकणीने फुबे ॥ ए देशी ॥ इण अवसर वैताढ्यथी रे, मध्यरात्रि मनोहार रे सोहे ॥ आव्यो रे तिहां खेचरीनो वृंद मन मोहे ॥ १ ॥ रम्य विमानथी ऊतरी रे,आवी मम्पमांहि रे नामा ॥ यौवनना पुरमांहे शोनती ते श्यामा ॥२॥ करि शृंगार टोलें मली रे, करे विनोदनी वात रे ढबीली ॥ सहीयो रे आजनी ए यामिनी रंगीली ॥ ३ ॥ रस नरी रमियें रातमां रे, मनमां धरी आणंद रे टोली ॥ नृत्य कीजें अंग वाली आज नावनोली ॥ ४ ॥ घम घम घमके घूघरी रे, ठम ठम ठवती पाय रे बाला ॥ हाथे विणा ताल लेइ किन्नरी रसा

नाथ ॥ ३ ॥ देइ प्रतोलीपालने, काष्ठखम्म ततकाल ॥ नयरमांहे ते सचस्यो, मलपतो गजचाल ॥ ४ ॥ जाता परिमल ऊबल्यो, दिशि अव लोके लोक ॥ गंध किहांथी एहवो, एम चिंते गतशोक ॥ ५ ॥ ए कोइ श्रेणवाहक, जाये एम अवहील ॥ कोइ तस बोलावे नहीं, ते पण चाल्यो सलील ॥ ६ ॥ निजमंदिर आव्यो वही, हरख्यां मासी मात ॥ वत्स जोवरावी वाटडी, एम केम मोरा जात ॥ ७ ॥ वात कही कंचुक विना, नारो मूकी घरमांहि ॥ खम्म एक मासीकरे, दीधो तिण उत्साहि ॥ ८ ॥ तस अनुमतथी वेचीयो, गांधीआपण तेह ॥ द्रव्य आणीने आपीयु, वत्स हाथ ससनेह ॥ ए ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ मुरली साजलवा जइयें ॥ ए देशी ॥ वत्स कहे सुणो माडली, ए धन ल्यो तुमें सार ॥ न कीजें चाकरी ॥ ए नीठे वली अवरना, करजो ठाम विचार ॥ न कीजें चाकरी ॥१॥ नाडु आपजो शेठने, मत रहेजो आ धीन ॥न की०॥ हु तो स्वेछायें क्रीडशु, नयरमां आवो दिन्न ॥न०॥२॥ घेर आविश सूवा कारणें, म करशो फिकर लगार ॥ सलूणी मातजी ॥ शी चिंता तुमने हवे, आव्यो आपद पार ॥ स० ॥३॥ एम कहीने आवीयो, राजकुंवरनी पास ॥ सलूणा साहिबा ॥ ते कहे काले कहो किहां, नाव्या अम आवास ॥ सलूणा साहिबा ॥ ४ ॥ ते कहे मुज शरीरमा, काइक हूती आधि ॥ स० ॥ तेणें तुम पासें नावीयो, आज टली असमाधि ॥ स० ॥ ५ ॥ कहे पाठक वत्स ताहरु, कुण स्थानक मुने दाख ॥ स० ॥ कवण जनक माता हुवा, मुजथ्यु नेद म राख ॥ स० ॥ ६ ॥ कुंवर कहे सुणो तातजी, हमणा म पूछशो वात ॥ स० ॥ प्रस्तावें सवि माहरो, नाखीश हु अवदात ॥ स० ॥ ७ ॥ नाव जाणीने तेहनो, ताणी न पूछ्यु तास ॥ स० ॥ कुंवर ते आपे तेहने, वसन ने नोजन खास ॥ स० ॥ ८ ॥ पुण्यवशा जागी नली, मान लहे सवि ठाम ॥ स० ॥ पर पण पोताना थया, अहो अहो पुण्यनां काम ॥ स० ॥ ए ॥ एक दिवस पाठकवरु, लेइ सवि छात्र संघात ॥ स० ॥ वत्सरा जछुं आवीयो, नूप समीप विख्यात ॥ स० ॥ १० ॥ करी प्रणिपात यथो चितें, वेगे तेह कुमार ॥ स० ॥ वत्सराज दीठो तदा, देवकुमर अवता

चाली खेचरी रे, नयरमा सुणवा साद रे उजाणी ॥ कर्मयोगें जिहां धारिणी ले राणी ॥ २६ ॥ सुत विरहें रोवे घणु रे, धारिणी विमला दोय रे राणी ॥ निछडी हराम हुइ ड खडे नराणी ॥ २७ ॥ हा वीरसेन नृपवशना रे,साहसिया शिरदार रे जाया॥कोण कष्ट पर्यु तुने मेलि केम माया ॥ २८ ॥ राज्य तजीने नीसखा रे, देशांतर परगेह रे वासें ॥ एह सवे आवस्था अमें ताहरे नरोंसे ॥२९॥ वरस इथणने मोकल्यो रे,अम्हें पापीणीयें आज रे जोरें ॥ मन धखु डुःख अमें नेहडे रे तोरे ॥ ३० ॥ नाम सुणी वत्सराजनु रे, खेचरी आवी दोय रे पाठी ॥ रेख कुलें मातरूपें एम वोले आठी ॥ ३१ ॥ हा वत्स जोता तु मल्यो रे, खोल्युं सारुं शरीर रे नाई॥मुखडु देखाड आवी अम्हने उजाई ॥ ३२ ॥ वत्स विमासे चित्तमा रे,न घटे आणी वेल रे माडी ॥ किम आवे वेडमांही आवडी उजाडी ॥ ३३ ॥ मुफ माडी मासी नोहे रे, ए सही मायारूप रे जाणी ॥ वोलता में एहनी रे विक्रिया पिछाणी ॥ ३४ ॥ धैर्य धरी बोले नहीं रे, शुं करे एह कगाल रे पाडी ॥ वाज आवी आफ रडी जायशे रे त्राडी ॥ ३५ ॥ आण न लोपाई यक्षनी रे, वोली वोलीने ताम रे थाकी ॥ कथन रह्यु नहि कहेणनु रे वाकी ॥ ३६ ॥ रवि उग्यो रजनी गई रे, खेचरी गइ निज गाम रे रोइ ॥ छुठ एम जाण्यो कर्म गति कोइ ॥ ३७ ॥ एम सबध आवी मले रे, शुभनो उदय होवे जाम रे जोर्ते ॥ साहसिक नर वरे लाठ एम पोतें ॥ ३८ ॥ यत ॥ दोहो ॥ साहसिया लछी मिले, नहु कायर पुरिसेह ॥ कानें कुमल रयणमय, आंखे अजनरेह ॥ १ ॥ श्लोक ॥ उद्यम साहस धैर्य, बलबुद्धिपरा क्रमम् ॥ षडेते यस्य विद्यते, तस्माद्देवोपि शकते ॥२॥ पूर्वढाल॥ पंचम खंर्के शोलमी रे, ढाल कही सुखकार रे राची ॥ वात कहे श्री जिन षनर षजी साची ॥ ३९ ॥ सर्वगाथा ॥ ५३८ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पर्यु प्रनात रवि प्रगटियो, विवर कुचिकामध्य ॥ सूर्य रुचि नेदी तदा, कुमर लही तब सधि ॥१॥ देवमदिरथी नीसखो, ते कूर्पासक लेइ ॥ श्रीखम तरुकोटर विचें, मूके यत्न करेइ ॥ २ ॥ कावड लइ खंधें धरी, काष्ठ खम लेइ हाथ ॥ निजपुरजणी कतावलो, चाल्यो जिम मृग

सहु कहे, अहो अहो जुउ माहाराज ॥ स० ॥ १९ ॥ राजमहोल उपर रही, कमलश्री सुणी ताम ॥ स० ॥ मासी वत्स कुमारनी, भ्रांति पडी कहे आम ॥ स० ॥ २० ॥ हे वत्स विमला धारिणी, इहा आव्या छे साच ॥ स० ॥ स्वामिनी आवी रह्या इहां, कहे सुणि कंतने वाच ॥ स० ॥ २१ ॥ वालेसर महारी वडी, दोय वहेन गुणवंत ॥ स० ॥ मलवा ने जाउ तेहने,हुकम करो मुज कंत ॥ स० ॥ २२ ॥ हर्षेंधु हुकम कियो नृपें,तेने जइ तेडी लावो ॥ सलूणी सुंदरी ॥ वहेन सगी मानी जणी,भाग्यें मिल्यो ए बनाव ॥ स० ॥ २३ ॥ वालेसर इण शहेरमा, दोहिला एटला दीह ॥ स० ॥ छाना रह्या जाण्या नहीं, कहेवाये किम छुःख जीह ॥ स० ॥ २४ ॥ राणी चढी वर हायणी, सार्थे बहु परिवार ॥ स० ॥ आवी छत्र धरावती,शेठ तणे दरबार ॥ स०॥२५॥ संभ्रममा पछ्यो शेठजी, करे उपचार अनेक ॥ स० ॥ पंचम खर्मे सतरमी, ढाल सुणो सुवि वेक ॥ स० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥५७९॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ हल फल मारे शेठजी,भक्तियुक्त बहु भाव ॥ राणी आव्या मुज घरे, सबलो भाग्य बनाव ॥ १ ॥ वत्सराज आगल जइ, तुरत वधाई दीध ॥ मासी आव्या आपण घरे,वांछित कारज सीध ॥२॥ ए नयरीनो राजीयो, बहनेवी तुम तास ॥ राणी तुम बहेनी मिलण, आव्या ए उल्लास ॥ ३ ॥ जाणु छु वत्स ए सही, लाजें एता दीस ॥ निज आतम गोपवी रह्या, एहनी सबल जगीश ॥ ४ ॥ मंदिरहूती नीसरी, महेला चीवर अंग ॥ अनुसारें तस उंलखी, पालटियो तस रंग ॥ ५ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ सरोवरीयानी पाल, जडाको लाग्यो नयणां ॥ ए देशी ॥ हायणी हूती उतरी रे,कंठें वलगी धाय ॥ कमलश्री रोती कहे रे, कांइ ए शुं थयुं मोरी माय ॥ १ ॥ सुणो सुणो बहेनी रे वयणा ॥ कांइ बोले गदगद कंठ, भराइ आव्या रे नयणा ॥ कांइ मलीया भाग्य संयोग, आवीने अमने रे सयणां ॥ ए आंकणी ॥ बहेनी वडी तुम हो माहरी रे, निजमाताने ठाम ॥ एम अवस्था केम हुई, कांइ कोण कर्मनां काम ॥ सु० ॥ २ ॥ अथवा छुःख न कीजीयें रे, सहु बोले एम न्याय ॥ आपद होवे संतने रे,

र ॥स०॥११॥ मन रीज्यो राजा घणु,देखी तास दीदार ॥स०॥ कहो ठक कुण वाल ए, रूप कला जंमार ॥ स० ॥ १२ ॥ राजन् नहि मुज वशविज्ञान ॥ स० ॥ पण विज्ञानें एहनु, जूमि नहिं उपमान स० ॥ १३ ॥ धन जननी जेणे उर धर्यो, धन्य पिता कुल वंश ॥ स० ॥ सकल कलाकुशली घणु, नरमांहे अवतंस ॥ स० ॥ १४ ॥ ज्ञान करे राजा तिहां, कहो निज ज्ञान विचार ॥ स० ॥ कुंवर कलाना सागरु, बो ल्या मति अनुसार ॥ स० ॥१५॥ यत ॥ एकेन पृष्ठ ॥ दोहो ॥ कामिनी दो अक्करतणी, कामणगारी जाण ॥ जेहथकी सवि उल्लसे, अक्कर जेद विन्नाण ॥ १ ॥ वत्सेनोक्त ॥ कीकी ॥ अपरेण पृष्ठ ॥ कुण मुखमंमण नारीनु, कुण जग जीवाडत ॥ कुण शोलम शृंगारमा, एकण शब्दें कुत ॥ २ ॥ वत्सेनोक्त ॥ तिलक ॥ अन्येन पृष्ट ॥ उप्पय ॥ त्रिहु अक्करनु नाम, पढम अक्कर सुनिषेधें ॥ बीजो खेदें जोय, वर्ण त्रीजो त्रिहु मध्यें ॥ पद विहु अक्कर पूर्व, सबल नारीखम कहियें, बीजु पद दोय वर्ण, तास गुण पार न लहियें ॥ एम बिहु पद त्रिहु अक्करें, मली नाम जे नीपजे ॥ ते तूठे पुहवीतलें, तो सकल मनोरथ संपजे ॥ ३ ॥ वत्सेनोक्त ॥ महीश ॥ अपरेण पृष्ठ ॥ दोहो ॥ निज बोले पहेलो शब्द,बीजो बोले नाश ॥ ए बिहु शब्दें नीपजे,ते राखीजें पास ॥ ४ ॥ वत्सनोक्त ॥ स्वन ॥ वत्सेन पृष्ठ ॥ चोपाइ॥ पढमरक्कर विणु कामिनी वहालो, मध्यमाक्कर विणु राख निहालो ॥ अत्याक्कर विणु सरिखुं नाम, त्रिहु अक्करने करु प्रणाम ॥५॥ नृपेणोक्त ॥ जूपतिरिति ॥ पूर्वढाल ॥ अवर विशेषें नरकला, देखाडे नृपनंद ॥ स० ॥ वत्स सवाइ तेहथी,जूप लह्यो आनंद ॥स०॥१६॥ हर्षित थइ राजा कहे, वत्स कहो तुज वंश ॥ स० ॥ ढांक्यां मोती नवि लहे, अर्थ वली परशंस ॥स०॥१७॥ वत्स विचारे चित्तमां,अवसर मलियो आज ॥स०॥ अवसर जो इने जे कहे, तेहनी वाधे लाज ॥ स० ॥१८॥ यत ॥ उप्पय ॥ गइ जूमि संपजे,गइ संपत्ति फिर आवे॥ जड शूकी पल्लवे,अवधि फरि फरि फल पावे॥ विसरी विद्या विकट, सोय पढकें फिर लीजें ॥ जो कबु कीधो अधर्म, सो फिरके धर्म कीजें ॥ जीव मरी फरि अवतरे, जीवे जिहां जल गाइ यें ॥ कवि गंग कहे रे गुणियलो, पण अवसर कबहू न पाइयें ॥ ६ ॥ वात कही निज मूलथी, मांमीने वत्सराज ॥ स० ॥ कर्मकथा सुणी

वार॥ रामविजय कहे वत्सना रे, कांइ पुण्यतणो नहिं पार॥सु०॥२१॥६०५॥

॥ दोहा ॥

विनयवत ऊन्नो रह्यो, सेवकपरें वत्सराज ॥ मध्यरात्रि वोली जिस्यें, तव जाग्यो नरराज ॥ १ ॥ श्रवणे निसुण्यु डुखन्नु, कामिनीरुदन अपार ॥ मन चिंते महाराजजी, होशे कवण प्रकार ॥ २ ॥ बोलाव्या यामिक नणी, नरपति ऊंचे साद ॥ पण कोई वोल्या नहि, ऊंघ्या निंद प्रमाद ॥ ॥ ३ ॥ वत्सराज वोल्यो तदा, द्यो कारिज आदेश ॥ नृप कहे हजी वेगो अठे, केम न गयो गृहदेश ॥ ४ ॥ विण हुकमें जाऊं नहि, नृप कहे जा निजधाम ॥ प्रेष्यपणु न घटे तुने, कहिश ए अवरने काम ॥ ५ ॥ वत्स कहे महाराजजी, फरमावो मुऊ आज ॥ शिर जोरें करशु सही, नहीं इहां मुऊ लाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ कहे सखि पीयुडे शुं कशु ॥ सहि मोरी रे ॥ ए देशी ॥ कहे नृप सुण वत्स माहरा ॥ गुण धोरी रे ॥ पलकमाहे मुऊ आज ॥ लीधु चित्त चोरी रे ॥ तुऊ विण कुण रयणी समे ॥ गुण धोरी रे ॥ पडिवज्जे डुष्कर काज ॥ लीधु० ॥ १ ॥ वत्स जाउ उतावला ॥ गुण० ॥ कोण रोवे ए नारि ॥ ली० ॥ हुकम प्रमाण करी चल्यो ॥ गुण० ॥ साहसिक शिरदार ॥ ली० ॥ २ ॥ शब्दतणा अनुसारथी ॥ गु० ॥ करी उल्लंघन वप्र ॥ ली० ॥ गयो स्मशाननी नूमिका ॥ गु० ॥ सत्त्व सघातें क्षिप्र ॥ ली० ॥ ॥ ३ ॥ एक प्रदेशें सीमतिनी ॥ गु० ॥ वसनानरण विशेष ॥ ली० ॥ शोने ते सुकुमारिका ॥ गु० ॥ दीठी सुंदर वेश ॥ ली० ॥ ४ ॥ पण रोती अतिही घणु ॥ गु० ॥ पूछे जइनें कुमार ॥ ली०॥ वदेन रोवे किण कारणें ॥ गु० ॥ कहे मुऊ डुःख विचार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चाल्यो जा परदेशीया ॥ गु० ॥ शुं तुऊ पूछण काज ॥ ली० ॥ शक्ति विना उपकारने ॥ गु० ॥ इछे मूर्खशिरताज ॥ ली० ॥ ६ ॥ वत्स कहे तु डुःखिणी ॥गु०॥ में मूकी न जवाय ॥ ली० ॥ परडुःखें डुःखीया कह्या ॥ गु० ॥ सज्जन जन जगमांय ॥ ली० ॥ ७ ॥ सा कथयति ॥ यस्य कस्याप्यग्रे डुःख न कथ्यते ॥ यडुक्त ॥ जो नवि डुःक पत्तो, जो नवि डुःकस्स निग्गह समठो ॥ जो नवि डुहिए डुहिउ, ता किस कहिज्जए डुःक ॥ १ ॥ वत्स

कांइ सपद वली तेम थाय ॥ सु० ॥ ३ ॥ पण आवी तुमेंज इहां रे, रहिया गोपवी आप ॥ ते जेम जेम मुजनें सांभरे रे, कांइ तेम तेम होवे संताप ॥ सु० ॥ ४ ॥ आवे व्यसन एह देवथी रे, नहिं इहां संतने लाज ॥ न लह्या नयरीमा रह्या रे, काइ ए में कीध अकाज ॥ सु० ॥ ५ ॥ हा परघरनी चाकरी रे, तुमें कीधी निर्धार ॥ गाल सघल फिर माहरे रे, काइ वेठी ए जमवार ॥ सु० ॥६॥ जेम जेम तुम्ह दुख सांभरे रे, तेम तेम हृदय भराय ॥ पण सहु ए वश कर्मने रे,काइ आपणु कीधुं न थाय ॥ सु० ॥ ७ ॥ किं बहुना हवे हाथणी रे, वहेनी बेसो आवि ॥ कर जोडी करे विनति रे,काइ शेठ सोमदत सद्भाव ॥सु०॥८॥ में अविनय कीधो घणो रे, हीन करावुं काम ॥ ते खमजो मुज स्वामिनी रे, हुं छुं तुमारे नाम ॥ सु० ॥ ए ॥ ते कहे वाक नहि किस्यो रे, तुमचो इहांकणे शेठ ॥ केडे लाग्युं पापीयु रे, काइ पेट करावे वेठ ॥ सु० ॥१०॥ शहेरमां फरतां अम्ह भणी रे, दीधो तुमें आश्रम ॥ दोहिला दिन वोलावीया रे, काइ दियु अमें आशिष तुम ॥सु०॥११॥ अहित थयु होय अम्हथी रे, ते खमजो अपराध॥तुम्हें गिरुआ गुणवंत छो रे,काइ उपगारी वली साध ॥ सु० ॥ १२ ॥ खमी खमावी एणी परें रे, आवे नृप आवास ॥ त्रिहु बहेनी वत्सराजशु रे, कांइ आनद अधिक उल्लास ॥ सु० ॥ १३ ॥ नृप उतरवा आपीयु रे, मंदिर सुंदर एक ॥ सामग्री सयुत करी रे, कांइ राख्यो सघल विवेक ॥ सु० ॥ १४ ॥ सुखें रहेतां वत्सने रे, कहे नृप श्री तुज चाह ॥ जे मागे ते तुजने रे,कांइ आपु धरि उत्साह ॥सु०॥१५॥ ते कहे मुजने ताहरी रे, सेवानो छे कोड ॥ रात दिवस तुम आगळें रे, कांइ रहेशु वे कर जोडि ॥ सु० ॥१६॥ सध्यासमयें मुजने रे,मोकलजो मुज गेह ॥ एम कहीने करे चाकरी रे,कांइ हियडे धरि बहु नेह ॥ सु० ॥ १७ ॥ मान घणु महिपति तणु रे, माने सघलां लोक ॥ कमलश्री पण नित्यप्रतें रे,कांइ खबर लीये तजी शोक ॥ सु० ॥ १८ ॥ एक दिवस महिपाल जी रे, विण मोकले वत्सराज ॥ सूतो वासघरे जइ रे, कांइ सुखमां नर शिरताज ॥ सु० ॥ १९ ॥ यामिक चिहु दिशें आविने रे, रहिया तिहां हुशीयार ॥ खड्ग ग्रही वत्सराजजी रे, पण रहियो घरने बार ॥ सु० ॥ २० ॥ पंचम खंडें अढारमी रे, ढाल थइ सुवि

चार ॥ रामविजय कहे वत्सना रे, कांइ पुण्यतणो नहि पार ॥सु०॥२१॥६०५॥

॥ दोहा ॥

विनयवत ऊनो रह्यो, सेवकपरें वत्सराज ॥ मध्यरात्रि वोली जिस्यें, तव जाग्यो नरराज ॥ १ ॥ श्रवणें निसुण्यु डुखनु, कामिनीरुदन अपार ॥ मन चिंते महाराजजी, होशे कवण प्रकार ॥ २ ॥ वोलाव्या यामिक जणी, नरपति ऊंचे साद ॥ पण कोई वोल्या नहि, कघ्या निद प्रमाद ॥ ॥ ३ ॥ वत्सराज वोल्यो तदा, द्यो कारिज आदेश ॥ नृप कहे हजी वेगो अछे, केम न गयो गृहदेश ॥ ४ ॥ विण हुकमें जाऊं नहिं, नृप कहे जा निजधाम ॥ प्रेप्यपणु न घटे तुने, कहिश ए अवरने काम ॥ ५ ॥ वत्स कहे महाराजजी, फरमावो मुज आज ॥ शिर जोरें करशु सही, नहीं इहां मुज लाज ॥ ६ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ कहे सखि पीयुडे शु कछुं ॥ सहि मोरी रे ॥ ए देशी ॥ कहे नृप सुण वत्स माहरा ॥ गुण धोरी रे ॥ पलकमांहे मुज आज ॥ लीधुं चित्त चोरी रे ॥ तुज विण कुण रयणी समे ॥ गुण धोरी रे ॥ पडिवज्जे डुष्कर काज ॥ लीधु० ॥ १ ॥ वत्स जाउ उतावला ॥ गुण० ॥ कोण रोवे ए नारि ॥ ली० ॥ हुकम प्रमाण करी चल्यो ॥ गुण० ॥ साहसिक शिरदार ॥ ली० ॥ २ ॥ शब्दतणा अनुसारथी ॥ गु० ॥ करी उल्लंघन वप्र ॥ ली० ॥ गयो स्मशाननी नूमिका ॥ गु० ॥ सत्त्व संघातें क्षिप्र ॥ ली० ॥ ॥ ३ ॥ एक प्रदेशें सीमंतिनी ॥ गु० ॥ वसनानरण विशेष ॥ ली० ॥ शोजे ते सुकुमारिका ॥ गु० ॥ दीठी सुंदर वेश ॥ ली० ॥ ४ ॥ पण रोती अतिही घणु ॥ गु० ॥ पूछे जइनें कुमार ॥ ली० ॥ बहेन रोवे किण कारणें ॥ गु० ॥ कहे मुज डुःख विचार ॥ ली० ॥ ५ ॥ चाल्यो जा परदेशीया ॥ गु० ॥ शु तुज पूछण काज ॥ ली० ॥ शक्ति विना उपकारने ॥ गु० ॥ इछे मूर्खशिरताज ॥ ली० ॥ ६ ॥ वत्स कहे तु डुःखिणी ॥गु०॥ में मूकी न जवाय ॥ ली० ॥ परडुःखें डुःखीया कह्या ॥ गु० ॥ सज्जन जन जगमाय ॥ ली० ॥ ७ ॥ सा कथयति ॥ यस्य कस्याप्यग्रे डुःखं न कथ्यते ॥ यडुक्तं ॥ जो नवि डुरक पत्तो, जो नवि डुरकस्स निग्गह समछो ॥ जो नवि डुहिए डुहिउ, ता किस कहिज्जए डुरकं ॥ १ ॥ वत्स

राजेनोक्त ॥ नद्रे शृणु ॥ अहमवि डु रक पत्तो, अहमवि डुक्करत्त समंडो॥ अहमवि डुहिए डुहिउं, ता अम्ह कहिज्जाए डुक्क ॥ १ ॥ सा कहे सज्जन ते हुवा ॥ गु० ॥ तु कोण गणतीमांहे ॥ ली० ॥ सुगध घणो हुवे ॥ गु० ॥ पण तेलने शो गुण थाय ॥ ली० ॥ ७ ॥ तेम मुऊ तु नवि लेखवे ॥गु०॥ श्यो अवगुण तें दीठ ॥ली०॥ ते कहे बालक वेशमां ॥गु०॥ शु तुऊथी होवे इष्ट ॥ली०॥ ए ॥ कहे वत्स शुं न सुणो वरा ॥ गु० ॥ तम कगतो सूर ॥ली०॥ नहानो पण हरिनो शिशु ॥ गु० ॥ नाजे मातंगपूर ॥ ली० ॥ १० ॥ शु चिंतामणि नानडो ॥ गु० ॥ न करे दारिद्र दूर ॥ ली० ॥ दीपक दीसे बालुउं ॥ गु० ॥ पण करे तम चकचूर ॥ ली० ॥ ११ ॥ एम नहानामा गुण घणा ॥ गु० ॥ तेम मुऊने पण जाण ॥ ली० ॥ बोली हसीने नामिनी ॥ गु० ॥ सांजल चतुर सुजाण ॥ ली० ॥ १२ ॥ ए नयरीमांहे वसे ॥ गु० ॥ मुऊ पिउ पुरुष रतन्न ॥ ली० ॥ विण अपराधें नरेश्वरु ॥ गु० ॥ शूलीयें विध्युं ए तन्न ॥ ली० ॥ १३ ॥ लेइ आवी घृतपूरने ॥ गु० ॥ पियुमुख हेपण काज ॥ ली० ॥ हाथ न पहोंचे माहरो ॥ गु० ॥ रोउं तिण कारण आज ॥ ली० ॥ १४ ॥ कहे वत्स सत्तशिरोमणि ॥ गु० ॥ चढ मुऊ उपर खध ॥ ली० ॥ पूर समिहित ताहरु ॥ गु० ॥ मुऊ उपकारनी सधि ॥ ॥ ली० ॥ १५ ॥ वाली कडोटो उपरें ॥ गु० ॥ उंची चढी विकराल ॥ ली० ॥ छेदे आमिषपिंमने ॥ गु० ॥ हाथ लई ते पालि ॥ ली० ॥ ॥ १६ ॥ ऊर्ध्वं विलोके वत्सजी ॥ गु० ॥ दीतु कुचेष्टित तास ॥ ली० ॥ खड्ग खेंची कहे रंमिके ॥ गु० ॥ किहां जाइश हवे नाशि ॥ ली०॥ १७ ॥ उची वर्धतां जेहना ॥ गु० ॥ परिधान चीवर हाथ ॥ ली० ॥ रहियां ते नाशी गइ ॥ गु०॥ पापिणी जेम अनाथ ॥ ली०॥ १८ ॥ घनरथ जिनने एहवे ॥ गु० ॥ पूछे प्राणी कोय ॥ली०॥ नगवत कुण ए कामिनी ॥गु०॥ कर्म करे गुण खोय ॥ ली० ॥ १९ ॥ कहे प्रनु देवी डुष्ट ते ॥ गु० ॥ नर उलवाने अधर्म ॥ ली० ॥ करे अहोनिस शके नहिं ॥ गु० ॥ करती एहवां कर्म ॥ ली० ॥ २० ॥ कहे प्रनु नक्षण नवि करे ॥ गु० ॥ मांस एह सुर जात ॥ ली० ॥ पण क्रीडा ए तेहोनी ॥ गु० ॥ जाणे नर साक्षात ॥ ली० ॥ २१ ॥ वत्सराज लेइ वस्त्र ते ॥ गु० ॥ आव्यो

निज आवास ॥ ली० ॥ शयन कर्युं सुखियो थयो ॥ गु० ॥ आनंद लील विलास ॥ ली० ॥ २२ ॥ पचम खम्ें उंगणीशमी ॥ गु० ॥ ढाल कही ससनेह ॥ ली० ॥ रामविजय कहे रगशु ॥ गु० ॥ वत्स जयो गुणगेह ॥ ली० ॥ २३ ॥ सर्वगाथा ॥६३४॥ श्लोक तथा गाथा ॥२९॥

॥ दोहा ॥

॥ वस्त्र लेई ते आवीयो, नृपपासें परजात ॥ करि प्रणाम ऊनो रह्यो, कुवर कुलविख्यात ॥१॥ नृप आगल सवि रातनो, जांख्यो तेणे विरतंत ॥ वात सुणी विस्मय लह्यो, मासो ते जूकत ॥ २ ॥ वसन तेह देवीतणुं, आप्युं नरपति हाथ ॥ रयणजडित देखी करी, हरख्यो ते जूनाथ ॥ ३ ॥ राणीने ते सोंपीयु, हरखी मन अत्यत ॥ पहेरयु पण कचुक विना, शोजा ते न लहत ॥ ४ ॥ राणी कहे प्रीतम जणी, ए सरिखो कूर्पास ॥ आणी आपो मुजने, प्राणेश्वर सुविलास ॥ ५ ॥ राय कहे वत्सराजने, पहेरण वस्त्र समान ॥ जो कचुक आणी दीये, तो हुवे हर्ष अमान ॥ ६ ॥ वचन प्रमाण कयु तदा, जइ वन चदनवृक्ष ॥ कोटरथी खेचरी तणु, आणी आपे दक्ष ॥ ७ ॥ पहेरी सा परसन थइ, मासी दें आशीष ॥ वत्सराज चिरजीव तु, पूरी मनह जगीश ॥ ८ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ नमो रे नमो श्री शत्रुजय गिरिवर ॥ ए देशी ॥ लाजें लोज घणेरो वाधे, तृष्णा नवि ओलाय रे ॥ जेम जेम पूरणने धन सींचे, तेम तेम वहुली थाय रे ॥ १ ॥ लाजें० ॥ ए आंकणी ॥ ते वेहु चीवरने अण सरिखु, निज उत्तरीय निहालि रे ॥ कमलश्री करे मनमांहे आरति, कर देई निज जाल रे ॥ ला० ॥ २ ॥ आरति धरती नृपति निहाली, पूछयुं आवी ताम रे ॥ श्याममुखी केम दीसें कामिनी, श्यो तुऊ मनमाहे काम रे ॥ ला० ॥ ३ ॥ सुणो वालम कहेता हुं लाजु, कहे नृप शी मुऊ लाज रे ॥ सुण सुदरी ते लाज न कीजें, जेहथी विणसे काज रे ॥ ला० ॥ ४ ॥ राणी कहे उत्तरीय मले जो,ए सरिखु अवनीश रे ॥ तो मुऊ मन सतोष लहे एम, कहे नामी निज शीश रें ॥ ला० ॥ ५ ॥ जूपति चिंते लोज तणो ए, थोज न दीसे कोय रे ॥ कामिनी जातें अवगुण प्रायें, जगमा वहुलो होय रे ॥ ला० ॥ ६ ॥ यत ॥ अनृतं साहस माया,

मूर्खत्वमतिलोजता ॥ अशौच निर्दयत्व च, स्त्रीणा दोषा स्वजावजाः ॥ पूर्वढाल ॥ कहे राजन तुऊ सम नहि कोइ, अविवेकीण अविचारी रे ॥ व्यर्थ मनोरथ वस्तु असत्ता, ए मति नहि तुऊ सारी रे ॥ ला० ॥ ७ ॥ कहे राणी प्रीतम ए साचु, पण मुऊ आणी आपो रे ॥ प्राणजीवन मनोवछित पूरण, तुम ऊपर अम दापो रे ॥ ला० ॥ ८ ॥ जोबन ए लेई रही राणी, नृप मन चिता महोटी रे ॥ कोपमदिरमा पेठी कामिनी, लोजनी जाति ए खोटी रे ॥ ला० ॥ ए ॥ मूरख वाल अने वनिताना, हठ सवलो जग होवे रे ॥ घरनी चिता चित्त न आणे, निज सुख सामु जोवे रे ॥ ला० ॥ १० ॥ कहे राजा वत्सराजने तेडी, साहसिया शिरदार रे ॥ दिव्य वसन आपीनें मुऊने, अनरथ कीध विचार रे ॥ ला० ॥ ११ ॥ ए तुऊ मासी लोजें प्यासी, नहि सतोष लगार रे ॥ उंडणी काज लियो हठ सवलो, नहिं कोइ पूरणहार रे ॥ ला० ॥ १२ ॥ कहेण न माने मानिनी माहरु, लोजथी लक्षण नाठा रे ॥ सात न पूराये ए नीति ना, वयण न दीसे माठा रे ॥ ला० ॥ १३ ॥ यत ॥ अग्निर्विप्रोयमो राजा, समुड उदर गृहम् ॥ सप्तैतानि न पूर्यंते, याचति च दिने दिने ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ वत्स विचारी कहे सुणो स्वामी, पूरवी मासी आसा रे ॥ षटमासाभ्यतर जो न पूरु, तो करु अग्नि प्रवेशा रे ॥ ला० ॥ १४ ॥ कहे राजन वत्स एम न कीजें, आकरी एह प्रतिज्ञा रे ॥ न कलाये विधि विविध कलाइ, नियति न वोले विज्ञा रे ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते कहे तुम प्रसादें रूडुं, राजन् सघलु थाशे रे ॥ पण मुऊने तुमें आपो आणा, जावीजाव जणाशे रे ॥ ला० ॥ १६ ॥ लेइ नृपआणा मदिर मांहे, जननी नमेवा आव्यो रे ॥ कर जोडी रहि आगाल ऊनो, सयल विचार सुणाव्यो रे ॥ ला० ॥ १७ ॥ मोहवशें माडी कहे तें वत्स, छुष्कर अगी कीधो रे ॥ वत्स कहे हवे वात ए न फरे, वयणें वोल जे कीधो रे ॥ ला० ॥ १८ ॥ कहे माडी मासी सुण अगज, तु अम्ह प्राणाधार रे ॥ केम परदेशजणी मूकाये, मारग विषम अपार रे ॥ ला० ॥ १९ ॥ कहे वत्स सघलु रूडुं थाशे, द्यो आशीष पसाय रे ॥ चिंता मत करशो कोइ महारी, साथें पुण्य सखाय रे ॥ ला० ॥ २० ॥ धीर वीर जाणी कहे जननी, होजो तुम कल्याण रे ॥ वहेला काज करी वत्स वलजो, सुख

अम जीवन प्राण रे ॥ ला० ॥ २१ ॥ मायडी तिलक कर्खुं कुंकुमनुं, दीधु श्रीफल सार रे ॥ दधिभोजन करिने सिद्धि कीधी, श्री वत्सराज कुमार रे ॥ ला० ॥ २२ ॥ काइक सबल लेई साथे, पग पालो ते चा ल्यो रे ॥ खड्ग खेटक सयुत दक्षिण दिशि, हींमे दर्पेंद्य माल्यो रे ॥ ला० ॥ २३ ॥ नव नव जाति विनोदने जोतो, फरतो बहु पुर ग्रामें रे ॥ आग ल एक अटवी तिहां आवी, नहिं मानवनु नाम रे ॥ ला० ॥ २४ ॥ तिहां जाता प्राकारविराजित, लघुपत्तन एक दीठु रे ॥ देखी विजन वत्सराज विमासे, ए काइ कौतुक मीठु रे ॥ ला० ॥ २५ ॥ पंचम खंमें ढाल वीशमी, राममुनि एम नाखे रे ॥ धन्य एहवे गामें जे तिलनर, नय मनमां नवि राखे रे ॥ ला० ॥२६॥ सर्वगाथा ॥६६७॥ श्लोक ३१

॥ दोहा ॥

॥ नूत प्रेत राक्षस तणु, दीसे पुर कोइ एह ॥ अथवा ए चिता किसी, जइ जोउ ससनेह ॥ १ ॥ नयरमांहिं जोवे जइ, महोटु मदिर एक ॥ लघु बीजां तस पाखती, निरखे ते सुविवेक ॥ २ ॥ सनामांहि बेठो तिहां, दी ठो पुरुष प्रधान ॥ तस परिवारने पूछीयुं, ए कोण सुगुण निधान ॥ ३ ॥ कुण नामें दीसे नगर, कुण स्वामी ए पास ॥ नर बोले ए नहिं नगर, नहि नरपतिनो वास ॥ ४ ॥ पण इहांथी नहिं ढूकडुं, नहिं वेगलु सार ॥ नूति लकानिध पुर अछे, नूरमणी उर हार ॥ ५ ॥ वैरसिंह नामें नलो, वैरी गज पचास्य ॥ रूपवती राणी तणो, प्रीतम लील विलास ॥ ६ ॥ तिण पुरमां रंगें रहे, दत्त नामें एक शेठ ॥ दोलतने दोरें करी, सहुये जेहथी हेठ ॥ ७ ॥ श्रीदेवी नामें निपुण, नारी निरुपम रूप ॥ रति दासी कीधी जेणें, मोहन वेली अनूप ॥ ८ ॥ तेहनी कूखे ऊपनी, तनया अति सुवि नीत ॥ श्रीदत्ता नामें नली, मात पिताने चित ॥ ए ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणु ॥ ए देशी ॥ जर यौवन आवी नली, बाला तन सुकुमाल ॥ लाल रे ॥ रूप कला गुण शोनती, चाले गजगति चाल ॥ लाल० ॥ १ ॥ जुवो विषम गति कर्मनी ॥ ए आंकणी ॥ कोणें कली न जाय ॥ ला० ॥ कर्मवशें सहु जीवडा, लहे सुख ङ ख समुदाय ॥ ला० ॥ जुवो० ॥ २ ॥ श्रीदत्ता हुइ कर्मथी, दोषाक्रांत शरीर ॥ ला० ॥

जनक उपाय करे घणा, पण न टली तस पीर ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ ३ ॥ मात पिता दुःखीया थयां, चिंते मनमांहे एम ॥ ला० ॥ दोषी थैव ए रयणनो, कहो हवे कीजे ए केम ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ ४ ॥ यत ॥ चंद्रे लाछनता हिम हिमगिरौ क्षार जलं सागरे, रुद्राभ्रदनपादपा विषधरैश्चन्दने रुद्दं कटके ॥ स्त्रीरत्नेषु जरा कुचेषु पतन विद्वत्सु दारिद्र्यता, सर्व रत्नमुपद्रवेण सहितं दुर्वेधसा निर्मितम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ मूके नरने पाहरु, कुमरी सेवा काज ॥ ला० ॥ रातमाहे सही ते मरे, महोटुं एह अकाज ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ ५ ॥ जो न रहे कोइ पाहरु, ते कन्यानी पास ॥ला०॥ तो ते रयणीमां हुवे, सात पुरुषनो नाश ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ ६ ॥ वात सुणी नरराजीये, तेडाव्यो ते दत्त ॥ ला० ॥ तुज कन्या कुलखंपणी, वात सुणी में मित्त ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ ७ ॥ जा मूकी मुज नयरने, कोइक अटवी मजार ॥ ला० ॥ तुज कन्यादोषे रखे, थाये बहुजन संहार ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ ८ ॥ थइ दिलगीर ते नीसर्यो, लेई निज परिवार ॥ ला० ॥ आवी अटवीमा रह्यो, घर करी सप्राकार ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ ९ ॥ सेवक राख्या अति घणा, देई बहुला दाम ॥ ला० ॥ नाम लखी गोला नख्या, करे चिठी वधकाम ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ १० ॥ नामुं आवे जेहनुं, ते रहे चोकीदार ॥ ला० ॥ करे कन्यानी चाकरी, पाये तस संहार ॥ ला० ॥स्तु०॥ ११ ॥ पण लोभें सहुको पडे, सहुने वहाला दाम ॥ ला० ॥ दामथकी जगमां सही, दुष्कर पण करे काम ॥ ला० ॥ स्तु०॥ १२ ॥ यडुक्त ॥ यहुर्गामटवीमटति विकटं क्रामति देशांतरं, गाहंते गहन समुद्रमतुलं क्लेशा कृषीं कुर्वते ॥ सेवते कृपण पतिं गजघटासंघट्टदुस्संचरं, सर्पंति प्रधन धनांधितधियस्तल्लोभविस्फूर्जितम् ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ ते नरमांहेथी सही, एकेको मरे नित्य ॥ ला० ॥ अवर कोइ न रहे इहां, सबली वरते ईति ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ १३ ॥ ते माटे वारुं तुने, पंथी म जा इण गाम ॥ ला० ॥ जिण स्थानक नय उपजे, तिहां जइयें शो काम ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ १४ ॥ वात सुणी वत्सराजजी, उपगारी शिरदार ॥ ला० ॥ धैर्य धरीने आवीयो, दत्त समीपें उदार ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ १५ ॥ उत्तम नर जाणी करी, बेसार्यो आसन्न ॥ ला० ॥ पान बीडां आगल धर्यां, शेठ थई सुप्रसन्न ॥ ला० ॥ स्तु० ॥ १६ ॥ सुख देखी

रीज्यो घणुं, पूछीयुं कुण तुमें सत ॥ ला० ॥ परकासो अम आगलें, तुमें महोटा माह्त ॥ ला० ॥ सु० ॥ १४ ॥ वासी हुं उज्जेणिनो, आव्यो कारण माट ॥ ला० ॥ तुम दीठे आज माहरे, दूर गया उचाट ॥ ला० ॥ सु० ॥ १७ ॥ वात करे दत्त आगले, जेहवे ताम पुमान ॥ला०॥ एक आव्यो रलियामणो, सुंदररूप जुवान ॥ला०॥सु०॥१ए॥ आवी उनो रह्यो आगलें,मनमां घणु विलाय ॥ला०॥ शेठ नणी पूछे तदा, केम ए नर कुम लाय ॥ला०॥सु०॥२०॥ नाखी निशासो तव कहे, सुण शा पुरुष विचार ॥ ला० ॥ कर्म कठिन आव्या उदे, धिक् महारो जमवार ॥ ला० ॥ सु० ॥ २१ ॥ गोपनीय पण ताहरी, आगल कहुं अवदात ॥ ला० ॥ मुऊ तनयानी आकरी, कर्मकथानी वात ॥ ला० ॥ सु० ॥ २२ ॥ रय णीयें यामिक जे रहे, आकरो कोइक दोष ॥ ला० ॥ रात समयमां ते मरे, अछुन तणो ए पोष ॥ ला० ॥ सु० ॥ २३ ॥ आज छे वारक ए हनो, तेणें जखाणी काय ॥ ला० ॥ मरण समो नय को नहिं, एम नाखे जिनराय ॥ ला० ॥ सु० ॥ २४ ॥ वात सुणी वत्सराज बोलियो, पर उपकारने काज ॥ ला० ॥ सुऊहूती ए उगरे, तो लहु त्रिभुवनराज ॥ ला० ॥ सु० ॥ २५ ॥ कहे वत्स मत बीहे मने, ताहरे साटे हु जाइ ॥ ला० ॥ करिश कन्यानी सेवना, तु रहे आनंदमांइ ॥ ला० ॥ सु० ॥ २६ ॥ शेठ कहे तु प्राहुणो, करवु घटे सन्मान ॥ ला० ॥ तुऊने देवा ये नहिं, मरणतणु अपमान ॥ ला० ॥ सु० ॥ २७ ॥ यत ॥ गुरुरग्नि र्द्विजातीनां, वर्णानां ब्राह्मणोगुरु ॥ पतिरेव गुरु स्त्रीणां, सर्वस्यान्यागतो गुरु ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ वत्स कहे तात ए में सही, कीधु अंगीकार ॥ ला० ॥ परउपगारी नरें सही,एम कह्युं शास्त्र मऊार ॥ला०॥ सु० ॥२७॥ यत ॥कृतोपचार सर्वोपि,करोत्युपकृतिं जन ॥ विनोपचारं यस्त्राता,विपद सोऽत्र सज्जन ॥४॥धन्यास्ते पशवोनून,मुपकुर्वंति ये त्वचा॥ परोपकारहीन स्य,धिग्मनुष्यस्य जीवितम् ॥५॥ क्षेत्र रक्षति चचा, गृह गतकोष्ठीस्थितान् कणान् रक्षा॥ दंतात्ततृण प्राणा,न्नरेण किं निरुपकारेण ॥६॥ किं तेन सुत जातेन, येनात्मा डुर्नर सदा ॥ समर्थोनोपकाराय,मातुर्जा तेन तेन किम् ॥ ७ ॥ पूर्वढाल॥ पंचम खम्म एकवीशमी, धन एहवा गुणवंत ॥ ला० ॥ रामविजय कहे तेहने,नित्यठवी नमो संत ॥ ला० ॥ सु० ॥२ए॥७०६॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे दत्त आणा लही, उपर नूमि वत्सराज ॥ कन्या पासें आवी यो, साहसिक शिरताज ॥१॥ वत्स देखि चित्त चितवे, अहो रूप अद्भुत ए कोइक राजा तणो, दीसें कुवर पहुत्त ॥ २ ॥

॥ ढाल वावीशमी ॥

॥ चतुर चोमासु इण डुंगरीये न जइयें रे ॥ ए देशी॥ देखी कुंवर मन चिंते सा वाली रे ॥ नारी नहि पण मारी हु नाली रे ॥ धिक् धिक् रे मुजने चामाली,मुज माथे महोटी ए गाली ॥ चतुर विचारी एहवां पातकडां न करीयें रे, पातकडां न करीयें,वहाला मनडां माहे मरीयें रें ॥धि०॥१॥ ए नररयण तणी हत्यारी रे, का मुजने इण कुलें अवतारी रे ॥ धि० ॥ २ ॥ शा कस्यां कर्म कठिन में नूमा रे, के कस्या कोइशुं वेर में ऊमा रे ॥ धि० ॥ ३ ॥ शाने धरी मुज कुखें तें माडी रे, एहवी थइ में तुजने लजाडी रे ॥ धि० ॥ ४ ॥ थइ मावित्रने हु डुःखदायी रे, शे काम आवी मुज चतुराई रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ पाम्यो मानव नव लेखे न आयो रे, कर्में ए महोटो दोष लगायो रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ हा हवे केम बूटीश ए पापो रे, राखो रे मुजने कोइ माय वापो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ एम चितवती हो अवला ते फुरे रे, नयणें वहे आसुडांने पूरें रे ॥ धि० ॥ ८ ॥ आव्यो कुवर तव वेगो बीजी शय्या रे, कुमरी बोलावे तब मूकीने लज्जा रे ॥ धि० ॥ ९ ॥ हु आव्यो आज तुज रखवालो रे, कुंवरी श्रीदत्ता मुजने उत्तर वालो रे ॥ धि० ॥ १० ॥ वात करे मनडामांहे रीजी रे, वेहुनी नेदाणी कांहिं देहानी नींजी रे ॥ धि० ॥ ११ ॥ रीजाणी चिंते एम घाटें रे, एहने उगारुं महारा जीवित साटें रे ॥ धि० ॥ १२ ॥ एम चितवतां हो ततक्षण आवी रे,निदरडी वेरण जेम कुवरी घेरावी रे ॥ धि० ॥ १३ ॥ उंघी जाणीने वत्स अधोनूमि जाई रे, काष्ठ लेइ आव्यो एक बुद्धि सखाई रे ॥ धि० ॥ १४ ॥ काष्ठ सुवार्युं पुरुष जेम दीसे रे, ग्रही तरवार रह्यो एकण दिशें रे ॥ धि० ॥ १५ ॥ दीप तणी छाया रह्यो मलीयो रे, धारिणीजायो नवि जाये कोनो छलियो रे ॥ धि० ॥ १६ ॥ एणे अवसरें वातायन विवरें रे, मुख एक पेसंतु दीठुं तब कुमरें रे ॥ धि० ॥ १७ ॥ थइ सचेतो कुमर तब रहीयो रे, वज्र तणी

परें काठो करी हैयो रे ॥ धि० ॥ १८ ॥ तेणें सुखें वासघरने निहाली रे, पेठो पठें तिहां कर ततकाली रे ॥ धि० ॥ १९ ॥ मुझ अजकृत अंगुलि मोहे रे, औषधिवल्लीयें मन्त्रित घणु सोहे रे ॥ धि० ॥ २० ॥ फ्रुंकथकी धूम पसर्यो अटारो रे, वासभुवनमाहे व्याप्यो अधारो रे ॥ धि० ॥ ॥ २१ ॥ कर फरसे जइ यामिक सेजें रे, तव कुवरें हण्यो खड्गें सुतेजें रे ॥ धि० ॥ २२ ॥ देवप्रभावें तस कर नवि पडियो रे, औषधियुग पड्यो कुवरने जडियो रे ॥ धि० ॥ २३ ॥ एक धूमौषधि तेहमांहे ताजी रे, बीजी व्रणसरोहणी साजी रे ॥ धि० ॥ २४ ॥ थइ वेदना हाथ लीधो खची रे, देवी बोली हा हा मुझने वची रे ॥ धि० ॥ २५ ॥ कहे कुवर देवीने सुण दासी रे, हवे मुझ आगें किहां जाइश नासी रे ॥ धि० ॥ २६ ॥ खड्ग उपाडीने केडे उजाणो रे, नाठी देवी तस ताप न खमाणो रे ॥ धि० ॥ २७ ॥ पुण्यबलीया आगल कोण मझे रे, पुण्य प्रबल वैरी दल खझे रे ॥ धि० ॥ २८ ॥ पाछो वली आव्यो वत्सराजो रे, पुण्य पसायें सवि सीधला काजो रे ॥ धि०॥ २९ ॥ आवी बेठा जब कुवर सवाया रे, रयणी विहाणी तव वाहणला वायां रे ॥ धि० ॥३०॥ पचम खंडेंबावी शमी ढालें रे, उग्यो सूरज वत्स मुखडुं निहाले रे॥धि०॥३१॥७२९॥२७॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर ते कन्यका, जागी जूवे जाम ॥ अद्भुतांग दीठो कुवर, हैडे हरखी ताम ॥ १ ॥ चितववा लागी चित्तें, ए कोइ पुरुषरतन्न ॥ स बल प्रभाव एहनो सहि, दुष्टथकी न विपन्न ॥ २ ॥ अथवा जाग्यु भाग्य मुझ, मलियो पुरुष प्रधान ॥ जो परणु तो एहने, नहि तो विषयपच्चरका ण ॥ ३ ॥ एम चिंती कहे सुंदरी, व्यसनथकी केम आज ॥ मूकाणा ते मुझ कहो, गिरुआ गरिबनिवाज ॥ ४ ॥ सयल वात मांडी कही, नि सुणी हरखी बाल ॥ रोम रोम तन उल्लस्यु, मन विकस्यु ततकाल ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ वात करे बेहु तेह, हर्ष धरी स सनेह ॥ आज हो ॥ आवी रे जल लेइ दासी कनी कने जी ॥ १ ॥ देखी अद्भुत अंग, पुरुष थयो मन रंग ॥ आ० ॥ दोडी रे आवी वत्तशेठनी आग ले जी ॥ २ ॥ जय स्वामी मुझ आज, अरज सुणो महाराज ॥ आ० ॥

लावी रे वधामणी नर कुशला तणी जी ॥ ३ ॥ हर्ष हैये न समाय, उठयो शेठ तव धाय ॥आ०॥ आव्यो रे ते पासे नयणें निरखतो जी ॥४॥ श्रीदत्ता गुणखाणि, कन्नी जोडी पाणि ॥ आ० ॥ आप्युं रे शुन आसन जनकने वेसवा जी ॥ ५ ॥ कहे दत्त साहसधीर, सुण पुरुषोत्तम वीर ॥ आ० ॥ रातें रे व्यसनाबुधि कहो केम निस्तर्यो जी ॥ ६ ॥ सत्त्व तणो आधार, मान्नी कहे सुविचार ॥आ०॥ हरख्यो रे निसुणीने तेहनी वातडी जी ॥ ७ ॥ कहे दत्त सुण नरसिंह, महिमावत अबीह ॥ आ० ॥ दीधी रे में पुत्री तुऊने माहरी जी ॥ ८ ॥ नहि मुऊ पाड सुजाण, तुऊ गुणक्रीता जाण ॥ आ० ॥ तो पण रे व्यवहार ए मुऊ कहेवा तणो जी ॥ ए ॥ कुवर करे सुणो स्वामि, न लहो मुऊ कुल गाम ॥ आ० ॥ दीजें रे केम अणजाण्याने दीकरी जी ॥ १० ॥ दत्त नणे कुल जात, लक्षणथी लहि वात ॥ आ० ॥ कलिमा रे कुण कुल कलहंस तणु कहे जी ॥ ११ ॥ ढानो न रहे सूर, तेज प्रताप पमूर ॥ आ० ॥ पायो रे तुं पुरुषशिरोमणि पुण्यथी जी ॥ १२ ॥ यत ॥ आकृतिर्गुणसमृद्धिशसिनी, नम्रता कुलविशुद्धिसूचिका ॥ वाक्क्रम कथितशास्त्रसक्रम, सत्तमस्य न्नवतोविबोधक ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ दीधु कन्यादान, जे मुऊ जीव समान ॥ आ० ॥ आपु रे शु अधिकु तुऊने एहथी जी ॥ १३ ॥ करो करुणा वरो एह, नहिं अम मन सदेह ॥ आ० ॥ जाणु रे तुमें अम कर चितामणि चढया जी ॥ १४ ॥ कुवर कहे कह्युं साच, पण निसुणो मुण वाच ॥ आ० ॥ जावु रे मुज गिरुवे कारज वेगलु जी ॥ १५ ॥ वलतो आवीश आम, करशुं जे कहेशो काम ॥ आ० ॥ बोले रे दत्त वात कहो ते नवि मले जी ॥ १६ ॥ एक वार परणी एह, पछें मन माने तेह ॥ आ० ॥ करजो रे कारिज ए अमची वीनति जी ॥ १७ ॥ कीधु अंगीकार, हठ जाणी निर्धार ॥ आ० ॥ परणी रे श्रीदत्ता तिण दिन पद्मिनी जी ॥ १८ ॥ हरख्यां साजनवृंद, उत्सव अति आनद ॥ आ० ॥ रहीया रे एक रात्रि तिहां आवासमां जी ॥ १९ ॥ दंपती विलसे प्रेम, दोगुंदुक सुर जेम ॥ आ० ॥ रमतां रे रंगेंशुं वोली रातडी जी ॥ २० ॥ नर यौवन वय पूर, दपती चढते नूर ॥ आ० ॥ परिगल रे पुण्याइ ए जोडी मली जी ॥ २१ ॥ बीजे दिन वत्सराज, कहे नामिनी

सुण आज ॥आ०॥ म्हारे रे तुफ आणा सिद्द करवी सही जी ॥ २२ ॥ कहे श्रीदत्ता नारी, वहालेसर अवधार ॥ आ० ॥ तुमचो रे न खमाये विरहो वालहा जी ॥२३॥ विरहो मास वसत,नवल नेह गुणवत ॥आ०॥ नूतन वय पंचम शर ए पाचे मल्या जी ॥ २४ ॥ पंचम अग्नि महत, केम सहेवाये कत ॥ आ० ॥ रमीयें रे रगीले रस नर मालीयें जी ॥ ॥ २५ ॥ विलसो जोग विलास, पूरो वाछित आश ॥ आ० ॥ चिता रे शी मनमा तुमने ते कहो जी ॥ २६ ॥ पचम खमें ढाल, त्रेवीशमी सुर साल ॥ आ० ॥ होवे रे साहसथी सपद सहेलमा जी ॥२७॥४४१॥३७॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे वत्स वनिताप्रत्यें, जावु न गमे मुज ॥ पण सांजल तुफ आ गलें, कहु माहरु गुफ ॥ १ ॥ जो न जाउ देशातरें, तो हुवे अग्निप्र वेश ॥ इहांकणे कांइ सशय नहि, माटें द्यो आदेश ॥ २ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ देशी जत्तीनी ॥ जत्ती ॥ कहे कामिनी जोडी पाणि,निसुणो प्रीतम गुणखा णी ॥ तुम विण मुफ मन अकलाय, क्षण वरस वरोवर थाय ॥१॥दोहो॥ सज्जन तुमें सिधावशो, वहुगुणवता नाह ॥ पण म्हारी गति शी होशे, उ चो शोच अथाह ॥ २ ॥ यत्ती ॥ शोच म करे रे कामिनि काहिं, तुफछुं मुफ अतर नाही ॥ में प्राण दीया तुफ हाथे, तु रात दिवस मुफ साथें ॥ ३ ॥ दोहो ॥ साथ तुमारो वल्लहा, में करवो निरधार ॥ अवला कवेखी जशो, शो तुम नेह विचार ॥ ४ ॥ यत्ती ॥ नेह नवल निवाहो वहाला, दोहिला मुफ विरहनां जाला ॥ कत करुणा करो रस जीना, मुफ साथ ल्यो वीर नणदीना ॥ ५ ॥ दोहो ॥ साजल ससनेही प्रिया, वहेलो वल तो आवि ॥ रमछु रामत रंगजरी, नवरस नेह वनावि ॥ ६ ॥ यत्ती ॥ वनशे तुफछु प्रीति जाजी, दे आणा मुफ थइने राजी ॥ रहेता विणसशे मुफ काज, तुफछु शी करवी लाज ॥ ७ ॥ दोहो ॥ लज्जा लोपीने कहे, नयण फरते नीर ॥ वहालेसर आव्या विना, नवल न पहेरु चीर ॥ ८ ॥ यत्ती ॥ चिर कुकुम काजल रेहा, न लेउ तुम विण घण नेहा ॥ वलि कुसुमाजरण तंवो ला, तुम आव्ये होशे रंगरोला ॥ ए ॥ दोहो ॥ रगीला वालम सही, ए मुफ वेणीवध ॥ तुम आवेहिज छूटशे, एह अही में सधि ॥ १० ॥ यत्ती ॥

सधा समरेजो स्वामी, विनवु वु अतरजामी ॥ रहेशुं तनथुं इण देशें, पण हृदय पियु जिण देशे ॥ ११ ॥ दोहो ॥ जिण देशें पियु संचरो, तिण देशें होजो क्षेम ॥ अवसरें मुज संजारजो, मत वीसारो प्रेम ॥ १२ ॥ यत्ती ॥ प्रेम मत विसारो पनोता, लही नव नवी नारी कंता ॥ वहेला वलजो हितवता, कर जोडी कहे श्रीदत्ता ॥ १३ ॥ दोहो ॥ श्रीदत्ता कहे साहिवा, वहेलाही वलजोह ॥ रुगरजीवी जीवजो, अवर ज्युं फलजोह ॥ ॥ १४ ॥ यत्ती ॥ फलजो तुम कहु शिर नामी, नवि वोली जाणु रति कामी ॥ जाउ एम कहेता कातु, मत जाउ वयण ए मातु ॥ १५ ॥ दोहो कातु वयण न वोलीयें, पीयु सीधावण वार ॥ जेम जाणो तेम शुं कहे, नेह कवण नरतार ॥१६॥ यत्ती ॥ नेहें आवु सयातें ए वाणी, न पडे ए पियुजी प्रमाणी ॥ माटें करी चिंतित काज, वहेलु दरिसण देजो राज ॥ १७ ॥ दोहो ॥ रीज्यो निसुणी नारीना, वयण अमीरस तोल ॥ वीसरशे नहिं वालही, ए तहरा मुज वोल ॥ १८ ॥ जत्ती ॥ वोल देइ शेठ आणा, कुमरें तव कीध प्रयाणा ॥ जाता एक आगल आवी, अटवी अति नीपण चावी ॥ १९ ॥ दोहो ॥ चावा नील घणा जिहां, पर्वत अति वत्तग ॥ जास जाड जाया घणां, नहि जिहा सज्जन सग ॥ २० ॥ यत्ती ॥ एहवी अटवीमाहे एक गाम, दीठी एक नयरी अभिराम ॥ पर अभ्रंलिह जिहा दीसे, जोता मानव मन हीसे ॥ २१ ॥ दोहो ॥ बाहिर सरोवर पेखीयु, अति शीतल जल चग ॥ चरणानन पावन करी, बेठो पालें मनरंग ॥ २२ ॥ यत्ती ॥ मनरगें बेठो जइ पालें, चिहु दिशें निरखीने निहाले ॥ जल वहेती दीठी बहु नारी, पूछयु एकने जइ मति सारी ॥ २३ ॥ दोहो ॥ मतिसारी पूछे तिहा, कुण नयरी कुण नूप ॥ हु तुम पूछु प्रेमशुं, नांखो सकल स्वरूप ॥२४॥यत्ती॥ नाखो सकल स्वरूप विचारी, कहेशे हवे ते पनिहारी ॥ पंचमे चोवीशमी ढाल, कहे राम सुणो नजमाल ॥२५॥४९८

॥ दोहा ॥

॥ व्यंतर देवी वासियु, ते कहे ए पुर सार ॥ क्रीडा करवा कारणें, सांजल चतुर कुमार ॥ १ ॥ अन्य नहिं राजा इहा, नहिं कोइनो अधिकार॥ जे देवी अम स्वामिनी, अमें तेहनो परिवार ॥२॥ कुमर कहे साचुं कह्युं, जल वहो केणें काज ॥ ते कहे सांजल सापुरुष, वयण माहरुं आज ॥३॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

॥ शारद बुधिदायी ॥ ए देशी ॥ कहे ते देवनारी, सांजल साहस धीर ॥ जननीना जाया, गिरुआ गुण गन्नीर ॥ पावन पुरुषोत्तम, अतुलीवल वड वीर ॥ अम्ह स्वामीनी वेदन,हजीय न आव्यो तीर ॥ त्रूटक ॥ तीर न आव्यो एकण देशें, अम्ह स्वामिनी गइ हूती ॥ तिहां कोइ पुरुषें खङ्ग प्रहारें, तेहने घणु विगुती ॥ वाह तणी पीडा बहुतेरी, केमे करार न थाय ॥ पीडा तेह निवारण काजें, नित्य जलथी सींचाय ॥ १ ॥ तिण कारण जलने, वहियें ए सुदर जाण ॥ हजी वेदन न शमी,सबलु ए कर्म विन्नाण ॥ वत्सराज विमासी, बोले एणिपरें वाणी ॥ केम निज पीडाने, निवारण तेह अजाण ॥ त्रू० ॥ तेह अजाण थइ केम वेठी, कहे देवी सुण साचु ॥ ते प्रहार दायक अगरक्षक, देवतणु बल जाचु ॥ तस प्रन्नावें ए वेदन न समे, मत मानेजो काचु ॥ देवप्रन्नावथ की पण अधिको, मानव महिमा राचु ॥ २ ॥ वली औषधि युगल, हुतु एहने कर एक ॥ सप्रन्नाव मनोहर, दीधु अम्हें सुविवेक ॥ व्यतरपति दीधु, तुष्ट थईने ठेक ॥ फल देवी आगल, नाख्यु तेणे अतिरेक ॥ त्रू० ॥ अतिरेकें एकें जग मोहे, बीजी बहु गुणकारी ॥ परघातोन्नव पीड निवारण, ए बिहु औषधि सार। ॥ तेह पडी खङ्गें जिहां ताडी, अम स्वामिनी दुःख पाइ ॥ औषधि पाडी लाज गमाडी, कीधी कर्म कमाई ॥ ३ ॥ वत्सराज पयपे, हु बु मानुष्य वैद्य ॥ टालु तस वेदन, एक साहित्यमाहे सद्य ॥ पण द्यु मुझ देशो, बोले देवी वचन्न ॥ मन चिंतित पामीश, सांजल पुरुष रतन्न ॥त्रू०॥ पुरुषरतन्न सुणो मुझ वाणी, हुं जाउ उजाणी ॥ मुझ स्वामिनी पूठी आवु, इहां रहेजो गुणखाणी ॥ आवी वात कहे स्वामिनीने, ते कहे तेडी लावो ॥ दासी आवी कहे सुण मानव, तुमें मुझ साथें आवो ॥ ४ ॥ मारगमां नाखे, स्वामिनी अग करार ॥ थये ते त्रूठशे, तुझ ऊपर निरधार ॥ तव मागजे आपो, मुझ कन्यायुग सार ॥ प्रासाद ऊपरें, जे छे तुमचे आधार ॥ त्रू० ॥ तुम आधीन अछे हय रूपें, यक्ष एक सपराणो ॥ चिंतित ठामें जे पहोंचाडे, ततक्षणमां उजाणो ॥ वली तुम पासें अछे जे वारु, कामितदायक सार ॥ एक पल्यंक मनोहर मुझ ए, आपो वानां चार ॥ ५ ॥ एम शीखवी साथें, लेइ

चाली तिण गाम ॥ आव्यो देवीनी, पासे गुण अभिराम ॥ आपुं आस सन, वेसे धरि मन रंग ॥ कहे देवी जाणे, जो तुं वैदक अंग ॥ भ्रू० ॥ जो वैदक जाणे तो महारी, दुःख पीडा थइ वहेली ॥ वत्सराज आडंबर क रण, बोले वैदक पहेली ॥ धूम्रौपधियें धूम्र करीने, अन्यथकी हरे पीडा ॥ वेदना सर्व शमी तस सुजनी, करवा लागी क्रीडा ॥ ८ ॥ तावत् ते बोली, भइ तेहिज तुं होये ॥ मुज घातनो दायक, बीजो नहि इहां कोय ॥ कहे हा ते साचुं, हुइ हर्षित सुणी वाणी ॥ वत्स थइ हुं सुप्रसन्न, तुज साह स गुण खाणी ॥ भ्रू० ॥ गुणखाणी मागो मन्न मान्युं, जेह कहो ते आपुं ॥ वाछित पूरुं दारिद्र चूरुं, डुःख सघलुं तुज कापुं ॥ पूर्वोदित माग्युं तेणें सघलुं, ते कबूल सवि कीधो ॥ देवी चिंते गूढभेद महारो, किणविध एहने दीधो ॥ ७ ॥ सुण सुण तुं सुपुरुष, जा कन्यायुग दीध ॥ पण कहुं तस उत्पत्ति, सांजल तुं सुप्रसिद्ध ॥ मुज पासें ए वहुं, दिन राखी में एह ॥ पुण्यवंत ए ताहरे, भोग्य हशे ससनेह ॥ भ्रू० ॥ ससनेहा सांभल तुज आगल, वात कहुं अति मीठी ॥ पूर्ववैर तणी जगमांहे, कहु इ करणी दीठी ॥ पंचम खमें हुइ पंचवीशमी, ढाल सुणो नर नारी ॥ साहसिक नर संपति पामे, वत्सपरें सुविचारी ॥७॥ सर्वगाथा ॥ ७०९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे व्यंतरी ज्ञानथी, निजकन्या अवदात ॥ वत्सराज हरखें सुणे, अचरिजवाली वात ॥ १ ॥

॥ ढाल छवीशमी ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥ गिरि वैताढयनी ऊपरें, चमर चचा पुरी सार ॥ गधवाहगति नामें राजीयो, विद्याधर शिरदार ॥ १ ॥ कर्म न छूटे रे जीवडा, जे जे बध विचार ॥ नवि छूटे विण भोगव्यां, कीधा एह संसार ॥ क० ॥ २ ॥ नाम सुवेगा रे कामिनी, बीजी मदन वेगा जोय ॥ प्रीतम छदें रे चालती, रमणी रतिसम दोय ॥ क० ॥ ३ ॥ पहेली कूखें रे ऊपनी, रयणचूला वर नाम ॥ बीजी सोवनचूलिका, जाइ गुणमणिधाम ॥ क० ॥४॥ यौवन आवी रे अति भली, मोहन गुण मणिगेह ॥ मात पिता मनमां धरे, वरचिंता अतिरेह ॥ क० ॥ ५ ॥

॥ यत० ॥ जम्मतीए सोगो, वड्डतीए य वड्डए चिंता ॥ परणीयाए

दमो, जुवइ पिया डुरिकिउं निच्च ॥ १ ॥ निय घरसोसा परगे, हमंमणी कु लकलक कलिहुवण ॥ जेहि न जाया धूआ, ते सुहिया जीवलोगम्मि ॥ ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ एक दिन एक मुनि आविया, विद्याधर गुणवंत ॥ प्रणमी पूछे रे नावचुं, मुज नाखो नगवंत ॥ क० ॥ ६ ॥ मुज पुत्री वर कोण हशे, कहे ज्ञानी अणगार ॥ होशे नर्ता रे वेहुनो, श्रीवत्सराज कु मार ॥ क० ॥ ७ ॥ नूचर वरशे रे एहने, पण नहिं तहारी रे पास ॥ नर पति कहे कोण एहनुं, कारण स्वामी प्रकाश ॥ क० ॥ ८ ॥ मुनि कहे सुण नृप ताहरु, छे एक मासनु आय ॥ फरि पूछे रे विवाहनो, हवे कहो कोण उपाय ॥ क० ॥ ए ॥ मुनि कहे नगिनी रे ताहरी, नूचर शूर नरिंद ॥ परणी प्रेमें रे तेहशुं, अधिकी प्रीति अमंद ॥ क० ॥ १० ॥ अन्य वली हुइ तेहने, रमणी रूपनिधान ॥ चित्त हरी लीयुं रायनुं, तुज नगिनी अपमान ॥ क० ॥ ११ ॥ रंगें रमे राय तेहशुं, अहोनिश मंदिरमांय ॥ तूट पडी तुज बहेनशुं, आव्युं उदे अंतराय ॥ क० ॥ १२ ॥ दिलमें शो क्य साले घणुं, शोक्य समुं नहीं डुःख ॥ अहोनिश रहे उंल ताकती, नावे निंद ने नूख ॥ क० ॥ १३ ॥ आरति मनमां रे अति घणी, मुज उपर नहीं मान ॥ तप नवि कीधुं रे पूरवें, तो पामी अपमान ॥ क० ॥ १४ ॥ हवे तप करुं कांइ आवते, नवें पामुं कांइ सुख ॥ एम जाणी तप आद युं, काइक शोक्यने डुःख ॥ क० ॥ १५ ॥ यत ॥ आर्त्ता देवान्नमस्यंति, तप कुर्वंति रोगिण ॥ निर्धना विनय यांति, वृद्धा नारी पतिव्रता ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ तप करी काल कस्यो तेणें, व्यंतरी जातिनी देव ॥ अटवीमांहे रे कंपनी, करे बहु देवी रे सेव ॥ क० ॥ १६ ॥ शूर नरिंदनी गेहिनी, तेहनी शोक्य सुजाण ॥ दानादिक गुण आदरी, दत्त घरे गुणखाणि ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ थइ श्रीदत्ता रे नामथी, कन्या गुणह नंमार ॥ पूरव वैरथी व्यंत री, दे तस डुःख अपार ॥ क० ॥ १८ ॥ यामिक नरने रे नित्य हणे, छे अद्यापि ए रीति ॥ देवीपासें ए मूकजो, कन्या धरि मन प्रीति ॥ क० ॥ ॥ १ए ॥ रहेतां पासें रे तेहने, आवशे वत्सराज ॥ नरक्षय करती रे वा रशे, वलशे सूधी रे लाज ॥ क० ॥ २० ॥ श्रीदत्ताने रे परणशे, तिहांथी निसरी तेह ॥ देवीस्थानकें आवशे, थाशे कारज एह ॥ क० ॥ २१ ॥ एम कही मुनि उत्पत्या, खेचरनाथें रे पग ॥ कन्या आणी मूकी इहां,

मुऊ पासें मन रग ॥ क० ॥ २२ ॥ विद्याधर तप आदरी, मासमांहे सु खकार ॥ मरि थयो व्यतर अधिपति, पाम्यो सुख श्रीकार ॥ क० ॥ २३ ॥ ज्ञानें जाणी रे मुऊने, हयरूपें यक्ष एक ॥ किंकर मुऊने रे आपियो, वाक करिय विवेक ॥ क० ॥ २४ ॥ ओपधियुगल पल्यक ए, कामित दायक दीध ॥ ते में सघलु रे तुऊ दीयु, वाछित कारज सिद्ध ॥ क० ॥ २५ ॥ पं चम खर्मे छवीशमी, ढाल कही ए उदार ॥ रामविजय कहे हेपनां, फल कहुवा निर्धार ॥ क० ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥ ७३६ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥ ४१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वात कही वत्सराजने, देवीयें मामी सर्व ॥ परणावी दोय कन्यका, मूकी मननो गर्व ॥ १ ॥ पुण्यपसायें सवि मिली, सपद नारी सार ॥ सुख विलसें ससारना, श्रीवत्सराज कुमार ॥ २ ॥ एक दिन रगविलासमां, रमतां नारी साथ ॥ प्रेम सहित पूछे प्रिया, कहो अमने प्राणनाथ ॥ ३ ॥ किम इहां कणे थयु आववु, तव कुमरें निज वात ॥ करी प्रतिज्ञानी तिहां, सुणि हरखी ते धात ॥ ४ ॥ नारीयें कह्युं देवीने, जाणि प्रतिज्ञा तास ॥ शीख दीधी वत्सराजने, आवण निज आवास ॥ ५ ॥

॥ ढाल सत्त्यावीशमी ॥

॥ जीहो जाण्युं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥ जीहो विरहो अणसह ती थकी, जीहो पण दियो देवी आदेश ॥ जीहो प्रियासहित वत्सरा जने, जीहो आवजो वली इण देश ॥ १ ॥ सुगुण नर, तुमशुं प्रीति अपार ॥ सुगुण नर, तुम्हें कीधो उपकार ॥ सु० ॥ मत मेलो विसार ॥ सु० ॥ धन्य जीव्युं तुम्ह सार ॥ ए आकणी ॥ जीहो बेसी पल्यंकने चालियां, जीहो नभ मारग पुण्यवत ॥ जीहो चाल्ने विमान तणी परें, जीहो आव्यां तेह तुरंत ॥ सु० ॥ २ ॥ जीहो श्रीवत्साने मदिरें, जीहो आव्यां वही आकाश, जीहो कर्ी प्रभातसमे तिस्यें ॥ जीहो श्रीवत्सा सुविलास ॥ सु० ॥ ३ ॥ जीहो देखी तुरंग पल्यंकने, जीहो अति विस्मित थइ बाल ॥ जीहो केणें आण्यो पर्यंक ए, जीहो हय पहे केम ए ढाल ॥ सु० ॥ ४ ॥ जीहो जोवे नजरें निहालीने, जीहो दीठो तव निज कत ॥ जीहो दोय नारीशुं क्रीडतो, जीहो शय्या गत गुणवत ॥ सु० ॥ ५ ॥ जीहो जइ कह्युं जनकनी आगलें, जीहो

पति ऊपर आवास ॥ जीहो आव्यो बे इहां माहरो, जीहो उपन्यो सत्रम तास ॥ सु० ॥ ६ ॥ शय्या तुरग तणी कही, जीहो वात सकल समजा इ ॥ जीहो हर्ष धरीने आवियो, जीहो सप्तम नूमीयें धाइ ॥ सु० ॥ ७ ॥ जीहो आव्यो जाणी शेठने, जीहो उठ्यो ताम कुमार ॥ जीहो आदरमान देई घणु, जीहो नांख्यो निज अधिकार ॥ सु० ॥ ८ ॥ जीहो चरित्र सुणी विस्मित थयो, जीहो नक्ति करे बहु नाव ॥ जीहो तेदिन राख्या मदिरें, जीहो उत्तम जास स्वनाव ॥सु०॥९॥ जीहो बीजे दिन लेइ आज्ञा, जीहो त्रिहु नारी सघात ॥ जीहो शय्या उपर बेसीने, जीहो चाल्या थये प्रनात ॥ सु०॥ १० ॥ जीहो ततक्षणमा ते आविया, जीहो निज नयरें ननचार ॥ जीहो मदिर आव्या आपणे, जीहो उतरीयां ततकाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ जीहो चिहु जण सूता सेजमा, जीहो आवी घर एकांत ॥ जीहो धारिणी विमला देखीने, जीहो चिंते कुण ए संत ॥ सु० ॥ १२ ॥ जीहो ए शय्या नहि आपणी, जीहो काइक ए विन्नाण ॥ जीहो चिंती पट परहो कर्यो, जीहो दीठो कुमर सुजाण ॥ सु० ॥ १३ ॥ जीहो त्रण तरुणी सार्थे तिहां, जीहो निज कुवर निरखंत ॥ जीहो रोम रोम तन उल्लस्युं, जीहो हेडु हेजें हसत ॥ सु० ॥ १४ ॥ जीहो लज्जाती पाछी वली, जीहो हलुवे हलुवे ताम ॥ जीहो इण अवसरें ते जागीयो, जीहो कुवर गुणनु गाम ॥ सु० ॥ १५ ॥ जीहो माय मासीने पाउले, जीहो दोडी करे प्रणाम ॥ जीहो पूछे विमला धारिणी, जीहो कुण कुण कीधां काम ॥ सु० ॥ १६ ॥ जीहो वात करे माय आगलें, जीहो मांमी वत्स कुमार ॥ जीहो जूवो पुण्याई पुत्रनी, जीहो पामी हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ॥ १७ ॥ जीहो कामितदायी पल्यंकथी, जीहो लेइ उत्तरीय अमूल्य ॥ जीहो नरपति पासें आवीयो, जीहो वत्सकुमर अनुकूल ॥ सु० ॥ ॥ १८ ॥ जीहो राजेश्वर पूछे तदा, जीहो क्षेम कुशलनी वात ॥ जीहो वत्स नलें तु आवियो, जीहो पाम्या अमें सुख शात ॥ सु० ॥ १९ ॥ जीहो जइ मासी चरणे नमी, जीहो करे उत्तरीयनी नेट ॥ जीहो कमलश्री कहे तुऊ विना, जीहो वत्स कोण दीये मुज नेट ॥ सु० ॥ २० ॥ जीहो चिरं जीव तु वालुआ, जीहो मुज कामित दातार ॥ जीहो मासीयें सन्मान्यो घणु, जीहो राजायें पण तेणि वार ॥ सु० ॥ २१ ॥

जीहो रायें पूछयु वत्सने, जीहो वत्स किहां लाध्यु एह ॥ जीहो व्रत वीतक तणी, जीहो पर्यंक हय विण तेह ॥ सु० ॥ ११ ॥ जीहो देवीयें दीधु वस्त्र ए, जीहो सुणी हरख्या राजान ॥ जी० ॥ जीहो धन्य धन्य सहु को कहे, जीहो वलीयो सुगुण निधान ॥ सु० ॥ १३ ॥ जीहो सुखें स माधें रहे तिहा, जीहो विलसे नव नव नोग ॥ जीहो निजनारीशुं रंगमां, जीहो सरिखो मल्यो सयोग ॥ सु० ॥ १४ ॥ जीहो पंचम खर्में सत्तावी शमी, जीहो ढाल कही मनरग ॥ जीहो रामविजय कहे पुण्यथी, जीहो लहियें सुख अनग ॥ सु०॥ १५ ॥ सर्व गाथा ॥ ७६६ ॥ श्लोक ॥४१॥

॥ दोहा ॥

॥ एक दिन कमलश्री तणे, अगें उपन्यो व्याधि ॥ राय उपाय करा घणा, पण न टली असमाधि ॥ १ ॥ राणीडु खे डु खीयो, राय करे अ ति शोर ॥ नयणथकी आसू फरे, सबलु मोहनु जोर ॥ २ ॥ कला घणी नृप केलवी, लेखे न आवी काय ॥ राणी परलोकें गइ, विरुइ कर्म बलाय ॥ ३ ॥ यत ॥ सा नत्थि कला तं न, त्थि उसह तं न किंपि विन्नाण ॥ जे सा धरिज्जइ काया, खज्जति कालसप्पेण ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ तास वियोगें राजवी, पड्यो शोकने पूर ॥ वत्सराज आवी कहे, शोक निवारो दूर ॥ ४ ॥ इण जग चिर नवि को रह्यो, सहु अनित्य ससार ॥ तन धन यौवन कारिमो, रमणी ऋद्धि परिवार ॥ ५ ॥ यत ॥ कुसग्गे जह उंस बिंडुए, थोव चिट्ठइ लबमाणए ॥ एव मणुआण जीविय, समय गोयम मा पमायए ॥ २ ॥

॥ ढाल अठ्ठावीशमी ॥

॥ बही नावन मन धरो ॥ ए देशी ॥ वत्स कहे नृप सांनलो, एह अनित्यपणु ससारें रे ॥ छु धारे रे, अस्थिरने स्थिर करी चित्तमां ए ॥ १ ॥ नाव अनित्य ससारना, जलबिंडु विद्युत् सम जाणो रे ॥ शुं माणो रे, वर्ण गध रस फरसमां ए ॥ २ ॥ उत्पाद व्यय ने ध्रुव तणी, सवि इव्यें त्रिजगी नांखी रे ॥ ए राखी रे, न रहे स्थिति ससारनी ए ॥३॥ जिनवर चक्री जे हुवा, ते पण इहां स्थिर नवि रहिया रे ॥ शुं मोहि या रे, फूरे तु परनावने ए ॥ ४ ॥ वार अनत मल्यो सही, ते सबंधमां शुं राचे रे ॥ वली नाचे रे, तेहने उदें नट परें ए ॥ ५ ॥ चपल ए लही

आवखु, जे धर्ममांहे सीदाय रे ॥ न कहाय रे, ते शापुरुप शिरो मणि ए ॥ ६ ॥ जिन अगदकारें कह्यु, शोक रोग निवारणहारु रे ॥ सारु रे, धर्मोपध करवु बुधें ए ॥ ७ ॥ यत ॥ उमिति पमिता कुर्यु, अश्रुपात च मध्यमा ॥ अधमाश्च शिरोघातं, शोकें धर्मविवेकिन ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ इत्यादिक वचनामृतें, वत्सराजें नृप समजाव्यो रे ॥ ए नाव्यो रे, मन उपदेश सोहामणो ए ॥ ८ ॥ नारीशोक निवारियो, वत्सराज वचनथी वलीयो रे ॥ वलीयो रे, निज आतम तेणे कस्यो ए ॥ ए ॥ सुखमां वाहे कालने, वत्सराज सबल सोनागी रे ॥ रागी रे, त्यागी नोगी अति घणो ए ॥ १० ॥ एक दिवस वत्स नारीशु, मंदिरमाहि एम विमासे रे ॥ नासे रे, सुणो सुदरी सोहामणी ए ॥ ११ ॥ नोजनने नृप तेडीयें,ए प्रीतिनु लक्षण लहीयें रे ॥ कहीयें रे, नीतिशास्त्रमांहे एहवु ए ॥ १२ ॥ यडुक्त ॥ ददाति प्रतिगृह्णाति, गुह्यमाख्याति पृच्छति ॥ नुक्ते नोजयते चैव, पड्विध प्रीतिलक्षणम् ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ नृप आपण अनुरागीयें, तेडीजें ए वडनागी रे ॥ जागी रे, नाग्यदशा ए आपणी ए ॥ १३ ॥ नारी कहे सुण नाहला, ए वात विचारी कीजें रे ॥ न लीजें रे, नृपने निज आवासमा ए ॥ १४ ॥ आश इहारी कीजियें, पण नृप आसंग न करीयें रे ॥ तो वरियें रे, सहेजें सुख संसारमा ए ॥ १५ ॥ विप दाढे होय सापने, विप खलनी जीनें लहीयें रे ॥ कहियें रे, तेम दृष्टि विप रायनें ए ॥ १६ ॥ यत ॥ वैरिनारीनरेंडाणा, नागनीचनियोगिनाम् ॥ नखीनां च न विश्वास, कर्त्तव्य शुनकाङ्क्षिणा ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ ते मार्टे तुमने कहु, नृपघर नोजन मूकीजें रे ॥ चूकीजें रे, नवि एणि वातें कथजी ए ॥ १७ ॥ वत्स कहे सुणो वालही, एणी वातें गौरव न वधे रे ॥ अवधें रे, तेह्या विण चाले नहीं ए ॥ १८ ॥ आग्रह जाणी कंतनो, वलती ते वोली नारी रे ॥ सारी रे, वात सुणो तुम्हें वालहा ए ॥१९॥ अमने मत देखाडजो, पढी जेम जाणो तेम करजो रे ॥ वरजो रे, स्वामी अमारा लाहीने ए ॥ २० ॥ पंचम खम्ड अडविशमी, सुणो ढाल कही अति सारी रे ॥ हितकारी रे,वयण हैयामा राखियें ए ॥२१॥ सर्वगाथा॥८९२॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कामिनीयें वास्यो घणु, पण न रह्यो वत्सराज ॥ नोजनने नृप नो

तह्यो, वारू वयण समाज ॥ १ ॥ स्वामी पधारो आंगणे, करो मुऊ गेह ॥ अरज अमारी चित्त धरो, जो मुऊ ऊपर नेह ॥ २ ॥ राजन तुमथु सदा, नहि अंतर वत्सराज ॥ माटे भोजननो कियो, अव सर छे घर आज ॥ ३ ॥ वत्सराज कहे साहिवा, ते शुन अवसर जाणि ॥ जिण दिन राज पधारशो, मुऊ आगणे गुणखाणि ॥ ४ ॥ कृपा करीने हा नणो, मुऊ मन हर्षित होय ॥ हवहूती नृप मानीयु, निसुणी हरख्यो सोय ॥ ५ ॥

॥ ढालडंगणत्रीशमी ॥

॥ गेंडुडानी देशी ॥ घरे आवी सवी वात प्रकाशी, मनमा धरी उ त्साह ॥ अलवेलो रंगीलो नाह, अलवेलो हठीलो नाह, अलवेलो छबीलो नाह ॥ अलवेलो० ॥ ए आकणी ॥१॥ वाछु अमारु न करे वहालो, मन मा सुखरी चाह ॥ अलवेलो०॥ २ ॥ नामिनीथु नुवनोपरिनूमें, लाग्यो क्रीडामाहि ॥ अल० ॥ ३ ॥ रमणी सार्थे रसनी वातें, तिहा वेला बहु वही जाय ॥ अल० ॥ ४ ॥ राजन चिंते हजी थु न आव्यो, तेडण ए वत्स एण ठाय ॥ अल० ॥ ५ ॥ नृप चिंते चित्तमा एहने घर, शी साम ग्री थाय ॥ अ०॥ ६ ॥ जोवा कारण चर एक मूक्यो, पोतानो तेणें राय ॥ अ० ॥ ७ ॥ चर जोवे जइ घेर निहाली, नवि देखे रसवती कांइ ॥ अल० ॥ ८ ॥ परकाशे नृपतिनी आगें, सेवक पाछो आइ ॥ अ० ॥ ९ ॥ पुनरपि बीजो नर तिहां आवी, जुवे सघलाइ तास ॥ अ० ॥ १० ॥ कहे नृपने घर धुम न दीसे, शी नोजननी आश ॥ अ० ॥ ११ ॥ चिंते नृप जुठ कीध ठगाइ, मनमांहि एम वदास ॥ अ० ॥ १२ ॥ तव ते नो जन अवसर जाणी, वत्स आव्यो सुविलास ॥ अ० ॥ १३ ॥ कहे राजेश्व रने कर जोडी, पाउधारो मुऊ आवास ॥ अ० ॥ १४ ॥ थाय हवे असुर नोजनने, वगोजी लील विलास ॥ अ० ॥ १५ ॥ नृप कहे शी हांसी मुऊ सार्थे, मामी सुगुण निवास ॥ अ० ॥ १६ ॥ विण सामग्री तेडे अ मने, ए तुऊने सावाश ॥ अ० ॥ १७ ॥ कोइ न मल्युं बीजु हांसीने, नांग्यो तुऊ विश्वास ॥ अ० ॥ १८ ॥ कहे वत्स तु मुऊ साहिब तहारो, हु बु चरणनो दास ॥ अ० ॥ १९ ॥ तुम हांसी करतां इहां महारी, कुललज्जा जाय नासि ॥ अ० ॥ २० ॥ थु तुम रसवती केरु कारण,

आवो घरे उल्लास ॥ अ० ॥ २१ ॥ नृप कह्यो उत्साह धरीने, जे हुता निज पास ॥ अ० ॥ २२ ॥ आव्या सवि वत्सराजने मंदिर, जोवे नयणें तपास ॥ अ० ॥ २३ ॥ देखी मंमप अति रलीयालो, हैडे करेय विमास ॥अ०॥२४॥ नहि ए मानव माया दीसे,देवतणी सुप्रकाश ॥अ०॥२५॥ पंचमे उगणत्रीशमी ढालें,विरुउ मोहविलास ॥अ०॥२६॥स०॥ए२३॥४७॥

॥ दोहा ॥

॥ यथायोग्य मांमयां घणा, आसन उलाउल ॥ नृप हरख्यो मन मां घणु, देखी ठाकम ठोल ॥ १ ॥ किम एणे एती वारमा, सवि कीधो सामान ॥ ए काइ जोवा सारिखु, मन चिंते राजान ॥ २ ॥ नृप आवी वेग सहू, मांमया सोवन थाल ॥ पीरसे बहु प्रेमें करी, जल पक्वान्न रसाल ॥ ३ ॥ सखर सवादें सालणा, खाटा खारा सार ॥ रायता जोलें जला, मरचाला मनोहार ॥ ४ ॥ चाखी चाखी स्वादने, पाम्या परमानंद ॥ अहो अपूरव रसवती, करे प्रशंस नरिंद ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ नाग कुमर कहे रायजी ॥ ए देशी ॥ वत्स विचारे चित्तमां, उत्सव अति जारी ॥ विणु वनिता शोजे नही, ए रसवती सारी ॥ १ ॥ मोहन गारी मानिनी, विणु तेह अलूणु ॥ जोजन ए शोजे नहिं, दीसे ठे ऊणु ॥ २ ॥ चिंतवी मंदिर ऊपरें, चढीयो चोवारी ॥ आवतो देखी नाहने, ऊजी थइ नारी ॥ ३ ॥ प्राणजीवन पाउ धारीयें,धरा पावन कीजें ॥ नयण सलूणा नाहला, काइ हुकम करीजें ॥ ४ ॥ वहाली हो वेगें आवीने, नृप गौरव सारो ॥ तुम विण ए शोजे नहिं, घर आंगण म्हारो ॥ ५ ॥ ते कुलवती चिंतवे, स्त्रीने गुरु स्वामी ॥ वयण कहे जे कंतजी, करवु शिर नामी ॥ ६ ॥ यडुक्त ॥ गुरुरग्निर्द्विजातीनां, वर्णानां ब्राह्मणोगुरु ॥ पति रेव गुरु स्त्रीणा, सर्वस्याभ्यागतो गुरु ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ निजपियु आग्रह जाणीने, उठी अलवेली ॥ आणा हो आपणा नाथनी, नवि जाये ठेली ॥ ७ ॥ पण परिणामें रूडु नहिं, शु कीजें हो वहेनी ॥ आपणने नि रखी करी, दृष्टि चलशे हो एहनी ॥ ८ ॥ मन पाखे ते मानिनी, शृंगार बनावे ॥ अनुपम रूप बनी रमा, जस उपमा नावे ॥ ९ ॥ रम ऊम कर ती रंगशु, पीरसणने हो आवी ॥ जामिनी देखी नृपनी, गति जाति

सुलावी ॥ १० ॥ अहो अहो रूपनी उरडी, नर योवन माती ॥ तुर थयो देखीने, रमणी रग राती ॥ ११ ॥ धन्य जीवित विलसे ए सार्थे ॥ मुज घरे एहवी एके नहि, शु कशु जगनार्थे ॥ १२ भोजन जहेर समु थयु,तरुणीरग लाग्यो ॥ उताख्यो नवि उतरे, ए भाग्यो ॥ १३ ॥ कामराग सरिखो नहि, जग कोई अटारो ॥ पेसतां से नहि, ए राग कटारो ॥ १४ ॥ भोजन करी नृप कहीयो, वत्सें बहु सत्काख्यो ॥ काम वध्यो मन जेहने,ते न रहे वाख्यो ॥१५॥ मदिर आव्यो नृपति, महिला मन ध्यातो ॥ आहट दोहटमा पड्यो, न गमे कांइ वातो ॥ १६ ॥ मत्रीश्वर बोलावीने, वात मननी हो दाखी ॥ तुम्हें मुज कहमी राजमां, सुख उखना सरिखी ॥ १७ ॥ मत्रीश्वर पण तेहवा, नृप सरिखा हो विरुआ ॥ बाहिर मीठा भीतरें, कडुआ विषतरुआ ॥ १८ ॥ मत्री आलोची मनमा, माठी मति रीजे ॥ राजन ए वत्स जीवतां, तुम काम न सीजे ॥१९॥ मारें कोइ उपायथी, वत्सराजने हणीयें ॥ कारिज साधन कारणें, पुण्य पाप न गणीयें ॥ २० ॥ हा हा एम करतां थकां, जग नीच न लाजे ॥ प्राण हणे खल पारकां, पोताने काजें ॥ २१ ॥ वहेला थाउ ए वत्सने, करी कोइ उपाय ॥ पहोंचाडो यममदिरें, जेम मने सुख थाय ॥ २२ ॥ रायें हुकम एहवो कख्यो, विषयारस वाह्ये ॥ काम कुमाणसनुं कशु, नरपति ए माह्ये ॥ २३ ॥ शो अनरथ नवि निपजे,विषयार्थी हो वांको ॥ मति मूजावे हो नर तणी,कुण राय ने रांको ॥ २४॥ पंचम खर्में त्रीशमी,ढाल रामें हो भांखी ॥ विषयथकी जय नवि लहे, सुणो साजन साखी ॥२५॥ सर्व गाथा ॥९५३॥ श्लोक तथा गाथा ॥४८॥

॥ दोहा ॥

॥ मत्री मली विचारीयुं, सिहनामा सामत ॥ छे जोरावर आजने, समयें अति बलवत ॥ १ ॥ तस थानक बेसारीयें,सभामांहे वत्सराज ॥ रूठयो हणशे एहने, सिह सरेशे काज ॥ २ ॥ सभा छुडावी चोंपशुं,बेठो नृप ततकाल ॥ वत्सराज आव्यो तदा, नृप नमवा उजमाल ॥ ३ ॥ बेसाख्यो सिहस्थानकें, मत्री मली मद्त ॥ वत्सराज निर्भय थको, बेठो धीरजवत ॥४॥ सिह तदा आव्यो तिहां,बेठो वत्सने देखि ॥ हैयडे कोपें कलकल्यो, जोइ रह्यो अनिमेष ॥ ५ ॥ सभामांहि बोल्यो नहीं, आणी

नृप आशंक ॥ नूप सना सरिखा सवे, कुण राजा कुण रंक ॥ ६ ॥ सना विसर्जी ततक्षणे, नृप मनमांहि चूक ॥ वत्सराजने मारवो, जाणे आज अचूक ॥७॥ वत्सराज मंदिर नणी, चाल्यो निर्नय कंठ ॥ मंत्री मंत्री वकारियो, सिंह तणी तस पूठ ॥ ७ ॥ सिंह नाम तुमचुं सही, पण माटी पण शीयाल ॥ स्थानक वेठो तुम तणे, वत्सराज ए बाल ॥ ए ॥ जीवता मृत सारिखा, तुम जेहवा बलवंत ॥ स्थानक खोवे आपणुं,ते कांहिं शुं जीवंत ॥ ॥ १० ॥ यडुक्त ॥ मा जीयाद्य परा वज्ञा,डु खदग्धोपि जीवति ॥ तस्याजननीरेवास्तु, जननीक्लेशकारिण ॥ १ ॥ नाकनो लोन्न करेह, सीस सलोनो रखिउ ॥ तिण माणस जीवेह, कलिमा काढु कीजसी ॥ २ ॥ पादाहत यडुछाय, मूर्ध्नानमधिमोहति ॥ स्वस्था देवापमानेपि, देहिनस्तद्वर रज ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ वासुपूज्य जिन वारमा जी ॥ ए देशी ॥ वात सुणी क्रोधें चढयो जी, सिंह सबल विकराल ॥ निज मेलापक लेइ तदा, मलीयो वत्सने ततकाल ॥ १ ॥ होजी था सन्मुख शीयालीयाजी ॥ नहिं महेलुं तुऊ आज ॥ आसन बेसी माहरें, तें उतारी मुऊ लाज ॥ हो० ॥ २ ॥ केम रूठयो निज जीवनें जी,शुं न सुण्युं मुऊ नाम ॥ एम अवहेला तें करी, कोइ न करे ते कीधुं काम ॥ हो० ॥ ३ ॥ बल पाठो बल ताहरुं जी, जोइयें रणमेदान ॥ वत्स वळ्यो वीरसेननो जायो, सुणी योध युवान ॥ हो० ॥४॥ नीम परें बेहू नड्या जी, अवसर लही वत्सराज ॥ नाख्यो उठाली सिंहने,मृगपति परें करतो अवाज ॥ हो० ॥ ५ ॥ पहोंचाड्यो यममंदिरें जी, जोतामा तेणि वार ॥ सुनट सवे नासी गया, हुउं सिंहतणो संहार ॥ हो० ॥ ६ ॥ परनें चिंतवीयें जिस्युं जी, तेहवुं आवे आप ॥ परठल ताके पापीया ते, पामे एम संताप ॥ हो० ॥ ७ ॥ सिंहसेना नाठी तदा जी, न खमाणो तस ताप ॥ नय पामी मुखे उच्चरे, कोइ राखो माय ने बाप ॥ हो० ॥ ७ ॥ नृपने शरणे आवीयो जी, राखो तुमें नूनाथ ॥ अम अशरणने उद्धरो, नासे एम सिंहनो साथ ॥ हो० ॥ए॥ वत्स आव्यो निजमंदिरें जी, वात कही मन मेली ॥ फल पाम्यो एह सिंहनो,जो कीधी मुऊ अवहेल ॥हो०॥१०॥ कहे विद्याधर वशनी जी,नारी

सुगुण निधान ॥ अम विद्या परनावथी, तुम्हे उताखु तस मान ॥ ११ ॥ तुमें खोटु कखु साहिवा जी, अमने देखाडी दृष्टि ॥ कामवशें राजियो, करशे तुमने ए अनिष्ट ॥ हो० ॥ १२ ॥ पण सामी मत बीहजो जी, किसिय न करशो चित ॥ अहि वश करवो सोहिलो, पण राय न होवे मित्त ॥ हो० ॥ १३ ॥ यडुक्त ॥ काके शौच द्यूतकारेषु सत्यं,सर्पे क्षांति स्त्रीषु कामोपशांति ॥ क्लीवे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिंता, राजा मित्रं केन दृष्ट श्रुतं वा ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ हवे एक दिन ते मंत्रीशुं जी, राय करे आलोच ॥ काज न सीऊ्यु आपणु, सामो उपजाव्यो शोच ॥ हो० ॥ १४ ॥ सिह गयो मुऊ काजनो जी, रह्यो वैरी वत्सराज ॥ कहो मंत्री ए शु थयु, न थयु काइ चिंतित काज ॥ हो० ॥ १५ ॥ पण तुं मित्र जो माहरे जी, नहिं मुऊ डर्जन काय ॥ जेहने मित्र महोदधि, तुल ना तस लहेरी थाय ॥ हो० ॥ १६ ॥ सचिव कहे वाघण तणु जी, दूध मगावो स्वामि ॥ मानधनी ए मानशे, सहेजें सरशे ए काम ॥ हो० ॥ १७ ॥ दरवारे वत्स आवीयो जी, कृत्य कह्युं नृप एह ॥ करी प्रणाम पाछो वल्यो, आव्यो चिंतातुर गेह ॥ हो० ॥ १८ ॥ नारी कहे तुमने दीयो जी, वाघण डग्धादेश ॥ चित्तमा एहनी शोचना, शी शोचो गे प्राणेश ॥ हो० ॥ १९ ॥ कुमर कहे तमें केम लही जी, घर बेठां एह वात ॥ स्वामी अमें अंतरिक्ष थइ, नित्य आवु तुमारी सघात ॥ हो० ॥ २० ॥ स्वामी अम्हें जाण्युं हतु जी, करशे ए तुमशु कूड ॥ पण निश्चय पियु जाणजो, पडशे एहने मुख धूड ॥ हो० ॥ २१ ॥ कहेण सुणो अमचु तुमें जी, दैवत तुरगारूढ ॥ अटवीमां जाउ तुमें, ठे एक देवी तिहां गूढ ॥ हो० ॥ २२ ॥ माता अमारी देवता जी, तेहनी सखी ते देवी ॥ तुरगथी उलखशे सही, करशे तुमची बहु सेव ॥ हो० ॥ २३ ॥ कहेजो कारिज तेहने जी, धाशे वाघण रूप ॥ तुम सार्थे सही आवशे, देवीनां अकल स्वरूप ॥ हो० ॥ २४ ॥ आणी रायने सोंपजो जी, वधशे तुमारी लाज ॥ चढी तुरंगें चाल्यो वही, रमणी वयणें वत्सराज ॥ हो० ॥ २५ ॥ अटवीमांहे मूकीयो जी, जिहां देवीनुं गाम ॥ हय अहिनाणें उलखी, कीधु तस चिंतित काम ॥ हो० ॥ २६ ॥ वाघण थइ सार्थे चली जी, आवी नयरीमऊार ॥ कान साहीने लावीयो

जी, तेहने वत्स नृपदरबार ॥ हो० ॥ २७ ॥ व्यंतरी वाघण ऊबली जी, देइ दोट तेवार ॥ कुमतिदायक मत्री तणो, कीधो ततक्षण सहार ॥ हो० ॥ २७ ॥ नृप विहीनो मनमां घणुं जी, हां हां हां वत्सराज ॥ कां मुजने मारे इहा, नहि म्हारे दूधनु काज ॥ हो० ॥ २ए ॥ दीन वयण सुणी रायनां जी, वाघण कानें साहि ॥ निजघरें लाव्यो तेहनी, करे कामिनी नक्ति उत्साहि ॥ हो० ॥ ३० ॥ हर्षित थइ निजस्थानकें जी, व्यतरी गइ ततकाल ॥ पंचम खम एकत्रीशमी, कहि काम उपर ए ढाल ॥ हो० ॥ ३१ ॥ सर्वगाथा ॥ एए४ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥५२॥

॥ दोहा ॥

॥ नरपति मनमा चितवे, नय सबलो गयो नांजि ॥ साहसथी सवि सपजे, पण नावीजें वाज ॥ १ ॥ पुनरपि मत्रीशु मली, नरपति करे विचार ॥ तेडी कहे वत्सराजने, जल्पतु लावो वारि ॥ २ ॥ अगरोग महा रो टले, वधे तेजनु पूर ॥ तुज विण कुण आणे अवर, एक तुज मुख पर नूर ॥ ३ ॥ कहे ते पाणी किहा अछे, वध्याटवीमजार ॥ वेहु पर्वत विच कूप एक, तिहां जल्पतु वारि ॥ ४ ॥ करे सर्वदा ते गिरि, सगम अपगम नाव ॥ मीलन उन्मीलनपणे, जिम ते नयण स्वनाव ॥ ५ ॥ वच्चें तक जोइ पेसवु, शीघ्र आणवु वारि ॥ डुष्कर पण अगीकस्यु कुमरें काम उदार ॥ ६ ॥ घर आवी नारी प्रत्यें, वात कही चित्त लाय ॥ ते कहे वात ए सहेल छे, चिता म करो काय ॥ ७ ॥

॥ ढाल वत्रीशमी ॥

॥ प्राणी गिरिवरशु मन लावो ॥ ए देशी ॥ अश्व आरोही तिहां पीयु जाउं, शकुनिकारूपें सारी ॥ छे एक देवी वहेन अमारी, वाछितनी दातारी रे ॥ १ ॥ विरुई, विषयदशा जग दीठी ॥ करे अकारिज ए घट प्रकटी, काम अग्नि अगीठी रे ॥ विरुई० ॥ ए आंकणी ॥ अश्व चढी प होतो तिण गमें, श्री वत्सराज कुमार ॥ शकुनिका जाणी सखीनो व छ्यन, पूछे सुख समाचार रे ॥ विरुई० ॥ २ ॥ कुमर कह्याथी तुव न रीने, दीधु ढील न कीधी ॥ पाछो वलियो जल लेईने, वाछित कारिज सिद्धि रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ निजपुर आवी नृपने आप्यु, देवतणे परनावें ॥ सहु साजलता बोलवा लाग्यु, तुवमांहि सनावें रे ॥ वि० ॥ ४ ॥

कहे राजन् तुऊनें तुऊ मन्त्री, कुमति तणो दातार ॥ वेडुमांहे कहे नक्षण, करुं एम बोले वारि रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ नीरवचन निसुणी पर्षद, विस्मय पामी चिंते ॥ पाणी ए केम बोले रे नाई, ए तो कांइ विपरीत रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ म्लान थयो राजा एम चिंते, काज सिज्युं महारु ॥ काइक वदन विकासी जंपे, धन्य वत्स धीरज तहारु रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ घेर विसर्जि वत्सने विमासे, मन्त्री साथें मलीने ॥ अहो असाध्य नहि कांइ एहने, त्रुवनमा नाग्यवलीने रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ मन्त्री चार मल्या नृप जेहवा, परघर नाजण लीणा ॥ कूड कपट छल छद्में हो नरिया, धिक् मानव जग हीणा रे ॥ वि० ॥ ए ॥ कहे राजन् मन च्छु रह्या मूकी, जुवो अमची बुद्धि केही ॥ एक अछे ए केडे न कोइ, रमणी तुमची एही रे ॥ वि० ॥ १० ॥ देवी श्रीकन्या विवाहनो, मिप करीने एक कीजें ॥ दक्षिण दिशि एक यमघर महोटु, तिहां वत्स पेसारीजें रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ यम निमन्त्रण करवा काजें, रायें वात व खाणी ॥ तुमें सबला मुऊ चिंताना कारक, सेवक गुणमणिखाणि ॥ वि० ॥ १२ ॥ रायें एक गर्त्ता निपजावी, दक्षिणदिशें अविचारी ॥ कामें अंध थयो धध न मांमे, काम कुगतिदातारी रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ अग्नि प्रजाली तिहां नृप आव्यो, सुनट सहू तेडाव्या ॥ वत्सनणी बोलाव्यो ते पण, चोंप धरीने आव्या रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ नाम लेइ सुनटोने नाखे, तुमें कहमी मुऊ खासा ॥ काम कर्युं जोइयें एक इहाकण, जो करो अमची आशा रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ फरमावो सहु कहे कर जोडी, यम तेडणने जावु ॥ श्रीदेवी विवाहनी उपरें, नृप कहे सुनटने चावुं रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ अग्निपूरित ए गर्त्तामार्गें, थइ यममंदिर जाय ॥ यमने निमन्त्रण जे करि आवे, तें मुऊ साचो सखाय रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ वात कह्ये सघला कहे स्वामी, ए अमथी नवि सीके ॥ जाणो तेहतुं डुष्कर बीजु, कारिज अमने दीजें रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ नृपें वत्सराजनी सहामु नाल्युं, स्वामी हुकम मुऊ कीजें ॥ तुम आणा फुलमालतणी परें, शिर उपर धारीजें रे ॥ वि० ॥ १ए ॥ जइ यमने तुमें नोतरी आवो, कीधु अंगीकार ॥ घर आवीने कामिनी आगल, मांमी कह्यो ए विचार रे॥ वि०॥२०॥ पंचम खंमें ढाल बत्रीशमी, धिक् धिक् विषय विकार ॥ राम कहे

जे विषयमां राता, ते नर मूढ गमार रे ॥वि०॥२१॥ सर्वगाथा॥१०२२॥५१॥

॥ दोहा ॥

॥ कामिनी कहे तव कंतने, शुं लीधुं ए काम ॥ ए नृप तुम केडें थयो, मारणने सुणो स्वामि ॥ १ ॥ ठगसाथे ठग थाइयें, धूतारे धूतार ॥ श्यो ख लने उपकार ए, सुगुणा कंत विचार ॥२॥ कहे वत्सराज खरु कह्यो, पण कीधु अंगीकार ॥ मिथ्या में थाये नहि, श्यो हवे एह विचार ॥ ३ ॥ यत ॥ जिह्वेकेवसतामुखे० ॥ अन्यच्च ॥ वयणे जणिय खग्ग, कग्ग क ज्जेण सधिय बाण ॥ सुंदरि मुछ न काउं, मूआ ते वयण चुक्कइया ॥ १ ॥ अलसाय ते णवि स, ज्जणेण जे अरकरा समुल्लविया ॥ ते पत्थरटंक किरि,य व नहु अन्नहा हुंति ॥ २ ॥ पूर्वदोहा ॥ ते माटें अंगीकर्युं, पा लेवु में सार ॥ वचनचूक जीव्या तणो, स्वाद किस्यो संसार ॥ ४ ॥ कहे कामिनी आधार एम, चिर जीवो महाराज ॥ एणें विराजो मालिये, उपकारी शिरताज ॥ ५ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ लाग्या तोडा तोड रे राज, लाघी नदी रे बनास ॥ ए देशी ॥ कहे कामिनी विद्याधरी राज, अलवेसर अम कंत ॥ सुख विलसो संसारना राज, शी मनमा धरो चिंत ॥१॥ साहिबो रे म्हारो, उपगारी शिरताज ॥ साहिबो रे म्हारो, गिरुउ गरीबनिवाज ॥ साहिबो रे म्हारो, मोजी वडो महाराज ॥ साहिबा रे जोवो, घणरो तमासो आज ॥ ए आंकणी ॥ किंक ररूपें यक्षने राज, कहे तेही एम वाणी ॥ कंतरूप धरी कारिमुं राज, जाउ नृपपासें सुजाण ॥ सा० ॥ २ ॥ जे कहे ते करजो तुम्हे राज, मत कहेजो नाकार ॥ साहिबरो पाणी रहे राज, वरतवु तेम निर्धार ॥ सा० ॥ ३ ॥ रूप धरी वत्सराजनुं राज, आव्यो नरपति पास ॥ हुक म करो थें राजवी राज, म्हाने सुगुण आवास ॥ सा० ॥ ४ ॥ जावो थें महारी वती राज, यमने करि मनोहार ॥ मासमांहे इहां लावजो राज, काइ कहा वारं वार ॥ सा० ॥ ५ ॥ लोक सहूको देखतां राज, अग्निमाहे प्रवेश ॥ कीधो सहु हा हा करे राज, धिक् धिक् राय आदेश ॥सा०॥६॥ गुणरयणें गाढो जर्यो राज, वत्स सरीसो कुमार ॥ नृप निंदय हुवो घणो राज, मार्यो ए निर्धार ॥ सा० ॥ ७ ॥ इण वातें रूडु नहि राज, आव्यो

कहे राजन् तुजनें तुज मत्री, कुमति तणो दातार ॥ बेडुमांहे कहे लक्ष्मण, करु एम बोले वारि रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ नीरवचन निसुणी पर्षद, विस्मय पामी चिते ॥ पाणी ए केम बोले रे नाई, ए तो विपरीत रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ म्लान थयो राजा एम चिते, काम सिज्युं महारु ॥ काइक वदन विकासी जपे, धन्य वत्स धीरज तहारु रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ घेर विसर्जि वत्सने विमासे, मत्री साथें मलीने ॥ अहो असाध्य नहिं कांइ एहने, जुवनमा जाग्यवलीने रे ॥ वि० ॥ ८ ॥ मत्री चार मल्या नृप जेहवा, परघर जाजण लीणा ॥ कूड कपट ठल ठद्मे हो जरिया, धिक् मानव जग हीणा रे ॥ वि० ॥ ९ ॥ कहे राजन् मन शुं रह्या मूजी, जुवो अमची बुद्धि केही ॥ एक अठे ए केडे न कोइ, रमणी तुमची एही रे ॥ वि० ॥ १० ॥ देवी श्रीकन्या विवाहनो, मिष करीने एक कीजें ॥ दक्षिण दिशि एक यमघर महोटु, तिहां वत्स पेसारीजें रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ यम निमत्रण करवा काजें, रायें वात व खाणी ॥ तुमें सबला मुज चिताना कारक, सेवक गुणमणिखाणि ॥ वि० ॥ १२ ॥ रायें एक गर्त्ता निपजावी, दक्षिणदिशें अविचारी ॥ कामें अध थयो धध न मारूे, काम कुगतिदातारी रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ अग्नि प्रजाली तिहां नृप आव्यो, सुजट सहू तेडाव्या ॥ वत्सजणी बोलाव्यो ते पण, चोंप धरीने आव्या रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ नाम लेइ सुजटोने जांखे, तुमें कदमी मुज खासा ॥ काम कसुं जोइयें एक इहांकण, जो करो अमची आशा रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ फरमावो सहु कहे कर जोडी, यम तेडणने जावु ॥ श्रीदेवी विवाहनी उपरें, नृप कहे सुजटने चावु रे ॥ वि० ॥ १६ ॥ अग्निपूरित ए गर्त्तामार्गें, थइ यममदिर जाय ॥ यम ने निमत्रण जे करि आवे, ते मुज साचो सखाय रे ॥ वि० ॥ १७ ॥ वात कह्ये सघला कहे स्वामी, ए अमथी नवि सीझे ॥ जाणो तेहवुं डुष्कर दीसु, कारिज अमने दीजें रे ॥ वि० ॥ १८ ॥ नृपें वत्सराजनी सहामु जाल्युं, स्वामी हुकम मुज कीजें ॥ तुम आणा फूलमालतणी परें, शिर ऊपर धारीजें रे ॥ वि० ॥ १९ ॥ जइ यमने तुमें नोतरी आवो, कीधु अंगीकार ॥ घर आवीने कामिनी आगल,मांमी कह्यो ए विचार रे॥ वि०॥२०॥ पंचम खंमें ढाल यत्रीशमी,धिक् धिक् विषय विकार ॥ राम कहे

व उपर आज ॥ तेडण मुजने मोकल्यो राज, पाउ धारो महाराज ॥ सा० ॥ २३ ॥ थइ हर्षित मुजने तेणे राज, अंग आजूपण दीध ॥ कहेवाडयु तुमने यमें राज, काज जलुं ए कीध ॥ सा० ॥ २४ ॥ तेडाव्या अमने तुमें राज, पण अमथी न अवाय ॥ इह हुकमथी माहरे राज, फुरसद क्षणनी न थाय ॥ सा० ॥ २५ ॥ ते माटे तुमें आववु राज, एक वार मिलणने काज ॥ मुज सार्थे ए मोकल्यो राज, निज दौवारिक आज ॥ सा० ॥ २६ ॥ देखी अनिमेष नयणने राज, रायें मान्युं सवि साच ॥ व्यंतरपति तव बोलीयो राज, रायप्रत्यें एम वाच ॥ सा० ॥ २७ ॥ दंमधरें फरमावियु राज, तुम सेवक मुज पास ॥ खासा होवे ते मूकजो राज, खबर देवाने उल्लास ॥ सा० ॥ २८ ॥ करशुं तेहनी चाकरी राज, अमथी थशे ते सार ॥ एम सुणी सेवक सहु राज, जावा थया हुशीयार ॥ सा० ॥ २९ ॥ कहे प्रति हार ते मोकलो राज, खासा जे होय तुम यार ॥ यमगृहपासें आवी या राज, राजन सहु परिवार ॥ सा० ॥ ३० ॥ पंचमखमें तेत्रीशमी राज, ढाल जणी सुविचार ॥ पाप तणां फल पामशे राज, हवे ते जो जो चार ॥ सा० ॥ ३१ ॥ सर्व गाथा ॥ १०५८ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ५६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वेत्री कहे राजन सुणो, विषमो अमचो स्वामि ॥ रीतें तिहांकण जाइयें, तो सीके सवि काम ॥ १ ॥ मानीताने मोकलो, पहेलां महारी साथ ॥ पढें राजा केडें प्रजा, एम सहु आवो साथ ॥ २ ॥ चार सचिव तव चिंतवे, पहेलां गमने इष्ट ॥ फल होवे चिंतित सही, जोजन लहियें मिष्ट ॥ ३ ॥ यत ॥ दाने याने शयने, व्याख्याने जोजने सजास्थाने ॥ क्रय विक्रयेऽतिथित्वे, राजकुले पूर्णफल आद्य ॥ १ ॥ शून्येऽरण्ये नवने, ग्रामे तोये जये च संग्रामे ॥ आरोहेप्यवरोहे, पुरस्सरेन्न पथि रात्रौ च ॥ २ ॥ पूर्व दोहा ॥ वेत्री पेंगे आगमा, सहुलोकनी साख ॥ पूठें पडीया चार ते, कहि नरपतिने जांख ॥ ४ ॥ पडतखेव हुवा जस्ममय, निज अजिलाप समेत ॥ परलोकें गया पापीया, पापतणे संकेत ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

॥ होरे लाल ॥ सरोवर पाणी चीखलो रे लाल ॥ ए देशी ॥ होरे लाल ॥ राजा पण रंगें कह्यो रे लाल, पतंगललित करे जाम ॥ हो० ॥

हो रायनो अंत ॥ काम कियो चांमालनो हो राज, न करे इस्यो कोइ प्रात ॥ सा० ॥ ८ ॥ शोच करे सहुको जना राज, नृप हर्षित हुओ ताम ॥ कहे मन्त्रीने आपरो हो राज, चढियो सिराडे काम ॥ सा० ॥ ए ॥ आणो हवे ते सुदरी राज, म करो विलंब लगार ॥ तब मंत्री कर जोडीने राज, कहे नरपति अवधार ॥ सा० ॥ १० ॥ सकल प्रजा सुख उपरें राज, रागरहित बे स्वामि ॥ जो तेडावशो ए कामिनी राज, तो वि णसशे काम ॥ सा० ॥ ११ ॥ सपद राग प्रजातणे राज, विण सपद स्यो राज ॥ राज विना रमणी किसी राज, सुण सुण गरिवनिवाज ॥ सा० ॥ १२ ॥ यत ॥ विनयेन नवति गुणवान्, गुणवति लोकोऽनुरज्यते नित्य म् ॥ अनुरक्तस्य सहाया, ससहायो युज्यतें लक्ष्म्या ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ ते माटें तुमने कह्या राज, पडखो तुमें एक मास ॥ अति उत्सुक हुवे हुते राज, होवेंजी काज विनाश ॥ सा० ॥ १३ ॥ यत ॥ काज विचारी जे करे०॥ मन्त्रीयें वाख्यो नृप रह्यो राज,मास लगें जेम तेम ॥ वोले मासे कामथी राज, अथ हुकम करे एम ॥ सा० ॥ १४ ॥ तेडी चार प्रधा नने राज, हुकम करे नृप जाम ॥ जाये लेवा नारीने राज, चतुर विचारी ताम ॥ सा०॥ १५ ॥ यक्ष मूकी पातलथी राज, पूरव नवनोजी बाप॥ व्यंतरपति तेडावियो राज, ते पण आव्योजी आप ॥ सा० ॥ १६ ॥ तस आनरणें शोनावीने राज, हय बेसारीने हेज ॥ मोकल्यो कंतने नृप कने राज, व्यंतरपति शुं सतेज ॥ सा० ॥ १७ ॥ चहुटामांहे संचर्यो राज, लोक मल्यां लख कोडि ॥ अहो पुण्याइ एहनी राज, पूर्याजी वांबित कोड ॥ सा० ॥ १८ ॥ दरबारें नृप आगलें राज, ऊनोजी जोडी हाथ ॥ देखी विस्मय पामीयो राज, मन चिंते नूनाथ ॥ सा० ॥ १९ ॥ वीर एणें कीधुं वृथा राज, एक सुनाषित सार ॥ विन रयणी आवे गले राज, नावे मुर्ड बीजी वार ॥ सा० ॥ २० ॥ यत ॥ पुनर्दिवा पुनारात्रि, पुन सूर्य पुन शशी ॥ पुन सजायते सर्व, न कोप्येति पुनर्मृत ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ पूछे नृप वत्सराजने राज,छे कुशली यमदेव ॥ महिमा जेहनो आकरो राज, करे बहु सुर जस सेव ॥ सा० ॥ २१ ॥ पूछु सुणने सुम सखा राज, केम बहु दिवसें आज ॥ तुऊ स्वामी सजारीयो राज, मित्र हु ते वत्सराज ॥ सा० ॥ २२ ॥ कहु तब में सुण साहिबा राज, उत्स

मंदिर गयो महाराज ॥ हो० ॥ का० ॥ १२ ॥ हो० ॥ लोक गयां सहु स्थानकें रे लाल, धरतां विस्मय नूरि ॥ हो० ॥ एह निमित्तथी रायने रे लाल, वाध्यु वैरागनु पूर ॥ हो० ॥ का० ॥ १३ ॥ हो०॥ चिंते पाप घणुं कह्यु रे लाल, परदारानी आश ॥ हो० ॥ आतमलघुता में करी रे लाल, वाध्यो पापनो राशि ॥ हो० ॥ का० ॥ १४ ॥ हो० ॥ एम चिंती निजबालिका रे लाल, परणावे नूपाल ॥ हो० ॥ राज्य दीयु करमोचनें रे लाल, महेली मन ढक चाल ॥ हो० ॥ का० ॥ १५ ॥ हो० ॥ नृप ऋद्धि मूकी निसस्खो रे लाल, थयो तापस वनमांय ॥ हो० ॥ करे तप बहु अज्ञानथी रे लाल, नवि सत्नाले कांय ॥ हो० ॥ का० ॥ १६ ॥ ॥ हो० ॥ राजा थयो वत्सराजजी रे लाल, वीरसेन नृपनो नंद ॥ ॥ हो० ॥ सकल गुणें करी शोजतो रे लाल, दिन दिन अधिक आनंद ॥ हो० ॥ का० ॥१७॥हो०॥ देश घणा साध्या तेणें रे लाल, वरती चिहु खम आण ॥ हो० ॥ नूप सवे आवी नम्या रे लाल, हुकम करे परमाण हो० ॥ का० ॥ १८ ॥ हो० ॥ चिहु राणीशु जोगवे रे लाल, इंद्रियसुख सुविलास ॥ हो० ॥ ईति निवारी वेगली रे लाल, पूगी मनहानी आश ॥ हो० ॥ का० ॥ १९ ॥हो०॥ कीर्त्ति पसरी चिहु दिशें रे लाल, ढांकी ते न रहंत ॥ हो० ॥ वात विद्या कस्तूरिका रे लाल, आपेंही प्रगटंत ॥ हो० ॥ का० ॥ २० ॥ यडुक्तं ॥ वार्त्ता च कौतुकवती विशदा च विद्या, लोकोत्तर परिमलश्च कुरंगनाजे ॥ तैलस्य बिंदुरिव वारिणि, डुर्निवार एतत्त्रयं प्रसरतीति किमत्र चित्रम् ॥ १ ॥ हो० ॥ पंचमखमें ए कही रे लाल, ढाल चोत्रीशमी रंग ॥ हो० ॥ रामविजय कहे हेजशु रे लाल, कीजें पुण्य प्रसंग ॥ हो० ॥का०॥२१॥ सर्वगाथा ॥१०७४॥ श्लोक तथा गाथा ॥६३॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर निज नयरीयें, पसरी वात पमूर ॥ वत्सराज राजा थयो, उज्जयिनी बड नूर ॥ १ ॥ लख्यो लेख परजा मली, नृप वत्सराजने आम ॥ वहेला वलजो साहिबा, अम प्रतिपालन काम ॥ २ ॥ दूत लेख लेई चल्यो, आव्यो नयरी चह्नेण ॥ नृप वत्सराजने सोंपियो, आवी हर्षे जरेण ॥ ३ ॥

अग्नि जलंतमां आकरो रे लाल, ग्रह्यो वत्सराजें ताम ॥ १ ॥ लाल ॥ काज विचारी कीजीयें रे लाल ॥ सुण पृथिवीपति हो० ॥ नीरखी परखीने जे करे रे लाल, न हुवे तस जंजाल ॥ हो० काज वि० ॥ २ ॥ हो० ॥ मत जाणो ए मनमा रे लाल, मुउं न कोय ॥हो०॥ ए पहु नाटक में सही रे लाल,तुऊने देखाड्यु जोय ॥ हो० ॥ काज० ॥ ३ ॥हो०॥ ए सवि मंत्री कुबुद्धिया रे लाल, कूड तणा नार ॥ हो० ॥ मुऊने प्राणात कष्टमें रे लाल, नाख्यो मलि बहु वार ॥ हो० ॥ का० ॥ ४ ॥ हो० ॥ देवतणा परज्ञावथी रे लाल, पुगाव्या में एह ॥ हो० ॥ अग्निमाहि होमावीया रे लाल, रह्यो हु अखंडित देह ॥ हो० ॥ का० ॥ ५ ॥ यत ॥ कृते प्रतिकृतं कुर्यात्, लुचिते प्रतिलुचितम् ॥ त्वया लुचापिता पक्षा, मया मुंमावितं शिर ॥ ३ ॥ दोहो ॥ धुत्तह कीजें धूतिया, आलह दिज्जे आल ॥ मित्तह किज्जें मित्तडी, एम गमिज्जें काल ॥४॥ पूर्वढाल ॥ हो० ॥ म म जीवो जे जला थइ रे लाल,हिये परने शुद्धि ॥ हो० ॥ परद्रोहें परधन नारीनें रे लाल, चाहे ते डुर्बुद्धि ॥ हो० ॥ का०॥ ६ ॥ हो० ॥नृप आरिज कह्यो शुं करे रे लाल, जिहां मंत्री होये कुजात ॥ हो० ॥ नृप जूंमो पण शुं करे रे लाल, जिहा मत्रीश सुजात ॥हो०॥ का० ॥ ७ ॥हो०॥ तु स्वामी ठे माहरो रे लाल, नाख्यो में नवि जाय ॥ हो० ॥ स्वामिद्रोहनु मोटकु रे लाल, जगमां पाप कहाय ॥ हो० ॥ का० ॥ ८ ॥ हो० ॥ जूंमो पण द्रोह अन्यनो रे लाल, हिये ड खनो सदोह ॥ हो० ॥ स्वामी मित्र गुरुतणो रे लाल, अति माठो कह्यो द्रोह ॥ हो० ॥ का० ॥ ए ॥ हो० ॥ वात सुणी नरराजीयो रे लाज, चित्तमां लाज्यो जोर ॥ हो०॥ मुऊ चेष्टित एणें लह्युं रे लाल,में कर्युं कर्म कठोर ॥ हो० ॥ का० ॥ १० ॥ हो० ॥ एवविध अपराधने रे लाल,सकि ठतें सह्या जेण ॥ हो० ॥ राज्य न लीधु न बालीयो रे लाल,पर उपकारी गुणेण ॥ हो० ॥ का० ॥ ११ ॥यत ॥ स्वयमक्षम समम, क्षमते क्षमया न जाति चान्यर्द्धिम् ॥ न नव तत् क्षमताया,मिद हि लोकोत्तरं चरितम् ॥५॥ अस्योत्तमस्य परमा,प्रकृति प्राणांतगस्य न हि विषमा ॥ तस्याधमाधमोऽहं, कथमनृणीजावमासोस्मि ॥ ६ ॥ पूर्वढाल ॥ हो० ॥ इत्यादिक निज मिं दतो रे लाल,प्रशसतो वत्सराज ॥ हो० ॥ नवनिर्विघ्न ताशी परें रे लाल,

शुन संयोग ॥ राज्य साते अंग शोनित, अग तेम नीरोग ॥ वाधीयो यशोवाद जगमां, हुउ धर्मने योग ॥ व० ॥ १० ॥ एहवे एक दिवस आव्या, वनहमां गणधार ॥ धर्मरुचि मुनिराज रूडा, करे किरिया सार ॥ कर्म जीपण काज पाले, शुद्ध पचाचार ॥ चारज्ञानी शुद्धध्यानी, समो सखा अणगार ॥ व० ॥ ११ ॥ आवी वनपालक वधामणी, दीधी तेणी वार ॥ चिरं जीवो स्वामि मोरा,प्रजाना आधार ॥ आवीया उद्यानमाहे,मुनि बहु परिवार ॥ निसुणी तेहने दान आपे, हरखि वार हजार ॥ व० ॥ १२॥ लेइ सवि परिवार आवे, वांदवा उजमाल ॥ वत्सराज नरिंद महोटो, रूद्धि फाक फमाल ॥ आवी गुरुनां चरण वदे, खंड पंचमे ढाल ॥ पांत्री शमी कही रामविजयें, धन्य ए नूपाल ॥ व० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा॥११००॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचाजिगम प्रणाम करि, वेगे शुद्ध नूनाग ॥ कहे मुनिवर हवे देश ना, आणी अनुनव राग ॥ १ ॥ सुकृतें रत नरपति प्रणत, उदेशी गुरुरा ज ॥ चाहें नवि धर्म करो तुमें, जेम लहो शिवपदराज ॥ २ ॥ तेह धर्म दोय नेद छे, सागार ने अणगार ॥ जीवदया तस मूल छे, एहनो अवर विस्तार ॥ ३ ॥ सर्वविरति निर्वाहने, मुनि आराधे तेह ॥ ते विण आराधन नोहे, तेहनु सुण गुणगेह ॥ ४ ॥ यतिधर्मे समरथ नहिं, ते शुद्धगृहीनो धर्म ॥ पडिवक्तातो परंपर लहे, सिद्ध स्वरूप अकर्म ॥ ५ ॥ घादश व्रत रूपें नजो, ते नांख्यो नगवत ॥ आदरीयें आदर करी, जिम हुवे सुख्ख अनत ॥ ६ ॥ केइक नोजन लालची, बहु नर नारीरत्त ॥ माल्य विलेपन नोगीया, दीसे घणा जगत्त ॥ ७ ॥ गीत तणा अर्थी घणा, द्यूत कथा रसलीण ॥ केइक वाहन गज वृषन्न, रसिया दीसे दीण ॥ ८ ॥ पण जे व्यसनी धर्मना, तेहना नमीयें पाय ॥ धन्य तेह धरणी तलें, पावन तेहनी काय ॥ ९ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥

॥ हर्षनर हमचुं षोलजो जी ॥ ए देशी ॥ देशन सुणी गुरु वहीने रे, कहे वत्सराज नरेश ॥ तारक नवमा तु मल्यो रे, साचो तुम उप देश ॥ १ ॥ सुगुरु मुफ, तारक मलियो आज ॥ सुगुरु मुफ, सारो वांछित काज ॥ सुगुरु तुम, पालव वलग्यो आज ॥ सुगुरु मुफ, साचो जगी फहा

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

॥ राग सिंधूडो ॥ तथा ॥ प्रबलकाल तणो पयोनिधि, गाजतो गंन्नीर ॥ देशी ॥ लेख लीधो हाथ ततक्षण, दीध वाचक हाथ ॥ अवेलीने ते सर्व वांचे, सांजले नूनाथ ॥ स्वस्ति उज्जयिनी पुरी जिहां, नृप वसे वत्सराज ॥ क्षितिप्रतिष्ठित नगरहूती, लखे लेख समाज ॥१॥ वहेला आवजो रे, वार म लावजो रे, राजेश्वर नावजो रे, जग जस पावजो रे ॥ ए आंकणी ॥ ग्रीष्म अर्दित मेघ चाहे, शीतपीडित आग ॥ जेम सनारे सहूनो, तेम तुम्ह राग ॥ शीघ्र आवो पाउ अमचा, स्वामी तुम वडन्नाग ॥ अन्यथा अमने इहांकणे, नहिं रह्यानो लाग ॥ वहेला० ॥ २ ॥ देवराज ए छु स्वार्थी, करे सबल अन्याय ॥ सुख नहीं ए नयरमांहे, जिहां एहवो राय ॥ घु घणु तुम दाखवीयें मत, ढील करजो कांय ॥ वत्स सघली वात निसुणी, मेलियो समुदाय ॥ वहेला० ॥ ३ ॥ तिहां सुन्नट नट कोटि मलिया, वाजते निशाण ॥ सैन्यनार ए धरा न खमे, चढयो नृप वठराण ॥ पर धानने निज राज्य सोंपी, साथें सबल मंडाण ॥ क्षितिप्रतिष्ठित नयर अ नुक्रमें, आवियो हुइ जाण ॥व०॥४॥ मोकल्यो देवराजने एक, दूत वत्सें ताम ॥ जाणिशुं वत्सराज आव्यो, करणने संग्राम ॥ हुउ लडवा काज तत्पर, देवराज अनाम ॥ सैन्य लइ बाहेर आव्यो, वडो तेह हराम ॥ ॥ व० ॥ ५ ॥ सामंत सघला नहिं रागी, वत्स ऊपर प्रेम ॥ कोइ तन देवे हीं तिहां, देवराजने तेम ॥ वदन फीके चित्तमांहि, तेह चिंते एम ॥ फक्षु सेना सहु लशकर, रणें जीतीयें केम ॥ व० ॥ ६ ॥ रात छेई तेह नाठो, देवराज नरिंद ॥ वत्स सहामो चढी आव्यो, वीरसेन फरजंद ॥ हाथ जोडी पाय लागी, सचिव नृत्य अमंद ॥ चिर जीवो स्वामि अमचा, सहू कहे आनंद ॥ व० ॥ ७ ॥ लोक हर्षित हुवां सघलां, महोत्सव बहु थाय ॥ वाजते नीशाण पुरमां, करे परवेश राय ॥ बोले बंदीजन जयारव, हैडे हर्ष न माय ॥ आव्यो प्रजापाल नृपति, टल्या दूर अन्याय ॥ व० ॥ ॥ ८ ॥ तखत ऊपर आवी बेठा, वखत वलीयो सार ॥ सहु हाथ जोडी पाय लाग्या, हुउ जय जयकार ॥ राज्य बेहू नलां पाले, व्यसन सात निवार ॥ पुहवी वत्स नरेश आणा, वधी बहु विस्तार ॥ व० ॥ ए ॥ ना रि चिहु सघात विलसे, देवनी परें नोग ॥ पुण्यथी सवि आवि मलीया, सर्व

शुन संयोग ॥ राज्य साते अग शोन्नित, अग तेम नीरोग ॥ वाधीयो यशोवाद जगमां, हुउ धर्मने योग ॥ व० ॥ १० ॥ एहवे एक दिवस आव्या, वनहमां गणधार ॥ धर्मरुचि मुनिराज रूडा, करे किरिया सार ॥ कर्म ऊीपण काज पाले, शुद्ध पंचाचार ॥ चारज्ञानी शुद्धध्यानी, समो सस्या अणगार ॥ व० ॥ ११ ॥ आवी वनपालक वधामणी, दीधी तेणी वार ॥ चिर जीवो स्वामि मोरा,प्रजाना आधार ॥ आवीया उद्यानमांहे,मुनि बहु परिवार ॥ निसुणी तेहने दान आपे, हरखि वार हजार ॥ व० ॥ १२॥ लेइ सवि परिवार आवे, वांदवा उजमाल ॥ वत्सराज नरिंद महोटो, रूद्धि ऊाक ऊमाल ॥ आवी गुरुनां चरण वदे, खम्म पंचमे ढाल ॥ पांत्री शमी कही रामविजयें, धन्य ए नूपाल ॥ व० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा॥११००॥

॥ दोहा ॥

॥ पंचान्निगम प्रणाम करि, वेगे शुद्ध नूनाग ॥ कहे मुनिवर हवे देश ना, आणी अनुन्नव राग ॥ १ ॥ सुकृतें रत नरपति प्रणत, उद्देशी गुरुरा ज ॥ चाहें न्नवि धर्म करो तुमें, जेम लहो शिवपदराज ॥ २ ॥ तेह धर्म दोय न्नेद छे, सागार ने अणागार ॥ जीवदया तस मूल छे, एहनो अवर विस्तार ॥ ३ ॥ सर्वविरति निर्वाहने, मुनि आराधे तेह ॥ ते विण आराधन नोहे, तेहनु सुण गुणगेह ॥ ४ ॥ यतिधर्में समरथ नहिं, ते शुद्धगृहीनो धर्म ॥ पडिवज्जातो परंपर लहे, सिद्ध स्वरूप अकर्म ॥ ५ ॥ द्वादश व्रत रूपें न्नजो, ते न्नाख्यो न्नगवत ॥ आदरीयें आदर करी, जिम हुवे सुख अनत ॥ ६ ॥ केइक न्नोजन लालची, बहु नर नारीरत्त ॥ माल्य विलेपन न्नोगीया, दीसे घणा जगत्त ॥ ७ ॥ गीत तणा अर्थी घणा, घूत कथा रसलीण ॥ केइक वाहन गज तूपन्न, रलिया दीसे दीण ॥ ८ ॥ पण जे व्यसनी धर्मना, तेहना नमीयें पाय ॥ धन्य तेह धरणी तलें, पावन तेहनी काय ॥ ९ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥

॥ हर्षन्नर हमचुं बोलजो जी ॥ ए देशी ॥ देशन सुणी गुरु वदीने रे, कहे वत्सराज नरेश ॥ तारक न्नवमां तु मल्यो रे, साचो तुम उप देश ॥ १ ॥ सुगुरु मुऊ, तारक मलियो आज ॥ सुगुरु मुऊ, सारो वांछित काज ॥ सुगुरु तुम, पालव वलग्यो आज ॥ सुगुरु मुऊ, साचो जंगी जहा

ज ॥ ए आंकणी ॥ चरणधर्म प्रज्ञु दोहिलो रे, मुऊथूती न सधाय ॥ श्रावक व्रत उच्चरावीयें रे, मुऊने करि सुपसाय ॥ सु० ॥ २ ॥ गुरु कहे रेवाणु प्पिया रे, ठमाये तेम ठाम ॥ आरन्न केडुं अनादिनो रे, लागी रह्यो जीव मांहि ॥ सु० ॥ ३ ॥ व्रत बारे गुरुजी मुखे रे, उच्चरियां वत्सराज ॥ थइ कृतारथ आवीयो रे, निजमंदिर महाराज ॥ सु० ॥ ४ ॥ मास कल्प करीने तिहां रे, गुरु विचस्था अन्य देश ॥ श्रावकव्रत आराधतो रे, नृप पाले निजदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥ चैत्य करावे जिन तणां रे, बिंब नरावे सार ॥ दान सुपात्रें दे नलां रे, करे सफलो अवतार ॥ सु० ॥ ६ ॥ व ली तेहज मुनि आविया रे, विचरंता तेणें गाम ॥ वत्सराज वंदण गयो रे, जइ वंद्या गुणधाम ॥ सु० ॥ ७ ॥ देशन सुणी पूठे प्रज्ञु रें, कहो पूरव अवदात ॥ आपद टली संपद हुई रे, कोण कर्मनी वात ॥ सु० ॥ ८ ॥ गुरु कहे सांनल राजिया रे, जंबू नरतमऊार ॥ पुर वसंतपुरमां वसे रे, शूर नृपति सुखकार ॥ सु० ॥ ए ॥ सरलातम सोहामणो रे, दाक्षिण्य गुण संयुक्त ॥ निर्लोनी सहेजें नलो रे, देव गुरुनो नक्त ॥ सु० ॥ १० ॥ दान डुःखीने आपतो रे, निज संपद नूपाल ॥ पाले प्रजा रूडी परें रे, न्यायरीतें उजमाल ॥ सु० ॥ ११ ॥ इत्यादिक गुणें शोनतो रे, पण शीलालंकार ॥ शोनित दानगुणें करी रे, पसस्यो यशविस्तार ॥ सु० ॥ १२ ॥ तस अंतेउरमां शिरें रे, शूरवेगा वर नारी ॥ विद्याधरकुल ऊप नी रे, चाले पति आचार ॥ सु० ॥ १३ ॥ तें ऊपर बीजी वरी रे, रति चूला नृपजात ॥ तस रूपें रीऊ्यो घणु रे, न लहे दिह ने रात ॥ सु० ॥ १४ ॥ रायें अवरने परहरी रे, वात जे ए उपरांत ॥ देवीयें तुऊ आगल कह्युं रे, सघलु तस वृत्तांत ॥ सु० ॥ १५ ॥ गंधवाहनगतिनी सुता रे, परणावी जेणें दोय ॥ ते देवीना कहेणथी रे, तुमें जाणो सहु कोय ॥ सु० ॥ १६ ॥ शूर नृपति चवि तु थयो रें नृपनंदन वत्सराज ॥ दाना दिक शुन कृत्यथी रे, पाम्यो अतुलबल राज ॥ सु० ॥ १७ ॥ कर्युं पूर्वे ईश्वरपणे रे, कोइक अंतरायनु कर्म ॥ राज्यनृणादिक तें लह्युं रे, पूर्व वयमां अशर्म ॥ सु० ॥ १८ ॥ गुरु वयणां एम सांनली रे, जातिस्म रण सार ॥ जेम नाख्यु तेम सानस्यु रे, लह्यो वैराग्य अपार ॥सु०॥१ए॥ धन्य ज्ञानी तुम ज्ञाननें रे, कही साची ए वाणी ॥ तुम विण कुण एम

उपदिसे रे, गिरुआ गुणनी खाणि ॥ सु० ॥ २० ॥ स्थापी राज्यें तनयने रे, थाइश हुं तुम शिष्य ॥ वादीने घरे आवियो रे, नरपति सबल जगीश ॥ सु० ॥ २१ ॥ श्रीशेखर निजपुत्रने रे, सोंपी राज्यनो नार ॥ विहुं नारीशुं राजीयो रे, थयो सूधो अणगार ॥ सु० ॥ २२ ॥ वत्सराज रूपिराजियो रे, चाले कग्र विहार ॥ चोखु चारित्र पालीने रे, पाम्या सुरपद सार ॥ सु० ॥ २३ ॥ देवलोकहूती चवी रे, करशे नरनव एक ॥ कर्म खपी केवल लही रे, लहेशे मुक्ति सुविवेक ॥ सु० ॥ २४ ॥ घनरथ प्रनुजीयें कह्यो रे,शूर तणो संबंध ॥ आपद टली सपद थई रे, पुण्य तणो अनुबंध ॥ सु० ॥ २५ ॥ इति वत्सराजसंबंध ॥ पंचम खमें बत्रीशमी रे, ढाल कही सुणो संत ॥ रामविजय कहे सानलो रे, जिनगुण एकण चित्त ॥सु०॥ २६ ॥ सर्वगाथा॥ ११३५॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥६३॥

॥ दोहा ॥

॥ देशन सुणी जिनराजनी, श्री मेघरथ नूपाल ॥ चारित्रने उत्सुक थयो, तजी मोह जंजाल ॥ १ ॥ घर आवी दृढरथ नणी, कहे बंधव ल्यो राज ॥ प्रनुपासें हुं व्रत ग्रही, सारिश आतम काज ॥ २ ॥ कहे दृढरथ सुण बंधवा, ए नरकांतज राज ॥ एहने कारण काज हुं, नवि विणसाडुं आज ॥ ३ ॥ तेणें निज अंगज स्थापियो, मेघसेन अनिधान ॥ रथ सेन दृढरथसुत नणी, युवराजा पद ठाण ॥ ४ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥

॥ तुमने नलें आव्या कहियें जी, थूलिनद्र नलें आव्या ॥ ए देशी ॥ मेघरथ घनरथ जिन वांदे जी ॥ प्रनुजी सोनागी ॥ मुज आपो चरण आनंदें जी ॥ वारू वड नागी ॥ १ ॥ मुज मनना मनोरथ फलिया जी ॥प्रनु०॥ आज देवाधिदेव मुज मलिया जी ॥ वारू०॥ २ ॥ मुज चारित्र आपो चोखुं जी ॥ प्र० ॥ निज आतमगुणने पोखुं जी ॥ वा० ॥ ३ ॥ मुज नवजलहूती तारो जी ॥ प्र० ॥ घनरथ जिन मुज उगारो जी ॥ वा०॥ ४ ॥ नृप चार सहस संघातें जी ॥ प्र० ॥ सुत सुवर सातशें साथे जी ॥ वा० ॥ ५ ॥ बंधव दृढरथनी जोडी जी ॥ प्र० ॥ लिये चारित्र मदने मोडी जी ॥वा०॥६॥ ग्रही श्रीजिनहाथे दीक्षा जी ॥प्र०॥ आराधे जिननी शिक्षा जी ॥ वा० ॥ ७ ॥ पंच समिति गुप्ति रखवाले जी ॥ प्र० ॥

षट्काय जणी प्रतिपाले जी ॥ वा० ॥ ७ ॥ दोष रहित लीये आहार जी ॥प्र०॥ मुनि पाले पंचाचार जी ॥ वा० ॥ ए ॥ कहु मुनिनी किरिये केती जी ॥ प्र० ॥ व्रत पाले नावनसेंती जी ॥ वा० ॥ १० ॥ श्री घनरथ जिन उपकारी जी ॥ प्र० ॥ प्रतिबोध्यां बहु नर नारी जी ॥ वा० ॥ ११ ॥ नव मल उवे प्रचु पाया जी ॥ प्र० ॥ सुर असुर मली गुण गाया जी ॥ वा० ॥ १२ ॥ मल धोई अघाती केरो जी ॥ प्र० ॥ जिन लह्यो शिव गाम नजेरो जी ॥ वा० ॥ १३ ॥ हवे मेघरथ मुनि निर्मोयी जी ॥ प्र० ॥ करे सुधी साधुकमाई जी ॥ वा० ॥ १४ ॥ आराधे स्थानक वीश जी ॥ प्र० ॥ बांधे जिननाम जगीश जी ॥ वा० ॥ १५ ॥ अरिहत सिद्ध प्रवचन नाम जी ॥ प्र० ॥ गुरु थिविर साधु गुणग्राम जी ॥ वा० ॥ १६ ॥ वात्सल्य एहोनां करवां जी ॥ प्र० ॥ बहुश्रुत तपस्वी चित्त धरवा जी ॥वा० ॥ १७ ॥ शुद्ध ज्ञानतणो उपयोग जी ॥ प्र० ॥ दर्शन गुण विनयनो योग जी ॥ वा० ॥ १८ ॥ आवश्यक शीलव्रत लेखे जी ॥ प्र० ॥ रहे निरति चार विशेषें जी ॥ वा० ॥ १९ ॥ क्षण लव तप त्याग विचारो जी ॥ ॥ प्र० ॥ वैयावच्चें समाधि गुण धारो जी ॥ वा० ॥ २० ॥ ग्रहे ज्ञान अपूरव होंशें जी ॥ प्र० ॥ श्रुतजक्ति करे सुविशेषें जी ॥ वा० ॥ २१ ॥ प्रवचन प्रजावना सारी जी ॥प्र०॥ विशमे बोले निर्धारी जी ॥वा०॥२२॥ करे सिंहनिक्रीडित साचुं जी ॥ प्र० ॥ तप जेहवु कचन जाचु जी ॥ वा० ॥ २३ ॥ करे किरिया मुनिवर साची जी ॥ प्र० ॥ जिनपद बांध्युं निकाची जी ॥ वा० ॥ २४ ॥ लाख वरस चरण आराधी जी ॥ प्र० ॥ चढती गुणश्रेणी वाधी जी ॥ वा० ॥ २५ ॥ निजकाय अथाम ए जाणी जी ॥ प्र० ॥ दृढरथ मुनि सुगुण खाणी जी ॥ वा० ॥ २६ ॥ तिलकाचल उपरें बेही जी ॥ प्र० ॥ शुद्ध जूमितल पडिलेही जी ॥ वा० ॥ २७ ॥ लख चोराशीने खमावी जी ॥ प्र० ॥ मन वैराग्य जावना जावी जी ॥ वा० ॥ २८ ॥ शरणां चार उदार जी ॥ प्र० ॥ करे अणसण गुणजंडार जी ॥वा०॥ २९ ॥ वोसिरावी तेणें निज काया जी ॥प्र०॥ नहिं मन ममता ने माया जी ॥ वा० ॥ ३० ॥ मनमांहे समाधिने साधी जी ॥ प्र० ॥ सर्वारथ सिद्धि रुद्धि लाधी जी ॥ वा० ॥ ३१ ॥ तेत्रीस सहस वर्षे जाय जी ॥ प्र० ॥ तव जूखनी इछा थाय जी ॥ वा० ॥ ३२ ॥ ते

त्रीश परववाडे उच्छास जी ॥ प्र० ॥ एक वार ले श्वासोह्लास जी ॥ वा० ॥ ३३ ॥ चन्द्रोदय रुचि उद्योत जी ॥ प्र० ॥ तिहां चोसठ मणनु मोती जी ॥ वा० ॥ ३४ ॥ चिहु पासें चार ते सोहे जी ॥ प्र० ॥ बत्रीश मणना मन मोहे जी ॥ वा० ॥ ३५ ॥ आठ शोल मणां कह्या वारु जी ॥ प्र० ॥ तस पापतीयां मनोहारु जी ॥ वा० ॥ ३६ ॥ शोल आठ मणानी उलें जी ॥ प्र० ॥ आगममांहि प्रभु एम बोले जी ॥ पाठांतर ॥ ते दीपे तेज अमोलें जी ॥वा०॥३७॥ चिहु मणनां मोती बत्रीश जी ॥प्र०॥ चोसठ दोय मणीया जगीश जी ॥ वा० ॥३८॥ एक शो अठवीस वखाणो जी ॥ प्र० ॥ एक मणीया मोती जाणो जी ॥ वा० ॥ ३९ ॥ एम दो यशें त्रेपन होय जी ॥ प्र० ॥ मुक्ताफलसख्या जोय जी ॥ वा० ॥ ४० ॥ समकितदृष्टि मति सारी जी ॥ प्र० ॥ सहुये जिहां एकाव तारी जी ॥ वा० ॥४१॥ लवसत्तमिया एणें नामें जी ॥ प्र० ॥ देव सर्वा र्थसिद्ध ठामें जी ॥ वा० ॥ ४२ ॥ प्रभु तिहां जइ लीये अवतार जी ॥ प्र० ॥ अगियारमे नव अधिकार जी ॥ वा० ॥ ४३ ॥ दृढरथ मुनि पण तिहां जाय जी ॥ प्र० ॥ लही सुरपदवी सुखदाय जी ॥ वा० ॥ ४४ ॥ खम पांचमे साडत्रीशमी ढाल जी ॥ प्र० ॥ कहे रामविजय उज माल जी ॥ वा० ॥ ४५ ॥

॥ ढाल ॥ चोपाई ॥ खम खम चतुराई घणी, शांति प्रभुरासें में सुणी ॥ तेह तणो ए पंचम खम, पूरण हूउं राग अखम ॥ १ ॥ संवत सत्तर पं चाशिये सही, राजनगर चोमासुं रही ॥ श्री संभवजिनने सुपसाय, पंचम खम रच्यो सुखदाय ॥ २ ॥ सागरगच्छ उदयाचलभाण, श्रीलक्ष्मीसागर सूरि सुगुणनिधान ॥ तेह तणे राज्यें अतिचंग, रास रच्यो में धरि मन रंग ॥३॥ श्रीगुरु सुमतिविजय कविराज, उपकारीमांहे शिरताज ॥ तास शिष्य एम हर्षे भणे, शांतिप्रभुने जाउं भामणे ॥४॥ सर्वगाथा ॥११८८॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥६३॥ खम पांचेनी गाथा ॥४२९४॥ खंम पांचेना प्रास्ता विक श्लोक तथा गाथा ॥ १८१ ॥ पांचे खंमनी ढाल ॥१५०॥ इति श्री शांतिजिनप्रबंधे रासबंधे सुकृतानुसंधे द्वादशभवनिबंधे देवराजवत्सराजसंब धोपवृंहितदशमैकादशभववर्णननामा पंचम खम समाप्तिमगमत् ॥ ५ ॥

॥अथ पष्ठखंमस्य प्रारम्नोऽयम्॥

॥ दोहा ॥

॥ सुखकर साहिब सेवियें, त्रेवीशम जिन पास ॥ श्रीशंखेश्वर प्रगट प्रज्जु, नामें लीलविलास ॥ १ ॥ वासवपूजित चरणकज,वदू दीनदयाल ॥ परगट परतो पूरवा, चिंतामणि सुरसाल ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हं पासजी, मूलमन्त्रनो जाप ॥ आपद सवि दूरें टले, मटे मोह संताप ॥ ३ ॥ अश्व सेनकुलदिनमणि, वामामात मल्हार ॥ ते जिन प्रणमीने कहुं, बहे खंम सुखकार ॥ ४ ॥ जिनगुण केरी सकथा, करता नासे पाप ॥ जूष सिता चित्त विणु पीये, तोहि नासे सवि ताप ॥ ५ ॥ शांतिनाथ शोलम विज्जु, कहेतां तास चरित्र ॥ नवकोटिक पातक टले, थाये जन्म पवित्र ॥ ६ ॥ सर्वारथ सुख नोगवी, तेत्रिश सागर आय ॥ चवि तिहांथी जिहां अवतरे, ते निसुणो चित्त लाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ चिंतामणि स्वामी, सच्चा साहिब मेरा ॥ ए देशी ॥ जंबुद्दीपमां दक्षि ण नरतें, आदि जिणंद सुखकारी ॥ तेहनी संततिमां हुउ रे, कुरुनामें नृ पति सुविचारी ॥ १ ॥ शांतीश्वर जिनकी, सुणो कीर्त्ति सारी ॥ ए आंक णी ॥ तिण नामें कुरुदेश अनोपम, हुउ संपद गुणधारी ॥ तास तनय हस्ती तेणें नामें, हस्तिनापुर अवतारी ॥ शांतीश्वर० ॥ २ ॥ ते हत्थिणा उर सुरपुरसुंदर, शोजा समुदयनारी ॥ चोराशी बाजार विराजित, दीपे अति मनोहारी ॥ शां० ॥ ३ ॥ एक नूमि दोयनूमि त्रिनूमिक,षट पंच नूमि प्रकारी ॥ सुर आवास जिस्यां जिहां मंदिर, निवसे सुखी नर नारी ॥ शां० ॥ ४ ॥ सहु जिनधर्मी जिनेश्वर गुणने, गाये नित्य अगारी ॥ दान दया धर्म जिहां अति दीपे, सहु कोइ शुन्न आचारी ॥ शां० ॥ ५ ॥ इक्ष्वाकुवंशी तिहां विश्वसेना, जिध नरपति रतिकारी ॥ न्यायें राज्य प्र जापति पाले, दूरें ईति निवारी ॥ शां० ॥ ६ ॥ स्वामी अमात्य सुहद बल शोन्नित, कीर्त्ति कामणगारी ॥ चिहु दिशिमांहे वध्यो जस महिमा, रेख नहि कांइ कारी ॥ शां० ॥ ७ ॥ तस घर रमणी रूप अलंकृत, रति रन्ना पण हारी ॥ अचिरा नामें सती सत्यवती, दान अन्नयदातारी

॥ शां० ॥ ए ॥ एकदा नाइपदें वदि पक्षे, सप्तमी तिथि अधियारी ॥ नर णीगत चईं मेघरथजीनो, जीव ते रयणी मकारी ॥ शां० ॥ ए ॥ सरवा रथ सिद्धथकी चवियो,अचिरा उयरें सुविचारी ॥ शुनवेला आवी ऊपन्यो, पुत्रपणे अवतारी ॥शां०॥१०॥ काइक सूती कांइक जागती,सुपन लहे दश चारे ॥ पहेला हो गजवर वृषन्न ए बीजे, चिंतित काज सुधारी ॥ शां० ॥ ११ ॥ त्रीजे सिंहप लक्ष्मी चोथे, सहु सुखनी करनारी ॥ पंचमे माला हो छठे निशाकर, दीठो हो आरति टाली ॥ शा० ॥१२ ॥ सातमे सूरज आ ठमे ध्वजवर, कीर्त्ति कांति वधारी ॥ नवमे कलश सरोवर दशमे, पेखे हो हर्ष अपारी ॥ शा० ॥ १३ ॥ सिंधु अग्यारमे बारमे अमरनु, मंदिर दीठु उदारी ॥ रत्ननो राशि ए तेरमे चउदमे, निर्धूम अग्नि विचारी ॥ शा० ॥ १४ ॥ हर्षनरें जागी सा सुंदरी, सुपन देखि डु खवारी ॥ आवी हो कंत समीपें जगाडे, पीयुने हो अचिरा प्यारी ॥ शां० ॥ १५ ॥ विश्वसेन जा ग्या तब देखे, आगें मोहनगारी ॥ आसन आप्यु हो बेसण काजें, वेग हो अचिरा नारी ॥ शा० ॥ १६ ॥ वालमजी मध्यरात्रिनी वेला, उद्दिरमाणी करारी ॥ दीठां हो चउदे सुपन मनोहर, फल कहो श्रुत अनुसारी ॥ शां० ॥ १७ ॥ राय सुणी हरख्यो मनमांहे, सुपन सबल सुखकारी ॥ मतिपूर्वक निज बुद्धि विन्नाणें, अर्थ कहे तिण वारी ॥ शां० ॥ १ए ॥ सुत होशे कुलदीपक रूडो, सहु जगने उपकारी ॥ कहे राणी तुम वचन ए मुफने, सफल होजो हितकारी ॥ शां० ॥ १ए ॥ लेइ आ णा निजसेजें आवी, अचिरा हो मयरचारी ॥ कहे मुफ सुपन रखे ए ह णाये, अह्युर्जे हो एम निर्धारी ॥ शां० ॥ २० ॥ देव गुरु सबध कथायें, करे जागरण सन्नारी ॥ थयो प्रनात हुवो जय जय रव, बंदीजन जयका री ॥ शां० ॥ २१ ॥ छठे हो खमें पहेली ढालें, करे जिनगुणग्र्यारी ॥ रामसुनि कहे ते धन जगमां, जाउ उनकी बलिहारी ॥ शा० ॥२२॥२ए॥

॥ दोहा ॥

॥ विश्वसेन राजा सन्ना, वेगे आवि उमंग ॥ सुपनशास्त्रना जाणने, तेडावे मन रंग ॥१॥ आठ जणा तब आविया,निमित्त अंग अठ जाण ॥ देइ आशिष बेगा सवे, आसन अति मंमाण ॥ २ ॥ नृपें सन्मान्या घणु, पूछे सुपनविचार ॥ कहे सुपनपाठक तदा, शास्त्र तणा अधिकार ॥३॥

सुपन कह्यां वायाल सवि, त्रीश मोटकां तेम ॥ राजन् सुणो अम्ह मंम मा, अडे वर्होत्तेर एम ॥ ४ ॥

॥ ढाल वीजी ॥

॥ वीर जिनवर रे, गोयम गणहरने कहे ॥ ए देशी ॥ सुणि राजन रे, त्रीशमाहे चनदश शिरें ॥ दीग राणीयें रे, मध्यरयणीने आगरे ॥ होशे सुपनथी रे,सुत सोजागी सुंदरू ॥ जगपालक रे,नमशे आवि पुरंदरू ॥ ॥ त्रूटक ॥ पुरंदरा सवि आवि नमशे, चक्री जिनवर होयशे ॥ तुम जाग्य महोदु सुण नरेश्वर, डुःख सघलु खोयशे ॥ हुवे चनद सुपनें चक्र जिनवर, सातथी हरिपद धणी ॥ चार वलजद्र एक मंमलिक, वात ए शास्त्रे जणी ॥१॥ ते मार्टे रे, राजन अचिरा राणीयें ॥ शुज सुहणां रे, दीगं मन सुख आणीयें ॥ सुणि राजन रे, दान दीये घणुं तेहने ॥ सन्मानी रे, पहोंचाड्या निज गहने ॥ त्रू० ॥ निज गेह पहोता सुपन पाठक, राय राणीने कहे ॥ वात सघली सुपन केरी, निसुणी सा आनंद लहे ॥ निजगेह आवे थई हर्षित, गर्जनी प्रतिपालना ॥ करे राणी सा खवाणी, चित्त आणी वासना ॥ २ ॥ अति स्नेहल रे, अति मधुरु नवि वावरे ॥ अति खारु रे, अति तीखु तेम परिहरे ॥ अति कडवु रे, नवि सेवे सा गुण जरी ॥ सुखहूंती रे, थोडुं बोले सा सुंदरी ॥ त्रू० ॥ सुंदरी अचिरा अति न बोले, अति न गाये तिम वली ॥ नवि सुवे अगासें जरीय श्वासें, नवी दोडे मन रली ॥ खाट हिंमोला चढीने, भ्रमणी न लिये तथा ॥ अति क्रोध न करे गर्जपालन,करे ग्रंथमांहे यथा ॥ ३ ॥ तिहां पूर्वे रे, अशिव घणो पुरमां हतो ॥ मांद्यदोषें रे, लोक घणो प्रलय गतो ॥ अवतारें रे, जिण दिनथी प्रजु आवियो ॥ तिण दिनथी रे, अशिव सहू ते नसावीयो ॥ त्रू० ॥ नसावीयो सवि अशिव एणें, अहो महिमा सुत तणो ॥ मनमांहे माता पिता चिंते, जाग्य सबलो आपणो ॥ गर्जमांहिज रह्या सुतनो, जुड अतिशय एवडो ॥ पण किस्युं अचरिज गर्जदिनथी, प्रणत सुत ईहें वडो ॥ ४ ॥ एह प्रणमी रे, आप णने पण प्रणमिया ॥ ईहें आवी रे, डुःख दोहग सवि वामीयां ॥ एह जन्में रे, हर्ष घणो थाशे सही ॥ एह हर्षनी रे, वात न जाये मुख कही ॥ त्रू० ॥ मुख कही वात न जाय अतर, हर्षे हैडुं गहगहे ॥

एम गर्भे वाधे सुकृत साधे, मात शुन दोहाला लहे ॥ वरदान दीजे लाभ लीजें, धर्म कीजें मन धसी ॥ मन जेह इछा ऊपजे ते, राय पूरे उल्लसी ॥ ५ ॥ एम अनुक्रमें रे, मास थया नव निर्मला ॥ साढा दिन रे, सात थया उपरें नला ॥ जेठ मासनी रे, कृष्ण त्रयोदशीने दिनें ॥ नरणी उडु रे,आव्यो निशाकर शुन मनें ॥ त्रू० ॥ शुन मनें सघला लोक सुखीयां,नहीं जगमा को डुःखी ॥ ग्रह थया गोचर ऊच सघला,नीपनी सघली रूपी ॥ शुन लग्नवेला नले मुहूरत, वाय अनुकूल वायते ॥ मध्यरात्रिसमये वर्ण सोवन, कातिपुज विराजते ॥ ६ ॥ आरोगा रे, अचिरा माडीयें जाईयो ॥ सुत नीरोग रे, त्रण जग हर्ष उपाइयो॥ थयो उद्योत रे, नारकीने पण सुख थयु ॥ सचराचर रें, सहु जतुनु डुःख गयु ॥ त्रू० ॥ डुःख गयु सघलु हर्ष प्रगट्यो, अवधिज्ञानें जाणीयो ॥ जिनजन्म केरो उपन कुमरी, हर्ष हैडे आणियो ॥ आठ अथ गजदत गिरिनी, कदराथी आवि ए॥ वली आठ नंदन कूटहूती, आवे धरि मन नाव ए ॥ ७ ॥ प्रत्येकें रे, रुचकगिरि निवासिनी ॥ आवे आठ आठ रे,दिशहूती ते सुवासिनी ॥ तेम चारे रे,रुचक विदिशिनी जाणीयें ॥ द्वीप मध्यम रे, रुचकनी चार वखाणियें ॥ त्रू० ॥ वखाणीयें उप्पन्न मलिने, हूइ सघली तें सुरी ॥ नवू निर्मित एकयोजन, मित विमानें सचरी ॥ चार सार्थे महत्तरिका, चार सहस सामानिका ॥ षोड सहसा अगरक्क्क, साथ लेई सेनिका ॥ ८ ॥ तिहा आवी रे, जिनजननीने पाये नमी ॥ करे वैक्रिय रे, वात सवर्तक मन रमी ॥ वरसावे रे, जलद वली आठे वली ॥ धरे दर्पण रे, आठ जणी कलट घणी ॥ त्रू० ॥ घणे कलट धरी कलशा, रहे जिननी सामुही ॥ कर आठ लेई तालवृता, जोवे जिनमुखछु रही ॥ आठ चामर धरे चतुरा, चार तेम दीवीधरा ॥ रक्षाविधानादिक करे वली, चार देवी नासुरा ॥ ए ॥ एम सहु मली रे, सूतीकर्म करे जिन तणो ॥ मनमाहे रे, सहुने आनद अति घणो ॥ धन्य धन्य धन्य रे, आज तणी ए यामिनी॥ लहि सेवा रे, शोलम जिनवर स्वामीनी ॥त्रू०॥ स्वामीनी सेवा नाग्य पामी, आज वहेनड अति नली ॥ त्रिहु जगत केरो नाथ नेटयो, दशा समकित निर्मली ॥ खम् उठे ढाल बीजी, कही रामविजय इसी ॥ एम उप्पन्न कुमरी स्तवी जिनने, गई निजस्थानक हसी ॥ १० ॥ सर्वगाथा ॥ ४२ ॥

सुपन कह्यां बायाल सवि, त्रीश मोटकां तेम ॥ राजन् सुणो अम्ह मं मां, अबे वर्द्धत्तिर एम ॥ ४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ वीर जिनवर रे, गोयम गणहरने कहे ॥ ए देशी ॥ सुणि राजन रे, त्रीशमांहे चउदश शिरें ॥ दीठा राणीयें रे, मध्यरयणीने आग्रहरे ॥ होशे सुपनथी रे,सुत सोजागी सुंदरू ॥ जगपालक रे,नमशे आवि पुरंदरू ॥ ॥ त्रूटक ॥ पुरंदरा सवि आवि नमशे, चक्री जिनवर होयशे ॥ तुम जाग्य महोदु सुण नरेश्वर, दुःख सघलु खोयशे ॥ हुवे चउद सुपने चक्र जिनवर, सातथी हरिपद धणी ॥ चार बलजद् एक ममलिक, वात ए शास्त्रें जणी ॥१॥ ते मार्टे रे, राजन अचिरा राणीयें ॥ शुज सुहणां रे, दीठां मन सुख आणीयें ॥ सुणि राजन रे, दान दीये घणुं तेहने ॥ सन्मानी रे, पहोंचाड्या निज गहने ॥ त्रू० ॥ निज गेह पहोता सुपन पाठक, राय राणीने कहे ॥ वात सघली सुपन केरी, निसुणी सा आनंद लहे ॥ निजगेह आवे थई हर्षित, गर्जनी प्रतिपालना ॥ करे राणी सा सवाणी, चित्त आणी वासना ॥ २ ॥ अति स्नेहल रे, अति मधुरु नवि वावरे ॥ अति खारुं रे, अति तीखु तेम परिहरे ॥ अति कडवुं रे, नवि लेवे सा गुण जरी ॥ मुखहूंती रे, थोडुं बोले सा सुंदरी ॥ त्रू० ॥ सुंदरी अचिरा अति न बोले, अति न गायें तिम वली ॥ नवि सुवे अगासें जरीय श्वासें, नवी दोडे मन रली ॥ खाट हिंमोला चढीने, घूमणी न लिये तथा ॥ अति क्रोध न करे गर्जपालन,करे प्रथमांहे यथा ॥ ३ ॥ तिहां पूर्वे रे, अशिव घणो पुरमां हतो ॥ मांयदोषें रे, लोक घणो प्रलयें गतो ॥ अवतारें रे, जिण दिनथी प्रजु आवियो ॥ तिण दिनथी रे, अशिव सहू ते नसावीयो ॥ त्रू० ॥ नसावीयो सवि अशिव एणें, अहो महिमा सुत तणो ॥ मनमांहे माता पिता चिंते, जाग्य सबलो आपणो ॥ गर्जमांहिज रह्या सुतनो, जुर्ठ अतिशय एवडो ॥ पण किस्युं अचरिज गर्जदिनथी, प्रणत सुत इंद्रे वडो ॥ ४ ॥ एह प्रणमी रे, आप एणने पण प्रणमिया ॥ इंद्रे आवी रे, दुःख दोहग सवि वामीयां ॥ एह जन्में रे, हर्ष घणो थाशे सही ॥ एह हर्षनी रे, वास न जाये मुख कही ॥ त्रू० ॥ मुख कही वात न जाय अंतर, हर्षे हेडुं गहगहे ॥

करि पच रूप सुरेश्वर चाले, प्रज्जुकु एकरूपे काले रे ॥ जि० ॥ २२ ॥
दोय रूपें हरि चामर ढाले, एक छत्र धरे उजमालें रे ॥ जि० ॥ २३ ॥
वज्र लेई प्रज्जु आगल दोडे, एक रूपे हरि मन कोडें रे ॥ जि० ॥ २४ ॥
मेरुशिखर लेइ आव्या रगें, मलिया चोसठ मन रगें रे ॥ जि० ॥ २५ ॥
वीश ज्जुवनपति स्वामी कहीजें, बत्रीश व्यंतर विज्जु लीजें रे ॥ जि०॥२६॥
दोय रवि शशी ज्योतिषके इदा, दश वैमानिक आनदा रे ॥ जि० ॥ २७ ॥
सौधर्मेंइ लिये उत्सगें, प्रज्जु स्नात्र करणकु उमगें रे ॥ जि० ॥ २८ ॥
सोवनरूप मणि माटीना, कलशा वलि कीधा नवीना रे ॥ जि० ॥ २९ ॥
एक सहस ऊपर तेम आठ, एक जातिना अड जाति गाठ रे ॥ जि० ॥
३० ॥ होय एक कोडी अने साठ लाख, कलशा ए शास्त्रनी साख रे ॥
॥ जि० ॥ ३१ ॥ पणवीश योजन कलशा ऊचा, वार योजन पहोला
प्रीठघा रे ॥ जि० ॥ ३२ ॥ नालूवा एक योजननां रे नाव्या, कलशा नीरें
जरी लाव्या रे ॥ जि० ॥ ३३ ॥ अच्युत आदि नवे सुरस्वामी, प्रज्जु न्हवण
करे शिर नामी रे ॥ जि० ॥ ३४ ॥ स्थापी ईशान इड्नी गोदें, करे शक्र
नमण मन मोदें रे ॥ जि० ॥ ३५ ॥ वर्सें हो लूठी प्रज्जुनुं अग, शुचि
चदनें लेपे सुचग रे ॥ जि० ॥ ३६ ॥ नव नव जक्ति करे तिहां देवा, प्रज्जु
गुण गाइ करें सेवा रे ॥ जि० ॥ ३७ ॥ आरति मगल दीप उतारे, प्रज्जु
तो विण कुण हम तारे रे ॥ जि० ॥३८॥ ठहे हो त्रीजी ढाल ए बोली,
कहे ठे राम दिल खोली रे ॥जि०॥ ३९॥ जिनगुण जणता पावन जीहा,
सफला होय रात ने दीहा रे ॥ जि० ॥ ४० ॥ सर्वगाथा ॥८४॥ श्लोक ॥

॥ दोहा ॥

॥ इड करे जिनवर तणी, स्तुति जोडी दोइ हाथ ॥ जवसमुइमां बूडता, मल्यो ऊहाज तु नाथ ॥१॥ जय अचिरा राणी कयरें, सरोवर हंस समान ॥ जव्यकुमुदवनचइमा, अतुलीबल जगवान ॥ २ ॥ जय अनादि अजन रहित, निराकार निरुपाधि ॥ ज्योतिरूप जगदीश तु, प्रगटी सहज समाधि ॥ ३ ॥ करवा पावन पतितने, तें लीधो अवतार ॥ डुस्तर जवसायरथकी, तार तार प्रज्जु तार ॥ ४ ॥ धन्य हुउं कृतपुण्य हु, दीठु दरिसण आज ॥ ए मरुस्थल ससारमां, तु सुरतरु जिनराज ॥ ५ ॥ इत्यादिक वचनें करी, नमी स्तवी सुरराय ॥ मेरुशिखरथी आ

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर सौधर्मपति, निज आसन चल जाणि ॥ ज्ञान अवधि उपयोगथी, लह्यु जन्म कल्याण ॥ १ ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं, पाम्यो परम करार ॥ तेडी हरिणगमेषीने, हुकम करे तेणि वार ॥ २ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ शुन नव अमृतवेलीकंदो ॥ ए देशी ॥ इइ कहे हरिणगमेषीने, सुख लहियें प्रनु देखीने रे॥ जिन जायो नगीनो ॥ जगको डु:ख दूरें कीनो रे ॥ प्रनु जायो नगीनो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वाउ सुघोषा घंट ए ताजी, रहे सोहम सुरलोक गाजी रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ पांचशे सुर मली घंटा वाइ, सघली घटा रणफण थाई रे ॥ जि० ॥ ३ ॥ खबर हुई सोधर्मके वासी, मलिया ए तुरत उल्लासी रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ कहे हरि जिन जन्मोत्सव काजें, जाशुं क्षेत्र नरतें शुनसाजें रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ अचिरा राणीको नंदन नीको, जिन शोलम त्रिनुवनटीको रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ करि जन्मोत्सव बहु सुख पाशुं, अमो लान अनंत उपाशुं रे ॥ जि० ॥ ७ ॥ पालक योजन लाख विमान, तेणें बेसे इइ सुज्ञान रे ॥ जि० ॥ ८ ॥ सायें सहस चोराशी सामान्य, अगरक्षक चउ गुण मान रे ॥ जि० ॥ ए ॥ अग्रमहिषी आठे गुणवंती, पियु सायें चली पुण्यवंती रे ॥ जि० ॥ १० ॥ बत्रीश लाख विमानके स्वामी, सहु आइ मिले शिर नामी रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ कोइ आगें कोइ पूठसें आवे, मारग विच जिन गुण गावे रे ॥ जि० ॥ १२ ॥ पडखे नहिं कोइ सेवक स्वामी, जिननक्ति मांहे नहिं खामी रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ हर्ष नयो प्रनुको मुख जोवा, निज पातक मेलने धोवा रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ आइ उजाय नंदीश्वरद्वीपें, यहां आवि विमान सक्षेपें रे ॥ जि० ॥ १५ ॥ आवे नरत गजपुर उजाणा, प्रनु देखण हर्ष नराणा रे ॥ जि० ॥ १६ ॥ आवी नमे जिन जिनजननीकों, कहे तें सुत जायो नीको रे ॥ जि० ॥ १७ ॥ हर्ष कियो त्रिहु लोकके मांई, हम वाटी स्वर्गें वधाई रे ॥ जि० ॥ १८ ॥ माई तेरे सुतकु लेइ जाशुं, सुरगिरि शिखरें नवराशुं रे ॥ जि० ॥ १ए ॥ करशुं समकित निर्मल साचु, प्रनु देखि देखि अमें राचु रे ॥ जि०॥ २० ॥ जिन प्रतिरूप मेहले मायपासें, अवस्वापिनी दे उल्लासें रे ॥ जि० ॥ २१ ॥

रवि शशीनु स्वामीने ॥ ७ठी जागरणें सहु जाग्या, गायो शिवगामीने रे ॥ ह० ॥ १२ ॥ काढी अशुचि कर्ममंदिरथी, नीपाइ पक्वान्न ॥ सज्जन कुटुंब सहुने पोषे, रंगेंशु राजान रे ॥ ह० ॥ १३ ॥ शांति एणें वरतावी जगमां, " शांति कुमर " घणुं जीवो ॥ नाम ठवे सहु कोइनी साखें, कुवर ए जगदीवो रे ॥ ह० ॥ १४ ॥ अमृत अंगूठे हरि ठवियो, तेहथी होय आहार ॥ स्तनपान न करे मातानु, शुचितानो नहिं पार रे ॥ ह० ॥ १५ ॥ यडुक्त ॥ दृहशेऽशनमवयार्पित, नहि नीहारविधिश्व जन्मत ॥ शुचिता भुवनेप्यनुत्तरा, यदहो स्तन्यमपीश नापिव ॥१॥ पूर्वढाल ॥ अनुपम रूप मनोहर वाधे, प्रभु मनमोहन नीको ॥ सहस्र अठोत्तर लक्षण शोभित, तीन भुवनको टीको रे ॥ ह० ॥ १६ ॥ स्नेहल मुख मुकुरोपम दीपे, पद कूर्मोन्नत धारो ॥ एणीजंघ सरीखी जंघा, उरु करिकर आकारो रे ॥ ह० ॥ १७ ॥ विस्तीरण प्रभुजीनु कटितट, दीठे मनडुं मोहे ॥ दक्षिण आवर्त्ते गंभीरा, नाभि अंग अति सोहे रे ॥ ह० ॥ १८ ॥ वज्र सरीखु मध्य विराजे, पुरकपाट परें पहोलु ॥ वक्ष स्थल पुरअर्गल उपम, प्रभुनु बाहुजुअल रे ॥ ह० ॥ १९ ॥ ग्रीवा कंबुसरीखी सुंदर, अधर होठ गुलाला ॥ कुंदतणा कुड्मल परें उज्ज्वल, दीसे दंतनी माला रे ॥ ह० ॥ २० ॥ उत्तुंग सरलो नासावंशो, सज्जनवृत्त ज्युं भालो ॥ पद्मपत्र सरिखा दोय लोचन, अष्टमिशशिसम भालो रे ॥ ह० ॥ २१ ॥ दोलाकार श्रवणयुग प्रभुना, मस्तक छत्राकारं ॥ स्निग्धा अलिकुल श्यामल कुंतल, राजे रूप उदारं रे ॥ ह० ॥ २२ ॥ पद्मगंध सरिखो प्रभुश्वासो, कनकवर्णी जस काया ॥ अप्सर इंद्राणी हुलरावे, सवली प्रभुजी माया रे ॥ ह० ॥ २३ ॥ त्रिक ज्ञानें संयुत त्रिहु जगना, नाथने नयणें निरखे ॥ आनंद धरी इंद्राणी पोतें, रत्न ज्युं फरि फरि परखे रे ॥ ह० ॥ २४ ॥ एक सहियर लेइ प्रभु खधोले, बीजीने एम बोले ॥ कनकलता तुं जो रे प्रभुनुं, वदन पूनमविधु तोले रे ॥ ह० ॥ २५ ॥ कोइ कहे सुणो सहीयर मोरी, प्रभु उपर घणु मोही ॥ घरधंधो मुजने विसरीयो, रहि प्रभु मुखडुं जोई रे ॥ ह० ॥ २६ ॥ सहिय समाणी वाली भोली, वात करे वाचाली ॥ प्रभु विण निरखे जे नित्य जमशे, ते नहि आपणी आली रे ॥ ह० ॥ २७ ॥ एक करथी बीजे कर लेवे, भूइ उपर पग न धरे ॥ घरना

णीने, प्रज्ञु सोंपे निजमाय ॥ ६ ॥ निड़ा पाठी सहूरी, जाम्या अचिर माय ॥ सुत सुरपूजित देखिने, हेडे हर्ष न माय ॥ ७ ॥ इड कहे मधे स्वरें, सहु सांजलता वाणि ॥ जिन जिनजननी उपरें, जे चितवशे कुजाण ॥ ८ ॥ तस मस्तक तेम फूटशे, जेम कनाले जाण ॥ एरमफल फूटे तथा, इम कहे इड सुजाण ॥ ए ॥ वृष्टि करी तिहां रयणनी, अंगण कोडि बत्रीश ॥ सौधर्माधिप चालियो, प्रज्ञुने नामी शीश ॥ १० ॥ नदीश्वर द्वीपें जई, यात्रा करे सहु इद ॥ निज निज स्थानक सहु गया, धरता मन आनंद ॥ ११ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ ॥ हमचडीनी देशी ॥ सुत सोजागी सुरवरपूजित, निज नयणें नि हाली ॥ अचिरानी दासी उजाणी, वात कहण उजमाली रे ॥ १ ॥ हमचडी ॥ ए आंकणी ॥ जय जय स्वामी कहु शिर नामी, सुण सुण अंतरजामी ॥ अचिरा राणी अगज प्रसव्यो, इष्ट सुणो यशकामी रे ॥ हम०॥ २ ॥ उप्पन्न दिशिकुमरी प्रज्ञु आवी, जिनजन्मोत्सव करवा ॥ सूती कर्म कखु जिनजीनुं, सुकृतनमारने नरवा रे ॥ ह० ॥ ३ ॥ इंडे पण अनिषेक करीने, मेरु शिखरें फल लीधुं ॥ एहवो सुत अचिरायें जन्म्यो, पुण्यें वांछित सीधुं रे ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुत सहेजें संसारें वहाला, न हाना महोटा कुलना ॥ पण चोसठ सुरपतिपूजित सुत, पार नहीं पुण्यबलना रे ॥ ह० ॥ ५ ॥ वात सुणी विश्वसेन नरेश्वर, हरख्यो अति मनमांहे ॥ धाराहत जेम नीपकुसुम तेम, रोमांचित थयो काय रे ॥ ह० ॥ ६ ॥ अंगतणुं आनूषण सघलुं, मुकुट विना तस आप्युं ॥ संतति सात लगें नवि खूटे, धन देइ दारिड़ कापयुं रे ॥ ह० ॥ ७ ॥ उत्र तले तेहने नवरावी, दासीबिरुद उतार्युं ॥ त्रिभुवनपति सुत हर्ष वधाई, दायक मान वधार्युं रे ॥ ह० ॥ ८ ॥ राय कहे पुरमांहे महोत्सव, सुत जन्म्यानी केडें ॥ कारागार सकल शोधावी, दीन डुखी डुख फेडे रे ॥ ह० ॥ ए ॥ मान अने सन्मान वधार्या, अकर अदंड परवेश ॥ गजपुर नगर हुउ सवि सुखीउं, नहिं कोइ वैर किलेश रे ॥ ह० ॥ १० ॥ माणिक माट वधाई आवे, लाख सहस्रने लेखे ॥ तेम वलि तेहने आपे नरपति, चिंतित दान अलेखे रे ॥ ह० ॥ ११ ॥ त्रीजे दिवस कराव्युं दरिसण,

न कहावे ॥ देखो जगगुरु ज्ञानके दरीया, मुहसें न बोले गंभीरिम भरिया ॥ १२ ॥ बहुत आमबर होवे हो जिनको, मत जाणो परमारथ उनको ॥ नहिं सोवन ध्वनि तेहवी वजावे, जेहवी हो कास्यके पात्रमें थावे ॥१३॥ काल त्रिहूको ज्ञाता हो स्वामी, नहि जिनकी प्रभुतामाहे खामी॥ अविनय एह हुवे जिनवरको, आव्यो वेश लइ द्विजवरको ॥ १४ ॥ प्रभुकु बेगवे सिंहासन सोई, देखी सवे मन अचरिज होइ ॥ पाठक आगल रह्यो कर जोडी, प्रश्न करे मद मत्सर मोडी ॥ १५ ॥ मन संदेह टल्यो तव साचो, पाठक जाएयु ए पमित आछो ॥ पाउ पडे मन मान निवारी, तुम हो वडे जगगुरु उपकारी ॥ १६ ॥ इइ नमी निजस्थानक जावे, प्रभुजी फरि निजमंदिर आवे ॥ देखो जाए गंभीर ए केसे, दीनदयाल होवें जग ऐसे ॥ १७ ॥ अनुक्रमें यौवन पाम्या हो साइ, रूपकला अधिकी चतुराई ॥ वरस पंचवीश सहस वय आये, तव प्रभुकु लेइ राज्य वेगये ॥ १८ ॥ परणावे प्रभुकु बहुतेरी, नृपकन्या गुणरूप भलेरी ॥ सकल अंतेउरमा रतिकारी, नामें यशोमती राणी सारी ॥ १९ ॥ प्रभु विलसे तिए सार्थे भोगा, सहु मलिया मनोवांछित योगा ॥ चाले पद्मिनी पतिने हो छंदें, घर घर वरते हो अति आनंदे ॥२०॥ छठे खमें हो पंचमी ढाल, राम कवि कहे अति उजमाल ॥ आगल सांभलजो हवे लोका, वाधशे जगमांहे पुण्यशलोका ॥२१॥ सर्वगाथा ॥१४७॥ श्लोक तथा गाथा ॥१॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे दृढरथनो जीव, सरवारथ सिद्धथी चवी ॥ पूरए आयु अतीव, आवीने तिहां ऊपजे ॥ १ ॥ यशोमतीनी कूख, शुभवेलायें अवतर्यो ॥ पूर्ण समय गतदुःख, चक्र सुपन सूचित जएयो ॥ २ ॥ कर्यो महोत्सव सार, नयरमाहे बहु हर्षेशु ॥ "चक्रायुध" गणधार, नाम ठव्युं नरपति सही ॥ ३ ॥ सुत वाधे श्रीकार, रूप कला गुण शोभतो ॥ जंगम सुरतरु सार, नरनारी मन मोहतो ॥ ४ ॥ शीखए कला विचार, नीशालें ते पाठव्यो ॥ बत्रीश लक्षण धार, सकलशास्त्र सहेजें भएयो ॥ ॥ ५ ॥ यौवनवयें कुमार, नृपकन्या परणावीयो ॥ रूपें गुणें जितमार, सुख विलसे संसारना ॥ ६ ॥

सवि व्यथा विसारी, नित्य प्रनुगुणने समरे रे ॥ ह० ॥ २७ ॥ ढले संवे ढाल ए चोथी, प्रनु जायो जगस्वामी ॥ रामविजय कहे ए प्रनुजीने, हुं प्रणमु शिर नामी रे ॥ ह० ॥ २ए ॥ सर्वगाथा ॥ १२४ ॥ श्लोक ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गिरिकंदरचंपक परें, बीज तणो जिम चंद ॥ प्रनु वाधे मन मोह तो, सहुजन नयनानंद ॥ १ ॥ हर्षे हुलरावे रंगशु, अचिरा प्रेम पमूर ॥ रोम रोम तन उल्लस्यु, निरखी सुत मुखनूर ॥ २ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ माय कहे मेरी ठगनां मगना ॥ ए देशी ॥ कहे सुतने हो एम अचिरा माता, तुऊ आवे मुऊ थइ सुखशाता॥मुख दीठे गया पातक भूली, तुऊ पूजे हु पण सुरें पूजी ॥ १ ॥ तु मुऊ प्राणतणो आधार, तुऊ उपर वारी वार हजार॥सुण मुऊ लाडकडा सुत मीठा, पूरव पुण्यें तुऊ मुख दीठा ॥ २ ॥ लाम्न लमावे हो अपणी रे माडी, नवपल्लव हुइ सुतगुण वाडी ॥ हाथे जडाव सोवननी हो कमली, अगें बनी ऊरवाफ अगडली ॥३॥ पहेराव्यां कानें शुचि मोती, तृप्ति न पामे हो मुखहुं जोती॥मणिमाणक मोती की हो टोपी, हर्षेशुं लेइ सुतशिर आरोपी ॥४॥ कठे हो तावित सोवन केरां, पहेरावे अचिराजी नलेरा ॥ कामणगारो ने वलि शणगार्यो, ठमक ठमक चाले लागे हो प्यारो ॥ ५ ॥ मुख मधुरी बोले सुत वाणी, चिरंजीवो कहे अचिराजी राणी ॥ सुर बालकरूपें थइ आवे, रागें हो शांति कुमर कु खेलावे ॥ ६ ॥ एणीपरें वाधे हो प्रनु सोनागी, सहु कोइने जोवा रढ लागी ॥ आवे सनामांहे बापके आगें, सहुकोइ कठी के पाउ लागे ॥ ७ ॥ आवो पधारो हमारे हो स्वामी, हो त्रिहुजगके अंतर्यामी॥ तुम हो जगद्दत्सल उपकारी, तुम सूरत लागत हम प्यारी ॥ ७ ॥ आठ वरस प्रनुकु नये जाणी, तब बोले मावित्र यु वाणी ॥ सुत निशाल ठवीजें हो सारो, शास्त्र नणावण मोहनगारो ॥ ए ॥ नरपति उत्सव मांहे हो नारी, धवल मंगल गाये सोहव नारी ॥ तनु नूषण नूषित ठवी सारी, प्रनु कीनी गजकी असवारी ॥ १० ॥ बहु आम्बर सार्थे हो आवे, पाठक मनमांहे आनंद पावे॥इण अवसरें चल्यां आसन इंद्रा, खबर हुई देख्यो ज्ञानदिणंदा ॥ ११ ॥ प्रनुकुनी निशाल पगावे, मोह महाबलना

न कहावे ॥ देखो जगगुरु ज्ञानके दरीया, मुहसें न बोले गम्भीरिम भरिया ॥ १२ ॥ बहुत आम्बर होवे हो जिनको, मत जाणो परमारथ उनको ॥ नहि सोवन ध्वनि तेहवी वजावे, जेहवी हो कास्यके पात्रमें थावे ॥१३॥ *काल त्रिहूको ज्ञाता हो स्वामी, नहि जिनकी प्रभुतामाहे खामी॥* अविनय एह हुवे जिनवरको, आव्यो वेश लइ द्विजवरको ॥ १४ ॥ प्रभुकु बेठावे सिंहासन सोई, देखी सवे मन अचरिज होइ ॥ पाठक आगल रह्यो कर जोडी, प्रश्न करे मद मत्सर मोडी ॥ १५ ॥ मन संदेह टल्यो तव साचो, पाठक जाण्यु ए पंडित आछो ॥ पाउ पडे मन मान निवारी, तुम हो वडे जगगुरु उपकारी ॥ १६ ॥ इह नमी निजस्थानक जावे, प्रभुजी फरि निजमंदिर आवे ॥ देखो जाण गम्भीर ए केसे, दीनदयाल होवें जग ऐसे ॥ १७ ॥ अनुक्रमें यौवन पाम्या हो साइ, रूपकला अधिकी चतुराई ॥ वरस पंचवीश सहस वय आये, तव प्रभुकु लेइ राज्य बेठाये ॥ १८ ॥ परणावे प्रभुकु बहुतेरी, नृपकन्या गुणरूप भलेरी ॥ सकल अंतेउरमा रतिकारी, नामें यशोमती राणी सारी ॥ १९ ॥ प्रभु विलसे तिण सार्थे भोगा, सहु मलिया मनोवांछित योगा ॥ चाले पद्मिनी पतिने हो छंदें, घर घर वरते हो अति आनंदे ॥२०॥ छठे खण्डें हो पंचमी ढाल, राम कवि कहे अति उजमाल ॥ आगल सांभलजो हवे लोका, वाधशे जगमांहे पुण्यश्लोका ॥२१॥ सर्वगाथा ॥१४७॥ श्लोक तथा गाथा ॥१॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे दृढरथनो जीव, सरवारथ सिद्धथी चवी ॥ पूरण आयु अतीव, आवीने तिहां ऊपजे ॥ १ ॥ यशोमतीनी कूख, शुभवेलायें अवतर्यो ॥ पूर्ण समय गतदुःख, चक्र सुपन सूचित जण्यो ॥ २ ॥ कर्यो महोत्सव सार, नयरमांहे बहु हर्षेशु ॥ "चक्रायुध" गणधार, नाम ठव्यु नरपति सही ॥ ३ ॥ सुत वाधे श्रीकार, रूप कला गुण शोभतो ॥ जंगम सुरतरु सार, नरनारी मन मोहतो ॥ ४ ॥ शीखण कला विचार, नीशालें ते पाठव्यो ॥ बत्रीश लक्षण धार, सकलशास्त्र सहेजें भण्यो ॥ ॥ ५ ॥ यौवनवयें कुमार, नृपकन्या परणावीयो ॥ रूपें गुणें जितमार, सुख विलसे संसारनां ॥ ६ ॥

॥ ढाल ७मी ॥

॥ पांच सोपारी लेइ हाथ ॥ ए देशी ॥ हवे एक दिवसने योग, आ युधशालामां ऊपन्युं ॥ चक्र रतन उत्पन्न, आर सहस्र हो सोनहुं ॥ १ ॥ उपन्यो हर्ष अपार, सेवक दीध वधामणी ॥ आयुधशालामां चक्र, उपन्यु जयजय जगधणी ॥ २ ॥ प्रभु निसुणी दिये दान, आठ दिवस उत्सव करे, चक्र तणो गुणखाणि, जयकमला कारण शिरें ॥ ३ ॥ चर्म असि छत्र दंम, आयुधशालमा ऊपजे ॥ मणि कांगिणी ने हो चर्मे, निधि सिरि गेहें नीपजे ॥ ४ ॥ पुरोहित वार्द्धिकी जाण, सेनापति गाथापति ॥ निज नगरें ए चार, रयण तणी कही उत्पत्ति ॥५॥ राजकुलें स्त्रीरत्न, गिरि वैताढये हो गज तुरी ॥ रयण ए जस वश चार, केम टके तेहना अरि ॥ ६ ॥ आयुधघरथी हो चक्र,चाल्यु वही पथ अवरें॥केडें हो शांति दयाल, रयण कटक लेइ संचरे ॥७॥ यक्ष सहस्र समेत,चाल्यु प्रथम पूरव दिशें॥ मागधतीर्थे आसन्न, वेलाकुलें सेना वसे ॥८॥ वार्द्धिकी करे तत्काल, पुर द्वादश योजन तणु ॥ सैन्यने रहेवा हो काज, अतिसुंदर शोभा घणु ॥९॥ शुभ आसन चक्रधार, बेसे हो मागध सन्मुखें ॥ त्रिहु जगनो रे आधार, जस नामें सहु जग सुखी ॥ १० ॥ ते प्रभुने अनुभाव, जलमांहे द्वादश योजनें ॥ मागध सुरनु हो ताम, आसन चलियु चिंते मनें ॥ ११ ॥ जाण्युं अवधि उपयोग, जिनचक्री इहा आविया ॥ साधन भरतना खंम, जे सुरपति मन भाविया ॥ १२ ॥ भाग्य सबल मुफ आज, जे जिनराज पधारिया ॥ आराधनने हो काज, भाव अशुभ निवारीया ॥ १३ ॥ लेइ आभरण अमूल्य, वस्त्र वली सुरनां भला ॥ आवे हो बहु परिवार, प्रभु भक्ति भर्या दैयडलां ॥ १४ ॥ कर जोडी कहे देव, नाथ सुणो त्रिभुवन तणा ॥ हु तुम किंकर स्वामी,छे मुफमा अवगुण घणा ॥ १५ ॥ करशुं तु मारी हो सेव,दास थइ रहेशु इहां॥तुम आणा परमाण, रहेशुं हो राखेशो जिहां ॥ १६ ॥ प्रभु सन्मानी हो तास, भक्तवत्सल भगवत जी ॥ मोकलियो निज ठाम, पहोतो प्रभु समरंत जी ॥ १७ ॥ तेम दक्षिण दिशि चक्र, चाल्यु हो वाटें आकाशनी ॥ आव्या दक्षिण दधि तीर, तीरथ वरदाम आसनी ॥ १८ ॥ तेम आव्यो सुर तेह, कर जोडी आगल रह्यो ॥ तु साहिब गुणगेह, तुम दरिसण भाग्यें लह्यो ॥ १९ ॥ तेहने स्वामी

तेणें गाम, वारुणीदिशें प्रभु चालिया ॥ साधण देव प्रजास, दलनारें नग हालिया ॥ २० ॥ तेह नम्यो ततकाल, आवी जगतगुरु पाउले ॥ उत्तर पथ निहालि, चाल्यु हो चक्र उमाह्ले ॥ २१ ॥ आव्या नदीतट सिंधु, जवसिधु तारक विभु जी, सिधुदेवी ततकाल, आवी कहे जय जय प्रभुजी ॥ २२ ॥ स्नाननु पीठ सुचग, कलश कनकमयरूपने ॥ स्नानसामग्री हो जेह, जेट करे जगजूपने ॥ २३ ॥ कहे स्वामी कर जोडि, उलग करी हो ताहरी ॥ करुणानजरें महाराज, जाग्यदशा जागी माहरी ॥ २४ ॥ मुऊ लायक खिजमत, प्रभु फरमावियें हित धरी ॥ लही आणा निजधाम, सिधु गई हर्षें जरी ॥ २५ ॥ तेडी सेनानी ताम, हुकम करे चक्री इस्यो ॥ सिधुनो पश्चिम खम, साधि आवो सुणि उल्लस्यो ॥ २६ ॥ चर्मरत्न धरि सेन, सिधु तरी परतट गयो ॥ खलजल्या तिहांना रे नृप, तस सहामो कोइ नवि थयो ॥ २७ ॥ आवि नम्या सहु पाय, साथ लेइने हो आविया ॥ जेट हुई जिनराय, चरण नमे नृप जाविया ॥ २८ ॥ सबलु पुण्यनु जोर, सहसगमे नृप सेवता ॥ आवि नमे कर जोडि,कोडि गमे जस देवता ॥२९॥ छठे खर्मे हो ढाल,छठी कही रलियामणी॥ सुणो जवि थइ उजमाल,शाति प्रभु कीर्त्ति घणी॥३०॥१८३॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ चक्र चल्यु नजमर्लें, पूठें शाति नरिंद ॥ अनुक्रमें जातां पामियो, शुचि वैताढ्य गिरिंद ॥ १ ॥ आवी नम्यो प्रभुपुण्यथी, वैताढ्यादि कुमार ॥ वशवर्त्ती थइ एम कहे, जय करुणाजंमार ॥ २ ॥ गुफा तमिस्रानु तदा, स्वयमुद्घाटी द्वार ॥ वैताढ्यपाल सुर चरण नमी, कहे जय जगवाधार ॥ ३ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ मन मोहना लाल ॥ ए देशी ॥ असवारी गजराजकी ॥ मनमोहना लाल ॥ कीनी शाति दयाल हो ॥ जन रंजना लाल ॥ छत्र फरे शिर ऊपरें ॥ म० ॥ तीन जुवन रखवाल हो ॥ ज० ॥ १ ॥ मणि रयण गजराजके ॥ म० ॥ कुंजस्थल धखु सार हो ॥ ज० ॥ वार जोयण लगें ते सही रे ॥ म० ॥ दूर करे अंधकार हो ॥ ज० ॥ २ ॥ कागिणी लेई हाथमा रे ॥ म० ॥ करे मंमल तमहार हो ॥ ज० ॥ उंगणपचास आलि

॥ ढाल ७मी ॥

॥ पांच सोपारी लेइ हाथ ॥ ए देशी ॥ हवे एक दिवसने योग, युधशालामा ऊपन्यु ॥ चक्र रतन उत्पन्न, आर सहस्ले हो शोभतुं ॥ १ ॥ उपन्यो हर्ष अपार, सेवक दीध वधामणी ॥ आयुधशालामां चक्र, उपन्युं जयजय जगधणी ॥ २ ॥ प्रभु निसुणी दिये दान, आठ दिवस उत्सव करे, चक्र तणो गुणखाणि, जयकमला कारण शिरें ॥ ३ ॥ चक्र असि छत्र दंम, आयुधशालमा ऊपजे ॥ मणि कागिणी ने हो चर्म, निधि सिरि गेहें नीपजे ॥ ४ ॥ पुरोहित वार्द्धिकी जाण, सेनापति गाथापति ॥ निज नगरें ए चार, रयण तणी कही उत्पत्ति ॥५॥ राजकुलें स्त्रीरत्न, गिरि वैताढ्ये हो गज तुरी ॥ रयण ए जस दश चार, केम टके तेहना अरि ॥ ६ ॥ आयुधघरथी हो चक्र,चाल्यु वही पथ अवरें॥ केडें हो शांति दयाल, रयण कटक लेइ सचरे ॥७॥ यक्ष सहस्र समेत,चाल्यु प्रथम पूरव दिशें॥ मागधतीर्थ आसन्न, वेलाकुलें सेना वसे ॥८॥ वार्द्धिकी करे तत्काल, पुर द्वादश योजन तणु ॥ सैन्यने रहेवा हो काज, अतिसुदर शोभा घणु ॥९॥ शुभ आसन चक्रधार, वेसे हो मागध सन्मुखे ॥ त्रिहु जगनो रे आधार, जस नामें सहु जग सुखी ॥ १० ॥ ते प्रभुने अनुभाव, जलमांहे द्वादश योजनें ॥ मागध सुरनु हो ताम, आसन चलियु चिते मनें ॥ ११ ॥ जाण्युं अवधि उपयोग, जिनचक्री इहा आविया ॥ साधन भरतना खंम, जे सुरपति मन भाविया ॥ १२ ॥ भाग्य सबल मुफ आज, जे जिनराज पधारिया ॥ आराधनने हो काज, भाव अशुभ निवारीया ॥ १३ ॥ लेई आभरण अमूल्य, वस्त्र वली सुरनां भलां ॥ आवे हो बहु परिवार, प्रभु भक्ति भर्या हैयडलां ॥ १४ ॥ कर जोडी कहे देव, नाथ सुणो त्रिभुवन तणा ॥ हु तुम किंकर स्वामी,छे मुफमा अवगुण घणा ॥ १५ ॥ करशुं तुमारी हो सेव,दास थइ रहेशु इहा ॥ तुम आणा परमाण, रहेशुं हो राखेसो जिहां ॥ १६ ॥ प्रभु सन्मानी हो तास, भक्तवत्सल भगवत जी ॥ मोकलियो निज ठाम, पहोतो प्रभु समरंत जी ॥ १७ ॥ तेम दक्षिण दिशि चक्र, चाल्यु हो वाटें आकाशनी ॥ आव्या दक्षिण दधि तीर, तीरथ वर दाम आसनी ॥ १८ ॥ तेम आव्यो सुर तेह, कर जोडी आगल रह्यो ॥ तु साहिब गुणगेह, तुम दरिसण भाग्यें लह्यो ॥ १९ ॥ तेहने स्थापी

सात दिवस थया वरसतां रे ॥ म० ॥ करे चक्रीश विचार हो ॥ ज० ॥ ॥ १७ ॥ शोल सहस यक्ष स्वामीके रे ॥ म० ॥ थंग उलग करनार हो ॥ ज० ॥ ग्रही हथीयारने धाइया रे ॥ म० ॥ जिहा छे जलद कुमार हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ रे पापी तमें स्यु करो रे ॥ म० ॥ विण खूटे मरणाश हो ॥ ज० ॥ विरमो नहिंतर पामशो रे ॥ म० ॥ तुमें अम्हथूती विनाश हो ॥ ज० ॥ २० ॥ जय पामीने उसख्या रे ॥ म० ॥ जइ नमीया प्रज्ञुपाय हो ॥ ज० ॥ अमें अपराधी आकरा रे ॥ म० ॥ तुम्ह गिरुआ जिनराय हो ॥ ज० ॥ २१ ॥ तृण लेई मुखमा सवे रें ॥ म० ॥ म्लेड करे अरदास हो ॥ ज० ॥ गुनह खमो ए अम तणो रे ॥ म० ॥ तुम साहिब हम दास हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ नतवत्सल जगवत जी ॥ म० ॥ गुनह करे वकसीस हो ॥ ज० ॥ हय गजवर मणि जेटणां रे ॥ म० ॥ मूकी नामें शीश हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ सेनानीने मूकियो रे ॥ म० ॥ वीजो निष्कूट सिधु हो ॥ ज० ॥ साधीने आवो वही रे ॥ म० ॥ हुकम करे जगवधु हो ॥ ज० ॥ २४ ॥ जइ सेनानी साधिया रे ॥ म० ॥ तिहाना देश अनेक हो ॥ ज० ॥ ते सघला आवी नम्या रे ॥ ज० ॥ मनमा धरिय विवेक हो ॥ ज० ॥ २५ ॥ जइ रुषजकूट शांतिजी रे ॥ म० ॥ लखे पोतानु नाम हो ॥ ज० ॥ शातिप्रज्ञुकी साहिबी रे ॥ म० ॥ सीध्यां वाछित काम हो ॥ ज० ॥ २६ ॥ गंगोत्तर निष्कूट तिहां रें ॥ म० ॥ साधे सेनानी जाय हो ॥ ज० ॥ खमप्रपात गुहा आविया रे ॥ म० ॥ कृतमाल सुर अधिष्ठाय हो ॥ ज० ॥ २७ ॥ साधीने प्रज्ञु निसख्या रे ॥ म० ॥ गगातट अहिगण हो ॥ ज० ॥ गगा आवीने कहे रे ॥ म० ॥ जय जय श्री जिनजाण हो ॥ ज० ॥ २८ ॥ छठे खर्मे सातमी रे ॥ म० ॥ ढाल जणी सुखकार हो ॥ ज० ॥ रामविजय कहे पुण्यथी रे ॥ म० ॥ लहियें जय जयकार हो ॥ज०॥२९॥ सर्व गाथा ॥२१५॥ श्लोक

॥ दोहो सोरठी ॥

॥ गगातटें निवास, स्वामी करे सेनातणो ॥ हवे सुउ पुण्यविलास, जे प्रकटे प्रज्ञुजी तणो ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ जरताधिप राय, साधे देश सहु ॥ ए देशी ॥ द्वादश योजनने आयाम,

खे रे ॥ म० ॥ सेन काजें चक्रधार हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ वर्धे उन्मग्ना मगा रे ॥ म० ॥ निर्मग्ना तेम जाण हो ॥ज०॥ वार्द्धिकी पाज करे तिहां रे ॥ म० ॥ पामी प्रभुनी आण हो ॥ ज०॥ ४ ॥ सैन्य सहु तिहां ऊतरे रे ॥ म० ॥ जुउं जुउं पुण्य प्राग्भार हो ॥ ज० ॥ तमिस्रगुहाथी नीसर्या रे ॥ म० ॥ बाहिर जगदाधार हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ तत्रापातचिलातक रे ॥ म० ॥ म्लेच्छ तणा महि नूप हो ॥ ज० ॥ चिंते ए कुण आवियो रे ॥ म० ॥ वैरी सैन्य विरूप हो ॥ ज०॥ ६ ॥ युद्ध तेहो सार्थे मांड्युं रे॥ नीडे सुजटनी कोड ॥ ज० ॥ देखी म्लेच्छने आकरा रे ॥ म० ॥ सैन्य रह्यं मचकोड हो ॥ ज०॥ ७ ॥ सेनानी सुणी आवियो रे ॥ म० ॥ थइ तुरग असवार हो ॥ ज० ॥ दमरत्न ग्रही हाथमा रे ॥ म० ॥ धायो यम आकार हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ जट कोटी तव कहले रे ॥ म० ॥ स्वामिबलें बलवान् हो ॥ ज० ॥ जागि पडी म्लेच्छां तणी रे ॥ म० ॥ नाठा ते गतशान हो ॥ज०॥ ए ॥ केइ पड्या केइ आखड्या रे ॥म०॥ केइ हुवा सहार हो ॥ ज० ॥ सहासु कोइ जाले नहिं रे ॥ म० ॥ हुइ म्लेच्छांनी हार हो ॥ ज० ॥ १० ॥ नासी सिंधुतटें गया रे ॥ म० ॥ तजि आहार स्वयमेव हो ॥ ज० ॥ वारिद नामें कामने रे ॥ म० ॥ तेह आराधे देव हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ तुष्ट थइ कहे म्लेच्छने रे ॥ म० ॥ अमें कुणमात्र अनाथ हो ॥ ज० ॥ इणथ्थु अम चाले नहिं रे ॥ म० ॥ ए त्रिहु जगको नाथ हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ म्लेच्छ कीयो आग्रह घणो रे ॥ म० ॥ वरसावे जलधार हो ॥ ज० ॥ किमही तेह न ऊसरे रे ॥ म० ॥ वरसे मूशलधार हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ जिनचक्रीसेना वहे रे ॥ म० ॥ वाध्युं पाणीपूर हो ॥ ज० ॥ कहे प्रधान सुण साहिबा रे ॥म०॥ राख राख वडनूर हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ चर्मरत्न प्रभुजी धर्युं रे ॥म०॥ बार जोयण विस्तार हो ॥ज०॥ जल बूमती ऊद्धरी रे ॥ म० ॥ सेना जगदाधार हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ दंभरत्न उपरें ठव्युं रे ॥ म० ॥ छत्ररत्न सुखकार हो ॥ ज० ॥ कोश अडतालीश उपरें रे ॥ म० ॥ छत्र तणो विस्तार हो ॥ ज० ॥ ॥ १६ ॥ करे प्रकाश मणि रयणशुं रे ॥ म० ॥ जाणे ऊग्यो सूर हो ज० ॥ कण नीपावे कर्षणी रे ॥म०॥ दुःख दारिद्र करे दूर हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ एम निजसेना ऊद्धरी रे ॥म०॥ जल नवि खेंचे धार हो ॥ ज०॥

मोजी मद्दिराण ॥ शा० ॥ वाजे लाख चोराशी निशाण, जित हुई त्रिजुवन सुलतान ॥ शा० ॥ १५ ॥ कोडि अढार सार्थे अस्वार, छन्नू कोडी पायक दल सार ॥शां०॥ चउद रयण नवनिधि सघात, बहु आम्बर अचिरानो जात ॥ शा० ॥ १६ ॥ जुन दिन गजपुर करे प्रवेश, दूर टल्या जनना सक्लेश ॥ शा० ॥ वदीजन बोले जयवाणि, आगल नाट करे कल्याण ॥ शा० ॥ १७ ॥ सोहव जरि जरि मोती थाल, प्रजुकों वधावे थइ उजमाल ॥ शा० ॥ निजमदिर आये जूपाल, सुखीयो सहु तिहां वाल गोपाल ॥ शां० ॥ १० ॥ छठे खर्मे हो आठमी ढाल, आये जगत्प्रजु दीनदयाल ॥ शा० ॥ रामविजय कहे पुण्यसयोग, आइ मिले सवि वाछित योग ॥शां०॥१ए॥ सर्वगाथा ॥२३५॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥

॥ दोहा ॥

॥ वासी जारत वर्षना, मलीया देवी देव ॥ बत्रीश सहस नरेश्वरा, सारे प्रजुनी सेव ॥ १ ॥ करे अजिपेक चक्रीतणो, बार बरस ममाण ॥ विद्याधर जूचर मली, सर्व समयना जाण ॥ २ ॥ करे उत्सव अजिपेकनो, नित्य एक एक राजान ॥ परणावे दोय पुत्रिका, रूपें रत्न समान ॥ ३ ॥ चोसठ सहस अतेउरी, एणी पेरें हूइ उदार ॥ दो दो तस वारागना, एक लक्ष वाणु हजार ॥ ४ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ हरणी जव चरे ललना॥ए देशी॥प्रबल पुण्याइ शांतिकी ललनां ॥ लनां हो कहेतां नावे पार॥ साहिब सेवीयें ललनां ॥ १ ॥ ए आकणी॥ फिरत दूहाइ देशमां ॥ ल० ॥ लला हो सहस बत्रीशने मेल ॥ सा० ॥ बत्रीश सहस नरिंदजु ॥ ल० ॥ लला हो करे अहोनिश प्रजु केलि ॥ सा० ॥ २ ॥ सहस बहोंतर पुरवरा ॥ ल० ॥ ल० ॥ सोहे ऋद्धि जमाल ॥ सा० ॥ पाटण सख्या हो सांजली ॥ ल० ॥ ल० ॥ बारु सहस अडियाल ॥सा०॥ ३ ॥ कोडि छन्नु वर गामना ॥ ल० ॥ ल० ॥ जोगवे जोग रसाल ॥ सा० ॥ शोल सहस यक्ष आगलें ॥ ल० ॥ल०॥ रहे कर जोडी जाल ॥ सा० ॥ ४ ॥ दोय सहस अगरक्षका ॥ ल० ॥ ल० ॥ सेव करे दिल साच ॥ सा० ॥ चोसठ इइ हाजर रहे ॥ ल० ॥ ल० ॥ कोइ न लोपे वाच ॥ सा० ॥ ५ ॥ दश कोडि अजवध्वजाधरा ॥ ल० ॥ ल० ॥

विस्तर नव योजन हितकाम ॥ शांतीश्वर राय, साध्या देश सद्ध आंकणी ॥ आठ योजन उचा निरधार, नवनिधि मजूषा शां० ॥ १ ॥ वैमूर्य मणिमय जटित कपाट, प्रगट्या निधि तेहनो घाट ॥ शां० ॥ नैसर्पक पहेलो चित्त धार, पाक्रुक बीजो निधि ॥ शां० ॥ २ ॥ पिंगल त्रीजु सर्वरतन, चोथु महापद्म पंचम मन ॥ शां० ॥ काल महाकाल मानव शंख, चार एव नवनिहि गुरु संख ॥ शां० ॥ ३ ॥ स्कंधावार ने नगरनिवेश, पहेला निधिमा सयल निवेश ॥ शां० ॥ धान्य बीजनी सवि संपत्ति, बीजे हुवे एहनी उत्पत्ति ॥ शां० ॥ ४ ॥ नर महिला हय हाथीना जाण, आनूपणविधि त्रीजे वखाण ॥ शां० ॥ चउद रत्न हुवे चोथे निधान, पांचमु वस्त्र विविधनी खाण ॥ शां० ॥ ५ ॥ उठे कालत्रयनु ज्ञान, महाकालें निसुणो मति मान् ॥ शां० ॥ सुवन रूप्प मणि लोह प्रवाल, एहनो संजव सातमे जाल ॥ शां० ॥ ६ ॥ युद्धनीति सघला हथियार, योधतणा अष्टम अव धार ॥ शां० ॥ चउविध काव्य ने तुर्यना अंग, नाट्य नाटक विधि नवमे रंग ॥ शां० ॥ ७ ॥ पल्योपम जीवित सुरवास, ए नवनिधिसंबंध उ ल्लास ॥ शां० ॥ नवसहस निधि सुर कहे आय, जय जय चक्री त्रिहु वनराय ॥ शां० ॥ ८ ॥ मन माने तेम विलसो स्वामि, निधि अखूट तुम्हारे नाम ॥ शां० ॥ प्रगट्यां पूरव पुण्य प्रमाण, वरती तुम्हारी षट खंम आण ॥ शां० ॥ ए ॥ निधि उत्सव कीधो तेणी वार, प्रजुना पुण्य तणो नहिं पार ॥शां०॥ गंगा पूरव निष्कूट जाग, आप वशें कीधो वडनाग ॥ शां० ॥ १० ॥ साधी षट् खंम जारत वास, प्रजु बलियो जस सुर नर दास ॥ शां० ॥ नहिं प्रजुने मन मोहविकार, ववय महाबलवान विचार ॥ शां० ॥ ११ ॥ विणु ववर्ये नवि जोगव्यां जाय, विणु जोगवियां मोक्ष न थाय ॥ शां० ॥ आवर्शे वरसें साधी हो देश, प्रजु आवे निज न यर उद्देश ॥ शां० ॥ १२ ॥ हुइ दक्षिणाउर घर घर वात, आव्यो सा हिब जग विख्यात ॥ शां० ॥ बांध्यां तरियां तोरण बार, मुख बोले सहु मंगल चार ॥ शां० ॥ १३ ॥ करि दिग्विजय वरी जयश्रेणि, आवे प्रजु गजपुर वहुसेन ॥ शां० ॥ लाख चोराशी गजके हो घाट, आगें चाले क रता गलगाट ॥ शां० ॥१४॥ हय रथ संख्या तेती हो जाण, प्रजुजी बडो

पति आविया ॥ ल० ॥ ल० ॥ देव देवी परिवार ॥सा०॥ प्रनु प्रणमी करे
हर्षेशु ॥ ल० ॥ ल० ॥ दीक्षा महोत्सव सार ॥ सा० ॥ २० ॥ सरवार
थ नामें नली ॥ ल० ॥ ल० ॥ शिबिका रची तेणि वार ॥ सा० ॥ बेठा
जगजुरु कपरें ॥ल०॥ ल० ॥ जगजनके आधार ॥ सा० ॥२१॥ चामर
वींजे सुरपति ॥ ल० ॥ल०॥ बत्र धरुु शिरदार ॥सा०॥ प्रथम उपाडे मा
नवी ॥ ल० ॥ ल० ॥ नरनो प्रथम अधिकार ॥ सा० ॥ २२ ॥ सुर अ
सुरेंद्र वहे पठी ॥ ल० ॥ ल० ॥ गरूम अने नागेंद्र ॥ सा० ॥ शिबिका
उपाडे जिनतणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ धरता मन आनंद ॥ सा० ॥ २३ ॥
केइ गाये वाये रगशु ॥ ल० ॥ ल० ॥ केइ नाटक करे सार ॥ सा० ॥
नाट परें बिरुदावली ॥ल०॥ल०॥ सहु कहे जय जयकार ॥ सा० ॥२४॥
भुवनोत्तर गुणवर्णना ॥ ल० ॥ ल० ॥ करे सुरपति ससनेह ॥ सा० ॥
रासदायक नर आगलें ॥ ल० ॥ ल० ॥ नृत्य करे गुणगेह ॥ सा० ॥
२५ ॥ नना नेरी मृदगनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ वाजे वाजित्र सार ॥
सा० ॥ ननमनल गाजी रह्यु ॥ ल० ॥ ल० ॥ डुडुनिध्वनि मनोहार ॥
सा० ॥ २६ ॥ हाहा हूहू वर गायना ॥ ल० ॥ ल० ॥ नाटकवध सगीत
॥ सा० ॥ रंना तिलोत्तमा कर्वशी ॥ ल० ॥ ल० ॥ नाचती अनुनव रीत
॥ स० ॥ २७ ॥ उत्सवशुं प्रनु आविया ॥ ल० ॥ ल० ॥ गजपुर नगर
उद्यान ॥सा०॥ सहस्राम्र वनमाहे आवीने ॥ल० ॥ल०॥ ऊतरिया नगवान
॥ सा० ॥ २८ ॥ आनूपण ऊतारियां ॥ ल० ॥ ल० ॥ मूक्यो परिग्रह
नार ॥ सा० ॥ पंच मुष्टि करे केशनो ॥ ल० ॥ ल० ॥ लोच सहस परि
वार ॥ सा० ॥ २९ ॥ वस्त्राचल इंई लीया ॥ ल० ॥ ल० ॥ क्षीरजलधि
मांहे केश ॥ सा० ॥ वहेवाव्या रखे एहनी ॥ ल० ॥ ल० ॥ आशात
न होय लेश ॥ सा० ॥ ३० ॥ तुमुल निवारे हो सुरविन्नु ॥ ल० ॥
ल० ॥ वरे प्रनुविरति सुनारि ॥ सा० ॥ ज्येष्ठ शित चउदशी दिने ॥
ल० ॥ ल० ॥ नरणीगत विधुचार ॥ सा० ॥ ३१ ॥ मुखे "नमोसि
द्धाण" नणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ प्रनु लिये सयमनार ॥ सा० ॥ पाठ सा
मायिक उच्चरे ॥ल०॥ल०॥ उठ नत्त चोविहार ॥सा०॥३२॥ मन पर्यव नामें
नलु ॥ ल० ॥ ल० ॥ सज्ञिमनोगत नाव ॥ सा० ॥ जाणे हो नेदथी
निर्मला ॥ ल० ॥ ल० ॥ प्रगटयु तिण प्रस्ताव ॥ सा० ॥ ३३ ॥ चउना

दीवीधरा पांच लाख ॥ सा० ॥ साठ सहस दरबारमां ॥ ल० ॥ ल० ॥ पंमित पूरे साख ॥ सा० ॥ ६ ॥ साठ सहस बिरुदावली ॥ ल० ॥ल० ॥ प्रतिदिन बोले नाट ॥ सा० ॥ त्रण लाख मत्रीश्वर कह्या ॥ ल० ॥ ल० ॥ अश नहि उच्चाट ॥ सा० ॥ ७ ॥ बत्रिश सहस नाटक नलां ॥ ल० ॥ ल० ॥ नव नव लील विलास ॥ सा० ॥ वीश सहस आगर तणो ॥ ल० ॥ ल० ॥ चाल्यो आवे धनराशि ॥ सा० ॥ ८ ॥ अक्षय खजीनो जेहनो ॥ ल० ॥ ल० ॥ किमही न खूटे सोइ ॥ सा० ॥ प्रमुदित सवि परजा नइ ॥ ल० ॥ ल० ॥ शातिप्रभुमुख जोइ ॥ सा० ॥ ए ॥ चोसठ सहस करे नवां ॥ ल० ॥ ल० ॥ नित्यप्रत्यें रूप दयाल ॥ सा० ॥ वर तरुणीके विलासमा ॥ ल० ॥ ल० ॥ जातो न जाणे काल ॥ सा० ॥ ॥ १० ॥ विश्वसेन कुल दिनमणि ॥ ल० ॥ ल० ॥ अचिरामात महार ॥ सा० ॥ कचनवर्ण तनु जेहनुं ॥ ल० ॥ ल० ॥ निरखत हर्ष अपार ॥ सा० ॥ ११ ॥ सात ईति विरमी सही ॥ ल० ॥ ल० ॥ सहु सुखीयो ससार ॥ सा० ॥ शाति प्रभुके राजमा ॥ ल० ॥ ल० ॥ वरत्यो जय जय कार ॥ सा० ॥ १२ ॥ वरस सहस पचवीश थया ॥ ल० ॥ ल० ॥ च क्रीपद पालत ॥ सा० ॥ अतिशय ज्ञानें हो आपणो ॥ ल० ॥ ल० ॥ नव देखे नगवत ॥ सा० ॥ १३ ॥ निर्मोही थइने रह्या ॥ ल० ॥ ल० ॥ नोग उपर अरिहंत ॥ सा० ॥ नव लोकांतिक देवनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ चलियां आसन संत ॥ सा० ॥ १४ ॥ आवे तिहां उतावला ॥ ल० ॥ ल० ॥ जिहां प्रभु शांति जिणद ॥ सा० ॥ बूफ बूफ नगवत जी ॥ ल० ॥ल०॥ परिहर मोहनो फद ॥ सा० ॥ १५ ॥ स्थापो तीरथ त्रिभुवनपति ॥ ल० ॥ ल० ॥ लोक सहू हितकार ॥ सा० ॥ चोवराजके चोकमें ॥ ल० ॥ ल० ॥ उंर न तारणहार ॥ सा० ॥ १६ ॥ एम सुर विनवियो विभु ॥ ल० ॥ ल० ॥ आपे वरसीदान ॥ सा० ॥ कारण कीध वसुधरा ॥ ल० ॥ ल० ॥ करे सुर नर गुण गान ॥ सा०॥ १७ ॥ चक्रायुध अगज नणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ स्थापे राज्य दयाल ॥ सा० ॥ आप थया अलवेश्वरु ॥ ल० ॥ल० ॥ दीक्षाने उजमाल ॥ सा० ॥ १८ ॥ आसन चलियां इइनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ जाएयुं अवधिज्ञान ॥ सा० ॥ संयमसिरि वरवा नणी ॥ ल० ॥ल०॥ थया उत्सुक नगवान ॥ सा० ॥ १ए ॥ चोसठ सुर

पति आविया ॥ ल० ॥ल०॥ देव देवी परिवार ॥सा०॥ प्रजु प्रणमी करे हर्षेछु ॥ ल० ॥ ल० ॥ दीक्षा महोत्सव सार ॥ सा० ॥ २० ॥ सरवार थ नामें जली ॥ ल० ॥ ल० ॥ शिबिका रची तेणि वार ॥ सा० ॥ वेठा जगगुरु ऊपरें ॥ल०॥ ल० ॥ जगजनके आधार ॥ सा० ॥२१॥ चामर वींजे सुरपति ॥ ल० ॥ल०॥ ठत्र धरु शिरदार ॥सा०॥ प्रथम ठपाडे मा नवी ॥ ल० ॥ ल० ॥ नरनो प्रथम अधिकार ॥ सा० ॥ २२ ॥ सुर अ सुरेंइ वहे पठी ॥ ल० ॥ ल० ॥ गरूल अने नागेंइ ॥ सा० ॥ शिबिका ठपाडे जिनतणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ धरता मन आनंद ॥ सा० ॥ २३ ॥ केइ गाये वाये रंगछु ॥ ल० ॥ ल० ॥ केइ नाटक करे सार ॥ सा० ॥ जाट परें विरुदावली ॥ल०॥ल०॥ सहु कहे जय जयकार ॥ सा० ॥२४॥ जुवनोत्तर गुणवर्णना ॥ ल० ॥ ल० ॥ करे सुरपति ससनेह ॥ सा० ॥ रासदायक नर आगलें ॥ ल० ॥ ल० ॥ नृत्य करे गुणगेह ॥ सा० ॥ २५ ॥ जंजा जेरी मृदंगनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ वाजे वाजित्र सार ॥ सा० ॥ जलमझल गाजी रखु ॥ ल० ॥ ल० ॥ डुडुनिध्वनि मनोहार ॥ सा० ॥ २६ ॥ हाहा हूहू वर गायना ॥ ल० ॥ ल० ॥ नाटकबध संगीत ॥ सा० ॥ रंजा तिलोत्तमा ऊर्वशी ॥ ल० ॥ ल० ॥ नाचती अनुजव रीत ॥ स० ॥ २७ ॥ वत्सवछु प्रजु आविया ॥ ल० ॥ ल० ॥ गजपुर नगर ठद्यान ॥सा०॥ सहस्राव वनमांहे आवीने ॥ ल० ॥ल०॥ ऊतरिया जगवान ॥ सा० ॥ २८ ॥ आजूषण ऊतारिया ॥ ल० ॥ ल० ॥ मूक्यो परिग्रह जार ॥ सा० ॥ पंच मुष्टि करे केशनो ॥ ल० ॥ ल० ॥ लोच सहस परि वार ॥ सा० ॥ २९ ॥ वस्त्राचल इंडें लीया ॥ ल० ॥ ल० ॥ क्षीरजलधि मांहे केश ॥ सा० ॥ वहेवाव्या रखे एहनी ॥ ल० ॥ ल० ॥ आशात न होय लेश ॥ सा० ॥ ३० ॥ तुमुल निवारे हो सुरविजु ॥ ल० ॥ ल० ॥ वरे प्रजुविरति सुनारि ॥ सा० ॥ ज्येष्ठ शित चउदशी दिने ॥ ल० ॥ ल० ॥ जरणीगत विधुचार ॥ सा० ॥ ३१ ॥ मुखे " नमोसि ध्दाण " जणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ प्रजु लिये संयमजार ॥ सा० ॥ पाठ सा मायिक ठच्चरे ॥ल०॥ल०॥ ठठ जत्त चोविहार ॥सा०॥३२॥ मन पर्यव नामें जलु ॥ ल० ॥ ल० ॥ संज्ञिमनोगत जाव ॥ सा० ॥ जाणे हो जेदथी निर्मला ॥ ल० ॥ ल० ॥ प्रगटयु तिण प्रस्ताव ॥ सा० ॥ ३३ ॥ चठना

दीवीधरा पांच लाख ॥ सा० ॥ साठ सहस दरबारमां ॥ ल० ॥ ल० ॥ पंमित पूरे साख ॥ सा० ॥ ६ ॥ साठ सहस बिरुदावली ॥ ल० ॥ल०॥ प्रतिदिन बोले नाट ॥ सा० ॥ त्रण लाख मत्रीश्वर कह्या ॥ ल० ॥ ल० ॥ अश नहिं वज्ञाट ॥ सा० ॥ ७ ॥ बत्रिश सहस नाटक जलां ॥ ल० ॥ ल० ॥ नव नव लील विलास ॥ सा० ॥ वीश सहस आगर तणो ॥ ल० ॥ ल० ॥ चाल्यो आवे धनराशि ॥ सा० ॥ ८ ॥ अक्षय खजीनो जेहनो ॥ ल० ॥ ल० ॥ किमही न खूटे सोइ ॥ सा० ॥ प्रमुदित सवि परजा जइ ॥ ल० ॥ ल० ॥ शांतिप्रनुमुख जोइ ॥ सा० ॥ ए ॥ चोसठ सहस करे नवां ॥ ल० ॥ ल० ॥ नित्यप्रत्यें रूप दयाल ॥ सा० ॥ वर तरुणीके विलासमां ॥ ल० ॥ ल० ॥ जातो न जाणे काल ॥ सा० ॥ ॥ १० ॥ विश्वसेन कुल दिनमणि ॥ ल० ॥ ल० ॥ अचिरामात मल्हार ॥ सा० ॥ कंचनवर्ण तनु जेहनुं ॥ ल० ॥ ल० ॥ निरखत हर्ष अपार ॥ सा० ॥ ११ ॥ सात ईति विरमी सही ॥ ल० ॥ ल० ॥ सहु सुखीयो ससार ॥ सा० ॥ शांति प्रनुके राजमां ॥ ल० ॥ ल० ॥ वरत्यो जय जय कार ॥ सा० ॥ १२ ॥ वरस सहस पचवीश थयां ॥ ल० ॥ ल० ॥ च क्रीपद पालंत ॥ सा० ॥ अतिशय ज्ञानें हो आपणो ॥ ल० ॥ ल० ॥ नव देखे नगवत ॥ सा० ॥ १३ ॥ निर्मोही थइने रह्या ॥ ल० ॥ ल० ॥ नोग उपर अरिहंत ॥ सा० ॥ नव लोकांतिक देवनां ॥ ल० ॥ ल० ॥ चलियां आसन तंत ॥ सा० ॥ १४ ॥ आवे तिहां उतावला ॥ ल० ॥ ल० ॥ जिहां प्रनु शांति जिणंद ॥ सा० ॥ बूऊ बूऊ नगवत जी ॥ ल० ॥ल०॥ परिहर मोहनो फंद ॥ सा० ॥ १५ ॥ स्थापो तीरथ त्रिजुवनपति ॥ ल० ॥ ल० ॥ लोक सहू हितकार ॥ सा० ॥ चौदराजके चोकमें ॥ ल० ॥ ल० ॥ उंर न तारणहार ॥ सा० ॥ १६ ॥ एम सुर विनवियो विप्नु ॥ ल० ॥ ल० ॥ आपे वरसीदान ॥ सा० ॥ करण कीध वसुंधरा ॥ ल० ॥ ल० ॥ करे सुर नर गुण गान ॥ सा०॥ १७ ॥ चक्रायुध अंगज नणी ॥ ल० ॥ ल० ॥ स्थापे राज्य दयाल ॥ सा० ॥ आप थया अलवे श्वरु ॥ ल० ॥ल० ॥ दीक्षाने उजमाल ॥ सा० ॥ १८ ॥ आसन चलियां इन्नां ॥ ल० ॥ ल० ॥ जाण्युं अवधिज्ञान ॥ सा० ॥ सयमसिरि वरवा नणी ॥ ल० ॥ल०॥ थया उत्सुक नगवान ॥ सा० ॥ १ए ॥ चोसठ सुर

मटी, मिथ्यात्वने काम ॥ वाख्या वैरी अनादिना, क्षायिकगुणधाम ॥ १२ ॥ आह्लादन अज्ञाननु, उघाडी नाख्यु ॥ निश नाठी वापडी, अनुजव सुख चाख्यु ॥ १३ ॥ अविरति नवि कन्नी रही, अलगांथी जाखी ॥ राग द्वेष वेग ठरी, हथियारने नाखी ॥ १४ ॥ दोष अढारथी वेगलो, प्रज्ञु शांति जिणंदो ॥ तिण वेला अनुजावथी, चलियांसन इंदो ॥ १५ ॥ सुर मलिया चार निकायना, ततक्षण तिहां आवे ॥ वायुकुमारा जूमिनो, योजन समरावे ॥ १६ ॥ मेघसुरा गधोदकें, रजजूमि समारे ॥ मणिमय पीठ रचे तिहां, अति हर्षे पमाडे ॥ १७ ॥ ज्ञुवनपतिने ज्योतिषी, वैमानिक देवा ॥ रूप कनक मणि रयणना, विरचे गढ देवा ॥ १८ ॥ चिहु दिशि द्वार विराजती, तोरणनी माला ॥ सुर नर मन मोही रहे, अति जाक जमाला ॥ १९ ॥ पावडिया शोजे जला, वीश सहसनी सख्या ॥ जूख तरष लागे नहीं, ते नयणें देख्या ॥ २० ॥ द्वादश गुण प्रज्ञु अगथी, तेह मध्य अशोक ॥ जे नजरें दीठे थके, नासे सवि शोक ॥ २१ ॥ चिहु दिशि सिंहासन जलां, ठत्रत्रय वारु ॥ चामर सुर व्यंतर सवे, विरचे दीदारु ॥ २२ ॥ अचिरानदन शांति जी, पूरव दिशि द्वारें ॥ पेसे तीर्थ नमस्करी, सुर सेवा सारे ॥ २३ ॥ पूर्वदिशें सिंहासनें, वेसे जिनदेवा ॥ प्रज्ञु प्रतिरूप करी ठवे, त्रिहु दिशि तिहां देवा ॥ २४ ॥ जामंमल पूठें धखु, करे कुसुमनी वृष्टि ॥ जानुप्रमाण निरतरें, थइ मन सतुष्टि ॥ २५ ॥ अवर वाजे डुंडुजि, जो जो जवि लोका ॥ जाण करे आवी नमो, ज्यु थाउं अशोका ॥ २६ ॥ वारे परिषद तिहा मले, जिन वाणी सुणेवा ॥ कर जोडी जावें रही, जवजय अवगणवा ॥ २७ ॥ सुर वनिता मुनि साधवी, त्रिहु अग्नि निकोणे॥ व्यंतर ज्ञुवन ने ज्योतिषी, त्रय नैरुत जाणे ॥ २८ ॥ ते सुर वायव्य कूणमां, वैमानिक त्रिदशा ॥ नर नारी ईशानमां, त्रिहु पर्षद सुयशा ॥ २९ ॥ एहवी वारे पर्षदा, मूल गढमा वेसे ॥ वीजा गढमांहे सवे, तिर्यंच शुचिदेशें ॥ ३० ॥ सौम्य तणा गढमा रहे, वाहन सवि जननां ॥ प्रज्ञु दरिसणथी नवि रहे, मत्सर निज मनना ॥ ३१ ॥ यडुक्तं ॥ सारगी सिंहशाव स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोतं, मार्जारी हंसबाल प्रणयपरिवशात्केकिकांता ज्ञुजंगम् ॥ १ ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोऽन्ये त्यजति, श्रित्वा

णी प्रभु विचरिया ॥ ल० ॥ ल० ॥ नहि मन मोहविकार ॥ सा० ॥ प्रभु निर्मोही वहीने ॥ ल० ॥ ल० ॥ पाछो वल्यो परिवार ॥ सा० ॥२४॥ इंद्रादिक सहु देवता ॥ ल० ॥ ल० ॥ नदीश्वर करे यात्र ॥ सा० ॥ गणतां सुरसुख तृण समु ॥ ल० ॥ ल० ॥ पावन कीधा गात्र ॥ सा० ॥ २५ ॥ खम्म ठठे नवमी नली ॥ ल० ॥ ल० ॥ ढाल दीक्षा अधिकार ॥ सा० ॥ राम कहे सुणता सही ॥ल०॥ल०॥ लहियें नवनिस्तार ॥सा०॥२६॥२०५॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजे दिन जिन शांतिजी,कोइ सन्निवेश मकार॥ परमान्नें करे पारणुं, सुमित्रतणे घरबार ॥ १ ॥ पच दिव्य परगट हुवा, साढी बारह कोडि ॥ वृष्टि थई सोवन तणी, पहोता वाछित कोड ॥ २ ॥ यडुक्तं ॥ अह्तेरस कोडी, उक्कोसा तब होइ वसुधारा ॥ अह्तेरस लरका, जहन्निया होइ वसुधारा ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ ग्रामाकर पुर विचरतां, शांतीश्वर जिन चंद ॥ अप्रतिबध षट् कायना, पालक महामुणिंद ॥ ३ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ आज सखी शखेश्वरो ॥ ए देशी ॥ चउनाणी चोखे चित्तें, जूमं मजमांहे ॥ सम तृण मणि नावे विभु, विचरे उत्साहें ॥ १ ॥ कल्पातीत तपथु नजे, कुविकल्प निवारी ॥ योगस्वरूपी योगना, धारक ब्रह्मचारी ॥ २ ॥ वरते शुद्ध मुनि नावमां, विरता दमवता ॥ साधक शिवपदर्पं पना, सूधा गुणवता ॥ ३ ॥ अमल अमायी अंतरें, खतीगुण पूरा ॥ पडिमा अनिग्रह धारता, मौनी प्रभु शूरा ॥४॥ आठ मास छद्मस्थमां, विचरी प्रभु आव्या ॥ गजपुर नयरें तिण वनें, जगतीजन नाव्या ॥ ५ ॥ पत्र फूल फलें नवतो, नदी तरु सोहे ॥ तिहां प्रभुजी पाउ धारीया, नविजन मन मोहे ॥ ६ ॥ शुक्लध्यानमा वर्त्तता, तप छठ चोविहार ॥ पोष नवमी तिथि कजली, निर्मल गुणधार ॥ ७ ॥ नरणी रुरु शशी आवियो, शुन वेला स्वामी॥ निर्मल ध्यानदशा वधी, चढते परिणामी ॥ ८ ॥ घाती कर्म क्षय घातिया, अविनाशी नावें ॥ उज्ज्वल केवल ऊपन्युं, निरुपाधि स्वनावें ॥ए॥ नासक लोकालोकनु, तिण वेला प्रगट्यु ॥ दोष अढारनु तिण समे, बल सघलुं विघट्यु ॥ १० ॥ अतराय अलगा थया, ड स्वदायी माठा ॥ हास्य अरति रति वेगली, नय सघलां घाठां ॥ ११ ॥ शोक डुगंछा सा

मटी, मिथ्यात्वने काम ॥ वाख्या वैरी अनादिना, क्षायिकगुणधाम ॥ १२ ॥ आच्छादन अज्ञाननु, उघाडी नाख्यु ॥ निशा नाठी वापडी, अनुजव सुख चाख्यु ॥ १३ ॥ अविरति नवि कनी रही, अलगांथी नांखी ॥ राग द्वेष वेगा ठरी, हथियारने नाखी ॥ १४ ॥ दोष अढारथी वेगलो, प्रजु शांति जिणंदो ॥ तिण वेला अनुजावथी, चलियासन इंदो ॥ १५ ॥ सुर मलिया चार निकायना, ततक्षण तिहां आवे ॥ वायुकुमारा नूमिनो, योजन समरावे ॥ १६ ॥ मेघसुरा गंधोदकें, रजनूमि समारे ॥ मणिमय पीठ रचे तिहां, अति हर्षे पमाडे ॥ १७ ॥ जुवनपति ने ज्योतिषी, वैमानिक देवा ॥ रूप कनक मणि रयणना, विरचे गढ देवा ॥ १८ ॥ चिहु दिशि द्वार विराजती, तोरणनी माला ॥ सुर नर मन मोही रहे, अति जाक जमाला ॥ १९ ॥ पावडिया शोजे जली, वीश सहसनी सख्या ॥ नूख तरष लागे नहीं, ते नयणें देख्या ॥ २० ॥ द्वादश गुण प्रजु अगथी, तेह मध्य अशोक ॥ जे नजरें दीठे थके, नासे सवि शोक ॥ २१ ॥ चिहु दिशि सिंहासन जला, छत्रत्रय वारु ॥ चामर सुर व्यंतर सवे, विरचे दीदारु ॥ २२ ॥ अचिरानंदन शांति जी, पूरव दिशि द्वारें ॥ पेसे तीर्थ नमस्करी, सुर सेवा सारे ॥ २३ ॥ पूर्वदिशें सिंहासनें, वेसे जिनदेवा ॥ प्रजु प्रतिरूप करी ठवे, त्रिहु दिशि तिहां देवा ॥ २४ ॥ जामंमल पूठें धखु, करे कुसुमनी वृष्टि ॥ जानुप्रमाण निरंतरें, थइ मन संतुष्टि ॥ २५ ॥ अंबर वाजे डुंडुनि, जो जो जवि लोका ॥ जाण करे आवी नमो, ज्युं थाउ अशोका ॥ २६ ॥ बारे परिषद तिहां मले, जिन वाणी सुणेवा ॥ कर जोडी जावें रही, जवजय अवगणवा ॥ २७ ॥ सुर वनिता मुनि साधवी, त्रिहु अग्नि निकोणे॥ व्यंतर जुवन ने ज्योतिषी, त्रय नैरुत्त जाणे ॥ २८ ॥ ते सुर वायव्य कूणमां, वैमानिक त्रिदशा ॥ नर नारी ईशानमां, त्रिहु पर्षद सुयशा ॥ २९ ॥ एहवी बारे पर्षदा, मूल गढमां वेसे ॥ बीजा गढमांहे सवे, तिर्यंच शुचिदेशें ॥ ३० ॥ रौप्य तणा गढमां रहे, वाहन सवि जननां ॥ प्रजु दरिसणथी नवि रहे, मत्सर निज मनना ॥ ३१ ॥ यडुक ॥ सारंगी सिंहशाव स्पृशति सुतधिया नंदिनी व्याघ्रपोतं, मार्जारी हंसवालं प्रणयपरिवशात्केकिकांता जुजंगम् ॥ १ ॥ वैराण्याजन्मजातान्यपि गलितमदा जंतवोऽन्ये त्यजंति, श्रित्वा

साम्यैकरूढप्रशमितकलुष योगिन क्षीणमोहम् ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ सा रंगी हरिबालने, सुतनी परें फरसे ॥ वाघशिशुने नदिनी, चाटे अति हर्षे ॥ ३२ ॥ मांजारी हसबालक्षु, रमे हर्षे नेली ॥ मोरवधू अहिशुं करे, क्रीडा मन मेली ॥ ३३ ॥ वैर टले आजन्मनां, प्रभुने महिमायें ॥ देव अवर कोइ एहवो, नवि दीगे महिमाये ॥ ३४ ॥ यदुक्त ॥ तीर्थकराणां साम्राज्यं० ॥ समवसरणस्थिति तेहवी, लवलेशथी दाखी ॥ हवे नि सुणो नवि देशना, जिनजी जे नाखी ॥ ३५ ॥ दशमी ढाल खमनी, कही ढाल सुरंगी ॥ रामविजय कहे साजलो, प्रभु देशना रंगी ॥३६॥३१४॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ नामधेय कल्याण एक, आवी पुरुषरतन्न ॥ चक्रायुध आगल कहे, वात करी स्थिर मन्न ॥ १ ॥ समवसर्या आवी इहां, श्रीशातिजिणंद दयाल ॥ प्रभु ए हर्ष वधामणी, हु लाव्यो नूपाल ॥ २ ॥ वात सुणी हर्षित थयो, देइ यथोचित दान ॥ प्रभुवदनने निसर्यो, चक्रायुध राजान ॥ ३ ॥ पांचे अनिगम साचवी, प्रभु वांदे नूपाल ॥ कर जोडी ऊनो रही, स्तवना करे रसाल ॥ ४ ॥ जय स्वामिन् जगदीश्वरु, जय त्रिभुवनजन बंधु ॥ नव अगाधतारक विभु, जय गुणमणिना सिंधु ॥ ५ ॥ नवजल पडतां जीवने, तारक तुम्हो जहाज ॥ पूरण पुण्यें मुजने, मलिया श्री जिनराज ॥ ६ ॥ ध्येय अनंतर सांनरो, ध्यायकने निजनाव ॥ दायक मुज ऊपर करो, प्रभुजी करुणानाव ॥ ७ ॥ छे अनंत गुण ताहरा, तेह मां एक गुण मुज ॥ देतां सेवक दुःख टले, दाम न बेसे तुज ॥ ८ ॥ दी नोद्धरण धुरंधरा, हे अनाथना नाथ ॥ देखी हु तुम मुखकमल, जगमां हुवो सनाथ ॥ ९ ॥ नमी स्तवी जिनराजने, नातिदूर नवि पास ॥ बेसी निसुणे देशना, चक्रायुध उल्लास ॥ १० ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ हस्तीनागपुर वर नलु ॥ ए देशी ॥ वर पांत्रीश वाणीगुणें, संयुत अतिशयनंमार रे ॥ प्रभु वरसे तिहां देशना, जेम जग पुष्कर जलधार रे ॥त्रूटक॥ जेम जगपुष्कर जलधार इसी, जिनदेशना सुखकार रे ॥ सुखकार सुणो अविकार, निरामयकारिणी सुविचार रे ॥नि०॥१॥ ए आंकणी ॥ राजन् बाह्य ए शत्रुनुं, सबलु तें टाल्यु जोर रे ॥ पण अद्यापि न वश कर्या, निज

देहमां इंद्रिय चोर रे ॥त्रू०॥ निजदेहमां इंद्रिय चोर करे, अनरथ घणो गुण काजें रे॥ गुणकाज अनादिनो जीव फिरे, जग वाउलो गतलाज रे ॥ज०॥२॥ शब्द रूप रसगंधना, वाह्या वली फरस ने फंद रे॥ जाण अजाण थई रह्या, एह सेवे ते सहि मंद रे ॥त्रू०॥ एह सेवे ते सही मंद कह्या, जिनआगमें गुणहीन रे ॥ गुणहीन ए दीन थइने फरे, रोष रागमें लयलीन रे॥ रो० ॥३॥ व्याधि लहे ते व्याधना, जेम निसुणी गीत सराग रे ॥ मरण लहे ते हरिणलो, तेम रागी सुणो वडनाग रे ॥ त्रू० ॥ तेम रागी सुणो वडनाग वैराग्यने, आदरो गुणवंत रे ॥ गुणवंत न कीजें कंत शब्द, सुणी आदरो मतिमंत रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ लोचन इंद्रिय चपलता, चलता मननी बहु थाय रे ॥ मनचलताये जीवडो, फरि फरि चिहु गतिमां जाय रे ॥ त्रू० ॥ फरि फरि चिहु गतिमा जाय नयण रस, राचियां जग नूंठ रे ॥ जग नूंठ लहे ते मृत्यु पतंग, ज्यु वंचिया नहि उंच रे ॥ ज्यु० ॥ ५ ॥ स्वादें जे छन्न रस तणी, रसनावशवर्त्ती जीव रे॥ कटुक विपाक लहे घणा, परनव नरकें करे रीव रे ॥त्रू०॥ परनवें नरकें करे रीव सदेव, ते सुखीया जगमांही रे॥ जगमा मरे मीन तणीपरें, ते सही डुखिया गतछाय रे ॥ ते० ॥६॥ गंध शुन्नाशुन्न कारणें, बहु जीव तणो करे नाश रे॥ पोषे हो इंद्रिय नासिका, नवि जोवे मूढ विमास रे ॥त्रू०॥ नवि जोवे मूढ विमासी, बांधे राशि पापनी जेम नृग रे ॥ जेम नृग लह्यो डुख तेम गर्धे, गति आपणी मति नग रे ॥ग०॥७॥ फरस आवमादे जिके, ललचाणा लालचपूर रे॥ बहु आरंन करे सदा, तेहने सद्गति रही दूर रे ॥त्रू०॥ तेहने सद्गति रही दूर सही जेम, हाथीयें पर हाथ रे॥ परहाथ लही जेम वेयण तिम, नृप जीवडो ए अनाथ रे॥नृ०॥ ८ ॥ जे गुणठाण ते मूल ठे, जे मूल ते वलि गुणठाण रे ॥ हेतु हेतुमद्भावथी, बीजांकुरन्याय सुजाण रे ॥ त्रू० ॥ बीजांकूरन्याय सुजाण, अजाण ए आदरे निरुपाय रे ॥ निरुपाय करे जिनधर्म ते, सही सुखने वरे शिवठाय रे ॥ स० ॥ ए ॥ आखर ए सही विणसशे, ठेह देई जाशे एह रे ॥ त्यारें तु फूरीश अति घणो, मार्टे म कर विषय सनेह रे ॥ त्रू० ॥ मार्टें म म कर विषय सनेह चक्रायुध, राजीया गुणगेह रे ॥ गुणगेह अ वेहने नेहें, रमो रस रंजीया शुचिदेह रे ॥ र० ॥ १० ॥ एहवा जाणीनें जेणें तज्या, तेहना जग सरिया काज रे ॥ जेम गुणधर्म कुमार जी, तजी

विषय लघु शिवराज रे ॥ नू० ॥ तजि विषय लघु शिवराज कहे, एम सां तिजी जगवान रे ॥ तब चक्रायुध कर जोडी कहे, कहो तातजी अपमान रे ॥क०॥ ११ ॥ कुण गुणधर्मे किहा थयो केम, विषय तज्या तेणें सामी रे॥ तास कथा मुजने कहो, केम आव्यो शुजपरिणाम रे॥नू०॥ केम आव्यो शुन परिणाम कहे, तव केवली जगवत रे॥ जगवत अनत गुणाकर, कहे मननी रली सुणो सत रे ॥ क० ॥ १२ ॥ जरतें सोरीपुर नयरमां, दृढधर्म हूउं रा जान रे ॥ तस घरणी शीलशालिनी निज, पीयुनु लहे बहु मान रे ॥नू०॥ निज पियुनुं लहे बहु मान अमान, गुणें जरी वर नारी रे ॥ वर नारी ल ज्ञालु विनीत, गुणाकर सुदरी सुखकार रे ॥ गु० ॥ १३ ॥ सुख जोगवतां कतणुं, सुत जायो एक रतन्न रे ॥ नामें जलो गुणधर्मजी, मायडी करे तास जतन्न रे ॥ नू० ॥ मायडी करे तास जतन्न, कला सघली जण्यो गुण वत रे ॥ गुणवत महंत हुउं सत्यवत, सोहामणो बलवत रे ॥सो०॥१४॥ यौवन वयमां आवीयो, तेह सकल कलानो जाण रे ॥ मात पिता मन वालहो, गुणधर्म कुंवर कुलजाण रे ॥ नू० ॥ गुणधर्म कुवर कुलजाण, सुजग सरलाशयी प्रियवाण रे ॥ प्रियवाण हिताहित जाण, सज्जन जन आश्रमी गुणखाण रे ॥स०॥१५॥ नयर वसतपुरें वसे, इण समे नृप ईशा नचइ रे ॥ कनकवती कनी तेहनी, तस स्वयंवर मामघो नरिंद रे॥ नू० ॥ तस स्वयंवर काजें दूत समाजें, आवीयो वजमाल रे॥ वजमाल सुणी गुणधर्म, कुमार जी चालीयो ततकाल रे ॥कु०॥१६॥ आव्यो वसतपुरें तदा, रहे ते नृप दश आवास रे ॥ एकदिन स्वयंवर देखवा, गुणधर्म गयो उल्लास रे ॥नू०॥ गुणधर्म गयो तिहां पण तेह आवी, नृपनी कनी तेणी वार रे ॥ तेणी वार जोतां तुरंत, लागी दृष्टि रागनी निर्धार रे ॥ ला० ॥ १७ ॥ नयणें थइ ने प्रीतडी, पेठी ते हैयडामांय रे ॥ चित्तमांहि लागी चटपटी, तेह निज निज मदिर जाय रे॥नू०॥ तेह निज निज मदिर जाय के नेह, नयणतणे जण दोय रे ॥ जण दोय चितारे चित्त, एकेकने अतिघणे मन मोह रे ॥ए०॥ ॥१८॥ ठ्ठे अगीयारमी ढालमां, कहे शांतिजिणद दयाल रे॥ काम महाग्रह जेहने, तस न मटे कल्पनाजाल रे ॥नू०॥ तस न मटे कल्पनाजाल, विषय विरुद्ध सहि दुःखदाय रे ॥ दुःखदाय कह्यो जिनराय ए, वात जूठी नही जगमांय रे ॥वा०॥१९॥ सर्वगाथा ॥२४२॥ श्लोक तथा माथा मली ॥४॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती चित्तमां वस्यो, श्री गुणधर्म कुमार ॥ रात दिवस तस रूपमां, मोही मोहविकार ॥ १ ॥ प्रेमसमो पावक नहि, प्रेम समुं नहि पाप ॥ प्रेम वडू परवशपणु, ए सम नहिं संताप ॥ २ ॥ प्रेम तणो "प्रे" लेइने, यमनो लेइ "मे"कार, "प्रेम" शब्द एम निपन्यो, जिणथी दुःख दातार ॥ ३ ॥ कनकवती मन समरतो, श्रीगुणधर्म कुमार ॥ निज उतारे आवीयो, पण जक नहि लगार ॥ ४ ॥ रातें मूकी कुमरीयें, दासी तेह नी पास ॥ एक पाटी चित्रामनी, कर दीधी तस खास ॥५॥ कुमरें दीठी पट्टिका, तिहां कलहंसी रूप ॥ श्लोक एक तेहने तलें, वांचे कुमर स्वरूप ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ आदौ दृष्टप्रिया सानु, रागाऽसौ कलहंसिका ॥ पुनस्तद्दर्शन शीघ्र, वाञ्छत्येव वराक्यहो ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ नावाशय लही तेहने, रीझ्यो कुमर अपार ॥ रूप लखी कलहंसनु, श्लोक लखे तेणि वार ॥७॥ तद्यथा ॥ कलहंसोऽप्यसौ सुभ्रु, क्षण दृष्टानुरागवान् ॥ पुनरेव प्रिया दृष्टु, महो वांछत्यनारतम् ॥ २ ॥ पूर्वदोहा ॥ कनकवती कुमरी वली, सरस सुगधां फूल ॥ दासी सार्थे मोकले, विलेपन तांबूल ॥ ८ ॥ पुष्प लेइ शिर पर धर्या, मुख चावे तांबूल ॥ अंगविलेपन चोपड्यु, कुवर गुणें अमूल्य ॥ ए ॥ दान दिये संतोषनु, उज्ज्वल मोतीहार ॥ ते कहे सुण कन्या तणो, एक संदेशो सार ॥ १० ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ काठेलानां गीतनी देशी ॥ कहे कर जोडी राजने ॥ वाहालेश्वर ॥ मुज स्वामिनी अरदास ॥ पियु तुम प्रेमपयोधिमां ॥ वा० ॥ मग्न नइ सुविलास ॥ १ ॥ रात दिवस मुज हृदयमां ॥ वा० ॥ मोरने ज्युं जलधार ॥ लागी मुज तुज मोहनी ॥ वा० ॥ न गमे हो अवर विचार ॥ २ ॥ में तुम कंठें स्थापवी ॥ वा० ॥ परजातें वरमाल ॥ कोइ दिन विषयने पहखवो ॥ वा० ॥ थावु न अति उजमाल ॥ ३ ॥ कुमरें हो मानी वातडी ॥ वा० ॥ दासी आवी फरी गेह ॥ कनकवतीने मांडीने ॥ वा० ॥ वात कही ससनेह ॥ ४ ॥ हरिणाक्षी हरखी हैये ॥ वा० ॥ प्रगट हूउं पर भात ॥ स्वयंवर आवी रंगशुं ॥ वा० ॥ वस्यो गुणधर्म सुजात ॥ ५ ॥ साजन जन सहु हरखिया ॥ वा० ॥ हरख्यां हो माय ने तात ॥ सरखी

मली ए जोडली ॥ वा० ॥ उलट अग न मात ॥ ६ ॥ करे उत्सव विवा हना ॥ वा० ॥ ईशानचंड् नूपाल ॥ परणावी निजपुत्रिका ॥ वा० ॥ वरती हो मगलमाल ॥ ७ ॥ ससरे बहु धन आपीयु ॥ वा० ॥ मणिमय नूषण सार ॥ हय गय रथ दीधा घणा ॥ वा० ॥ कहे सहु जय जयकार ॥ ८ ॥ बोलावे निज कुंवरी ॥ वा० ॥ शुनदिन जोइ विशेष ॥ शिखाम ण देई घणी ॥ वा० ॥ मात पिता हित लेख ॥ ए ॥ नक्ति करेजो कंत नी ॥ वा० ॥ आण वहेजो अखंम ॥ सगति मत करजो कदा ॥ वा० ॥ जे होवे फुर्जन लंठ ॥ १० ॥ सासु ससराजी तणो ॥ वा० ॥ विनय म चूकीश सार ॥ नोजन तु करजे पढें ॥ वा० ॥ जमी रहे सवि परिवार ॥ ११ ॥ तुकारो नवि दीजियें ॥ वा० ॥ कहियें न मर्म निटोल ॥ वैर वधाये आकरां ॥ वा० ॥ बोलतां कहुवा रे बोल ॥ १२ ॥ सज्जन ज ननी सेवना ॥ वा० ॥ कीजें हो हर्षे रे धाय ॥ नीच निरखर व्यसनी तणी ॥ वा० ॥ ऊना न रहीयें रे ठाय ॥ १३ ॥ शील अखमित पालजे ॥ वा० ॥ कुलवधू नाम धराय ॥ शोना सबल उपराजजे ॥ वा० ॥ वहे ली हो मलजे रे आय ॥ १४ ॥ सूजे पियु सूता पढी ॥ वा० ॥ जागजे पहेली प्रनात ॥ शोक्य सहूमांहे सही ॥ वा० ॥ नाम धरावे सुजात ॥ १५ ॥ शुं तुऊने कहीयें घणु ॥ वा० ॥ सहजगुणें तु सुशील ॥ दान देवाने अवसरें ॥ वा० ॥ बाइ म थाजे थरवील ॥ १६ ॥ गुण सवि धारे अगमां ॥वा०॥ अवगुण अलगा निवार ॥ देव गुरुना विनयमां ॥वा०॥ स्वा मी न करशो लगार ॥ १७ ॥ नणद जेठाणीशुं नमी ॥ वा० ॥ चालजे ए अम शीख ॥ विनय वडानो जालवे ॥ वा० ॥ कोनी म नांजीश नीख ॥ १८ ॥ शिख धरी शिर ऊपरें ॥ वा० ॥ चाली हो कतनी साथ ॥ सहु शुं जुहार करी चल्या ॥ वा० ॥ दंपती दोय सनाथ ॥ १९ ॥ अनुक्रमें आव्या निजपुरें ॥ वा० ॥ नामिनी ने नरतार ॥ नृप परिजन आनंदी या ॥ वा० ॥ वाध्यो हो प्रेम अपार ॥ २० ॥ उतारी एक मंदिरें ॥ वा० ॥ कनकवती नृपनंद ॥ प्रेमविलुब्धो हो प्राणीयो ॥ वा० ॥ महोटो ए मोहनो फंद ॥२१॥ मनमा वसी ते मानिनी ॥ वा०॥ पण मुखथी न कहाय ॥ एक दिन देखी कंतनें ॥ वा० ॥ कामिनी ऊनी रे थाय ॥२२॥ मांमयुं आसन वेसवा ॥ वा० ॥ ऊनी हो जोडी हाथ ॥ चित्त चपल

देखी तदा ॥ वा० ॥ विनवे सुणो प्राणनाथ ॥ २३ ॥ कहो एक कोइ प्रहेलिका ॥ वा० ॥ अभिनव अर्थ बनाय ॥ तुम साथे पियु गोष्ठिनो ॥ वा० ॥ मुज मन हर्ष न माय ॥ २४ ॥ तदा गुणधर्मेणोक्त ॥ दोहो ॥ स्थल जाता जल उपरें, चाले जल न नराय ॥ जे नित्य लोक प्रतारिणी, नारी कोण कहाय ॥ १ ॥ उत्तर ॥ होडी ॥ प्रश्न ॥ मुख अनेक अवगुण ग्रहे, पडतो महेले सार ॥ नाटक करे कर पाय विणु, नारी कोणविचार ॥२॥ उत्तर ॥ चालणी ॥ प्रश्न ॥ चार पयोधर आक्रमी, नरखधे चढि जेह ॥ तन्वगी गुणसयुता, कामिनि कहो कुण तेह॥ ३ ॥ उत्तर ॥ कावाकृति ॥ पुनस्तयोक्त ॥ चातक शब्द किस्यो कहे, जग सहु माथे जेह ॥ दोय पद भेला मुजने,क्षण नवि विसरे तेह ॥४॥ उत्तर॥ पियुनाम ॥ पूर्वढाल॥ एम विलासनी वातडी ॥ वा० ॥ करि गुणधर्म कुमार ॥ आव्यो निजमदिर भणी ॥ वा० ॥ धरतो हर्ष अपार ॥ २५ ॥ छठे हो बारमी ढालमां ॥ वा० ॥ सबल ए मोहविकार ॥ लालच विषयनी पाडुई ॥वा०॥ विहु भव उ खनी देनार ॥ २६ ॥ सर्वगाथा ॥३७३॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥६॥

॥ दोहा ॥

॥ बेठो ते आस्थानमा, बहु सेवक परिवार ॥ परिव्राजक एक आवियो, कहे आवी प्रतिहार ॥ १ ॥ तेडाव्यो नृपनदनें, आप्युं आसन सार ॥ कुशलागम पूछे तदा, श्री गुणधर्म कुमार ॥ २ ॥ भु भैरवाचार्यनो, शिष्य मोकल्यो तेण ॥ तुम आकारण कारणें, न लहु कारण केण ॥ ॥ ३ ॥ किहा भैरवाचार्य छे, ते कहे अमुक स्थान ॥ पुर बाहिर मुज साथ तुम, आवो सुगुणनिधान ॥ ४ ॥ सध्यासमय लही तदा, कहे कुमार सुण स्वामि ॥ सही प्रभातें आवशु, तिहांकणे हु हितकाम ॥ ५ ॥ बोलाव्यो उत्तर कही, नृपनदन निजधाम ॥ सुखनिद्रामां यामिनी, वीती जाग्यो ताम ॥ ६ ॥ कृत्य करी परभातनां, लेई निज परिवार ॥ भैरवपासें आवीयो, नृपनदन तेणि वार ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ गगाधरने करी जुहार ॥ ए देशी ॥ व्याघ्रचर्म उपर आसन, दीठो योगी ध्यानें लीन ॥ शिर नामीने लागे पाय, कर-जोडी उभो तिण ठाय ॥ १ ॥ देखी कुमर ससभ्रम होय, बेसाडे निज आसन सोय ॥ योगी

हैये हर्ष बहु धरी, बोलाव्यो ते आदर करी ॥ २ ॥ कहे विनीत गुण धर्मकुमार, जगवन् न घटे ए आचार ॥ गुरु सम आसन बेसे जेह, डुर्विनीत नर कहियें तेह ॥ ३ ॥ तमें महोटा योगीश्वर जाण, अमने मानेवी तुम आण ॥ तुम तूठे आपद सवि टले, मनोवांछित आवीने मले ॥ ४ ॥ निज पदाति वस्त्रोपरि तेह, वेगे कुमर धरी मन नेह ॥ मुज नगरी पाव धारो आज, सबल वधारो महारी लाज ॥ ५ ॥ कहे योगी सुण राजकुमार, तु मुज मान्य सही निर्धार ॥ पण निःकिंचन हुं महाराज, शी तुम नक्ति करु हु आज ॥ ६ ॥ कहे कुमर तुमची आशीष, ए अम लक्ष कोटी बकशीस ॥ कहे योगी ते साचु कह्यु, पण लौकिकमां एवु लह्यु ॥ ७ ॥ यत ॥ नक्ति प्रेम प्रियालाप, सन्मान विनयस्तथा ॥ दानेन हि विना लोके, सर्वमेतन्न शोनते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ कहे कुमर पुन रपि एम वाणी, सुनजरें जुवो तमें गुणखाण ॥ करो आज्ञा अमने जे संत, ए तुम कहियें दान महंत ॥ ७ ॥ कहे योगी सुण नइ कुमार, ठे मुज पासें मंत्र उदार ॥ आठ वरस थयां करता जाप, श्रम कीधो में बहुलो आप ॥ ए ॥ तास विघन प्रतिघातक थाय, जो तु एकरयण इण गाय ॥ तो प्रयास सफलो होवे सही, एह वात नैरव मुख कही ॥ १० ॥ कहे कुमर कर जोडी ताम, हुं बु स्वामि तुमारे नाम ॥ कहो तेणें दिन आवु तुम पास, साधो मंत्र तमें उल्लास ॥ ११ ॥ कहे योगी कालीचउ दशी, प्रेतवने आवेवु निशि ॥, हु पण त्रिहु शिष्यनी सघात, आवीश तिहां निसुणी एम वात ॥ १२ ॥ कुवर प्रणाम करी घेर गयो, योगी मनें अति हर्षित थयो ॥ घर जइ चउदश दिवस सुजाण, आव्यो मसा णे कुवर असिपाण ॥ १३ ॥ शिष्य सघातें योगी ताम, आव्यो कुंवर करे परणाम ॥ कहे योगी थाजे हुशियार, मुज राखणनें साहस धार ॥ १४ ॥ कहे कुमर चिंता मत धरो, सुखें तमें मंत्रसाधन करो ॥ कुण तुम साहामु नाली शके, खड्ग जाली उनो नवि चके ॥ १५ ॥ मंमल करी एक शब स्थापियो, अग्नि प्रजाली होमविधि कियो ॥ इण असरें प्रकट्यो निर्घात, विश्व बधिर करतो साक्षात ॥ १६ ॥ थइ द्विधा धरती तिण वार, नीसरियो नीषण आकार ॥ काल कराल वडो यमदूत, प्रकट थयो तिहां एक अद्भुत ॥ १७ ॥ सु तें नवि जाण्यो मेघनाद, क्षेत्रपाल

कहे महोटे साद ॥ मुझ पूजा विण कीधे एम, मत्रसिद्धि तु चाहे केम ॥ १७ ॥ ए पण राजतनय अज्ञान, तें जोलवियो मति विज्ञान ॥ एम कही तेणे कियो सिंहनाद, क्षेत्रपालें मांड्यो उन्माद ॥ १९ ॥ ते त्रण शिष्य योगीना जेह, पडिया उछलीने जूयें तेह ॥ बोल्यो कुवर मन साहस धरी, फोकट शु गाजे मति फरी ॥ २० ॥ जो क्षेत्रपाल तु अति बलवत, तो युद्ध कर मुझ सार्थे महत ॥ तेहने निरायुध देखी कुमार, मूके खड्ग दूरें तेणी वार ॥ २१ ॥ बेहु सन्मुख आवीने अड्या, जुज दण्डें माहोमाहे जड्या ॥ बेहु बलीया कोइ नवि लडथडे, पगपडछंदें धर धडहडे ॥ २२ ॥ वज्रसार निजभुज जीडियो, कुमरें क्षेत्रपाल पीडियो ॥ तस साहस देखी थयो तुष्ठ, बोल्यो माग माग वत्स इष्ट ॥ २३ ॥ कहे कुमर मूकी जो देव, थया सुप्रसन्न मुझ उपरें हेव ॥ तो मुझ ऊपर करुणा धरो, योगीनु मनोवाछित करो ॥ २४ ॥ कहे क्षेत्रपाल एहनो सिद्ध मत्र, थयो तुझ महातम गुणवत ॥ सकल समीहितने पूरशे, चिंता सवि मननी चूरशे ॥ २५ ॥ पण तु मनोवाछित मुझ पास, माग माग वत्स सुगुणनिवास ॥ महाजाग्यें दरिसण देवनु, निष्फल नवि थाये नीपन्यु ॥ २६ ॥ कहे कुमर तो तेम करो स्वामि, कनकवती होवे माहरे नाम ॥ परणी पण वाछे नवि जोग, कर्म तणो ए महोटो रोग ॥ २७ ॥ कहे ज्ञानें जोई क्षेत्रपाल, वश थाशे तहारे जूपाल ॥ मुझ प्रजाव कामितरूप हशे, तेहथी काज सकल सीझशे ॥ २८ ॥ वर देइ पहोत्यो निज गाम, योगी प्रशसे कुमरने ताम ॥ साहसिक तुझथी मुझ काम, सीध्यु राखी तें मुझ माम ॥ २९ ॥ अवसर मुझने सजारजो, काम काज वलि फरमावजो ॥ एम कहीने योगी चालियो, कुवर निजमदिर हालियो ॥ ३० ॥ निज आवास कुवर आवियो, साजन जन मनमा जावीयो ॥ ढाल छठे खडें तेरमी, सांजलतां श्रोता मन गमी ॥३१॥४२१॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ अग पखाली आपणु, धरतो हर्ष अत्यंत ॥ वीर वेष मूकी शयन, कीधु थइ निश्चिंत ॥ १ ॥ हवे बीजे दिन यामिनी, पहोर एक गइ जाम ॥ अदृश्य रूप लेइ रमणी, मदिर पहोतो ताम ॥ २ ॥ कनकवती दीठी तिहा, दोय दासी बेहु पास ॥ वात करे ते रगनी, निसुणे कुमर उल्लास ॥ ३ ॥

॥ ढाल चौदमी ॥

॥ वीर जिणेसर चरणकमल ॥ ए देशी ॥ कनकवती राणी तदा, चित्त चचल जाणी ॥ कारण कांइक ए सही, कुमरें पहिचाणी ॥ १ ॥ चरित्र जोउ नारीतणा, किहां जाये एह ॥ विषय न वांछे मुणसुं, केम चचल तेह ॥ २ ॥ पासें आवी उनो रह्यो, पण सा नवि देखे ॥ कनकवती दासी नणी, पूछे सुविशेषें ॥ ३ ॥ रात गइ छे केटली, कहे स्वामिनि वेला ॥ तिहांकणे जावानी थइ, हवे करो सलीला ॥ ४ ॥ तुरत उठी उतावली, नाही मन रगें ॥ अग विलेपन अति नला, दीपे शुचि अगें ॥ ॥५॥ वस्त्र नलां पहेस्या वली, आनरण अमूल ॥ हार हैये सोहे नवलखो, नाके नथफूल ॥ ६ ॥ घम घम घमके घूघरी, नूपुर पाय सोहे ॥ शोल शृगार कस्या नला, रूपें मन मोहे ॥ ७ ॥ देवकुवरी सम उपती, रूपवती रामा ॥ नर यौवनमाहे नामिनी, शोने घणु श्यामा ॥ ८ ॥ देवावास समान एक, रचीयुं ए विमान ॥ कुंवर जोइने थयो, मनमां हेरान ॥९॥ आवी बेसे कामिनी, दासी सघातें ॥ कुवर चिते चित्तमा, जनो एकांतें ॥ १० ॥ एता दिन हु जाणतो, ए दीसे सुहाली ॥ पण जोरावर ए घणु, नजरें में नाली ॥ ११ ॥ कामिनी न होय केहनी, वानां सो कीजें ॥ पण एहना अतरगनी, नवि वात लहीजें ॥ १२ ॥ यत ॥ रवि चरियं० ॥ जलमज्जे० ॥ मुख वोले मीठी घणु, मनमाहे धीठी ॥ लारी सरीखी कामिनी, सृष्टियें अवली न दीठी ॥१३॥ यत ॥ आवर्त्त सशया नां० ॥ नर नोलाने नोलवे, मानिनी मतवाली ॥ विफरी वाघणनी परें, विरुई विकराली ॥ १४ ॥ पण जोउ एक वार हु, जाये जिहां थावी ॥ केड न मूकुं एहनी, पाशे जे नावी ॥ १५ ॥ एम विमासी विमानमां, बेठो एक देशें ॥ वात करे त्रणे मली, चाली आकाशें ॥ १६ ॥ दूरें रह्यो सवि सानले, गुणधर्म सोनागी ॥ नारीचरित्र जोवा तणी, मनमां रढ लागी ॥ १७ ॥ उत्तरदिशें उतावलु, ते चाल्यु विमान ॥ कुवर मन मांहे धरे, नगवतनु ध्यान ॥ १८ ॥ दूरें जइने उतर्यु, आकाशथी हेठु ॥ वन अशोकने आंतरे, एक सरोवर दीठु ॥ १९ ॥ स्थानक ते रलिया मणु, शोना अति सारी ॥ देखीने ते उतरी, दासीयु नारी ॥ २० ॥ एक विद्याधर तिहां अछे, आवी तस पासें ॥ कनकवती कर जोडीने, प्रणमे

उल्लासें ॥ २१ ॥ पासें वेठी कामिनी, कुवर पण वेठो ॥ चिंते कौतुक एहवो, किहांये नवि दीठो ॥ ॥ २२ ॥ अन्य वली आवी तिहां, रामा त्रण रूडी ॥ ते विद्याधरने नमी, वेठी नहीं कूडी ॥ २३ ॥ अन्य वली आव्या तिहां, खेचर बहु वलिया ॥ ते विद्याधरशुं सवे, आवीने मलीया ॥ २४ ॥ ते वनमां एक देहरु, आदीश्वर केरु ॥ दंम कलश ध्वजें शोभतु, दीपे ते भलेरु ॥ २५ ॥ ते सहुये तिहां आवीया, जिन भक्तिने काजें ॥ नाटक वारक केहनो, पूठ्यु खेचरराजें ॥ २६ ॥ कनक वती उठी तिहां, परिधान समारी ॥ मांमे ते मनमोदशुं, नाटकविधि सारी ॥ २७ ॥ हाव भाव दाखे भला, नाचे तन वाली ॥ थेइ थेइ पाठ मुखे भणे, अगें सुकुमाली ॥२८॥ त्रणे सही जोडें रही, एके वीणा वाइ॥बीजी वेणु वजाडती, जिनना गुण गाइ ॥ २९ ॥ त्रीजी ताल देई करी, गाये तस जोडें ॥ गुणवती चारे मली, नाचे मन कोडें ॥ ३० ॥ पास रह्यो देखे सहु, गुणधर्म कुमार ॥ विस्मय पाम्यो चित्तमां, जोइ नाटक सार ॥ ३१ ॥ नाच करंतां नारीनी, पडी किंकणी माला ॥ लघुकलशु कुवरें ग्रही, करशु तेणी वेला ॥३२॥ नाटक अतें जोश्यु, नवि दीठी तेणें ॥ मनमांहे चिंता उपनी, एह लीधी केणें ॥ ३३ ॥ निज निज स्थानक सहु गया, नारी सघातें ॥ कुवर निजपुर आवीयो, तेह पाछली रातें ॥ ३४ ॥ निज घर आवी विमानथी, उतरी ते वेला ॥ हर्षेशु सूतो जइ, कुवर निजशाला ॥ ३५ ॥ ठठे खमें चौदमी, ढालें सुणो साचु ॥ राम कहे विषया समु, काम कोइ न काचु ॥ ३६ ॥ सर्वगाथा ॥ ४६० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ परभातें तेडी कुमर, मंत्रीसुत निज मित्र ॥ आपी किंकणीमालिका, समजावी सवि सूत्र ॥ १ ॥ तुम पासें ए राखजो, बधव सुणो विचार ॥ अवसर जोई आपजो, कनकवतीने सार ॥ २ ॥ एम शिक्षा देइ करी, मित्रसाथें गुणधर्म ॥ नारीमंदिर आवीयो, करवा चिंतित कर्म ॥ ३ ॥ उठीने उभी थई, प्रमदा गुणनी खाण ॥ आप्यु आसन वेसवा, आगल रही सुजाण ॥ ४ ॥ कुमर कहे मांमो तमें, रामत पासा सार ॥ रमवा वेठा बिहु जणा, आणी हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ रूडी रूडी रामतडीने रसें परवश थयो रे लाल ॥ ए देशी ॥ रंग नरी रूडी रे वेहु रामत रमे रे लाल, खेले खेले कनकवती ने कंत ॥ रंग रगीला रे पासा सोगठा रे लाल, हसी हसी नाखे दाव ग्रलसत ॥ १ ॥ रगनरी० ॥ ठेल ठबीला रे वेहु जोडें रह्या रे लाल, नोली नोली न लहे मनहानी वात ॥ करि करि चतुराइ दावने चालवे रे लाल, जोइ जोइ हार्वे कीयो पियु मात ॥ रग० ॥ २ ॥ देजें हरिणाक्षी रे कहे निज कंतने रे लाल, पियु एक ग्रहणक मुऊने सार ॥ मित्रनी सहामुं रे तेणें अवलो कीयु रे लाल, आपी आपी मित्रें हो माला तेवार ॥ रग० ॥ ३ ॥ देखीने वोली रे किंकणीमालिका रे लाल, आवी आवी किहांथी तुमारे हाथ ॥ कहे प्रीतम तुमें ए पाडी किहां रे लाल, न लहु न लहु किहा पाडी प्राणनाथ ॥ रंग० ॥ ४ ॥ वालम मुऊने दाखो ए किहांयकी रे लाल, लाधी लाधी आज तुम्हें अवनीश ॥ कुमर कहे मुऊ मित्र लहे सहु रे लाल, कहेशे कहेशे तुऊने धरीय जगीश ॥ रग० ॥ ५ ॥ ठे नैमित्तिक माहरो मित्रजी रे लाल, जाणे जाणे एह सयल अवदात ॥ ते कहे कनकवतीने हु सही रे लाल, धारी धारी कालें कहीश अवदात ॥ रंग० ॥ ६ ॥ ते बेहु आव्या रे आपण मदिरें रे लाल, कनकवती कहे रे एम ॥ सहीयर ठानी रे वात ए आपणी रे लाल, वहेली वहेली कतजीयें लही केम ॥ रंग० ॥ ॥ ७ ॥ जाणी होशे छुं माहरी वातडी रे लाल, बोले बोले कनकवती एम बोल ॥ दीसे अजब गति एहनी अभिनवी रे लाल, नहिं नहिं कोइ जग एहनी तोल ॥ रंग० ॥ ८ ॥ रात पडी तेणें चैत्यें तेम गयो रे लाल, रंगें रंगें कनकवतीनी साथ ॥ वीणा वातां रे तास चरणतणु रे लाल, आव्यु आव्युं एक नूपुर तस हाथ ॥ रं० ॥ ए ॥ घणु वली खोल्युं रे तेम लाध्यु नहीं रे लाल, थइ थइ मनमांहे दिलगीर ॥ मदिर आवी रे कुवर घरे गयो रे लाल, सूतो सूतो धरी दीलहामां हे धीर ॥ रं० ॥ १० ॥ थयें प्रजातें रे मित्रचुं आवीयो रे लाल, वेगो वेगो श्रीगुणधर्म कुमार ॥ गोष्टि करीने रे पिशुष्ठ प्रेमनी रे लाल, पूठे पूठे मित्र नणी तेणी वार ॥ रं० ॥ ११ ॥ ते पण वोले रे निमित्त तणे वलें रे लाल, जाण्यु जाण्यु गयुं नूषण वली आज ॥ मन शकाणी रे वात सुणी करी रे लाल, कहे कहे फोगट ए श्यो अ

वाज ॥ र० ॥ १२ ॥ वातडली जो जाणी रे होय तो कहो शु गयु रे रे लाल, मानु मानु वात तुमारी साच ॥ आपण वीती रे वात न केम लहे रे लाल, चाखे चाखे कुमर एणी परें वाच ॥र०॥१३॥ माया गाली रे बोले मानिनी रे लाल, सुण सुण साहिब चतुर सुजाण ॥ में नवि जाण्यु रे पियुडा माहरु रे लाल, खोयु खोयु ए नूपुर किण गाण ॥ र० ॥ १४ ॥ मर्म ने मोसा रे पीयुजी न बोलीयें रे लाल ॥ नहि नहि हु काइ तेहवी नार ॥ राज हुकमथी रे इण मंदिर रहु रे लाल, महेल्युं महेल्यु में नवि घरनु बार ॥ र० ॥ १५ ॥ आण न लोपी रे पीयुडा ताहरी रे लाल, साचु साचु कुमर कहे कहो एह ॥ कोइके आवी रे मुजने एम कह्यु रे लाल, टालो टालो मुज मनडानो संदेह ॥ र० ॥ १६ ॥ सुण सुण गुणधर्म कुमारजी ताहरी रे लाल, वारू वारू कनकवती वर नारि ॥ दूरें जातीनु रे नूपुर पगतणु रे लाल, पड्युं पड्यु नीकलीने तेणी वार ॥ र० ॥ १७ ॥ जेणें जेणें ए लीधु रे तेहने जाण्यु सही रे लाल, लीधु लीधु फुटावी तस पास ॥ वात कहीनें रे अणबोल्यो रह्यो रे लाल, चिंते चिंते कनकवती ते उदास ॥ र० ॥ १८ ॥ सही मुज साथें रे आव्यो नाहलो रे लाल, करी करी कोइ प्रयोगविशेष ॥ मुज जरतारें रे सघलो माहरो रे लाल, दीठो रात तणो सवि दोष ॥ र० ॥ १९ ॥ यत ॥ कूरजई कला चाइी, चोरिकाक्रीडितानि च ॥ प्रकटानि तृतीयेऽन्हि, सुचिन्ह सुकृतानि च ॥ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ चिंतीने कनकवती कहे माहरु रे लाल, आपो आपो ते नूपुर मुज नाथ ॥ कुमर कह्याथी रें मतिसागर तदा रें लाल, सोंप्युं सोंप्यु कनकवतीनें रे हाथ ॥ र० ॥ २० ॥ पुनरपि बोली रे कनकवती तदा रे लाल, साचु साचु कहो मुजने तुमें कथ ॥ किहांथी जड्युं रे ए नूपुर माहरुं रे लाल, चाखो चाखो तेह तणु विरतंत ॥ र० ॥ २१ ॥ ठहे खंमें रे ढाल ए पन्नरमी रे लाल, दाखी दाखी रामविजय सुरसाल ॥ जगमाहि महोटी रे माया नारीनी रे लाल, धन्य धन्य जेणें वरजी ए जाल ॥ र० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ॥ ४७७ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥८॥

॥ दोहा ॥

॥ कनकवती कहे जिहा कणे, पडियु नूपुर स्वामि ॥ ते स्थानक दीठु तुमें, के निसुण्युं तस नाम ॥ १ ॥ कनकवती कहे कतजी, ए दीठुं तमें

रीक ॥ पण अन्यें जो कह्यु होवे, तो करु अग्निनी धीज ॥ २ ॥ एम कही चितातुर थइ, देइ गलहथो गाल ॥ गतउत्साहा कामिनी, नीसुं रही निहाल ॥ ३ ॥ चिताजलनिधिमा पडी, नयण झरे बहु नीर ॥ देखीने कायर थयो, कुवर घणो दिलगीर ॥ ४ ॥ मोहनगारी मानिनी, मोह्यो सघलो लोक ॥ साहमा उशियाला करे, जब लेइ बेसे शोक ॥ ५ ॥ बात करे कुवर हसी, नयण सलूणे ताम ॥ रोष न कीजें वालही, प्रेम त णे ए ठाम ॥ ६ ॥ दोष नहि तुऊमा किस्यो, हु जाणु निर्धार ॥ वात सुणी हर्षित थइ, कनकवती तेणि वार ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ नयर रतनपुर जाणीयें ॥ ए देशी ॥ कुवर निजमदिर गयो, मित्र सहित हर्षित थयो, नवि नयो, रोष किस्यो लवलेशथी ए ॥ १ ॥ रातें वली गुणधर्म ए, आव्यो नारीघरमें ए, शर्में ए, एकांतें उनो रह्यो ए ॥२॥ वात करे ते दासी ए, सुण स्वामिनि उल्लासी ए, जासी ए, तिहा ज्यारें वेला हुई ए ॥ ३॥ वेलातिक्रम थाशे ए, तो विद्याधर रीसाशे ए, गाशे ए, तुऊ विण तिहां कुण गीतने ए॥४॥ निसासो तब नाखे ए, कनकवती एम नांखे ए, राखे ए, लाज इहां प्रज्ञु माहरी ए ॥५॥ मदनाम्य धणीयाणी ए, कठिन ए कर्म कमाणी ए, जाणी ए, कीधी आवे आपणी ए ॥६॥ जनक घरे विद्याधरें, एणें मुऊने अति आदरें, खेचरें, पूर्वें शपथ कराविये ए ॥ ॥७॥ मुऊ आदेश थया विना, कांत म सेवे एकमना, रीऊना, बोल म बोलिश कतछु ए ॥८॥ रातें बेसी विमानमा, आवेवुं मुऊ शानमा,तानमां, मम रहेवु मानिनी ए ॥ ए ॥ एह कह्या उपरें वली, ए रीतें थइ व्याकुली, मन रुली, परख्यो ए राजकुमारने ए ॥ १० ॥ ए पियु मुऊ वल्लन घणुं, एहनी उपमा शी नणु, मन तणु, चितित माहरु मन लहे ए ॥११॥ पण तिहा जाती एणें सही, जाणी वात सकल लही, वली कही, वात उठे एणें वातडी ए ॥ १२ ॥ विद्याधर वीगे तिहां, नित प्रति जावुं जिहां, कहो किहां, वात लही ए माहरी ए ॥ १३ ॥ कुण जाणे मुऊ पीयु नणी, विद्याधर हणे निर्गुणी, अवगुणी, के अथवा मुऊने हणे ए ॥ १४ ॥ आशका मुऊ मोटी ए, वहेनी चित्तमा खोटी ए, चोटी ए, दीधी खेचर हाथमा ए ॥१५॥ यौवन काल नवीन ए, बहुल उपाय अधीन ए, अदीन

ए, उत्तम कुल ए मादरु ए ॥ १६ ॥ लोक विषम ए वांको ए, जेम तेम लवय निःशको ए,आको ए, कोइ नहि मुज कर्मनो ए ॥ १७ ॥ तथा च श्लोकद्वय ॥ नवीनोयौवनारंजो, बहुपाय प्रवर्त्तते ॥ उत्तमे च समाख्याते, पितृष्वसुरयो कुले ॥ १ ॥ अत्यतविषमोलोको, यद्वा तद्वा प्रजल्पति ॥ कार्याणा गहनत्वेना, कुलीनूतास्मि सर्वथा ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ वात सुणी दासी कहे,स्वामिनी आज तु इहां रहे, मत वीहे, आज तु हु जाइश एकली ए ॥ १७ ॥ कहिश हु मादरी ते सखी, कांइक मीलें ठे डु खी, मन रखे, रोष हैयामा लावता ए ॥ १९ ॥ कनकवती कहे तुज विना, कुण पूरे मुज कामना, नामना, तादरी मादरे मन वसी ए ॥ २० ॥ रचिय विमान ते सोंपीयु, जे जोइयें ते आपीयु, स्थापियु, प्रेम घणे ते उपरें ए ॥ २१ ॥ कुमर विचारे एहनो, राग ए सबल सनेहनो, मेहनो, दरिसण जेम चातक मनें ए ॥ २२ ॥ दासीसाथें आज ए, जाइ करु निज काज ए, लाज ए,हवे एहनी राखु नहि ए ॥ २३ ॥ स्त्री नाटक जोवा तणी, होंष हैये एहने घणी, नवि गणी, लाज एणें निज कुल तणी ए ॥ २४ ॥ परनारीने पाप ए,लहियें बहु संताप ए, आप ए, जगगुरु एम नाखे सुणो ए ॥ २५ ॥ यत ॥ पढत्वमिंडियछेद, दौर्नाग्य च नवे नवे ॥ नवेन्नराणा स्त्रीणा चा, न्यकांतासक्तचेतसाम् ॥ ३ ॥ पूर्व ढाल ॥ काढु कूटी वाक ए, ए मुज आगल वाक ए, लाक ए, जोउ एहनी केडनो ए ॥ २६ ॥ वेगे तेह विमानमा, चमी चाल्यु असमानमां, तानमा, तुरत जइ पहोच्यु तिहा ए ॥ २७ ॥ चेटी विमानथी उतरी, खेचर नें प्रणिपत करी, आदरें, उनी जिनालय आवीने ए ॥ २७ ॥ खेचर पूछे एवढी, का रे तुज वेला चढी, परवढी, तुज स्वामिनी दीसे नहि ए ॥२९॥ कहे काइक तन कादेलो,मर्म कह्यो में माहिलो, वाहलो, सुणी वैरी थइ वोलीयो ए ॥ ३० ॥ स्नात्र करो तुमें खेचरा, ए पापिणी दासी वरा, सावरा, करु चिकित्सा एहनी ए ॥ ३१ ॥ एम कहीने केशें ग्रही, दासी वि चारी जोइ रही, कोइ नहीं, जे ठेडावे तेहने ए ॥ ३२ ॥ खड्ग उगामीने रह्यो, नवि माने कोइनो कह्यो, नवि लह्यो, परमारथ पर मन तणो ए ॥ ३३ ॥ स्त्रीहत्या महोटी कही, क्रोध चढ्यो जाणे नहिं, जग सही, क्रोध अग्नि ए आकरो ए ॥ ३४ ॥ समर समर जे ताहरें, दासी कहे एक मा

हरे, वाहारें, श्री गुणधर्म कुमारजी ए ॥ ३५ ॥ त्रिभुवनपूज्य ए जिनवरु, महारे एह परमेश्वरु, सुखकरु, आ नव परनव ए सही ए ॥ ३६ ॥ ते समरयो जिन चित्तथी, हवे न चूकुं ध्यानथी, कोहि नथी, मुज पिता मर वा तणी ए ॥ ३७ ॥ नहि कोइ मात ने भ्रात ए, महारो सगो सुजात ए, वात ए, एक गुणधर्मनी माहरे ए ॥ ३८ ॥ खड्ग उपाडे जाम ए, कुम रें हांक्यो ताम ए, काम ए, नीच तणुं मांम्युं किस्युं ए ॥ ३९ ॥ प्रकट थइने एम कहे, नारीवध भव भव दहे, सद्दहे, सज्ञान गुरुनी शीखडी ए ॥ ४० ॥ यडुक्त ॥ विश्वस्ते व्याकुले लोके, बालवृद्धाऽबलाजने ॥ प्रह रंति च ये पापा, ध्रुवं ते यांति डुर्गतिम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ स्त्रीहत्या पात क तणा, कारक सांजल निर्गुणा, तुज तणा, अवगुण हुं केता कहुं ए ॥ ४१॥ प्रायश्चित्तनो दाता ए, मलियो हुं विख्याता ए, ज्ञाता ए, जेम जग मांहे गुरु कह्यो ए ॥ ४२ ॥ विद्याधर तव बोलीयो, अंतरपट सवि खोलीयो, मलीयो, मनोवांछित सवि माहरो ए ॥ ४३ ॥ जेहनो घात में ध्याइयो, ते मुज सहामो आवीयो, पाइयो, तु कीधुं हवे ताहरुं ए ॥ ४४ ॥ सहामा बेहु आवी अड्या, बलीया बहु रोषें चड्या, ते लड्या, एक कामिनीने कारणें ए ॥ ४५ ॥ अवसर लही कुमार ए, कीधो तेहने प्रहार ए, सार ए, शिर छेद्युं खेचर तणुं ए ॥ ४६ ॥ सेवक सहु तस ना ठा ए, कर दीठा घणुं काठा ए, माठां ए, कर्म कस्यां आवे उदे ए ॥ ४७ ॥ सहुने दीध दिलासो ए, शा माटें तुमें नासो ए, सांसो ए, मत क रशो कोइ रागनो ए ॥ ४८ ॥ त्रण बाला आवी नमी, अमें परवशता बहु खमी, सवि शमी, आपद आज अमारडी ए ॥४९॥ छठे खंमें शोलमी, ढाल सज्ञान मन सक्रमी, नवि गमी, राग दशा परनारीनी ए ॥५०॥५४४॥१४॥

॥ दोहा ॥

॥ अमने मूकावी तम्हें, विद्याधरथी आज ॥ छोडावे जीव पापथी, जे म गुरु गरीब निवाज ॥ १ ॥ कहे गुणधर्म कुमार जी, कुण तुमचो अव दात ॥ एक चतुरा बोली तिहां, सुण स्वामी मुज वात ॥ २ ॥ शंखपुरा भिध नयरनो, राजा डुर्जनराज ॥ पुत्री कमलवती अछु, तेहनी हुं महा राज ॥ ३ ॥ नय एहने में वह्लहो, वांछयो नहि लगार ॥ कुमर कहे नय नेहथी, किंवा कोप विकार ॥ ४ ॥ कुमरी कहे ए उपरें, नहिं नेह तिल

मात ॥ रमती मुऊने अपहरी, कुट्टिमथकी कुजात ॥५॥ निजरसना छेदन जणी, हुं तव थइ उजमाल ॥ तव खेचर मुऊने कहे, म मर म मर सुण बाल ॥ ६ ॥ रमण कह्या विण माहरे,पडिवजवो नहि प्रेम ॥ मुऊ समी प नित्य आववु, रजनीमाहे क्षेम ॥ ७ ॥ तुऊ सुशीलने होयशे, मुऊ अनुजाव विमान ॥ शीखवशुं नाटककला, करे मुऊ आगल गान ॥ ८ ॥ एम जो आणा माहरी, माने तुं निर्धार ॥ तो मूकुं तुऊ जीवती, में मान्युं तेणि वार ॥ ९ ॥ एम बीजी त्रीजी तया, वश कीधी एणे स्वामि ॥ तुमें एहने हणता थका, सार्युं अमारु काम ॥ १० ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ पथीडा रे संदेशडो ॥ ए देशी ॥ कुमर सुणी एम वातडी, कहे तेह नेजी आम ॥ जाउ तुमें निजमंदिरें, करो उत्तम काम ॥ १ ॥ जाग्य वलें वालम वडो, मल्यो पुण्यनें योग ॥ चेटी मन हरखी घणुं, मुऊ स्वामिनी योग ॥ जाग्य० ॥ २ ॥ दासी सघातें हो आवीयो, कुंवर निज धाम ॥ कनकवती दासी जणी, पूछे एम ताम ॥ जाग्य० ॥ ३ ॥ मुऊ कंतें मारियो, ते खेचर उष्ट ॥ वात कही सवि मामिने, थइ सांजली तुष्ट ॥ जा० ॥ ४ ॥ निज पियु पौरुष सांजली, जुजवल परशंस ॥ करती हो कंतने पय नमे,हरख्यो निज हंस ॥ जा० ॥ ५ ॥ वात करे रसरंगनी, जामिनी जरतार ॥ मूकी हो मननो आंतरो, गणे धन्य अवतार ॥ जा० ॥ ६ ॥ गोष्ठि करे मन मेलिनें, हैडे धरी हेज ॥ रात समे तेणे मंदिरें, पोढ्यां सुख सेज ॥ जा० ॥ ७ ॥ सूता हो आवी निंदडी, रमतां तेणें रात ॥ इण असरें जे नीपनी, निसुणो ते वात ॥ जा० ॥ ८ ॥ हतविद्याधर बंधवो, अनुजात ते वार ॥ निजबंधव मार्यो सुणी, चढयो क्रोध अपार ॥ जा० ॥ ९ ॥ आव्यो हो रीपें दोडीने, जिहां सूतां हो दोय ॥ जूदां हो वेहुने समुद्रमां, नाखे खेचर सोय ॥ जा० ॥ १० ॥ जुवो हो विषयनी वारता, अनरथ एम थाय ॥ विषय विलुब्धा मानवी, फरे चिहुं गतिमांय ॥ जा० ॥ ११ ॥ जाग्यसयोगें हो पामीयो, गुणधर्म कुमार ॥ फलक कोइ वाहण तणुं, जलमां तेणी वार ॥ जा० ॥ १२ ॥ वेलें तणातो हो चालियो,अति उखीयो हो दीन ॥ जूरख्यो तरप्यो हो अति घणो, सहु कर्म आधीन ॥ जा० ॥ १३ ॥ सातमे दिवसें हो कुमरजी, जलनि

हरे, वाहारें, श्री गुणधर्म कुमारजी ए ॥ ३५ ॥ त्रिभुवनपूज्य ए जिनवरु, म्हारे एह परमेश्वरु, सुखकरु, आ भव परभव ए सही ए ॥ ३६ ॥ ते समरुं जिन चित्तथी, हवे न चूकुं ध्यानथी, कोहि नथी, मुज पिता मर वा तणी ए ॥ ३७ ॥ नहिं कोइ मात ने भ्रात ए, म्हारो सगो सुजात ए, वात ए, एक गुणधर्मनी माहरे ए ॥ ३८ ॥ खड्ग उपाडे जाम ए, कुम रें हांक्यो ताम ए, काम ए, नीच तणुं मांड्युं किस्युं ए ॥ ३९ ॥ प्रकट थइने एम कहे, नारीवध भव भव दहे, सद्दहे, सज्जन गुरुनी शीखडी ए ॥ ४० ॥ यडुक्त ॥ विश्वस्ते व्याकुले लोके, वालवृद्धाऽबलाजने ॥ प्रह रंति च ये पापा, ध्रुवं ते यांति दुर्गतिम् ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ स्त्रीहत्या पात क तणा, कारक सांभल निर्गुणा, तुज तणा, अवगुण हुं केता कहुं ए ॥ ४१॥ प्रायश्चित्तनो दाता ए, मलियो हुं विख्याता ए, ज्ञाता ए, जेम जग मांहे गुरु कह्यो ए ॥ ४२ ॥ विद्याधर तव बोलीयो, अंतरपट सवि खोलीयो, मलीयो, मनोवांछित सवि माहरो ए ॥ ४३ ॥ जेहनो घात में ध्याइयो, ते मुज सहामो आवीयो, पाइयो, तुं कीधुं हवे ताहरुं ए ॥ ४४ ॥ सहामा बेहु आवी अड्या, बलीया बहु रोषें चड्या, ते लड्या, एक कामिनीने कारणें ए ॥ ४५ ॥ अवसर लही कुमार ए, कीधो तेहने प्रहार ए, सार ए, शिर छेद्युं खेचर तणुं ए ॥ ४६ ॥ सेवक सहु तस ना ठा ए, कर दीठा धणु काठा ए, मार्गा ए, कर्म कर्यां आवे उदे ए ॥ ४७ ॥ सहुने दीध दिलासो ए, शा मार्टे तुमें नासो ए, सांसो ए, मत क रशो कोइ रागनो ए ॥ ४८ ॥ त्रण बाला आवी नमी, अमें परवशता बहु खमी, सवि शमी, आपद आज अमारडी ए ॥४९॥ छठे खंडें शोलमी, ढाल सज्जन मन संक्रमी, नवि गमी, राग दशा परनारीनी ए ॥५०॥५४४॥१६॥

॥ दोहा ॥

॥ अमने मूकावी तम्हें, विद्याधरथी आज ॥ छोडावे जीव पापथी, जे म गुरु गरीब निवाज ॥ १ ॥ कहे गुणधर्म कुमार जी, कुण तुमचो अव दात ॥ एक चतुरा बोली तिहां, सुण स्वामी मुज वात ॥ २ ॥ शंखपुरा भिध नयरनो, राजा दुर्लभराज ॥ पुत्री कमलवती अछुं, तेहनी हुं महा राज ॥ ३ ॥ भय एहने में वछहो, वाठयो नहि लगार ॥ कुमर कहे भय नेहथी, किंवा कोप विकार ॥ ४ ॥ कुमरी कहे ए उपरें, नहिं नेह तिल

तद्दामो थयो, जोरावरकाय ॥ विद्याधरने हो जितीयो, तेणे लीलामांय ॥ ना० ॥ ३२ ॥ जीवतो मेहेल्यो हो तेह्ने, नम्यो कुमरने पाय ॥ आप अखम रह्यो तिहां, निरुपक्रम आय ॥ ना० ॥ ३३ ॥ ठे हो खमें स त्तरमी, नाखी ए ढाल ॥ राम कहे धन्य ते जेणें, तजी विषयनी जाल ॥ ना० ॥ ३४ ॥ सर्वगाथा ॥ ५ОО ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लइ आणा कुलपति तणी, श्रीगुणधर्म कुमार ॥ प्रिया सहित कोइ पुर नणी, चाल्यो हर्ष अपार ॥ १ ॥ जातां पुर वनमां मल्या, गुणरत्नो दधि साध ॥ शांतमूर्त्ति सोहे नला, वरते सहज समाधि ॥ २ ॥ प्रिया सहित प्रणमे जई, ते मुनिवरना पाय ॥ धन्य गणे निज आतमा, थयो रोमाचित काय ॥ ३ ॥ योग्य जीव जाणी करी, मुनिवर आणी नाव ॥ धर्म कहे जिनवर तणो, विषय रहित समनाव ॥ ४ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ रंगीले आतमा ॥ ए देशी ॥ कहे मुनिवरजी देशना, देशना सांजलो नवि चित्त लाय ॥ वैरागी आतमा ॥ चौद राजके चोकमें, चोकमें नव नव वेश बनाय ॥ १ ॥ वैरागी आतमा ॥ लाख चोराशी योनिमा, योनिमां रहीयो काल अनत ॥ वै० ॥ पृथिवी पाणी तेउमा, तेउमा वायु कह्यो जगवत ॥ वै० ॥ २ ॥ सात सात लक्ष एहोनी, एहोनी योनि कही जिनराज ॥ वै० ॥ वण प्रत्येकमां जीवनी, जीवनी दश लक्ष योनि समाज ॥ वै० ॥ ३ ॥ साधारणमा जाणीयें, जाणियें चौदश लाख विचार ॥ वै० ॥ वि ति चउ इंडिय जीवनी, जीवनी दो दो कहि निरधार ॥ वै० ॥ ४ ॥ देव अने वली नारकी, नारकी योनि कही चउ चार ॥ वै० ॥ पंचेंडिय तिर्यंचमा, तिर्यंचमां चउ लक्ष योनि सन्नार ॥ वै० ॥ ५ ॥ चउदश लक्ष ठे मनुजनी, मनुजनी तेम जाणो गुणवत ॥ वै० ॥ फिरता लक्ष चोराशीमें, चोराशीमें वीत्यो काल अनत ॥ वै० ॥ ६ ॥ जाति ने योनि रही नहिं, रही नहि जिहां नवि आयो ए जीव ॥ वै० ॥ जन्म मरण कीधा घणा, कीधां घणां डुखीयो एह अतीव ॥ वै० ॥ ७ ॥ यडुक्त ॥ न सा जाइ न सा जोणी, न तं ठाण न तं कुल ॥ न जाया न मुआ जब, सबे जीवा अणतसो ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ क्यु सोवे तु करारमें, करारमें

धितट दीठ ॥ पार लही भमतां थकां, तापस एक दीठ ॥ भा० ॥१४॥ प्रणिपत्य करी बेठो तिहां, आवी उ खिणी हो ताम ॥ कनकवती निज वल्लभा, मन चिंते हो आम ॥ भा० ॥ १५ ॥ शुं ए कनकवती होवे, आवी हशे केम ॥ कुमरनो संशय वारवा, कुलपति कहे एम ॥ भा० ॥ १६ ॥ आजथकी त्रीजे दिने, पडेलां सुण आंहि ॥ वनमांहे आवी ए कामिनी, धरती उःख अथाह ॥ भा० ॥ १७ ॥ तरुशाखायें निज आतमा, बांधीने हो तेह ॥ मरवाने उद्यत थई, तुज विरहें हो एह ॥ भा० ॥१८॥ पाश छेदी में जीवती, राखी ए बाल ॥ आश्रम आणी हो माहरे, साचे प्रेमनु साल ॥ भा० ॥१९॥ जाणी आगमन निमित्तथी, ताहरु इण ठार ॥ राखी विलासो में बेइने, ताहरी ए नारि ॥ भा० ॥ २० ॥ वात सुणी हर्षित थयो, मिल्यां दंपती दोय ॥ विरह टल्यो शाता थइ, करे कर्म सो होय ॥ भा० ॥ २१ ॥ कदली आदिक तरुफलें, करी प्राणनी वृत्ति ॥ रातें हो सूता लतागृहें, बेहु थइ निश्चिंत ॥ भा० ॥ २२ ॥ सात दिवस जलमां गया, सात वरस समान ॥ वहाली हो ताहरा विरहनुं, थयुं उःख असमान ॥ भा० ॥२३॥ आज वियोगनु उःख टल्युं, थयुं शीतल अंग ॥ पुण्यसंयोगें हो ताहरो, मल्यो मुजने हो संग ॥ भा० ॥ २४ ॥ सुख निशामांहे पोढियां, जूवो कर्म विलास ॥ खेचर आव्यो हो तिहांकणे, विरुई विषयनी आश ॥ भा० ॥ २५ ॥ पुनरपि बेहुने उपाडीने, नाख्यां समुद्रमजार ॥ वेर वधे जेहथी घणां, ढंभो विषय विकार ॥ भा० ॥२६॥ आयु जोरावर बेहुनु, तरी फलकें हो नीर ॥ बेहु मल्यां वली एकठां, पाम्यां जलनिधि तीर ॥ भा० ॥ २७ ॥ कुमर कहे सुण कामिनी, विधिविलसित एह ॥ विषयासक्त ए जीवने, शो विपत्ति सदेह ॥भा०॥२८॥ यत ॥ अनेनैव विरागेण, त्यक्ताशेषपरिग्रहा ॥ निर्ममत्वान्महासत्त्वा, स्तप कुर्वंति साधव ॥१॥पूर्वढाल॥ कनकवती कहे कंतने, स्यो खेद ए नाथ ॥ पौरुषकृते विषाद करो, करो जेम अनाथ ॥ भा० ॥२९॥ यत ॥ दीनोद्धारोन विहधे, नैकछत्रा कृता मही ॥ विषया नोपभुक्ताश्च, प्रकाम खिद्यसेंग किम् ॥ २ ॥ पूर्व ढाल॥ वात रमणीनी हो सांभली, गुणधर्म कुमार॥ नारिसंघातें हो रातमां, रहे ते हुशीयार ॥भा०॥३०॥ केडें विद्याधर आवियो, वैर लेवा काज ॥ जाइश किहां वलि पापीया, नहिं मेहेलुं आज ॥ भा०॥ ३१ ॥ साहस धरी

तंत नही ए वय तणो, वय तणो धर्म विषे मन जाव ॥ वै० ॥ १ए ॥ कनकवती कहे पुत्रीने, पुत्रीने आयु तणुं अवसान ॥ वै० ॥ आदरजो तमें दिखने, दिखने द्यो एतु मुज मान ॥ वै० ॥ २० ॥ मन विणु मानी वातने, वातने वादी गुरुना पाय ॥ वै० ॥ नगर जणी चाल्यो तदा, चाल्यो तदा जोजन पान उपाय ॥ वै० ॥ २१ ॥ काननमां मूकी करी, मूकी करी कनकवती तरु हेठ ॥ वै० ॥ राजकुमर तिहां आवीयो, आवियो गुणचंई सा दीठ ॥ वै० ॥ २२ ॥ राग लह्यो देखी करी, देखी करी मानिनी मोहनगार ॥ वै० ॥ पूछे हो आवी तेहने, तेहने तु केनी घरनारि ॥ वै० ॥ २३ ॥ किण कारण इहां एकली, एकली यौवनरूप रसाल ॥ ॥ वै० ॥ तुज जरतार किहां अछे, किहां अछे कहो मुजने इण काल ॥ ॥ वै० ॥ २४ ॥ राग लही ते कुमरनो, कुमरनो निज जरतार वैराग्य ॥ ॥ वै० ॥ निज वृत्तांत कह्यु सवि, कह्यु सवि मोही रही तस राग ॥ वै० ॥ २५ ॥ लागी नयणनी आशकी, आशकी जोइ रह्या अनिमेष ॥ वै० ॥ नयण कमलदल पाखडी, पाखडी मोह्यो कुवर ते देखि ॥ वै० ॥ २६ ॥ यत ॥ दोहो ॥ नयण पदारथ नयणरस, नयणें नयण मिलत ॥ अणजाण्याशुं प्रीतडी, पहेला नयण करत ॥ ६ ॥ पूर्वढाल ॥ जोग तणी करे प्रार्थना, प्रार्थना करे गुणचंइ कुमार ॥ वै० ॥ आवो हो मानिनी मुज घरे, मुजघरे सफल करो अवतार ॥ वै० ॥ २७ ॥ प्राणप्रिया करि राखशुं, राखशुं देशु नहि कृण ठेह ॥ वै० ॥ अवर जणी नवि आदरु, आदरु तुज ऊपर मुज नेह ॥ वै० ॥ २८ ॥ कनकवती मन चिंतवे, चिंतवे श्यो पीयुशुं हवे नेह ॥ वै० ॥ उघडशे नहिं माहरु, माहरु आखर ए निस्नेह ॥ वै० ॥ २ए ॥ जाउ ए राजकुवर घरें, कुवर घरे जोगवु लीलविलास ॥ वै० ॥ कहे वची जरतारने, जरतारने आविश हुं तुम पास ॥ ॥ वै० ॥ ३० ॥ राजकुवर गयो मंदिरें, मंदिरें मोह्यो तेहने रूप ॥ वै० ॥ जगमांहे विषय समो नहिं, समो नहि महोटो कोइ विरूप ॥ वै० ॥ ३१ ॥ ठठे हो खंमें अढारमी, अढारमी ढाल विचारो एह ॥ वै० ॥ राम कहे जग कारिमो, कारिमो धिक् धिक् नारीनेह ॥ वै० ॥ ३२ ॥ सर्वगाथा ॥ ६२४ ॥ २० ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ हवे गुणधर्म कुमार, पुरमा जइ वनो रह्यो ॥ को न दिये आवकार,

त्रिहु जण लाग्या केड ॥ वे० ॥ चेतन चेतो हो चित्तमां, चित्तमां ए इशमनकु फेड ॥ वे० ॥ ८ ॥ खावद माल अनंतके, अनतके क्युं रहे होय दिलगीर ॥ वे० ॥ आप दशा परगट करो, परगट करो ज्युं नांखे नवनीर ॥ वे० ॥ ए ॥ साहिब दास ज्यु हुइ रह्यो, हुइ रह्यो इंडियके आधीन ॥ वे० ॥ पान करी मदमोह को, मदमोहको क्यु बेगो मित्त कीन ॥ वे० ॥ १० ॥ यत ॥ आत्मनृपतिरयं चिरतन, पीतमोहमदि राविमोहित ॥ किंकरस्य मनसोपि किंकरै, रिंडियैरहह किंकरीकृत ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ चेतन तेरे राजमें, राजमें विषय करे क्युं जोर ॥ वे० ॥ मित्र हुइ आइ मिले, आइ मिले ए पांचोंही चोर ॥ वे० ॥ ११ ॥ क्षण सुख तोकूं चखायकें, चखायकें नाखेंगे लेइ दूर ॥ वे० ॥ ए ससार अनादिको, अनादिको वहे विषयाके पूर ॥ वे० ॥ १२ ॥ यडुक्तमागमे ॥ क्षणमित्त सुरका बहुकाल डुरका ॥ निद निवारो हो मोहकी, मोहकी आलस अलगु नाखि ॥ वे० ॥ घटमें ज्ञानदीपक करो, दीपक करो सुमति उघाडो आंख ॥ वे० ॥ १३ ॥ देशन सुणी गुरुराजकी, गुरुराजकी श्री गुणधर्म कुमार ॥ वे० ॥ मोह मठ्यो ममता घटी, ममता घटी नागे विषय विकार ॥ वे० ॥ १४ ॥ कनकवती निज नारीने, नारीने कहे लीजें अब दीख ॥ वे० ॥ संयम मारग आदरी, आदरी चलियें सद्गुरु शीख ॥ वे० ॥ १५ ॥ सा कहे विषयनिखारणी, निखारणी नवयौवन वय एह ॥ वे० ॥ सुख विलसो ससारनां, ससारनां दोहिलो ए नवल सनेह ॥ वे० ॥ १६ ॥ वृद्धपणामां वालहा, वालहा कीजें योग अन्यास ॥ वे० ॥ योगवशा आवे नहीं, आवे नहीं जिहा लगें विषयपिपास ॥ वे० ॥ १७ ॥ यडुक्त ॥ शैशवेऽन्यस्तविद्यानां, यौवने विषयैषिणाम् ॥ वार्धके मुनिवृत्तीना, योगेनांते तनुत्यजाम् ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ कहे गुणधर्म ए धर्मनो, धर्मनो वृद्धपणे नहिं लाग ॥ वे० ॥ जर्जर वय तनु बल घटे, बल घटे वाधे तृष्णा अताग ॥ वे० ॥ १८ ॥ यडुक्त ॥ आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि, र्गतं वयो नो विषयाभिलाप ॥ यत्नश्च नैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्नहो मोहविडवना मे ॥ ४ ॥ अग गलितं पलितं मुन्म, दशनविहीन जातं तुन्मम् ॥ वृद्धोयाति गृहीत्वा दन्म, तदपि न मुचत्याशापिन्मम् ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ यौवनमा पण कोइने, कोइने आवे वैराग्यनो नाव ॥ वे० ॥

नारी तस घर जाती दीठी रे ॥ ना० ॥ १० ॥ ते गइ एम उत्तर दीधो
रे ॥ ना० ॥ ते चाल्यो नगर जणी सीधो रे ॥ ना० ॥ मनमांहे करे ए वि
चार रे ॥ ना० ॥ कन्नो गुणधर्म कुमार रे ॥ ना० ॥ ११ ॥ तद्यथा ॥
दध्यौ च नोपकारेण, नाजसा द्दत योषित ॥ गृह्यते न कुल शील, मर्यादा
गणयति च ॥ १ ॥ रहोन जायते यावत्, कणस्यार्थयिता न च ॥ सतित्व
तावदेतासा, नारीणा नारदोऽवदत् ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ एम चिंती कुमर
तिहां आवी रे ॥ ना० ॥ तेहने एम तेणे समजावी रे ॥ ना० ॥
कहे तो तुफ मोशाल मूकू रे ॥ ना० ॥ हुं नवनावठथी चूकू रे ॥ ना०
॥ १२ ॥ तिहां पासे नगरमां आवी रे ॥ ना० ॥ तेहने मातुलघरे वो
लावी रे ॥ ना० ॥ जइ तेह मुनिनी पासें रे ॥ ना० ॥ ग्रहे चारित्र दिल
उल्लासें रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ करे किरिया तप तपे काठा रे ॥ ना० ॥ घणा
कर्म खपाव्या माठा रे ॥ ना० ॥ थयो तेह माहाव्रत धोरी रे ॥ ना० ॥
चढती परिणामनी दोरी रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ करि अणसण सुरपद लीधु
रे ॥ ना० ॥ तेहनु वांछित कारज सीधु रे ॥ ना० ॥ तिहांथी चवि नर
नव पामी रे ॥ ना० ॥ ते थाशे शिवगतिगामी रे ॥ ना० ॥ १५ ॥
हवे कनकवतीनी कहाणी रे ॥ ना० ॥ निसुणो तुमें सहुये प्राणी रे ॥
ना० ॥ आवी मातुलघरथी रीसाणी रे ॥ ना० ॥ थइ गुणचन्दनी धणि
याणी रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ राजकुमरने ते घणु प्यारी रे ॥ ना० ॥
तेणे मूकी अवर विसारी रे ॥ ना० ॥ तव चिंते हो पहेली राणी रे ॥
ना० ॥ एणें नारी कुजात ए आणी रे ॥ ना० ॥ १७ ॥ एणें कामण
मोहन कीधो रे ॥ ना० ॥ महारो पियुडो वश करि लीधो रे ॥ ना० ॥
जगमांहि खार ए महोटो रे ॥ ना० ॥ परनवड खदायी खोटो रे
॥ ना० ॥ १८ ॥ तेणें नोजनमां विष दीधु रे ॥ ना० ॥ मारी कनक
वतीने वैर लीधु रे ॥ ना० ॥ ध्यान रौद्रमांहे ते मूई रे ॥ ना० ॥
चोथी नरकें नारकपणे हूई रे ॥ ना० ॥ १९ ॥ जुवो उत्तम कुलनी
जाई रे ॥ ना० ॥ शी कीधी कर्मकमाई रे ॥ ना० ॥ डुखमांहे काल
निर्गमशे रे ॥ ना० ॥ तिहांथी नव बहुला नमशे रे ॥ ना० ॥ २० ॥
कहे प्रभुजी शांति जिणंदा रे ॥ ना० ॥ विरुआ ए विषयना फंदा रे ॥
ना० ॥ डुखदायी ए विषयप्रमादो रे ॥ ना० ॥ महोटो जग ए उन्मा

आाय विना आदर किस्यो ॥ १ ॥ मनमांहे चिते नारि, नूखी होशे मा ह्री ॥ करु इहां कवण प्रकार, धन विण नोजन किहांथकी ॥ २ ॥ यत ॥ पुत्ताय सीसाय० ॥ मगाये नहीं नीख, नूख्यां रहेवाये नहीं ॥ न रही मनमा शीख, रमवा वेगो जूवटे ॥३॥ कांइक धन उपारजि, तुरत करावी रसवती ॥ लेई मम्फक साज, उद्यानें आवे वही ॥ ४ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ किण वाटें गया वनमाली रे ॥ बाइ महारी वहेनडीयां ॥ ए देशी ॥ वन मांहे आव्यो उजाई रे ॥ नारी मोरे मन वसीयां ॥ कहे नोजन लाव्यो हु धाई रे ॥ नारी नवि उल्लसिया ॥ कहे कुमर सुणो सुकुमाली रे ॥ नारी मो० ॥ तुने नूखें घणु परजाली रे ॥ ना० ॥ १ ॥ आवी कुंवर बेगो जोडें रे ॥ नारी० ॥ आपण कीजें नोजन कोडें रे ॥ ना० ॥ मन विण नोजन बेठी रे ॥ ना० ॥ पण मनमांहे चिंता पेठी रे ॥ ना० ॥२॥ नवि बोले रसीली वातो रे ॥ना०॥ प्रिय चिंते एहनी फरि धातो रे ॥ना०॥ बोले नेहविहूणी वाणी रे ॥ ना० ॥ कुवरें तस वात पिछाणी रे ॥ ना० ॥३॥ एणे मुफशुं मोह उतार्यो ॥ना०॥ बीजो कोइक दिलमांहे धार्यो रे ॥ ना० ॥ धिक् धिक् धिक् नारीनेहा रे ॥ ना० ॥ क्षणमांहि देखाडे छेहा रे ॥ ना० ॥ ४ ॥ हु जाणतो हतो प्यारी रे ॥ ना० ॥ पण एह सबल धूतारी रे ॥ ना० ॥ में पाप कर्युं इण माटें रे ॥ ना० ॥ दुर्गति परणी ए साटें रे ॥ना०॥ ५ ॥ करी एहने में साव सोनानी रे ॥ना०॥ पण न रही जाति ए छानी रे ॥ ना० ॥ मुफ सम नहि कोइ अज्ञानी रे ॥ ना० ॥ समजाव्यो हतो मुफ ज्ञानी रे ॥ना०॥६॥ वनमां कोइ मिष करी चाल्यो रे ॥ ना० ॥ आगल एक पुरुष निहाल्यो रे ॥ ना० ॥ तेणें पूछ्यु कुमरने आई रे ॥ ना० ॥ ॥ गयो राजकुवर शु जाई रे ॥ ना० ॥ ७ ॥ कहे राज कुवर कोण आयो रे ॥ ना० ॥ इहा जे तुमें मुफने बतायो रे ॥ ना० ॥ कहे ते नर सुण विदेशी रे ॥ ना० ॥ इहां आव्यो कुमर अम देशी रे ॥ ना० ॥ ८ ॥ नृपनंदन गुणचंद नामें रे ॥ ना० ॥ आव्यो वन जोवा कामें रे ॥ ना० ॥ ते साथें नारी एक वोली रे ॥ ना० ॥ करी वात ते मनडु खोली रे ॥ ना० ॥ ए ॥ तस आणायें अलगो जाई रे ॥ ना० ॥ आव्यो इहा कणे जाई रे ॥ ना० ॥ ते माटें पूछु वात मीठी रे ॥ ना० ॥

नारी तस घर जाती दीठी रे ॥ ना० ॥ १० ॥ ते गइ एम उत्तर दीधो रे ॥ ना० ॥ ते चाल्यो नगर नणी सीधो रे ॥ ना० ॥ मनमांहे करे ए विचार रे ॥ ना० ॥ कन्नो गुणधर्म कुमार रे ॥ ना० ॥ ११ ॥ तद्यथा ॥ दध्यौ च नोपकारेण, नाजसा हृत योषित ॥ गृह्यंते न कुल शील, मर्यादां गणयति च ॥ १ ॥ रहोन जायते यावत्, कृणस्यार्थयिता न च ॥ सतित्व तावदेतासा, नारीणा नारदोऽवदत् ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ एम चिंती कुमर तिहां आवी रे ॥ ना० ॥ तेहने एम तेणें समजावी रें ॥ ना० ॥ कहे तो तुऊ मोशाल मूकूं रे ॥ ना० ॥ हु नवनावठथी चूकू रे ॥ ना० ॥ १२ ॥ तिहा पासे नगरमां आवी रे ॥ ना० ॥ तेहने मातुलघरे वो लावी रे ॥ ना० ॥ जइ तेह मुनिनी पासें रे ॥ ना० ॥ ग्रहे चारित्र दिल उल्लासे रे ॥ ना० ॥ १३ ॥ करे किरिया तप तपे काठा रे ॥ ना०॥ घणा कर्म खपाव्या माठा रे ॥ ना० ॥ थयो तेह माहाव्रत धोरी रे ॥ ना० ॥ चढती परिणामनी दोरी रे ॥ ना० ॥ १४ ॥ करि अणसण सुरपद लीधु रे ॥ ना० ॥ तेहनु वाछित कारज सीधु रे ॥ ना० ॥ तिहाथी चवि नर नव पामी रे ॥ ना० ॥ ते थाशे शिवगतिगामी रे ॥ ना० ॥ १५ ॥ हवे कनकवतीनी कहाणी रे ॥ ना० ॥ निसुणो तुमें सहुये प्राणी रे ॥ ना० ॥ आवी मातुलघरथी रीसाणी रे ॥ ना० ॥ थइ गुणचन्द्रनी धणियाणी रे ॥ ना० ॥ १६ ॥ राजकुमरने ते घणु प्यारी रे ॥ ना० ॥ तेणे मूकी अवर विसारी रे ॥ ना० ॥ तव चिंते हो पहेली राणी रे ॥ ना० ॥ एणें नारी कुजात ए आणी रे ॥ ना० ॥ १७ ॥ एणें कामण मोहन कीधो रे ॥ ना० ॥ महारो पियुडो वश करि लीधो रे ॥ ना० ॥ जगमाहि खार ए महोटो रे ॥ ना० ॥ परनवदु खदायी खोटो रे ॥ ना० ॥ १८ ॥ तेणें नोजनमा विप दीधु रे ॥ ना० ॥ मारी कनकवतीने वैर लीधुं रे ॥ ना० ॥ ध्यान रौद्रमाहे ते मूई रे ॥ ना० ॥ चोथी नरकें नारकपणे हूई रे ॥ ना० ॥ १९ ॥ जुवो उत्तम कुलनी जाई रे ॥ ना० ॥ शी कीधी कर्मकमाई रे ॥ ना० ॥ छ खमांहे काल निर्गमशे रे ॥ ना० ॥ तिहाथी नव वहुला नमशे रे ॥ ना० ॥ २० ॥ कहे प्रभुजी शांति जिणदा रे ॥ ना० ॥ विरुआ ए विपयना फदा रे ॥ ना० ॥ छ खदायी ए विपयप्रमादो रे ॥ ना० ॥ महोटो जग ए उन्मा

दो रे ॥ ना० ॥ २१ ॥ ए वर्जे ते सुख पावे रे ॥ ना० ॥ सुर नर भली तस गुण गावे रे ॥ ना० ॥ ए विषय उपर वीतरागें रे ॥ ना० ॥ कही वात सबल वैरागें रे ॥ ना० ॥ २२ ॥ उठे खमें उगणीशमी दाखी रे ॥ ना० ॥ ए वात हैयामा राखी रे ॥ ना० ॥ कहे राम जे करशे करणी रे ॥ ना० ॥ वरशे शिवलीला गृहिणी रे ॥ ना० ॥ २३ ॥ इति विषये गुणधर्मकनकवतीसबध ॥१॥ सर्वगाथा ॥६५१॥ श्लोक तथागाथा ॥२१॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे प्रभु चक्रायुध निसुण, एह विषय अधिकार ॥ हवे कषाय ऊ पर कहु, नागदत्त विस्तार ॥ १ ॥ वर्द्धमान जिनवर तणे, वारे होशे तेह ॥ आगामिक हमणा कहु, वात सुणो ससनेह ॥ २ ॥ नहिं कषाय विणु विषय को, तस नाशें नवनाश ॥ नवनाशें शिव सपजे, सहजानंद विलास ॥ ३ ॥ करे चक्रायुध स्वामीने, कर जोडी अरदास ॥ नागदत्त सबध मुफ, जगगुरु परकाश ॥ ४ ॥ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ म म करो माया काया कारमी ॥ ए देशी ॥ वसंतपुर नरत अबू तणे, समृद्ध वसुदत्त दोय नद रे ॥ सरलमन शांतगुण शोनता, मधुर मुख वाणी सुखकद रे ॥१॥ शांति जिनराज एम उपदिशे ॥ ए आकणी ॥ सवि सुणो पर्षदा बार रे ॥ कटुक फल एह कषायना, जाणी वर्जो सुविचार रे ॥ शांति० ॥ २ ॥ व्यवहरे तेह मैत्रीपणे, मन कह्यो निश्चय एम रे ॥ एक जे कारिज आदरे, अवर पण आचरे तेम रे ॥ शा० ॥ ॥ ३ ॥ दोय उद्यानमां आवीया, एक दिन मुनिवर दीठ रे ॥ वज्रगुप्तानिध गुण निलो, दरिसण अति घणु मीठ रे ॥ शा० ॥ ४ ॥ करिय प्रणिपत्य मुनि वरप्रत्यें, दोय कहे कहो हित शीख रे ॥ देशना दीध नवतारिणी, नि सुणी लीधी दोय दिरक रे ॥ शां० ॥ ५ ॥ बधन छोडी संसारनां, दोय हुवा श्रमण गुणधार रे ॥ अते अनशन करी उपन्या, दोय सुरलोक म फार रे ॥ शा० ॥ ६ ॥ पण कर्युं दोय देवें तिहां, जे चवे पहेल इण ठाम रे ॥ तेणें बीजो प्रतिबोधवो, धर्मसकेतने काम रे ॥ शां० ॥ ७ ॥ समुद्र दत्त जीव तिहांथी चव्यो, नरतमा अवतर्यो आय रे ॥ सागरदत्तने मदिरें, धरणिनिवास पुर ठाय रे ॥ शां० ॥ ८ ॥ धनदत्ता नारी वरकूखमां,

नागसुरदत्त वर योग रे ॥ सुत थयो नागदत्ताभिधो, पूर्व सुकृतनो जोग रे ॥ शां० ॥ ए ॥ सकल शीख्यो कला नर तणी, जाण गांधर्वनो जोर रे ॥ चतुर पण सकल पुरजन तणा, चित्तनो ते थयो चोर रे ॥ शां० ॥ १० ॥ नाम गांधर्व पूर्वक थयु, नागदत्त तेहनु ताम रे ॥ कुशल वीणा कलामां घणो, गारुडीमा शिरें नाम रे ॥ शां० ॥ ११ ॥ एक दिन तेह उ द्यानमा, मित्र सघातें नागदत्त रे ॥ क्रीड करवा भणी चालीयो, मन धरी दर्प अत्यंत रे ॥ शां० ॥ १२ ॥ वसुदत्त सुरें प्रतिबोधियो, बधवा बुफ तुं बूफ रे ॥ मेल कषायने वेगला, विपयरसमा मत मूफ रे ॥ शा० ॥ १३ ॥ पण मनमाहि आवे नहि, इंद्रियें जनित सुख दास रे ॥ धर्मे अ तींद्रिय नवि भजे, अहो अहो विषय सुखपाश रे ॥ शां०॥ १४ ॥ जिहां लगें कष्ट दीठु नहि, तिहां लगें नवि करे धर्म रे ॥ चिंति एम रूप मुनिनु करे, जुउ जुउ मित्रनो मर्म रे ॥ शा० ॥१५॥ सर्पकरंमक कर ग्रह्यो, नहिं रजोहरण मुखवस्त्र रे॥ नागदत्त पासे ते आवियो, मुनिवररूप नहिं शस्त्र रे ॥ शा० ॥ १६ ॥ पूठीयुं एह करंमकमां, सु अछे तव कहे तेह रे ॥ नाग क्रीडा तणा एहमां, सांजल ठे गुणगेह रे ॥ शा० ॥ १७ ॥ बोलियो नाग दत्त माहरा, नाग क्रीडाव तुं आज रे॥ ताहरा नाग खेलावसु, होंशथी हुं मुनिराज रे ॥ शां० ॥ १७ ॥ कहे ऋषि वात म करिश इसी, माहरा ना ग डुर्दंत रे ॥ क्रीडव्या जाय कोणे नहिं, एह विषधर बलवंत रे ॥ शा० ॥ १ए ॥ देव पण ए ग्रही नवि शके, तो इहा तु कोणमात्र रे ॥ मत्र औ षध विना ताहरे, वश न हूवे अहिजात रे ॥ शां० ॥ २० ॥ नाग बोल्यो अभिमानसु, मूक जो अहि ग्रहु केम रे॥के वली तुं ग्रहे माहरा, सुर कहे मुक तुं क्षेम रे ॥शा० ॥ २१ ॥ नागदत्त मूकिया पन्नगा, वलगीया सुरतणे अग रे ॥ वेदना अश नवि करि शके, दिव्य प्रभाव ए चग रे ॥शा०॥२२॥ नागदत्त कोपीयो एम भणे, मूक हवे ताहरा नाग रे ॥ जोउं केहवा अछे जालमी, नहिं इहां विलंबनो लाग रे ॥ शा० ॥ २३ ॥ मेल इहां स्वजन सवि ताहरां, कर इहा पंचनी साख रे॥ गारुडिक सुरवच सांभली, मेलि यां स्वजन हित दाखि रे ॥ शां० ॥ २४ ॥ कहे सुर कंचस्वरथी तदा, नागदत्त मुफ अहि साथ रे ॥ क्रीडवा चित्त चाहे घणु, पण नहि अहि मुफ हाथ रे ॥ शां० ॥ २५ ॥ दोष देवो नहि मुफने, जो मसे एहने आ

ज रे ॥ स्वजन जन सहु मल्या वारवा, म म कर एह अकाज रे ॥ शां० ॥२६॥ वारियो पण नवि विरमीयो, मूकीया नाग विरूप रे ॥ सोय अहि वाहक एम कहे, सुणो मुऊ भुजग स्वरूप रे ॥ शां० ॥ २७ ॥ रक्तलो चन विष पूरितो, क्रूर दोय जीन्न विकराल रे ॥ क्रोध अभिधान पूरव दि शें, प्रथम एह भुजग सन्नाल रे ॥ शां० ॥ २८ ॥ आठ फणाटोप जीष ण घणो, स्तब्धतनु याम्यदिशि जाण रे ॥ यम समानो महोरग कह्यो, जेहनु मान अभिधान रे ॥ शा० ॥ २९ ॥ वचनाकुशल जे अति घणो, पश्चिमें वक्रगति धार रे ॥ एह माया भुजगी वडी, धरिय नवि जाय नि र्धार रे ॥ शा० ॥ ३० ॥ उत्तरदिशें वडो जालमी, लोजनामें अहि राज रे ॥ एह मशिया नरा जगतमा, पूर्ण थाये निधन राज रे ॥ शां० ॥ ३१ ॥ जेहने चार ए अहि मसे, तस पछ्यानु किस्यु चित्त रे ॥ रहित आ लबनें जे नरा, ते लहे ऽ ख विचित्र रे ॥ शा० ॥ ३२ ॥ नागवश तेहने तव कहे, श्यो करे वातविस्तार रे ॥ मूक मुऊ उपरें शीघ्र तु, म कर मुऊ फिकर लगार रे ॥ शा० ॥ ३३ ॥ मूकीया तेणें उतावला, मत्र औषधें नहिं साध्य रे ॥ तनु मस्यु शेठना सूततणु, नूमि पड्यो थइने असाध्य रे ॥ शा० ॥३४॥ मित्रें उपचार बहुला किया, नवि वली चेतना तास रे ॥ एह जीवाडो एम सहु मली, वीनवे करि अरदास रे ॥ शा० ॥ ३५ ॥ तेह अहिवाहक बोलीयो, तो रहे जीवतो एह रे ॥ जे कहु ते किरिया करे, डुष्कर घणो ससनेह रे ॥ शा० ॥ ३६ ॥ हुं पण पूरवें इण मस्यो, तास विष वारवा हेत रे ॥ कष्ट किरिया करु एहवी, सांजलो तास सकेत रे ॥ शा० ॥ ३७ ॥ केश लुंचावु निज शिरतणा, जीरण श्वेत मित मान रे ॥ वस्त्र शोना विना वावरु, तप करु छुद्ध अनिदान रे ॥ शां० ॥ ३८ ॥ उठ अठ्ठम उपवासने, पारणे लूखु आहार रे ॥ नवि लीय नक्त आकंठता, षट रस विगय निवार रे ॥शां०॥ ३९ ॥ जो एम नवि करु हु कदा, तेह विष उदय फरी थाय रे ॥ कोइ समे वन गृह शून्यमा, नमु नहिं मुऊ एक ठाय रे ॥ शा० ॥ ४० ॥ एम किरिया करतां थका, मुऊ नो हे एह विष जार रे ॥ स्तोक निद्रा करु वली अमो, लीजियें स्तोक आहार रे ॥ शां० ॥ ४१ ॥ बोलीयें स्वल्प मितधर्मेनु, वाक्य मनमांहे विचार रे ॥ एम करे छुट्ट ए अहितणु, नवि चले जोर तिलजार रे ॥ शां० ॥ ४२ ॥

एहवी जो क्रिया ए करे, तो सही जीवे एम जाणो रे ॥ नहितर ए मरशे इस्यु, साजन सहु मन आणो रे ॥ शां० ॥ ४३ ॥ कहे जन एम करशे क्रिया, तुमें करो एहने सज्ञ रे ॥ प्रौढमम्डल तिहां आलखी, उच्चरे पाठ शुज्ञ कज्ञ रे ॥ शा० ॥ ४४ ॥ सिद्ध सहुने प्रणमी करी, करे मुखे एम उच्चार रे ॥ सर्वथी प्राणातिपातने, सर्वथी अलिय तिम धार रे ॥ शां० ॥ ४५ ॥ सर्वथी अदत्त मैथुन वली, सर्व परिग्रह तेम जाण रे ॥ जावजीव नागदत्त कुमर ए, एहनां करे पच्चरकाण रे ॥ शां० ॥ ४६ ॥ वार त्रण दम्डक एम जणी, अतें स्वाहा पद पाठ रे ॥ शेठसुत तेह साजो कह्यो, सुर तेणें करिय एम गाठ रे ॥ शा० ॥ ४७ ॥ जागियो स्वजन हरख्या सवे, दाखवी तस सवे वात रे ॥ सद्दही नवि तेणें तत्क्षणें, सबल अवली तस धात रे ॥ शा० ॥ ४८ ॥ घर जणी नीसर्यो तब वली, जूमि पडियो ततकाल रे ॥ पुनरपि सयणना कहेणथी, तेह जीवाडियो बाल रे ॥ शा० ॥ ४ए ॥ वार त्रीजी वली एम सही, निश्चय कीधलो जाम रे ॥ नागदत्तें वात मानी तदा, देवचिंतित थयु काम रे ॥ शां० ॥ ५० ॥ देव वनमाहि तस आणिने, निज कही पूर्वज्ञव वात रे ॥ सुणि तेणें जातिसमरण लह्यु, प्रत्येक बुध मुनि जात रे ॥ शां० ॥ ५१ ॥ देव तस चरण वंदी करी, गयो निज ठाम धरि हर्ष रे ॥ नागदत्त मुनि मही विचरतो, पाले आचार उत्कर्ष रे ॥ शा० ॥ ५२ ॥ देहकरम्डथी धाहिरें, नीसरवा न दे जेह रे ॥ चार कपाय अहिने सदा, एहवो मुनि गुणगेह रे ॥ शा० ॥ ५३ ॥ नागदत्त मुनि अनुक्रमें हुवा, सयमश्रेणि गुण धार रे ॥ घातिकर्मक्षयें उपन्यु, केवलज्ञान उदार रे ॥ शां० ॥ ५४ ॥ अनुक्रमें मुक्तिनारी वर्या, एम कहे शांति जिनचंद रें ॥ ए कपायातमा वश करे, प्रगट होय सहज आनंद रे ॥ शा० ॥ ५५ ॥ ढाल ठठे सुणो वीशमी, रामविजयें कही एह रे ॥ शांति प्रज्ञु देशना साज्ञली, समजजो ज्ञवि गुणगेह रे ॥ शां० ॥ ५६ ॥ इति कपायप्रमादोपरि नागदत्तसबंध ॥ २ ॥ सर्वगाथा ॥७१५॥ श्लोक ॥ २२ ॥

॥ अथ प्रथम प्राणातिपातविरमणव्रतसबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुण राजन् ए आदि दे, पंच प्रकार प्रमाद ॥ परिहरवो सुविवे

ज रे ॥ स्वजन जन सहु मल्या वारवा, म म कर एह अकाज रे ॥ शां० ॥२६॥ वारियो पण नवि विरमीयो, मूकीया नाग विरूप रे ॥ सोव अहि वाहक एम कहे, सुणो मुज नुजग स्वरूप रे ॥ शां० ॥ २७ ॥ रक्तलो चन विष पूरितो, क्रूर दोय जीन विकराल रे ॥ क्रोध अनिधान पूरव दि शें, प्रथम एह नुजग सनाल रे ॥ शा० ॥ २८ ॥ आठ फणाटोप नीष ण घणो, स्तब्धतनु याम्यदिशि जाण रे ॥ यम समानो महोरग कह्यो, जेहनु मान अनिधान रे ॥ शा० ॥ २९ ॥ वचनाकुशल जे अति घणो, पश्चिमें वक्रगति धार रे ॥ एह माया नुजगी वही, धरिय नवि जाय नि र्धार रे ॥ शा० ॥ ३० ॥ उत्तरदिशें वडो जालमी, लोननामें अहि राज रे ॥ एह मशिया नरा जगतमा, पूर्ण थाये निधन राज रे ॥ शां० ॥ ३१ ॥ जेहने चार ए अहि मसे, तस पश्चात्तु किस्युं चित्त रे ॥ रहित आ लवनें जे नरा, ते लहे उख विचित्र रे ॥ शा० ॥ ३२ ॥ नागदत्त तेहने तब कहे, श्यो करे वातविस्तार रे ॥ मूक मुज उपरें शीघ्र तु, म कर मुज फिकर लगार रे ॥ शां० ॥ ३३ ॥ मूकीया तेणें उतावला, मत्र औषधें नहिं साध्य रे ॥ तनु मस्युं शेठना सुततणु, नूमि पड्यो पडने असाध्य रे ॥ शां० ॥३४॥ मित्रें उपचार बहुला किया, नवि वली चेतना तास रे ॥ एह जीवाडो एम सहु मली, वीनवे करि अरदास रे ॥ शा० ॥ ३५ ॥ तेह अहिवाहक बोलीयो, तो रहे जीवतो एह रे ॥ जे कहु ते किरिया करे, उष्कर घणो ससनेह रे ॥ शा० ॥ ३६ ॥ हु पण पूरवें इण मस्यो, तास विष वारवा हेत रे ॥ कष्ट किरिया करु एहवी, सांनलो तास संकेत रे ॥ शां० ॥ ३७ ॥ केश लुंचावु निज शिरतणा, जीरण श्वेत मित मान रे ॥ वस्त्र शोना विना वावरु, तप करु शुद्ध अनिदान रे ॥ शा० ॥ ३८ ॥ छठ अठम उपवासने, पारणे लूक्ष आहार रे ॥ नवि लीव नक्त आकंठता, षट रस विगय निवार रे ॥शां०॥ ३९ ॥ जो एम नवि करुं हु कदा, तेह विष उदय फरी थाय रे ॥ कोइ समे वन गृह शून्यमा, नमु नहिं मुज एक ठाय रे ॥ शां० ॥ ४० ॥ एम किरिया करता थकां, मुज नो हे एह विष नार रे ॥ स्तोक निद्रा करु वली अमो, लीजियें स्तोक आहार रे ॥ शां० ॥ ४१ ॥ बोलीयें स्वल्प मितधर्मनु, वाक्य मनमाहे विचार रे ॥ एम करे उष्ट ए अहितणु, नवि चले जोर तिलनार रे ॥ शां० ॥ ४२ ॥

वन तात ॥ शा०॥ २ ॥ प्राणीवध बहु नेद छे, दोयशें त्रेंताल ॥ नव त्रि कगु गुणता थकां, सत्त्यावीशज नाल ॥ शा०॥ ३ ॥ करण करावण अनु मतें, एक्याशी विचार॥लेखवतां त्रिहुकालथी, सख्या अवधार ॥शां०॥४॥ यत ॥ नू जल जलणानिल वण, बि ति चउ पंचिंदिएहिं नव जीवा ॥ मण वय काय गुणिया,हवति ते सत्तवीसत्ति॥२॥इक्कासी इत्ता करण,कारणा णुमइ ताडिया होइ ॥ सच्चिय तिकाल गुणिया, डन्निसया हुति तेयाला ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ ए सवि हिंसानेदथी, विरम्या अणगार ॥ वीश वसा तेउने कही, दया सयम सार ॥ शा० ॥ ५ ॥ थूल उगारे दश रह्या, आ रंनें दो पंच ॥ सापराध सापेक्षथी, अर्द्ध अर्द्धनो सच ॥ शां० ॥ ६ ॥ यत ॥ थूल सुहुमा जीवा, सकप्पारनउ अ ते डविहा ॥ सावराह निर वराहा, सावरका चेव निरवरका ॥५॥ पूर्वढाल ॥ एम सागारी सवा वसो, करुणा पालत ॥ अच्युत सुर लगि आयुखु, बांधे गुणवत ॥ शां० ॥ ७ ॥ पंच अतिचार एहना, वह वधना विछेद ॥ अतिनारारोपण वली, नात पाणी विछेद ॥ शा० ॥ ८ ॥ ए मुख्य व्रतनें पालवा, बीजा वाड समान ॥ जीवदया व्रत मूलगु,नाखे नगवान ॥ शां० ॥ ए ॥ यडुक्त ॥ देवपूजा गुरू पास्ति, दानमध्ययन तप ॥ सर्वमप्येतदऽफल, हिंसा चेन्न परित्यजेत् ॥ ॥ ६ ॥ जं आरुग्ग० ॥ योदद्यात्० ॥ निरतिचार ए पालता, लहे लील विलास ॥ इह नव परनव सुख घणां, जेम ते यमपाश ॥ शां० ॥ ॥ १० ॥ चक्रायुध पूछे जिन कहे, वरते सुखवास ॥ नयरी वाणारसी अ तिनली, नहि दरिद्र निवास ॥ शा० ॥ ११ ॥ डर्मर्षण राजा तिहां, न्या यी गुणवत ॥ राणी कमलश्री नली, शीलें शोनत ॥ शां० ॥ १२ ॥ नामें सुमजरी आकरो, तिण नयरी तलार ॥ यमपाश जाति चामाल छे, नहि कर्में लगार ॥ शा० ॥ १३ ॥ एक नलदामा वाणीयो,निवसे तिहा सत॥ नाम सुमित्रा गेहिनी, दपती एक चित्त ॥ शा० ॥ १४ ॥ तस घर मम्म ण सुत अछे, लह्यो यौवनपूर ॥ सुख विलसे ससारना, चढतु जस नूर ॥ शां० ॥ १५ ॥ एक दिन एक हय ऊपरें, थयो नृप असवार ॥ वैरी सुरें ते आश्रयो, हयने तेणी वार ॥ शा० ॥ १६ ॥ उत्पतियो वेगें तदा, गगने हय तेह ॥ दूरें जइ नूमि पडघो, नृप कोइ वनछेह ॥ शा०॥ १७ ॥ हय पहोतो परलोकमां, नृप आयुने योग ॥ वच्यो ते वनमा नमे, नावी

कीयें, मूकी मन विषवाद ॥ १ ॥ धर्म करेंवो धसमसी, नेद बार बत सार ॥ दान शील तप नावना, मोक्ष तणा ए घार ॥ २ ॥ नेद दोय ते धर्मना, सागार ने अणगार ॥ दशविध कह्यो अणगारनो, धर्म मुक्ति दातार ॥३॥ वीश वसा जिहां पालवी, जीवदया नली नाति ॥ ते मुनि धर्म आराधता, करे कर्मनो घात ॥ ४ ॥ तेहथी ऊतरतो कह्यो, कायरने सागार ॥ बार नेद बे तेहना, समकित मूल उदार ॥ ५ ॥ दर्शन मोह कर्मोपशम, आदिथकी उत्पन्न ॥ जीवादिक श्रद्धान शुद्ध, समकित वई रतन्न ॥ ६ ॥ यडुक्त ॥ जिअ अजिअ पुण्य पावा, सव संवर बध मुरक निक्करणा ॥ जेण सद्दहइ तयं, सम्म खइगाइ बहु नेआ ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ तत्त्वत्रयनो जे सवा, अध्यवसाय विवेक ॥ ते समकित कहीयें वली, तेहना नेद अनेक ॥ ७ ॥ उक्तं च ॥ अरिहं देवो गुरुणो० ॥ समकित अरिहंत धर्मनुं, मूलनूत निर्धार ॥ प्रथमाहे एहनो घणो, नांख्यो बे विस्तार ॥ ८ ॥ डुविध डुविध इत्यादिकें, घादश व्रत आचार ॥ समकित उत्तर गुण सहित, नग एहना धार ॥ ए ॥ कोडि तेरशें उपरें, तेम चोराशी कोडि ॥ बार लाख तस ऊपरें, सहस सत्त्यावीश जोडि ॥ १० ॥ दोय शत दोय कह्या वली, नंग एटला जाण ॥ ए सर्वेमाही शिरें, समकित प्रथम वखाण ॥ ११ ॥ ए विण एके नगनो, संनव नो दे तेम ॥ ते माटे प्रजुजी कह्युं, आगममांहे एम ॥ १२ ॥ अतएवोक्तं ॥ मूल दार पइठाण, आहारो नायण निहि ॥ डुन्नकस्सावि धम्मस्स, स म्मत्त परिकित्तियं ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ कारक रोचक दीपकें, समकित त्रिहु प्रकार ॥ चारित्री अविरति तथा, मिथ्यादृष्टि विचार ॥ १३ ॥ पंच दोष एहना कह्या, शंका कख विगिन्न ॥ तेम पसस संथव कह्यो, वर्जे समकित सच ॥ १४ ॥ मूल एह साचू करे, आगल दोय विस्तार ॥ समकित मूल व्रत बार जे, एह धर्म सागार ॥ १५॥ हवे प्रथम व्रत उपरें, नांखे प्रजु अवदात ॥ ते नवियण तुमें सांजलो, मूकी विकथा वात ॥ १६ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ घरे आवी जननी नमे ॥ ए देशी ॥ शांति जिनेश्वर एम कहे, नि सुणो तुमें सार ॥ नरनव हाथो नवि मले, एह बीजी वार ॥शां०॥ १ ॥ व्रत पहेलुं सागारनुं, स्थूलप्राणातिपात ॥ विरमण करीयें तेहनुं, कहे त्रिहु

अवसरें सुत माहरो, नामें अतिमुक्त ॥ बहु रोगे ते पीडियो, न लहे ते उक्त ॥ शा० ॥ ३९ ॥ तेह गयो समशानमा, दीठ मुनिराज ॥ कर जोडी पाये नम्यो, कहे सीध्या काज ॥ शा० ॥ ४० ॥ अवर नहीं कोइ तुज विना, मुज राखणहार ॥ तु प्रभु नयणे निरखीयो, करुणा भंडार ॥ शा० ॥ ४१ ॥ मुनि परभावें ते थयो, अगें नीरोग ॥ वात आवी घरे मुज कही, गयो माहरो रोग ॥ शा० ॥ ४२ ॥ कुटुंब सहित रोगें दम्यो, नम्यो हु मुनिपाय ॥ ते मुनिचरणप्रभावथी, थया नीरोगी काय ॥ शा० ॥ ४३ ॥ ते मुनिवर मुज देशना, कहे करुणाखाणि ॥ जीवदया तुम्हें पालजो, आतम हित जाणि ॥ शा० ॥ ४४ ॥ रोग सोग नावे कदा, दोहिल डुखराशि ॥ धर्म अहिसा सेवतां, होवे शिवपुरवास ॥ शां० ॥ ॥ ४५ ॥ श्रावक धर्म में आदस्यो, करि हिंसा त्याग ॥ मन वच कायें नावरु, निसुणो वडभाग ॥ शा० ॥ ४६ ॥ कृत्रिम कोप करी कहे, राजा तव एह ॥ कारिज कर नहि तो तुने, मूकीश यमगेह ॥ शां० ॥ ४७ ॥ ते कहे मरवु एकदा, नहि बीजी वार ॥ पण निज व्रत भांग्या तणा, डुखनो नहिं पार ॥ शा० ॥ ४८ ॥ यडुक्त ॥ वरमग्गिम्मि पवेसो, वरं विसुद्धेण कम्मणा मरण ॥ मा गहिय व्वयभंगो, मा जीयं खलिय सीलस्स ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ राय सुणी हरख्यो घणु, मूक्यो यम पाश ॥ सन्मानी बोलावियो, परशस्यो तास ॥ शा० ॥ ४९ ॥ मातंगनो स्वामी कस्यो, करे उत्तम काम ॥ आयु पूरे यमपाश ते, पहोतो सुर गम ॥ शा० ॥ ५० ॥ अपर अत्यज नृप हुकमथी, कस्यो मम्मण नाश ॥ फल कहुआ हिंसा तणा, लह्यां नरक निवास ॥ शां० ॥ ५१ ॥ एम जे ए व्रत साचवे, तस लील विलास ॥ सुख पामे सुर शिव तणा, जेम ते यमपाश ॥ शां० ॥ ५२ ॥ छठे खर्म एकवीशमी, प्रभु भांखे दयाल ॥ पहेलु व्रत एम पालता, लहे सुख रसाल ॥शा०॥५३॥ सर्वगाथा ॥७८४॥

इति प्राणातिपात प्रथमव्रतसबधे यमपाशकथानकम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय मृपावाद विरमणव्रतसबध ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे बीजा अणुव्रत तणो, कहे जगगुरु अधिकार ॥ चक्रायुध नृप आगलें, ते निसुणो अधिकार ॥ १ ॥ क्रोध मान माया वली, लोभ

कर्मने जोग ॥ शा०॥ १७ ॥ नूख तृषा लागी घणी, नृप चिंते हो एम॥ पाणीविना प्राण माहरां, इहा रहेशे हो केम ॥ शां० ॥ १९ ॥ एहवे एक मृग आवीयो, नूपतिनी पास ॥ पूरव नव तस सांजरयो, नृप केर्ये उल्लास ॥ शा० ॥ २० ॥ अक्षर लखी शिला उपरें, जणावे हो तेह । देवलनामें हो ताहरो, सेवक गुणगेह ॥ शा० ॥ २१ ॥ आर्त्तध्यानमांहे मरी, थयो मृग वनमाहिं ॥ तुऊ दीठे मुऊ सांजरयो,पूरव नव आंहि ॥शां० ॥ २२ ॥ नीर देखाड्यु नृप जणी, जल पीधु तेवार ॥ स्वस्थ थयो मन चिंतवे, मृगनो उपकार ॥ शां० ॥ २३ ॥ सेना पूठें सचरी, करी नरपति केड ॥ वन वन जोता नृप जणी,आवी तेण वेड ॥ शा० ॥ २४ ॥ सैन्य सघातें हो आवीयो, मृग लेई साथ ॥ दान अजय दइ मूकीयो, पुरमां नृप नाथ ॥ शा०॥ २५ ॥ फिरता हो एक दिन आवीयो,मृग मम्मण हाट॥ पूरव मत्सरजावथी, उठयो लेइ लाठि ॥ शा० ॥ २६ ॥ तातने कहे अपराधीयो, मृग मारीश आज ॥ जनक कहे नवि कीजियें, एह सबल अकाज ॥ शा० ॥ २७ ॥ जीव कोइ हणीयें नहीं, वली एह विशेष ॥ नृपतिने मन मानियो, उपकारी रेख ॥शा०॥२८॥ जनकनो वाखो नवि रह्यो, रोषें हणे सोय ॥ मम्मण थयो विलखो घणु, चाल्यु कहण न कोय ॥शां० ॥२९॥ यमदर्भे तेण अवसरें,वीनवीयो राय ॥ कर्म कर्युं इण मम्मणें, निर्दय मन थाय ॥शा०॥३०॥ राय कहे कुण साखीयो, कहे ते तस बाप ॥ नृप पूठे साचु कहे, आवी ते आप ॥ शां० ॥ ३१ ॥ रीझ्यो राय मनें घणु, सत्यवादी जाण ॥ मान सहित बोलावीयो, घर ते गुणखाणि ॥ शां० ॥ ३२ ॥ कहे तेडी यमपाशने, मम्मणने हो मार ॥ कहेतो हिंसा नवि करु,नरपति अवधार ॥ शा०॥ ३३ ॥ तुं हिंसा न करे किस्युं, जातें चांमाल ॥ ते कहे राजन् माहरे, नहिं हिंसा ढाल ॥ शां० ॥ ॥ ३४ ॥ कारण सुण तेहनुं कहु, साहिब उजमाल ॥ हस्तिशीर्ष पुर छे जलुं, सोहे सुविशाल ॥ शा० ॥ ३५ ॥ दमदत नामें वाणीयो, सुणि वाणी अनत ॥ जिनवर पासें आदर्यो, सयम गुणवत ॥ शां० ॥ ३६ ॥ तप प्रजावथी उपनी, तस लब्धि अनेक ॥ ते विचरंतो आवीयो, वनमां सुविवेक ॥ शां० ॥ ३७ ॥ रह्यो काउस्सग्ग स्मशानमां, तपीयो अणगार ॥ जिण दीठे पावन होये, मानव अवतार ॥ शां० ॥ ३८ ॥ इण

लेखे व्रत कोइ ॥ धूरत श्रावकसुतनो, मृषा उपरें रे इहां उपनय होय ॥ ध० ॥ ६ ॥ ठे पारदारिक दस्युनी, प्रतिकिरिया रे जे बोले अलीक ॥ तस प्रतिकार न को मिले, ए धारजो रे मनमा तहकीक ॥ ध० ॥ ७ ॥ चार आश्रवनु एकण दिशें, दिशि एकण रे मृषावादनु पाप ॥ जारे असत्यनु त्राजवु, एम बोले रे श्रीजगगुरु आप ॥ ध० ॥ ८ ॥ वायसपद जेम एकलु, सामुद्रिक रे लक्षणना लक्ष ॥ अप्रमाण करे तेम इहा, जूठ जाखवु रे गुणगण प्रत्यक्ष ॥ ध० ॥ ए ॥ यत ॥ डुग्गधो पूइमुहो, अणिठवयणो अफरुस वयणो अ ॥ जल एल मूअ मम्मण, अलिअ वयण जपणे दोसा ॥ १ ॥ इह लोए च्चिय जीवा, जीहाछेह वह च वध वा ॥ अयस धणनास वा, पावति अ अलिय वयणाउ ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ कूडजाखी उपरें कह्यो, जइशेठनो रे प्रजुजी दृष्टांत ॥ निसुणे वारे पर्षदा, गुण अर्थी रे मन धरि एकात ॥ ध० ॥ १० ॥ धरणीप्रतिष्ठित नयरमा, धनवर्जित रे दोय वणिक वसत ॥ डुष्टबुद्धि सुबुद्धि जलो, धन कारण रे परदेश जमत ॥ ध० ॥ ११ ॥ कोइक पुरमाहे गया, लाजहेतें रे रह्या केता दीह ॥ देहचिता टालण जणी, एक दिन गयो तेह सुबुद्धि अबीह ॥ ध० ॥ १२ ॥ खनित घरमाहे खोदता, जाग्य योगें रे जइयु तास निधान ॥ वेहु मली जोवे यदा, एक सहसज रे दीनारनु मान ॥ ध० १३ ॥ कृतकृत्य थइ निजपुर वल्या, आवी उपवनें रे करे एम विचार ॥ नयरमेलें जाता थका, ए वातनो रे थशे विस्तार ॥ ध० ॥ १४ ॥ डुष्टबुद्धि कहे ए सवि, धन दाटियें रे जूमिमां इण गाम ॥ शत एकेकने आशरे, लेइ जइयें रे आपण निजधाम ॥ ध० ॥ १५ ॥ सरलपणे वीजे सवे, वात मानी रे कीधु ते काम ॥ वट पासें धन दाटीने, परजातें रे आव्या ते निज गाम ॥ ध० ॥ १६ ॥ शत दीनार ते डुष्टनी, दिन केतें रे नाठी तत्काल ॥ पुण्य विना स्थिर नवि रहे, एह सपद रे सुणो जवि उजमाल ॥ धि० ॥ १७ ॥ यत ॥ न निमित्तद्विषां क्षेम, नायुर्वैद्यकविद्विषाम् ॥ न श्रीर्नीतिद्विषामेक, मपि धर्मद्विषां न हि ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ पुनरपि वेहु मली एकठा, जइ लाव्या रे शत शत दीनार ॥ अन्य दिवस डुर्बुद्धि ते, मनमाहे रे करे एम विचार ॥ ध० ॥ १८ ॥ वची सुबुद्धिने एकलो, जइ लावु रे सघलो

त्रिविध तेम राग ॥ द्वेष हास्य भय क्रीडथी, क्रीडा विकथा लाभ ॥ १ ॥ रति अरति दाक्षिण्य तेम, मुखरपणुं इत्यादि ॥ एह कारणथी संजवे जगमा मिरषावाद ॥ ३ ॥ पीडाकारक जगतमा, सत्यवाद पण तेम ॥ मृषावाद तेहने कह्यो, नहि परिणामें क्षेम ॥ ४ ॥ यत ॥ अलियं न ज सियव, अच्छिद्ध सव वि जं न वत्तव ॥ सच्चपि जं न सचं, जं परपीड करं वयण ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ ते दुविध जिनवर कह्यो, स्थूल सूक्ष्म अव धार ॥ परिहासादिकथी सुक्ष्म, तस यतना सागार ॥ ५ ॥ स्थूल तीव्र सक्लेषथी, ते परिहरवो नित्य ॥ अवगुण जेहमां अति घणा, एहज वर्ज्य अकृत्य ॥ ६ ॥ यदावश्यकचूर्णीकृत् ॥ जेण भासियेण अप्पणो परस्स वा अतीव वाघातो वा अतिसकिलेसो अ जायते अट्ठाए अणट्ठाएवाण वपक्कत्ति ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ कन्या गो भूमीतणु, भव्य अलिक निवार ॥ थापण ऊलवियें नहीं, कूडी साख म धार ॥ ७ ॥ तथा च लौकिकवच ॥ कूटसाक्षी सुहृद्द्रोही, कृतघ्नोदीर्घरोषिवान् ॥ चत्वार कर्मचाण्डाला, पंचमो जातिसंभव ॥ २ ॥ तथा ॥ हस्ते नरकपाल० ॥ चांमाली प्राह ॥ मित्र द्रोही० ॥ कूटसाक्षी मृषावादी, पक्षपाती जगद्भये ॥ कदाचित्स्खलितो मार्गे, ते० ॥ ४ ॥ पूर्वदोहा ॥ सत्यमूल छे जस तणु, तेम विश्वास निधा न ॥ सत्य स्वर्गनुं बारणु, सत्य सिद्धिसोपान ॥ ८ ॥ मत्रयोग सत्यें फले, धर्म अर्थ ने काम ॥ सत्यवत दुःख नवि लहे, पडियां विषमे ठाम ॥९॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ नोकरवाली वहीयें ॥ ए देशी ॥ शांतिजिणेसर एम कहे, सवि सहहे रे भवियण जिनवाणी ॥ व्रत बीजुं तुमें आदरो, मृषावादनुं रे कीजें पच्च रकाण ॥१॥ धन्य जिनवाणी जे सुणे ॥ ए आंकणी ॥ नवि बोले रे कूडं लवलेश ॥ ते सुखीया सोभागीया, नवि पामे रे परभव सक्लेश ॥ ध० ॥ ॥ २ ॥ पंच अतिचार एहना, वर्जीजें रे सहसाभ्याख्यान ॥ अणआलो ची कोइने, नवि दीजें रे अछता अपमान ॥ ध० ॥ ३ ॥ वात एकांत नी कोइने, नवि कहीयें रे रहुअभ्याख्यान ॥ भेद स्वदारामंत्रनो, नवि क रियें रे जेहथी होय हाण ॥ ध० ॥ ४ ॥ मोसुवएस दीजें नहीं, मिट्ठ वढतां रे कांहिं कूडि बुद्धि ॥ कूड लेख लखवो नहिं, मन आणियें रे धरि समताशुद्धि ॥ ध० ॥ ५ ॥ ए व्रत आदरिया विना, नवि आवे रे

कूड घणां कमजात रे ॥ सा० ॥ ४ ॥ कहे डुर्बुद्धि इहा साखीयो, ठे वट विटप माहाराज रे ॥ सा० ॥ ते जो साख नरे इहां, तो देजो सावाश रे ॥ सा० ॥ ५ ॥ लीधु सुबुद्धियें वित्त ए, एम जो कहे ए वड वाणी रे ॥ सा० ॥ तो मुऊ साचो जाणजो, घणु शु कहु तुमने ताणी रे ॥ सा० ॥ ६ ॥ कहे नृपति जो एम हशे, तो पामिश बहु सन्मान रे ॥ सा० ॥ जो जूगे थाइश इहा, तो डुख लहिश असमान रे ॥ सा० ॥ ७ ॥ डुर्बुद्धि कहे रायने, करशु प्रनातें ए काज रे ॥ सा० ॥ नरवर कहे ते बेहुने, जाउ देइ जमान घर आज रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ ते विहु निजमंदिर गया, मनमाहे विमासे सुबुद्धि रे ॥ सा० ॥ डुर्घट काम एणें पडिवज्युं, कल शी केलवशे डुर्बुद्धि रे ॥सा०॥ ए ॥ अथवा जय होवे धर्मेथी, नही खोटुं इहा तिलमात रे ॥ सा० ॥ श्यो नय मनमांहे आणवो, जिहा कूड त्या धूड कहात रे ॥ सा० ॥ १० ॥ डुर्बुद्धि जइ निजघरे, कहे तातप्रत्यें समजाय रे ॥ सा० ॥ लाव्यो निधान हु रातमा, ऊगडो मचाणो आय रे ॥ सा० ॥ ११ ॥ नइशेंठ वलतुं कहे, हवे करवो कोण उपाय रे ॥ सा० ॥ धन वाहालु एकण दिशें, एकदिशि इज्जत कहे वाय रे ॥ सा० ॥ १२ ॥ पुत्र कहे निर्धन तणी, इज्जत श्ये आवे काम रे ॥ सा० ॥ धनहूती इज्जत घणी, वली वाधे जगमाहे माम रे ॥ सा० ॥ १३ ॥ मार्टे वटकोटर वचें, पेशी रहो रातें तात रे ॥ सा० ॥ प्रनातें कहेजो तुम्हें, धन लीधु सुबुद्धें एम वात रे ॥ सा० ॥ १४ ॥ सुत उपरोधें मानीयु, तेणें डुष्कर पण काम रे ॥ सा० ॥ अतिलोनी नर जे हुवे, तेहनी न रहे जगमा माम रे ॥ सा० ॥ १५ ॥ रातें रह्यो वट कोटरें, प्रनातें मल्या जनवृंद रे ॥ सा० ॥ महीपति पण तिहा आवियो, जुवो कपटीनो हवे फंद रे ॥ सा० ॥ १६ ॥ पुरजन नृप सहु देखता, वटतरु पूजे नजमाल रे ॥ सा० ॥ डुष्टबुद्धि एम उच्चरे, कहो डुष्यनी अमने नाल रे ॥ सा० ॥ १७ ॥ वैश्रमणालय सान्नलो, तुम उपर एह विवाद रे ॥ सा० ॥ सघले मलीने ठेरावियो, कह्यो जेम होय अम आह्लाद रे ॥ सा० ॥ १८ ॥ वटकोटरमाहे रह्यो, सहु सान्नलता नइशेठ रे ॥ सा० ॥ कहे निसुणो सहु को तुम्हें, ए काम सुबुद्धिनु ठेठ रे ॥ सा० ॥ १ए ॥ राय कहे ते सुबुद्धिने, निधि लीधो मुऊ देखा

ते माल ॥ शु न करे धन लालची, धन सम नहि रे जगमां कोइ साख ॥ ध० ॥ १९ ॥ रातें जइ सवि सामटु, धन लाव्यो रे कपटी ते घ जात ॥ छल करी सरलने छेतरी, धनलोभी रे वचे निजतात ॥ ध० ॥ २० ॥ साथें तेडी जइ तेहने, पछे जोयु रे तेणे धनठाण ॥ मांहे कांहिं दीसे नहीं, कपटीना रे जुर्ज एह विन्नाण ॥ ध० ॥ २१ ॥ हा हा डुर्बुद्धि कहे, मुझ वची रे कोइ धूरत एह ॥ माल लेइ गयो माहरो, देयु कूटे रे हाथेसु तेह ॥ ध० ॥ २२ ॥ चिंते सुबुद्धि चित्तमा, एह धूरत रे एहना सवि काम ॥ धुत्ता होय सुलक्षणा, जगमांहे रे कहेवाये आम ॥ ध० ॥ २३ ॥ अम विहु विण को नवि लहे, एह स्थानक रे त्रीजो जन मात्र ॥ सही लीधु आवी एणें, एह जेहवो रे जग नहि कमजात ॥ ध० ॥२४॥ खम्म छठे बावीशमी, ढाल जाखी रे निसुणो गुणवंत ॥ इव्य समो नहि को रिपु, जेणें मेहल्यु रे धन तेह सत्यवंत ॥ ध० ॥ २५ ॥ ०१० ॥२५

॥ दोहा ॥

॥ कहे सुबुद्धिने पापीयो, तें सही लीधुं एह ॥ वीजु कोइ जाणे नहीं, तु थयो सहि निःस्नेह ॥ १ ॥ कहे सुबुद्धि डुर्बुद्धि सुण, मुझ मन एहवु हूत ॥ तो एकांतें ए लखुं, शाने तुझ सोपत ॥ २ ॥ पण वंचक तुहिज सही, ठगमांहे शिरदार ॥ तुझ विण दूजो को नहीं, ए निधान लेनार ॥ ३ ॥ प्रीति रही नहि तेउने, कलहो लाग्यो जोर ॥ माहोमांहि धन कारणें, बोले वयण कठोर ॥ ४ ॥ झगडता बेहु आविया, नरपतिने दरबार ॥ अरज करे ऊंचे स्वरें, दुष्टबुद्धि तेणि वार ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ देराणी जेठाणीना गोंखला ॥ ए देशी ॥ राजन् अम बेहु पामीया, निधि कोइक ठाम ठवार रे ॥ साहिब सुणो विनति ॥ ए आंकणी ॥ तुझ नयरथी अमें वहतलें, लेइ सताहधु निर्धार रे ॥ सा० ॥ १ ॥ मुझ वची एणें लियु, नहिं भूमिमांहे ते निधान रे ॥ सा० ॥ तुझ विण कुण मुझ सांजले, फरियाद ए सुगुणनिधान रे ॥ सा० ॥ २ ॥ तुम बेठां ए नयरमा, वरते जो एहवो अन्याय रे ॥ सा० ॥ तो अम जेहवा अनाथनी, कहोने हवे शी गति थाय रे ॥ सा० ॥ ३ ॥ कहे राजन साखी इहा, छे कोइ के कल्पितवात रे ॥ सा० ॥ धन कारण बहु केलवे, एम

॥ अथ तृतीयस्थूल अदत्तादानविरमण व्रतसवध ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्थूल अदत्त परित्यागनु, व्रत त्रीजु कहे स्वामि ॥ चक्रायुध नृप आगलें, सवि नविजन हितकाम ॥१॥ स्वामी जीव गुरु तीर्थकर, अदत्त कह्यु चउ नेद ॥ चउनेदें ए साधुने, तजवु तजि मन खेद ॥ २ ॥ कनकादिक स्वामी अदत्त, नवि लीजे कोइ वार ॥ सचित्त फलादिक नेदता, जीवादत्त विचार ॥ ३ ॥ तेह फलादिक जीवडे, नवि दीधां निज प्राण ॥ तेह नणी लेवु नहि, सचित्त फलादिक जाण ॥ ४ ॥ गृही दीधु पण साधुने, आधाकर्मी जेह ॥ तीर्थकर आणा नहि, अदत्त तीर्थकर तेह ॥ ५ ॥ श्रावकने प्राशुक वली, अनक्ष्य ने काय अनत ॥ वावरतां तीर्थकरें, अदत्त कह्यु नगवत ॥ ६ ॥ सर्वदोप निर्मुक्त पण, अनिमत्री गुरु सार ॥ जे नुजीजें ते कह्यो, गुरु अदत्त सुविचार ॥७॥ स्वामि अदत्तनो इहा कह्यो, स्थूलव्रतें अधिकार ॥ यत्न करीने जालवो, ए व्रत निरतिचार ॥ ७ ॥ चौरानीत न लीजियें, चौरप्रयोग निवार ॥ सरस नीरस वेह्नु नेलीने, नवि कीजें व्यापार ॥ ए ॥ राज्यविरुद्ध न कीजियें, कूटतुला ने मान ॥ पंच दोप ए टालता, शुद्ध व्रत कह्यु निदान ॥ १० ॥यडुक्त॥ चौरश्चौरार्पको मंत्री, नेदज्ञ काणकक्रयी ॥ अन्नद स्थानदश्चेति, चौर सप्तविध स्मृत ॥ १ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ आदि ए आदि जिणेसर, नाजिनरिंद मल्हार ॥ ए देशी ॥ शांति जिनेश्वर एम कहे, सांनलो सवि नर नारी ॥ एह अतिचार टालवा, चौरप्रसूति निवार ॥ नलवुं ए कुशलनु पूठवु, सङ्गाकरण सुविचार ॥ राजनोग्य धननिह्नव, अवलोकन तेम धार ॥ १ ॥ ठहुं अमार्गेनुं दर्शन, शय्यासमर्पण जाणो ॥ पदन्नग जाणीयें आठमो, विश्राम नवम वखाणो ॥ पादपतन आसन तिम, गोपन मन नवि आणो, खम्म खादन माहाराजिक, वर्जे ए सुगुण सुजाणो ॥ २ ॥ पद हितकारक पद्य, असण जल तैल न दीजें ॥ पाकने कारण अग्निनु, दान कदापि न कीजें ॥ पानने अर्थे शीतल जल, दीधे ए लान न लीजें ॥ पशुवधननें ए रज्जुनु, दान देता गुण डीजे ॥ ३ ॥ चौरप्रसूति अढार ए, जाणी करे जेह त्याग ॥ सुजस महोदय ते लहे, दिन दिन अधिक सोनाग ॥

ह रे ॥ सा० ॥ चिते सुबुद्धि तरु नवि कहे, दुर्बुद्धें रच्युं सवि आल रे ॥ सा० ॥ २० ॥ वटकोटरथी नीसरी, वाणी नरनी ए आज रे ॥ सा० ॥ सांकेतिक सही इहाकणे, कोइ नरथी थयु ए काज रे ॥ सा० ॥ २१ ॥ कर जोडी कहे नूपने, में देवु धन उल्लास रे ॥ सा० ॥ पण जो हुकम होय रावलो, तो हुं करु एक अरदास रे ॥ सा० ॥ २२ ॥ कहे राजा सुखें विनवो, कहे में लीधु धन तेह रे ॥ सा० ॥ पण ए तरुकोटर विचें, मूकीने गयो निजगेह रे ॥ सा० ॥ २३ ॥ एक दिन लेवा आ आवियो, तव दीठो इहां अहि एक रे ॥ सा० ॥ फण मांमी ऊपर रह्यो, नयंकर दीसे अति ठेक रे ॥ सा० ॥ २४ ॥ मुऊ धन अधिष्ठायक थई, रह्यो जो कह्यो तो हणु देव रे ॥ सा० ॥ राय अनुज्ञा तव हुई, करो कारिज वहेला हेव रे ॥ सा० ॥ २५ ॥ शर्पण ठगण लेई घणा, तरुकोटर पूरे सुबुद्धि रे ॥ सा० ॥ अग्निथी धूम थयो घणो, गइ नइ तणी शुद्ध बुद्धि रे ॥ सा० ॥ २६ ॥ लोचन अकुलाणां घणु, पड्यो ऊठलीने नूपीठ रे ॥ सा० ॥ पुरपति पुरजन सहु मल्या, नइलोकने प्रत्यक्ष दीठ रे ॥ सा० ॥ २७ ॥ पूछे सकौतुक सहु तिहां, कहे सुत दुष्टें मुऊ लाज रे ॥ सा० ॥ खोवरावी सहु शहेरमां, एणें कीधुं नीच अकाज रे ॥ सा० ॥ २८ ॥ कूडी साख नरावीने, नव इक्षातनो कर्यो नाश रे ॥ सा० ॥ मुऊ जेवो जड को नहि, पड्यो मोहतणे हु पाश रे ॥ सा० ॥ २९ ॥ वाक्य अलिक मुऊने फल्युं, एहिज नवमां नरदेव रे ॥ सा० ॥ एम जाणीने सहु तुम्हें, मत राखो अलिकनी टेव रे ॥ सा० ॥ ३० ॥ नइनणी राय मूकियो, तस सुत तेडी नूपाल रे ॥ सा० ॥ धन सघलुं लेइ करी, पुर बाहिर कर्यो तत्काल रे ॥ सा० ॥ ३१ ॥ सुबुद्धि नणी सन्मानियो, देइ वस्त्रानरण अमूल्य रे ॥ सा० ॥ नृप जन सहु घर आवीयां, जग एहवु असत्यनु शूल रे ॥ सा० ॥ ३२ ॥ इह परनव दुखदायक, जाणीने असत्य तजो दूर रे ॥ सा० ॥ सुण चक्रायुध राजीया, सत्यथी होय सुख नरपूर रे ॥ सा० ॥ ३३ ॥ व्रत बीजा ऊपरें कह्यो, प्रजुजीयें संबध रसाल रे ॥ सा० ॥ छठे खर्में त्रेवीशमी,कही रामविजयें ए ढाल रे ॥सा०॥३४॥ इति मृषावादविरमणद्वितीयव्रते नइश्रेष्ठिकथानक॥२॥सर्वगाथा॥८५७॥२१

कर, परमातम अरिह्त नमो ॥ पारगत परमेष्ठि अधीश्वर, नयनजन नगवत नमो ॥ मु० ॥ २ ॥ शम्नु स्वयम्नु जगत्प्रनु अनयद, वीतराग गुण सिंधु नमो ॥ बोधिदायक त्रिहु कालके ज्ञायक, अशरण शरण सुबंधु नमो ॥ मु० ॥ ३ ॥ केवलकमलाकत महोदय, सिद्ध बुद्ध सर्वज्ञ नमो ॥ तीर्थंकर तीर्थेश्वर ईश्वर, पुरुषोत्तम परमज्ञ नमो ॥ मु० ॥ ४ ॥ आप्त अनत अचित्य गुणाकर, निर्मोही अविकार नमो ॥ पूर्णानंद स्वयबुद्ध साहिब, योगीश्वर जितमार नमो ॥ मु० ॥ ५ ॥ लोकालोक प्रकाशक नासरु, आनंदघन अविनाश नमो ॥ देवाधिदेव शरण एक तेरो, क्षायिक नावविलास नमो ॥ मु० ॥ ६ ॥ इत्यादिक शुन्न नामके धारक, करुं प्रणिपत्य त्रिहु काल नमो ॥ राम कहे करो सेवक ऊपर, करुणा दीन दयाल नमो ॥ मु० ॥ ७ ॥ इति श्रीजिनस्तुति ॥ पूर्वढाल ॥ एहवे तिहां एक आवी ए, नावी कनी मन रगें ॥ यौवन रूप रसाली, मनोहर वाणी सुचगे ॥ निज उत्तरीय करी मुख, कोश धरी मन नाव ॥ जिनमुख मम्जन करती, मनोहर रग बनाव ॥ ए ॥ अगें ए आगी अनोपम, उंपती कांति अपार ॥ केसर घन घनसारशुं, विरचे ए विविध प्रकार ॥ पत्रवल्ली रचना वली, नवली कपोलें ए सारी ॥ करती श्री जिनबिंबने, कुमरे निहाली ए नारी ॥ १० ॥ जिनदत्त कहे निजमित्रने, कोण कनी ए सारी ॥ नक्ति करें नगवतनी, मित्र कहे सुविचारी ॥ प्रियमित्र सारथवाहनी, नंदनी जिनमती नामें ॥ शुन्नलक्षण सपूरण, सृष्टें घडी एह कामें ॥ ११ ॥ रूपें ए सरिखी रे ताहरे, जोडी मिले गृहवास ॥ तो सफलो होय विधि तणो, ए निर्माणप्रयास ॥ जिनदत्त कहे जिनन्नुवनमा, हास्य न कीजें ए नाई ॥ आशातन होय जिनतणी, विषयकथा ऊ खदायी ॥ १२ ॥ जघन्य तोपि जिनगृहे दश आशातना वर्ज्जनीया ॥ तद्यथा ॥ तंबोल पाण नोयण, वाणह मेहूण सयण निष्ठुवण ॥ मुत्तुच्चार जूयं, वज्जे जिणनाह जगईए ॥६॥ उत्कृष्टतश्चतुरशीतिसंख्यया आशातना वर्जनीया॥ तद्यथा ॥ खेल १ केलि २ कलि ३ कला ४ कुललय ५ तंबोल ६ मुग्गालय ७, गाली ८ कगुली या ए सरीरधवण १० केसे ११ नहे १२ लोहियं १३ ॥ नत्तो १४ सत्तय १५ पित्त १६ वति १७ दसणा १८ विस्सामण १ए दामण २०, दंत २१ छी २२ नह २३ गल्ल २४ नासिय २५ सिरो २६ सुत्त २७ छवीण २८

॥ अथ चौरप्रसूतिकास्वरूप गाथानिर्लिख्यते ॥ नलन कुशलं तर्जा, राज नागोवलोकनम् ॥ अमार्गदर्शन शय्या, पदनगस्तथैव च ॥ १ ॥ विश्राम पादपतन, चासन गोपन तथा ॥ खम्रस्य खादन चैव, तथान्यन्मात्र राजिकम् ॥ २ ॥ पद्यास्युदकरज्जूना, प्रदान ज्ञानपूर्वकम् ॥ एताः प्रसूतयोज्ञेया, अष्टादश मनीषिन्जि ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ एह अवत्त निवा रीने, साधे जे मुक्तिनो माग ॥ ते गृही उत्तमगति लहे, आगल शिव गति लाग ॥ ४ ॥ यडुक्त ॥ खिते खले अरन्ने, दिआयराउ व सब घाए वा ॥ अन्नो से न विणस्सइ, अचोरिआए फल एय ॥ ४ ॥ गामागर नगराए, दोण मुह मम्ब पट्टणाए च ॥ सुइर हवति सामी, अचोरिया ए फल एयं ॥ ५ ॥ पूर्वढाल ॥ ए व्रत पालवु यत्नथी, जिनदत्त परें सुखकार ॥ चक्रायुध नृप आगलें, कहे प्रनु तस अधिकार ॥ नयर वसतपुरें वसे, जिनदास श्रावक सार ॥ जीवाजीवादिक तत्त्वना, जाणे ए अर्थ विचार ॥ ६ ॥ जिनदत्त नामें ए नदन, जन आनदन जाचो ॥ जिनवर धर्म समाचरे, जाणे ए मारग साचो ॥ कुल कन्या विवाहनी, वातमाहे हवे राचो ॥ मात पिताने जिनदत्त, कहे ससार ए काचो ॥ ७ ॥ मित्रमम्लक्षु परवस्यो, एकदिन उपवन जाय ॥ देखि उत्तग मनोहर, जिनगृह हर्षित थाय ॥ मित्र सघातें ए आवे रे, नाव धरी मनमांहि ॥ पूजा करी जिनराजनी, चैत्यवदन करे त्यांहि ॥ ८ ॥ अथ चैत्यवदन ॥ जय जय तुं जिनराज आज, मलियो मुफ स्वामी ॥ अविनाशी अकलक, रूप जग अतर्यामी ॥ रूपारूपी धर्म, देव आतम आरामी ॥ चिदानद चेतन अचित्य, शिवलीला पामी ॥ सिद्धि बुद्धि तुम वदता ए, सकल सिद्धि वर बुद्धि ॥ राम प्रनु ध्यानें करी, प्रगटे आतम ऋद्धि ॥१॥ काल बहु स्थावर घरे, नमीयो नवमाहि ॥ विकलेंद्रिय मांहि वस्यो, स्थिरता नहीं क्याही ॥ तिरि पंचेंद्रिय माहि देव, कर्में हु आयो ॥ करि कुकर्म नरकें गयो, दरिसन नवि पायो ॥ एम अनत कालें करी ए, पाम्यो नर अवतार ॥ हवे जगतारण तुं मिल्यो, नवजल पार उतार ॥ २ ॥ इति चैत्यवदन ॥ अथ स्तवन ॥ श्री राग ॥ मुनि ध्येय नमो सुर गेय नमो, पतितपावन शुचि नाम नमो ॥ चिंतित सकल मनोरथ पूरण, कल्पतरु परिणाम नमो ॥ मु० ॥ १ ॥ जिनमुनिनाथ जिनेश्वर श

यो ॥ ३ ॥ कीधी वात प्रमाण, जिनदत्तने जनकें तिहां ॥ आव्यो घरे सुजाण, मुह माग्या पासा ढल्या ॥ ४ ॥ जिनदत्त मंदिरमांहि, आव्यो वात कही सवे ॥ पण संयमनी चाह, नवि इछे विवाहने ॥ ५ ॥ जिनमंदिरनी वात, मांमीने सघली कही ॥ पण ते निसुणी जात, मौन धरी मनमा रह्यो ॥ ६ ॥

॥ ढाल पच्चीशमी ॥

॥ चादलीयोने उग्यो रे हरणी आथमी रे ॥ ए देशी ॥ जिनमती बोले रे सहीयर माहरी रे, मन हरी जिनदत्तें लीध ॥ रयणी न जाये रे वैरिणी थइ रही रे, काइ मुऊ कामण कीध ॥ जि० ॥ १ ॥ चंदनशीतल चंइनी चंडिका रे, मुऊ तन दहे रे अपार ॥ रात दिवस मुने वल्लन्न सांन्नरे रे, श्वासमांहे सो वार ॥ जि० ॥ २ ॥ वैर वसाव्यु रे एहने निरखतां रे, नवि लही प्रीतिनी रीत ॥ बाहेर दीसे रे शीतल ए सही रे, पण ठे ए अग्निनी मित्त ॥ जि० ॥ ३ ॥ माया लगाडी रे जिनघरे आवीने रे, पण न हिं मुऊशु रे राग ॥ हु तस कारण अहोनिश टलवलु रे, पण मिलवु होवे न्नाग्य ॥ जि० ॥ ४ ॥ निसुण्यो वैरागी रे में तेहने सही रे, एक पखी रे एह प्रीत ॥ केम जोडाशे रे सहीयर माहरी रे, सबल विमासण चित्त ॥ जि० ॥ ५ ॥ सहीयर बोले रे धर धीरज मनें रे, मिलशे हो वालिम तेह ॥ तुऊथी विवाहनी वातने सांन्नली रे, मौन धरी रह्यो तेह ॥ जि० ॥ ६ ॥ एम अनुरागें रे दिवस घणा गया रे, एक दिन घरथी रे तेह ॥ निसरती नीरखी रे पुररक्षकें रे, वसुदत्तें ससनेह ॥ जि० ॥ ७ ॥ मोहन गारी रे निरखी मानिनी रे, मनमाहे मोह्यो अत्यंत ॥ जनकने न्नांखे रे परणावो मुने रे, जिनमती एह एकांत ॥ जि० ॥ ८ ॥ प्रियमित्र बोले रे ए जिनदत्तने रे, दीधी अम्हें सुणो संत ॥ माटें कसु हवे ए शा काम नु रे, सुणि तेह द्वेष धरंत ॥ जि० ॥ ए ॥ डुष्ट रीसाणो रे जिनदत्त ऊपरें रे, विषय ए अनरथ मूल ॥ विषय विलुब्धा रे जगमांहे मानवी रे, गति मति मिले सवि धूल ॥ जि० ॥ १० ॥ एक कनक रे दूजी कामिनी रे, दोय घाटी विकराल ॥ बहु लेवाणा रे एहमाहें बापडा रे, तस नहिं सार संन्नाल ॥ जि० ॥ ११ ॥ आरक्षक ठल ताके अहोनिशें रे, जिनदत्त हणवाने काज ॥ मनमांहि चिंते रे ए मारे थके रे, सही मुऊ सरशे

मल ॥ ७ ॥ मत २ए मीलण ३० लिखियं ३१ विनजण ३२ भंमार ३३ डुगसण, ३४ गाणी ३५ कप्पड ३६ दालि ३७ पप्पड ३८ वडी ३ए विस्सारण नासण ४० ॥ अक्कदं ४१ विकह् ४२ सरच्छघडणं ४३ तेरिच्छसगवण, ४४ अग्गीसेवण ४५ रंधण ४६ परिखण ४७ निस्सी हियाजजण ४८ ॥ ८ ॥ छत्त ४ए वाहाण ५० सच ५१ चामर ५२ मणो पोगत्त ५३ मप्भिंगण, ५४ सच्चित्ताण ५५ मचायचायमजिए ५६ दिठीइ नोअजली ५७ ॥ साडेगत्तरसगजग ५८ मउड, ५ए मोलिं ६० सिरे सेहरं ६१ हुड्डा ६२ जिरुद ६३ गिड्डीआइरमण ६४ जोहार ६५ जंड क्किअ ६६ ॥ ए ॥ रिक्कारं ६७ धरण ६८ रण ६ए विवरणवालाण ७० पल्लच्छिअ ७१, पाक ७२ पायपसारण ७३ पुडपुडी ७४ पंक ७५ रउ ७६ मेहुण ७७ ॥ जूअ ७८ जेमण ७ए जुज्झ ८० विज्ज ८१ वणिज ८२ सिज्जा ८३ जलमज्जण, ८४ एमाई अमवज्ज कज्ज मुज्जुउ वज्जे जिणहालए ॥ १० ॥ इति चतुरशीति आशातनाविचार ॥ १० ॥ पूर्वढाल ॥ जाणो ए आशय माहरो, दक्ष तमे गुणवता ॥ चारित्र लेइ ए नर नव, हु करशुं फलवता ॥ जिनमुख मफन चातुरी, जाव लही पूछशु एह ॥ नहिं लवलेशथी माहरे, एह उपर काइ नेह ॥ १३ ॥ कीजें ए केम जिनमदिर, नारिकथा सुणो जाइ ॥ एम कहीने रह्यो जिनदत्त, जिनमुख दृष्टि लगाइ ॥ जिनदत्त कुमर निहालतां, थयो मनमां अनुराग ॥ शुज आकार ए जो वरु, तो महारु वड जाग्य ॥१४॥ जाणयुं सखीजन स्वामिनी, जिनदत्त उपरें मोही ॥ मेल मले किम वातनो, कुवर ए निर्मोही॥ जिनमती पण घरे आवी रे, पितरने कहे सखी वात ॥ ते निसुणी मन रीजिया, थइ सुखिणी सवि धात ॥१५॥ जिनदत्त पण घरे आवीयो, करे वारू व्यवहार ॥ न्याय मारग नवि लोपे ए, पाले अखम आचार ॥ खफ छठे ए चोवीशमी, ढाल कही मनरागें ॥ राम कहे हवे एहनी, वात सुणो जवि आगें ॥ १६ ॥ सर्वगाथा ॥ ८ए२ ॥ ४७ ॥

॥ दोहा सोरठी ॥

॥ प्रियमित्र सारथ वाह, गयो जिनदासने मदिरें ॥ मेलणने विवाह, हर्ष धरी देजाछुउ ॥ १ ॥ तेहने दीधो ताम, जिनदासें आदर घणो ॥ पूछयुं कहो कुण काम, पावधाया अम आंगणे ॥ २ ॥ ते कहे कन्यादान, देवाने हु आवीयो ॥ तुम सुत सुगुणनिधान, अम मनमां घणु जावि

॥ जि० ॥ २७ ॥ एह्वा पुरुपरयणने मारतां रे,केम वहे नीचना हाथ॥ केम एह्वी गुणवतने आपदा रे, शे दीधी जगनाथ ॥ जि० ॥ २८ ॥ चोक महेल गोंखे रही मानिनी रे, जोवे जिनदत्तरूप ॥ गति एह्नी नारी नी शी हशे रे, थयुं ए अकाज विरूप ॥ जि० ॥ २९ ॥ आव्यो प्रिय मित्र सारथवाह्ने रे, मंदिर देखें रे तास ॥ सुणी कोलाहल आवी गो खमा रे, जिनमती सुदती उल्लास ॥ जि० ॥ ३० ॥ दीठो रे जेह्वे ते जिनदत्तने रे, रुदन करे तेणि वार ॥ हा मुफ वालेसर जिनदत्तने रे, कां रूठो किरतार ॥ जि० ॥ ३१ ॥ हैयडुं नराइ रे आव्यु हेजथी रे, नयण वहे जलधार ॥ शोकपयोनिधि वेल वधी घणु रे, अहो अहो मोह प्रकार ॥ जि० ॥ ३२ ॥ कां मुफ उपरें दैवज कोपीयो रे,जे मुफ जीवन प्राण॥ ए जिनदत्तने जो तें एम कह्यु रे, ह्वे जीव्यु अप्रमाण ॥ जि० ॥ ३३ ॥ एम विलपती दीठी ते सती रे, मन चिंते जिनदत्त ॥ पार नहीं कांइ ए ह्नी प्रीतिनो रे, मुफ उपर एक चित्त ॥ जि० ॥ ३४ ॥ मुफ डुःख देखी रे डुःखणी ए घणु रे,अहो ए नेह अछेह ॥ जो मुफ आवे रे डुःखनो छेह्लो रे, तो करु एह्थी सनेह ॥ जि० ॥ ३५ ॥ नहिंतर मुफने सागारी ह्जो रे, अणसण परनव सार ॥ एम चिंतवता रे आव्यो तेह्ने रे, वध स्थानक तेणी वार ॥ जि० ॥ ३६ ॥ प्रियमित्र सारथवाह्नी पुत्रिका रे, जइ ग्रहे चैत्यमफार ॥ जइ जिनवर आगल प्रणमी करी रे, करे एम म नश्च विचार ॥ जि० ॥ ३७ ॥ में मुफ वालेसर जिनदत्तनु रे, कष्ट टले निर्धार ॥ एह काउस्सग्ग तो पारेवो सही रे,रही ऊनी तिण वार ॥ जि० ॥ ३८ ॥ चित्तश्च चिंती शासनदेवता रे, करजो मुफने सहाय ॥ जो हु साची छु जिनशासनें रे, तो मुफ राखजो लाज ॥ जि० ॥ ३९ ॥ तुष्ट थइ तस शीलप्रनावथी रे, शासनदेवी तें वार॥ आवे तिहा शूली नाजी पडी रे,तृणपरें तेणें त्रण वार ॥ जि० ॥ ४० ॥ तरु वांध्यो त्रूटी तव दोरि का रे, करे तव खड्गप्रहार ॥ कुसुमतणी माला जेम ते थयो रे, सबलो शील आधार ॥ जि० ॥ ४१ ॥ जइ आरक्षक नरें नृप विनव्यो रे, नयवि स्मय मन धारि ॥ आव्यो तिहा दोडी उतावलो रे, जय जय तु गुणधार ॥ जि० ॥ ४२ ॥ गज वेसारी आव्यो शहेरमा रे,सहु कहे जयजयकार॥ नरपति पूछे धुरहूती कह्यो रे, वसुदत्तनो अधिकार ॥ जि० ॥ ४३ ॥ न

रे काज ॥ जि० ॥ १२ ॥ एम निष्कारण जगमांहे पापीया रे, बांधे हो कर्मनो राशि ॥ सरल स्वनावी रे जिनदत्तने मनें रे, वरते हो नाव अमल ॥ जि० ॥१३॥ एक दिवस नृप रह्वाडी चढयो रे, गयो उद्यान मकार ॥ वलतां विचाले रे कुंमल काननु रे, पडीयु रे कोइक वार ॥ जि० ॥ १४ ॥ घरे आवीने रे रायें जाणीयुं रे, कीधो हुकम कोटवाल ॥ कुंमल जोवा रे तुरत ते चालीयो रे, वसुदत्त थइ उजमाल ॥ जि० ॥ १५ ॥ कर्म संयोगें रे कोइक कारणें रे, तिण वाटें जिनदत्त ॥ आगल चाल्यो रे बाहिर तिण समे रे, जो जो नावीनिमित्त ॥ जि० ॥ १६ ॥ कुंमल दीतुं रे तेणें मारग पड्यु रे, तजि मारग तेणी वार ॥ दूर थइने रे अलगो नीसर्यो रे, सामु न जोयुं लगार ॥ जि० ॥ १७ ॥ यत ॥ आत्मवत्सर्वनूतानि, पर इव्याणि लोष्ठवत् ॥ मातृवत्परदारांश्च, य पश्यति स पश्यति ॥१॥ य प रवादे० ॥ पूर्वढाल ॥ वसुदत्त आव्यो रे फिरतो तिहां कने रे, पडीयु कुंमल देखि ॥ तुरत लेइने नृपने सोंपीयु रे, नृप लह्यो हर्ष विशेष ॥ जि० ॥ १८ ॥ नरपति पूछे रे किहां ए पामीयु रे, ते कहे जिनदत्त हाथ ॥ जिनदत्त शाक रे परधन नवि हरे रे, एम बोले पुरनाथ ॥ जि० ॥ १९ ॥ कहे वसुदत्त ए सरिखो को नहिं रे, चोर अवर रे ससार ॥ धर्मी नाम धरावी धीखे रे, पश्यतोहर ए धूतार ॥ जि० ॥ २० ॥ नाम न लीजें रे साहेब एहनु रे, एहवो नीच न कोय ॥ दुर्जन आव्या रे दावने घालवे रे, रूठयो नृप सुणी सोय ॥ जि० ॥ २१ ॥ वध आदेश कर्यो कोटवालने रे, कानें काचा हो राय ॥ जो जो विषयथकी विष निपन्यु रे, कीधां कर्म न जाय ॥ जि० ॥ २२ ॥ क्रोधवशें वसुदत्तें बांधीयो रे, जिनदत्तने ततकाल ॥ पुरमां सहु कोय हा हा रव करे रे, ए शुं थयु रे अकाल ॥ जि० ॥ २३ ॥ जिनदत्त जेहवो धर्मी को नहिं रे, न करे एम अन्याय ॥ पण दुर्जन वसुदत्त नंनेरीयो रे, ज्ञान विहूणो ए राय ॥ जि० ॥ २४ ॥ कहेण न माने रे राजा कोइनु रे,वसुदत्त रोष अपार ॥ रक्तचंदनें लेपी तनु तेहनु रे, कर्यो कणवीर सिगार ॥ जि० ॥ २५ ॥ रासन उपरें ते चढावीयो रे, लेइ चाल्यो वसुदत्त ॥ जुर्ज जिनदत्त अवस्था शी लही रे, कर्म उदय बलवत ॥ जि० ॥ २६ ॥ विरस वजाडे रे डिंडिम आगलें रे, पडे बहु वासे हो मार ॥ ॥ नागर जन परिजन रोवे घणु रे, ए शुं कर्यु किरतार

रतां होय पहेलो, नाखे त्रिभुवनजाण जी ॥ म० ॥ ३ ॥ इत्वर नाटी देइ वश कीधी, किणहिक गणिका नारी जी ॥ स्वल्पकाल साधारण वुर्ढे, गमनें बीजो अतिचार जी ॥ म० ॥ ४ ॥ अनग तणी क्रीडा नवि करवी, पर नारी सघात जी ॥ अधरदशन कुचमर्दन चुवन, तजी आलिगन वात जी ॥ म० ॥ ५ ॥ परनारीनां अग मनोहर, नवि निरखे सविकार जी ॥ शीलवत श्रावकने नांख्यु, एम कहे जगदाधार जी ॥ म० ॥ ६ ॥ यत ॥ पम्ड ठन्नग वसणेअ, गोमुत्त ग्गहण कुसुमिणे चेव ॥ जयणा सवड करे, इदिअ अवलोयणे अ तहा ॥१॥ पूर्वढाल ॥ ढाक्यां अग नारीनां जोतां, उलटे राग अताग जी ॥ फरसे तेम वली वाधे वमणो, वरजे तेह महा नाग जी ॥ म० ॥ ७ ॥ नजरें आवे रूप कदाचित्, न धरे राग ने द्वेष जी ॥ गोमूत्रादिक ग्रहता न करे, मर्दन योनिविशेष जी ॥ म० ॥ ८ ॥ शयन करता पहेलु चिते, शल्य विपोपम काम जी ॥ खिणमित्त सुख बहु काल लगें ड ख, मन चितवीयें आम जी ॥ म० ॥ ए ॥ एम नावन वैराग्यें सूतां, कुसुमिण नावे रात जी ॥ मोह उदयथी कदाचित् आवे, तो निसुणो तस वात जी ॥ म० ॥ १० ॥ कही इरियावही पडिक्कमीयें, निद तजी ततकाल जी ॥ काउस्सग्ग कीजें चउ लोगस्सनो, नावें थइ उजमाल जी ॥ म० ॥ ११ ॥ इदिय अवलोकननी जयणा, दृष्टिनिवर्त्तन रूप जी ॥ यडुक्त ॥ गुरुोरुवयणकरको,रु अतरे तह थणतरे दिठुं ॥ सा हरइ तर्ड दिठि, नय वधइ दिठिए दिठि ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ अनगक्रीड उपर ए विस्तर, नाखे श्रीजिनजूप जी ॥ म० ॥ १२ ॥ अथवा निजनारीशुं आतुर, नावविपय असमान जी ॥ चोराशी आसन आसेवन, न करे श्रद्धावान जी ॥ म० ॥ १३ ॥ पुरुप नपुसक सेवन तिम वली, हस्तकर्म परिहार जी ॥ काष्ट चर्म फल माटी घटित जे, कामोपगरण धार जी ॥ म० ॥ ॥ १४ ॥ एहथकी जे क्रीडा करवी,ते पण त्रीजो जाण जी ॥ हवे विवाहतणो कहु चोथो, ते निसुणो गुणखाण जी ॥ म० ॥ १५ ॥ कन्याफल लिप्सायें परना, बालकनो विवाह जी ॥ निजदारा सतोपी न करें, सुणो तस मर्म उत्साह जी ॥ म० ॥ १६ ॥ निज दारा सतोपी निज विण, न धरे अवर विचार जी ॥ परदारा वर्जी निज वेश्या, विणु नही विपयविकार जी ॥ म० ॥ १७ ॥ अवरथी मनवचकायें न करु, न क

रपति कोप्यो वसुदत्त उपरें रे, मूकाव्यो जिनदत्त ॥ सकल जिनशासन आराधतां रे, सहु उपरें सम चित्त ॥ जि० ॥ ४४ ॥ जिनवचनी परशंसा बहु वधी रे, धन्य धन्य ए जिनधर्म ॥ राजहुकमथी मंदिर आवियो रे, सहु साजन लह्या शर्म ॥ जि० ॥ ४५ ॥ वात सुणीने काउस्सग्ग पारियो रे, जिनमती हर्ष न माय ॥ धन्य जिनशासननी रखवालिका रे, शासनदेवी तु माय ॥ जि० ॥ ४६ ॥ वात सुणी प्रियमित्रना मुखथकी रे, हरख्यो मनमांहि तेह ॥ परणी शुन्न मुहूरत सा सुंदरी रे, वाध्यो सबल सनेह ॥ ॥ जि० ॥ ४७ ॥ नोग्य विषयसुख नोगवीया घणा रे, जिनमतीशुं मन रंग ॥ एक दिवस मुनि सुस्थितनी कने रे, ल्ये संयम मन उठरंग ॥ जि० ॥ ४८ ॥ चारित्र चोखु पाली चित्त चोखे वन्हे रे, थया सुरवर सुरलोक ॥ शांतिप्रनु त्रीजा व्रत उपरें रे, कह्यो उपनय गतशोक ॥ जि० ॥ ४९ ॥ उठे खम्मे रे ढाल पचवीशमी रे, रामविजय कही सार ॥ परधन परनारी थी वेगला रे, तेहना धन्य अवतार ॥ जि० ॥ ५० ॥ इति परद्रव्यापहार विरमणे तृतीयजिनदत्तकथानक ॥ ३ ॥ सर्वगाथा ॥९४०॥ श्लो० ॥४०॥

, ॥ अथ चतुर्थ मैथुनविरमणव्रत संबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांतिनाथ जिनवर कहे, सुण चक्रायुध नूप ॥ आलस अलगु परहरी, हवे अब्रह्म सरूप ॥ १ ॥ स्थूल सूक्ष्म नेदें कह्यु, मैथुन दोय प्रकार ॥ सूक्ष्म ईषत् कामथी, इंद्रियजनित विकार ॥ २ ॥ औदारिक वैक्रिय तथा, स्त्रीसार्थे सन्नोग ॥ स्थूल कह्यो ते जिनवरें, मन वच काया योग ॥ ३ ॥ मैथुन विरमणरूप ते, ब्रह्मचर्य दोय नेद ॥ सर्वदेशथी आगमें, नाख्युं प्रनु गतवेद ॥ ४ ॥ सर्वनारी परिहार जे, सर्वथकी ते ब्रह्म ॥ स्वदेशथी जाणीयें, ए सागारी धर्म ॥ ५ ॥

॥ ढाल उवीशमी ॥

॥ आदर जीव क्षमागुण आदर ॥ ए देशी ॥ शांतिप्रनु जिनराज पयपे, ए व्रत निरतिचार जी ॥ पालतां शिवपद पामीजें; सुणो हवे तास विचार जी ॥ १ ॥ म कर विषयविष आश ए विरुइ, कहे अचिरानो नंद जी ॥ कर जोडी वर्षद सवि नावें, निसुणे धरि आनंद जी ॥ म० ॥ २ ॥ अपरगृहीता विधवा कन्या, विक पर नहीं एम जाण जी ॥ तास गमन क

रता होय पहेलो, नाखे त्रिनुवननाण जी ॥ म० ॥ ३ ॥ इत्वर नाटी देइ वश कीधी, किणहिक गणिका नारी जी ॥ स्वल्पकाल साधारण बुर्द्धे, गमनें वीजो अतिचार जी ॥ म० ॥ ४ ॥ अनग तणी क्रीडा नवि करवी, पर नारी सघात जी ॥ अधरदशन कुचमर्दन चुंवन, तजी आलिंगन वात जी ॥ म० ॥ ५ ॥ परनारीनां अग मनोहर, नवि निरखे सविकार जी ॥ शीलवत श्रावकने नांख्यु, एम कहे जगदाधार जी ॥ म० ॥ ६ ॥ यत ॥ पन्न उन्नग दंसणेअ, गोमुत्त ग्गहण कुसुमिणे चेव ॥ जयणा सवन्न करे, इदिअ अवलोयणे अ तहा ॥१॥ पूर्वढाल ॥ ढाक्यां अग नारीनां जोतां, उलटे राग अताग जी ॥ फरसे तेम वली वाधे वमणो, वरजे तेह महा नाग जी ॥ म० ॥ ७ ॥ नजरे आवे रूप कदाचित्, न धरे राग ने द्वेष जी ॥ गोमूत्रादिक ग्रहता न करे, मर्दन योनिविशेष जी ॥ म० ॥ ८ ॥ शयन करता पहेलु चिते, शल्य विपोपम काम जी ॥ खिणमित्त सुख बहु काल लगे डुःख, मन चितवीयें आम जी ॥ म० ॥ ए ॥ एम नावन वैराग्यें सूता, कुसुमिण नावे रात जी ॥ मोह उदयथी कदाचित् आवे, तो निसुणो तस वात जी ॥ म० ॥ १० ॥ करी इरियावही पडिक्कमीयें, निद तजी ततकाल जी ॥ काउस्सग्ग कीजें चउ लोगस्सनो, नावें थइ उजमाल जी ॥ म० ॥ ११ ॥ इंद्रिय अवलोकननी जयणा, दृष्टिनिवर्त्तन रूप जी ॥ यडुक्त ॥ गुह्योरुवयणकरको,रु अतरे तह थणतरे दिठु ॥ सा हरइ तउ दिठिं, नय वधइ दिठिए दिठिं ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ अनगक्रीड उपर ए विस्तर, नाखे श्रीजिननूप जी ॥ म० ॥ १२ ॥ अथवा निजनारीशुं आतुर, नावविपय असमान जी ॥ चोराशी आसन आसेवन, न करे श्रद्धावान जी ॥ म० ॥ १३ ॥ पुरुष नपुसक सेवन तिम वली, हस्तकर्म परिहार जी ॥ काष्ट चर्म फल माटी घटित जे, कामोपगरण धार जी ॥ म० ॥ ॥ १४ ॥ एहथकी जे क्रीडा करवी, ते पण त्रीजो जाण जी ॥ हवे विवाहतणो कहुं चोथो, ते निसुणो गुणखाण जी ॥ म० ॥ १५ ॥ कन्या फल लिप्सायें परना, वालकनो विवाह जी ॥ निजदारा सतोषी न करे, सुणो तस मर्म उत्साह जी ॥ म० ॥ १६ ॥ निज दारा सतोषी निज विण, न धरे अवर विचार जी ॥ परदारा वर्जी निज वेश्या, विणु नही विपयविकार जी ॥ म० ॥ १७ ॥ अवरथी मनवचकायें न करु, न क

रावु ए प्रसग जी ॥ जो जोडे विवाह ते परना, मैथुन कारण पंच जी ॥ म० ॥ १८ ॥ हु विवाह कारक नहीं मैथुन, कारक एवो भाव जी ॥ व्रत सापेक्ष अनग विचारी, नगानग विनाव जी ॥ म० ॥ १९ ॥ निज अपत्य उद्वाहनी चिता, पण न करे सुश्राद्ध जी ॥ जो चिंता कारक होवे कोइ, ते जग विरला साध जी ॥ म० ॥ २० ॥ अथवा सकल निज नारी छुंते, परणे वीजी जेह जी ॥ परविवाह करे ते चोथो, अतिचार सुणो नेह जी ॥ म० ॥ २१ ॥ तीव्रकाम उपर नवि कीजे, अध्यवसाय अत्यत जी ॥ मुखकक्षोपस्थादि न सेवे, चिरकाल एक चित्त जी ॥ म० ॥ ॥ २२ ॥ केशाकर्षण दत नखक्षत, करि न जगाडे काम जी ॥ कामवृद्धि कारी गुटिकादिक, केरु न लीये नाम जी ॥ म० ॥ २३ ॥ वेदोदय असहि ष्णुपणाथी, निजनारी आगार जी ॥ मैथुनमात्रें वेदोपशमन, नहि अवर विस्तार जी ॥ म० ॥ २४ ॥ अधिक कुचेष्टाथी गुण न हुवे, साहसु बल क्षय थाय जी॥परदारा वर्जी पच वरजे,अवरने त्रण्य कहाय जी ॥म०॥२५ ॥ उक्त च ॥ परदारवज्जिणो प,च हुति तिन्निउ सदार सतुठे॥इत्थीइ तिन्नि पचव, नगविगप्पेहि नायवा ॥ २ ॥ स्वदारसतोषिण स्तुत्रय एवा त्या ॥ आद्यौ तु नगावेवेति ॥पूर्वढाल॥एम नारीने पण वर्जेवा,अतिचार उन्मा द जी ॥ परपुरुष निजपति ब्रह्मचारी, अभिसरता होय आद जी ॥ म० ॥ २६ ॥ परिगृहीत वारक दिन शोक्यें, निज पियुछ तेण दीस जी॥ शो क्य तणो वारक लोपते, वीजो होय जगीश जी ॥ म० ॥ २७ ॥ एम पचे जाणेवा छुगतें, नारीने अतिचार जी ॥ निजदारा सतोषीने पण, पंच ने अवर प्रकार जी ॥ म० ॥ २८ ॥ पोतें नाटक देइ मही ने, गणि का लही निजनारी जी ॥ गमन करतां वीजो होवे, तेहने पण अतिचार जी ॥ म० ॥ २९ ॥ अनानोग अतिक्रम आदिकथी, पहेलो पण कोइ वार जी ॥ त्रण पूर्वें दाख्या ने तेहिज, एम कह्या पंच अतिचार जी ॥ म० ॥ ३० ॥तथा च सूत्र ॥ सदार सतोसिस्स इमे पंच अइयारा जा णियवा न समायरियवेति॥एतद्व्रतफलमाह॥ पूर्वढाल ॥ कनक चैत्य निप जावे कोइ, आपे कनकनी कोडी जी ॥ तेहथु पण फल शीलव्रतनी, न करे जगमां होड जी ॥ म० ॥ ३१ ॥ यत ॥ जो देइ कणय कोडी, अहवा कारेइ कणयजिण छुवण ॥ तस्स न तत्तिअ पुन्नं, जत्तिअ बनवए

धरिए ॥ ४ ॥ परसमयेपि ॥ एकरात्र्युपितस्यापि, या गतिर्ब्रह्मचारिण ॥ न सा क्रतुसहस्त्रेण, वक्तु शक्या युधिष्ठिर ॥ ५ ॥ एकतश्चतुरोवेदा, ब्रह्मच र्यं तु एकत ॥ एकत सर्वपापानि, मद्यं मांस तु एकत ॥ ६ ॥ पूर्वढाल हिन्नेंद्रिय दो नाग नगदर, कुरूव नपुसक रम्म जी ॥ वध्या निंदू विपकन्या तिम, होये कुशील जगन्नम्म जी ॥ म० ॥ ३२ ॥ देवद्रव्यने नक्षण कर वें, परनारीने पापे जी ॥ सात वार सत्तमीयें पहोंचे, एम कहे जिनवर आप जी ॥ म० ॥ ३३ ॥ परेप्याहु ॥ तस्माद्धर्मार्थिभिस्त्याज्य, परदारो पसेवनम् ॥ नयति परदारस्तु नरकानेकविंशतिं ॥७॥ पूर्वढाल ॥ निजदारा संतोषीने पण, पर्वदिवस सुविशेष जी ॥ विपय तणो परिहार करेवो, पर मतमां पण देख जी ॥ म० ॥ ३४ ॥ यदुक्त ॥ विष्णुपुराणे ॥ चतुर्दश्य ष्टमी चैवा, मावास्या चैव पूर्णिमा ॥ पर्वाण्येतानि राजेंद्र, रविसंक्रांतिरेव च ॥ ८ ॥ तैलस्त्रीमाससंनोगी, पर्वस्वेतेपु वै पुमान् ॥ विण्मूत्रनोजन नाम, प्रयाति नरक मृत ॥ ए ॥ पूर्वढाल ॥ बत्रीस उपम कही ए व्रत नी, सांजल तस अधिकार जी ॥ नवियण दशमा अंग मजारे, चोथे संवर द्वार जी ॥ म० ॥ ३५ ॥ छठे खंमें ढाल छवीशमी, चोथा व्रत अधिकार जी ॥ राम कहे ए व्रत पालता, होवे जयजयकार जी ॥ म० ॥ ३६ ॥

॥ ढाल ॥ सारो सोरठ देश देखाडे रसीया ॥ ए देशी ॥ शीलवंत सुगुण मोरे मन वसीया ॥ बत्रीश उपम गुणयुत धारी, नाम जपे रे जाये पाप नसीया रे ॥ शील० ॥ १ ॥ मुकुट ने क्षौम वसन फूल अरविंद, चंदनमां गोसीस रसिया रे ॥ शी० ॥ २ ॥ चंद्र लवण रयणायर रूडो, मणि वैडूर्य उल्लसीयां रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ औपधियें करी हेमगिरि महोटो, सिंधुमा सी तोदा सिरिया रे ॥ शी० ॥ ४ ॥ दशमे सयंनू रमण जलनिधिमा, वर्तुल नगमा रुचक गिरिया रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ गजमाहि ऐरावत हरि मृगमा, असुरमा वेणुदेव वरिया रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ पनरमी उपम नुवनपतिमां, धरणीधर जेम गुण नरिया रे ॥ शी० ॥ ७ ॥ लहु सवमाहे जेम सौधर्मी, ब्रह्म सुर लोकमा सुख करियां रें ॥ शी० ॥ ८ ॥ स्थिति महोटी लवस त्तम सुरनी, दानमा दान अनय गरीयां रे ॥ शी० ॥ ए ॥ वीशमी उपम रंगमाहि किर्मजी, कबही न जाये उतरीयां रे ॥ शी० ॥ १० ॥ वज्र रु पजनाराच संघयणें, संठाणमाहि समचउरसीया रे ॥ शी० ॥ ११ ॥

रावु ए प्रसग जी ॥ जो जोडे विवाह ते परना, मैथुन कारण भंग जी ॥ म० ॥ १८ ॥ हु विवाह कारक नहीं मैथुन, कारक एणें नाव जी ॥ व्रत सापेक्ष अनग विचारी, नगानग विनाव जी ॥ म० ॥ १९ ॥ निज अपत्य उद्वाहनी चिंता, पण न करे सुश्राद्ध जी ॥ जो चिंता कारक होवे कोइ, ते जग विरला लाध जी ॥ म० ॥ २० ॥ अथवा सक्त निज नारी छुते, परणे वीजी जेह जी ॥ परविवाह करे ते चोथो, अतिचार सुणो नेह जी ॥ म० ॥ २१ ॥ तीव्रकाम उपर नवि कीजे, अध्यवसाय अत्यंत जी ॥ मुखकक्षोपस्थादि न सेवे, चिरकाल एक चित्त जी ॥ म० ॥ ॥ २२ ॥ केशाकर्पण दंत नखक्षत, करि न जगाडे काम जी ॥ कामवृद्धि कारी गुटिकादिक, केरु न लीये नाम जी ॥ म० ॥ २३ ॥ वेदोदय असहि ष्णुपणाथी, निजनारी आगार जी ॥ मैथुनमात्रें वेदोपशमन, नहि अवर विस्तार जी ॥ म० ॥ २४ ॥ अधिक कुचेष्टाथी गुण न हुवे, साहमु बल क्षय थाय जी॥परदारा वर्जी पच वरजे,अवरने त्रण्य कदाय जी ॥म०॥२५ ॥ उक्त च ॥ परदारवज्जिणो प,च हुति तिन्निउ सदार संतुठे॥इत्थीइ तिन्नि पंचव, नगविगप्पेहि नायवा ॥ २ ॥ स्वदारसतोपिण स्तुत्रय एवा त्या ॥ आद्यौ तु नगावेवेति ॥ पूर्वढाल॥ एम नारीने पण वर्जेवा, अतिचार उन्मा द जी ॥ परपुरुष निजपति ब्रह्मचारी, अनिसरता होय आद जी ॥ म० ॥ २६ ॥ परिगृहीत वारक दिन शोक्यें, निज पियुक्षु तेण दीस जी॥ शो क्य तणो वारक लोपंते, वीजो होय जगीश जी ॥ म० ॥ २७ ॥ एम पचे जाणेवा छुगतें, नारीने अतिचार जी ॥ निजदारा सतोपीने पण, पंच छे अवर प्रकार जी ॥ म० ॥ २८ ॥ पोतें नाटक वेइ ग्रहीने, गणि का लही निजनारी जी ॥ गमन करंतां बीजो होवे, तेहने पण अतिचार जी ॥ म० ॥ २९ ॥ अनानोग अतिक्रम आदिकथी, पहेलो पण कोइ वार जी ॥ त्रण पूर्वें वास्या छे तेहिज, एम कह्या पंच अतिचार जी ॥ म० ॥ ३० ॥तथा च सूत्र ॥ सदार सतोसिस्स इमे पंच अइयारा जा णियवा न समायरियवेति॥एतद्व्रतफलमाह॥ पूर्वढाल ॥ कनक चैत्य निप जावे कोइ, आपे कनकनी कोडी जी ॥ तेहथ पण फल शीलव्रतनी, न करे जगमा होड जी ॥ म० ॥ ३१ ॥ यत ॥ जो देइ कणय कोडी, अहवा कारेइ कणयजिण भुवण ॥ तस्स न तत्तिअ पुणं, जत्तिअ बंभवए

उल्लसे रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ तेहने पुरोहित साथे, प्रीति अछे घणी रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रात दिवस रहे नेला, होश हैया तणी रे लो ॥सु० ॥ ३ ॥ ज० ॥ ते व्यवहारी घरे, नारी सारी अछे रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रूपवती गुणवती, पति मनमां रुचे रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ नामें ते प्रद्युम्न, सिरी रति सारसी रे लो ॥क०॥ ज० ॥ देखी ते पुरोहितना, मनमाहे वसी रे लो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ज० ॥ थयो विषया अभिलाषी, नाखी लाज ने रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रात दिवस ते छोडे,नरवर काजने रे लो ॥ सु० ॥ज०॥ एक दिवस ते उपर,नृप रीझ्यो अति रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ मागो मनोवांछित कहे, हर्षे नृपति रे लो ॥ सु० ॥ ५ ॥ ज० ॥ विषयानो उमाह्यो, वाह्यो ते धसी रे लो ॥ क० ॥ राजन् मनोवांछित वर आपो, इछा छे इसी रे लो ॥ सु० ॥ राजन् पुरमां मन मानीती, नारीशु रमु रे लो ॥ क० ॥ राजन् मन मान्या सुखमांहि, काल हु निर्गमुं रे लो ॥ सु० ॥ ६ ॥ ग० ॥ मन शरमाणो बोलें, वधाणो कहे रे लो ॥ क० ॥ साचल वात पुरोहित तुझ, साथे दिल जे वहे रे लो ॥ सु० ॥ कहे नृप ते सार्थे तुझ रमवु, अवर न इछवी रे लो ॥ क० ॥ धरजे वात पुरोहित एह, कही जें प्रीछवी रें लो ॥ सु० ॥ ७ ॥ कहे नृप एहथी जो विपरीत तु,चालीश एकदा रे लो ॥ क० ॥ कहे नृप करशु तुझ शिर दम, अन्यायी परें तदा रे लो ॥ सु० ॥ मानी नृपनी वाणी निर्गल,ते पुरमा थयो रे लो ॥ क० ॥ आगल कह्यो उट वली ते, उकरडे गयो रें लो ॥ सु० ॥ ८ ॥ भमतो पुरमा ते दिन रात के, माता साढ ज्यु रे लो ॥ क० ॥ करतो परनारीशु केलि, कुलागत सवि तज्यु रे लो ॥ सु० ॥ एकदिन मोह्यो ते पुष्पदेवनी, नारी रूपरें लो ॥ क० ॥ रागें अध थयो ते चिते, चित्तने अतरें रे लो ॥ सु० ॥ ए ॥ केम ए नारी सारी प्यारी, म्हारे वश थशे रे लो ॥ क० ॥ देखी एहना मुखनु फूल के, मुझ दिल उल्लसे रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ एम चिती तस खासी, दासीशु मली रे लो ॥ क० ॥ दाखी तेहनी आगल सघली, वात ए मन रली रें लो ॥ सु० ॥ १० ॥ जइ तेम कर जेम तुझ स्वामिनी, मुझने आदरे रे लो ॥ क० ॥ मुझने क्षण क्षण तस दीदार, हियामा सांभरे रे लो ॥ सु० ॥ मानिश ताहरो पाड निरतर, जीविश जिहा लगें रे लो ॥ क० ॥ करजे

ध्यानमा ध्यान शुक्ल मन मान्युं, ज्ञानमां केवल आरसीयां रे ॥ शी० ॥ ॥ १२ ॥ पचवीशमी उपम लेश्यामा, शुकलथी कर्म कठिन खसियां रे ॥ शी० ॥ १३ ॥ मुनिमा जेम तीर्थंकर स्वामी, सुर नर आवी नमे बली या रे ॥ शी० ॥ १४ ॥ क्षेत्र विदेह ज्यु क्षेत्रमें महोटु, मेरु महिधरमां लसीया रे ॥ शी० ॥ १५ ॥ वनमाहि नदनवन जेम महोटु, तरुमां जंबू उकसिया रे ॥ शी० ॥ १६ ॥ जेम हय गज नर सैन्यमा महोटो, जग च क्रीश्वर शुज्ज वसिया रे ॥ शी०॥ १७ ॥ जेम रथमा हरिनो रथ महोटो, तेम व्रतमाहि शील कसिया रे ॥ शी० ॥ १८ ॥ बत्रीश उपम थोथा म तनी, जाणी पालो व्रत धसमसीया रे ॥ शी० ॥ १९ ॥ १००८ ॥ ५७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ए व्रत डुष्कर पालता, पहोचे सयल जगीश ॥ परदारा लपट तिके, डुख पामे निशदीस ॥ १ ॥ यत ॥ मेरू गरिठो जह पवयाण, एरावणो सार वलो गयाण ॥ सिहो वलिठो जह सावयाण, तहेव शील पवरं वयाण ॥ १ ॥ अन्यश्लोक ॥ नपुसकत्व तिर्यक्त्व, दौर्भाग्यं च नवे नवे ॥ नवेन्न राणा स्त्रीणाचा, न्यकातासक्तचेतसाम् ॥ २ ॥ पूर्वदोहा ॥ परनारीलोलुप थके, करालपिंग डुख दीठ ॥ कहे चक्रायुध स्वामीने, कवण हुउं कहो इठ ॥ ३ ॥ प्रज्ञु सबध कहे तेहनो, करालपिंग जस नाम ॥ पर्षद स्थिर चित्त साजले, करीय प्रज्ञुने प्रणाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल सत्त्यावीशमी ॥

॥ देशी रसियानी ॥ कुंथु जिणेसर केसर जीनी देहडी रे लो ॥ ए देशी ॥ जवियण, विषय न सेवो विरुउं डुखदायी घणु रे लो ॥ कहे जिनशांतिजी रे लो ॥ज०॥ क्षेत्र जरतमा नलपुर पुर सोहामणु रे लो ॥ सुणो मन खांतें जा रे लो ॥ ज० ॥ तिहां नलपुत्र नरेश्वर राज्य करे गुणी रे लो ॥ क० ॥ ॥ ज० ॥ उज्ज्वल जेहनी कीर्त्ति चिहु दिशिमां सुणी रे लो ॥ सुणो मन० ॥ १ ॥ ज० ॥ तेहने पापाजीष्ट पुरोहित छे जलो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ नाम करालथी पिंग अछे तस निर्मलो रे लो ॥ सु० ॥ ज० ॥ शांति कर म मांहे माह्यो अति रलियामणो रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ रायतणे मन मान्यो लोक नमे घणो रे लो ॥ सु० ॥ २ ॥ ज० ॥ तिण पुरमां एक इन्यतनय वासो वसे रे लो ॥ क० ॥ ज० ॥ नामें ते पुष्पदेव धनें-करी

तुम आदेश प्रमाण, जइ लावु अमें रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ घेर आवी एक नूमि, गृह सत्वर कस्यो रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ ते उपर एक यत्र पल्यंक लेई धस्यो रे लो ॥सु०॥२०॥ न० ॥ शीखविंयु सेवकने, जब आवे रही रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ यत्रशय्या वेसारी,नाखेजो महि रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ ते गनो मुऊ पासें, पुरोहित लावजो रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ काम करीने जिहा बु,तिहा तुमें आवजो रे लो ॥सु०॥२१॥न०॥ चालणने मिप जइ ते,वनमां कतस्यो रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ ततक्षण तेह पुरोहित, हर्षे हैये नस्यो रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ पुष्पदेवने मंदिर, ते आव्यो वही रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ कूडतणी रचना तेणे, मूर्खें नवि लही रे लो ॥ सु० ॥ २२ ॥ न० ॥ पद्मसिरीयें यत्र, पल्यकें वेसारीयो रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ ततक्षण ते उखलीने, नोंय सिधावियो रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ नांग्यु तेहनु अंग, थयु सवि जाजरु रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ खकाणी सवि सधि ज्यु,जूनु खाजरु रे लो ॥ सु० ॥२३॥ न० ॥ बांधी मयूरने बधें,शेठने आपीयो रे लो ॥क०॥न०॥ उपाडी कठ पंजरमां, तस स्थापियो रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ चाल्या कोइ देशांतर, खटमासी रह्या रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ काज करीने वलीया, नवि कोणे लह्या रे लो ॥ सु० ॥ २४ ॥ न० ॥ निजपुर आवी मीणें, लेप कस्यो तनें रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ चह्यो ल्यां पंचवरणनां, पिंछां अति वने रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ जइ वरवारें नेट,कस्यो ते नूपने रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ रीज्यो राजा जोर, देखी तस रूपने रे लो ॥ सु० ॥ २५ ॥ राजन वहु अहियां पण मारग, माहे मरी गया रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ आव्यो ए इहां कणे एक ए, द्विज वहुदिन थया रे लो ॥ सु० ॥ राजन कहे ए पंखी माणस, सरिखो केम अठे रे लो ॥ क० ॥रा०॥ कहे वोलावो एहने, मुऊ मनमां रुचे रे लो ॥ सु० ॥ २६ ॥ न० ॥ लइ करमां ते प्राजन, आर दीये घणु रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ वोल तु पंखी नृप आ,गल वहु च्रु नणु रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ ते कहे किंजल्पामी, तस वाणी सुणी रे लो ॥ क० ॥ राजन द्विज उंलखीयो नाखे, वजतु तेनणी रे लो ॥ सु० ॥ २७ ॥ रा० ॥ कहे पुष्पदेव ए मुऊ, पुरोहित सारिसो रे लो ॥ क० ॥ राजन हाथ तणे आरीसे, करकंकण किस्यो रे लो ॥ सु० ॥ राजन

मुऊ उपर अनुकूल, मनावी उलगे रे लो ॥ सु० ॥ ११ ॥ पामी अव सर तेणी दासीयें, वात सवे कही रे लो ॥ क० ॥ निसुणी शीलवती ए वात, निखर मानी नहीं रे लो॥ सु० ॥ रे रे धिक् नूंमी शुं बोली, बोल वु एहवा रे लो ॥ क० ॥ नुमा पुरमाहे बहु विटल, वसे ए जेहवा रे ॥ सु० ॥ १२ ॥ हूवे मुख एहवानु जोइ, पापी आतमा रे लो ॥ क० ॥ वहेनी चिरजीवो मुऊ वालम, अवरनी नही तमा रे लो ॥ सु० ॥फरीने दासी कहे तुऊ वात,न माने ए किमे रे लो ॥क०॥ कहेण न चाले इहां मुऊ, कांइ करो तुमें जे गमे रे लो ॥ सु० ॥ १३ ॥ पामी अवसर एक दिवस ते, आवीने कहे रे लो ॥ क० ॥ वहेनी करो करुणा मुऊ उपर, विरहें तन दहे रे लो ॥ सु० ॥ कहेवा लागी ते एम न घटे, तुमने बोलवु रे लो ॥ क० ॥ जो जाणे तुम मित्र तो थायें, इहां कांइ अनिलवु रे लो ॥ सु० ॥ १४ ॥ न० ॥ निसुणी वाणी पुरोहित, थयो मनमां खुशी रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ जाणी ते अनुकूल, कहे फरीने हसी रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ कहे तेहने एम करवु, जेम तुम नाहलो रे लो ॥ क० ॥ सुबरि तो पूराये आपण,चित्त उमाहलो रे लो ॥ सु० ॥१५॥ न० ॥ कही एकातें तेणें निज, कतने वातडी रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ निसुणी मनमां सूधी,तस ईर्ष्या चढी रे लो ॥सु०॥न०॥ ॥ मन नाग्यु दिलमांहे, रीऊ रही नहिं रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ जगमा एह शिरें,नूंमी करणी सही रे लो ॥ सु० ॥ १६ ॥ न० ॥ हवे तेणें कीधी नृप शिर,वेदन आकरी रे लो ॥क०॥न०॥ मत्रवशें करे पासें,पुरोहित चाकरी रे लो ॥सु०॥न०॥ कहे राजन पुरोहित, टालो वेदनी रे ॥ क० ॥न०॥ करो उपकार ए मुऊ तो, विलसु मेदिनी रे लो॥सु०॥१७॥न०॥ मत्रथकी तेणी वारें,वेदन ततक्षणें रे लो ॥क०॥न०॥ तुष्ट थयो राजेश्वर, वर मागो नणे रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ विप्र कहे सुण राजन, माहरी विनति रे लो ॥ क० ॥ साहेब मुऊने एह मगावी, आपो करु विनति रे लो ॥ सु० ॥ १८ ॥ राजन बे किंजल्पद्वीपें, सुस्वर पंखीयां रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ नामथकी किंजल्प, बहु में परखियां रे लो ॥ सु० ॥ रा० ॥ ए पुष्पदेवने मूको, जइने लावशे रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ चोंप करी करि कारज, वहेलो आवशे रे लो ॥ सु० ॥ १९ ॥ रा० ॥ कहे तेडी पुष्पदेवने, काज करो तुम्हें रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥

८पाषाण ९वज्र १०मणि ११मौक्तिका, १२प्रवाल १३शंख तिम गणि ॥ ९ ॥ १५तिणि सागरु १६चंदण वली,१७वस्त्र १८कन तेम १९काष्ठ ॥ २०चर्म २१दंत २२वाल २३गंध तिम, २४द्रव्यौषध ए काष्ठ ॥ १० ॥ स्थावर त्रिहु नेदें कह्यु, नूमी घर तरु जाणि ॥ द्विपद दोय चक्रारवध, माणुस तेम वखाण ॥ ११ ॥ चक्रारवधो गत्र्यादि ॥ मानुष्य दासादीति ॥ चोपद दश नेदें कह्या,गो महिषी तिम उट्ट ॥ अज एलग आस आसतरग, हय रासन्न ने करट्ट ॥ १२ ॥ नानाविध उपगरणना,नेद अनेक विचार ॥ कुप्प कह्यो चोसठिमो,परिग्रह नेद उदार ॥ १३॥ लोन्न अल्प जेम जेम होये, जेम जेम अल्पारंन्न ॥ तेम तेम सुख वाधे घणु, धर्मसिद्धि प्रारंन्न ॥ १४ ॥ नरन्नव सार आरोग्यता, धर्म एह सत्य सार ॥ सुख ए संतोष सार छे, विद्यानिश्चय सार ॥ १५ ॥ यत ॥ ब्रह्मज्ञानविवेकनिर्मलधिय कुर्वंत्यहो दुष्करं, यन्मुंचत्युपन्नोगन्नाज्यपि धनान्येकांततोनि स्पृहा ॥ न प्रप्तानि पुरा न संप्रति न च प्राप्तौ दृढप्रत्ययौ, वांछामात्रपरिग्रहाण्यपि वयं त्यक्तु न तानि क्षमा ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ परिग्रहथी विरम्या नहि, ते लहे दुःख समुदाय ॥ श्रावक सुलस तणी परें, कहे एणी परें जिनराय ॥ १६ ॥ कहे चक्रायुध स्वामिने, सुलस कहो कुण तेह ॥ पंचम व्रत उपर प्रन्नु, परकाशो तुमें जेह ॥ १७ ॥

॥ ढाल अठ्यावीशमी ॥

॥ नरत नृप नावशुं ए ॥ ए देशी ॥ शांति जिणेसर एम कहे ए, सुण चक्रायुध राय॥ परिग्रह दुःख दीये ए ॥ नयर अमरपुर नरतमा ए,सवि शोन्ना समुदाय ॥ परि० ॥ १ ॥ अमरसेन तिहां राजीयो ए, शेठ रूपचंद न्न सार ॥ प० ॥ श्रावक समकित धारकू ए, जिनगुरु पूजणहार ॥ प० ॥ २ ॥ जिनदेवी तस नारजा ए, रूपें रंनसमान ॥ प० ॥ सुलस नामें सुत अति नलो ए,सोहे सुगुण निधान ॥ प० ॥ ३ ॥ यौवनवय परणावीयो ए, जिनदास तनया सार ॥ प० ॥ पतिछंदे चाले नली ए, नामें सुनद्रा नारि ॥ प० ॥ ४ ॥ जनक कहेणथी एकदा ए, गुरुपासें ते सुजाण ॥ प० ॥ आदरे श्रावक व्रत विना ए, एक परिग्रह परिमाण ॥ प० ॥ ५ ॥ रसिक कलानो अति घणो ए,विषय न वेसे चित्त ॥ प० ॥ मात विचारे मनमां ए, सुत ए शून्नो नीत ॥ प० ॥ ६ ॥ नवि बोले निज

जूवो निरखी जेम, सर्वेह टले परो रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ परखीने निरखता,ते जाण्यो खरो रे लो ॥ सु० ॥ २७ ॥ रा० ॥ पूछे ए शुं करव, मुफ दाखो तुमें रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ कहे पुष्पदेव कहतां, लाजुं हुं अमें रे लो ॥ सु० ॥ रा० ॥ वात सुणीने मनमा, नृप कोप्यो घणो रे लो ॥ क० ॥ रा० ॥ कहे आरक्षक नरने, जइ एहनें हणो रे लो ॥ सु० ॥ २ए ॥ न० ॥ करीय कदर्थना पुर, शेरीमा फेरीयो रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ जइ वधनूमें नृप, सुनटे ते मारीयो लो ॥ सु० ॥ न० ॥ मयो नरकावनि ताजी, जिहा अयपूतली रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ आलिंगावे असुर, पचारे वली वली रे लो ॥ सु० ॥३०॥ न० ॥ नमशे ते बहुकाल, लगें ससारमा रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ रहे एम विपय नख्या नव, कारा गारमां रे लो ॥ सु० ॥ न० ॥ उठे खमें ढाल, कही सत्तवीशमी रे लो ॥ क० ॥ न० ॥ शातिप्रनुनी देशन, सुणो साकर समी रे लो ॥ सु० ॥ ३१ ॥ इति चतुर्थव्रतोपरि करालपिंगलपुरोहित कथानकम् ॥ ४ ॥ सर्व गाथा ॥ १०४३ ॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥ ५ए ॥

॥ अथ पंचम परिग्रहपरिमाणव्रत सबध ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे पंचम व्रत जिन कहे, परिग्रहनु परिमाण ॥ तेम इछापरिमाण वली, नांखे श्री जिनजाण ॥ १ ॥ सचित्त अचित्त मिश्र जाणीयें, परिग्रहना त्रण नेद ॥ नव नेदें होय तिम वली, एम नाखें गतवेद ॥ २ ॥ क्षेत्र वास्तु धन धान्य तेम, रुप्य कूप्य ने हेम ॥ द्विपद चतुष्पदनो सदा, मन राखीजें प्रेम ॥ ३ ॥ परिग्रह वाध्यो ए घणु, होय बहु दुखदातार ॥ सिद्धातें एहना अछे,वली अनेक प्रकार ॥ ४ ॥ धान्य रत्न स्थावर द्विपद, चउपद कुप्यविचार ॥ सामान्यें षट् नेद एम, उत्तर चोसठ चार ॥ ५ ॥ धान्यनेद चोवीश छे,१जव२गहू ने वली ३शालि ॥ ४विहि ५सठीअ६कुद्रवा, ७अणुआ ८कंगू ९राल ॥ ६ ॥ १०तिल ११मुग १२मासा १३अलसि तिम,१४हरिमंथ १५त्रिपुट १६निपाव ॥ १७मठ १८चोला १९बरटी नली,२०मसुर २१तुंबरि तिम नाव ॥ ७ ॥ २२कुलथी २३धन्नय २४कृष्ण चनक, धान्य नेद चोवीश ॥ रत्न जाति वली तेटली, एम नांखे जगदीश ॥ ८ ॥ १सोवन २त्रपु ३त्रांबू ४रजत, ५लोह ६सीस ७सुहिरस ॥

णी आपण सही ए,पडीया आपण मांहि ॥ प० ॥ नीसासा नाखे घणा ए,पण चित्यु नवि थाय ॥ प० ॥ २३ ॥ सोल वरस लगें तिहां रह्यो ए, मात पिता थया क्षीण ॥ प० ॥ आरतध्यानमां वेहु जणां ए, गयां पर लोकें दीण ॥ प० ॥ २४ ॥ गुणवती तस नारजा ए, तेम धन महेले तास ॥ प० ॥ तेह न आपे कतनें ए, अहो अहो मोह विलास ॥ प० ॥ २५ ॥ धन नीतुं तव तेणियें ए,निज आनूपण सार ॥ प० ॥ दासी स घातें मोकल्या ए, अक्कायें चित्युं तिवार ॥ प० ॥ २६ ॥ धन नीतुं एहना घर तणु ए, मोकल्यो निज शणगार ॥ प० ॥ ए मुज राखवु नवि घटें ए, फरी मोकल्यु सुविचार ॥ प० ॥ २७ ॥ हवे अक्का मन चितवे ए, इयो निर्धनशु नेह ॥ प० ॥ कहे पुत्रीने एहशु ए, हवे इयो करवो सनेह ॥ प० ॥ २८ ॥ ढाल कही अडवीशमी ए, ठठा खम्म मजार ॥ प० ॥ राम विजय कहे धन वडुं ए, स्वारथी ए ससार ॥ प० ॥ २ए ॥१०८ए॥६१॥

॥ दोहा ॥

कहे पुत्री माताप्रतें, वहु धननो दातार ॥ सोल वरस लगें जेह शु, विलस्या नोग उदार ॥ १ ॥ केम ठमाये वालहो, प्राणथी अ धिको एह ॥ सोंप्यां में हाथे करी, जेहने धन मन देह ॥ २ ॥ कहे अक्का पुत्री सुणो, तुम कुल ए आचार ॥ निर्धनिया नर परिहरे, धनवतशु व्यव हार ॥ ३ ॥ तस मन जाणी पंच दिन, अक्का पडखी जेह ॥ इक्षु मगावे एक दिन, दिये कूचा धरि नेह ॥४॥ मा ए शुं हु ढोर बु, नि पीडित इक्षु दम्म ॥ जे लेइ मुज आगें धखा, अक्का कहे क्रुरंम ॥ ५ ॥ जो ए चाख्ये रस होवे, तो सेवे सुलस कुमार ॥ सागो चूसी रस लीयो, ठोता ठोड गमार ॥ ६ ॥ पुत्री कहे कूचा घणे, कामें आवे माय ॥ घेर घालाथी ढोरनी, नूख एहथी जाय ॥ ७ ॥ रस लेई पोथी तणो, नीरस आपे हाथ ॥ रीसाणी पाठी दीये, शु मुज दीठ अनाथ ॥ ८ ॥ मा कहे नी रस पोथी ए,जिमन रंगाये पाय ॥ तेम ए निर्धन सुलसथी,कोडी काम न थाय ॥ ए ॥ कहे पुत्री पोथी नीरस, पण दसा दीपकें होय ॥ तेम ए निर्धन सुलसमा, गुण केता एक जोय ॥ १० ॥ राग लही पुत्री तणो, ठानी रही तेवार ॥ विण पूठये ए काढवो, मनमा कखो विचार ॥ ११ ॥

नारिशु ए, न जुए दृष्टि सराग ॥ प० ॥ न करे उपम वणिजनो ए, रहे शो ए निर्जाग्य ॥ प० ॥ ७ ॥ जिनदेवी कहे कतने ए, नि स्पृह सरीखो पूत ॥ प० ॥ विषय न वाछे चित्तशु ए, केम चलशे घर सूत ॥ प० ॥ ८ ॥ तेम करो जेम ए विषयने ए, वाछे वालम नद ॥ प० ॥ शेठ कहे नारी नणी ए, वोल मा एम मतिमद ॥ प० ॥ ए ॥ केई काल अनादिना ए, लाग्या रिपु थइ जेह ॥ प० ॥ ते रिपुने सुत सोंपता ए, स्यो माविन्न सनेह ॥ प० ॥ १० ॥ यत ॥ नोगा न जुक्तावयमेवजुक्ता, स्तपो न तप्त वयमेव तप्ता ॥ कालोन यातोवयमेव याता, स्तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ विण शीखवीया आवडे ए,आहार विषय विकार ॥ प० ॥ पण अनादिनो दोहिलो ए, धर्मतणो व्यापार ॥ प० ॥ ११ ॥ हठ नवि मूके कामिनी ए,लीधी शेठनी केड ॥ प० ॥ पाड्या पण रुगर पडे ए, नावी न जाये फेडि ॥ प० ॥ १२ ॥ शेठें नट विट तेडीया ए,जूआरी कमजात ॥ प० ॥ चतुराइ शीखण नणी ए, सोंप्यो तेहने जात ॥ प० ॥१३॥ लही कुसगति तेहनी ए,वीसारी सवि वात ॥ प० ॥ नणतर तेणें विसारीयु ए,इंद्रिय सुखनी धात ॥ प० ॥१४॥ कौतुक हास्य विनोदनी ए,सुणता वात रसाल ॥ प० ॥ मन विंधाणु तेहनु ए, पडीयो विषयनी जाल ॥ प० ॥ १५ ॥ निर्वल सगतिथी निपन्यो ए, वेश्याशु सयोग ॥प०॥ हाव नाव करी नोलव्यो ए,विलसे विषयिक नोग ॥ प० ॥ ॥ १६ ॥ मात पिता धन मोकले ए, मोकले मन धरी नेह ॥ प० ॥ सुत बेठो विलसे तिहां ए, मोह तणी गति एह ॥ प० ॥ १७ ॥ घरहूती नवि नीसरे ए, लाग्यो गणिका रंग ॥ प० ॥ विषय अग्निमां जीवडा ए, पडीया जेम पतंग ॥ प० ॥ १८ ॥ यत ॥ लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन० ॥ मात पिता बहु मोकले ए, जन तेडांने काज ॥ प० ॥ पण गणिका जावा न दे ए, नवि लोपे तस लाज ॥ प० ॥ १९ ॥ लालच नूंमी विषयनी ए, ऊंमी अतिहि अगाध ॥ प० ॥ ससारी एहमां पड्या ए, न लहे सुख निराबाध ॥ प० ॥ २० ॥ मात पिता फूरे घणु ए, सुतने संनारी जोर ॥ प० ॥ आ नव कीधां आ नवें ए, आव्यां कर्म कठोर ॥ प० ॥ २१ ॥ वांक नहिं इहां कोइनो ए, सहामो चडावी पाड ॥ प० ॥ विटल पुरुषने सोंपीयो ए, कीधां ए सुतने लाड ॥ प० ॥ २२ ॥ स्वाम स

वन एह ॥ धि० ॥ १६ ॥ हवे आजथी हु समजियो, परदेश जइ करी काज ॥ आविश वहेलो हुं सहि, तुं राखजे रे रूडी मुझ घरलाज ॥ धि० ॥ १७ ॥ लखी लेख करमा धस्यो, देवानुयोगें तत्र ॥ निजनारी दासी तिहां कणे, आवी तेहने रे सोप्यो तेणें पत्र ॥ धि० ॥ १८ ॥ इष्ट समरी चालीयो, ते सुलस कोइएक देश ॥ परिधान जूना चीवरा, नहिं पासे रे धन कांइ लव लेश ॥ धि० ॥१ए॥ आथने अरथे नमे, परदेशमा जजमाल ॥ एक नगर जीर्णोद्यानमा, जइ पहोच्यो रे थाक्यो असराल ॥ धि० ॥ २० ॥ तिहा ब्रह्मतरु अकुर नीरखी, चितवे चित्तमांहि ॥ ए विलव विणु होवे नहिं, जइ जोउ रे मन धरिय उम्माह ॥ धि० ॥२१॥ जइ खोदीयु ते गण ततक्षण, सहस एक दिनार ॥ नीसस्यो निधि तिहा हर्षे पाम्यो, मन चिते रे तूठयो किरतार ॥धि०॥२२॥ सगोप्य करी पुरमाहि आव्यो, सुलस धरी आनद ॥ ढाल उगणत्रीशमी, खम्ड छठे रे सुणो साजनवृंद ॥धि०॥२३॥ सर्वगाथा ॥११२३॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥६१॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरमाहे एक वणिकने, वेगे आवी हाट ॥ वीसामो लेवा नणी, मूकी मन उच्चाट ॥ १ ॥ ग्राहक वहुलां आवीया, देखी व्याकुल तास ॥ सुलस करे साहाय्य तस, माह्यो मन उल्लास ॥२॥ तस महापणने देखीने, रीज्यो शेठ अपार ॥ पूछे किहाथी आवीया, नइक अहो कुमार ॥ ३ ॥ तुम आव्ये आज माहरे, लाल थयो अणचित ॥ कहो मुझ आगल मामीने, सघलो तुम वृत्तात ॥ ४ ॥ वासी अमरपुरी तणो, प्राघूर्णक गुणधाम ॥ ते कहे मदिर तुम तणे, आव्यो छु हु स्वामि ॥ ५ ॥ शेठें मदिर तेडीने, न्हवराव्यो जलि जात ॥ जीमाड्यो नोजन सरस, वेमारी मन खात ॥ ६ ॥

॥ ढाल त्रीशमी ॥

॥ देशी नमारुलीनी ॥ शेठ कहे कुण कारण आव्या ॥ नमारुली ॥ सुलस कहे निज काज ॥ तातजी हु इहा आवीयो तो ॥ न० ॥ धन उपराजण आज ॥ १ ॥ नहीं इहा कोइ माहरो सगो तो ॥ न० ॥ तुम्हें छो पिताने रे ठाम ॥ करो करुणा मुझ उपरें तो ॥ न० ॥ कोइ अपावो सुधाम ॥ २ ॥ हाट अपाव्यु नाटकें तो ॥ न० ॥ करे तिहा वणिज

॥ ढाल ३ गणश्रीशमी ॥

पूरवें सुरुत न में कीयो ॥ ए देशी ॥ अका कहे उतावली, जावि सुलसनी पास ॥ तुमें जूमि देखा कतरो, ठे कारिज रे अपर आवास ॥ १ ॥ धिक् धिक् डुर्जन प्रीतडी रे ॥ जे आपे रे उटकीने छेह ॥ रग कुसुन तणो जिस्यो, जेम न टके रे जग गारनो नेह ॥ धि० ॥ २ ॥ मनमाहि कुवर चिंतवे, शु दशे एहने काज ॥ सोल वरसमांहि एहवुं नवि सुणीयु रे सजलाव्यु ते आज ॥ धि० ॥ ३ ॥ दासी कहे तव आवीने, शु रह्यो मूढ विमासि ॥ निर्लज थइने केम रह्यो, नहीं ताहरे रे कोडी एक पास ॥ धि० ॥ ४ ॥ आथ विना आदर नहिं, मनमां विचारी जोय ॥ ए वेश्या मंदिर नवि शूना, प्रीति जूखी रे इहां कब नवि होय ॥धि० ॥ ५ ॥ सुलस निज मंदिर नणी, निसर्यो न लहे माग ॥ मन खेद पामे अति घणो, एह देखी रे उपजे वैराग्य ॥ धि० ॥ ६ ॥ अणुसार मारग समरतो, आव्यो निजगृह पास ॥ चिहु पासें पडी यु जीर्ण ते, गृह देखी रे थयो मन उदास ॥ धि० ॥ ७ ॥ गोह सवि वखडी गइ, नलिया तणी नही शुद्धि ॥ नागे कपाटे उह्स जिस्यो, तेह देखी रे जूली गयो बुद्धि ॥ धि० ॥ ८ ॥ पूठीयु पाडोशी नणी, घर स्वामीनु छुं नाम ॥ ते कहे ताहरे शु अठे, ए नामनु रे पूठयानु काम ॥ धि० ॥ ९ ॥ ते कहे सदेजें पूठीयु, ए रूपजदत्तनु गेह ॥ आम अवस्था का थइ,जीवे ठे के वली मूउ तेह ॥ धि० ॥ १० ॥ ते कहे शेठ ने तस प्रिया, बेहु पहुतर्जा परलोक ॥ घर पडयुं सजाल्या विना, एम निसुणी रे मनमा धरे शोक ॥ धि० ॥ ११ ॥ धिक् व्यसन मुऊ वेश्यातणु, हुं थयो मूढ गमार ॥ मृत पितर में नवि जाणिया, नवि गणीयो रे अपयश अपकार ॥ धि० ॥ १२ ॥ धन धूलमाहे मेलीयुं, सेविया सात व्यसन ॥ छुं काम में रूडुं कर्यु,देखाडुं रे हवे केम वदन्न ॥धि०॥१३॥ घर जोइने पाठो वल्यो, आवीयो जीर्णोद्यान ॥ खर ताड पत्रें छुरीकया, तेणें लखीया रे अक्कर धरि शान ॥ धि० ॥ १४ ॥ सुलस श्रीजिनवर नमी, लखे नामिनीने लेख ॥ आल्हाद सहित उतावलो, तुं वांचे सुगन यणी विशेष ॥ धि० ॥ १५ ॥ हु आज गणिकाघरथकी, नीसरी आव्यो गेह ॥ मृत पितर निसुणी लाजियो, तुऊ न मल्यो रे आव्यो

पण ए नि स्वामिक अछे तो ॥ न० ॥ अहु नवि लहे कोइ गुच ॥ १७ ॥ चैत्य करावीश अभिनवां तो ॥ न० ॥ करइशुं ए जीर्ण उद्धार ॥ पुण्य ए एहना स्वामीने तो ॥ न० ॥ होशे नहिं जस पार ॥ १९ ॥ एम चिंती लीधा तेणें तो ॥ न० ॥ कोडीना मूल्यना पच ॥ तापी गाठे बांधीयां तो ॥ न० ॥ सुलसें करि रूडो सच ॥ २० ॥ वेलाकुल पुर आवीयो तो ॥ न० ॥ जलनिधि तट सुखकार ॥ श्रीसार शेठने मंदिरें तो ॥ न० ॥ आव्यो ते सुलस कुमार ॥२१॥ आगत स्वागत बहु करी तो ॥ न० ॥ शेठ दीये सन्मान ॥ बहु कोडें दोय वेचियां तो ॥ न० ॥ रयण दो तेज अ मान ॥ २२ ॥ नांम अही बहु तेहना तो ॥ न० ॥ निजपुर चालण प्रेम ॥ साथ सघातें चालीयो तो ॥ न० ॥ मनमाहे चिंते रे एम ॥ २३ ॥ मलशु जइ घर नारीशु तो ॥ न० ॥ करशु ए लील विलास ॥ स्वजन सहु साथे मले तो ॥ न० ॥ पूरशु मंदिरवास ॥ २४ ॥ एक महोटी अ टवी तिहां तो ॥ न० ॥ जातां ए आवि विचाल ॥ एक प्रदेशें तेहने तो ॥ न० ॥ उतस्यो साथ विशाल ॥ २५ ॥ धान्यपाक सहुको करे तो ॥ न० ॥ आवि कजाती ए धाड ॥ थइ सन्नद्ध सहामो थयो ॥ न० ॥ पूरवा वैरीना लाड ॥२६॥ रणमाहे नासी गया तो ॥न०॥ सुलसना सुभट अनेक ॥ रह्यो तिहा कणे एकलो तो ॥न०॥ सुलस धरीमन टेक ॥२७॥ बांध्यो पाठा बाहुयें तो ॥ न० ॥ लूटी लीयो सवि माल ॥ कर्म दशा जब पालटी तो ॥ न० ॥ नर होय जेम कंगाल ॥ २८ ॥ ते लेइ चाल्या सुल सने तो ॥ न० ॥ वेच्यो ए वणिकने हाथ ॥ तेणें जइ पारसकूलमां तो ॥ न० ॥ आप्यो ए सुलस अनाथ ॥ २९ ॥ रुधिर तणे काजें लीयो तो ॥ न० ॥ जुउ जुउ पूरवपाप ॥ बंधातां मालिम नहि तो ॥ न० ॥ बदयें लहे रे संताप ॥ ३० ॥ आकर्षी नर तनुथकी तो ॥ न० ॥ रुधिर भरे कुंभ केइ ॥ तेमांहे तिहां उपजे तो ॥ न० ॥ जीव घणा लघुदेहि ॥ ३१ ॥ कृमीराग तेहनो नीपजे तो ॥ न० ॥ वसन रंगाये रे तेण ॥ रंग न तेहनो उतरे तो ॥ न० ॥ वाधे ए पण जलघेण ॥ ३२ ॥ सुलस सहे दुःख तेहवां तो ॥ न० ॥ रुधिरशुं खरड्या रे अंग ॥ पड्यो अचेत भूमि तले तो ॥ न० ॥ विरुउ ए कर्मप्रसंग ॥ ३३ ॥ भारंम एक तिहां आ वियो तो ॥ न० ॥ चंचुमां ग्रही तस सार ॥ लेइ उड्यो अंबरतलें तो

व्यापार ॥ लालच मनमा अति घणी तो ॥ भ० ॥ जेम तेम धन मेलुं सार ॥ ३ ॥ षट महिना त्यां अतिक्रम्या तो ॥ भ० ॥ बमणा चमणा रे दिनार ॥ लाभें लोभ वध्यो घणो तो ॥ भ० ॥ मनमांहि करे रे विचार ॥ ४ ॥ लेइ करियाणु सामटु तो ॥ भ० ॥ सुलस चल्यो लेइ साथ ॥ ॥ तिलकपुरें ते आवियो तो ॥ भ० ॥ रत्नवाने वहुली रे आथ ॥ ५ ॥ मन चिंतित नवि पामीयो तो ॥ भ० ॥ लाभ तिहां पण तेह ॥ वाहण माल भरी चढयो तो ॥ भ० ॥ रत्नद्वीपे गुण गेह ॥ ६ ॥ भेट लई नृपने मल्यो तो ॥ भ० ॥ दाण अर्ध मेल्युं राय ॥ आदर मान दीधुं घणु तो ॥ भ० ॥ कीध महा सुपसाय ॥ ७ ॥ लाभ घणो तिहांकणे थयो तो ॥ भ० ॥ फली मनोरथमाल ॥ निजपुरने जावा भणी तो ॥ भ० ॥ सुलस थयो उजमाल ॥ ८ ॥ लेइ लक्ष्मीने चालीयो तो ॥ भ० ॥ वाहण वेसी कुमार ॥ भर दरीये भाग्युं तदा तो ॥ भ० ॥ अहो अहो कर्म विकार ॥ ए ॥ मन चिंते वहु जीवडो तो ॥ भ० ॥ उदय वडो बलवान ॥ कोडी उपाय करे कोइ तो ॥ भ० ॥ फले कृतकर्म निदान ॥ १० ॥ आयु जोरावर सुलसनु तो ॥ भ० ॥ चढीयुं रे फलक हाथ ॥ पंचम दिवसें पामीयो तो ॥ भ० ॥ किहांएक तीर अनाथ ॥ ११ ॥ वन देखी कदली तणा तो ॥ भ० ॥ कर्यो तस फलथी आहार ॥ वि शाम्यो जइ तरुतलें तो ॥ भ० ॥ मनमांहि धरे रे विचार ॥ १२ ॥ कष्ट स ह्यां में अति घणा तो ॥ भ० ॥ मेली ऋद्धि अपार ॥ पण मुज हाथ रही नही तो ॥ भ० ॥ कर्म कठिन निर्धार ॥ १३ ॥ अथवा दैव उल्लंघीने तो ॥ भ० ॥ कीजें क्रिया जग जेह ॥ न फले सरजल चातकें तो ॥ भ० ॥ मधुं गले नीसरे तेह ॥ १४ ॥ यदुक्तं ॥ दैवमुल्लंघ्य यत्कार्यं, क्रियते फल वन्न तत् ॥ सरोंभश्चातकेनाप्त, गलरंध्रेण निर्गतम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ तो पण में नवि छांडवु तो ॥ भ० ॥ साहस सुखनु रे हेत ॥ वादला बंधवनी परें तो ॥ भ० ॥ कथिय ए छेह न देत ॥ १५ ॥ सुलस विचारी चित्तमां तो ॥ भ० ॥ आगल चाल्यो ए जाम ॥ पंखी समूहें चूथीयुं तो ॥ भ० ॥ शब एक दीठु रे ताम ॥ १६ ॥ ते नर शबवसनाचलें तो ॥ भ० ॥ बांधी रे दीठी गांठ ॥ तें सुलसें छोडी जइ तो ॥ भ० ॥ लीधां पण रयण व किठ ॥ १७ ॥ अणदीधु लेवुं नहिं तो ॥ भ० ॥ एह प्रतिज्ञा रे मुज ॥

पण ए नि स्वामिक अछे तो ॥ न० ॥ ग्रहु नवि लहे कोइ गुथ ॥ १७ ॥ चैत्य करावीश अजिनवां तो ॥ न० ॥ करइशुं ए जीर्ण उद्धार ॥ पुण्य ए एहना स्वामीने तो ॥ न० ॥ होशे नहिं जस पार ॥ १९ ॥ एम चिंती लीधा तेणें तो ॥ न० ॥ कोडीना मूल्यनां पंच ॥ ताणी गांठे बांधीयां तो ॥ न० ॥ सुलसें करि रूडो संच ॥ २० ॥ वेलाकुल पुर आवीयो तो ॥ न० ॥ जलनिधि तट सुखकार ॥ श्रीसार शेठने मंदिरें तो ॥ न० ॥ आव्यो ते सुलस कुमार ॥२१॥ आगत स्वागत बहु करी तो ॥ न० ॥ शेठ दीये सन्मान ॥ बहु कोडें दोय वेचिया तो ॥ न० ॥ रयण दो तेज अ मान ॥ २२ ॥ नांम ग्रही बहु तेहना तो ॥ न० ॥ निजपुर चालण प्रेम ॥ साथ संघातें चालीयो तो ॥ न० ॥ मनमांहे चिंते रे एम ॥ २३ ॥ मलशुं जइ घर नारीशुं तो ॥ न० ॥ करशुं ए लील विलास ॥ स्वजन सहु साथे मले तो ॥ न० ॥ पूरशुं मंदिरवास ॥ २४ ॥ एक महोटी अ टवी तिहां तो ॥ न० ॥ जातां ए आवि विचाल ॥ एक प्रवेशें तेहने तो ॥ न० ॥ उतर्यो साथ विशाल ॥ २५ ॥ धान्यपाक सहुको करे तो ॥ न० ॥ आवि कजाती ए धाड ॥ थइ सन्नद्ध सहामो थयो ॥ न० ॥ पूरवा वैरीना लाड ॥२६॥ रणमांहे नासी गया तो ॥न०॥ सुलसना सुजट अनेक ॥ रह्यो तिहां कणे एकलो तो ॥न०॥ सुलस धरीमन टेक ॥२७॥ बाध्यो पाठा बाहुयें तो ॥ न० ॥ लूटी लीयो सवि माल ॥ कर्म दशा जब पालटी तो ॥ न० ॥ नर होय जेम कंगाल ॥ २८ ॥ ते लेइ चाल्या सुल सने तो ॥ न० ॥ वेच्यो ए वणिकने हाथ ॥ तेणें जइ पारसकूलमां तो ॥ न० ॥ आप्यो ए सुलस अनाथ ॥ २९ ॥ रुधिर तणे काजें लीयो तो ॥ न० ॥ जुउ जुउ पूरवपाप ॥ बंधाता मालिम नहि तो ॥ न० ॥ उदयें लहे रे संताप ॥ ३० ॥ आकर्षी नर तनुथकी तो ॥ न० ॥ रुधिर जरे कुंभ केइ ॥ तेमांहे तिहां उपजे तो ॥ न० ॥ जीव घणा लघुदेहि ॥ ३१ ॥ कृमीराग तेहनो नीपजे तो ॥ न० ॥ वसन रंगाये रे तेण ॥ रंग न तेहनो उतरे तो ॥ न० ॥ वाधे ए पण जलपेण ॥ ३२ ॥ सुलस सहे दु:ख तेहवां तो ॥ न० ॥ रुधिरशु खरड्या रे अंग ॥ पड्यो अचेत जूमि तले तो ॥ न० ॥ विरुउ ए कर्मप्रसंग ॥ ३३ ॥ जारंम एक तिहां आ वियो तो ॥ न० ॥ चंचुमां ग्रही तस सार ॥ लेइ उड्यो अंबरतलें तो

॥ न० ॥ नहीं कोइ राखणहार ॥ ३४ ॥ रोहणगिरि जइ उतरयो तो ॥ न० ॥ मूकी शीला तल जाम ॥ नहणने उपत पयो तो ॥ न० ॥ नारंन वीजो रे ताम ॥ ३५ ॥ थाव्युं नदय देखी करी तो ॥ न० ॥ तेणें पण दीधी रे वोट ॥ माहोमाहे वलग्या बन्हे तो ॥ न० ॥ करे एक एकने चोट ॥ ३६ ॥ अहो ससारविडबना तो ॥ न० ॥ मत्स्यगला गल एह ॥ कोइ केहनु वहालु नहि तो ॥ न० ॥ स्वारथ साथ सनेह ॥ ३७ ॥ कलह करता देखिने तो ॥ न० ॥ लघुकलश्च ततकाल ॥ तेह सुलस नासी करी तो ॥ न० ॥ पेठो गिरिविवर विचाल ॥ ३८ ॥ ते बेहु पंखी जब गया तो ॥ न० ॥ निसर्यो सुलस कुमार ॥ गिरिनिर्झर निर्मल करे तो ॥ न० ॥ निजतनु लेइने वारि ॥ ३९ ॥ अणसंरोहि पीने रसें तो ॥ न० ॥ व्रण कस्या साजा तेण ॥ गिरि उपरथी उतर्यो तो ॥ न० ॥ सुलस ते नाग्यवशेण ॥ ४० ॥ नूमितलें जब आवीओ तो ॥ न० ॥ गर्त्ता रेणुस्कर दीठ ॥ नर बहु खणता देखीया तो ॥ न० ॥ मन चिते कौतुक मीठ ॥४१॥ छठे खमें त्रीशमी तो ॥नवि सुणो॥ परिग्रह एम कुःखदाय ॥ राम कहे परिग्रहथकी तो ॥ नवि सुणो ॥ विरमे महासुख पाय ॥ ४२ ॥ सर्व गाथा ॥११७१ ॥ श्लोक तथा गाथा ॥६३॥

॥ दोहा ॥

॥ सुलस देखि तिहा पंचकुल, हरख्यो चित्त अपार ॥ पूछे हवे जइ ते हने, कवण देश आचार ॥ १ ॥ लेइ खनित्र करमा खणो,किण कारण ए सधि ॥ कुण पर्वत ए दाखवो, मुजने सवि सवध ॥ २ ॥ ते नर कहे सुण पंथिया, जे देशांतर जाय ॥ ते माह्या सघलु लहे, तु एम घेलो कांय ॥ ३ ॥ शुं आकाशथकी पड्यो, जे न लहे कांइ वात ॥ सुलस कहे ते पण खरु, निसुणो मुफ अवदात ॥ ४ ॥ एक विद्याधर माहरे, सूधो जीवन प्राण ॥ मेरु गिरि देखाडवा, मुफ लेइ चल्यो सुजाण ॥ ५ ॥ देव योग वचमां मल्यो,रिपु विद्याधर एक ॥ युद्ध थयु ते बेहुने, हु पडीयो तब छेक ॥६॥ नाग्य योगें रह्यो जीवतो, जे तुम्हें कह्यु ते साच ॥ माटें तुम पूछु अछु, कहो मुफ साची वाच ॥ ७ ॥ ते कहे रोहणनामथी, पर्वतने ए देश ॥ वज्रसार नरराजीयो,तेह तणे आदेश॥ ८ ॥ ए नर नूमि खणी घणी,काढे रयण अपार ॥ कर देई राजा प्रतें,लेइ जाये घर बार ॥९॥ तास

वचन सांजली सुलस,मनमां थयो खुशाल ॥ धन उपराजण ए जलो,जह्यो उपाय सुविशाल ॥ १० ॥ रत्नपुज पुरमां रहि, वृद्ध वणिकने गेह ॥ नर सार्थे गर्त्ता जइ, मेले रयण सनेह ॥ ११ ॥ एक वहुमूलु पामीयो, रयण गोपवी अंग ॥ वीजा रयणनो जाग देइ, चाल्यो धरि मन रंग ॥ १२ ॥

॥ ढाल एकत्रीशमी ॥

॥ कानें मुद्रा शिर जटा ॥ ए देशी ॥ सुलस तिहांथी चालीयो ॥ सुणो जवि जावें लाल ॥ लोन्न महाडु खदायकु ॥ जज जगवतकु वे ॥ मायानो वाध्यो प्राणीयो ॥ सु० ॥ पग पग पामे अपायकु ॥ ज० ॥ १ ॥ श्रीमतपुरमाहे आय के ॥ सु० ॥ वेची रयण कस्या दाम के ॥ ज० ॥ करीयाणु वहु लेइ चल्यो ॥ सु० ॥ चिंते थयु मुज काम के ॥ ज० ॥२॥ मारगमांहि आवता ॥सु०॥ अटवी आवी विकराल के ॥ज०॥ दव लाग्यो तिहां जोरथ्यु ॥ सु० ॥ पवनें हो पसरी जाल के ॥ ज० ॥ ३ ॥ करियाणु दाधु सवे ॥ सु० ॥ कर्म सवल प्रतिकूल के ॥ ज० ॥ जीव लेइ नाठो तिहां ॥ सु० ॥ लोन्न ए डु खनु मूल के ॥ ज० ॥ ४ ॥ कोइक गामने परिसरें ॥ सु० ॥ जमता हो तापस दीठ के ॥ ज० ॥ कर जोडी तेहने नम्यो ॥सु०॥ पासें जइ उपविठ के ॥ज०॥५॥तापस कहे तव सुलसकु ॥ सु० ॥ कोन मूलकसें आया इहां ॥ ज० ॥ फिकर करे क्यु चित्तमां ॥ सु० ॥ वत्स तें जावेगा किहां ॥ ज० ॥ ६ ॥ सुलस कहे सां इ सुणो ॥ अवे उपकारी लाल ॥ धन कारण जगती जम्यो ॥ ज० ॥ पार न आयो दलिड्को ॥ अवे० ॥ काल वहु यु निर्गम्यो ॥ ज० ॥ ७ ॥ अव सांई मुजकों मीले ॥अ०॥ जाग्य फल्या मेरा सही ॥ज०॥ तुम जेसे मोकु मिले ॥अ०॥ डरकु अव जाचु नहि ॥ज०॥८॥ काहे पूकारत ड्व्यकु ॥ अवे सुण वाबू लाल ॥ धन हम धूल समा गिने ॥ ज० ॥ ए मायाके खेल हे ॥ अव० ॥ सो योगी वर्जे जिणे ॥ ज० ॥ ए ॥ दोलत डुनियां कारिमी ॥ अ० ॥ विणसतां नहि वार के ॥ ज० ॥ मस्त रहो प्रजुध्यानमा ॥ अ० ॥ धरो एक योगसें प्यार के ॥ ज० ॥ १० ॥ सुलस कहे तुम सच कहा ॥ अवे सुण साइ लाल ॥ मार्ग योगान्यासका ॥ ज० ॥ पण जग डुनियादारकू ॥ अ० ॥ वधन आशापाशका ॥ ज० ॥ ११ ॥ धन विणु जगत चले नहि ॥ अवे० ॥ धन मूल ए ससार के ॥ ज० ॥ करो

करुणा मो उपरें ॥ अ० ॥ तुम हो बडे सिरदार के ॥ न० ॥ ११ ॥ कहे परिव्राजक काहेकु ॥ अ० ॥ शोच करत दिल नीतरें ॥ न० ॥ धन बहु तेरा हे इहा ॥ अ० ॥ छिनमें दारिद्र दूर करे ॥ न० ॥ १२ ॥ सुलस कहे मोकु कहो ॥ अ० ॥ धन मिले कोन उपायसें ॥ न० ॥ रसकूपी रस जो मिले ॥ अ० ॥ कंचन होवे आयसें ॥ न० ॥ १४ ॥ सुलस कहे फुरमावीयें ॥ अ० ॥ मुज लायक होवे काज के ॥ न० ॥ महिषीपुत्र कों आणि के ॥अ०॥ तेलमें दृपो आज के ॥न०॥१५॥ मृत महिषीपुत्र ले इ धघु ॥ अ० ॥ तेलमाहे षट्मास के ॥न०॥ सुलसको किणहीके घरे ॥ अ० ॥ जिमाडे सो उल्लास के ॥ न० ॥ १६ ॥ षटमासें दोय नीसरे ॥ अ० ॥ पुस्तक पुत्र लेइ हाथ के ॥न०॥ दोय तुंबी दोरी ग्रही ॥ अ० ॥ मचिका लीधी साथ के ॥ न० ॥ १७ ॥ गिरिविवरें दोय आवीया ॥सु०॥ यक्ष पडिमा पूजी करी ॥ न० ॥ वलि देवे नूतदेवको ॥ सु० ॥ आगें च ले दोनु फिरी ॥ न० ॥१८॥ दीप कीयो वन पुत्रको ॥ सु० ॥ दोऊ जन आगें गये ॥ न० ॥ चोरस रसकूप देखि कें ॥ अ० ॥ दो दीलमें हर्षित नये ॥ न० ॥ १९ ॥ वलि देई कहे सुलसकों ॥ सु० ॥ इस माची पर बेठ के ॥ न० ॥ तुंब लेई दोउ हाथमें ॥ अव० ॥ जाउ रस लेणको ठेठ के ॥ न० ॥ २० ॥ सुलस गयो रसकूपमें ॥ सु० ॥ मुख समरे नवकार के ॥ न० ॥ रस लेवा वयत थयो ॥ सु० ॥ शब्द सुण्यो तेणी वार के ॥ न० ॥ २१ ॥ ए रस कोढी हे बूरो ॥ सु० ॥ मत करसें फरसो तुमें ॥ न० ॥ तु साधर्मिक माहरो ॥ सु० ॥ वनसें वारत हे अम्हें ॥ न० ॥२२॥ तनु रस लागेसें होवे ॥ सु० ॥ छिनमें प्रानको नाश के ॥ न० ॥ आराधक जिनधर्मको ॥ सु० ॥ तुं आयो धनआश के ॥ न० ॥ २३ ॥ लावो तुमक रस नरी देव ॥सु०॥ करु तुमकु साहाज के ॥ न० ॥ सुलस कहे तुम वदन ॥ अवे धर्म बांधव लाल ॥ वात कहो तुम आज के ॥न०॥२४॥ ठठेखमें एकत्रीशमी॥अ०॥ढालकहीधनउपरें॥न०॥ धन निज संकट अव गुणी॥ अ०॥ जे एकज उपकृति करे ॥ न० ॥२५॥ सर्व० ॥ १२०८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे धर्म बांधव सुणो, लोन वडो जगमांहि ॥ लोनवशें ए जीवडो, पामे डुःख अथाह ॥१॥ नयरी विशालामां वसुं, जिनशेखर अनिधान॥

समुद्र चढ्यो धनकारणें, नाज्यु अधविच यान ॥ २ ॥ उदधि तस्यो फल इक लही, नमता अटवीमांहि ॥ परिव्राजक मुजने मल्यो, नाख्यो कूपक मांहि ॥ ३ ॥ तुवक नरी करें गयो, लेइ तुवक तेणें नीच ॥ दोर ठेदी नाख्यो मुनें, पडीयो रस अध वीच ॥ ४ ॥ जाणुं तुजने पण तेणे, ठेतरीयो सहि आज ॥ जो सुश्रावक मत करो, तस विश्वास अकाज ॥ ५ ॥ सुलसें पण सवध निज, दाख्यो तेणे रस तुंब ॥ दोय नरी दीधां तिहां, न कस्यो कांइ विलंब ॥ ६ ॥ मांची तल बांधी निविड, सुलसें हला वी दोर ॥ कूपकठ लगें ताणीयो, योगीयें करी जोर ॥ ७ ॥ दे तुवक मुजने प्रथम, ते कहे बांध्यां ताणी ॥ मांचि तले तूटे नहि, आपीश प ठें सुजाण ॥ ८ ॥ तेणे जाण्यु नेदू मल्यो, न रगाये हवे एह ॥ तुव सहित तेणें सुलसने,नाख्यो कूप नि स्नेह ॥ ए ॥ कूप मूकी योगी गयो, नितुर नीच कुपात्र ॥ सुलस कूप मेखल पड्यो,अक्षत रहियु गात्र ॥ १० ॥ सुलस गाढ स्वर उच्चरे, पचपरमेष्ठिजाप ॥ कहे चेतन ए तादृश, उदयें आव्या पाप ॥ ११ ॥ जो परिग्रह आगलथकी, मूलथी मेल्यो होत ॥ तो एवडु स्थाने इहां, डुःख डुं नजरें जोत ॥ १२ ॥ अधुना पण प्राणी इहां, लेइ चारित्र उदार ॥ करि अणसण आराधना, जिम हुवे तुऊ उद्धार ॥१३॥ जिनशेखर तव सांजली,कहे म म चिंतव एम ॥ कहु निस्सरण उपाय हु, सांजल धरि मन प्रेम ॥ १४ ॥ एक गोधा आवे अठे, रस पीवाने अत्र ॥ तस पुच्छ वलगी तु जजे, ते जिहां जाये तत्र ॥ १५ ॥ कहे जिनशेखर माहरु, अल्प आयु अवशेष ॥ कर उपकार तु मुजने, देई धर्म उपदेश ॥ १६ ॥

॥ ढाल बत्रीशमी ॥

॥ महाविरजीनी देशना ॥ ए देशी ॥ सुलस कहे हवे तेहनें ए, जिनशेखर अवधार तो ॥ चिहु गतिमा लाइ जीवडो ए, नमता न आव्यो पार तो ॥१॥ श्रीजिनवरनी देशना ए॥ ए आंकणी ॥ पाचे ए आश्रव रोलवे ए, पहेले ए प्राणातिपात तो ॥ बीजो मृषावाद परिहरो ए, अदत्त करे गुणघात तो ॥श्रीजि०॥२॥ मैथुन परिग्रहमा घणु ए,लपटाई रह्यो जीव तो ॥ जोगवे नरक निगोदमा ए,करतो वेदनें ए रीव तो ॥श्रीजि०॥३॥ एक समरे अरिहतने ए, सिद्ध नजे गुणवत तो ॥ आचारिज उवशायने

ए, समरे महामुनि संत तो ॥ श्रीजि० ॥ ४ ॥ ए पंच मंगल मूलगा ए, ध्याता हो जवनिस्तार तो ॥ शरण नहि कोइ ए विना ए, जवमांहे रा खणहार तो ॥श्रीजि०॥५॥ शरण हजो वली तुऊ जणी ए,अरिहंत सिद्ध सुसाध तो ॥ केवलिजाषित धर्मनु ए, राखजो दिलमा समाध तो ॥ श्रीजि० ॥ ६ ॥ तु कोइनो नहि ताहरु ए, कोइ नहि जगमांहे तो ॥ एक जिनधर्म ठे ताहरो ए, वलगजे एहिनी बांहे तो ॥ श्रीजि० ॥ ७ ॥ लख चोराशी खामजे ए, म धरिश कोइशु वेर तो ॥ स्वारथीयु सहुको म ल्यु ए, वाहला हो वहेती सेर तो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ सगपण ए संसारनां ए, हूवा अनंती वार तो ॥ वहालो वेरी थइ अवतरे ए, वेरी वहालो सं सार तो ॥श्री०॥ए॥ मिथ्यात्व रुत दीजीयें ए, सेव्या ए पाप अढार तो ॥ आ जव परजव सेवीया ए, दोष अनेक प्रकार तो ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे तें कष्या वली कारव्या ए, पनर ए कर्मादान तो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिरावजे ए, डुर्गतिना ए निदान तो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ साजल आ हारीपणु ए, लाग्यु अनादिनु केड तो ॥ क्याहि रह्यो नहिं ए विना ए, हवे तस मूर्छा फेड तो ॥ श्री० ॥१२॥ चार प्रकार आहारना ए,तु वोसि रावजे आज तो ॥ अरथ सरे जेम ताहरो ए, वलीयो थइ कर काज तो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ शूर थजे तु इण समे ए, म करीश कायर जाव तो ॥ असुरसुरादिक स्थिर नहि ए,ए संसार स्वजाव तो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ जिनशेखर मनशुद्धिशुं ए, सद्दहिया सवि बोल तो ॥ ध्यान धरे नवका रनु ए, रह्यो मनें थइ अमोल तो ॥ श्री० ॥ १५ ॥ षट्कायना जीव उपरें ए, राग ने द्वेष निवार तो ॥ आयु पूरुं करी अवतस्यो ए, अष्टम कल्पमजार तो ॥ श्री० ॥ १६ ॥ न दीये हुंकारो यदा ए, जाण्यु गयो परलोक तो ॥ सुलस रुवे कव मूकीने ए, धर्म बांधवने शोक तो ॥ श्री० ॥ १७ ॥ हा जिनशेखर बांधवा ए, साधर्मिक गुणधार तो ॥ मुऊ मूकीने किहां गयो ए, द्यो उत्तर एणी वार तो ॥ श्री० ॥ १८ ॥ धर्माराधन रकु थी ए, मूकीने डुःखकूप तो ॥ सुरपदवी सहि पामीया ए, जाणु एमति थि स्वरूप तो ॥ श्री० ॥ १ए ॥ एणे अवसरें आवी गोधिका रे, रस पीवा तिण गाय तो ॥ पान करी पाठी वली ए, पुर्षे हो वलम्यो जाय तो ॥श्री०॥२०॥ किहाइ सूवे बेसे किहा ए, किहाइ जमो एण मेल तो ॥

कष्टथी वाद्देर नीसस्यो ए, जूउ जूउ कर्मना खेल तो ॥ श्री० ॥ २१ ॥ रवि पर्वत देखी करी ए, मूकी द्दो तेद्दनु पुत्र तो ॥ एकदिशि लेश्ने चालियो ए, सुलस धरी मति उच तो ॥ श्री० ॥ २२ ॥ आगें जाता एक द्दाथीयो ए, साद्दामो धायो विकराल तो ॥ सुलस विचारे द्दो चित्तमा ए, मूके नद्दि ए व्याल तो ॥ श्री० ॥ २३ ॥ अत नायो एक ऊखनो ए, वाळु आयु सन्मुख तो ॥ में वद्दु पाप समाचर्युं ए, पूरव नव कोइ तिरक तो ॥ श्री० ॥ २४ ॥ नागो ते गज नयथकी ए, करी आव्यो तत्काल तो ॥ करें जाली उछालीयो ए, चिंतित थयु विसराल तो ॥ श्री० ॥ २५ ॥ पडतां द्दो नाग्यवशें तिद्दां ए,तरु उपर पड्यो आय तो ॥ मार्या मरे नद्दीं ते सद्दी ए, जस निरुपक्रम आयु तो ॥ श्री० ॥२६॥ शाखा द्दो अवलंबी रह्यो ए, दृढचित्त सुलस कुमार तो ॥ गज तरु धधोले रह्यो ए, थर थर ध्रूजे अपार तो ॥ श्री० ॥ २७ ॥ सिंद्द तिद्दा कपे आवीयो ए, गज दृणीयो क्षणमांय तो ॥ आमिष तस नक्षण करे ए, मत्स्य ज्यु ए नव न्याय तो ॥ श्री० ॥ २८ ॥ वाघ जोरावर तिद्दा वली ए, आव्यो द्दो मास उद्देश तो ॥ एक द्रव्य कारण विद्दु जणा ए, वढीया ते सुविशेष तो ॥श्री० ॥ २९ ॥ युद्ध करता वेद्दुनें ए, रात पडी तिण ठार तो ॥ सुलस विचारे चित्तमां ए, नाव्यो ए कर्मनो पार तो ॥ श्री० ॥ ३० ॥ तरु शाखायें ए कण दिशें ए, दीठो उद्योत अत्यंत तो ॥ सुलस विचारे ए सु द्दशे ए, जोउ जइ टले भ्राति तो ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ जोता द्दो एक माला विचें ए, दीठो मणि तिद्दा एक तो ॥ पासें भुजगस्थानक वली ए, देखी चिंते सुविवेक तो ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ विषअपद्दर ए भुजगनुं ए, शिरमणि रयण ए द्दोय तो ॥ लेइ करतल ते उतस्यो ए, द्दर्षे ते मणि जोय तो ॥ श्री० ॥ ३३ ॥ वाघ द्दरि दोय नासीया ए, ते मणिने उद्योत तो ॥ रात गइ रवि उगीयो ए, प्रगटी पूर्वदिशें ज्योति तो ॥ श्री० ॥ ३४ ॥ उठे खंमें सत्रीशमी ए, ढाल नणी मनरंग तो ॥ ऊख जग जीव सद्दे घणा ए, परिग्रद्दने परसग तो ॥ श्री० ॥३५॥ सर्वगाथा ॥१२५०॥ श्लोक ॥६२॥

॥ दोद्दा ॥

॥ थये प्रनाते मणिरयण ते, गांठे वाधी सार ॥ चाल्यो अति उता वलो, सुलस अरण्य मजार ॥ १ ॥ नूख्यो तरष्यो अति घणो, सद्देतो

दुःख अपार ॥ साते दिवसे पामीयो, ते अटवीनो पार ॥ १ ॥ सप्तम दिन एक पर्वतें, दीठो अग्नि प्रकाश ॥ तस अनुसारे तिहां गयो, मनमां सुलस विमासि ॥ २ ॥ धातुर्वादी बहु मिल्या, करे धातुरस योग ॥ सुलस तिहा कह्यो जइ, पूर्व कर्मने जोग ॥ ४ ॥ आदर देई स्थापीयो, तेणें तेहने निज पास ॥ जोजन आपे जावता, सुलस लह्यो विश्वास ॥ ५ ॥ सूता एक दिन तेहनी, गाठें देखी गरह ॥ ठानो ठोडीने लियो, अर्थ करे अनरह ॥ ६ ॥ तस ठामें वांध्यो अवर, तत्प्रमाण पाषाण ॥ ठल कारक एम ठल करी, परधन हरे अजाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ सामि सोहकर, श्रीशेरीश ए॥ ए देशी ॥ पाठली रयणी रे, सुलस ते जागीयो ॥ धातु धमता दुःख रह्यो निर्जागीयो ॥ त्रूटक ॥ निर्जागीयो इहां अर्थ केरी, आश महारी नवि फली ॥ बहु दिवस यया मुऊ धातु धमतां, इव्य कोडी नवि मिली ॥ ए इव्य अर्थी करे व्यर्थी, अग्निकिरिया अति घणी ॥ बहु पाप कर्मी नहिं धर्मी, आश एहोनी सवि हणी ॥ १ ॥ यत ॥ धातु धमे विणु जा धणआशा, सिर मुंमे विणु जा रुवासा ॥ वेष धरे विणु जा घरआशा, एतिन्निवि आशा हूइ निराशा ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ ग्रह ग्रहीने रे, सुलस ते चालीयो ॥ मारगमाहे रे, बहु दुःख सालीयो ॥ त्रू० ॥ सालीयो बहु दुःख तास मनमां, अर्थ विणु बहु वन जमे ॥ पूरवें खोया अरथ केरी, चित सघली चित्त दमे ॥ मनमांहे आशा अर्थ केरी, करु उपराजण नवी ॥ आवीयो अटवी शीर्षपुरमां, सबल शोजा अन्निनवी ॥ २ ॥ मणि वेचणने रे, ठोडे गठी ए ॥ पाषाण देखी रे, पड्यो जूपीठ ए ॥ त्रू० ॥ जूपीठ पडियो करे हाहा, मुस्यो मुऊने अति घणो ॥ ते धातुवादीयें ठगी अनुपम, रयण लीधो मुऊ तणो ॥ अथवा नहीं तस कांइ दूषण, दोष सवि मुऊ कर्मनो ॥ मन चिंतव्युं तस होय क्यांथी, लेश नहिं जस धर्मनो ॥ ३ ॥ पूरव जव में रे, कर्म कीधां घणां ॥ केइ रण जाज्यां रे, होशे जन तणां ॥ त्रू० ॥ जनतणां जांज्यां तेम रण वली, देवइव्य साधारणा ॥ में जख्यां होशे ते विगोशे, काल बहु जव पूरणा ॥ अथवा दरिद्री नारी विधवा, इव्य होशे वावर्यां ॥ ते कर्म मुऊने उदयें आ जव, आवियां महारां कर्यां ॥ ४ ॥

मन एम चिंते रे, शुं इण जीवितें ॥ डुःखीयो कीधो रे, मुऊने दैव तें ॥ ञ्रू०॥ दैव तें जो कीध डुःखीयो,प्राण तजवा में हवे ॥ कृष्ण चजदिशि रयण पितृवन, जई गाढस्वरें चवे ॥ वैताल नूत पिशाच निसुणो, मांस वहेंचुं मुऊ तणुं ॥ तुमें जेम जाणो तेम श्रावी, करो नक्षण तनु तणुं ॥५॥ कर लेइ काती रे, बहु श्राव्या तीहां ॥ वैतालादि रे, सुलस अछे जीहां ॥ ञ्रू० ॥ जिहां सुलस छे ते तिहांकणे, आवी एणिपरें उच्चरे ॥ वैराग्यथी जो मांस विक्रय, करे छे तुं आदरें ॥ तो नियत इहांकणे नूमि उपरें, पड्यो ते निर्जय थइ ॥ सहु पासें विटाइ वल्या हवे, वात सुणो तिहां जे हुइ ॥ ६ ॥ एहवे श्रवसर रे, जिनशेखर जयो ॥ श्रवधि ज्ञानें रे, जोइ श्रलजीयो ॥ ञ्रू०॥ अलजीयो जोइ तुरत सोइ, सुलस पासें श्रावीयो ॥ ते नूत नाग हता नाग, तास जइ बोलावीयो ॥ नो सुलस श्रावक अहं तुऊ प्रति, नमुं बु कर जोडीनें, ते मुऊ आराधन सुणावी, बूजीयो मद छोडीने ॥ ७ ॥ थयो सुरलोकें रे, अष्टमे हुं सही ॥ इंड सामानिकनी, ऋद्धि में लही ॥ ञ्रू० ॥ में लही ऋद्धि ए तुऊ प्रसादें, धर्मगुरु मुऊ तुं थयो ॥ उप कार ताहरो अछे सबलो, ते न जाये में कह्यो ॥ एम निसुणी ते पण सुलस कवघो, जाणी जिनशेखर सुरो ॥ कहे धर्मबांधव तुऊने पण, हुं नमुं बुं सादरो ॥ ७ ॥ देव तव बोले रे, शुं तुऊ प्रिय करुं ॥ सुलस कहे तुम रे, दीठे दिल ठखु ॥ञ्रू०॥ दिल ठखु तो पण कहो मुऊने, कर्म हवे केतुं रह्युं ॥ निविड ए अंतराय केरुं, ज्ञानथी जे तुम्हें लह्युं ॥ कहे देव ए तुम क्षीण सरिखुं, कर्म रह्युं लवलेशथी ॥ पण नोगकर्म अछे घणुं तेणें, चरण हमणा तुऊ नथी ॥ए॥ माणिक्य सोवन रे, धनराशि घणी ॥ सुर बहु ढोइ रे, तेहना गुण नणी ॥ ञ्रू० ॥ गुण नणी ढोइ साथ सार्थे, नयर तस पहों चाडियो ॥ सुर शीख मागी गयो स्थानक, शुनें अशुन नसाडियो ॥ पुर मांहे सघले वात पसरी, नयरपति साहमो जइ ॥ बहु करी उत्सव नयरमांहे, लाविया हर्षित थइ ॥ १० ॥ निजघरे श्राव्या रे, साथ स्वजन घणा ॥ सहु जन बोले रे, हर्ष वधामणां ॥ ञ्रू० ॥ वधामणा लीये नामणा तेम,प्रथम नारी पीयु तणा॥ बहु दिवस वहालेसर पधास्या, श्राज उलट श्रति घणा ॥ कंत कामिनी दोय मलिया, दिवस वलीया सुखना॥ श्रंतराय नाग सवे नाग, दिवस नाग डुःखना ॥ ११ ॥ कामप

डुःख अपार ॥ साते दिवसें पामीयो, ते अटवीनो पार ॥ १ ॥ सप्तम दिन एक पर्वतें, दीठो अग्नि प्रकाश ॥ तस अनुसारें तिहां गयो, मनमां सुलस विमासि ॥ २ ॥ धातुर्वादी बहु मिल्या, करे धातुरस योग ॥ सुलस तिहां जनो जइ, पूर्व कर्मने नोग ॥ ४ ॥ आदर देई स्थापीयो, तेणें तेहने निज पास ॥ नोजन आपे नावता, सुलस लह्यो विश्वास ॥ ५ ॥ सूता एक दिन तेहनी, गांठें देखी गरठ ॥ ठानो ठोडीने लियो, अर्थ करे अनरठ ॥ ६ ॥ तस गांमें बांध्यो अवर, तत्प्रमाण पाषाण ॥ ठल कारक एम ठल करी, परधन हरे अजाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल तेत्रीशमी ॥

॥ सामि सोहकर, श्रीशेरीश ए॥ ए देशी ॥ पाठली रयणी रे, सुलस ते जागीयो ॥ धातु धमता डु रह्यो निर्नागीयो ॥ त्रूटक ॥ निर्नागीयो इहां अर्थ केरी, आश महारी नवि फली ॥ बहु दिवस थया मुऊ धातु धमतां, इव्य कोडी नवि मिली ॥ ए इव्य अर्थी करे व्यर्थी, अग्निकिरिया अति घणी ॥ बहु पाप कर्मी नहि धर्मी, आश एहोनी सवि हणी ॥ १ ॥ यत ॥ धातु धमे विणु जा धणआशा, सिर मुंमे विणु जा रुवासा ॥ वेश धरे विणु जा घरआशा, एतिन्निवि आशा हूइ निराशा ॥ १ ॥ पूर्व ढाल ॥ प्रह ऊठीने रे, सुलस ते चालीयो ॥ मारगमांहे रे, बहु डुःख सालीयो ॥ त्रू० ॥ सालीयो बहु डुःख तास मनमा, अर्थ विणु बहु वन नमे ॥ पूरवें खोया अरथ केरी, चित सघली चित्त दमे ॥ मनमांहे आशा अर्थ केरी, करु ठपराजण नवी ॥ आवीयो अटवी शीर्षपुरमां, सबल शोना अभिनवी ॥ २ ॥ मणि वेचणने रे, ठोडे गठी ए ॥ पाषाण देखी रे, पड्यो नूपीठ ए ॥ त्रू० ॥ नूपीठ पडियो करे हाहा, मुस्यो मुऊने अति घणो ॥ ते धातुवादीयें ठगी अनुपम, रयण लीधो मुऊ तणो ॥ अथवा नहीं तस कांइ दूषण, दोष सवि मुफ कर्मनो ॥ मन चिंतव्यु तस होय क्यांथी, लेश नहिं जस धर्मनो ॥ ३ ॥ पूरव नव में रे, कर्म कीधां घणां ॥ केइ रण नाज्यां रे, होशे जन तणां ॥ त्रू० ॥ जनतणां नांज्यां तेम रण वली, देवइव्य साधारणा ॥ में नख्यां होशे ते विगोशे, काल बहु नव पूरणा ॥ अथवा दरिड़ी नारी विधवा, इव्य होशे वावर्यां ॥ ते कर्म मुऊने ठदयें आ नव, आवियां महारां कर्यां ॥ ४ ॥

कह्यु सुलसने, कीधो तास पसाय ॥ १ ॥ सुलसे जइ रायने कह्यु, राय घणे परिवार ॥ गुरुवंदणने आवीयो, तिण उद्यान मझार ॥ २ ॥ पांचे अभिगम साचवी, करि पंचांग प्रणाम ॥ गुरु वांदी बेठा सवे, तिहां यथोचित स्थान ॥ ३ ॥

॥ ढाल चोत्रीशमी ॥

॥ मोरी मातजी रे, अनुमति द्यो व्रत आदरु रे ॥ ए देशी ॥ गुरु जांखे तिहां देशना रे, मीठी अमीय समाणी रे ॥ ए नरजव दोहिलो लह्यो रे, कां इ हारो गुणखाणी रे ॥ १ ॥ मोरा प्राणीया रे, एह धर्म नित्य आदरो रे ॥ शुजगुण ठाणीया रे, मत प्रमाद समाचरो रे ॥ ए आंकणी ॥ घूणा क्षर न्यायें करी रे, ए सामग्री लाधी रे ॥ ते हवे तुमें सफली करो रे, जैनक्रियाने साधी रे ॥ मोरा० ॥ २ ॥ आयु उजाणु जाय छे रे, न लीये लगार विसामो रे ॥ काल कुलालना चक्र ज्यु रे, एह फिरे अ विरामो रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ पंच प्रमादमांहे पड्या रे, आप सवारथ मा ह्या रे ॥ काल उलातो नवि लहे रे, मोहपिशाचें वाह्या रे ॥ मो० ॥ ॥ ४ ॥ सूर्यगतागत आउखु रे, प्रतिदिन ए क्षय पामे रे ॥ जन्म जरा दिक देखीने रे, क्षण निर्वेद न कामे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ मोहमद्यपानें करी रे, जग मतवालु दीसे रे ॥ आत्मतत्त्व न उंलखे रे, साचु ए विश वा वीशें रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ गुरुवाणी निसुणी सवे रे, जीव जविक मन ह रख्या रे ॥ देव धर्म गुरुतत्त्वने रे, सूधे लक्षण परख्या रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ इण अवसरें पूछे तिहां रे, मुनिने सुलस शिर नामी रे ॥ केम न रही प्रज्जु माहरे रे, संपद कहेँ पामी रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ देइ ज्ञान उपयोगने रे, जांखे एम चउनाणी रे ॥ संपद आवीने गई रे, सुण हेतु तस गुणखा णी रे ॥ मो० ॥ ९ ॥ ताम्राकर गामें हतो रे, तारचंद अभिधानो रे ॥ कौटुंबिक कुलमां वडो रे, श्रद्धावान ते दानो रे ॥ मो० ॥ १० ॥ याचक श्रमणादिक जणी रे, दान अवारित आपे रे ॥ श्रावक हुतो अहोनिशें रे, मन शुजकरणीमां स्थापे रे ॥ मो० ॥ ११ ॥ एक दिन अशुजना योगथी रे, तस मनमां एम आव्युं रे ॥ हा दीधु में अति घणु रे, पण तस फल नवि पाव्यु रे ॥मो०॥१२॥ हुं दीधे गुण नीपन्यो रे, आज पछी नवि देवु रे ॥ गुणकीर्त्ति बोले नहीं रे, पाछु कांइ न लेवुं रे ॥मो०॥१३॥ दानादिक

ताका रे, पण अनुरागिणी ॥ वेणीबधें, मितांशुकनागिणी ॥ त्रू० ॥ ना गिणी देखी तेहने पण, करी राखी गेहिनी ॥ शेष नारीसार्थे नोम वि लसे, विमल कीर्त्ति जेहनी ॥ एक दिवस चिंते चित्तमांहे, जीव परिग्रह मिति विना॥ते दुःख बहुला सह्या परिग्रह, व्रत लीधा एकमना ॥ ११ ॥ द्रव्य अनेरु रे, धर्मव्यय करे ॥ साते क्षेत्रे रे, परिगल वावरे ॥ त्रू० ॥ वावरे साते क्षेत्रें बहुलु, वित्त तेम विलसे वली ॥ एक दिवस अशुभना उदयथी तस, द्रव्य खूटयु अति मली ॥ दिलमाहे विलखो थयो सुलस ते, द्रव्य चाहे जेटले ॥ आठमा सुरलोकथी सुर, आवी पूरे तेटले ॥ १२ ॥ कहे मुफ वेग रे, तुम चिंता किसी ॥ जे तुम जोइयें, ते लेजो उल्लसी ॥ त्रू० ॥ उल्लसी लेजो वृष्टि करीने, कहे सोवन राशिनी ॥ तेणें निजपरिग्रह विरति माफक, लीधु नहि मति आशनी ॥ सुर कहे सुलसने एह रूडुं, कयु आतमहित जणी ॥ ए द्रव्य विण परिमाण कीधे, दीये वेदन अति घणी ॥ १४ ॥ यत ॥ यथा यथा ल्पोलोभ स्या, दल्पारंभपरिग्रहे ॥ तथा तथा सुख नृणां, धर्मास्सिद्धि प्रजा यते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ वाछित धन देइ, सुलसने ते गयो ॥ हर्ष हि यामा रे, तस बमणो थयो ॥ त्रू० ॥ थयो बमणो सुलस एक दिन, गयो वाडी मन रूली ॥ तिहां कर्मयोगें निधान देखी, चित्तमा चिंते वली ॥ ए द्रव्य न घटे मुफ लेवु, व्रतभंग ते आदस्यो ॥ मन एम चिंती निरखी नजरें, सुलस पाछो उसस्यो ॥ १५ ॥ दीठु रायने रे, सुजटें तिहां कणे ॥ पुरमां जइने रे,नृप आगें जणे ॥ त्रू० ॥ आगें जणे तुमें रही छाना, सुल सनी परीक्षा करो ॥ तेणें सात दिवसा लगी परख्यो, जाणीयो गुण मणि जस्यो॥नृप तेहि पूछे कह्यो शुं छे,केम निधि लीधो नहीं ॥ कहे सुलस माहरे नियम उपर, लीये व्रत नांजे सही ॥ १६ ॥ गुणवत जाणी रे, निज नंमारनी ॥ कूची सोंपी रे, नृप दरबारनी ॥ त्रू० ॥ दरबारनी सवि वात नृपति, सुलसने पूछी करे ॥ पुरमांहे सघले सुजस पसस्यो, कीर्त्ति सहु मुख उच्चरे ॥ ढाल छठे खंम तेत्री, शमी सपूरण थई ॥ एम नियम पाले धन्य ते नर, नमो तेहने पदें जइ ॥ १७ ॥ सर्वगाथा॥१२०३॥६४॥

॥ दोहा ॥

॥ इण अवसर तिहां आविया, अमरचंद मुनिराय ॥ आवी नर

॥ अथ षष्ठदिशिपरिमाण व्रतसबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ पच अणुव्रत इम कह्यां, हवे त्रण गुणव्रत तंत ॥ चक्रायुध नरवर सुणे, कहे शांति जगवत ॥ १ ॥ दिशिपरिमाण कह्यु प्रथम, जोगोपजोगनु मान ॥ अनर्थदंमविरमण वली, ए त्रण गुणव्रत जाण ॥ २ ॥ ऊर्ध्व अधो तीर्ह्यी दिशें, अधिकगमन अनाजोग ॥ अतिचार त्रण ए कह्या, सुणु बीजा दोय योग ॥ ३ ॥ क्षेत्र वृद्धि चोथो कह्यो, स्मृतिनु अतर्ध्यान ॥ अतिचार ए टालीने, पालो दिशिपरिमाण ॥ ४ ॥ लोजोदधि सके लीयो, जेणें ग्रह्यु ए व्रत सार ॥ त्रस थावर बहु जीवनें, ते अजय तणो दातार ॥ ५ ॥ तप्तलोह गोलक समु, अविरतिपाप ए जीव ॥ सकल जीवप्रत्यें दहे, तेणें आरंज अतीव ॥ ६ ॥ यद्यपि सघले गमननी, शक्ति नथी इणे देह ॥ तो पण अवर निबध तस, होवे नहीं सदेह ॥ ७ ॥ दिशिपरिमाण कस्या विना, पामे बहु डुखराशि ॥ जेम स्वयंजू देवनी, नवि पहोती मन आश ॥ ८ ॥ चक्रायुध कहे स्वामीने, कोण स्वयंजू देव ॥ किहा थयो किणि परें डुख लह्यु, ते जाखो जिनदेव ॥ ए ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

॥ उठ कलालण जर घडो हे ॥ ए देशी ॥ शांतिप्रजु कहे जलो हे, गगातट इणें नाम॥गाम सुवत सोहामणु हे, राजा तिहा अजिराम ॥१॥ जवियण जावें सांजलो हे ॥ दिशिपरिमाण विचार ॥ पालतां सुख पामीयें हे, लहियें जव निस्तार ॥ ज० ॥ २ ॥ नाम स्वयजूदेव छे हे, तिहां कौटुंबिक एक ॥ करे कृषि कर्मारंजनु हे, नही सतोष विवेक ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ निशाविरामे एकदा हे, ते चिते एम रात ॥ मनोवांछित न हुउं कदा हे, लाज ए कर्मनी वात ॥ ज० ॥ ४ ॥ गमन करु देशांतरें हे, लावु बहु धन कोडि ॥ जेम पूराये माहरा हे, सघला वाछित कोड ॥ ज० ॥ ५ ॥ करी सामग्री चालीयो हे, उत्तर पंथ अपार ॥ लक्ष्मीशीर्षकपुर गयो हे, करवा वणिज व्यापार ॥ ज० ॥ ६ ॥ तेह नयरमाहे वसी हे, करे व्यवसाय उपाय ॥ लाज हुउं निज कर्मने हे, अनुसारें तिण गाय ॥ ज० ॥ ७ ॥ पण तृप्तो नहिं जीवडो हे, देखी बहु धनवत ॥ परदेशी पूछे घणा हे, कुण कुण वेश मर्दत ॥ ज० ॥ ८ ॥ वात

तस दीजीयें रे, जे मुख कीर्त्ति बोले रे ॥ शुं दीधे होये साधुने रे, जे वातें ख्याति न खोले रे ॥ मो० ॥ १४ ॥ एम विष विच बांध्यां तेणें रे, कर्म कठिन अंतरायो रे ॥ वली देखी मुनि अन्यदा रे, दान देवा मति थायो रे ॥मो०॥१५॥ एम अनेक वारे तेणें रे, दीधुं सम्धुं दानो रे ॥ अंते समाधि मरी थयो रे, सुर सौधर्म विमानो रे ॥मो०॥१६॥ तिहांथी चविने तुं हुओ रे, इन्य नंदन गुणवंतो रे ॥ जेम दीधुं तेम पामीयो रे, वात करी मुनि संतो रे ॥ मो० ॥ १७ ॥ ते माटे मनशुद्धिथी रे, देवुं दान विवेकें रे ॥ पांचे दूषण माहिले रे, लाठित न करीयें एके रे ॥ मो० ॥ १८ ॥ दान शील तप ए जलां रे, मन शुद्धें होय लेखे रे ॥ जो आदरीयें जावथी रे, तो फल आपे विशेषें रे ॥ मो० ॥ १९ ॥ सुलस सुणी प्रतिबूझीयो रे, राय कहे यो शीखो रे ॥ जवजलनिधिनी तारिणी रे, लेइश हुं हवे दीखो रे ॥ मो० ॥ २० ॥ राय कहे हुं पण सही रे, लेइश व्रत तुऊ साथें रे ॥ जोड मिली शुगतें जली रे, जलुं कधुं जगनाथें रे ॥ मो० ॥ २१ ॥ गुरु वांदी घरे आवीयो रे, पुत्रने सोंपी राजो रे ॥ बेहु जणें संयम आदखुं रे, साख्यां आतमकाजो रे ॥ मो० ॥ २२ ॥ संवेग रसमां जीलता रे, तप तपता अति गाढा रे ॥ शुज जावनमां वर्त्तता रे, सफल करे रात दहाडा रे ॥ मो० ॥ २३ ॥ व्रतजावन जावे जली रे, समतावंत संतोषी रे ॥ मुनिमारग अवगाहतो रे, आतमगुणनो पोषी रे ॥ मो० ॥ २४ ॥ सुलस मुनि केवल लह्यु रे, घातिकर्म क्षय घाती रे ॥ डुखदायी ए अनादिनो रे, जाण्यो परिग्रह साथी रे ॥ मो० ॥ २५ ॥ कहे जविकजन आगलें रे, एह परिग्रह मूको रे ॥ धनमूर्छा उतारीने रे, जैनधर्ममां ढूको रे ॥ मो० ॥ ॥ २६ ॥ सुलस मुनि मुक्तें गया रे, अनंत चतुष्टयधारी रे ॥ सादि अनंत जागें रह्या रे, तेह नमो सुविचारी रे ॥ मो० ॥ २७ ॥ ए पंचम व्रत उपरें रे, सुण चक्रायुध राजा रे ॥ शांति प्रजुजी एम कहे रे, व्रत पाले शिवराजा रे ॥ मो० ॥ २८ ॥ ढठे खम्म चोत्रीशमी, रे, दाखें सुलस अवदात रे ॥ राम कहे व्रत पालतां रे, वाधे जग आख्याति रे ॥ मो० ॥२९॥

इति पंचमपरिग्रहपरिमाणव्रतोपरि सुलसकथानकं समाप्तम् ॥ इति पंच अणुव्रतकथानकानि, ॥५॥ सर्वगाथा ॥१२१५॥ श्लोक तथा गाथा ॥६४॥

॥ अथ षष्ठदिशिपरिमाण व्रतसंबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंच अणुव्रत इम कह्यां, हवे त्रण गुणव्रत तत ॥ चक्रायुध नरवर सुणो, कहे शांति जगवत ॥ १ ॥ दिशिपरिमाण कह्यु प्रथम, जोगोपजोगनु मान ॥ अनर्थदम्मविरमण वली, ए त्रण गुणव्रत जाण ॥ २ ॥ ऊर्ध्व अधो तीर्ज्ञी दिशें, अधिकगमन अनाजोग ॥ अतिचार त्रण ए कह्या, सुणु वीजा दोय योग ॥ ३ ॥ क्षेत्र वृद्धि चोथो कह्यो, स्मृतिनु अतर्ध्यान ॥ अतिचार ए टालीने, पालो दिशिपरिमाण ॥ ४ ॥ लोजोदधि सके लीयो, जेणें ग्रह्यु ए व्रत सार ॥ त्रस थावर बहु जीवनें, ते अजय तणो दातार ॥ ५ ॥ तसलोह गोलक समु, अविरतिपाप ए जीव ॥ सकल जीवप्रत्यें दहे, तेणें आरंज अतीव ॥ ६ ॥ यद्यपि सघले गमननी, शक्ति नथी इणे देह ॥ तो पण अवर निबंध तस, होवे नहीं संदेह ॥ ७ ॥ दिशिपरिमाण कस्या विना, पामे बहु उखराशि ॥ जेम स्वयंजू देवनी, नवि पहोती मन आश ॥ ८ ॥ चक्रायुध कहे स्वामीने, कोण स्वयंजू देव ॥ किहा थयो किणि परें उख लह्यु, ते जाखो जिनदेव ॥ ए ॥

॥ ढाल पांत्रीशमी ॥

॥ जव कलालण जर घडो हे ॥ ए देशी ॥ शांतिप्रजु कहे जलो हे, गगातट इणें नाम॥गाम सुदत सोहामणु हे, राजा तिहां अजिराम ॥१॥ जवियण जावें सांजलो हे ॥ दिशिपरिमाण विचार ॥ पालतां सुख पामीयें हे, लहियें जव निस्तार ॥ ज० ॥ २ ॥ नाम स्वयंजूदेव छे हे, तिहां कौटुंबिक एक ॥ करे कृषि कर्मारंजनु हे, नही संतोष विवेक ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ निशाविरामे एकदा हे, ते चिंते एम रात ॥ मनोवांछित न हुउं कवा हे, लाज ए कर्मनी वात ॥ ज० ॥ ४ ॥ गमन करु देशांतरें हे, लावु बहु धन कोडि ॥ जेम पूराये मादरा हे, सघला वांछित कोड ॥ ज० ॥ ५ ॥ करी सामग्री चालीयो हे, उत्तर पंथ अपार ॥ लक्ष्मीशीर्षकपुर गयो हे, करवा वणिज व्यापार ॥ ज० ॥ ६ ॥ तेह नयरमाहे वसी हे, करे व्यवसाय उपाय ॥ लाज हुउं निज कर्मने हे, अनुसारें तिण गय ॥ ज० ॥ ७ ॥ पण तृप्तो नहि जीवडो हे, देखी बहु धनवंत ॥ परदेशी पूछे घणा हे, कुण कुण देश महंत ॥ ज० ॥ ८ ॥ वात

सुणी तेहोने मुखे हे, नव नवी होंश धरंत ॥ प्रायें नव नव कौतुको हे, लोकीने लोक हवंत ॥ भ० ॥ ए ॥ यदुक्तं ॥ श्रूयमाणा गुणाश्चैव, राजान सेवितास्तथा ॥ सर्वं दूरस्थितं वस्तु, स्यात्प्रायोविस्मयावहम् ॥१॥ पूर्वढाल ॥ कोइक नगरें आवीने हे, पूछे वणिकनी पास ॥ किहांथी तुमें धन लावीया हे, ते परकाशो उल्लास ॥ भ० ॥ १० ॥ ते कहे देश चिलात माहे, बहु मेलीने आज ॥ अमो आव्या हर्षे इहां हे, सीधां वांछित काज ॥ भ० ॥ ११ ॥ काइक सबल लेइने हे, चाल्यो चिलातनी वाट ॥ साथ सहित थइ सावदो हे, छुटुं नवि लोजनो गाठ ॥ भ० ॥ १२ ॥ तप्तवालुका नामनी हे, विचि उल्लघी रे पथ ॥ हिम शीतल मारग चढयो हे, जिहां बहु छे उत्पथ ॥ भ० ॥ १३ ॥ तिहांथी गिरिमार्गे गयो हे, अटवी विषम अपार ॥ लोजवशें शुं नवि करे हे, प्राणी अंगीकार ॥ भ० ॥ १४ ॥ एणी परें जमतो एकदा हे, पहोतो देश चिलात ॥ राजविरोध तिहां घणो हे, म्लेछने अन्य सघात ॥ भ० ॥ १५ ॥ साथ चिलातनो जाणीने हे, लूटी लीयो सवि सार ॥ साथने पाछो वालीयो हे, निज मंदिर तिणवार ॥ भ० ॥ १६ ॥ नजर बचीने तेहोनी हे, नाठो स्वयंज्ञु वेव ॥ मन चिंते महोकम थयो हे, करशुं वांछित सेव ॥ भ० ॥ १७ ॥ करम सयोगें जइ पडयो हे, शबरशिशुने रे पास ॥ कर चरणों तेणे बांधियो हे, रुधिर विलब्यो रे तास ॥ भ० ॥ १८ ॥ नाख्यो जइ अटवी वचें हे, ऊकडी करी अग जोर ॥ मृत जाणी गृध्र पंखीयां हे, आया करे बहु सोर ॥ भ० ॥ १९ ॥ चचुप्रहारें चूंटिने हे, तस भक्षण करे तेह ॥ मन चिंत्युं मनमां रह्यं हे, अति लोजें गति एह ॥ भ० ॥ ॥ २० ॥ गृध्रने आव्या जाणीने हे, अलगाथी भिल्लबाल ॥ बाणे ते पंखी हणे हे, छुटुं छुटुं कर्म चमाल ॥ भ० ॥ २१ ॥ सांऊ पडये ते स्वयंज्ञुने हे, तेडी लावे रे गेह ॥ बध छोडी बेसारिने हे, जीमाडे ससनेह ॥ भ० ॥ २२ ॥ रात राखी स्वयंज्ञुने हे, मंदिरमांहे प्रजात ॥ वनमां नाखे बांधीने हे, छुटुं छुटुं कर्मनी वात ॥ भ० ॥ २३ ॥ एम दुःख सहेता एक दिनें हे, वनमां वाघण एक ॥ आवी भूखी अति घणु हे, नाठा सबरशिशु छेक ॥ भ[illegible] ४ ॥ वाघण लेइ स्वयंज्ञुने हे, चाली वन विकराल ॥ [illegible] णीयो हे, भूख्या जाणीने बाल ॥ भ०

॥ २५ ॥ बंधन छोडी तेहनां हे, मूकी ते मृतप्राय ॥ निज बालकने खोलवा हे, वाघण चाली वनमांय ॥ ज० ॥ २६ ॥ पूर्वे अवसर पामीने हे, नाठो स्वयंभु रे कंठ ॥ नाही नदीमां जइ मिल्यो हे, केइक साथनी पूठ ॥ ज० ॥ २७ ॥ अनुक्रमें मंदिर आवियो हे, इम चिंतवतो रे चित्त ॥ धनलोनें बहु धरा नम्यो हे, न गइ दारिद्र ईति ॥ ज० ॥ २८ ॥ अतिलोनी अति दुःख लहे हे, तेहमां नहि संदेह ॥ जेहवो गयो तेवो आवियो हे, जीव फरी तुं गेह ॥ ज० ॥ २९ ॥ धिक् तुऊने संसारमां हे, रहेतां कवण सवाद ॥ नित्य वढी निजवधुमां हे, तुऊ अवगुण अपवाद ॥ ज० ॥ ३० ॥ जाग्यसंयोगें मुनि मल्या हे, लीधो संयमजार ॥ मुनिवर मारग पालतो हे, लोन न राखें लगार ॥ ज० ॥ ३१ ॥ समता सूधी मन धरे हे, पाले शुद्धाचार ॥ साधु स्वयंभु पामिया हे, सुरपदवी अवतार ॥ ज० ॥ ३२ ॥ दिशिविरमणे जीवडो हे, लहे एणी परें बहु दुःख ॥ एम जाणी ए व्रत धरो हे, जेम लहो अविचल सुख ॥ ज० ॥ ३३ ॥ छठे खमें पांत्रीशमी हे, ढाल छठे व्रत जाण ॥ राम कहे गुणवंतना हे,करो नित्य वढी वखाण ॥ज०॥३४॥ इति षष्ठ दिशिविरमणव्रते स्वयंभुदेवकथानकम् ॥६॥सर्वगाथा ॥१३५८॥श्लोक तथा गाथा मली॥६५॥

॥ अथ सप्तम जोगोपजोगविरमणव्रत संबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ बारमांहे व्रत सातमुं, गुणव्रत बीजुं सार ॥ कहे प्रभु चक्रायुध प्रत्यें, जविक जीव उपकार ॥ १ ॥ जोजन ने वली कर्मथी,विहु जेदें कह्यु तेह ॥ जोग अने उपजोगनुं, मान करो गुणगेह ॥ २ ॥ अनंतकाय वली अनदयनुं, जोजन वर्जे जाणि ॥ तेह तणो लवलेशथी, सुण विस्तार सुजाण ॥ ३ ॥ अनक्ष्य तजे सघलुं तज्युं, तेहनां बावीश नाम ॥ ५पंचुंबरि ४चउ विगइ तेम, १०हिम वरजो गुणधाम ॥ ४ ॥ ११विष १२करगा सवि १३मृत्तिका, १४रयणीजोजन जाण ॥ १५बहुबीजा मत वावरो,तेम १६अनंत १७संधाण ॥ ५ ॥ १८घोलवडा १९वायंगणां, २०अणजाण्या फल फूल ॥ २१तुच्छफल वलि २२चलितरस, वर्जे होय सवि शूल ॥ ६ ॥ उत्तम गृही न वावरे, ए बावीश अनक्ष्य ॥ एकवीश गुण पूरो सही, कहियें तेह सुदक्ष ॥ ७ ॥ काय अनंत न वावरे, जिहां अनंतजीव

सुणी तेहोने मुखे हे, नव नवी होंश धरंत ॥ प्रायें नव नव वेषनो हे, लोनीने लोन द्वत ॥ न० ॥ ए ॥ यडुक्तं ॥ श्रूयमाणा शुनाशेषा, श जान सेवितास्तथा ॥ सर्वं दूरस्थितं वस्तु, स्यात्प्रायोविस्मयावहम् ॥१॥ पूर्वढाल ॥ कोइक नगरें आवीने हे, पूछे वणिकनी पास ॥ किहांथी तुमें धन लावीया हे, ते परकाशो उल्लास ॥ न० ॥ १० ॥ ते कहे देश चिलात मांहे, बहु मेलीने आज ॥ अमो आव्या हर्ष इहा हे, सीधां वांछित काज ॥ न० ॥ ११ ॥ काइक सबल लेइने हे, चाल्यो चिलातनी वाट ॥ साथ सहित थइ सावदो हे, जुर्ज नवि लोजनो गाठ ॥ न० ॥ १२ ॥ तप्तवालुका नामनी हे, विचि उल्लघी रे पंथ ॥ हिम शीतल मारग चढयो हे, जिहा बहु छे उत्पथ ॥ न० ॥ १३ ॥ तिहांथी गिरिमार्गें गयो हे, अटवी विषम अपार ॥ लोनवशें शु नवि करे हे, प्राणी अं गीकार ॥ न० ॥ १४ ॥ एणी परें नमतो एकदा हे, पहोतो देश चिला त ॥ राजविरोध तिहा घणो हे, म्लेछने अन्य सघात ॥ न० ॥ १५ ॥ साथ चिलातनो जाणीने हे, लूटी लीयो सवि सार ॥ साथने पाछो वा लीयो हे, निज मदिर तिणवार ॥ न० ॥ १६ ॥ नजर वधीने तेहोनी हे, नाठो स्वयंजु देव ॥ मन चिते महोकम थयो हे, करशु वाछित हेव ॥ न० ॥ १७ ॥ करम सयोगें जइ पडघो हे, शबरशिशुने रे पास ॥ कर चरणें तेणे बांधियो हे, रुधिर विलव्यो रे तास ॥ न० ॥ १८ ॥ नाख्यो जइ अटवी वचें हे, फकडी करी अग जोर ॥ मृत जाणी गृध्र पंखीयां हे, आया करे बहु सोर ॥ न० ॥ १९ ॥ चचुप्रहारें चूटिने हे, तस नहण करे तेह ॥ मन चिंत्युं मनमां रघुं हे, अति लोजें गति एह ॥ न० ॥ ॥ २० ॥ गृध्रने आव्या जाणीने हे, अलगाथी निक्षबाल ॥ बाणे ते पंखी हणे हे, जुर्ज जुर्ज कर्म चमाल ॥ न० ॥ २१ ॥ सांऊ पडघे ते स्वयंजुने हे, तेडी लावे रे गेह ॥ बध छोडी बेसारिने हे, जीमाडे ससनेह ॥ न० ॥ २२ ॥ रात राखी स्वयंजुने हे, मदिरमांहे प्रजात ॥ वनमां नाखे बाधीने हे, जुर्ज जुर्ज कर्मनी वात ॥ न० ॥ २३ ॥ एम कुःख सहेता एक दिनें हे, वनमा वाघण एक ॥ आवी चूखी अति घणु हे, नाठा शबरशिशु छेक ॥ न० ॥ २४ ॥ वाघण लेइ स्वयंजुने हे, चाली वन विकराल ॥ निजस्थानक ते आणीयो हे,चूख्यां आणीने बाल ॥ न०

॥२॥ इगाल कर्म वारीयें ने, वन्न गंफो दूर ॥ शकट नाटी स्फोट मदेलो, सुख होवे पूर ॥ क० ॥ ३ ॥ करम पंच गंफियें, पांच वणिज वार ॥ दांतनो व्यापार चूंफो, लाख दूरें मार ॥ क० ॥ ४ ॥ रस केश विष केरो, वणिज निरखरी ठाम ॥ पापनो परिहार कीजे, धर्म साथे मांम ॥ क० ॥ ५ ॥ यंत्रपीलण ने निर्लंछन, पापकारण जाण ॥ दाव अग्नि दान देतां, होय गुणनी हाणि ॥ क० ॥ ६ ॥ शोषवे जल जाणछुंथी, नीचमां शिरदार ॥ असतीपोषण वारीयें तो, पामीयें गति सार ॥ क० ॥ ७ ॥ एह पन्नर पंच नोगें, वीश अतिचार ॥ एहनो व्यासग मदेलो, कहियें वारं वार ॥ क० ॥ ८ ॥ नोग उपरें नावीयें, जितशत्रुनो दृष्टांत ॥ दाखीयें नित्यमंमिता, उपनोग उपर वात ॥ क० ॥ ए ॥ कहे प्रनु ए नरतमां, वसंतपत्तन नाम ॥ राजवी जितशत्रु रूडो, नामने परिणाम ॥ क० ॥ १० ॥ नाम सुबुद्धि मत्री साथें, अश्व जोवा काम ॥ चालीयो जितशत्रु राजा, अश्व खेल्यो ताम ॥ क० ॥ ११ ॥ वाग खेचे पवननी परें, दोडीया हय दोय ॥ राजा ने मत्रीश दोनु, नाखे जगल सोय ॥ क० ॥ १२ ॥ तीन दिवस वनमांहे, न मल्यु तेहने नीर ॥ केडेथी सवि सैन्य आव्यु, पुरमां आव्या वीर ॥ क० ॥ १३ ॥ नोजन कीधां नावतां, आकंठ नूख्ये जोर ॥ माय नहीं उडकार मांहे, एहवो जिम्यो घोर ॥ क० ॥ १४ ॥ रातमा आहार बाहिर, वमनमार्गें जाय ॥ पेटमांहे चूक उठी, आलस विलस थाय ॥क०॥१५॥ राय ते परलोकमांहे, गयो तेणी वार ॥ आर्तध्यानें ते मरीने, थयो व्यंतर सार ॥क०॥१६॥ नोगना परिमाण पाखे, एहवी गति होय ॥ गति मति खोइ वेसे,हसे सहु कोय ॥ क० ॥ १७ ॥ सांनलो परिनोग उपरें, कहे श्रीजिनशांति ॥ नित्य मंमिता नारि केरी, वात सुणो खाति ॥ क० ॥ १८ ॥ एहिज नगरमांहे हूउं, अग्निदेव विप्र ॥ वेदनो ते जाण सूधो, करम करे क्षिप्र ॥ क० ॥ १ए ॥ तेहनें घरे ठे सुनदा, नामथी वर नारि ॥ कंतनें अतिवालही, प्राणनो आधार ॥ क० ॥ २० ॥ तेह ब्रांनण लोकपूजित, वित्त पाम्यो नूरि ॥ अगनूषण नारीने एणें,कीधां आनदपूर ॥ क० ॥ २१ ॥ अगथी क्षण मात्र अलगा,न उतारे तेह ॥ कतजी तो नित्य वारे, पहेरमां तु एह ॥ क० ॥ २२ ॥ कोइ पर्वे पहेरीयें ए, चोरनु इहा जोर ॥ कंतने कहे

घात ॥ सिद्धथकी पण अनंत गुण, जेहमां जीवसंघात ॥ ८ ॥ यतः ॥ नृभ्योनैरयिकाः सुराश्च निखिला. पंचाक्षतिर्यग्गणो [illegible] ममी संख्यातिगा नाषिता ॥ तेभ्योजूजलवायव समधिका, प्रोक्ता [illegible] क्रम, सर्वेभ्य शिवगा अनंतगुणितास्तेभ्योप्यनंतांशगा ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ नाम कह्या बत्रीश तस, आरिजदेश प्रसिद्ध ॥ गुणव्रतबीजे धारीने, परिह रियें मति शुद्ध ॥ ए ॥ १सूरणकंद निवारीयें, २वज्रकंद तेम धार ॥ ३आईहरिद्रा परिहरो, ४शृंगवेर विनिवार ॥ १० ॥ ५आर्डकचूर ६शत वली, ७विरालिका दोय वेलि ॥ तिम ८कुवार एथोहर १०गलो, ११लशुन कंदने मेल ॥ ११ ॥ १२वशकरेल १३गज्जर वली, जे वली १४साजी थाय ॥ ते लवणकने वरजियें, एम वोले जिनराय ॥१२॥ लोढक१५पद्मि निकंद तेम, १६गिरिकर्णिका विचार ॥ १७किसलय पत्र १८खरिंशुका, १९थेगकंद अवधार ॥ १३ ॥ २० आईमोथ ए वीशमी, २१भ्रमर वृक्षनी गाल ॥ लोकप्रसिद्धा २२खिल्लहड, २३अमृतवेलीने टाल ॥१४॥ २४मूलकंद निवारीयें, चोवीशमो ए बोल ॥ जाणी जे नक्षण करे, ते नर सही निटोल ॥ १५ ॥ २५नूमिरुहा छत्रक कह्यां, वर्षाकाले होय ॥ नूमिफोट सहु को कहे, धोले वर्णे जोय ॥ १६ ॥ धान्य विदल जे अङ्कुरित, ते विरुहा कहेवाय ॥ शाक जाति २६टंक वाथुलो, खातां अवगुण थाय ॥१७॥ २७शूकवल्लि २८पल्यंक तेम, शाक नेद अवधार ॥ कोमल तिम वली ३०आंबली, अबद्ध अस्थि निर्धार ॥१८॥ ३१आलुक ३२पिंडालुक कह्या, कदंनेद तेम जाण ॥ ए बत्रीशे परिहरे, श्रावक तेह सुजाण ॥१९॥ १सचित्त २अचित्तमिश्र जाणीयें,तेम ३डपक्क ४अपक्क ॥ ५तुच्छोषधि नक्षण तथा,न करे मतिपरिपक्क ॥२०॥ अतिचार ए वारतां,ए होय निरतिचार ॥ कर्मथकी हवे सांनलो, ए व्रतनो विस्तार ॥ २१ ॥

॥ ढाल छत्रीशमी ॥

कूडा कानजी रे, महारी लोबडी तु जाव ॥ ए देशी ॥ कर्मथकी खर कर्म सघलां, दूर छम्हे जाण ॥ तास अतिचार पन्नर, नांखे श्रीजिन नाण ॥ १ ॥ कहे जिनशांतिजी रे ॥ नविजन नावथी तुं धार ॥ धरो मन खांते जी रे, कठिन कर्म दूरें मार ॥ ए आंकणी ॥ पन्नर कर्मादान वारो, कर्मनुं आदान ॥ आतमाने एम तारो, नजो श्री नगवान ॥ कहे०

जोडे आदि ॥७॥ यडुक्त ॥ कार्ये शुनेऽशुनेवापि प्रवृतिर्यै कृतादित ॥ ॥ नेयास्ते तस्य कर्त्तार, पश्चादप्युपचारत ॥ ३ ॥ पूर्वढाल ॥ उपनोग परिनोग वस्तुने, अधिक न मेले जाण ॥ अधिकें माग्यु आपता, होय अनर्थ गुणहाणि ॥ ए ॥ एह अतिचार पाचमो, वजो निरतीचार ॥ ए अष्टम व्रत पालता, लहियें नवनो पार ॥१०॥ एह उपर प्रनुजी कहे, समृद्धिदत्त सबंध ॥ चक्रायुध नृप सानले, नाव नक्ति अनुबंध ॥ ११ ॥

॥ ढाल साडत्रीशमी ॥

॥ जीरे जी ॥ ए देशी ॥ जीरे धातकी खम मकार, क्षेत्र नरत रैपुर नलु ॥ जीरे जी ॥ जीरे तिहा रिपुमर्दन राय,यश जगतमां कजलुं ॥ जीरे जी ॥१॥ जीरे समृद्धिदत्त सुविचार,कौटुंबिक तिण पुर वसे ॥जि०॥ जीरे कुटुंबतणो स्वामि, हर्षे हियामा उल्लसे ॥जी०॥२॥ जीरे एक दिन सूतो सेज,मनमांहे एम चितवे ॥जी०॥ जीरे जो हु थाउ नूप, नरत खम साधुं सवे ॥जी०॥३॥ जीरे साधतो जाउ वैताढ्य,हे विद्या नन्चर नली॥ जी० ॥ जीरे विद्यावल आकाश, तव क्रु हु मन रली ॥जी०॥४॥ जीरे एम चितवतो ताम,सेजथी उचो उछल्यो ॥ जी० ॥ जीरे पडतो ते नूपीठ, पडियो ग्रहमानवें कल्यो ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीरे पीडाणो तन जोर, करे आक्रंद अति घणो ॥जी०॥ जीरे स्वजन मिल्या तव धाइ, शु थयु तुम अमने नणो ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे रहिया मुफ मनमाहे, मनह मनोरथ माहरा ॥ जी० ॥ जीरे उठ ली मूढ गमार, पग नाज्या तें ताहरा ॥ जी० ॥७॥ जीरे घणु निर्नृछयो तास, केतेक दिने साजो थयो ॥ जी० ॥ जीरे पाले ते निजगेह, हिय डामा हर्षित हुउ ॥जी० ॥ ७ ॥ जीरे एक दिन लीधु तेण, खड्ग अमूलक उपतु ॥जी०॥ जीरे जे खड्गनु तेज,अवर नहि कोइ फीपतु ॥ जी० ॥ ए ॥ जीरे पुरमा पसरी वात, खड्ग तणी अतिही घणी ॥ जी० ॥ जीरे एक दिन पुरने नूप, सनामा बेठे सुणी ॥ जी० ॥ १० ॥ जीरे एक दिन खड्गरतन्न, प्रमादथकी तस विसस्यु ॥जी०॥ जीरे ग्रहअगण ते मूकि, माहे शयन जई कस्यु ॥जी०॥११॥ जीरे सांनस्यु तस मध्यराति, पण प्रमादें न आणियो ॥ जी० ॥ जीरे चिते कुण लेइ जाय, रह्यो निश्चिंतो प्राणीयो ॥ जी० ॥ १२ ॥ जीरे चोरें हस्यु तेणी राति, खड्ग लेइने ते चल्यो ॥ जी० ॥ जीरे शेठनो सुत ग्रही वहि, जाता नृप सेवक मिल्या ॥ जी० ॥

नहि शतारु,श्यो करो ठो सोर ॥ क० ॥२३॥ राग आणी तेह ताणी, करी न वोल्यो वोल ॥ कामिनीनो प्रेम गाढो, रंग रातो चोल ॥ क० ॥ २४ ॥ एक दिवस धाड आवी, वोलती मुख मार ॥ कर्मना संयोगहूती, विण ने घरवार ॥ क० ॥ २५ ॥ उतरे नहीं नारी केरा, नूषण तेणी वार ॥ ठेदिया तस अंग सुंदर, खड्ग तीखी धार ॥ क० ॥ २६ ॥ वलवले ते नारी कली, ऊरे लोहीधार ॥ चरण ठेदे नूमि ऊपर,पडी ते निरधार ॥क०॥ २७॥ आचस्या एम आवे उदयें, नहि को राखणहार ॥ राखो रास्तो मुखें नाखे, नित्यमंमिता नारि ॥ क० ॥ २८ ॥ कथ तेहनो नासी पेठो, कोइ नाव्यु पास ॥ रौड्ध्यानें ते मरिने, गई नरकावास ॥ क० ॥ २९ ॥ एम जे परिनोग उपरें, राखे माया नूरि ॥ तेहनी एह गति होवे, ठामो माया दूर ॥ क० ॥३०॥ ठठे खर्मे ए ठत्रीशमी,ढाल नाखी सार ॥ शांतिप्रभुनी देशनाथी, पामियें नवपार ॥ क० ॥ ३१ ॥ इति सप्तमनोगोपनोगो परि जितशत्रुनित्यमंमिताकथानके ॥ ३२ ॥सर्व०॥१४१० ॥श्लो०॥९६॥

॥ अथाष्टम अनर्थदंमविरमणव्रत संवध ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे त्रीजुं गुणव्रत प्रज्ञु, कहे शांति जिनराज ॥ अनर्थदंम विरमण करो, जिम सिऊे आतमकाज ॥ १ ॥ अपध्यान पहेलुं वली, पाप तणो उपदेश ॥ हिंस्रप्रदान त्रीजुं कह्युं, फुःखदायी सुविशेष ॥ २ ॥ तेम आच रण प्रमादनुं, चोथो नेद वखाण ॥ चार नेद एम नीपजे, श्रोता सुणो सु जाण ॥ ३ ॥ पंच अतिचार एहना, प्रथम कह्यो कदर्प ॥ रागें हास्या दिक वचन, बोले जे धरी दर्प ॥४॥ कौकुच्यपणुं निवारीयें, मुख भ्रू नेत्र विकार ॥ हास्य जनक विटनी परें, ते बीजो अवधार ॥ ५ ॥ ए प्रमा दथी नीपजे, मुखरपणुं तेम टाल ॥ असबद्धनाषी घणो, जेम तेम बोले आल ॥६॥ महाअनर्थनुं हेतु ए, पहेलो पाप उपदेश ॥ ए वर्जे जे मानवी,न लहे तेह किलेश ॥ ७ ॥ यडुक्तं ॥ बहूनां समवाये हि, सिद्धे कार्ये सम फलम् ॥ यदि कार्यविपत्ति स्या, न्मुखरस्तत्र बाध्यते ॥ १ ॥ अन्यच्च ॥ अविआणिय पन्नाव, परचित्तमलक्किकण जं नणियं ॥ किंपावयरतत्तोवि, डुक्क अन्नंपि लोअमि ॥ २ ॥ पूर्वढाल ॥ वली चतुर्थ अधिकरणनो, हल कुंगर शकटादि ॥ सक्क करी मेहले नहिं, तेम नवि

ताणियो ॥ जी० ॥ ३० ॥ जीरे मार पड्यो तस जोर, मुखदूती सुर एम कहे ॥ जी० ॥ जीरे कां दीधो उपदेश, जीनयकी जीव डुख लहे ॥ जी० ॥ ३१ ॥ जीरें चरण नमीने तेह, निज अपराध खमावतो ॥जी०॥ जीरे टलवलतो ते देखी, सुरें मूक्यो तेने जीवतो ॥ जी० ॥ ३२ ॥ जीरे समृद्धिदत्त मनमाहे, चिंते में मातुं कह्यु ॥ जी० ॥ जीरे अनर्थदंम एकेक, कीधाथी बहु डुख बह्यु ॥ जी० ॥ ३३ ॥ जीरे मन आव्यो वैराग्य, नावें तेणें संयम ग्रह्यो ॥जी०॥ जीरे पाले निरतिचार, सुर वैमानिक सुख लह्यु ॥ जी० ॥३४॥ जीरे पामी नर अवतार, समृद्धिदत्त संयम ग्रही ॥ जी० ॥ जीरे आगामिक नव सार, शिवलीला लहेशे सही ॥ जी० ॥ ३५ ॥ जीरे शांतिप्रनुयें ए वात, अष्टम व्रत उपर कही ॥ जी० ॥ जीरें व्रतपालण उजमाल, नवियण तुम्हें थाजो वही ॥ जी० ॥ ३६ ॥ जीरे छठे खंमें एह, ढाल कही साडत्रीशमी ॥जी०॥ जीरे रामप्रनुनी वाणी, नवियण मन साकर समी ॥जी०॥३७॥ इत्यष्टमानर्थदंमविरमणव्रतोपरिसमृद्धिदत्तकथानकम् ॥८॥ इति त्रीणि गुणव्रतकथानकानि ॥स०॥१४५८॥६९॥

॥ अथ नवम सामायिकव्रत संबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे शिक्षाव्रत जिन कहे,चउ संख्यायें सार ॥ सामायिक व्रत प्रथम तिहां, कहे प्रनु जगदाधार ॥ १ ॥ साम अनें सम तिम वली, सम्यग् एक विचार ॥ सामायिक एक अर्थ ए, नांख्यो सूत्र मकार ॥ २ ॥ नाम स्थापना इव्यथी, नाव निक्षेपा चार ॥ प्रनुजी नांखे तेहनो, अर्थ अनोपम सार ॥३॥ यत ॥ महुरपरिणाम साम,सम तुला सम्म खीर खंम जुई ॥ दोरे हारस्सतिइग,धम्मे आइ तु दवमि ॥ १ ॥ आउवमाइ परड,स्क मकरणं राग दोस मज्झब ॥ नाणाइतिग तसाइ, पोसण नावसामाइ ॥ २ ॥ पूर्वदोहा ॥ मन वच काया योगनो, डुष्टप्रयोग निवार ॥ अनवस्थान चोथो वली,स्मृतिविहीन तेम धार ॥४॥ अतिचार पंच एहना,तेम वली दोष बत्रीश ॥ सामायिकमां टालियें,तो लहियें सयल जगीश ॥ ५ ॥

॥ ढाल आडत्रीशमी ॥

॥ सामायिक द्वात्रिंशद्दोषस्वरूपं कथ्यते ॥ चोपाई ॥ आर्त्त रौड तणो परिहार,अतिथि सीम संयम आचार ॥ आणो समतानो परिणाम, सामायिक

१३ ॥ जीरे जोर कस्युं नृप लोक, निधन पमाड्यो चोरने ॥ जी० ॥ जीरे चोरें मरतां तेह, माख्यो शेठ किशोरने ॥जी० ॥ १४ ॥ जीरे रात्र ग्रही प्रजात, नेट कस्युं जइ रायने ॥जी०॥ जीरे समृद्धिदत्तने क्रोध, पाये नृप वोलाइने ॥जी०॥१५॥ जीरे केम कीधो ते अन्याय, सत्य एह ताहारे सही ॥ जी० ॥ जीरे वात कही समजाय, पण नृप कहे मेल्लुं नहिं ॥ जी० ॥ १६ ॥ जीरे रायें दम्यो तास, केम प्रमाद तें आदर्यो ॥ जी० ॥ जीरे निर्धन करि घर वार, मूक्यो ते शोकें नस्यो ॥ जी० ॥ १७ ॥ जीरे एक दिन तेण अयाण, विष वेचातु कोइने ॥ जी० ॥ जीरे दीधुं धनने लोन्न, नृपवैरीने जोइने ॥ जी० ॥ १८ ॥ जीरे लेइ तेणें चमाल, सरवरमा विष घातियु ॥ जी० ॥ जीरे ते पीधे केइ लोक, पुरमां दे मृत्यु पामियुं ॥ जी० ॥ १ए ॥ जीरे नृप जाणी ते वात, जल पीधे बहु नर मूआ॥जी०॥ जीरे रायें कढावी शुद्धि, कहो ए कुण कारण हुआं ॥जी०॥२०॥ जीरे कोइकथी लही वात, विषप्रयोगनी माहिली ॥ जी० ॥ जीरे रायें तेड्यो तेह, तुरत न कीधी काहेली ॥जी०॥२१॥ जीरे पूछे नर तेडावि,को पासें तें विष लियुं ॥जी०॥ जीरे शुं हवे जूठे थाय,समृद्धिदत्तें मुफने दियु ॥जी०॥ २२ ॥ जीरे रायें जाणी अनीति, समृद्धिदत्तने दंमियो ॥जी०॥ जीरे पुरमां तस अप्रीति, सहुको जाणे लंवियो ॥जी०॥२३॥ जीरे वली एक दिनने योग, कौटुंबिक कोइ आवियो ॥जी०॥ जीरे नूतन वत्स युग एक,ते सघातें लावीयो ॥ जी०॥२४॥ जीरे समृद्धिदत्त तेणि वार,पूछे तेहने प्रेमशुं ॥जी०॥ जीरे ए वत्स दमवा योग्य, दमता नथी कारण कि श्युं ॥ जी० ॥ २५ ॥ जीरे आर कशा ने घात, निर्दयपरिणामें करी ॥ जी० ॥ जीरे वत्स दमो सुविशेष, लघुवयमां कलट धरी ॥जी० ॥ २६ ॥ जीरे वात सुणी वृष दोय,नी उपर कोप्या घणुं ॥ जी० ॥ जीरें नाम थकी पण एह, प्राणीने डुःख अलखामणु ॥ जी० ॥ २७ ॥ जीरे तेणें जइ ते वत्स दोय, दमवा मांम्या निर्दयी ॥जी० ॥ जीरे ते सुकुमार शरीर, वेदन सहे वाणी नहिं ॥ जी० ॥ २८ ॥ जीरे तनु डुर्बल थइ तेह, एक दिन काल कस्यो बने ॥ जी० ॥ जीरे अकामनिर्जरायोग, थया व्यंतर सुर एक मनें ॥ जी० ॥ २ए ॥ जीरे ज्ञान तणो उपयोग, अहित कारक तस जाणीयो ॥ जी०॥ जीरे आवी तिहां सुर दोय, सबलो तेहने

दोष ॥ नक्ति हीण ए दशमो सही,श्रावक ए श्रादरवा नहि ॥१ए॥ इति सामा यिकद्वात्रिंशद्दोषस्वरूप ॥काव्य॥ बत्तीस दोसेहि विसुद्धि मेथ्थ,करिज्ज सामाइय मप्पमत्तो ॥ निच्च नरो जो निस दीस काल,वरिज्ज तं मुत्तिरमा क्कमेण ॥१॥ ॥ दोहो ॥ ए व्रत ऊपर जिन कहे, सिद्दश्रावक अवदात ॥ न विक जीव सहु सान्नले, करि निजमन एकांत ॥ १ ॥ ढाल ॥ स वाइ गुरु वाहणनी परें तारे ॥ ए देशी ॥ नरतें रमणीय इण नाम,पुर सुंदर शोन्ना ग्राम, बहु जंतुनो विश्राम ॥ १ ॥ जिणंदराय देशना देई तारे, नव जलनिधि पार उतारे ॥ जि० ॥ ए श्राकणी ॥ तिहां हेमांगद अनि धान, राजा बहु बुद्धिनिधान, सुंदर तन शोन्ने वान ॥ जि० ॥ २ ॥ हे मश्री तेहने राणी, रूपें जींती इंद्राणी, वली लावण्यगुणमणि खाणी ॥ जि० ॥ ३ ॥ श्रावक जिनदेव विचारी, जिनदासी तस घर नारी, शी लादि गुणे करि सारी ॥ जि० ॥ ४ ॥ सिद्द नामें हो अंगज सोहे, रूपें साजन मन मोहे, कहियें ते न रहे कोहें ॥ जि० ॥ ५ ॥ जीवाऽजीवा दिक जाण, समजु सवलो गुणखाण, मावित्रने जीवनप्राण ॥ जि० ॥ ६ ॥ विहु टंक श्रावश्यककारी, सूधो सामायिकधारी, रूडो श्रावक श्राचारी ॥ जि० ॥ ७ ॥ इक दिन सारथ सघातें,चाल्यो व्यापारने हेतें, सिद्द लइ करियाणु खतें ॥ जि० ॥ ८ ॥ साथ उतख्यो अटवीमांहे, तटिनीतट जोइ उत्साहें, लीधु सामायिक सिद्द शाहें ॥ जि० ॥ ए ॥ सघलो आरंन्न निवारी, मुनिनी परें समताधारी, करि मन वच तन एक तारी ॥ जि० ॥ १० ॥ तटिनी जल शीतल वासें, बहु कडे मशकनी राशें, कख्यो धूम बहु तव त्रासें ॥ जि० ॥ ११ ॥ रह्यो सिद्द अचल गुण गेह, सहे मशकपरीसह देह, न चले मेरु जिम तेह ॥ जि० ॥ १२ ॥ बहु मशक समूहें विटाणो, श्रावी मलियो तव टाणो, ध्यान दीपक नवि उंलवाणो ॥ जि० ॥१३॥ त्वच न्नेदीने मुख माहे घाली,पीये रुधिर ते मश कनी श्राली, सिद्दें काया न सन्नाली ॥ जि० ॥ १४ ॥ जाणे ए पुजल सार, व्रत पालीजें निर्धार, ए विणु नम्यो बहु संसार ॥ जि० ॥ १५ ॥ कोइनो नहिं तुं तुज कोइ, मत रहे तन उपर मोही, रखे जातो ए व्रत खोइ ॥ जि० ॥ १६ ॥ निश्चल परिणामें रहियो, परिसह उत्कट तेणें सहियो, एहवो सिद्दो जन कहियो ॥ जि० ॥ १७ ॥ श्राव्यो दक्षिण

करवो अभिराम ॥१॥ तेह तणा जे दोष बत्रीश, ते पभणिशुं मन धरीय जगीश ॥ ते सांजली श्रावक खप करे, लीलें जिम जवसायर तरे ॥२॥ वस्त्रें बांहे वाली पालठी,प्रथम दोष ए जुगतो नथी ॥ आघु पाछु आसन थाय,बीजु ए दूषण कहेवाय॥३॥ दृष्टि न राखे एके दिशें,जोवे चपलपणे चिहु दिशें ॥ त्रीजो दोष सामायिक जाण, व्रतधर परिहर हियडे आण ॥४॥ अल्प बहुल लागे सावद्य,चोथे दोष निवारो कद्य ॥ पूठें जींत पाटी ने थंज,पचम दोष जे ले अवष्टंज॥ ५॥ अति सकोडे अग उवग,ठठो दोष करे व्रतजग ॥ आलस मोडे ए सातमो, जाजे करडक ए आठमो ॥ ६ ॥ नवमो मल उतारे जेह, मीलतणो व्रत दूपे तेह ॥ खण खणे ए दशमो जाण, टालता व्रत कहे प्रमाण ॥ ७ ॥ अगे विश्रामण कारवे, दोष अग्यारमे व्रत हारवे ॥ बारम दोष जे निद्रा करे, बार दोष कायना परिहरे ॥ ८ ॥ वचन तणा दश दोष पिठाण, परिहर चतुरपणु चित्त आण ॥ बोलेकुवचन पहेलो दोष, लाग्यो जाण म धर संतोष ॥९॥ बीजो म जणीश सहसात्कार, आर्त्तस्वर हुवे त्रीजें वार ॥ आपण ठर्वे जे बोलीयें, चोथो दोष विषे तो लीये ॥ १० ॥ जणता सूत्र म कर संक्षेप, पंचम दोष तणो निक्षेप ॥ कलह म मभिश जा व्रत सार, ठठा दोष तणो परिहार ॥ ११ ॥ विकथा सप्तम दोष निवार, पर उपहास आठमो विचार ॥ सपद पद विणु वतावलो, म जणो नवम दोषथी टलो ॥१२॥ जाव आव एम कहियें नहिं, दशम दोष परहरियें सही ॥ वचन तणा ए जाणी दोष, टाली करो सामायिक पोष ॥ १३ ॥ मनना दोष हवे सांजली, परिहर जवियण दूरें रली ॥ प्रथम दोष मन नहिय विवेक, नहु जाणो जणो अतिरेक ॥ १४ ॥ जस कीर्त्ति वांछे अति घणी, करे सामायिक जे तेह जणी ॥ बीजो दोष ए आगम कह्यो, जवियण जाणीने नवि ग्रह्यो ॥ १५ ॥ हियडे वाठे धननो लाह, त्रीजो दोष घणो गुण दाह ॥ चोथो दोष जे करे गर्व, एहथी निर्गमियु फल सर्व ॥१६॥ करे सामायिक जे बिहतो, बारे दोष सुगुण ईहतो ॥ पुत्र धनादिक तणु निदान, करतां ठठो दोष निदान ॥१७॥ सामायिक फल विधि जे कही, शुं जाणु होशे वा नहिं ॥ एम सशय हियडे आणियें, सप्तम दोषने श्रुति जाणीयें ॥ १८ ॥ अष्टम करे मन आणी रोष, अविनय करतां नवमो

॥ ढाल उंगणचालीशमी ॥

॥ रहो रहो रे यादव दो घडीया ॥ ए देशी ॥ सुणो सुणो रे प्राणी शीखडीयां ॥सु०॥ अक्षय निधि जिनधर्म ए पामी,काहेकु मागत नीखडियां ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ शखपुरें गगदत्त व्यवहारी, वास वसे शुन्न चोघडीयां ॥ सु० ॥ २ ॥ जिनवर धर्म करे मन शुद्धें, जाणे ए चिंतामणि जडिया ॥ सु० ॥ ३ ॥ देशावकाशिक एक दिन घरनु, लीधु न निसरु ओरडीयां ॥ सु० ॥ ४ ॥ साथ वहु आव्यो जाणीने, मित्र आवी कहे आरडिया ॥सु०॥५॥ सार्थे चलो वहु लान्न होवेगो,कहे गगदत्त मुऊ आखडियां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मित्र कहे व्रत काले करेजो, लान्न वहु आज सांपडियां ॥ सु० ॥ ७ ॥ कहे गगदत्त ए लान्न न लेखे, व्रत नवि ठोडुं पा घडियां ॥ सु० ॥ ८ ॥ धन पुजल वहु वेर मिलेगो, धर्म करो दिन रातडिया ॥सु०॥ए॥ आज अठे व्रत देशावकाशिक,मूको विकथा वातडियां ॥सु०॥१०॥ मित्र लही तस निश्चय निज घर,आवे उत्साह विणु अडवडियां ॥सु०॥११॥ हुउं प्रन्नातें निश्चय पूरो,करि आवश्यक पडवडियां ॥ सु० ॥ १२ ॥ साथमें आवे वणिज करणकु, करियाणा वहु ढग पडिया ॥ सु० ॥ १३ ॥ लिये लाखोके माल मुलावी, वनमें लान्न वहुत जडियां ॥ सु० ॥ १४ ॥ चिंते सवि ए धर्म महातम, दरिद्र उडी जाये ज्युं चिडिया ॥ सु० ॥ १५ ॥ लान्नके धनसें चैत्यन्नक्ति ठर, साहामीवत्स लसें जुडिया ॥ सु० ॥ १६ ॥ वहु दिन श्रावक व्रत आराधी, चाखत अनुन्नव सेलडिया ॥ सु० ॥ १७ ॥ अतें अणसण करि सुरलोकें, विलसे अप्सर गोरडिया ॥ सु० ॥ १८ ॥ ॥ एक अवतार करी लहि केवल, चढशे शिवपुर पावडियां ॥सु०॥१ए॥ दशमा व्रत उपर ए जिनवर,कह्यो संबंध रसवेडिलयां॥सु०॥२०॥ उंगणचालीशमी खम्ड ठठे,ढाल सिराडे ए चढियां ॥सु०॥२१॥ राम कहे व्रतपालक नरकु, नवनिधि आवी रहे खडिया॥सु० ॥ २२ ॥ इति दशम देशावकाशिकव्रते गगदत्तकथानकम् ॥१०॥१५३८॥

॥ अथैकादश पौषधव्रतसंबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजु शिक्षाव्रत हवे, कहे जिनत्रिभुवन नाण ॥ व्रतमांहे अग्यारमुं, पौषधव्रत मन आण ॥ १ ॥ पुष्ट करे जे धर्मने, आवरियें तिथि पर्व ॥

दिशि वात, जमी गयो मशकनो व्रात, सूणी आव्या तस गात ॥ जि० ॥ १७ ॥ उपसर्ग टल्यो थइ शाता, पारे सामायिक गुणवंता, एम काम पडे रह्यो तत ॥ जि० ॥ १९ ॥ अनुक्रमें देशांतरें जाय, बहु लाभिनो लाभ उपाय, घर आव्यो सिह कमाय ॥ जि० ॥२०॥ साते क्षेत्रे वित्तने वावे, लखमी सुकृतारथ थावे, देशमां बहुलो यश पावे ॥ जि० ॥ २१ ॥ गृहिधर्म रूडी परें पाली, अंते अणसण संभाली, गयो सुरलोकें रुचि शाली ॥ जि० ॥ २२ ॥ लहेशे एक नर अवतार, आदरशे संयमभार, होशे सिद्धिवधू भरतार ॥ जि० ॥२३॥ एम ए व्रत पाल्यु सार,आपे भव जलनो पार,जव कुण तव ए गुण धार ॥ जि० ॥ २४ ॥ ढेआडत्रीसमी ढाल,कहे रामविजय उजमाल,व्रतवंतने नमो त्रण काल ॥ जि० ॥ २५ ॥ इति नवमसामायिकव्रते सिहश्रावक कथानकम् ॥ ९ ॥ १५०७ ॥ ३१ ॥

॥ अथ दशम देशावकाशिकव्रतसंबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ बीजु शिक्षाव्रत हवे, व्रत दशमु तेम जाण ॥ शांति प्रभुजी एम कहे, भवियणनें हित आण ॥ १ ॥ जावजीव दिशिविरतिनु, जे व्रत छहु सार ॥ तेमांहे प्रतिदिन धारवो, संक्षेपें सुविचार ॥ २ ॥ सर्व व्रत संक्षेपथी,अथवा ए व्रत जाण ॥ मुहूर्त्त दिवस वली पक्षता,ए व्रतनु परिमाण ॥ ३ ॥ यडुक्त ॥ एग मुहुत्त दिवस, राई पंचाहमेव पक्खे वा ॥ वयमिह धारेह दढ, जावइ यं उच्छहे काल ॥ १ ॥ पूर्वदोहा ॥ एणें सघला व्रत नियमनो, प्रतिदिन करे संक्षेप ॥ चउद नियम संभारतां, संक्षेपतां निर्लेप ॥ ४ ॥ अतएव ॥ सच्चित्त दब विगई, वाहण तंबोल वत्थ कुसु मेसु ॥ वाणह सयण विलेवण, बंभ दिसि न्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ पंच अतिचार एहना, प्रथमानयन प्रयोग ॥ प्रेष्यप्रयोग बीजो वली, शब्दानुपाती तिम योग ॥ ५ ॥ रूपानुपाती चोथो कह्यो, पंचम पुजल क्षेप ॥ दशमा व्रतमांहे कहे, श्री जिनवर गतलेप ॥ ६ ॥ गंगदत्त श्रा वकपरें, पालीजें निर्धार ॥ परंपरायें ए व्रत सही, शिवसुखनुं दातार ॥ ७ ॥ कहे चक्रायुध कुण हिनो, गंगदत्त गुणवंत ॥ पर्षद बारे आगलें, भांखे श्री भगवंत ॥ ८ ॥

॥ ढाल उंगणचालीशमी ॥

॥ रहो रहो रे यादव दो घडीयां ॥ ए देशी ॥ सुणो सुणो रे प्राणी शीखडीयां ॥सु०॥ अक्षय निधि जिनधर्म ए पामी,काढेकु मागत नीखडिया ॥ सु० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ शखपुरे गगदत्त व्यवहारी, वास वसे शुन चोघडीया ॥ सु० ॥ २ ॥ जिनवर धर्म करे मन शुद्धे, जाणे ए चिंतामणि जडिया ॥ सु० ॥ ३ ॥ देशावकाशिक एक दिन घरनु, लीधु न निसरु शेरडीयां ॥ सु० ॥ ४ ॥ साथ बहु आव्यो जाणीने, मित्र आवी कहे आरडियां ॥सु०॥५॥ साथें चलो बहु लान होवेगो,कहे गगदत्त मुऊ आखडियां ॥ सु० ॥ ६ ॥ मित्र कहे व्रत काले करेजो, लान बहु आज सांपडियां ॥ सु० ॥ ७ ॥ कहे गगदत्त ए लान न लेखे, व्रत नवि ठोडुं पा घडियां ॥ सु० ॥ ८ ॥ धन पुजल बहु वेर मिलेगो, धर्म करो दिन रातडियां ॥सु०॥ए॥ आज अठे व्रत देशावकाशिक,मूको विकथा वातडियां ॥सु०॥१०॥ मित्र लही तस निश्चय निज घर,आवे उत्साह विणु अडवडियां ॥सु०॥११॥ हुउ प्रनातें निश्चय पूरो,करि आवश्यक पडवडियां ॥ सु० ॥ १२ ॥ साथमें आवे वणिज करणकु, करियाणा बहु ढग पडिया ॥ सु० ॥ १३ ॥ लिये लाखोके माल मुलावी, उनमें लान बहुत जडियां ॥ सु० ॥ १४ ॥ चिते सवि ए धर्म महातम, दरिद्र उडी जाये ज्युं चिडिया ॥ सु० ॥ १५ ॥ लानके धनसे चैत्यनक्ति उर, साहामीवत्सल सें ज्युडिया ॥ सु० ॥ १६ ॥ बहु दिन श्रावक व्रत आराधी, चाखत अनुनव सेलडिया ॥ सु० ॥ १७ ॥ अतें अणसण करि सुरलोकें, विलसे अप्सर गोरडिया ॥ सु० ॥ १८ ॥ ॥ एक अवतार करी लहि केवल, चडशे शिवपुर पावडियां ॥सु०॥१ए॥ दशमा व्रत उपर ए जिनवर,कह्यो संबंध रसवेडिलयां॥सु०॥२०॥ उंगणचालीशमी खम्ड ठ्ठे,ढाल सिराडे ए चडियां ॥सु०॥२१॥ राम कहे व्रतपालक नरकु, नवनिधि आवी रहे खडियां॥सु० ॥ २२ ॥ इति दशम देशावकाशिकव्रते गगदत्तकथानकम् ॥१०॥१५३८॥

॥ अथैकादश पौषधव्रतसंबंध ॥

॥ दोहा ॥

॥ त्रीजु शिक्षाव्रत हवे, कहे जिनत्रिजुवन नाण ॥ व्रतमांहे अग्यारसु, पौषधव्रत मन आण ॥ १ ॥ पुष्ट करे जे धर्मने, आदरियें तिथि पर्व ॥

ते पोषधआराधता, लहियें वांछित सर्व ॥२॥ प्रथम पोषध आहारनो, देश सर्व दोय नेद ॥ चोविहार निवी प्रमुख,तपथी कह्यो गतवेद ॥३॥ बीजो देह सत्कारनो, सर्वदेशथी जोय ॥ ब्रह्मचर्य पौषध तिमज, अव्यापार तिम होय ॥ ४ ॥ पंच अतिचार एहना, वर्जो चतुर सुजाण ॥ नाम कहे प्रभु तेहना,शांतिनाथ नगवान ॥ ५ ॥ यत्सूत्र ॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय सिक्का सथारए ॥ १ ॥ अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय सिक्का सथारए ॥ २॥ अप्पडिलेहिय डुप्पडिलेहिय उच्चारपासवणनूमी ॥ ३ ॥ अप्पमज्जिय डुप्पमज्जिय उच्चारपासवणनूमी ॥ ४ ॥ पोसहोववासस्स सम्म अणणु पालणया ॥ ५ ॥ पूर्वदोहा ॥ ए व्रत पालता नलां, सफल होय दिन रात ॥ श्रावक साधु जेहवो,निर्मल गुण अवदात ॥ ६ ॥ यडुक्त ॥ सामायिय पोसहस, ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो. ससारफलहेक ॥ १ ॥ ए व्रत उपरें जिन कहे, जिनचइनो दृष्टांत ॥ चक्रायुध नृप सानले, नाव धरी एकात ॥ ७ ॥

॥ ढाल चालीशमी ॥

॥ मेरे जीउमें लागी आशकी ॥ ए देशी ॥ सुप्रतिष्ठपुरमां हुवो, नृप अनतवीर्य वलवान रे ॥ रूपवती राणी मनमोहन, कमनीय कंत सुजाण रे ॥ १ ॥ नवि जीउमें व्रत गुण धारियें ॥ जेम सफल फले सवि आश रे ॥ एकमनां ए व्रत पालतां, होय आनद लील विलास रे ॥ न० ॥ २ ॥ श्रावक जिनचइ नामथी, तिहां निवसे निश्चलधर्म रे ॥ सुदर आकृति सुदरी नामें, करे गेहिनी शुन्न कर्म रे ॥ न० ॥ ३ ॥ जिनमत शुद्ध जाणे नलो, जीवाऽजीवादिक तत्त्व रे ॥ समकित मूल श्रावक व्रत पाले, टाले मिथ्यामति तंत रे ॥ न० ॥४॥ एक दिन पोषध लेइ बेगे, पौषधशालामझार रे ॥ सावद्ययोग पच्चस्काण करीने, एकमने निरतिचार रे ॥ न० ॥५॥ इण अवसर पहेले सुरलोकें, हरि निरखे जिन चइ रे ॥ अहो अहो धन धन एह महामति, एम प्रशसे इंद रे ॥ न० ॥ ६ ॥ पूछे तब सुर सेवक स्वामी,श्यो गुण दीठो तास रे ॥ इंड कहे पोसह व्रत एहनो, अविचल लीलविलास रे ॥ न० ॥७॥ एक सुर मिथ्यावचन मिथ्यात्वी, करवा आव्यो ताम रे ॥ श्रावक जिनचइपासें आवी, वहेन थइ कहे आम रे ॥ न० ॥ ८ ॥ सूरज उदय अकालें कीधो, सुण बांधव

गुणवत रे ॥ नोजन हुं लावी तुम कारण, पारणुं करो सत्यवत रे ॥ रे ॥ न० ॥ ए ॥ वचन सुणी मनमांहे विचारी, केम एम हुवो प्रनात रे ॥ धर्म ध्यानादिक करणीने, अनुसारें हजी रात रे ॥ न० ॥ १० ॥ कारण काइक ए सनवीयें,कौतुकवाली वात रे ॥ कोइक देवतणी ए लीला, रखे चलतो तिल मात रे ॥ न० ॥ ११ ॥ मौन लही रहियो मनमांहे, धरि अरिहंतनु ध्यान रे ॥ जीव रखे व्रत कर तु काचु, एम नांख्युं श्री नगवान रे ॥ न० ॥ १२ ॥ मित्र थइ कर लेइ विलेपन, वली सुगधां फूल रे ॥ आवी कन्नो जिनचंद आगें, ग्रहो ए मित्र अमूल रे ॥ न० ॥ १३ ॥ ॥ तुं मुऊ जीवन हुं तुऊ वहालो, लाव्यो नक्तिने काज रे ॥ अंगीकार करो मुऊ बांधव, जेम थाउं सुखीया आज रे ॥ न० ॥ १४ ॥ जिनचंद चित्तमां एम विमासे, न घटे ए मुऊ फास रे ॥ गंध विलेपन कुसुम ए लेता, होय पोषध व्रतनाश रे ॥ न० ॥ १५ ॥ रही अणबोल्यो ध्यानें विचारे, रखे धरे पुजलआश रे ॥ मायाजालें म पड मनपंखी, का थाय तृष्णादास रे ॥ न० ॥ १६ ॥ देवें जाण्युं चित्त नवि चलीयुं, करी तव पुरुषनु रूप रे ॥ तस कामिनी लइ जातो देखे, जिनचंद एह स्वरूप रे ॥ न० ॥ १७ ॥ निजनारीनी विडंबन देखे, मूकावो प्राणनाथ रे ॥ पण ते ध्यानथकी नवि चूके,समरे एक जगनाथ रे ॥न०॥१७॥ एम अनुकूलथकी नवि चलियो, तव सुर करे विकराल रे ॥ सिंह पिशाचादिक अति विरुआं, रूप घणा ततकाल रे ॥ ॥ न० ॥ १ए ॥ ते तिल मात्र न क्षोन्यो मनमां,देखी नयकर रूप रे ॥ देहनो नेह न राखे हृदयें, स्मरे एक शुद्ध स्वरूप रे ॥ न० ॥ २० ॥ निश्चल जाणी प्रगट थइ ते,सुर नामे निज शीश रे ॥ जय जय तुं पहेले सुरलोकें, स्तवियो अमारे ईश रे ॥ न० ॥ २१ ॥ धन्य तुम्हो कृतपुण्य तुम्हारु, जीवित जन्म प्रमाण रे ॥ कहो मुऊ लायक काइक कारज, शिर वहुं तुमची आण रे ॥ न० ॥ २२ ॥ कहे जिनचंद निरीह सुमतिधर, नहि मुऊ लालच कोय रे ॥ जो कहो बो तो तिम करो जिम, शासन उन्नति होय रे ॥ न० ॥ २३ ॥ अंगीकार करीने सुरवर, आठ दिवस लगी सार रे ॥ अठाइमहोत्सव जिनमंदिर, मांमे नक्ति उदार रे ॥ न० ॥ २४ ॥ धूप कुसुम वर गंध विलेपन, करे जिननक्ति रसाल रे ॥ पूजा सत्तर प्रकारनी विरची, नाटक

नक्ति विशाल रे ॥न०॥२५॥ प्रनु आगल नाचे ते सुरवर, पेइ पेइ छंद अखंड रे ॥ तार तार करुणारससागर, जगतवत्सल जयवत रे ॥ न० ॥२६॥ तुहिज तत्त्व परमहितकारी, परमनक्तप्रतिपाल रे ॥ देव निरंजन निरुपाधिक गुण, जय जय देव दयाल रे ॥ न० ॥२७॥ लोक सहू देखी चित्त हरख्या, धन जिनशासन एह रे ॥ जिहां एहवा प्रनुने दरबारें, नाचे देव सनेह रे ॥न०॥२८॥ देव कहे चिंतामणि सुलहो, कल्पद्रुम सुरकुंन रे ॥ पण ए जैनधर्म अति डुलहो, लही सेवो निर्दंन रे ॥ न० ॥ २९ ॥ थे ए सुर शिवपद सुख शाश्वत, सुणि एम केइ नविवृंद रे ॥ बूज्या धर्म नजी जिनवरनो, आणी मन आनद रे ॥न०॥ ३० ॥ करी प्रनावना शासन केरी, सुर पहोतो निज गम रे ॥ इहने कहे जे तुमो परकाश्यो, ते नर गुणमणि धाम रे ॥न०॥३१॥ इणी परें पोषध व्रत आराधो, नवि चालीजें चित्त रे ॥ तो सुर शिवपद सुख पामीजें, कहे जगगुरु सुपवित्त रे ॥न०॥३२॥ छठे खमें चालीशमी ढालें, पोषधव्रत अधिकार रे ॥ रामविजय कहे एम व्रत निर्मल, पालतां नवनिस्तार रे ॥न०॥३३॥ इति एकादश पोषधव्रते जिनचंद कथानकम् ॥११॥ सर्वगाथा ॥१५७८॥ श्लोक तथागाथा मली ॥ ७६ ॥

॥ अथ द्वादश अतिथिसंविनागव्रत संबध ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अतिथि संविनागनु, द्वादश व्रत अनिराम ॥ शिक्षाव्रत चोथुं सही, कहे शांति नगवान ॥१॥ लौकिक तिथि पर्वादिनो, जिणें वरज्यो व्यवहार ॥ नोजन कालें आवियो, अतिथि कहियें सार ॥२॥ यक्त च ॥ तिथि पर्वोत्सवा सर्वे, त्यक्ता येन महात्मना ॥ अतिथि तं विजानीयाच्छेषमन्यागतं विडु ॥१॥ पूर्वदोहा ॥ साधु अतिथि कह्यो श्राद्धने, तस निरवद्य आहार ॥ संविनाग कीजें नलो, इण व्रतें लहे नवपार ॥३॥ प्रथम यतिने आपीने, पछें वावरे आप ॥ मुनि न मले तो पण करे, दिशालोक गतपाप ॥ ४ ॥ यडुक्तं ॥ पढम जईण दाउण, अप्पणा पणमिउण पारेई ॥ असइ असुविहिआण, नुजेइ य कय दिसालोउ ॥ १ ॥ अन्यत्राप्युक्त ॥ अर्हद्भ्य प्रथम निवेद्य सकलं सत्साधुवर्गाय च, प्राप्ताय प्रविनागत सुविधिया दत्वा यथाशकित ॥ देशायातसधर्मचारिनिरल, सार्द्धं च काले स्वयं, नुंजीतेति सुनाजन गृहवतां पुण्यं जिनैर्नावितम् ॥ २ ॥ पूर्वदोहा ॥ पंच अतिचार

एहना, सचित्त उपरें निक्षेप ॥ सचित्तें तिम ढाके वली, बीजो कहे गत लेप ॥५॥ निजने अणदेवाजणी, बुर्फें कहे परकीय ॥ मत्सर चोथो जिन कहे, कालातिक्रम होय ॥ ६ ॥ शूरपाल परें पालिये, ए व्रत निरतिचार ॥ पूछे चक्रायुध तदा,कहे जिन जगदाधार ॥ ७ ॥

॥ ढाल एकतालीशमी ॥

॥ अरज अरज सुणोने रूडा राजीया होजी ॥ ए देशी ॥ कहे जिन कहे जिन एहिज जरतमा होजी, नयर कचनपुर नाम ॥ तिहा नृप तिहा नृप जितरिपु नामथी होजी, गिरुउ गुण अजिराम ॥ १ ॥ सुगुण सुगुण सनेहा सुणो वातडी होजी, कहे प्रज्ञु शाति दयाल ॥ देता देतां हो दान सुपात्रने होजी, सवि सुख लहियें रसाल ॥ सु० ॥ २ ॥ ए आकणी ॥ तस घर तस घर राणी सुलोचना होजी, रमणी रूपजंमार ॥ तिहां एक तिहां एक महिपाल नामथी होजी, क्षत्रिय निवसे उदार ॥ सु० ॥ ३ ॥ करे नित्य करे नित्य कर्पण कर्मने होजी, तस घर धारिणी नार ॥ तेहनी तेहनी हो कुखना उपन्या होजी, अगज छे तस चार ॥ सु० ॥ ४ ॥ पहेलो हो पहेलो हो धीरपाल नामथी होजी, पृथ्वी पाल सुजाण ॥ देवपाल देवपाल त्रीजो हो जाणीयें होजी, शूरपाल चोथो वखाण ॥सु०॥५॥ अगज अंगज ए सोहामणा होजी,चारे चतुर विनीत ॥ रूपें रूपे हो अति रलियामणा हो जी, शैशवजाव व्यतीत ॥ सु० ॥ ६ ॥ यौवन यौवन वय परणाविया होजी, चारेने वर नारी ॥ पहेली पहेलीहो चइमती सती होजी,कीर्त्तिमती सुविचार ॥सु०॥७॥ त्रीजी त्रीजी हो शातिमती जणी होजी, शीलमती गुणगेह ॥ निजघर निजघर काम करे जला होजी, धरती अविहड नेह ॥ सु० ॥ ८ ॥ एकदिन एकदिन वर्पाकालमा होजी, चारे महिपाल नद ॥ पाछली पाछली रयणीयें उठीने हो जी, क्षेत्रें गया सुखकद ॥ सु० ॥ ए ॥ पूठल पूठलथी तस कामिनी होजी, जात लेइने हो चार ॥ चाली चाली हो चतुरा चमकती होजी, क्षेत्र जणी सुविचार ॥ सु० ॥ १० ॥ मारग मारगमाहे उन्नह्यो होजी, चिहुं दिशियी जलधार ॥ गडगड गडगड घन गाजे घणु होजी, वरसे अखंमित धार ॥ सु० ॥ ११ ॥ पवन पवन ऊकोले अति घणो होजी, ऊडी मामी रे आसार ॥ कचुक कचुक चीर जीना घणु हो

जी, तब ते चतुरा हो चार ॥ सु० ॥ १२ ॥ वडतलें वडतलें आवी ऊनी रही होजी, घहेरी जेहनी हो गाय ॥ टप टप जल बिंदु चूवे होजी, वाये शीतल वाय ॥ सु० ॥ १३ ॥ वात करे वात करे ऊनीपकी होजी, मानिनी हसि हसि तेह ॥ एहवे एहवे हो महिपाल पूरथी होजी,आव्यो तिहां ससनेह ॥ सु० ॥ १४ ॥ जाता जाता हो क्षेत्रजणी तिहां होजी, मार्गे जलदने जोर ॥ ते पण ते पण वडतरुने तलें होजी, गानो रह्यो एक गोर ॥ सु० ॥ १५ ॥ उर्थे उर्थे रहीने सांजले होजी, ते वहूअ रनी रे वात ॥ विजन विजन लहीने निराकुली होजी, पहेली बोले निश्चिंत ॥ सु० ॥ १६ ॥ अवसर अवसर आज मल्यो जलो होजी, कहो मन जे हुवे इष्ट ॥ माही माही मापण केलवी होजी, वहूअर बोले कनिष्ट ॥ सु० ॥ १७ ॥ सुणियें सुणियें हो एहवु ससारमा होजी, वाडीने पण हुवे कान ॥ न घटे न घटे स्वजावनु जाखवु होजी,मुऊ मनमांहे ए ज्ञान ॥ सु० ॥ १८ ॥ यत ॥ दिवा निरीक्ष्य वक्तव्य, रात्रौ नैव च नैव च ॥ संचरति महाधूर्त्ता , वटे वररुचिर्यथा ॥ ४ ॥ पूर्वढाल ॥ बोले बोले हो चडवती तिहा होजी, नहि इहा कोइनो प्रचार ॥ गोष्टि गोष्टि करीजें दिल खोलीने होजी, मुऊने हर्ष अपार ॥ सु० ॥ १९ ॥ कहे तब कहे तब शीलवती सती होजी, कहो अनुक्रमें तुमें एह ॥ वारक वारक आवे माहरे होजी, यात कहिश ससनेह ॥ सु० ॥ २० ॥ पहेली पहेली कहे मन माहरे होजी, घृत ताव्यु ततकाल ॥ जो जले जो जले क्षिप्र चट क्षणमां होजी, तो जमु थइ वजमाल ॥ सु० ॥ २१ ॥ वली तेम वली तेम शिरावदी जली होजी, सुदर दहिंने सयोग ॥ मलती मलती हो आम्रकचूरिष्ठ होजी, जोजन ए देवयोग ॥ सु० ॥ २२ ॥ बीजी बीजी हो कीर्त्तिमती कहे होजी, सुणो मुऊ मननी रे आश ॥ बहेनी बहेनी हो होंश हियडे रहे होजी,कहियें कोने ए जास ॥सु०॥२३॥ साव साव दूध खीर खांमछ्यु होजी, मामा सुंदर जोडि ॥ सरहा सरहां घृत शाल दालछं होजी,मुऊ जीमणनो रे कोड ॥ सु० ॥ २४ ॥ त्रीजी त्रीजी हो शांतिमती कहे होजी, मुऊ मोदकनी रे आश ॥ अवर अवर वली सुखजक्षिका हो जी, मुऊ मन जावे मिगाश ॥ सु० ॥ २५ ॥ वलतुं वलतु हो शीलवती वदे होजी, नहि मुऊ जोजन प्रेम ॥ खाधुं खाधु हो

वेसी रहे नहि होजी, सुणो मुज मनमांहे एम ॥ सु० ॥ २६ ॥ नाही नाही हो निर्मल नीरस्यु होजी, चंदन चर्चित अंग ॥ पहेरी पहेरी हो वसन सोहामणा होजी, नूपण नूपित चंग ॥ सु० ॥ २७ ॥ मांमया मांमया हो थाल सोहामणा होजी, कनक कचोलां रे मांहे ॥ पिरसु पिरसु सुसर जेठ कंतने होजी, नोजन मनने उत्साह ॥ सु० ॥ २८ ॥ पोषी पोषी हो गृहजन सर्वने होजी, देइ दीनादिक दान ॥ केडे केडें हो निकुत्सित जे रह्यु होजी, अशन अने वली पान ॥ २ए ॥ जमता जमतां ते नोजन मुज मनें होजी, होवे हर्ष अपार ॥ नांख्यो नाख्यो हो अनिप्राय आपणो होजी, शीलवती तिण वार ॥सु०॥३०॥ निसुणी निसुणी हो कान मांमी करी होजी,सुसरे सघली रे वात ॥ त्रिह्नु जणी त्रिह्नु जणी फरि वोले तिहा होजी, नवली ताहरी रे धात ॥ सु० ॥ ३१ ॥ आपण आपण कौटुंविक घरें होजी,अशनादिक रें ङुजन्न ॥ वसन वसन आनूपण वातडी होजी, करवी एह अचन्न ॥ सु० ॥ ३२ ॥ करियें करियें मनोरथ एहवो होजी, जेहवु आपणु नाग्य ॥ करवु करवु हो कर्षण कर्मनु होजी, किहाथी एह मिले लाग ॥ सु० ॥ ३३ ॥ चिंते चिंते महिपाल मनमां होजी, मुज घर नारी कुहाड ॥ नोजन नोजन वहूने आपे नहि होजी, न सरे मननी रुहाडि ॥ सु० ॥ ३४ ॥ घर जइ घर जइने निज नारीने होजी,समजाविश सुविचार॥पूछिश पूछिश ए त्रिह्नु वहूतणा होजी,मन चिंतित रे आहार ॥ सु० ॥ ३५ ॥ वोले वोले असमंजस वोलडा होजी, चोथी वहू कम जात ॥ केवल केवल एहने पूरवु होजी, कुत्सित उंदन नात ॥ सु० ॥ ३६ ॥ विरमी विरमी हो दृष्टि गइ क्षेत्रमा होजी, वहू अर ते गुणवंत॥आवी आवी महिपाल नारीने होजी,वात कही सवि तंत ॥ सु० ॥ ३७ ॥ कहिने कहिनें गयो निज क्षेत्रमा होजी, जुवो नावीस वंध ॥ न टले न टले हो टाल्यो कोइनो हो जी, जो करे कोटि प्रवंध ॥ सु०॥३८॥ खम खम छठे ढाल ए नणी होजी, एकतालीशमी सार ॥ राम राम कहे जग वोहिला होजी,गुणना जाणणहार ॥सु०॥३ए॥१६२४॥८०॥

॥ दोहा ॥

॥ वहूअर जब वेला थई, तब आवी निज घेर ॥ सासुयें पहेलांथी करी, ते नोजननी पेर ॥ १ ॥ जमवा वेसारी सवे, उंला उंलें सनूर ॥

नोजन पिरसें नावता, आणी आनदपूर ॥ २ ॥ त्रणे जणी मन चिं तवे, मन चिंतित आहार ॥ केम मलियो अणचिंतव्यो, ए थयो क वण प्रकार ॥ ३ ॥ शीलवतीने सासुये, पिरस्यु आणी कवन्न ॥ पंक्ति नेद जाणी करी, विलखु थयु वदन्न ॥४॥ में कांही विणसाड्यु नहिं, न लही कारणशुद्धि ॥ त्रणे जणी पण चिंतवे, खोटी सासु बुद्धि ॥ ५ ॥ जमी उठी चारे जणी, पण मन विस्मय नारि ॥ पुनरपि कारजने वशें, चाली क्षेत्र मजार ॥ ६ ॥

॥ ढाल बर्देतालीशमी ॥

॥ सुग्रीव नयर सोहामणु जी ॥ ए देशी ॥ मारगमांहे त्रिहु जणी जी, करती एम विचार ॥ मन गमतो आवी मल्यो जी, आपणने आहार रे ॥१॥ वहेनी, ए थयो कवण प्रकार ॥ चिंतित फलियु सार रे ॥ ब० ॥ ए० ॥ ए आकणी ॥ शीलवतीने सर्वे कहे जी, चिंतित सरिखु रे थाय ॥ तें कहशन जो चिंतव्यु जी, तेवु मलियु आय रे ॥ ब० ॥ २ ॥ कीजें मनोरथ महोटको जी, तुच्छ न धरियें रे चित्त ॥ शीलवती कहे सांजलो जी, शी ए वात विचित्र रे ॥ ब० ॥ ३ ॥ नोजन सार असार नो जी, उदरें एकज नाव ॥ शु फूलो नोजन लही जी, शो ए तुम्ह स नाव रे ॥ ब० ॥ ४ ॥ मन गमतुं जब माहरे जी, थाशे कारिज तेह ॥ लेखे जनम तब आवशे जी, म म धरजो संदेह रे ॥ ब० ॥ ५ ॥ नि त्यप्रत्यें नोजन नावता जी, पीरसे सासु रे तास ॥ तब त्रिहु जणीने जीमतां जी, मनमां हुइ विमास रे ॥ ब० ॥ ६ ॥ पूछे सासूने किस्यो जी, शीलवतीनो रे दोष ॥ नोजन अंतर एवडो जी, नवि कीजें धरि शो ष रे ॥ ब० ॥ ७ ॥ कहि सासूयें मूलथी जी, वहुनीचें करी जेह ॥ वा त सुणीने सा हुई जी, म्लानमुखी गुणगेह रे ॥ब०॥८॥ नित्य प्रत्यें रहे ते फूरती जी, न वले तननो रे वान ॥ मुख करमाणु फूल स्युं जी, पामी ते अपमान रे ॥ब०॥९॥ यत ॥ चिंतान्योऽप्यधिका चिंता, लोके जानामि निश्चितम् ॥ चिंता दहति निर्जीवं, चिंता दहति सजीवकम् ॥१॥ पूर्वढाल ॥ एक दिन कंतें पूछीयुं जी, कां तु दुर्बल काय ॥ शी तुज चिंता उपनी जी, मुज मन आरति थाय रे ॥ वहाली, ए थयो कवण प्रकार ॥ १० ॥ ढलक ढलक आंसू ढले जी, कां एवडी दिलगीर ॥ नीसासो नाखी कहे

जी, आंसु लूही चीर रे ॥ व० ॥ ११ ॥ वात सवे माफी कही जी, धुर हूंती आमूल ॥ शूरपाल मनमा थयो जी, वात सुणी प्रतिकूल रे ॥ व० ॥ १२ ॥ अहो गुणवती ऊपरें जी, एहवो अनादर नाव ॥ निर्गुण मुऊ माता पिता जी, जे विपरीत स्वनाव रे ॥ व० ॥ १३ ॥ एह मनो रथ अति नलो जी, आगल ए अनुसार ॥ थाशे सहु नारीशिरें जी, ए महारी घरनार रे ॥ व० ॥ १४ ॥ ते माटे देशांतरें जी, जइ मेलु धन कोडि ॥ थोडे दिवसें नारीना जी, पूरुं वांछित कोड रे ॥ व० ॥ १५ ॥ एम चिंती कहे नारीने जी, जाइश हुं परदेश ॥ तुऊ मनोरथ पूरवा जी, मत डुख धरे लवलेश रे ॥ १६ ॥ स्वामी, तुम विणु घडी रे छ मास ॥ ए आकणी ॥ शीलवती कहे साहिबा जी, वहालेसर अवधार ॥ तुमें चाले देशातरें जी, मुऊने कोण आधार रे ॥ स्वामी० ॥ १७ ॥ सा त नलु पण सासरु जी, पीयर तेम मोशाल ॥ पण प्रीतम विना नारी नी जी, न लिये कोइ सनाल रे ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ यौवन नर मुऊ देह डी जी, दोषी लोक अनेक ॥ वालम परदेशें चले जी, करि पग पग मुऊ छेक रे ॥ स्वा० ॥१ए॥ अलगी न रहुं अध घडी जी, आवीश तुम संघात ॥ छाया अलगी नवि रहे जी, देहथकी तिल मात रे ॥ स्वा० ॥ २० ॥ कहे प्रीतम सुण कामिनी जी, तुऊ पासें मुऊ प्राण ॥ अतर नहि तुऊ मुऊ विचें जी, सुदरी सुगुणनिधान रे ॥ वहा० ॥ २१ ॥ पगवधन परदेशमा जी, केम सचवाये नारी ॥ ते माटें मदिर रहो जी, थो आदेश विचार रे ॥वहा०॥२२॥ ना कहेतां रूडुं नहिं जी,जा कहेतां नि स्नेह ॥ जाउं म जाउं एम कहु जी, उदासीन पक्ष एह रे ॥ स्वा० ॥ २३ ॥ नयणें जल चा ल्यां वही जी, हियडुं न धरे रे धीर ॥ शी गति होशे माहरी जी, सुण नणदलरा वीर रे ॥ स्वा० ॥ २४ ॥ तुमें गुणवता नाहला जी, जिहां जा शो तिहा ऋधि ॥ रखे मुऊने वीसारता जी, पियु पामी नव निधि रे ॥ स्वा० ॥ २५ ॥ सुण सुदरी नवि विसरे जी, तुऊ गुण वसिया रे चित्त ॥ चित्त गयदा मावतां जी, उतरे नहि कल्पात रे ॥ स्वा० ॥ २६ ॥ तुम आवे ए छोडवो जी, कचुक वेणीबंध ॥ एम प्रतिज्ञा आदरी जी, महोटो मोह प्रतिबध रे ॥ स्वा० ॥ २७ ॥ सुगुण सनेहा साहिबा जी, वहेलाही वलजोद ॥ ऋगरजीवी जीवजो जी, उवर ज्यु फलजोद रे ॥ स्वा० ॥

२८ ॥ नारी मनावी नीसर्यो जी, मंदिरथी शूरपाल ॥ स्वा० जेह एकच दिशें जी, हवे जुवो भाग्यविशाल रे ॥ स्वा० ॥ २९ ॥ बहेंतालीसमी ढालमां जी, नर नारीने रे राग ॥ परदेशें एम नीसर्यो जी, आगल फलशे भाग्य रे ॥स्वा०॥३०॥ सर्वगाथा॥१६६०॥ श्लोक तथा गाथा मली ॥०१॥

॥ दोहा ॥

॥ शीलवती मन दुःख धरे, पियु चाल्यो परदेश ॥ हडकूकडण लागी हिये, रति न लहे लवलेश ॥ १ ॥ स्वोचित गृहकारज करे, पण मन चिंता वंत ॥ क्षण क्षण हियडे सांजरे, शूरपाल निज कंत ॥ २ ॥ मात पिता यें पूढियु, किहां गयो सुत शूरपाल ॥ सज्जन सहु को एम कहे, नहिं ते हनी कांई जाल ॥ ३ ॥ शोध करी तेहनी घणी, मात पिता तेणी वार॥ पण किहाय लाध्यो नहि, धरे मन खेद अपार ॥ ४ ॥ करे मांहोमांहि मंत्रणं, केणें डुहवियो तेह ॥ जे एम रीसावी गयो, कोइक कारण एह ॥ ५ ॥ आपण डुहवियो नहिं, ते कनिष्ठ गुणगेह ॥ सहुने वाहालो जीव जेम, केम तेणें दीधो छेह ॥ ६ ॥ पूछे शीलवती जणी, जडे तुज स घात ॥ शु रीसाणो वल्लहो, ते दाखो अम वात ॥ ७ ॥ आण न लोपी कंतनी, में कांई तिलमात्र ॥ पण मुज वेणी ए वल्लहे, हाथे गूंथी रात्र ॥ ८ ॥ कह्युं मुजने आव्या विना, नवि छोडेवी वेण ॥ बीजु काइ जाणु नहिं, कह्यु मुज कारण केण ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रैंतालीशमी ॥

॥ नारी रे निरुपम नागिला ॥ ए देशी ॥ वात सुणी रे करे मंत्रण, बांधव मली माय ताय रे ॥ आपण किणें डुहव्यो नहिं, केम गयो एम रीसाय रे ॥ १ ॥ हा शूरपाल तु किहां गयो,मोहें कहे एम माय रे ॥ तेम महिपाल पण वलवले, हियडला आव्यां नराय रे ॥ हा० ॥ २ ॥ बांधव त्रिहु एम चिंतवे, नारी केरु अपमान रे ॥ इणे न सहेवाणु रे बांधवें, ग यो मन धरि अनिमान रे ॥ हा० ॥ ३ ॥ जननी जनक धन सहुने, त जे पलकमांहे सोय रे ॥ न सहे तूंकार कोइनो वली, मानधन जे ज ग होय रे ॥ हा० ॥ ४ ॥ ए पराजव सहि तेहने, जे कह्यो छे तस ना री रे ॥ मानधन पुरुष सासे नहिं,नारी अपमान निर्धार रे ॥ हा० ॥५॥ विरहातुर घणु दुःख जर्या, नवि लहि बांधवशोध रे ॥ जेम अति क्लेशथी

नवि लहे, प्रथमगुणगणीया बोधि रे ॥ हा० ॥ ६ ॥ हवे शूरपाल ते चालीयो, जोवतो गिरि वन गाम रे ॥ अनुक्रमे नयर एक आवियुं, महा शाल जेहनु नाम रे ॥ हा० ॥ ७ ॥ जबुतरु हेठल विश्रम्यो, वसन ना खी धरापीठ रे ॥ शयन कीधु श्रमातुर नणी, उघ आवी अति मीठ रे ॥ हा० ॥ ८ ॥ तास प्रनाव तरुगयडी, तेम रही दिवस मध्याह्न रे ॥ अहो अहो पुण्य प्रगट हुयुं, ते सुणो सहु सावधान रे ॥ हा० ॥ ए ॥ ते ह नगरी तणो राजियो, काल पहोतो ततकाल रे ॥ पचदिव्य मत्री अ धिवासियां, पुरमाहे फरे उजमाल रे ॥ हा० ॥ १० ॥ नाग्यने योगें ति हां आवीया, पोढीयो जिहां शूरपाल रे ॥ हाथीयें कलशलो ढाजियो, जागीयो नाग्यविशाल रे ॥ हा० ॥ ११ ॥ हरखी हेषारव हय करे, चा मर उत्र धरत रे ॥ गजवरें खधें वेसारियो, वदीजन विरुद उच्चरत रे ॥ हा० ॥१२॥ सर्व सामत आवी नम्या, देखीयो लक्षणवत रे ॥ स्वामी अ म नाग्यें वलए कखु, मलीयो तु गुणवत रे ॥ हा०॥ १३ ॥ आविया बहु त आमंबरे, वाजते हर्षनिशाण रे ॥ स्वामी अमचा घणु जीवजो, वरस कोडाकोडि मान रे ॥ हा० ॥ १४ ॥ एम आशीष दिये गोरडी, धवल गा ती सुकुमार रे ॥ करिय अनिषेक वेसारियो, तख्त ऊपर ततकाल रे ॥ हा० ॥ १५ ॥ वखत फलियो वलें बाधीयो,सीमना सवि नम्या राय रे ॥ सवल धरा धिग थइ नोगवे, प्रवल जस पुण्य सखाय रे ॥ हा० ॥ १६ ॥ एक दिन नारी तस सानरी, निसस्यो जेहने काज रे ॥ स्वजन सहुको वली सानस्यां, चितवे एम नरराज रे ॥ हा० ॥ १७ ॥ माहरी आथ स्या कामनी, नोगवु एकलो आम रे ॥ पूरवु जो नहि नारीना, सकल मनोवाछित काम रे ॥ हा० ॥ १८ ॥ यत ॥ किं तया क्रियते लक्ष्म्या, विदेशागतया ननु ॥ अरयो या न पश्यंति, बधुनिर्या न नुज्यते ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ एम चिती नृपें हाथशु, लख्यो निजनारीने लेख रे ॥ राज्य पाम्यो पण ताहरुं, पामीश सुख मुख देखि रे ॥ हा० ॥ १ए ॥ लेख आपी नृपें मोकल्या, सेवको तेडवा काज रे ॥ तुरत कचनपुरें ते गया, खोलता आविया बाज रे ॥ हा० ॥ २० ॥ पण महिपाल लाधो नहिं, कह्यु एक नयरने लोक रे ॥ काल डुर्निक्षमा ते गयो, इहायकी धरि मन शोक रे ॥ हा० ॥ २१ ॥ तेह सह कुटुब किहा गयो, खबर नहि

इहां कोइ तास रे ॥ एम सुणि तेह वलिया सवे, आविया नृपतिपास रे ॥ हा० ॥ २२ ॥ वात सुणी राय विलखो थयो, चितवे चित्तमां एम रे ॥ अहो अहो माहरा सयण ते, वरततां हशे कहो केम रे ॥ हा० ॥ २३ ॥ राज्य पाम्यो पण रति नहि,सांजली सयणनु दुःख रे ॥ एह वेदना रहे अति घणी,जुर्ज जुर्ज कर्म अति तिरक रे ॥हा०॥२४॥ खम नठे कही क मैनी, अजबगति ढाल त्रेंताल रे ॥ राम कहे सांजलो हवे कहु, जे लहुं ते महिपाल रे ॥हा०॥२५॥ सर्व गाथा॥१८०४॥ श्लोक तथा गाथा मली०२॥

॥ दोहा ॥

॥ जिण वरसें ते नीसर्यो,गेहथकी शूरपाल ॥ तेहथकी बीजे वरस,कागे पड्यो दुष्काल ॥ १ ॥ मूलथकी वूठो नहीं, पड्यो काल विकराल ॥ नूरि लोक क्षय नीपन्यो, वहेचें नूखें बाल ॥ २ ॥ मारग दुःसचर हुवा, फरे तस्करनां वृंद ॥ नूख्या नर नक्षण करे, मानवप्रत्यें अठद ॥ ३ ॥ कष्टथकी पामे तिहा, मुनिवर पण आहार ॥ रक मली लिये फूटीने, एहवो हाहाकार ॥४॥ परणी पण तरुणी तजे,नि स्नेही नरतार ॥ नेह रहे नहिं कोइनो, न पले निज आचार ॥ ५ ॥ गति मति सवि जाये गली, एहवो जाणी काल ॥ निजकुटुंब लेइ नीसर्यो, मदिरथी महिपाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चुम्मालीशमी ॥

॥ हो सायर सुत सोहामणा ॥ ए देशी ॥ हो महिपाल परिवारशुं, परिवारशुं रे हो नीसरियो परदेश ॥ हो सबल नहि एक दिवसनो,एक दिवसनो रे हो नहिं समाधि लवलेश ॥१॥ निजकृत्य आगें रे कोइ बलीयो नहीं रे॥ ए आंकणी॥ हो गाम नयरपुरमां नमे, पुरमां नमे रे हो कोण दिये आवकार॥ लोक कहे परदेशीया, परदेशीया रे हो कन्ना न रहो इण ठार ॥नि०॥२॥ हो शून्य मदिर आवी रहे,आवी रहे हो नूख्यां न जाये रात॥ हो निद न आवे नयणले,नयणले रे हो ठठी चले प्रनात॥ नि० ॥ ३ ॥हो पंथें पग चाले नहीं, चाले नहिं रे हो सांनले कुवचन तास ॥ करे गुजरान फल फूलशुं,फल फूलशुं रे हो चिते चित्त ठदास ॥ नि० ॥ ४ ॥ हो केम कुटुंब जीवाडशुं, जीवाडशुं रे हो नहिं कोडी पेदास ॥ सूरज ठग्ये ठठीने, ठठीने रे हो करवी परनी आश ॥नि०॥५॥ हो जेम तेम करतां अनुक्रमें, अनुक्रमें रे हो आव्या पुर महाशाल ॥ लोक वसे सुखीयां घणा, सुखीयां

घणां रे हो देखी थयां उजमाल ॥ नि० ॥ ६ ॥ हो करे पुरमां आजी विका, आजीविका रे हो चाले सुखें गुजरान ॥ शीलवती कारज करे, कारज करे रे हो पति विणु न लहे मान ॥ नि० ॥ ७ ॥ हो एक दिन सासू एम कहे, एम कहे रे हो जीरण कचुक उतार ॥ वेणी ठोडाव तुं शिर तणी, शिर तणी रे हो कहेण न माने लगार ॥ नि० ॥ ८ ॥ हो सासू ससरो थाक्या कही, थाक्या कही रे हो पण ते हठीली जाण ॥ हो थइ सहुने अलखामणी, अलखामणी रे हो कर्म करे ते प्रमाण ॥ नि० ॥ ९ ॥ हो पतिविरहें थइ दूबली, दूबली रे हो बीज चांदलीया रेह ॥ हो क्षण क्षण प्रीतम सांभरे, सांभरे रे हो साले नवल सनेह ॥ नि० ॥ १० ॥ हो मुखहूती बोले नहि, बोले नहि रे हो करे सविशेषु काम ॥ हो कुललज्जा राखे भली, राखे भली रे हो शीलवती निज माम ॥ नि० ॥ ११ ॥ हो हवे सुणो ते पुरराजीयो, राजीयो रे हो शूर पाल अभिधान ॥ लोक सहू हितकारणें, कारणे रे हो सरोवर मांम्युं सुजाण ॥ नि० ॥ १२ ॥ हो निर्धन जन आवे घणां, आवे घणां रे हो तिहां कणे करवा काम ॥ डु स्थित लोक मजूरियां, मजूरीयां रे हो पामे खासा दाम ॥ नि० ॥ १३ ॥ हो वात नगरमां विस्तरी, विस्तरी रे हो थयो जाणी रोजगार ॥ हो महिपाल पण आवीयो, आवीयो रे हो लेइ साथें परिवार ॥ नि० ॥ १४ ॥ हो करे रोजगार मजूरनो, मजूरनो रे हो उदरभरण सुखें थाय ॥ हो वान वल्यो वेला वली, वेला वली रे हो दिवस सुखें तस जाय ॥ नि० ॥ १५ ॥ हो एक दिन गज चढी रा जीयो, राजीयो रे हो सरोवर जोवा काज ॥ हो तेजी तुरिय पलाणिया, पलाणिया रे हो साथें सबलो साज ॥ नि० ॥ १६ ॥ हो नवरंग नेजा फरहरे, फरहरे रे हो नोबत घुरे रे निशाण ॥ हो थइ अस्वार ते आ वीयो, आवीयो रे हो भाला झलहल भाण ॥ नि० ॥ १७ ॥ हो गज खधें चढयो राजवी, राजवी रे हो भली सुभटनी कोडि ॥ हो करे रे म जूरी मजूरीया, मजूरीया रे हो चोंप धरी मन कोड ॥ नि० ॥ १८ ॥ हो निरखे नजरें निहालीने, निहालीने रे हो तव दीठो महिपाल ॥ हो शीलवती दीठी प्रिया, दीठी प्रिया रे हो उमली विरहनी झाल ॥ नि० ॥१९॥ हो परनरने निरखे नहिं, निरखे नहिं रे हो शीलवती सुकुमार ॥ न

इहां कोइ तास रे ॥ एम सुणि तेह वलिया सवे, आविया नृपतिपास रे ॥ हा० ॥ २२ ॥ वात सुणी राय विलखो थयो, चिंतवे चित्तमां एम रे ॥ अहो अहो माहरा सयण ते, वरतता हशे कहो केम रे ॥ हा० ॥ २३ ॥ राज्य पाम्यो पण रति नहि,सांजली सयणनुं डुःख रे ॥ एह वेदन रहे अति घणी,जुउं जुउं कर्म अति तिख रे ॥हा०॥२४॥ खम ठठे कही क र्मनी, अजवगति ढाल त्रेंताल रे ॥ राम कहे सांजलो हवे कहुं, जे लह्युं ते महिपाल रे ॥हा०॥२५॥ सर्व गाथा॥१६ए४॥ श्लोक तथा गाथा मली०१॥

॥ दोहा ॥

॥ जिण वरसे ते नीसख्यो,गेहथकी शूरपाल ॥ तेहथकी बीजे वरस,काठो पड्यो डुष्काल ॥ १ ॥ मूलथकी वूठो नहीं, पड्यो काल विकराल ॥ जूरि लोक क्षय नीपन्यो, वहेंचे जूखें बाल ॥ २ ॥ मारग डुसचर हुवा, फरे तस्करना वृंद ॥ जूख्या नर नक्षण करे, मानवप्रत्यें अठद ॥ ३ ॥ कष्टथकी पामे तिहां, मुनिवर पण आहार ॥ रक मली लिये फूटीने, एहवो हाहाकार ॥४॥ परणी पण तरुणी तजे,नि स्नेही जरतार ॥ नेह रहे नहिं कोइनो, न पले निज आचार ॥ ५ ॥ गति मति सवि जाये गली, एहवो जाणी काल ॥ निजकुटुंब लेइ नीसख्यो, मंदिरथी महिपाल ॥ ६ ॥

॥ ढाल चुम्मालीशमी ॥

॥ हो सायर सुत सोहामणा ॥ ए देशी ॥ हो महिपाल परिवारशुं, प रिवारशुं रे हो नीसरियो परदेश ॥ हो सबल नहिं एक दिवसनो,एक दिव सनो रे हो नहिं समाधि लवलेश ॥१॥ निजकृत्य आगें रे कोइ बलीयो नहीं रे ॥ ए आंकणी ॥ हो गाम नयरपुरमां जमे, पुरमां जमे रे हो कोण दिये आवकार ॥ लोक कहे परदेशीया, परदेशीया रे हो जला न रहो इण ठार ॥नि०॥२॥ हो शून्य मंदिर आवी रहे,आवी रहे हो जूख्या न जाये रात ॥ हो निंद न आवे नयणले,नयणले रे हो ठठी चले प्रजात॥ नि० ॥ ३ ॥ हो पंथें पग चाले नहीं, चाले नहिं रे हो सांजले कुवचन तास ॥ करे गुजरान फल फूलशु,फल फूलशुं रे हो चिंते चित्त उदास ॥ नि० ॥ ४ ॥ हो केम कुटुंब जीवाडशु, जीवाडशुं रे हो नहि कोडी पेदास ॥ सूरज ठग्ये ठठीने, ठ ठीने रे हो करवी परनी आश ॥नि०॥५॥ हो जेम तेम करतां अनुक्रमें, अनुक्रमें रे हो आव्या पुर महाशाल ॥ लोक वसे सुखीयां घणां, सुखीयां

रें हो आपणो ए राजान ॥ हो एह कर्मकर उपरें, उपरें रे हो एवडुं केम स न्मान ॥ नि० ॥ ३४ ॥ हो चुम्मालीशमी ढालमा, ढालमा रे हो प्र कह्यो पुण्यविलास ॥ हो रामविजय कहे सांभलो, सांभलो रे हो मन माहे धरि उल्लास ॥ नि० ॥ ३५ ॥ सर्व गाथा ॥ १७३५ ॥श्लोक॥८३॥

॥ दोहा ॥

॥ घर आवी सुसरो कहे, शीलवतीने एम ॥ जीरण कचुक परहरी, पहेर नवो धरि प्रेम ॥ १ ॥ जाता नृप आवासमा, पोसाये निर्धार ॥ एक नूर कह्यो आदमी, कपडूं नूर हजार ॥ २ ॥ पण नवि मानें ते कहण, सूता सुखमाहे राति ॥ ग्रास लेवाने मोकली, ते ऊग्ये परभात ॥ ३ ॥ राजभुवन ऊभी रही,नूतन जाणी तास ॥ प्रतिहारिणी तव जइ, नृपने करे अरदास ॥ ४ ॥ नृप आवी कहे तेहने, का तुझ एहवो वेश ॥ जीरण कचुक केम धरे, लाजे नहि सुविशेष ॥ ५ ॥ लाजें नीचु जोवती, नवि बोले ते लगार ॥ कर्तें सूधी उंलखी, सती शीरोमणि सार ॥ ६ ॥ राजायें देवरावीयु, गोरस बहुलु तास ॥ आवी मदिर लेइने, धरती अग उल्लास ॥ ७ ॥ वीजे दिन तेमहिज गइ, शीलवती नृपगेह ॥ नृप कहे मुझ अर्पित अहो, वारवाण धरि नेह ॥ ८ ॥ ते न लियें तव रो षथी, वोल्यो राजा एम ॥ कहेण न मानिश माहरु, तोनहि तुझने क्षेम ॥ ९ ॥ सा वोली सुदर अहव, होय असुदर देव ॥ पण निश्चें खरु नहिं, जीवजाव नित्यमेव ॥ १० ॥ यत ॥ आयातु यातु लक्ष्मीर्वा, यत्तद्वा वदता ज्ञान ॥ जीनितं मरण वाऽस्तु, सता धर्मान्न विच्युति ॥ ॥ १ ॥

॥ ढाल पिस्तालीशमी ॥

॥ माना दरजणनी लंकानो राजा ॥ ए देशी ॥ कर्त्रिम कोप करी कहे रे,सेवकने तव नृप ॥ आण न माने माहरी,ए नारीनु अकल स्वरूप रे ॥१॥ हियडानी वातो,नृप रीज्यो रे ए निरखी धातो, मन मानी रे मनमानी ए नारी सुजातो, रे हियडानी वातो ॥ ए आंकणी ॥ क्षेपो ए कारागारमा रे, अजर न करवो आज ॥ नृप आणा निसुणी धस्या, लेइ चाल्या क रत दिवाज रे ॥ हि० ॥ २ ॥ पण न चली निज चित्तथी रे, शीलवती गुणवत ॥ तुष्ट थइ पाछी तिहा,तेडावे ते निज कत रे ॥ हि० ॥३॥ पूछयु कुण कारण प्रिये रे, नवि मूकें वारवाण ॥ वैरूप्यकारक एहथु, केम

जर न मांके कोइणुं, कोइणुं रे हो काम करे उजमाल ॥ नि० ॥ २० ॥ हो बांधव माता तेम वली,तेम वली रे हो करतां देखी काम ॥ यह विजनीर मन चितवे,चितवे रे हो मुज कुटुंब थयुं आम ॥ नि० ॥ २१ ॥ हो कर्म कमाइ जोगवे, जोगवे रे हो नहि इहां कोइनो चार ॥ हो गर्व म करशो मानवी, मानवी रे हो खोटो अथिर ससार ॥ नि० ॥ २२ ॥ हो राय कहे पंचकुलप्रत्यें, कुलप्रत्यें रे हो शु लहे कर्म करे एह ॥ रूपक एक दिन दिन प्रत्यें,दिन दिन प्रत्यें रे हो पामे एम कहे तेह ॥ नि० ॥ २३ ॥ हो साहिब तुमची आणथी,आणथी रे हो मध्यम लहे रे आहार ॥ कहे नृप कुटुंब उद्देशिने,उद्देशिने रे हो पचकुलने तेणि वार ॥ नि०॥२४॥ हो ए माणस घणां कामना,कामना रे हो करे मजूरी खास ॥ हो वमणु वधतुं एहोने, एहोने रे हो द्यो जेम वधे उल्लास ॥ नि० ॥२५॥ यत ॥ साध्व साधुजने स्वामी, निर्विशेषो यदा जवेत् ॥ तदा साधुगुणोत्साह, साधो रपि न वर्द्धते ॥१॥ पूर्वढाल ॥ हो जात उत्तम देवु वली,देवु वली रे हो प्रजु आदेश प्रमाण ॥ हो कहे तेडी महिपालने,महिपालने रे हो कहे अम तूठ्यो राण ॥नि०॥२६॥ हो करि सलाम मुखें उच्चरयो,उच्चरयो रे हो महाप्रसाद महाराज ॥ ते पण तेमहिज मुखें कहे, मुखें कहे रे हो सीध्यां वांछित काज ॥नि०॥२७॥ हो पहिपालनें नृप कहे,नृप कहे रे हो केता तुम अंग जात॥हो ते कहे साहिब माहरी,माहरी रे हो साजल सघली वात॥नि०॥२८॥ हो चार तनय प्रजु माहरे,माहरे रे हो वहूअर तेहनी ए चार ॥ एक गयो परदेशमां, परदेशमा रे हो रीसावी निर्धार ॥ नि० ॥ २९ ॥ हो ते अमने वहालो घणु,वहालो वणु रे हो हूतो जीवन प्राण ॥ हो ते परदेश गया पछी, गया पछी रे हो हुवां अमे घणु हेरान ॥ नि० ॥ ३० ॥ हो कोण नगरथी आविया, आवीया रे हो कंचनपुर अमवास ॥ हो तुज ठाया आवी रह्या, आवी रह्या रे हो सुण साहिब अरदास ॥ नि० ॥ ३१ ॥ हो कहे नरपति महिपालने, महिपालने रे हो ए लघु वहू अम गेह ॥ तक्र लेवाने मूकजो, मूकजो रे हो मत करजो संदेह ॥ नि० ॥ ३२ ॥ हो नृप निजमंदिर आवियो, आवीयो रे हो एम कही तस आदेश ॥ लोक सहू विस्मय लह्यां, विस्मय लह्यां रे हो अच रिज एह विशेष ॥ नि० ॥ ३३ ॥ हो कोइ साथें बोले नहीं, बोले नहीं

शोने घणुं रे, रूपवती रति रंज ॥ जूपण छवि शोने घणी, दीठे होय न रने अचंन रे ॥ हि० ॥ २० ॥ रमऊम करती कामिनी रे, आवी नृ पति पास ॥ नृप आदर आपे घणो, दीधु अर्द्धासन तास रे ॥ हि० ॥ २१ ॥ सामत मत्रीश्वर सवे रे, उठी करे प्रणाम ॥ तिण दिन शांति मती हती, सार्थे वली गइ निजधाम रे ॥ हि० ॥ २२ ॥ गुप्तद्वेप वेला तदा रे, नासी गइ निजगेह ॥ निज कुटुंवनी आगलें, वात आवी कही सवि तेह रे ॥ हि० ॥ २३ ॥ निज हठथी हरिणी सही रे, वेठी हो का रागार ॥ सहु कहे जुगतु एहने, कीधु एणे किरतार रे ॥ हि० ॥२४॥ जे हठ वादी घणु होवे रे, ते पामे ङुःख एम ॥ वृद्ध कह्यु जे मानशे, तें पग पग लेहशे क्षेम रे ॥हि०॥२५॥ ठो थाती ए पाधरी रे, शु ठेडाव्यानु काम ॥ एह हठीलीनु हवे, मत लेजो कोइ नाम रे ॥ हि० ॥ २६ ॥ एक दिन ते महिपालने रे, नृपें तेड्यो सकुटुंव ॥ नोजन कारण आविया, निज जनक ने वधव अंव रे ॥ हि० ॥ २७ ॥ स्नान कराव्या तेहोने रे, व सन नला अति चग ॥ आनूपण पहेराविया, राजायें धरी मन रग रे ॥ हि० ॥ २८ ॥ मनमां महिपालादिका रे, वारु विमासे विचार ॥ आपणने ए राजियो, केम एम करे उपचार रे ॥ हि० ॥ २९ ॥ जेने जे दयी रे लहेणु होवे रे, निर्गुण पण तस पास ॥ पामे लान्न अचिंतव्यो, नहिं इहा कोइ अवर विमास रे ॥ हि० ॥ ३० ॥ आसन रम्य वेसा रिया रे, नोजन काज ते वार ॥ थाल विचित्र मंमावीने, नृप पण वेठो गुणधार रे ॥ हि० ॥ ३१ ॥ नृप आदेश आवे तिहां रे, शीलवती वर नारी ॥ पूर मनोरथ आपणा, प्रिये चिरसचित इण वार रे ॥ हि० ॥ ३२ ॥ पिरसे नोजन प्रेमश्यु रे, अहो अहो नक्ति अपार ॥ चिंते महि पाल चित्तश्यु, सही इहा कणे कोइ विचार रे ॥ हि० ॥ ३३ ॥ नोजन करि उठ्या सवे रे, वेसाड्यां आसन्न ॥ शूरपाल महिपालने रे, चरणे नमे थइ प्रसन्न रे ॥ हि० ॥ ३४ ॥ तात ते हु तुम अगजो रे, नामें जे शूरपाल ॥ मात पिता तुम्हें मादरा, मलिया मुऊ नाग्य विशाल रें ॥ हि० ॥ ३५ ॥ राज्य अचिंतित में लह्यु रे, ए सवि तुम्ह प्रसाद ॥ हुं से वक छु रावलो, मनमा म धरो विषाद रे ॥ हि० ॥३६ ॥ जाणीनें पण तुमकने रे,नीच कराव्यु काम ॥ ते गुनहो सवि मादरो,खमजो तमें कहु

रीझी रही तु अजाण रे ॥ हि० ॥४॥ शीलवती कहे माहरे रे, वालमजी निज हाथ ॥ वेणी रची ए प्रेमशु, पहेराव्यो कंचुक नाथ रे ॥ हि० ॥ ५॥ पियुहाथे ए ऊतरे रे,शाने कह्यो काइ वात ॥ कत विना हुं कोइनवि, मानु कहेण तिलमात रे ॥ हि० ॥ ६ ॥ राय कहे हु ताहरो रे, भा नामिनी तु नरतार ॥ शीलवती कहे स्वामीने, न घटे कहेवो ए वि चार रे ॥ हि० ॥ ७ ॥ सकल प्रजा रक्षक तुम्हे रे,पंचम गो लोकपाल ॥ करता ए अन्यायने, पृथिवी जाय रसाताल रे ॥ हि० ॥ ८ ॥ जे कु शील पराजवी रे, सतीयोनो आधार ॥ ते जो शील खंमन करे तो, नहि कोइ राखणहार रे ॥ हि० ॥ ९ ॥ जेहनी रक्षा तेहथी रे, जय ऊपजे जगमांहे ॥ वाड जखे जो चीजडा तो, कुण करे एहनो न्याय रे ॥ हि० ॥ १० ॥ यडुक्त ॥ गोत्र विगोपितं तेन, पौरुष चरितं तथा ॥ भ्रा मितोमेदिनीपीठे, ऽयश पटहकोऽखिले ॥ २ ॥ महार्घ्यमपि तेन स्व विहितं रजसा सम ॥ परस्त्रीसेवन येन, निर्लज्जेन कृतं खलु ॥ ३ ॥ युग्म ॥ पूर्व ढाल ॥ पासें वाणी तव कहे रे, सुण नडे ऊजमाल ॥ सहु वांछे जे हने त्रिया,तुज वाछे ते चूपाल रे ॥ हि० ॥११॥ शीलवती कहे मुज तमने रे, कत अने के अगन्न ॥ ते विणु कोइ अम्मे नहीं,साचु मानजो मन्न रे ॥ हि०॥१२॥ यत ॥ दोहो ॥ केसरि केश भुयंग मणि, सरणाइ सुहडांह ॥ सती पयोधर कृपण धन, चढशे हाथ मुआह ॥४॥ पूर्वढाल ॥ राय कहे सकेतना रे, वचन प्रतीतिने काज ॥ साहामु जोइ निहाल तु,खोटु कहेतां मुज लाज रे ॥ हि० ॥ १३ ॥ आव्यो इहा हु एकलो रे, शूरपाल अनि धान ॥ राय अपुत्रियो इहां मूउ,थइ वेगे हु राजान रे ॥ हि० ॥ १४ ॥ प्रत्यय सहित सुणी करी रे, वयण विमासे नारि ॥ कत सही ए माहरो, जाणे इगित आकार रे ॥ हि० ॥ १५ ॥ तब सन्मुख निरख्युं तेणें रे, उंलखियो निज कत ॥ मन विकस्युं तन उल्लस्युं,नाठी मनडानी भ्राति रे ॥ हि० ॥ १६ ॥ सा हर्षित मनमा हुई रे, थयु रोमांचित अग ॥ जेम घनदर्शन मोरडी, तेम वाध्यो अंतररंग रे ॥ हि० ॥ १७ ॥ दासीने फरमावीयु रे,खासी करो एहनी सेव ॥ ए गुणवती स्वामिनी, सेवो एहने जेम देव रे ॥ हि० ॥१८॥ स्नान कराव्युं तेहने रे,चदन तनु चरचाय ॥ पट्टांशुक पहेराविया,वर आनूषण शोजाय रे ॥ हि० ॥ १९ ॥ श्यामा ते

शोभे घणु रे, रूपवती रति रत्न ॥ जूषण छवि शोभे घणी, दीठे होय न रने अचन्न रे ॥ हि० ॥ २० ॥ रमझम करती कामिनी रे, आवी नृ पति पास ॥ नृप आदर आपे घणो, दीधु अर्द्धासन तास रे ॥ हि० ॥ २१ ॥ सामत मत्रीश्वर सवे रे, उठी करे प्रणाम ॥ तिण दिन शांति मती हती, साथे वली गइ निजधाम रे ॥ हि० ॥ २२ ॥ गुप्तक्षेप वेला तदा रे, नासी गइ निजगेह ॥ निज कुटुवनी आगलें, वात आवी कही सवि तेह रे ॥ हि० ॥ २३ ॥ निज हठथी हठिणी सही रे, बेठी हो का रागार ॥ सहु कहे जुगतु एहने,कीधु एणें किरतार रे ॥ हि० ॥२४॥ जे हठ वादी घणु होवे रे, ते पामे डुःख एम ॥ वृद्ध कह्यु जे मानशे, ते पग पग लेहशे क्षेम रे ॥हि०॥२५॥ ठो थाती ए पाधरी रे, छु ठेडाव्यानु काम ॥ एह हठीलीनु हवे, मत लेजो कोइ नाम रे ॥ हि० ॥ २६ ॥ एक दिन ते महिपालने रे, नृपें तेड्यो सकुटुब ॥ जोजन कारण आवियां, निज जनक ने वधव अब रे ॥ हि० ॥ २७ ॥ स्नान कराव्या तेहोने रे, व सन जलां अति चग ॥ आजूषण पहेराविया, राजायें धरी मन रग रे ॥ हि० ॥ २८ ॥ मनमां महिपालादिका रे, वारु विमासे विचार ॥ आपणने ए राजियो, केम एम करे उपचार रे ॥ हि० ॥ २९ ॥ जेने जे हथी रे लहेणु होवे रे, निर्गुण पण तस पास ॥ पामे लाज अचितव्यो, नहिं इहा कोइ अवर विमास रे ॥ हि० ॥ ३० ॥ आसन रम्य वेसा रिया रे, जोजन काज ते वार ॥ थाल विचित्र मम्नावीने, नृप पण वेठो गुणधार रे ॥ हि० ॥ ३१ ॥ नृप आदेश आवे तिहां रे, शीलवती वर नारी ॥ पूर मनोरथ आपणा, प्रिये चिरसचित इण वार रे ॥ हि० ॥ ३२ ॥ पिरसे जोजन प्रेमशु रे, अहो अहो जक्ति अपार ॥ चिते महि पाल चित्तशु, सही इहा कणे कोइ विचार रे ॥ हि० ॥ ३३ ॥ जोजन करि उठ्यां सवे रे, वेसार्यां आसन्न ॥ शूरपाल महिपालने रे, चरणे नमे थइ प्रसन्न रे ॥ हि० ॥ ३४ ॥ तात ते हुं तुम अगजो रे, नामें जे शूरपाल ॥ मात पिता तुम्हें माहरा, मलिया मुझ जाग्य विशाल रे ॥ हि० ॥ ३५ ॥ राज्य अचितित में लह्यु रे, ए सवि तुम्ह प्रसाद ॥ हु से वक छु राखजो, मनमां म धरो विपाद रे ॥ हि० ॥३६ ॥ जाणीनें पण तुमकने रे,नीच कराव्यु काम ॥ ते गुनहो सवि माहरो,खमजो तमें कहु

शिर नामि रे ॥ हि० ॥ ३७ ॥ शीलवती कर जोडीने रे, नांखे व नामी शीश ॥ खमजो मुज अपराध ए, तुमने जे वढावी रीव रे ॥ हि० ॥३८॥ तुम वचनें नवि मूकियो रे,में कमुक तेण गाम ॥ ते मुज आके कतनो, कुलवती केम लोपाय रे ॥ हि० ॥३९॥ महिपाल पण हरखिय रे, उल्लखियो निज नंद ॥ जाग्य वडु वत्स ताहरु, दीठे थयो आनंद रे ॥ हि० ॥ ४० ॥ तुज देखी मुज मने रे, वाध्या हर्षकल्लोल ॥ सिंधु जेम शीतांशुने, जेम पसरे जग कल्लोल रे ॥ हि० ॥ ४१ ॥ कर जोडी जनं रह्यो रे, जनक आगल गुणवंत ॥ जनक उपाडी शूरनें, सिंहासन बे ठवंत रे ॥ हि० ॥ ४२ ॥ सुसरो शीलवती जणी रे, कहे पुत्री तु धन्य धन्य ॥ जीवलोकमा तुज समी,नवि दीठी में कोइ अन्य रे ॥ हि० ॥४३॥ जेह मनोरथ ताहरा रे, होता घणु असंजाव्य ॥ तुज जाग्ये अणचिं तव्या, थया संपूर्ण सद्भाव रे ॥ हि० ॥ ४४ ॥ राख्यु शील तें आपणु रे,नवि लोपी पियु आण ॥ तो सवि नारीमा शिरें तु,बेटी थइ गुणखाण रे ॥ हि० ॥४५॥ पग पग तुजने दूहवी रे,ते खमजे अपमान ॥ शीलवती कहे तातजी,तेहथी मुज वाध्यो वान रे ॥ हि० ॥४६॥ मात पिता सुसरा तणी रे, शीख कल्पतरु ठाय ॥ मुजने मानेवी घटे,जेहथी वांछित सुख थाय रे ॥ हि०॥४७॥ सहु परिवार मल्यो तिहा रे, आनंद अंगन माय ॥ पिस्तालीशमी ढालमा, एम प्रगट्यो पुण्य पसाय रे ॥ हि० ॥४८॥१७९२॥

॥ दोहा ॥

॥ शूरपाल नृपति हवे, तेड्या सवि सामंत ॥ कहे महिपाल ए मुज जनक,ए मुज बांधव गुणवंत ॥१॥ ए माताजी माहरी, ए जोजाई सार ॥ कर जोडी प्रणमो तुम्हें,ए माहरो परिवार ॥२॥ एम कह्याथी सवि नम्या, स्वामी आण प्रमाण ॥ नयरमांहे उत्सव हुवो, वाज्यां ढोल निशान ॥३॥ निजबांधवने मानश्यु, जूरि देशनुं राज्य ॥ आपीने हर्षित कस्या, सीध्यां वांछित काज ॥ ४ ॥ पुण्य पसायें जोगवे, मनोवांछित वर जोग ॥ शीलवतीशुं प्रीति बहु, सरिखो मल्यो संयोग ॥ ५ ॥

॥ ढाल छेंतालीशमी ॥

॥ होजी लुंबा फूबा वरसीलो मेह, आजूनो दहाडो रे धणरी प्रीजनो हो लाल ॥ ए देशी ॥ होजी जोगवे ते सुख जोग,न्यायधर्मे वरते घणो ॥

हो लाल ॥ होजी पुण्य तणे संयोग,तेज सबल ते नृप तणो ॥ हो लाल ॥ १ ॥ होजी वैरी नम्या सवि पाय, आवी करे सहु चाकरी ॥ हो० ॥ होजी एके आरे दोय, पाणी पिये वाघ बाकरी ॥ हो० ॥ २ ॥ होजी वलीयो शूरपाल राय,माय तायनी करे सेवना ॥ हो० ॥ होजी साते व्य सन निवार, पद प्रणमे जिनदेवना ॥ हो० ॥ ३ ॥ होजी एक दिवस उद्यान, श्रुतसागर मुनि आविया ॥ हो० ॥ होजी षट्कायना रखवाल, सहु ऊपर सम भाविया ॥ हो० ॥ ४ ॥ होजी वदन काज नरेंद्र, तात प्रिया सार्थे चल्या ॥ हो० ॥ होजी आवी वनह मफार, गुरु वंदे हेजें ह ल्या ॥ हो० ॥ ५ ॥ होजी गुरु दिये देशन सार, ए ससार अशाश्वतो ॥ हो० ॥ होजी एक जिनधर्म ए सार, करो दिल राखी हिसतो ॥ हो० ॥ ६॥ होजी तन धन यौवन एह,जाय नदीना पूर ज्यु ॥ हो० ॥ होजी का रिमो सयण सनेह, उमी जाये अर्कतूल ज्यु ॥ हो० ॥ ७ ॥ होजी कू डो ए राज्यविलास, आश किसी करो एहनी ॥ हो० ॥ होजी जलमां जेम पतास, तेम पुजलठवि देहनी ॥ हो० ॥ ८ ॥ होजी ग्रहे श्रावकनो धर्म, निसुणी गुरुनी देशना ॥ हो० ॥ होजी पूछे कहो मुफ मर्म,कर्म क स्या श्या क्लेशनां ॥ हो० ॥ ए ॥ होजी केम दुःखने वली सुख, पाम्यो प्रभु परकाशियो ॥ हो० ॥ होजी गुरु कहे सुण राजेंद्र, दानगुणें चित्त वासियो ॥ हो० ॥ १० ॥ होजी कस्यो तें अतिथिसविभाग, पूरवभव ते सांभलो ॥ हो० ॥ होजी कहे मुनिवर वडभाग, सुणे नृप मूकी आमलो ॥ हो० ॥ ११ ॥ होजी भरतें भूमिप्रतिष्ठ, नयरें वीरदेव नामथी ॥हो०॥ होजी निवसे श्रावक एक, जस मनमां शका नथी ॥ हो० ॥ १२ ॥ हो जी तस घरे सुव्रता नारी, चित्त चोखी शुद्ध श्राविका ॥ हो० ॥ होजी मा ने निजगुरु आण, समजू सूधी भाविका ॥ हो० ॥ १३ ॥ होजी अष्टमी दिन एक वार, वीरदेव पौषध आदस्यो ॥ हो० ॥ होजी पारण दिन उज माल, चिंते एम हर्षे भस्यो ॥ हो० ॥ १४ ॥ होजी जगमां ते नर धन्य, पौषधव्रतने पारणे ॥ हो० ॥ होजी पडिलाभे शुद्ध अन्न, मुनिवरने हित कारणें ॥ हो० ॥ १५ ॥ होजी करी दिशि अवलोक, करवा लाग्यो चिहु दिशें ॥ हो० ॥ होजी आवतु मुनियुग दीठ, देखी विलडे उल्लसे ॥ हो० ॥ १६ ॥ होजी सहामो जइ वीरदेव, पडिलाभे मुनि भावशु ॥ हो० ॥ हो

जी अनुमोदे तस नारी, दान मुनिनु मन वस्यु ॥ हो० ॥ १७ ॥ होजी पया सुरुतारथ दोय, मुनिवर चोरीने वल्या ॥ हो० ॥ होजी नृपतीना ति णि वार,मनह मनोरथ सवि फल्या ॥ हो०॥ १८॥ होजी पाल्युं तेणें बहुकाल, श्रावकव्रत नावें करी ॥ हो० ॥ होजी करि अणसण अतकाल, गया स्वर्गे ते मरी ॥ हो० ॥ १९ ॥ हजी तिहांथी चवी नरदेव, शूरपाल थयो तुं सही ॥ हो० ॥ होजी नारीनो ते जीव, शीलमती इहांकणे थइ ॥ हो० ॥२०॥ होजी पूरवनव दत्त दान,तास प्रनावें पामिया ॥ हो०॥ होजी चिंतित धन सन्मान, तुम्हे लह्या सवि सुख कामिया ॥ हो० ॥२१॥ होजी एम सानली ततकाल, जातिसमरण उपन्यु ॥ हो० ॥ होजी दीठु सवि शूर पाल, पूरवनवरुत आपणु ॥ हो० ॥ २२ ॥ होजी चइपाल सुतने राज्य, सोंपी जनक नारी सही ॥ हो० ॥ होजी त्रिहु जणें लीधी दीख, क्रोध कपाय धरे नहि ॥ हो० ॥ २३ ॥ होजी पाली विशुद्ध चारित्र, घाती करम क्षय घातिया ॥ हो० ॥ होजी त्रिहु जण लही वर नाण, मुक्ति गया नव जीतिया ॥ हो० ॥ २४ ॥ होजी कहे एम शांति नगवान, अ तिथिसंविनाग व्रत ऊपरें ॥ हो० ॥ होजी निसुणो पर्षद बार, जिनवर वा णी ए आदरें ॥ हो० ॥ २५ ॥ होजी ठंठे कही ए ढाल,हर्षे तेंतालीसमी ॥ हो० ॥ होजी राम कहे नजमाल,नवि सुणजो साकर समी ॥हो०॥२६॥ इति द्वादश अतिथिसंविनागव्रते शूरपालकथानकम् ॥ १२ ॥ १०२७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एम व्रत बारे जिन कह्या,श्रावकनां अतिसार ॥ चक्रायुध नृप आग लें, नविजनने उपगार ॥ १ ॥ धर्म गृहीनो साधता, करे निज आतम शुद्धि ॥ चढते परिणामें चढी, संयम ग्रहे विबुध ॥ २ ॥ अथवा एकादश वली,पडिमा वहे सुजाण ॥ अंते अणसण आदरे,श्रावक तेह सुजाण ॥ ३ ॥ त्रिधा चतुर्धा आदरे,अणसण ने सागार ॥ वर्धमान परिणामथी,पाले निरतिचार ॥ ४ ॥ इह लोकाशंसा प्रथम, तिम परलोकाशंस ॥ जी वितआशंसा कही, तेम वली मरणाशंस ॥ ५ ॥ काम नोग वांछे नहि, पंच दोष ए टाल ॥ आराधे संलेखना, श्रावक थइ नजमाल ॥६॥ जघन्य आयु सौधर्मनुं,अच्युत सुर उत्कृष्ट ॥ सुरलोकें सुख नोगवी,शिवपद लहे अनीष्ट ॥७॥ धर्म एह श्रावक तणो,बीजो मुनिवर धर्म ॥ पंच समिति

त्रण गुप्तिशुं,साध्यो दे शिवशर्म ॥७॥ एह अनतर हेतु छे,शिवपदनो मुनिधर्म ॥ निश्चय समकितशुं धस्यो, क्षणमें दे शिवशर्म ॥ए॥यत ॥ एग दिवसपि जीवो ॥

॥ ढाल सडतालीशमी ॥

॥ नलराजारे देश, होजी पुगलछूती पल्हाणीया ॥ए देशी ॥ निसुणि श्री जिनवाण,होजी कहे चक्रायुध नृपति ॥ तारो हो त्रिभुवन स्वामि,हो जी द्यो मुऊ दीक्षा जिनपति ॥ १ ॥ नमियो नवमा जोर, होजी चोर कर्म आठे अह्या ॥ कडुआ कठिन कपाय, होजी काल अनादिना रहे नह्या ॥ २ ॥ नाजो ए डुशमन जोर, होजी कगारो अरिहंत जी ॥ करुं प्रजु तुमने निहोर, होजी नक्तवत्सल नगवत जी ॥ ३ ॥ जन्मजरा मरणादि, होजी अगने दीपित अति घणु ॥ नवगृहथी निस्तार, होजी प्रजुजीशुं तुम अति नणु ॥ ४ ॥ प्रजु कहे करुणावत, होजी धर्में विलव न कीजीयें ॥ जो मनहुं होय ठाम,होजी तो शुचि सयम लीजियें॥५॥ सुत स्थापी निज पाट,होजी पांत्रीश नृपशुं परवस्यो ॥ चक्रायुध जिन हाथ, होजी नावें सयम आदस्यो ॥ ६ ॥ दीधी जिनजीयें दीख, होजी शीख महे जिनवर कने ॥ कर जोडी प्रजु पास, होजी पूछे तत्त्व कहो मुने ॥ ७ ॥ तत्त्व कहे उतपत्ति, होजी जइ एकांतें चितवे ॥ समयसमय ए जीव, नारकी आदिक सनवे ॥७॥ एम उपजता तेह,नुवनत्रय माये नहिं॥ एम धरी सशय चित्त, होजी प्रजु पासें पूछे जइ ॥ ए ॥ प्रजु प्रकाशो तत्त्व, होजी विगम कहे त्रिजुवन धणी ॥ पुनरपि जइ एकात, होजी विगम विचारे बहु गुणी ॥ १० ॥ सर्व विगम जो होय, हो शून्यपणु तो जग नजे ॥ न रहे जगमा कोइ, होजी वस्तु विगमने उपजे ॥ ११ ॥ पुनरपि पूछे तत्त्व, होजी स्थिति नाखे शासनपति ॥ समज्या सकल स्वरूप, होजी सशय न रह्यो एक रति ॥ १२ ॥ त्रिपदीने अनुसार, होजी अग डुवालस ते रचे ॥ एम सघलाएक रीति, हो द्वादशांग विरचे रुचें ॥१३॥ आवे पछे प्रजुपास,होजी आसनथी जिन उठीया ॥ इइ आवे नरि थाल, होजी वासें मन सतुठिया ॥ १४ ॥ वास लेई प्रजु हाथ, होजी आपे सघने मन रुली ॥ दीये प्रदक्षिणा तीन, होजी प्रजु पूठें ते लली लली ॥ १५ ॥ तस शिर स्थापे वास, होजी सघ सहित जिनवर मुदा ॥ गण धरपद अधिवास, होजी एम सहुनो कीधो मुदा ॥ १६ ॥ अवर वली

नर नार, होजी प्रभुजीयें बहु दीक्षित कर्या ॥ अहिया संयमभार, होजी सहेजे भव सायर तर्या ॥ १७ ॥ चरण सहस नर नारि, होजी ते हुवा श्रावक श्राविका ॥ शुद्ध समकित व्रतधार, होजी ते सहुये मन भाविका ॥ १८ ॥ एम चतुर्विध संघ, होजी शांतिजिणेसर स्थापियो ॥ समकित रयण अमूल, होजी प्रभुजीयें सहुने आपीयो ॥ १९ ॥ पोरिसि अंतें जिनभाण,होजी देववंदक माहे आविया ॥ बीजा वप्र मजार,होजी जगगुरु सहु मन भावीया ॥२०॥ जिनवरने पाद पीठ,बेसे प्रथम तिहां गणधरु ॥ बीजी पोरसीमाहे, होजी करे व्याख्यान मनोहरु ॥२१॥ सघनी आगल म, होजी कहे कथा अघहारिणी ॥ अंतरंग वात विनोद, होजी धर्म नी स्थिरता कारिणी ॥ २२ ॥ सडतालीशमी ढाल, होजी छठे खंर्मे सोहा मणी॥रामविजय कहे एम,होजी सांभलो आतम हितभणी॥२३॥१८५६॥

॥ दोहो ॥

॥ मोहराजके राजमा, धर्मराजकी आण ॥ वर्तावे चेतन तदा, जी वित जन्म प्रमाण ॥ १ ॥

॥ ढाल अडतालीशमी ॥

॥ हो प्रभु मंदेर कर महाराज ॥ ए देशी ॥ *क्षेत्र मानव लोकमांहे,* देह नयर मभाण ॥ मोहनामा वडो नरपति, जगत सहु जस आण ॥ १ ॥ रे जीव समज सुगुण सुजाण ॥ तुतो म धर मोहनी आण, हारें जेम लहे कोडि कल्याण ॥ रे जीव० ॥ ए आंकणी ॥ मोह घरणी रंगें परणी माया नामें नारि ॥ तेह देहुथी उपन्यो सुत,सबल मदन कुमार ॥ रे जी०॥ २ ॥ लोभ नामें महामंत्री,क्रोध दुर्द्धर पास॥राग द्वेष महारथी दो, मिथ्यात्व जास खवास ॥ रे जी० ॥३॥ मान नामें वडो गजवर,मोह वाहन जोर ॥ चढ्यो इंद्रिय अश्व उपर,करत सबलो शोर ॥ रे जी० ॥४॥ विषय त्रेवीश मोह आगल,खडे रहत चोबदार ॥ एकएकपें उमराव पोठे, चढत पाप अढार ॥ रे जी० ॥५॥ आठ बांधव राज विलसे, रूप शत अ डवन्न ॥ एक पूठे अनंत वर्गण, सेन चढत अगण्य ॥ रे जी० ॥ ६ ॥ प्राण वाणिज वसे उनमें, चित्त पुर आरक्ष ॥ राज सबलो मोह केरो, साचवे थइ दक्ष ॥ रे जी० ॥ ७ ॥ निसुणी गुरु उपदेश भीतर, फिरे म न आरक्ष ॥ देहपुरमां धर्म नृपति, लहे प्रवेश प्रत्यक्ष ॥ रे जी० ॥ ८ ॥

वृत्ति आर्जवनामे राणी, तेहेनी मनोहारि ॥ धर्म नृपति कत सार्थे, रहे अन्नेद विचार ॥ रे जी० ॥ ए ॥ सचिव महोटो सवल गुणवत, नामथी सतोप ॥ अहोनिशें निज स्वामीसेती, वाध्यो प्रेमनो पोप ॥ रे जी० ॥ १० ॥ मम्लेश्वर अठे आगें, नाम समकित धीर ॥ सामत व्रत गुण मूल केरा, रहत पास अन्नीरु ॥ रे जी० ॥ ११ ॥ अणुव्रतादिक पत्ति व हुला, रहत जास समीप ॥ मार्तंग मार्दव नाम गर्जत, वडो ए अवनीप ॥ रे जी० ॥ १२ ॥ योध उपशम आदि जिनके, वहुत हे जूजार ॥ चारित्ररथ चढी चलत आगें, श्रुत सेनानी सार ॥ रे जी० ॥ १३ ॥ करी मानस हाय अपने, सवल धर्मनरिंद ॥ देहपुरमा आय अ पनी, वसति करे अहमिद ॥ रे जी० ॥ १४ ॥ निर्धाटियो तव मोह नृपकों, वरती अपनी आण ॥ मोहको अवकाश कोइ, देहु मत गुण खाणि ॥ रे जी० ॥ १५ ॥ वहुत दिनकी आण उनकी, करत हूवे हे रान ॥ विश्वास ए अन्याय नृपको, म कर चतुर सुजाण ॥ रे जी० ॥ १६ ॥ जो कदाचित् मोहके वश, होत ए अज्ञान ॥ कर्मपरिणति फेरि उनकों, लेइ स्थापे ठाण ॥ रे जी० ॥ १७ ॥ जेम अनीतिपुरें विप त्तिमा, वणिकसुत बुद्धि दान ॥ रत्नचूडने उद्धस्यो यम, घट गणिका जाण ॥ रे जी० ॥ १८ ॥ कुण हुउ ते कवण गामें, कहे सघ कर जोडि ॥ कहे गणधर प्रथम तेहनी, कथा मनने कोड ॥ रे जी० ॥१ए॥ खम्ड ठठे एह नांखी, ढाल ए अडयाल ॥ रत्नचुड तणु हवे नवि, सुणो चरित उजमाल ॥ रे जी० ॥ २० ॥ सर्व गाथा ॥ १८७७ ॥ श्लोक॥८७॥

॥ दोहा ॥

॥ नरतक्षेत्रमा अति नली, वहु इन्यनो वास ॥ तामलित्ती नगरी घणु, दीठे होय उल्लास ॥ १ ॥ गढ मढ मदिर मालीयां, चोराशी वा जार ॥ अमरपुरी मनु अवतरी, मानव लोकमजार ॥ २ ॥ सदाचार वासे वसे, रत्नाकर तिहा शेठ ॥ दोलतने दोरें करी, बीजा सहु ए हेठ ॥ ३ ॥ तस घरणी पुण्यातमा, लावण्यरूप निधान ॥ सरस्वती नामें नली, प्रीतमनु बहु मान ॥ ४ ॥ निजकरगत महारत्न शिख, उद्योतित निजधाम ॥ निशा शेप देखी सुपन, कहे पियुने अन्निराम ॥ ५ ॥ प्रिये तनय होशे नलो, हरखी निसुणी वाणि ॥ सुत जन्म्यो समयें तिणें,

चत्नचूड अभिधान ॥ ६ ॥ बालापणे शीखी कला, सकल करी तेणे चूप ॥ यौवन वय मन मोहतो, मानिनी तणा अनूप ॥ ७ ॥

॥ ढाल छंगणपञ्चासमी ॥

॥ मन मोहना लाल ॥ ए देशी ॥ एक दिवस हट शहेरमां रे ॥ मन मोहना लाल ॥ चाल्यो रत्नचूड ताम हो ॥ जनरंजना लाल ॥ मारगमां सामी मली रे ॥ म० ॥ सौभाग्यमंजरी नाम हो ॥ जन०॥ १ ॥ नृप मन मानीती घणु रे ॥ म० ॥ गणिका ते मदवंत हो ॥ ज० ॥ सर्वे तेणे दूहवी रे ॥ म० ॥ बोले ते एम तंत हो ॥ ज० ॥ २ ॥ पालव साही तेहनो रे ॥ म० ॥ बोली करी उपहास्य हो ॥ ज० ॥ नंदन सुण तु शोवना रे ॥ म० ॥ पमित जननी जास हो ॥ ज० ॥ ३ ॥ धर्ने अनेक मूकापणु रे ॥ म० ॥ पश्यतने पण होय हो ॥ ज० ॥ जे तु बाल दिवसमा रे ॥ म० ॥ न चले सदामु जोय हो ॥ ज० ॥ ४ ॥ देखे नहिं मुफ आवती रे ॥ म० ॥ धनमद न घटे ए तुज्ऊ हो ॥ ज० ॥ ते मार्टे कहे नीतिना रे ॥ म० ॥ जाण वचन ए गुज्ऊ हो ॥ ज० ॥ ५ ॥ जनक उपार्जित वित्तशुं रे ॥ म० ॥ न करे कोण विलास हो ॥ ज० ॥ निजभुज अर्जित संपदा रे ॥ म० ॥ विलसे तस सावाश हो ॥ ज० ॥ ॥ ६ ॥ एम कही स्थानक गई रे ॥ म० ॥ गणिका गुणनु पात्र हो ॥ ज० ॥ रत्नचूड मन चिंतवे रे ॥ म० ॥ करु हवे परदेशयात्र हो ॥ ज० ॥ ७ ॥ सत्यवचन करवु सही रे॥ म० ॥ एहनु में धनहेत हो ॥ ज० ॥ धन आणी परदेशथी रे ॥ म० ॥ करु पूर्ण संकेत हो ॥ ज० ॥ ८ ॥ घर आव्यो रत्नचूडजी रे ॥ म० ॥ मन धरतो विषवाद हो ॥ ज० ॥ पूछे पिता आवी तदा रे ॥ म० ॥ धरतो मन आल्हाद हो ॥ ज० ॥ ए ॥ श्याम वदन केम ताहरु रे ॥ म०॥ दीसे कां दिलगीर हो ॥ ज० ॥ किसी अनुरति ताहरे रे ॥ म० ॥ तु मुज मनडानो हीर हो ॥ ज० ॥ ॥ १० ॥ तात जश्श परदेशमां रे ॥ म० ॥ धन उपराजण काज हो ॥ ज० ॥ यौवनवय निज जनकनी रे ॥ म० ॥ ऋद्धि जोगवतां लाज हो ॥ ज० ॥ ११ ॥ कहे रत्नाकर वत्स तु रे ॥ म० ॥ नानडियो मुक्त भार हो ॥ ज० ॥ केम परदेशें एकलो रे ॥ म० ॥ में मोकलाये बाल हो ॥ ज० ॥ १२ ॥ वत्स विलसो सुख मंदिरें रे ॥ म० ॥ नित्य नवला

ए नोग हो ॥ ज० ॥ वेग तुऊ केम उपन्यो रे ॥ म० ॥ परदेशों ज
वानो रोग हो ॥ ज० ॥ १३ ॥ विषमपथ परदेशनो रे ॥ म० ॥ इंद्रिय
वश होय जास हो ॥ज०॥ नारी लालचें नवि पडे रे ॥म०॥ बोले वचन
विमास हो ॥ ज० ॥ १४ ॥ ते परदेशों संचरे रे ॥ म० ॥ वत्स ए डु
ष्कर वात हो ॥ ज० ॥ रत्नचूड कहे माहरो रे ॥ म० ॥ न चले नि
श्चय तात हो ॥ ज० ॥ १५ ॥ इव्य लक्ष लेइ तातनु रे ॥ म० ॥ उधारे
परदेश हो ॥ ज० ॥ चाले करियाणु ग्रही रे ॥ म० ॥ कोइक वाहण
वेसि हो ॥ ज० ॥ १६ ॥ शेठ शीखामण दे घणी रे ॥म०॥ वत्स रहेजो
हुशियार हो ॥ज०॥ पुर अनीति मत जायजो रे ॥म०॥ ज्या नहि न्याय
विचार हो ॥ ज० ॥ १७ ॥ तिहां नृपति अन्याय छे रे ॥ म० ॥ अवि
चारित प्रधान हो ॥ ज० ॥ सर्वग्राह्य आरक्षको रे ॥ म० ॥ लहे नृ
पनु बहुमान हो ॥ ज० ॥ १८ ॥ नाम अशांति पुरोहितो रे ॥ म० ॥
गृहितजक्षक शेठ हो ॥ ज० ॥ मूल नाश सुत तेहनो रे ॥ म० ॥ नय
रमाहे बहु वेठ हो ॥ ज० ॥ १९ ॥ रणघटा गणिका तिहा रे ॥ म० ॥
यमघटा तस माय हो ॥ ज० ॥ द्यूतकार चोरादिका रे ॥ म० ॥ बहु
निवसे डुखदाय हो ॥ ज० ॥ २० ॥ लोक वसे तिहा अति घणा रे
॥ म० ॥ उचा जस आवास हो ॥ ज० ॥ जे अजाण जाये तिहा रे
॥ म० ॥ पाडे तेहने पास हो ॥ ज० ॥ २१ ॥ एवु अनीतिपुर मूकीने
रे ॥ म० ॥ करजो सुखें व्यवसाय हो ॥ ज० ॥ जनक शीखामण चित्त
धरी रे ॥म०॥ चाल्यो ते सुखदाय हो ॥ ज० ॥ २२ ॥ शकुन जला थया
तेहने रे ॥ म० ॥ वेग प्रवहण तेह हो ॥ ज० ॥ चाल्या जलनिधिमा
सुखें रे ॥ म० ॥ धरता हर्ष अछेह हो ॥ ज० ॥ २३ ॥ धीवर इङ्गित
द्वीपने रे ॥ म० ॥ चलव्या पण ते वाय हो ॥ ज० ॥ जोरावर जवित
व्यता रे ॥ म० ॥ आव्या अनीतिपुर गाय हो ॥ ज० ॥ २४ ॥ पोत
देखी ते आवतु रे ॥ म० ॥ हरख्या सघला लोक हो ॥ ज० ॥ हेरि कोट
ऊची करी रे ॥ म० ॥ रविदरिसण जेम कोक हो ॥ ज० ॥२५॥ हवे ज
वियण तुम्हें सांजलो रे ॥ म० ॥ ए संबध रसाल हो ॥ ज० ॥ छठे उंग
णपचास रे ॥म०॥ राम कहे उजमाल हो ॥ज०॥ २६ ॥ १७१० ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वदरकाठे नागस्यु, वाहण तेणी वार ॥ कोइक नरने पूछीयुं, दीप नयर आचार ॥ १ ॥ चित्रकूट ए द्वीप ठे, पूर्वांदित अजिधान ॥ नगरादिकनु दाखव्यु, चमक्यो सुणी सुजाण ॥ २ ॥ अहो अजाण्यो आज हु, आव्यो एणे गाम ॥ जिहा जनकें वार्यो हतो, न थयु चिंतित काम ॥ ३ ॥ पण मुज एक आधार ठे, रे शकुनपवन अनुकूल ॥ मन उत्साह तेम माहरो, शु करशे प्रतिकूल ॥ ४ ॥ शोच कियो करवो हवे, थाशे सघलु इष्ट ॥ पुण्यदशा जव पाधरी, दूर टले अनिष्ट ॥ ५ ॥ एम धीरज मनमा धरी, उतरिया तेणी वार ॥ रत्नचूड वेलातटे, करे निवास उदार ॥ ६ ॥ जाम उताख्या यानथी,दिये शुल्क धन तास ॥ राज पंचकुलने तिहा, रत्नचूड सुविलास ॥ ७ ॥

॥ ढाल पच्चासमी ॥

॥ जोरावर हाडाना गीतनी देशी ॥ तिण अवसर तेणि गाय रे, पुरमांथी आया,धन काज उमाह्या, चारे सम जाया, निगुणा ऊ खदाया,आवीने उजा रे चारे वाणीया रे ॥ १ ॥ पूछे कुशल क्षेम वात रे,जाइ जलें आव्या, देखी सुख पाव्या, साजनजी सोहाव्या, कहोने शु लाव्या, लावो रे करियाणु ते लेशुं अम्हें रे ॥ २ ॥ निसुणी एहवी वात रे, हरख्यो मनमाहे, चिते रे उत्साहें, दीसे ए शाहें, कूडी नहि प्राहें, मुझ रे दीसे ठे शाहुकारनी रे ॥ ३ ॥ कहे धूर्त ते चार रे, वाहालेसर मोरा, करीयें ठेयें निहोरा, सुण साजन गोरा, करियाणां तोरां, लेशुं रे रंगेशुं सघलाही अम्हें रे ॥ ४ ॥ वेचशुं एहनु मूल रे, जेवु तमने गमशे, दारिद्र निगमशे, आरति सवि समशे, वाछित सवि सरशे, वेचशुं रे जरी वाहण जे कहेशो तेणें रे ॥ ५ ॥ आप्यो सघलो माल रे, लेइने ते चाल्या, मनमांहे माल्या, रंगेशु रेल्या, आव्या पुर ठेल्या, माल वहेंची ने घेरे लइ गया रे ॥ ६ ॥ हवे रत्नचूड कुमार रे, मन धरी आनदा, देखे नरवृदा, मुख पूनमचदा, साजन सुख कंदा,आवे रे नयरीनो नरपति जेटवा रे ॥ ७ ॥ विचमाहे कारुक एक रे, सहामो तस आयो, धींगड मल्ल धायो, प्रणमी कहे पायो, कुवरजी लायो, अवज तुमारे काजें पाडुका रे ॥ ८ ॥ देवरावी तंबोल रे, कहे कुवर रंगें, मनने उछरंगें, निसुणो एकगें, जाणो ए अजंगें, करीश खुशाल

हु जातां तुऊने रे ॥ ए ॥ आगल चाल्यो कुमार रे, कोइ सहामो आव्यो, धूरतमां चावो, काणे कस्यो दावो, मुऊ लोचन लावो, सहसमाटें रे सोंप्यु तह्मारा वापने रे ॥ १० ॥ एम कही आप्यु धन तास रे, हियडामा चिते, कुवर एकातें, वोले ए सतें, गिरुत गुणवतें, नाखे रे आवासें लेवा आवजो रे ॥ ११ ॥ आगल जाता चार रे, व्यसक वलि मलिया, वोले फल फलिया, माहोमाहे नलिया, कुवर सांनलिया, वात करे रे वाद तणी तिहा रे ॥ १२ ॥ एक कहे समुद्रनु नीर रे, गगाना कणीया, ए ठे अणगणिया, वुद्धिमत वहु नणिया, तेणें न जाये गणिया, पण न गणीजे रे वनिताहृदयने रे ॥ १३ ॥ वीजो वोले उक्ति रे, एहवी ए नाखी, हियडामा राखी, सुणजो सहु साखी, कामित आकाखी, ग्रथने नारी हृदय न को लहे रे ॥ १४ ॥ त्रीजो वोले ताम रे, कपटी सिरदार, वयणा निर्धार, खोटां न लगार, जाणे ए सार, शुक्र गुरुनी सरिखो वुर्द्धजे हुवे रे ॥ १५ ॥ चोथो वोले ठेक रे, परदेशथी आयो, मोरे मन नायो, वालक ए कहायो, सूधो ठे माह्यो, जाणे रे सघली ए सुजा पित वारत्ता रे ॥ १६ ॥ वोल्यो अन्य तव दूरें रे, ए गगा दीसे, मनडुं केम हींसे, साचु कहीसें, माह्यो जाणीसे, मान करावो रे सायर जल तणु रे ॥ १७ ॥ एम कस्यो तेणें हववाद रे, उजम उपायो, न रह्यो मन साह्यो, अमर्ष मन आयो, ना एम न कहायो, कुवर तेणें रे वात अगी करी रे ॥ १८ ॥ सायर जलतणु मान रे, अमने करि आपो, तुमें वोल ए थापों, सशयने कापो, अम धन तुम दापो, नहितर लेशु रे ताहरी सपदा रे ॥ १९ ॥ एम कही लीयें तस वोल रे,ताली त्रण दीधी, प्रतिज्ञा कीधी, कारिज थइ सिद्धि, हुवो ठग डुर्बुद्धि, चाल्यो तें तिहाथी कुवर आगलें रे ॥ २० ॥ चिते मनमा एम रे, सहु ए ठग दीठा, हियडाना मीठा, मु हडाना मीठा, लागे ए अनीठा, माहरे रे जनकें ए कहिया तेहवा रे ॥ २१ ॥ ए कारिज निर्वाह रे, कहोने केम करशु, कोने जइ कहेशु, उत्तर स्यो देशु, यश केम इहा लहेशु, चिते रे चित्तमाहे रत्नचूड एहवु रे ॥ २२ ॥ चिते एक उपाय रे, गणिका घरे जाउ, वुद्धि कोइ उपाउ, जेम सुखीयो थाउ, माणसमा थाउ, इस्यु विमासी गयो गणिकाघरे रे ॥२३॥ ठठे पच्चासमी ढाल रे,नवियण सानलजो,कूड मत लवजो,ठग वुद्धि

॥ दोहा ॥

॥ वदरकाठे नागखु, वाह्ण तेणी वार ॥ कोइक नरने पूबीयुं, द्वीप नयर आचार ॥ १ ॥ चित्रकूट ए द्वीप ठे, पूर्वोदित अनिधाम ॥ नगरादिकनु दाखव्युं, चमक्यो सुणी सुजाण ॥ २ ॥ अहो अजाल्यो आज हु, आव्यो एणे गाम ॥ जिहा जनकें वाखो हतो, न पयु चिंतित काम ॥ ३ ॥ पण मुज एक आधार ठे, रे शकुनपवन अनुकूल ॥ मन उत्साह तेम माह्रो, शु करशे प्रतिकूल ॥ ४ ॥ शोच किस्यो करवो हवे, पाशे सघलु इष्ट ॥ पुण्यदशा जव पाधरी, दूरें टले अनिष्ट ॥ ५ ॥ एम धीरज मनमा धरी, उतरिया तेणी वार ॥ रत्नचूड वेलातटें, करे निवास उदार ॥ ६ ॥ नाम्ड उताखा यानथी,दिये शुल्क धन तास ॥ राज पंचकुलने तिहा, रत्नचूड सुविलास ॥ ७ ॥

॥ ढाल पच्चासमी ॥

॥ जोरावर हाडाना गीतनी देशी ॥ तिण अवसर तेणि ठाय रे, पुरमाथी आया,धन काज उमाह्या, चारे सम नाया, निगुणा ङु खदाया,आवीने उना रे चारे वाणीया रे ॥ १ ॥ पूछे कुशल क्षेम वात रे,नाइ नलें आव्या, देखी सुख पाव्या, साजनजी सोहाव्या, कहोने शु लाव्या, लावो रे करियाणु ते लेशु अम्हें रे ॥ २ ॥ निसुणी एहवी वात रे, हरख्यो मनमाहे, चिते रे उत्साहें, दीसे ए शाहें, कूडी नहि प्राहें, मुझ रे दीसे ठे शाहुकारनी रे ॥ ३ ॥ कहे धूर्त ते चार रे, वाहालेसर मोरा, करीयें ठेयें निहोरा, सुण साजन ठोरा, करियाणा तोरा, लेशु रे रंगेंशु सघलाही अम्हें रे ॥ ४ ॥ देशुं एहनुं मूल रे, जेवु तमने गमशे, दारिद्र निगमशे, आरति सवि समशे, वाछित सवि सरशे, देशु रे नरी वाह्ण जे कहेशो तेणें रे ॥ ५ ॥ आप्यो सघलो माल रे, लेइने ते चाल्या, मनमांहे माल्या, रंगेशुं रेल्या, आव्या पुर ठेल्या, माल वहेंची ने घेरे लइ गया रे ॥ ६ ॥ हवे रत्नचूड कुमार रे, मन धरी आनंदा, देखे नरवृंदा, मुख पूनमचंदा, साजन सुखकंदा,आवे रे नयरीनो नरपति नेटवा रे ॥ ७ ॥ विचमांहे कारुक एक रे, सहामो तस आयो, धींगढ मझ धायो, प्रणमी कहे पायो, कुंवरजी लायो, अवल तुमारे काजें पाडुका रे ॥ ८ ॥ देवरावी संमोल रे, कहे कुवर रंगें, मनने उठरंगें, निसुणो एकंगें, जाणो ए अनंगें, करीश खुशाल

णी वार ॥ मो० ॥ तेडी लावी एह्ने रे माता, ए छे मुज आधार ॥ मो० ॥ ५ ॥ एह्वे वणिक ते आवियो रे जोजो, प्रणमे अक्का पाय ॥ मो० ॥ वात कही रत्नचूडनी रे जोजो, धुरिहूती समजाय ॥ मो० ॥ ६ ॥ ग्रहु करियाणक एह्नु रे जोजो, अम्हें करी कूड उपाय ॥ मो० ॥ कहे अक्का तुम अम्हमा रे जोजो, कोडी लाज न थाय ॥ मो० ॥ ७ ॥ ते कहे केम अमने कह्यो रे जोजो, सा कहे नास्युं आम ॥ मो० ॥ तुम चिंतित करियाणशु रे जोजो, पूरशु यान निकाम ॥ मो० ॥८॥ इह्वा अनेक प्रकारनी रे जोजो,कहेशो मशकने हाड ॥मो०॥ पूरो ए प्रवहण माहरु रे जोजो, तो केम पूरशो लाड ॥ मो० ॥९॥ चार वणिक तव बोलीया रे तेह्ने, एवडी किहांथी बुद्धि ॥ मो० ॥ कहे अक्का मत जाणजो रे नाइ, बाल माटे निर्बुद्धि ॥ मो० ॥ १० ॥ ए धूरत पुर आवियो रे होशे, तेह धूरत शिरदार ॥ मो० ॥ कोइक माथानो मिले रे नो हे, सघला एक प्रकार ॥ मो० ॥ ११ ॥ लाज थायजो तुम्ह ने रे नाई, तो होय मुजनें लाह ॥ मो० ॥ पण मनमाम्म राखशो रे नाई, मनडामांहे चाह ॥ मो० ॥१२॥ तेह गया निज मंदिरें रे आव्यो, कारुक दोडी ताम ॥ मो० ॥ विकसित मुख बोले हसी रे अक्का, आज थयु मुज काम ॥ मो० ॥ १३ ॥ आज व्यवहारी आवियो रे कोइ, जेट उपानह कीध ॥मो०॥ करिश खुशाल हु तुजनें रे तेणें, एहवु वचन मुज दीध ॥ मो० ॥ १४ ॥ तस सर्वस्व लीधे सही रे थाशु, हु खुशाल दिल माहे ॥ मो० ॥ ए कहेवाने आवियो रे पासें, तुमचे धरि उत्साह ॥ मो० ॥ १५ ॥ कहे अक्का सुण कारुआ रे कीजें, मनोरथ आप समान ॥ मो० ॥ अजुगत एहवु मागतां रे माथे, पडशे ताहरे उपान ॥ मो० ॥ १६ ॥ कहेशे ए नरिंदने रे हूउं, मंदिरमा सुत आज ॥ मो० ॥ तु खुशाल किंवा नहीं रे त्यारें, आफरडो आवीश वाज ॥ मो० ॥ १७ ॥ ते पण सुणि विलखो थइ रे पाछो, आव्यो निज घरबार ॥ मो० ॥ धूरत एकठग आवियो रे करतो, आपणो गुण विस्तार ॥ मो० ॥ १८ ॥ यमघंटा बोली हसी रे कूडी, ताहरी शी ए बुद्धि ॥ मो० ॥ आगलथी धन आपीयु रे मातुं,कीधु किहां गइ शुद्धि ॥ मो० ॥ १९ ॥ कहे तस धन लेवा तणो रे एमें, कीधो सत्यंकार ॥ मो० ॥ कहे अक्का इण वातथी रे व

म धरजो, हियडामा मरजो, हु वलिहारी रे जाउ तेहनी रे ॥१४॥१८१॥

॥ दोहा ॥

॥ रत्नचूड गणिका घरे, आवी कन्नो जाम ॥ रणघंटा कनी थइ, आदर दीधो ताम ॥ १ ॥ गोरव सहित जमाडियो, देई बहु सन्मान ॥ वात करे ते प्रेमनी, प्रमदा गुणनी खाण ॥ २ ॥ सध्या काल थयो तदा, सखर विठावी सेज ॥ सार शृंगार नला कीया, गणिकायें धरि हेज ॥ ३ ॥ मन खोलीने प्रेमनी, करवा लागी वात ॥ मन पाखे उत्तर दीये, रत्नसार अगजात ॥ ४ ॥ चितायें न गमे किसी, मीठी पण कोइ वात ॥ जेम तावीला पुरुषने,लागे कटुक निवात ॥ ५ ॥ शेठ सुणो एणिपरें नणे, पूछु तमने एक ॥ ए विवादनी उपरें, कहो उत्तर मुऊ ठेक ॥ ६ ॥ ए निर्वाह थया विना, न गमे रगविलास ॥ प्रेम धरी मुऊने तुम्हें, बुद्धि कहो सुविलास ॥ ७ ॥ तव वोले गणिका तिहा, सानल चतुर सुजाण ॥ दैवयोग इण वंदरें, आवे कोइ अजाण ॥ ८ ॥ सर्व मली ए तेहना, ले वचीने दाम ॥ एक अश ते इव्यनो, पहोचाडे नृपधाम ॥ ए ॥ वीजो नाग प्रधाननो, शेठनो त्रीजो अश ॥ चोथो आरक्षक तणो, अधिकारी निस्त्रिंश ॥ १० ॥ लीये पुरोहित पाचमो, ठगो महारी माय ॥ मति पूरण ते आगलें, सहु आवे चित्त लाय ॥ ११ ॥ ते माटे तुमने तिहां, तेडी जाउ आज ॥ सांजलजो तुमें चित्त धरी, सहेजें सरशे काज ॥१२॥

॥ ढाल एकावनमी ॥

॥ प्रनु देहरु आदिनाथनु रे जोजो ॥ ए देशी ॥ रणघटा कहे ते हने रे आवो, करी नारीनु रूप ॥ मोरा साहेबा रे ॥ काम सवल ए बुद्धिनुं रे जोजो ॥ ए आकणी ॥ थइ नारी गयो तेहने रे जोजो, केडें ते न वल स्वरूप ॥ मोरा साहेबा रे ॥ का० ॥ १ ॥ करी प्रणाम अक्का नणी रे जोजो, पासें वेठी तेह ॥ मो० ॥ पूछे तेहनें ताहरी रे केडें, कोण ए रूपनुं गेह ॥ मो० ॥ २ ॥ ते कहे श्रीदत्तशेठनी रे माता, रूपवती कना एह ॥ मो० ॥ एह सही ठे माहरी रे माता, एहशु निविड सनेह ॥ मो० ॥ ३ ॥ एक वार एहने मल्या विना रे माता, कल न पडे मुऊ काय ॥ मो० ॥ ए पण वेठी मदिरें रे माता, अहोनिश मुऊ गुण गाय ॥ मो० ॥ ४ ॥ हमणां ए मिष करी मुऊने रे माता, मलवा आवी

लाज ॥ ए ॥ लाज थयो बहु तेहने, नरि करियाऐं यान ॥ रत्नचूड निज पुर नणी, चाल्यो सुगुणनिधान ॥ १० ॥ थोडे दिवसें आवियो, रत्नचूड निजगेह ॥ रत्नाकर हरख्यो घणुं, सुत ऋध्दि देखि अबेह ॥ ११ ॥ प्रणमे चरण पिता तणां, माताना वली पाय ॥ सुत जीवो युग कोडि लगें, ये आशीष पसाय ॥ १२ ॥ मांमीने सघलु कह्यु, निजवृत्तांत अशेष ॥ रत्नाकरना हृदयमां, हर्ष थयो सुविशेष ॥ १३ ॥ ईषत् तस गुणवर्णना, पिता करे तेणि वार ॥ पुत्रप्रशंसा नवि करे, गुरुजन एम व्यवहार ॥ १४ ॥ यत ॥ प्रत्यक्षे गुरुव स्तुत्या, परोक्षे मित्रबांधवा ॥ कर्मांते दासनृत्याश्च, पुत्रा नैव मृता स्त्रिय ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ आव्यां घणा वधामणा, साजन हर्ष अपार ॥ पुत्र पिता बेहू मल्या, वरत्यो जय जयकार ॥ १५ ॥ आवी सौनाग्यमजरी, तस देखणने काज ॥ रत्नचूड आसन ठवी, बहुत वधारी लाज ॥ १६ ॥ नडे तुऊ उपदेशथी, उपराजी बहु ऋध्दि ॥ जइ परदेश कमाइयो, थइ मुऊ कारिज सिध्दि ॥ १७ ॥

॥ ढाल बावनमी ॥

॥ कंसार ते सूधो केलव्यो ॥ ए देशी ॥ सौनाग्यमजरी कहे एहवु, तुम नाग्य हतु थयु तेहवु ॥ तुम शोना आवी अति नली, तुम कीर्त्ति वाधी ऊजली ॥ १ ॥ तुम ऊपर मोही हु घणु, तुम गुणसमुदाय केता नणु ॥ प्राण जीवन तुम एक माहरे, गृहिणी थाइश घर ताहरे ॥ २ ॥ लेइ नेव्यो उपायन नूपति, घणु रीज्यो देखि तेहनी रति ॥ हर्षित नृपनी आणा वरी, घर राखी सौनाग्यमजरी ॥३॥ धन आप्यु पितानु मूलगुं, कर जोडी थइ रह्यो ठेलगुं ॥ नुज उपराज्यु इव्य वावरे, बहु त्याग ने नोग समाचरे ॥ ४ ॥ अन्य पण परणी तेणें कामिनी, गुणवती जे गज गामिनी ॥ करे पुण्यना काम ते अति घणा, जिनचैत्य करावे सोहामणा ॥ ५ ॥ विलसे रूडी नोगसपदा, सुहणामांहे नहिं आपदा ॥ सुखमांहे काल गयो घणो, यश चावो चिहु दिशि तेह तणो ॥ ६ ॥ एक दिवस मुनीश्वर आविया, शम दमवता समनाविया ॥ रत्नचूडें जई मुनि वंदिया, गुरुदेशना सुणी आनंदिया ॥ ७ ॥ लीये सयम मुनिवरजी कने, पाले निरतिचार रूडे मनें ॥ करे किरिया मुनिवर निर्मली, शुध्दनाव सहित मननी रली ॥ ८ ॥ अतें ते अणसण आदरी, सुर

देखो, थाइश सही तु खुवार ॥ मो० ॥ २० ॥ अन्य लोचन अथवा किसी रे तेहवी, वस्तु देखाडशे तुज ॥ मो० ॥ तु मति केलविने तदा रे तेहने, कहिश नहि ए मुज ॥ मो० ॥ २१ ॥ कहेशे ते तोलन मंत्रथी रे लेश, तुज लोचनद्यु तोलि ॥ मो० ॥ सरिखु थाय तो ताहरु रे लेजो, इयो तव उत्तर बोल ॥ मो० ॥ २२ ॥ कहे कितव तुम एहवु रे सूजे, नहिं तस बोलण थाय ॥ मो० ॥ तेमाटे धन एहनु रे माहरे, हाथे आव्याथाय ॥ मो० ॥ २३ ॥ ते पण उठीने गयो रे आव्या, व्यसक ते वली चार ॥ मो० ॥ कहेवा लाग्या आपणी रे आवी, वात सकल विस्तार ॥ मो० ॥ २४ ॥ कहे अक्का तुम वातमा रे काइ, देखु नहीं सकार ॥ मो० ॥ ते बुद्धिमतनी आगलें रे काइ, नहि तुम जोर लगार ॥मो०॥२५॥ कहेशे सायर नीरनु रे माहरे, करवु सहि परिमाण ॥ मो० ॥ पण नदीयोना नीरने रे जाइ, करो अलगु तुमें जाण ॥ मो० ॥ २६ ॥ ते नहि थाये तुम्हथी रे त्यारें, खोशो घरनी आथ ॥ मो० ॥ खोटो विचार न कीजियें रे जेहथी, न रहे शरम निजहाथ ॥ मो० ॥ २७ ॥ ते पण उठीनें गया रे इ रख्यो, शेठनंदन गुणवंत ॥ मो० ॥ ठहे एकावनमी ढाणी रे जोजो, बुद्धिबलियो बलवंत ॥ मो० ॥२८॥ सर्व गाथा ॥१९८१॥ श्लोक ॥८७॥

॥ दोहा ॥

॥ रणघंटाथु चलीयो, शेठ नंदन गुणखाणि ॥ तस मंदिरमां आवियो, करतो तास वखाण ॥ १ ॥ लेइ अनुमति तेहनी, आव्यो निज आवास ॥ अक्का कथित उपायथी, कारिज करे उल्लास ॥ २ ॥ नाह्मणादी वणिजो थकी, लीधु धन चउ लक्ष ॥ वारिधि जल मितकारथी, तावत् वली प्रत्यक्ष ॥ ३ ॥ तिण व्यतिकरथी ते हुउ, पुरमाहे परसिद्ध ॥ अन्यदिवस लेइ नेटणु, गयो नरपतिनें सविद्ध ॥ ४ ॥ करि प्रणाम ऊनो रह्यो, पूछे नृप वृत्तांत ॥ रत्नचूड मामी कह्यो, सघलो ते अवदात ॥ ५ ॥ नरपति मन चिंते इस्यु, अद्भुत एहनुं नाग्य ॥ ठग अम नगरीलोकने, जेणें ठगिया ए काग ॥ ६ ॥ माग माग राजा कहे, थयो तुज ऊपर तुष्ट ॥ बुद्धिमत तुज देखिने, थइ मुज मनसुख पुष्टि ॥ ७ ॥ रणघंटा मुजने दियो, प्राणवल्लना थाय ॥ राजहुकमथी गेहिनी, थइ गणिका सुखदाय ॥ ८ ॥ वस्त्राजरण दीधां घणां, पूरी मननी रुहांड ॥ रणघंटानां रंगसुं, पूर्यां सघलां

मी थया, केइक तजी विकर्म ॥ ४ ॥ तम नाठुं सवि जगतनु, कर्यो जि नवर नाण ॥ कोशिक जिम एक अनव्यने, न थयु कांइ कल्याण ॥ ५ ॥ अग्नियें पण सीजे नहि, जे करडू कण होय ॥ तेम अनव्यने तारवा, सम रथ नहि जिन कोय ॥ ६ ॥ उपर नूमि न नीपजे, जेम जगमा कांइ धान्य ॥ बोधि न होय अनव्यने, तेम जिनदेशन वाणि ॥ ७ ॥ अति शयवत माहामुनि, महागोप अनिधान ॥ गुण अनंत जिनवरतणा, कुण कही शके सुजाण ॥ ८ ॥

॥ ढाल त्रेपनमी ॥

॥ त्रिपदीनी देशी ॥ चोत्रीश अतिशयवत मुणिंद, महीमंमल विचरे जिनचद, नवियण मन आनद तो ॥१॥ जयो जयो नवियण मन आणंद ॥ ए आकणी ॥ स्वेद मल रोग रहित प्रनु अग, श्वास पद्मगध होय सुचग, मास रुधिर सितरग तो ॥ जयो० ॥ २ ॥ नवि देखे आहार नीहार, अति शय जन्म तणा ए चार, होवे अग मजार तो ॥ ज० ॥ ३ ॥ योजन नूमि सुर नर तिरि कोड, वेसे निराकुल मननें कोड, कुण करे एहनी होड तो ॥ ज० ॥ ४ ॥ सहु समजे योजन लगें वाणी, जलके नामंमल नीशाणी, श्रीजिनगुणनी खाणि तो ॥ ज० ॥ ५ ॥ पंचशत कोश लगें डुर्निक्ष, रोग वैर ईति मारी प्रत्यक्ष, अति वर्षण ने अवर्ष तो ॥ ज० ॥ ६ ॥ स्वपर चक्र नय थोल ए आठ ॥ न हुवे ए आगमनो पाठ, एम अग्यारनो ठाठ तो ॥ ज० ॥ ७ ॥ घातिकर्मक्षयथी ए अग्यार, हवे देवकृत उगणीश विचार, सुणियें नवि निर्धार तो ॥ ज० ॥ ८ ॥ धर्मचक्र प्रनु आगल सोहे, चामरयुग नविजन मन मोहे, मणि सिंहासन जोय तो ॥ ज० ॥ ए ॥ छत्रत्रय इंद्रध्वज प्रवर, हेमकमल विरचे तिहां सुरवर, त्रिहु गढ अतिहि मनोहर तो ॥ ज० ॥ १० ॥ चउमुह रचना धर्म प्रकास, चेइयतरु दीठे उल्लास, अधो होय कंटक आस्य तो ॥ ज० ॥ ११ ॥ तरु नमन डुंडुनि ध्वनि सारी, पृष्ठानुपाती पव न निर्धारी, अतिशय गुण बलिहारी तो ॥ ज० ॥ १२ ॥ पंखी पण प्र दक्षिणा दिंती, गंध जलवृष्टि तिहां करे हुंती, कुसुमवृष्टि विरचती तो ॥ ज० ॥ १३ ॥ व्रत लीधे नवि वाधे केश, जघन्यथकी सुरकोटि प्रवेश, ऋ तु अनुकूल अशेष तो ॥ ज० ॥ १४ ॥ ए उगणीश अतिशय सुर कीधा, एम चोत्रीश थया परसिद्धा, सघला कारिज सिद्धा तो ॥ ज० ॥ १५ ॥

लोकनी लीला तेणे वरी ॥ पद पाम्या मानानंद अनुक्रमें, धन्य ते जे एहवा मुनि नमे ॥ ए ॥ हवे निसुणो उपनय ए सही, अभ्यंतरनी वातो कही ॥ कुल उत्तम मानव नव लह्यो, नविजीव वणिकनो सुत कह्यो ॥ १० ॥ हितकारक श्रीगुरु जाणीयें, ते तेहनो तात वखाणीयें ॥ श्रद्धादि जनित प्रोत्साहना, ते वेश्यावचन निदानना ॥ ११ ॥ पुण्य लक्ष्मी उपचयकारिणी, आगल पण नवजल तारिणी ॥ मूलद्रव्य चारित्र गुरुयें दियु, ते राखे ठेकाणे सहजीयु ॥ १२ ॥ पुर वासुं अनीतिनुं जे तदा, गुरु सारण वारण दे मुदा ॥ संयम प्रवहण ऊपम लही, नव सायर तरवो ठे सही ॥ १३ ॥ कर्णधारक तुल्य विमलमना, साधर्मिक साथ तपोधना ॥ नवितव्य नियोगान्न जाणीयें, प्रमाद जे हृयमां आणीयें ॥ १४ ॥ पुर पाम्यु अनीतिना नामनु, कुप्रवृत्तितणु जे प्रवर्तनु ॥ मोहनूपति नाम अन्यायीयो, पुरमा सघले जे गाइयो ॥ १५ ॥ नामनाहि वणिक सम नाखिया, चार दुष्ट कषाय ते राखिया ॥ हरे द्रव्यविवेक ते पापीया, एणें लोक घणा संतापीया ॥ १६ ॥ विषयाशा हो वेश्या सम कही, तेहने जाय मले जीवडो सही ॥ कर्मपरिणति अक्का अति नली, शुनमतिदायक कृत पूर्वली ॥ १७ ॥ उन्नयी अशुन सवि ते हथी, प्राणी मलियो निजगेहथी ॥ धर्ममारगमा फरि आवियो, जन्म नूमिपरें सुख पामियो ॥ १८ ॥ एह उपनय दिलमाहे धारीयें, गुण आदरी अवगुण वारियें ॥ कीजें धर्मनु कारिज धसमसी, धन्य वात ए जेहने मन वसी ॥ १९ ॥ चक्रायुध गणधर उपदिस्यो, श्रीसंघतणा दिलमां वस्यो ॥ ए उपनय दिलमा राखजो, नवि अनुनव स्वादने चाखजो ॥२०॥ बावनमी ढाल छठे सुणी, अंतर उपनय दाख्यो मुनि ॥ कहे राम विजय सहु सांनलो,नवि धर्म करो तजि आमलो ॥ २१ ॥२०१९॥८८॥

॥ दोहा ॥

॥ दीधी गणधर देशना, सामाचारी सार ॥ साधुने सवि दाखवी, जेहथी नवनिस्तार ॥ १ ॥ थिविरकल्प प्रकाशियो, श्रुत केवली नगवान ॥ श्रीचक्रायुध गणधरु, नविकज सूर समान ॥ २ ॥ प्रनु विचरे पुहवीतले, पद धरता कज हेम ॥ सुर नर कोडें परिवस्या, वरस्युं जगमां क्षेम ॥ ३ ॥ केइक दीक्षा आदरे, केइ ग्रहे श्रावकधर्म ॥ नद्रकपरिणा

स श्रुत केवली, पट्कायना त्राता रे ॥ ज० ॥ १० ॥ जव सख्यात मनुष्यना, रूपी इव्यने देखे रे ॥ अवधिज्ञानी मुनिवरा, त्रण सहसने लेखे रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ समय क्षेत्रमाहे सज्ञिता, मनजावने जाणे रे ॥ मन पर्यवनाणी मुनि, सहस चार वखाणे रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ केवलज्ञानें जाणता, सहु लोक अलोक रे ॥ चार सहस त्रणशें वली, वदो गतशोकें रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ वैक्रियलब्धिधरा जला, पट्सहस मुणिंद रे ॥ चारशें दोय सहस नमो, वादी आणंद रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ ए परिवार जिणंदनो, कर जोडी जालें रे ॥ मुक्तिमार्ग साधे जलो, वदो त्रिहु कालें रे ॥ ज० ॥१५॥ वैयावृत्य करे जखु, सहु विघ्न निवारे रे ॥ यक्ष गरुड नामें जलो, प्रभुसेवा सारे रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ जक्त तणी सान्निध्य करे, निर्वाणी नामें रे ॥ शांति प्रभुशासन सुरी, समरो शुजकामें रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ मुख्य सहुमाहे शिरें, चक्रायुध जात रे ॥ कोणाचल नृप स्वामीनी, करे सेव सुजात रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ चालिश धनुपनी देहडी, मृगलांठन स्वामी रे ॥ कांचनवर्ण तनु शोजतु, प्रणमो शिर नामी रे ॥ ज० ॥ १ए ॥ अप्रतिरूप जिणंदनु, वपु सुंदर दीपे रे ॥ एक मनें अवलोकतां, सवि पातक ठीपे रे ॥ ज० ॥ २० ॥ जुवनत्रय प्रभुता तणा, सूचक उक्किट्ठां रे ॥ आठ अशोकादिक तणां, प्रातिहारज दीठ रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ यत ॥ अशोकवृक्ष सुरपुष्पवृष्टि,र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ जामंमल डुंडुजिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणाम् ॥ १ ॥ पूर्वढाल ॥ एम प्रभु प्रभुता जोगवे, त्रिहु जगत प्रतिपाल रे ॥ सहजसमाधिनी लीलमा, विचख्या बहु काल रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ सौख्य अतींद्रियना धणी, वर ते समजावें रे ॥ साधक बाधकता मटी, सहजातम जावें रे ॥ ज० ॥ २३ ॥ घट घट व्यापक जे विजु, अविकल अविनाशी रे ॥ परमातम प्रगटी कला, शुज ज्योतिविलासी रे ॥ज०॥२४॥ चोपनमी ए ढालमां, खम ठठे सुणीजें रे॥ शातिप्रभु पद सेवता,जन्म सफल गणीजें रे ॥ज०॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ वरिस पंचविंशति सहस, कुमरपणे जगदीश ॥ मात पिता आगल रह्या, दिन दिन अधिक जगीश ॥ १ ॥ सामानिक राजापणु, वरिस तेटलां जाण ॥ सुखलीला प्रभु जोगवी, अतिशय गुणमणि

गुण अनंत जिनजीना दीसे, जोतां नवियणना मन हिंसे, दिन दिन चढती जगीश तो ॥ ज० ॥ १६ ॥ अतिशय गुण जिनजीना जेह, जिन विण बीजो न लहे तेह,महिमा अतुल अछेह तो ॥ ज० ॥ १७ ॥ विश्व रे महि अचिरानो जायो, चोसठ इंद्रे मली गुण गायो, त्रिनुवनजन मन नायो तो ॥ ज० ॥ १८ ॥ चक्रायुध गणधर प्रनुसाथ, सेवे प्रनुने जोडी हाथ, जय शिवपुरना साथ तो ॥ ज० ॥ १९ ॥ जाणत पण पूछे कर जोडी, गणधर प्रनुजीने मद मोडी, पहोंचे नवियण कोडि तो ॥ ज० ॥ २० ॥ छठे खमें त्रेपनमी ढाल,शांतिप्रनु अतिशय गुणमाल, नवियण सुणो उजमाल तो ॥ ज० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २०४८ ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ विश्वसेन कुलचंदलो, अचिरा मात मल्हार ॥ सोलम जिन त्रिनुवन धणी, नोधारा आधार ॥ १ ॥ नक्तवत्सल नावठ हरण, सेवकजन साधार ॥ करुणारस सायर प्रनु, कहुं तेहनो परिवार ॥ २ ॥

॥ ढाल चोपनमी ॥

॥ केवलीने सुख सांनली ॥ ए देशी ॥ नवियण वंदो रे नावशुं, प्रनुनो परिवारो रे ॥ गुणवंतजीना गुण स्तव्ये,लहियें नवजल पारो रे॥नवियण वंदो रे नावशुं ॥ ए आंकणी॥ १ ॥ गुण सत्याविश शोनता, समरस नंमारो रे ॥ प्रनुजीना मुनिवर नमु, बासठ हजारो रे ॥ न०॥ २ ॥ एकसठ सहस गुणें नरी, षट्शत अधिकेरी रे॥हस्तदीक्षित नमु साधवी, गुणशील नलेरी रे॥ न० ॥ ३ ॥ शुरू समकित गुणधारका, बारे व्रत पाले रे ॥ न चले चलाव्या धर्मथी, व्रत दूषण टाले रे ॥ न० ॥ ४ ॥ रागें रंगाणा धर्मने, जिनधर्म ए जाणे रे ॥ सार ए अवर असार छे, न मगे कोई टाणे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ चउदश आठमने दिने, करे पोसह नावें रे ॥ शुरू अशनादिक साधुने, हर्षे पडिलाने रे ॥ न० ॥ ६ ॥ शांतिप्रनुवाणी सुणी, सूधा प्रतिबुद्धा रे ॥ साधुनी संगत मूकीने,न रहे ते जूदा रे ॥ न० ॥७॥ दोय लाख उपर वली,नेवु सहस सुणीजें रे ॥ एहवा श्रावक जिन तणा, नित्य प्रत्यें समरीजें रे ॥ न० ॥ ८ ॥ गुणवंती हुइ श्राविका, त्रण्य लाख उदार रे ॥ त्राणुं सहस उपर वली, प्रणमो नर नारी रे ॥ न० ॥ ९ ॥ जिन नहिं पण जिन सारिखा, त्रिहु कालना ज्ञाता रे ॥ आठ सह

पाख तणी परें, तनु थतें ते दीसे ॥ नांखे शातिप्रनु निसुणीने, नविय णनां मन हीसे ॥ से० ॥ १३ ॥ जे ऊपर योजन चोवीसम, नागें सिद्ध विराजे ॥ ज्योतिशु ज्योति मली परमातम, लील अनती गाजे ॥से०॥१४॥ सिद्ध अनत चतुष्टय प्रगट्यु, विरम्यो सकल उपाधि ॥ एक नेद पन्नर उपचारें, सिद्ध नमो सुसमाधि ॥ से० ॥ १५ ॥ नहि जिहा जन्म जरा दिक मुखडां, अनत अतींड्रिय सुखडां ॥ निराकार निरंजन विलासी, सिद्ध जपे शुचिमुखडा ॥ से० ॥ १६ ॥ मुग्ध लोक अनुमानें एहनी, उपमा जग कहेवाय ॥ पण परमारथ सौख्य अतींद्रिय, केम पुजल जोडाय ॥ से० ॥ १७ ॥ जिम साकेतपुरपति रिपुमर्दन, आण्यो पुलिंदने पुरमां ॥ उपकारी जाणीने हर्षे, राख्यो ते निज घरमा ॥ से० ॥ १८ ॥ उत्तम अशुक तस पहेराव्या, आनूपण अति वारू ॥ मेवा मीठाई वरनोजन, करतां थयो दीदारु ॥ से० ॥ १९ ॥ एक दिन वर्षाकालें विरहे, थयो कामातुर गाढो ॥ वनमाहे रमतो क्रीडा करतो, सानल्यो निज आपाढो ॥ से० ॥ २० ॥ यामिकने वचीने निशिमां,नग्न थई नीसरियो ॥ वनमांहे आव्यो निज परिकरने, मलियो मुःख विसरियो ॥ से० ॥ २१ ॥ वर्ण फिरे नवि ते उजलखाणो, कोण तु किहाथी आव्यो ॥ ते कहे हु तुमचो सवधी,नेद सकल वतलाव्यो ॥ से० ॥ २२ ॥ ते पूछे कहेवा सुख दीठ, स्यो कीधो आहार ॥ ते कहे कहेणीमाहे न आवे, विण उपमा निर्धार ॥ से० ॥ २३ ॥ तस प्रतीति ऊपमथी कहेवा, मांमी सुखनी वात ॥ फल सुखाद कदादिक जेहवी, मीठी मोदकजाति ॥ से० ॥ २४ ॥ शाल्यादिक नीवार सरीखा, में तिहा नक्षण कीधां ॥ गुंदी पत्रोपम अति सुदर, पत्र अशन प्रसिद्धा ॥ से० ॥ २५ ॥ शाल्मलिकदोपम पूगी फल, वसन ए वल्कल सरिसा ॥ पहेर्या कुसुम तणी जेम माला, तेम आनूपण सरसां ॥ से० ॥ २६ ॥ गिरिकदरसम वर आवासें, वसियो हुं बहु वेला ॥ तेम असार सुखमुं तेणी उपमा, दीधी तेणी वेला ॥ से० ॥ २७ ॥ एम सांसारिक लोकनी आगल,अमें शिवसुख वर्णवियें ॥ लोक तणे अनुमानें पण ए, नवि कहेवाये न मवियें ॥से०॥२८॥ काम नोग सवधी जे सुख, तेहथी दिव्य सुख महोटु ॥ सिद्ध प्रनुनें अनतगणु सुख, एह वयण नवि खोटु ॥ से० ॥ २९ ॥ ए सुखलीला आगल नवना, सुख सघलाही

खाण ॥ २ ॥ सहस पंचविंशति वली, चक्रवर्तिपद जोग ॥ वरस पंचोतेर सहस एम, रहिया प्रज्ञु गृहयोग ॥ ३ ॥ पणवीस सहस वर सज लगें, चारित्र पाल्युं सार ॥ वरस न्यून तेता वरस, केवलीपणे उ दार ॥ ४ ॥ वर्ष लक्ष एम आउखु, जोगविंयु जिनराज ॥ हवे कहुं अधिकार ते, जेम पाम्या शिवराज ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंचावनमी ॥

॥ आपो आपोने राज, मोघा मूला मोती ॥ ए देशी ॥ सेवो सेवोने राज, शांतिजिनेश्वर स्वामी ॥ सोलम जिनवर सोलम सोवन, वरणे शिव गतिगामी ॥ सेवो सेवोने राज ॥ शा० ॥ ए आकणी ॥ जगगुरु जगलोचन जगदीपक, जगतारण हितकारी ॥ जगजीवन जगबंधव जिनवर, वंदो सवि नर नारी ॥ सेवो० ॥ १ ॥ निज निर्वाणसमय प्रज्ञु जाणी, बहु साधु परिवारें ॥ समेतशिखरें पधास्या प्रज्ञुजी, आप तरे पर तारे ॥ सेवो० ॥ २ ॥ मनु शिव चढवानी नीसरणी, समेतशिखर गिरिंदा ॥ आरोहे अलवेसर जिनवर, अचिरा राणीनंदा ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ पद्मासन पूरी परमेश्वर, बेठा ध्यान समाधि ॥ सुरवर समवसरण तिहां विरचे, देखञ्जं हियडुं वाधे ॥ से० ॥ ४ ॥ तिहां बेसी उपदेश दिये प्रज्ञु, निसुणे असुर सुरिंदा ॥ जाव अनित्य सकल जवमाहे, दीसे ए सवि फंदा ॥ से० ॥ ५ ॥ म म करशो ममता मनमाहे, सहु सवघें मलियुं ॥ राखो जवमांहे रोकीने, कर्मकटक ए बलियुं ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ तुं कुण घरनो चेतन तहारी, समता सुंदरी नारी ॥ शुं लाग्यो ममता गणिकाशुं, होय रह्यो नीखारी ॥ से० ॥ ७ ॥ चेतन संग तजो ममतानो, करो सम ताशुं यारी ॥ जातें जाति मिले होय शुगतु, असरिस संग निवारी ॥ से० ॥ ८ ॥ काम करो कोइ एहवुं धारी, बंधनो हेतु निवारी ॥ जेम नव स्थिति ठांमी अति नारी, वरीयें मुक्ति सुनारी ॥ से० ॥ ९ ॥ तब गणधर गिरुउं गुणवंतो, चक्रायुध मद मोडी ॥ सिद्धस्वरूप कहो प्रज्ञु मुफने, पूछे बेहु कर जोडी ॥ से० ॥ १० ॥ कहे प्रज्ञु क्षेत्रयकी जोवतां, लक्ष पणयालिस मानें ॥ सिद्धशिला पुढवी छे उपर, उज्ज्वल कंचन वान ॥ से० ॥ ११ ॥ उत्तान उत्र तणे आकारें, समयक्षेत्र परिमाणें ॥ मध्यपिंम आठ योजन जेहनो, ज्ञानी विण कुण जाणे ॥ से० ॥ १२ ॥ माखी केरी

ले हवे सेवक केरी, रह्यो आपणने मोह घेरी रे ॥ प्र० ॥ २ ॥ कुण करशो अम सार सन्नाल, प्रभु तुम विणुं दीनदयाल रे ॥ प्र० ॥ नक्त वत्सल प्रभु नाम धरावी, उपगार करो प्रभु आवी रे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ प्रभु कहेवु वीतरागने एह, जेहना मनमा नहि नेह रे ॥ प्र० ॥ चार निकाय तणा सुर मलिया, जिनन्नक्ति करण जल फलिया रे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ क्षीरोदधिनां हो नीर मगावी, पहेला प्रभुने नवरावी रे ॥ प्र० ॥ गो शीर्ष चंदन घसि रंगें, सुर लेप करे जिन अंगें रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ मुख म हेली कर्पूर सुवास, पहेरावे देवडुष्य वास रे ॥ प्र० ॥ अगरु उखेवे नक्ति महमूर, पसरे तस परिमल पूर रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ मदार पारिजा तकसतान, फूलें पूजे नगवान रे ॥ प्र० ॥ शिविका रयण तणी विर चावे, प्रभुजी तनु तिहा पधरावे रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इंद्रादिक शिविका क पाडे, नैरूत कूणे पहोंचाडे रे ॥ प्र० ॥ चदनदारुचिता तिहा विरची, प्रभुअग धर्युं तिहा अर्ची रे ॥ प्र० ॥ ८ ॥ अपर चिता अणगारने हेतें, सुरें कीधी मननी प्रीतें रे ॥ प्र० ॥ अग्निकुमार सुरें तिहा आवी, मुखे अग्नि तिहा सलगावी रे ॥ प्र० ॥ ए ॥ वायुकुमार विकूर्व्या वाय, प्रजाली प्रभुनी काय रे ॥ प्र० ॥ धाधां शोणित मांसने जाणी, मेघ सुर वरसावे पाणी ॥ प्र० ॥ १० ॥ चिताअनल शमियो तिण वेला, सहु इंद्र थया तिहा नेला रे ॥ प्र० ॥ दक्षिण ऊर्ध्वदाढ सुनगा, ग्रहे पति सौधर्म सुरगा रे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ चमर अपर ग्रहे दक्षिण केरी, दाढा धरी नक्ति घणेरी रे ॥ प्र० ॥ वाम दाढा अध उपर दोइ, ईशान वलींद्र ले सोइ रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ शेष अठ्ठावीश दंत सुरिंदा, लिये धरि मनमा आनदा रे ॥ प्र० ॥ शेष अस्थि अनिमेष विचारी, लिये ना वधु करि एक तारी रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ विद्याधर नर कन्ना जोडें, चिता नस्म ग्रहे मन कोडें रे ॥ प्र० ॥ सकल उपद्रव टालणहारी, प्रभु न क्तिनी जाउ बलिहारी रे ॥ प्र० ॥ १४ ॥ एम सस्कार करी प्रभु अगें, करे धूप तिहा मनरंगें रे ॥ प्र० ॥ सोवन रयणनु काम विराजे, दीठे नवन्नावठ नाजे रे ॥ प्र० ॥ १५ ॥ ते ऊपर जिनपडिमा स्थापे, दरि सणथी डुरितने कापे रे ॥ प्र० ॥ केसर सुखडयु जे पूजे सवि, अशुन्न कर्म तस धूजे रे ॥ प्र० ॥ १६ ॥ नक्ति करे जिनपडिमानी सारी, ज

फीका ॥ जात्यमणि आगल नवि शोने, तुष असार अफीका ॥ से० ॥ ॥ ३० ॥ ठे पचावनमी ढालें, देशना दीधी जिणंद ॥ रामविजय कहे अहोनिश दिलमा, धरियें मन आनंद ॥ से० ॥ ३१ ॥ २१११ ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ देई एणी परें देशना, कहया त्रिभुवननाण ॥ शिखर चढया सिखरी तपो, जाणी निजनिर्वाण ॥ १ ॥ केवलज्ञानी साधुजी, नवशें साथ मुणिंद ॥ अणसण कियुं अरिहंतजी, एकमासिक सुखकंद ॥ २ ॥ सपरिवार सुरपति सवे, जगत प्रभुनी पास ॥ परम प्रीति सपन्न ते, करे सेवना खास ॥ ३ ॥ ज्येष्ठ श्याम तेरश दिने, नरणी उडु विधुयोग ॥ शुक्ल चरम नेद ध्यावता, लहे गुणगण अयोगि ॥४॥ द्विचरिम समय अयोगीने, करी बहोत्तरनो नाश ॥ चरम समय ते खेपवी, पहोता शिवपुरवास ॥५॥ समय पएसतर वली, अण फरसीने ताम ॥ गति परिणामे पंचमी, गति लही त्रिभुवनस्वामि ॥ ६ ॥ अनुक्रमें साधु सवि तिहां, पाम्या परमानंद॥ सिद्धपणु पाम्या मुनि, मोडी नवनयफंद ॥ ७ ॥ नाथ थयो शिवनारीनो, जाणीने जगनाथ ॥ अश्रुजलाविल लोचनें, रुदन करे सुरनाथ ॥ ८ ॥ गुण संनारे स्वामीना, आव्या हृदय नराय ॥ हा ! प्रभु तुम विरहो पड्यो, कहो हवे केम खमाय ॥ ९ ॥ संशयतिमिर विनाशवा, हा ! दिनकर उपमान ॥ अमने मूकी अनाथपरें, किहां गया हे नगवान ! ॥ १० ॥ सहु नाषा संवादिनी, गाजत जेम घनमेह ॥ तुम विण कुण दइ देशना, हरशे अम संदेह ॥ ११ ॥ दुर्निक्षादिक अशिव सवि, पीडाकर जग मांहे ॥ तस उपशम करशे कवण, तुम विणु तिहुअणनाह ॥ १२ ॥ काज तजी देवलोकनां, महियल आवी स्वाम ॥ करशुं कोनी चाकरी,तुम विणु प्रभु गुणधाम ॥ १३ ॥ धरता एम मन खेदने, इंद सवे तेणि वार ॥ करे उत्सव निर्वाणनो, हवे निसुणो अधिकार ॥ १४ ॥

॥ ढाल उप्पनमी ॥

॥ महारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥ जिनवर मुक्तें पधाखा जाणी, मन खेद धरे नविप्राणी रे ॥ प्रभु मुक्ति पधाखा ॥ प्रभु जगजीवन जइ शिव वरिया, थया निरुपाधिक सुखदरिया रे ॥ प्र० ॥ १ ॥ पतित पावन परमातम नामें, थइ बेठो अविचल धामें रे ॥ प्र० ॥ सार न

॥ ढाल सत्तावनमी ॥

॥ कुलहो मानवजव लाधो ॥ ए देशी ॥ कहे चक्रायुध केवल नाणी, सांजलो सहु जवि प्राणी॥जव अनादि सयोग ए दीसे,शु देखि देखी हीसे रे॥ १ ॥ जविका, धर्म करो मद मूकी॥ नहिंतर जाशो जव चूकी रे ॥ज०॥ ए आंकणी ॥ मनमांहे चिंते मात पिता मुऊ, जाई ने जोजाई ॥ पण कोइ काम पडे नवि आवे, सार्थे आप कमाई रे ॥ज० ॥ २ ॥ लोन घणो मनमाहे राखे, मेले धन केइ लाख ॥ पाप परिग्रह जेलो कीधो, पण अंतें सहु राख रे ॥ ज०॥ ३ ॥ मनमाहे जाणे मान तणे वश,पूरुं हु सहु जु पाहुं ॥ शीख देयता जागे अवलो, बोले वायक आहुं रे ॥ ज०॥ ४ ॥ बेहु प्रकारें बालपणु निज, पोषे बहु आरजी ॥ निष्कारण जगमांहे बांधे, कर्म कठिन सारजी रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ पुजलनी मूर्छामांहे पडियो, पाप कर्म करे केइ ॥ करे अन्याय रहे वलि अलगो, परने माथे देई रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ त्रीश महामोहस्थानक वारो, निज आतम साधारो ॥ कहे चक्रायुध गणधर गिरुउ, ते जवि हृदयमां धारो रे ॥ज० ॥ ७ ॥ जलमांहे पेसी जे हणे त्रसने, मत्स्यादिकने जलशस्त्रें ॥ पादादिक आक्रमण करीने, प्रथम स्थानक कह्यु शास्त्रें रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ वाध्र लीले त्रस जीवने वींटी,जे हणे ते ऊख लहेशे ॥ हाथे मुख रूंधी हणे त्रसने, कहो तस शी गति होशे रे ॥ ज० ॥ ए ॥ मंमप वाडादिकमांहे क्षेपी, धूमाकुल करि मारे ॥ महा मोहस्थानक सेवतो, रुले चिहुगति संसारें रे ॥ ज० ॥ १० ॥ ऊष्ट मनें असि मुजर शस्त्रें, उत्तम अंग विदारे ॥ निर्दय परिणामी त्रस ऊपर, करतो ए कर्म वधारे रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ मायायें वेश लेई वणिजादिक, पंथ चलीने सार्थे ॥ वचमांहे गलकर्त्तन करे पापी, जूमा कह्या जगनार्थे रे॥ज०॥ १२ ॥ गूढाचार निगूहे जूमो, मायायें परमाया ॥ आहादे जिम शकुन विघातक,ठद ढाके निज काया रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ ए ठहु स्थानक मत सेवो, हवे सप्तम सुणो प्राणी ॥ असत्यवादी सूत्रारथनिह्नव, कह्यो जिन अवगुण खाणी रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ ऊष्टाचरण रहितने अतें, आप करे अपराधे ॥ ग्रयाभ्रंश करे ते पापी, आतमगुणथी न वाधे रे ॥ ॥ ज० ॥ १५ ॥ नवमे जाण ठुं तो पर्षदमां,साचा जूठा जे बोले ॥ कलहपकी अणविरम्यो मानव, नावे कोडी मूलें रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ नाय

मां धन्य ते नर नारी रे ॥ प्र० ॥ करी निर्वाणमहोत्सव महात्मा, नंदीश्वर यात्रायें चाल्या रे ॥ प्र० ॥ ॥ १७ ॥ करि जिनजक्ति तिहां नवे नावे, कर जोडी जिनगुण गावे रे ॥ प्र० ॥ बावन प्रासादें जिनराया, पूजी करे निर्मल काया रे ॥ प्र० ॥ १८ ॥ प्रभुगुणज्ञानमां तान बनावी, घणी वार त्या नावना नावी रे ॥ प्र० ॥ निज निज स्थानक ते सुर जावे, दिलमां प्रभुके गुण ध्यावे रे ॥ प्र० ॥ १९ ॥ समकितवंत तणी ए करणी, नवसायरपार उतरणी रे ॥ प्र० ॥ कुगति हरी दिये मुक्ति सहेली, प्रभुपूजायें दरिसण नेली रे ॥ प्र० ॥ २० ॥ ढाल उप्पनमी खमें ठठे, प्रभु पूजो चित्त अकुठे रे ॥ प्र० ॥ रामविजय कहे उत्तम तेह, जेहने प्रभु सार्थे सनेह रे ॥ प्र० ॥ २१ ॥ सर्वगाथा ॥ २१४६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जिनवर मुक्ति पधारिया, चक्रायुध गणधार ॥ प्रभुगुण समरंता मनें, महियल करे विहार ॥ १ ॥ साधु संघातें परिवर्या, सूधा समतावंत ॥ नविकजीव प्रतिबोधता, सुरनरसेवित संत ॥ २ ॥ गुण सत्यावीश साधुना, अंगें धरे अणगार ॥ समतारसमांहे झीलता, नहिं ममता अहंकार ॥ ३ ॥ अरति निवारी चित्तथी, रतिपति न लहे लाग ॥ चक्रायुध गणधर तणु, जग प्रसयु सौनाग्य ॥ ४ ॥ आतम गुण वाडी नली, सींचे उपशम नीर ॥ वानर इंद्रिय चपलता, काढी मूके धीर ॥ ॥ ५ ॥ कटुक जाड काढ्यां परा, क्रोधादिक जस नाम ॥ वाडी नली वैराग्यनी, चोपर्खे अनिराम ॥ ६ ॥ शांतिनाथ जिनराजनी, शिरपर धारे आण ॥ स्याद्वाद मत उपदिसे, नय गम नंग प्रमाण ॥ ७ ॥ इव्यें गुण पर्यायनु, चिंतन करे सुधर्म ॥ अप्रमत्तता नूमिमां, निबिड खपाव्यां कर्म ॥ ८ ॥ नर्म मव्यो मोहरायनो, चेतन कीधी केलि ॥ करणसत्त्व करमां ग्रही, नाख्यो मोह उखेलि ॥ ९ ॥ श्रेणि चढी गुणठाणमां, वरतावे निज आण ॥ वीतरागना नावथी, पाम्यो केवलनाण ॥ १० ॥ सुरअसुरादिक सवि मिल्या, उत्सव करे अपार ॥ गगनें गाजे छुंछुनि, वरत्यो जय जयकार ॥ ११ ॥ नवस्वरूप नाटक समु, दीठुं नजरें ताम ॥ नव्य जीवनी आगलें, दिये देशना आम ॥ १२ ॥

अछयावीशमु मोहनु स्थानक, ए दाख्यु जिननाहें रे ॥ न० ॥ २४ ॥ देव तणी द्युति रूद्धि ने वीरज, वल यश वर्णविशेष ॥ तास अवर्ण जे बालम ति कहे, नहिं तेहमा गुणरेख रे ॥ न० ॥ २५ ॥ नवि देखे ने कहे हु देखुं, देव अने वली यक्ष ॥ अज्ञानी जन पूजा अर्थी, बांधे मोह प्र त्यक्ष रे ॥ न० ॥ २६ ॥ ए त्रीशे स्थानक सेवतो, महामोहनो अधि कारी ॥ जाणीने तुमें विरमो एहथी, कहे गणधर उपकारी रे ॥ न० ॥ २७ ॥ ढाल सत्तावनमी खम्म छठे, गणधर देशना दीधी ॥ समकितदृष्टि जे नर नारी, श्रवणपुटें करी पीधी रे ॥ न० ॥२७॥ सर्वगाथा ॥२१एद॥

॥ दोहा ॥

॥ श्रीचक्रायुध केवली, देशन अमृतसार ॥ नविक जीव केइ बू ऊवी, कताख्या नवपार ॥ १ ॥ आयु जाणी अवशेष निज, थोडुं गण धर देव ॥ वहु साधुशु परिवस्या, सारे सुर नर सेव ॥ २ ॥ नरत क्षेत्र मध्य खमना, पावन तीरथ सार ॥ कोटिशिलानिध छे नलु, नामें नव निस्तार ॥ ३ ॥ श्री चक्रायुध केवली, विचरता मुनि साथ ॥ कोटिशिलायें आविया, जगतारण जगनाथ ॥ ४ ॥ अणसण कीधु तिहां कणे, वहु केवलिपरिवार ॥ श्री चक्रायुध गणधरु, पाम्या शिवपद सार ॥ ५ ॥ कालें कोटिशिलाविषे, सिद्धा मुनिवर कोडि ॥ चक्रायुध सिद्धा पछी, वदू वे कर जोडि ॥ ६ ॥

॥ ढाल अछावनमी ॥

॥ रूपन जिणंदा रूपन जिणंदा ॥ ए देशी ॥ तीरथ वदो ए तीरथ वदो, कोटिशिलानिध जेम चिर नदो ॥ कोडि गमे गया जिहां मुनि मुक्ते, ते तीर्थे प्रणमो नवि नक्तें ॥ ती० ॥ १ ॥ श्री चक्रायुध गणधर सिद्धा, शांतिप्रभुवारें परसिद्धा ॥ ते पूठें मुनि सख्यात कोडि, मुक्तें गया प्रणमु कर जोडी ॥ ती० ॥ २ ॥ कुंथु जिणंद हुआ नगवता, सत्तरमा जिन गिरुआ गुणवता ॥ सख्यात कोडी तस तीरथ सिद्धा, मुनि वदो गुण रयण समिद्धा ॥ ती० ॥ ३ ॥ श्रीअरनाथें तीरथ तरिया, द्वादश कोडि मुनि शिवपद वरिया ॥ एह शिला उपरें ड ख वारी, सिद्ध थया जाउ वलिहारी ॥ ती० ॥ ४ ॥ मल्लि जिणेसर त्रिभुवन स्वामी, सुर नर आवी नमे शिर नामी ॥ ए प्रभु तीरथें मुनि पट्ट कोडी, शिव पाम्या प्रणमो

क रहित सचिव नरपतिनो,राज कलत्र विधसी ॥ अर्थागम उपाय नथी तेम, ध्वसे ते पुरो मशी रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ सामंतादिक परिकर नेदे,तस अधिकार पडावी ॥ धिग थइ हरे नोगने परना, शुनमति मूके मावी रे ॥ ज० ॥ १८ ॥ नहि कुमार कहे बालकुमारो, ब्रह्मचारी लोक आगें ॥ स्त्री वशवर्ती अग्यारमु स्थानक, सेवतो जाणशे आगें रे ॥ ज० ॥ १९ ॥ न हि ब्रह्मचारी कहे ब्रह्मचारी, बारमु स्थानक मातु ॥ जस निश्रा विचरे ते दनु धन, ताके ते पातक कातु रे ॥ ज० ॥ २० ॥ अणईश्वर ईश्वर जेणें कीधो, परिगल वित्त घर पामी ॥ ईर्ष्या द्वेष धरे स्वामीशु, तेहमा महोटी खामी रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ जेम सापिण अमकपुट निहणे, तेम पोषकने मारें ॥ सेनापति शास्तार प्रत्यें ते, रूडो नहि आचारें रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ देश तणो नायक जे दीसे, निगम तणो अधिकारी ॥ शेठ बहुयशने जे मारे, शोलमुं ए गण नारी रे ॥ ज० ॥ २३ ॥ बहुजनना नेता प्राणीने,त्राण जे द्वीप समान ॥ प्रावचनी नरने जे निहणे, सत्तरमु कह्यु ठाण रे ॥ ज० ॥ २४ ॥ सयतविरति उपस्थित तपसी, धर्मथकी चूकावे ॥ महा मोहनो बध करे ते, मुफ मनमा न सुहावे रे ॥ ज० ॥ २५ ॥ जिन अनत नाणी वरदर्शी, तेहनो अपयश बोले ॥ एकोनविंशतितम ए स्थानक, सेवतो कह्यो कुण तोलें रे ॥ ज० ॥ २६ ॥ नैयायिक मारग अपकारी, बहु जनने नजेरे ॥ नावयतिनिंदी ए महेलो, फरशे चिहु गति फेरे रे ॥ ज०॥ २७ ॥ आचारिज उवफायें नणाव्यो, सबल थयो श्रुतपाठी ॥ बाल करे खिंसा वली तेहोनी, मति तेहनी घणु माठी रे ॥ ज० ॥ २८ ॥ आचारिज उवफायने न करे, सम्यग् जे उपगार ॥ अप्रतिपूजक तेहनो जे नर, तास अकज अवतार रे॥ ज० ॥ २९॥ त्रेवीशमु स्थानक अबहुश्रुत, बहुश्रुत नाम धरावे॥चोवीशमे अतवस्सी तपीयो, हु एम कीर्ति गवावे रे ते ॥ ज० ॥ ३० ॥ ग्लानतणु वेयावच्च न करे, समरथ हूंतो जेह ॥ एणें न कर्युं नवि करशे ए माहरे, महामोह बांधे तेह रे ॥ ज० ॥ ३१ ॥ जे ह कथा अधिकरण प्रयुंजे, तीरथ नेद करंतो ॥ छवीशमु महामोहनु स्थानक, बोधि न पामे मरतो रे ॥ ज० ॥ ३२ ॥ जे आधर्मिक योग प्रयुंजे, निमित्त वशीकरणादि ॥ श्लाघा मित्र तणे वली हेतें, महामोहनो उन्माद रे ॥ ज० ॥ ३३ ॥ जे मानुष्यक नोग अतृसो, पारलौकिकने चाहे ॥

जपे नाम चित्तें ॥ शां० ॥ ७ ॥ शांतिजिन सांजलो एक मुज वीनति, हुं नति वहु करी एम दाखु ॥ नेक नजरें करी निरखो मुज सामुहुं, तुम विना अवर दिलमा न राखुं ॥ शा० ॥ ७ ॥ हु सयोगी अयोगी प्रजु तु जयो, हु सरागो तुमें वीतरागो ॥ हु सदाशी नीराशी तुमें साहिवा, मेलव्यो मेल तुज जक्तिरागो ॥ शां० ॥ ए ॥ मुज सम सेवका स्वामी ताहरे घणा, तुज सम अवर नहि कोइ महारे ॥ शरण हु आवियो सेव करवा जणी, जक्तवत्सलतणु विरुद तहारें ॥ शां० ॥ १० ॥ प्रजु तुम गुण तणो रास रगें रच्यो, हर्षेश हुं मच्यो एह गातां ॥ वोधिप्राप्ति महो दय घणी सपदा, पलक नहि वार तुम चरण ध्यातां ॥ शां० ॥ ११ ॥ सतर सवत जयो वरस पचाशियो, राजनगरें रह्या अधिक हेजें ॥ आदिजिन शांतिजिन पार्श्वजिन वीरजिन, चार प्रजु दीपता सहज तेजें ॥ शां० ॥ १२ ॥ तेह प्रजु सान्निध्यें रास रचना करी, अतिहि आ नद मनमाहे धारी ॥ श्री सुमतिविजय सुगुरुचरणसुपसायथी, रामप्रजु शांतिजिन सौख्यकारी ॥ शा० ॥१३॥ इति शातिजिनस्तुति ॥ २२२६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ शांतिप्रजु जामणे जाउं ॥ ए देशी ॥ जवियण जाव धरीनें आवो ॥ शांति प्रजु गुण गाउ रे ॥ मोती थाल जरीने लावो, प्रजुगुणरास वधावो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ जगमांहे अधिक अठे मीगइ, जाति विविध मन जाई रे ॥ तेहथी एहमा अधिक सरसाइ, स्वाद ए शिवसुखदायी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ पहेले जव श्रीपेण नरिंदा,वीजे युगल सुखकदा रे ॥ त्रीजे सुरसौधर्मे सुरिंदा, सुख विलसे आनदा रे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ चोथे विद्याधरकुलें आया, अमिततेज गुण गाया रे ॥ पाचमे प्राणत सुरपद पाया, ठ्ठे राम कहाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ सातमे अ च्युत इइ कहीजें, आठमे चक्री सुणीजें रे ॥ नवमे ग्रैवेयक निसुणीजें, नवमे नाम जपीजें रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ दशमे मेघरथ राय अदीनो, दान अजय जियों दीनो रे ॥ करे प्रशसा स्वामी शचिनो, जस गुण रसमा जीनो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ सर्वार्थसिद्ध सुर अवतारें, सुख पाम्या श्री कार रे ॥ जव अग्यारमे वारमे जरतें,थयो जिन जगदाधार रे ॥ ज०॥७॥ शांति प्रजुना गुणनी माला, गातां रग रसाला रे ॥ मनोवांबित लहे लक्षी

मन कोडि ॥ ती० ॥ ५ ॥ श्रीमुनिसुव्रत वारें ए कहियें, कोटिशिला देखी गहगहियें, त्रण कोडि मुनिवर मुक्ति पधास्या, ते वंदीने नव इःख वास्या ॥ ती० ॥ ६ ॥ नमि जिन तीरथमा गुण नरिया, एक कोडि मुनि षट्काय पीहरिया॥एह शिला उपर आलोटी,पाम्या हो शिव पदवी महोटी ॥ ती० ॥ ७ ॥ एम अवर पण मुनिवर सिद्धा, पण ते इहां गणनायें न लीधा ॥ कोटि अन्यूना जेहने वारे, सिद्धा तेहनो इहां अधिकारं ॥ ती० ॥८॥ कोटिशिला तिण मार्टे कहियें, ए तीरथ सेव्ये सुख लहियें ॥ चारण श्रमण मुनि इहां आवे, सुर नर किन्नर मलि गुण गावे ॥ ती० ॥ ए ॥ जिहां एक मुनिनु होय निर्वाण, ते तीरथ नमे कोडि कल्याण ॥ जिहां मुनि मुक्ति गया केइ कोडि, ते तीरथ प्रणमो कर जोडी ॥ ती० ॥ ॥१०॥ कोटिशिलानिध तीरथ दीसे, जोता नवि जननां मन हीसे ॥ तीरथ वर्णो ए नरतमा वारु,राम कहे सुणो सुगुण श्रोतारु ॥ती०॥११॥२११३॥

॥ ढाल ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ शांति जिन शांति जिन शांति जिन राजीया, पुण्यथी आज तुऊ सेव पामी ॥ गायता स्वामिगुण रासलीला घणी, आजथी शुन दशा सरस जामी ॥ शां० ॥ १ ॥ मात अचिरातणो तनय सोहामणो, तुम तणां नामणा नित्य लीजें ॥ रायविश्वसेसना कुमर कुलचवला, ताहरे नाम शुनकाज सीऊे ॥ शां० ॥ २ ॥ धन्य तु धन्य तुं धन्य हु धन्य हु, नाग्यथी सरस तुम दरिस दीगे ॥ शोलमा जिन वरा दुःखहरा शकरा, आजथी माहरो पाप नीगे ॥ शां० ॥ ३ ॥ विष्ण कचनवने अजब शोना बनी, धनुष चालीश तनुमान सामी ॥ देवना देव तुऊ सेवना मन वसी, माहरा सुकृतमां नहीय खामी ॥ शां०॥ ४ ॥ दिव्य अनुपम घणु रूप रलीयामणु,तुम तणु नयण जोतां निहाली ॥ डुरित दूरें टले लक्ष्मि बहुली मले, सुजस वेला वले अति र साली ॥ शां० ॥ ५ ॥ ताहरु नाम वरमंत्र मन जेहने, तेहने रिपु परा नव न लागे ॥ सिद्धि नव निधि वर बुद्धि विलसे तिहां, नविजना जे रहे तुऊ रागें ॥ शां० ॥ ६ ॥ गाजती गजघटा तास घर आंगणे, नृपति सेवे थई दास नित्यें ॥ विमल कमला वरे कीर्त्ति जग विस्तरे, जे जना तुम

जपे नाम चित्तें ॥ शां० ॥ ७ ॥ शांतिजिन साजलो एक मुऊ वीनति, हुं नति वहु करी एम दाखु ॥ नेक नजरें करी निरखो मुऊ सामुहुं, तुम विना अवर दिलमां न राखुं ॥ शा० ॥ ८ ॥ हु सयोगी अयोगी प्रजु तु जयो, हु सरागो तुमें वीतरागो ॥ हुं सदाशी नीराशी तुमें साहिवा, मेलव्यो मेल तुऊ नक्तिरागो ॥ शां० ॥ ए ॥ मुऊ सम सेवका स्वामी ताहरे घणा, तुऊ सम अवर नहि कोइ महारे ॥ शरण हु आवियो सेव करवा जणी, नक्तवत्सलतणु विरुद तहारे ॥ शां० ॥ १० ॥ प्रजु तुम गुण तणो रास रगे रच्यो, हर्षेंछ हुं मच्यो एह गातां ॥ वोधिप्राप्ति महो दय घणी सपदा, पलक नहि वार तुम चरण ध्यातां ॥ शां० ॥ ११ ॥ सतर सवत जयो वरस पचाशियो, राजनगरें रह्या अधिक हेजें ॥ आदिजिन शांतिजिन पार्श्वजिन वीरजिन, चार प्रजु दीपता सहज तेजें ॥ शां० ॥ १२ ॥ तेह प्रजु सान्निध्यें रास रचना करी, अतिहि आ नद मनमाहे धारी ॥ श्री सुमतिविजय सुगुरुचरणसुपसायथी, रामप्रजु शांतिजिन सौख्यकारी ॥ शा० ॥१३॥ इति शातिजिनस्तुति· ॥ २२२६ ॥

॥ ढाल ॥

॥ शांतिप्रजु जामणे जाउं ॥ ए देशी ॥ जवियण जाव धरीनें आवो ॥ शांति प्रजु गुण गाउं रे ॥ मोती थाल जरीने लावो, प्रजुगुणरास वधावो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ जगमांहे अधिक अछे मीठाइ, जाति विविध मन जाई रे ॥ तेहथी एहमा अधिक सरसाइ, स्वाद ए शिवसुखदायी रे ॥ ज० ॥ २ ॥ पहेले जव श्रीषेण नरिंदा, वीजे युगल सुखकदा रे ॥ त्रीजे सुरसौधर्म सुरिंदा, सुख विलसे आनदा रे ॥ ज० ॥ ॥ ३ ॥ चोथे विद्याधरकुलें आया, अमिततेज गुण गाया रे ॥ पाचमे प्राणत सुरपद पाया, ठठे राम कहाया रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ सातमे अ च्युत इंद्र कहीजें, आठमे चक्री सुणीजें रे ॥ नवमे ग्रैवेयक निसुणीजें, नवमे नाम जपीजें रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ दशमे मेघरथ राय अदीनो, दान अजय जिणें दीनो रे ॥ करे प्रशसा स्वामी शचिनो, जस गुण रसमा जीनो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ सर्वार्थसिद्ध सुर अवतारें, सुख पाम्या श्री कार रे ॥ जव अग्यारमे वारमे जरतें, थयो जिन जगदाधार रे ॥ ज०॥७॥ शांति प्रजुना गुणनी माला, गातां रग रसाला रे ॥ मनोवाछित लहे लक्षी

विशाला, मंदिर जाक जमाला रे ॥ भ०॥ ७ ॥ दुःख दोहग सवि दूर पला ये, जे ए प्रजुगुण गाये रे ॥ दोषी डुश्मन नाशी जाये, जन्म कृतारथ थाये रे ॥ ज०॥ ए ॥ जिनगुण गणता जावें जणतां, श्रवणें तेम सांजल तां रे ॥ अलवे अलगा होय अणमिलतां, आवि मले सवि चलतां रे ॥ ज० ॥ १० ॥ मूकी विकथा वात अनेरी, जिनगुण वात जलेरी रे ॥ करतां कुगति न जूवे हेरी, लहियें मुक्तिनी शेरी रे ॥ ज० ॥ ११ ॥ तपगछना यक सुगुरु मुणिंदा, श्रीहीरविजय सूरिंदा रे ॥ बूजव्यो अकबर शाह नरिं दा, मोहनवल्लीकंदा रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ पडह अमारी तणा वजडाया, जजिया कर गेडाया रे ॥ जावर सरोवर जाल मुकाया, महियल सुजस गवाया रे ॥ ज० ॥ १३ ॥ साह कुयरकुल साहस धीरा, नाथीकूखे ही रा रे ॥ प्रगट्या पूरव पुण्य अकूरा, धर्म करण थया शूरा रे ॥ ज० ॥ १४ ॥ अकबर शाह कह्यो जेणें सीधो, बीरुद जगगुरु दीधो रे ॥ महिय लमांहे सबलो यश लीधो, चिंतित कारिज कीधो रे ॥ ज० ॥ १५ ॥ श्री विजयदान गुरु पाट पटोधर, उदयो अधिक सवाई रे ॥ पंच विषय परिहार कस्यो जेणें, तप तपिया सुखदायी रे ॥ ज० ॥ १६ ॥ दोय सहस आंबि ल जस कीधां, तिम नीवी तिम जाणो रे ॥ त्रण सहस षट् शत वली उपरें, तप उपवास वखाणो रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ चार कोडि सज्झायें कीधो, श्रीसद्गुरु सखायो रे ॥ अष्टोत्तरशत मुनि जिणें दीख्या, ए गुरु पुण्यें पायो रे ॥ ज० ॥ १७ ॥ पंच शत संख्या जस उपदेशें, देहरासर प्रासादो रे ॥ जविजन जाव धरीने माझ्या, दीठे हुवे आनंदो रे ॥ ज० ॥ १ए ॥ बिंबप्रतिष्ठा कीधी गुरुजीयें, पचास वार उदारो रे ॥ पाटण प्र मुख नयर बहु उत्सव, वरत्यो जय जयकारो रे ॥ ज० ॥ २० ॥ यात्रा दोय सिद्धाचल केरी, दोय गिरनीरें कीधी रे ॥ लाख बिंब जुहार्यां जि ननां, महियल इज्जत लीधी रे ॥ ज० ॥ २१ ॥ मान तजी ऋषि मेघजी नामें, लूंका मतनो स्वामी रे ॥ जिनप्रतिमा आराधक हूउं, हीर गुरुने पा मी रे ॥ ज० ॥ २२ ॥ मागशिर शुदि नवमी दिन सुंदर, साहकुंयर कुल आयो रे ॥ पन्नर च्यासीयें पालणपुरमां, नाथायें कुंवर जायो रे ॥ ज० ॥ २३ ॥ पन्नर छन्नुयें कार्त्तिक वदिमां, बीजें दीक्षा लीधी रे ॥ संवत शोल साते नागोरे, पंमित पदवी दीधी रे ॥ ज० ॥ २४ ॥ संवत शोल

आर्वे वाचकपद, माहाशुदि पचमी दीधु रे ॥ विजयदान सूरीश्वर उत्तम, चिंतित कारिज कीधु रे ॥ न० ॥ २५ ॥ सोल दाहोत्तरें शीरोहीमां, आचारिज पद पायु रे ॥ सोनागी महिमानिधि महोटा, जिनशासन दीपायुं रे ॥ न० ॥ २६ ॥ समिति गुप्ति सूधी गुरु धारे, समतारस नमारो रे ॥ जेणें ए गुरुजी नयणे निरख्या, धन्य तेहनो अवतारो रे ॥ न० ॥ २७ ॥ श्रीहीरविजयगुरु पाट पटोधर, साह कमा कुलचदो रे॥मात कोमाइ कुखे उपन्ना, श्रीविजयसेनसूरि वदो रे ॥ न० ॥ २८ ॥ शाह मलामांहे वाद करीने, जिनमत स्थिरता स्थापी रे ॥ विरुद सवाइ जगगुरु पायो, कीर्त्ति लता आरोपी रे ॥ न० ॥ २९ ॥ तास पाट उदयाचल उदयो, शुद्धप्ररूपणकारी रे ॥ श्री राजसागरसूरि जग जयवता, नवियणने उपकारी रे ॥ न० ॥ ३० ॥ देवीदास अंवर कुलदिनमणि, मात कोडिमदे जायो रे ॥ मनमोहन सोनागी सद्गुरु, महिमानिधि मुनिरायो रे ॥ न० ॥३१॥ सवत सोल ठाशीया वरसे, आचारिज पद पायो रे ॥ श्रीराजसागरसूरि नाम जयकर, सागर गछ दीपायो रें ॥ न० ॥ ३२ ॥ शाह शिरोमणि सहसकिरणसुत, शांतिदास सुजाणे रे ॥ जस उपदेशें बहु धन खरच्यु, लख अग्यार प्रमाणें रे ॥ न० ॥ ३३ ॥ कीर्त्तिकमला श्रीगुरुजीनी, जग माहे घणु पसरी रे ॥ नवियण मनमाहे अति हर्षें, जस गुणमाला समरी रे ॥ न० ॥ ३४ ॥ तेह गुरुपाट पटोधर प्रगट्या, श्रीवृद्धिसागर सूरिंदा रे ॥ पंचाचार विचारे चतुरा,मोहनवल्लीकदा रे ॥ न० ॥ ३५ ॥ रूप अनोपम अगें विराजे, शुन लक्षण अति रूडा रे ॥ बहु नर नारी जेणें प्रतिवोध्या, वयण न नांखे कूडां रे ॥ न० ॥ ३६ ॥ गुणनिधि तेह ने पाट विराजे, श्रीलक्ष्मीसागर सूरि ठाजे रे॥ कीर्त्ति जेहनी जगमांहे गाजे, नवि मन सशय नाजे रे ॥ न० ॥३७॥ सप्रतिमानविजय ते गुरुजी,सोनागी शिरदारा रे ॥ वैरागी वहाला नविजनने, शमतारस नमारा रे ॥ न० ॥ ३८ ॥ तेह तणें राज्यें ए रचियो, शातिप्रजुनो रासो रे ॥ नवियण नाव धरिने निसुणो,लहियें सुरक विलासो रे ॥ न० ॥ ३९ ॥ २२७५ ॥

॥ ढाल ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ श्रीगुरु हीरसूरीश्वरशिष्या ॥ ए आकणी ॥ कल्याणविजय उवझाय पुरंदर, दिन दिन चढत जगीशा ॥ श्रीगु० ॥ १ ॥

॥ हरखानंद सोभागी, साचो वड वैरागी ॥ सम्मति अर्थविचारी सद्गुरु, साचो शुभमति रागी ॥ श्री० ॥ २ ॥ मात पुजीबाइ कूखे जायो, नामें नवनिधि थाइ ॥ वाचक धर्मविजय वर तेहना, दीपे अधिक सवाई ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तस अंतेवासी गुणभरिया, बोल न बोले विरुआ ॥ श्रीजयविजय विबुध श्रुतदरिया, पाले सूधी किरिया ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तस पदपंकज भ्रमर सरीखा, श्रीशुभविजय कवीशा ॥ गुणगंभीरिम मेरुगिरीशा, श्रुतजलसिंधु मुनीशा ॥ श्री० ॥ ५ ॥ तस चरणांबुज सेवक सुंदर, शुभकिरियागुणशूरा ॥ साधे योगाभ्यास अखंडित, नहि गुणरयणे अधूरा ॥ श्री०॥ ६ ॥ महिमावंत महंत मुनीश्वर, चरण नमे अवनीशा ॥ श्रीगुरु सुमतिविजय उपगारी, प्रतपो कोडि वरीसा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ ते श्रीगुरु महिमानिधि सान्निध्य, रास रसिक में निपायो ॥ शांति प्रभुगुणराशि भणता, नवनिधि आनंद पायो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ पूर्व चरित्र तणे अनुसारें, ए संबंध बनाया ॥ लाभ अनंत लह्यो ए रचता, दिन दिन सुजस सवाया ॥ श्री० ॥ ए ॥ सकल संघने मंगलकारी, शांति जिणंद सुखदाया ॥ रामविजय कहे ए जिनवरके, हर्षे धरी गुण गाया ॥ श्री० ॥ १० ॥ संवत सत्तर पंचाशीया वर्षे, वैशाख मास कहाया ॥ शुदि सप्तमी गुरु पुष्य संयोगें, पूरण कलश चढाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ अधिक न्यून जे कांइ एणीमें, अण उपयोगें लिखाया ॥ ते सुकवि सवि शोधी लेजो, करि सुनजर सुपसाया ॥ श्री० ॥ १२ ॥ श्रीराजनगरनो संघ सोभागी, तेहने प्रथम सुणाया ॥ रूद्धि वृद्धि प्रगटी अधिकेरी, आनंद अधिक उपाया ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति श्रीशांतिजिनप्रबंधे रासबंधे सुकृतानुसंधे प्रभोरवतारजन्म जन्ममहोत्सव नामस्थापन लेखकशालामहोत्सव योवन वय प्रापण राज्यस्थापन राजकनीपाणिग्रहण चक्ररत्नोत्पत्ति षट्खंमसाधन चक्रवर्त्तिराज्याभिषेकोत्सव षट्खंमपालन भवाऽसारताभासन, वार्षिकदानसमर्पण चारित्रग्रहण केवलोत्पत्ति चतु षष्ठिसुरेंद्रमिलन समवसरण निर्मापण तद्वर्णन देशनादान तन्मध्ये पंचेंद्रियविषयवर्णन, तदुपरि गुणधर्मकुमारसंबंधकथन, तदनंतर कषायोपरि नागदत्तसंबंधकथन तदनंतर विस्तरत सम्यक्त्वमूलश्राद्धद्वादशव्रतकथन तन्मध्ये प्रथमव्रतोपरि यमपाश संबंध तदनंतर द्वितीयव्रतोपरि भद्रश्रेष्ठिसंबंधकथन तदनंतर तृतीयव्रतो

परि जिनदत्तकथानक चतुर्थव्रतोपरि करालपिंगलपुरोहितसबंध पचमव्रतोपरि सुलससबध पष्ठव्रते स्वयच्जुदेवसबध सप्तमव्रतोपरि जितशत्रुनृपनित्यमहितानारीदृष्टांतनिरूपण अष्टमव्रते समृद्धदत्तसबधोपदेश नवमव्रते सिद्धश्रावकावदातवर्णन दशमदेशावकाशिकव्रते गगदत्तसबधवर्णन, एकादश पौपधव्रतोपरि जिनदत्तसबध द्वादशव्रतोपरि शूरपालनृपसबधवर्णन इति श्राद्धव्रतसबधकथनानतर शुद्धयतिधर्मस्वरूपश्रवणत प्रतिबुद्धचक्रायुधनृपचारित्रग्रहण गणधरपदस्थापन द्वादशांगिरचन पाश्चात्यपौरुपसघस्याग्रे गणधरदेशनासमर्पण तन्मध्ये अंतरगस्वरूपकथन, तडुपरि रत्नचूडसबंधनिरूपण तडुपनयमेलन तदनतर प्रचुविहारावसरे चतुस्त्रिशदतिशयवर्णन प्रचुपरिवारसख्याकथन अष्टमहाप्रातिहार्यवर्णन आयुधसबधमिलन निजायुरवशेषवद्धुपरिवारेण सम्मेतगिरिगमन तत्र चतु'पष्ठिसुरेंद्रमिलन प्रचुदेशनाश्रवण तन्मध्ये सिद्धस्वरूपवर्णनावसरे सिद्धसुखपृच्छया वनचरसबंधकथन तदनतर नवशतकेवलज्ञानिसाधुभिरनशनविधान निर्वाणपदप्रापण निर्वाणकल्याणिकोत्सवकरण तदनतर चक्रायुध गणधरकेवलोत्तत्तिवर्णन देशनाया त्रिशन्महामोहस्थापननिरूपण अनेकनव्यजीवप्रतिबोधन कोटिशिलातीर्थगमन तत्र मुक्तिपदप्रापण कोटिशिलातीर्थस्तवन शांतिजिनराजस्तुतिमाहात्म्यवर्णनाद्यनेकसबधोपबृहित पष्ठ खम समाप्तिम गमत् ॥ तत्समप्तौ च समाप्तोऽय शातिजिनरास ॥ शुन्न नवतु श्री श्रमणसंघस्य ॥ शुन्न स्ताल्लेखकपाठकयो ॥ सर्वगाथा ॥ २२८९ ॥ प्रस्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ८८ ॥ प्रथम खम्मे ढाल ॥१८॥ द्वितीयखम्मे ढाल ॥ ३० ॥ तृतीयखम्मे ढाल ॥३३॥ चतुर्थखम्मे ढाल ॥३४॥ पचमखम्मे ढाल ॥३७॥ पष्ठखम्मे ढाल ॥६१॥ सर्वस्मिन् नूत्वा ढाल ॥११३॥ प्रथमखम्मे गाथा ॥४३७॥ द्वितीयखम्मे गाथा ॥८२८॥ तृतीयखम्मे गाथा ॥ ८३४ ॥ चतुर्थखम्मे गाथा ॥१००७॥ पचमखम्मे गाथा ॥ ११८८ ॥ पष्ठखम्मे गाथा ॥ २२८९॥ सर्वस्मिन् नूत्वा गाथासख्या॥६५८३॥ प्रथम खम्मे प्रस्ताविक श्लोकगाथा ॥४१॥ द्वितीयखम्मे प्रस्ताविक श्लोक गाथा ॥ २० ॥ तृतीयखम्मे प्रस्ताविक श्लोक गाथा ॥ ७६ ॥ तुर्यखम्मे प्रस्ताविक श्लोक गाथा ॥ ४२ ॥ पंचमखम्मे प्रस्ताविक श्लोक गाथा ॥ ६३ ॥ पष्ठखम्मे प्रस्ताविक श्लोक गाथा ॥

शा हरखानंदन सोजागी, साचो वड वैरागी ॥ सम्मति अर्थविचारी सद्गुरु, साचो श्रुतमति रागी ॥ श्री० ॥ २ ॥ मात पुजीबाइ कूखे जायो, नामें नवनिधि थाइ ॥ वाचक धर्मविजय वर तेहना, दीपे अधिक सवाई ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तस अतेवासी गुणभरिया, बोल न बोले विरूआ ॥ श्रीजयविजय विबुध श्रुतदरिया, पाले सूधी किरिया ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तस पदपंकज भ्रमर सरीखा, श्रीशुनविजय कवीशा ॥ गुणगन्नीरिम मेरुगिरीसा, श्रुतजलसिंधु मुनीशा ॥ श्री० ॥ ५ ॥ तस चरणांबुज सेवक सुंदर, शुद्धकिरियागुणशूरा ॥ साधे योगाभ्यास अखंडित, नहि गुणरयणे अधूरा ॥ श्री०॥ ६ ॥ महिमावत महत मुनीश्वर, चरण नमे अवनीशा ॥ श्रीगुरु सुमतिविजय उपगारी, प्रतपो कोडि वरीसा ॥ श्री० ॥ ७ ॥ ते श्रीगुरु महिमानिधि सान्निध्य, रास रसिक में निपायो ॥ शान्ति प्रभुगुणराशि भणता, नवनिधि आनद पायो ॥ श्री० ॥ ८ ॥ पूर्व चरित्र तणे अनु सारें, ए सबध बनाया ॥ लाभ अनत लह्यो ए रचतां, दिन दिन सुजस सवाया ॥ श्री० ॥ ९ ॥ सकल सघने मगलकारी, शाति जिणद सुखदाया ॥ रामविजय कहे ए जिनवरके, हर्ष धरी गुण गाया ॥ श्री० ॥ १० ॥ सवत सत्तर पंचाशीया वर्षे, वैशाख मास कहाया ॥ शुदि सप्तमी गुरु पुष्य सयोगें, पूरण कलश चढाया ॥ श्री० ॥ ११ ॥ अधिक न्यून जे कांइ एणीमें, अण उपयोगें लिखाया ॥ ते सुकवि सवि शोधी लेजो, करि सुनजर सुपसाया ॥ श्री० ॥ १२ ॥ श्रीराजनगरनो सघ सोजागी, तेहने प्रथम सुणाया ॥ ऋद्धि वृद्धि प्रगटी अधिकेरी, आनद अधि क उपाया ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति श्रीशांतिजिनप्रबधे रासबंधे सुकृतानुसधे भवोरवतारजन्म जन्ममहोत्सव नामस्थापन लेखकशालामहोत्सव यौवन वयःप्रापण राज्यस्थापन राजकनीपाणिग्रहण चक्ररत्नोत्पत्ति षट्खंडसा धन चक्रवर्त्तिराज्याभिषेकोत्सव षट्खंडपालन भवाऽसारताभासन, वार्षि कदानसमर्पण चारित्रग्रहण केवलोत्पत्ति चतु षष्टिसुरेंद्रमिलन समवसरण निर्मापण तद्वर्णन देशनादान तन्मध्ये पंचेंद्रियविषयवर्णन, तदुपरि गुणध र्मकुमारसबधकथन, तदनतर कषायोपरि नागदत्तसंबधकथन तदनतर विस्त रत सम्यक्त्वमूलश्राद्धद्वादशव्रतकथन तन्मध्ये प्रथमव्रतोपरि यमपाश सबंध तदनतर द्वितीयव्रतोपरि भद्रश्रेष्ठिसबधकथन तदनतर तृतीयव्रतो

॥ ८८ ॥ सर्वेस्मिन् नूला प्रस्ताविक श्लोक तथा गाथा ॥ ११० ॥ इति पण्डित श्रीरामविजयविरचित शांतिनाथनगवाननो रास समाप्त ॥

॥ अथ स्त्रीने शीलपालवाना यत्किंचित् बोलो लखीये ठेयें ॥

१ पिता बाधव प्रमुख कोइपण पुरुषनी कोटे वलगी मलवु नहिं २ कोइ परपुरुषने न्हवराववो नहि ३ कोइ परपुरुषनु उवटणादिकथी अगमर्दन करवु नहि ४ कोइ परपुरुष सार्थे पत्रादिकथी खेलवु नहि ५ कोइ पर पुरुषनो ठेडो पकडी वात करवी नहिं ६ कोइ परपुरुषसार्थे हसीने हाथ ताली लेवी नहि ७ कोइ परपुरुषनी वेणी गुथवी नहि ८ कोइ परपुरुषनां अग चांपवा नहि ९ कोइ परपुरुपना हाथनी पाननी वीडी लेवी नहिं १० कोइ परपुरुषसार्थे एक शय्याये बेसवु अने सुवु नहि ११ वाटे शेरीयें पुरुषना सथमा जावु नहि १२ घोडा वगेरे आम्हश विनाना वाहनपर बेसवु नहिं १३ ज्येष्ठ, ससरो, सासु तथा सासरामा कोइ मोटेरानी सार्थे ठट्ठा बाजी करवी नहिं १४ कोइ परपुरुष सार्थे एकातमा रहेवु नहिं १५ परपुरुषथी दृष्टि मेलावी सरागथी जोवु नहि १६ कोइ परपुरुषसार्थे सांकेतिक नाषाथी बोलवु नहि १७ योगी, नरडा, निक्षाचर, तेनी सार्थे नाषण करवु नहि १८ कोइ पुरुष देखे तेम वडीनीति लघुनीति करवी नहिं १९ ज्या पुरुष सुता होय, त्यां अनर्गल थइ फरवु नहि २० पुरुष देखता आलस मरडवुं नहिं २१ तेम शरीरना अवयव उघाडा करी बताववा नहिं २२ अत्यंत मिष्ट पदार्थ खावापर प्रीति राखवी नही २३ नोजन अल्प करवुं २४ महोटे स्वरथी हसवु नहिं २५ अजाणे घेर जावुं नहिं २६ पीयर जाइ रहेवु नहिं २७ घरनी वात कोइने कहेवी नही २८ सासरानुं इव्य कपटथी पियरीयाने आपवुं नही २९ धीरा तथा नीचा स्वरथी बोलवु ३० अंग सर्व मण्डित राखवुं ३१ पोताना स्वामीनु अपमान थाय त्यां जवु नहिं

॥ इति श्री जैनकथारत्नकोषस्याष्टमो ॥
नाग समाप्तिमगमत् ॥